श्री नेहडीजी मन्दिर



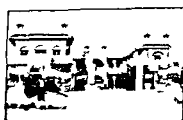
कुन्दनलाल-गणेशलाल वर्मा, कन्हैयालाल-हनुमानप्रसाद वर्मा
श्री करणी निवास देशनोक-बीकानेर (राज)

SRI KARNI JEWELLERS

3 5 997 Narayanguda HYDERABAD 500029
Ph 040 23225156 Fax 040 66628391

Kundanlal Verma C M D
91 9314289688 91 9414043673

Hanuman Prasad Verma M D
91 9391160163



श्री करणी मन्दिर मुख्यद्वार

मॉ के श्री चरणो मे



कल्याणसिह पुत्र भॅवरसिहजी कविया

सतोषपुरा–सीकर

हाल मॉं करणी वाटिका गाधी मथ पश्चिम मॉं हिंगलाज नगर बी चित्रकूट के पास जयपुर

Maa Karnikripa Housing Project Pvt Ltd

Maa Karnikripa Developers Pvt Ltd

Regd Off F 177 Behind Tata Indicom Vaishali Nagar JAIPUR 21

Ph 0141-4019697 (O) 0141 2441065 (R) Mob 09414072911

E mail mkhppl@yahoo com • Kalyan Singh Kavia (Director)



श्री करणीजी

दुर्लभ दर्शन

विक्रम देपावत



श्री करणीजी

दुर्लभ दर्शन

प्रकाशक
श्री करणी प्रकाशन
5 ई 62, गुण उगम, माँ भगवती मार्ग
जयनारायण व्यास कॉलोनी
बीकानेर 334001 (राज)
मो न 09828262929 09468567778

सस्करण 2010

आवरण कमल श्रीमाली

मूल्य 351/-

मुद्रक साखला प्रिंटर्स
विनायक शिखर
शिवबाड़ी रोड बीकानेर 334003

सम्पादकीय

माँ के बारे में लिखने की हिम्मत और होशियारी किसी म भी नहीं है। माँ ने मुझ पर जो कृपा की है उसी के बलबूते पर थोडी-बहुत जानकारिया का सकलन कर उनसे एक पुस्तक तैयार की है। मैंने जब माँ के बारे में पुराने अखबारों म से कुछ ऐसे आलेख पढे जिनको अज्ञान के कारण जिन लेखकों ने जो कुछ भी लिखा है, उन जानकारियों ने माँ के भक्तों को भमित किया है। वो ज्ञान अधूरा एव बेतुका है। जानकारियों के अभाव में जो कुछ उन्हने सुना, वो लिख दिया, उनकी गहन जानकारी नहीं की। जैसा किसी ने कहा है कि 'करणीसिह नाम का एक देवता है जिनको स्थानीय लोग पूजते है', किसी ने कहा कि 'एक ऐसा मन्दिर है जहा अधिक सख्या में चूहे है, वहा चूहा की पूजा होती है' किसी ने कहा है कि—'जब करणीजी ने दुष्ट कान्हा का वध किया तब करणीजी के साथ वाले लोग भाग गये।' उनको शायद यह पता नहीं कि माँ जैसी शक्ति जिनकी माँ हो भला वो शक्ति के पुत्र किसी से क्या डरेगे ? पता नहीं लेखक तथ्य कहा से ढूढ लाते है। इस ढग से करणीजी के बारे में जो भ्रमित साहित्य लिखा गया है उसको सुधारना तो टेढी खीर है मगर हम ऐसा साहित्य लोगो के सामने रखे ताकि उनका गलत जानकारी न मिले। हालाकि मैंने छोटी-मोटी जानकारियों के साथ—'चमत्कार को नमस्कार, कहानी काबों की, देशनोक-गाइड, छत्र-छाया, रिविलेशस ऑफ श्री करणीजी एन इनकारनेशन ऑफ शक्ति' आदि पुस्तको के द्वारा भक्तो को अवगत कराया है। माँ की कृपा और आपके आशीर्वाद से इन पुस्तकों को काफी सराहना मिली है।

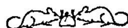
कुछ वर्षों से मैंने श्री करणीजी की छोटी-मोटी जितनी भी जानकारिया है, उनका सकलन एव ज्ञान प्राप्त करके एक जगह पर लिखने का बीडा उठाया था। जो धीरे-धीरे आज एक बड़ी पुस्तक के रूप में तैयार है, जिसमे श्री करणीजी से सम्बन्धित जितनी भी दुर्लभ बातें है कई जानकारिया हम जानते है मगर समझते नहीं है, कुछ जानकारिया चाहते है पल-पल जो-जो माँ के बारे म सेवा होती है, इत्यादि बातों की जानकारियों को एक साथ रखने का प्रयास किया है ताकि किसी भी भक्त को किसी भी जानकारी के बारे मे भटकना न पडे। वैसे तो मै भी देपावत हू, माँ का ही वशज हू। मैंने पूरी-पूरी कोशिश की है कि माँ के बारे सभी जानकारिया लिखू, मगर कोई जानकारी अपूर्ण रह गई हो तो क्षमा चाहता हू। मुझे भली-भाति पता है कि जितना माँ ने उचित समझा होगा उतना माँ ने मुझसे लिखा लिया है। मैंने ऐसी कोई बात नहीं लिखी है जो गलत या भ्रमित हो। पूरा-पूरा प्रयास किया है विस्तार से लिखने का। जिन-जिन पुस्तकों से मैंने इतिहास एव जानकारियों का ब्योरा दिया है उन पुस्तको का



भी जिक्र जरूरी है, उनमे देशनोक के ही लेखक भोमजी वीठू कृत श्री करणी प्रकाश, किशोरसिह वार्हस्पत्य रचित श्री करणी चरित्र, डॉ करणीसिह की श्री शरण हिंगळाज, भवरसिह सामौर की चारण देविया, भवर पृथ्वीराज की परमधाम गडियाला, कैलाशदान उज्ज्वल की श्री भगवती करणीजी, मूलदान देपावत की वळिहारी उण देशडै, पट्शति जयती की स्मारिका माँ करणी, वीकानेर राज का इतिहास, देश दर्पण, दयालदास की सिढायच की ख्यात, मूळसिह भाटी कृत भगवती श्री आवडजी, कल्याण का शक्ति अक एव चारण सदेश पत्रिका के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं के छुटकर आलेखों से काफी हद तक मुझे जानकारिया मिली है। जिनके वगैर यह पुस्तक अधूरी-सी रह जाती।

इतनी वडी पुस्तक छपवाने का विचार करते ही सबसे वडा प्रश्न सामने खडा हो गया कि इतना वडा वजट कहा से आयेगा? हालाकि मुझे पूर्ण विश्वास था कि माँ के लिए जो बीडा उठाया है उसको तो पार माँ ही करेगी। हा, यह बात अलग है कि माँ भी तो किसी न किसी को निमित्त करेगी। इसी आत्मनिर्णय के साथ मै माँ को दिन-ब-दिन याद दिलाता रहता था कि 'माजी-सा! आप इस कार्य को पूरा करवाना।' जबकि मुझ जैसे मूख बालक को पता नहीं कि माँ को क्या याद दिलाना! उनको तो सब पता है। ऐसे ही विचार करते-करते आखिर वो समय आ ही गया जब माँ को बताना जरूरी हो गया था। चैत्र की नवरात्रि (2009) में मै माँ के दर्शनार्थ मन्दिर पहुचा। माँ के दर्शन किये। मन ही मन माँ को कह दिया कि—मातेश्वरी! इस पुस्तक को मै कैसे छपवाऊगा, कैसे व्यवस्था होगी? मुझे मालूम है आपको सब पता है मगर माँ अब वो समय आ गया है। आप जल्दी से व्यवस्था करो। क्योकि मै आसोज की नवरात्रि में इस पुस्तक को भक्तों के सामने अवलोकनार्थ रखना चाहता हू। किसी ने सच ही कहा है कि 'अगर आप दिल से आखा वाळी खडेल से माँ के समक्ष देवली के चरणों में ध्यान कर जो कुछ भी नि स्वार्थ मागोगे, माँ तुरन्त आपकी अरदास स्वीकार करती है।' आप विश्वास नही करेंगे ठीक ऐसा ही हुआ। उसी क्षण बारीदारजी जुगलजी (छोटूदानजी नरसिग के सुपुत्र) ने मुझे कहा कि भाई! आज रसोवडे मे प्रसाद लेना है। प्रसादी का कहते ही कोई कर्महीन ही होगा जो मना करेगा। मैंने अविलब हा कह दी। दर्शन कर जैसे ही मैं प्रसादी लेने के लिए कोटडी मे पहुचा, वही पर खारी चारणान् निवासी मेरे परममित्र वासुदेव मेहडू को भी प्रसादी का हुकम था, वो भी मेरे साथ ही बैठ गये। बातो-बातो मे मैंने मन की सारी बात उनको बता दी। मै मन ही मन समझ गया जैसे उनको माँ ने ही भेजा हो ऐसा लगा जैसे माँ ने उनको ही निमित्त किया हो। उसी क्षण उन्होने ढेर सारी शुभकामनाओ के साथ 501 रुपये नकद देकर कहा कि सबसे पहले मेरी तरफ से माँ की पुस्तक के लिए यह तुच्छ राशि भट है।' मैंने स्वीकार की। घर आकर इस राशि को माँ को दे दिया। उस दिन से आज तक मुड कर नहीं देखा। जिन-जिन से मिला माँ के नाम से उन्होन शुभकामनाओ के साथ-साथ तन-मन और धन से सहायता की।

जब मैंने उनको बताया कि आपकी सेवा माँ के चरणो म नाम-पते सहित रख दी जायेगी। उनकी खुशी का ठिकाना नही रहा कि इतनी बडी पुस्तक म हमारी सेवा पहुची है। हम तो धन्य हो गये।



मैंने सबकी अरदास माँ के चरणों में चित्रो के साथ लगा दी है, वो सभी चित्र माँ से सम्बन्धित हैं। इन सभी चित्रों का माँ की सेवा से सम्वन्ध है, सभी म माँ की छवि का दर्शन है। मैंने जिस क्रम में रखा है उस क्रम मे सभी भक्तों की सेवाओं को मौका दिया है। अपने आप को माँ से अलग मत समझना। माँ पल-पल हमारे साथ है, हर रूप में माँ के दर्शन है। माँ सर्वत्र है।

इम दुर्लभ कार्य में माँ की कृपा से जिन-जिन भक्तो ने मेरा साथ दिया उनका भी जिक्र जरूरी समझता हू। उनमें वसत सिघी नरेश हरियाणवी, जगदीश दान, राजेन्द्र उपाध्याय, डॉ कुलदीप वीठू, दिनेश आसिया, शिवरतन सोनी (नोखा) कनकमल सिघी लक्ष्मीनारायण सोनी एव कमलपत सिघी इत्यादि वधुओं ने मेरा खूब साथ दिया। इनके सहयोग को भूल पाना मुश्किल है।

आज माँ के साहित्य के बारे में जितनी भी क्राति आइ है उसके लिए श्री करणी मन्दिर निजी प्रन्यास के पूर्व अध्यक्ष, श्री कैलाशदानजी का बडा सहयोग रहा है। हाल मे छोटी-मोटी जितनी भी साहित्यिक कृतिया आई है उनको आपने प्रोत्साहित किया है। कुछ नया लिखने के लिए दिशा-निर्देश भी दिये हैं इसी कारण उनके कार्यकाल में माँ की साहित्य सेवा के रूप में 7-8 पुस्तके प्रकाशित हुई। कुछ का प्रकाशन चल रहा है। साहित्य सुलभ उपलब्ध हा इमी विचारधारा के तहत आपने मन्दिर मे 'बुक स्टाल' लगवाई। जिसका वर्तमान में सुचारु रूप से सचालन हो रहा है। ऐसे कार्य माँ की कृपा और प्रयास किये बगैर नहीं होते हैं।

माँ हर पल किसी न किमी रूप म साथ रही है साथ ही हैं और हमेशा अच्छे कार्य मे साथ रहेंगी। अगर साथ नहीं रहेंगी तो कोई भी कार्य परवान नहीं चढेगा। अगर कार्य हुआ है तो सब माँ की कृपा और इच्छा से। जैसा माँ ने उचित समझा ठीक वैसा ही हुआ है। क्योंकि हमे भली-भाति भान है कि 'माँ के वारे में लिखना किसी के बूते की वात नहीं है।

जय श्री करणी माताजी की सा

चैत्र मास शुक्लपक्ष चतुदर्शी

(मूर्ति स्थापना दिवस)

— विक्रम देपावत



अनुक्रम

1	इतिहास के पन्नो से	7
2	दुर्लभ दर्शन	25
3	ऐतिहासिक खास वातें	91
4	माँ ने पल-पल की रक्षा प्रजा के रक्षकों की	97
5	चमत्कार ही चमत्कार	115
6	लीला लाडले कावों की	137
7	श्री हिंगलाज माँ दर्शन	145
8	श्री आवड माँ दर्शन	155
9	श्री आवड चालीसा	169
10	चद-वरदायी-कृत भगवती-स्तुति	172
11	श्री करणी चालीसा	175
12	श्री देवियाण दर्शन	177
13	देशनोक शब्द-व्युत्पत्ति और अर्थ	199
14	श्रीकरणी मदिर का उत्तरोतर निर्माण	205
15	माँ करणीजी की ओरण	211
16	माँ करणी लोक देवी कैसे बनी	217
17	साहित्य में शक्ति का गुणगान	223
18	माँ करणी से सम्बन्धित दोहे छद सवैया, छप्पय, कवित्त इत्यादि	235
19	एक चारण शक्ति, श्री करणीजी की परम उपासक श्री इन्द्र बाईसा महाराज	245
20	एक देवी उपासक दुर्गाबाईसा	249
21	दक्षिण भारत मे पहला श्री करणी माता का मदिर	251
22	चिरजा-साहित्य	255
23	श्री भैरवनाथ दर्शन	269

इतिहास के पन्नों से......

श्री करणीमाता मन्दिर, सगरिया



श्री त्रिलोकचन्द मोदी एव श्रीमती उषादेवी मोदी

टी.सी. मोदी चैरिटेबल ट्रस्ट

सगरिया जिला हनुमानगढ (राज)

शिवरतन रामरतन चादरतन मोदी





अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक परमपिता परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से श्री करणी माता मन्दिर का उद्घाटन एव प्राण प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन 22 जून, 2003 रविवार को सगरिया, जिला हनुमानगढ़ (राजस्थान) मे श्री त्रिलोकचन्दजी मोदी एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उषादेवी मोदी द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

शात और मृदुभाषी स्वभाव को धारण करने वाले मोदीजी कम्पाउडर की नौकरी के द्वारा जनसेवाओ से सेवानिवृत्ति तक जुडे रहे है। जबकि इस दौरान उनके सुपुत्र शिवरतन, रामरतन एव चान्दरतन ने अपने व्यवसाय को आसमान की ऊचाइयो तक पहुचा दिया। मोदीजी कहते है कि सब मा की कृपा और आशीर्वाद से सम्भव है। असीम कृपा से ही सगरिया मे मन्दिर निर्माण हुआ। मा के विराजमान होते ही यह भूमि पावन धाम बन गई, जहा आज दोनो समय आरती-पूजा होती है। सभी भक्त दर्शन पाकर धन्य होते है।

समर्पण



पनरै सै पिच्याणमै, चैत शुकल गुरुनम्म।
देवी सागण देह सूँ, पूगा जोत परम्म।।



अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक परमपिता परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से श्री करणी माता मन्दिर का उद्घाटन एव प्राण प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन 22 जून, 2003 रविवार को सगरिया, जिला-हनुमानगढ (राजस्थान) मे श्री त्रिलोकचन्दजी मोदी एव उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उषादेवी मोदी द्वारा सम्पन्न करवाया गया।

शात और मृदुभाषी स्वभाव को धारण करने वाले मोदीजी कम्पाउडर की नौकरी के द्वारा जनसेवाओ से सेवानिवृत्ति तक जुडे रहे है। जबकि इस दौरान उनके सुपुत्र शिवरतन, रामरतन एव चान्दरतन ने अपने व्यवसाय को आसमान की ऊचाइयो तक पहुचा दिया। मोदीजी कहते है कि सब मा की कृपा और आशीर्वाद से सम्भव है। असीम कृपा से ही सगरिया मे मन्दिर निर्माण हुआ। मा के विराजमान होते ही यह भूमि पावन धाम बन गई, जहा आज दोनो समय आरती-पूजा होती है। सभी भक्त दर्शन पाकर धन्य होते है।

समर्पण



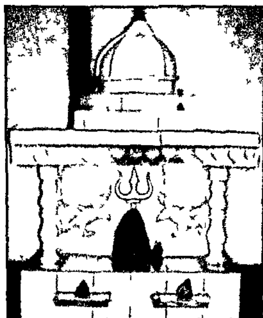
पनरै सै पिच्याणमै, चैत शुकल गुरुनम्म।
देवी सागण देह सूँ, पूगा जोत परम्म।।



सवत् पद्रह सौ पिचानवे के चैत मास शुक्ल पक्ष नवमी तिथी गुरुवार (रामनवमी) के दिवस करणी किनीयाणी ने अपनी सम्पूर्ण कलाओ सहित बिना अग्नि के स्वय की ज्योति द्वारा प्रकाशित अग्निरथ पर आरूढ़ होकर अपने लोक के लिए प्रस्थान किया। विष्णु और शिव ने 'धन्य हो-धन्य हो' का घोष किया। महाशक्ति के मानव जीवन की अतिम लीला देख कर प्रत्यक्ष देव सूर्य भगवान और चन्द्रदेव स्तम्भित हो गये, चकित रह गये। करणीजी अपने धारण किये गये दिव्य मानव शरीर द्वारा सशरीर ही अपने परम धाम मे प्रविष्ट हुए और परम ज्योति को प्राप्त किया।

उस डूबते सूर्य के साथ मा ने इस दुनिया से महाप्रयाण करते हुए सभी भक्तो को अपने तेज से चामत्कारिक कर व अपना स्वरूप जागती जोत के स्वरूप मे प्रमाणित कर दर्शन दिये। उसी क्षण मा ने आकाशवाणी की कि मुझे जब भी कोई पुत्र या भक्त अपने कष्ट मे पुकारेगा या याद करेगा तब मै स्वय इस जोत रूप मे हाजिर हो जाऊगी। क्योकि जोत का प्रज्वलित होना ही मा का साकार रूप है। इसी कारण मन्दिर मे जोत का अधिक महत्त्व है।

श्री करणीमाता मन्दिर, ललाणा खुर्द (नागौर)



श्री करणीमाता का पुराना मन्दिर



श्री श्री 1008 दुर्गा बाईसा



श्री करणीमाता मन्दिर—एक दृष्टि



जगदीश सिंह राठौड
9828172268

COCO PARBATSAR
Indian Oil Corporation Limited (M D)
करणी कृपा ऑयल मिल्स
Ajmer Road Parbatsar Nagaur (Raj)
GURU KRIPA MARBLES
B/261 Tunkra Road RIICO Ind Area Madanganj Kishangarh (Raj)
LALANA MARWAR
Jagdish Singh Rathore (9828172268)



करणी विजयसिंह राठौड
9309092315



करणी अजयसिंह राठौड़
9414258456



माँ के अनन्य भक्त महाराजा श्री गगासिहजी

माँ करणी के आशीर्वाद से बीकानेर नगर की स्थापना

पनरै सै पैताळवै सुद बैसाख सुमेर ॥
थावर बीज थरप्पियो बीके बीकानेर ॥

श्री करणीमाता (भोग के समय)


श्री 1008 खेतेश्वराय नमः

लवली स्वीट्स

ठाकुर पीरदानसिंहजी की हवेली
4-डी-44 जयनारायण व्यास कॉलोनी बीकानेर
फोन 0151-2233837

ईगल स्वीट्स • करणी मिष्ठान भण्डार


पीरदानसिंह
9829223837


श्रवणसिंह
9829225750


जितेन्द्रसिंह
9829500493



वेणीदान पुत्र श्री अजीतदान बारहठ

शेरूयाला आबाँदी-कोलायत (बीकानेर)

भवरदान बारहठ (09784555189) लूणदान बारहठ

जसकरणदान सुमेरदान सुरेन्द्र मदनदान लोकेश





ॐ ग





श्री गणेशजी की आरती

कर्पूर गौर करुणावतार संसार सार भुजगेन्द्र हार।
सदा वसत हृदयार्विन्दे, भव भवानी सहित नमामि ।।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता थारी पार्वती पिता महादेवा ।।

धूप चढे, दीप चढे और चढे मेवा।
लड्डुवन का भोग लगे सन्त करे सेवा ।।

एक दन्त दयावन्त चारभुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूषक की सवारी ।।

अन्धन को आख देत कोढियन को काया।
बाझन को पुत्र देत निर्धन को माया ।।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता थारी पार्वती पिता महादेवा ।।

जिनकी आशिष तले



श्रीमान् एव श्रीमती किसनदान देपावत (परदादोसा-परदादीसा)

2448
14/9/2



दादोसा श्री गुणदान देपावत



पिताजी श्री मूलदान देपावत



विक्रम देपावत पुत्र मूलदान देपावत
5-ई-62 गुण-उगम, माँ भगवती मार्ग, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर
मोबाइल 09828262929 09468567778
देवीसिह जगदीशदान कल्याणदान राजेन्द्रसिह प्रियवश उम्मेद हेपी
अविनाश कीर्तिका मिणधर शैली

श्री आवडमाताजी


आर के कोचर (एडवोकेट)

युगप्रर्वतक चारण रत्न

आर के कोचर (एडवोकेट)

जाति के लोकप्रिय उदारमन समाज सेवक की याद मे–
दिल्ली बार कौसिल (दिसम्बर 09) के सदस्य के रूप मे
एकमात्र चारण राकेश कोचर ने भारी बहुमत से विजय प्राप्त की
विनीत गौरव कोचर नरेश चारण हरियाणवी
सूर्यदेव रामौर–विश्व चारण केन्द्र दिल्ली


राकेश कोचर (एडवोकेट)
09818069505


गौरव कोचर
09810323897

श्री करणीमाता मन्दिर, टमकौर (झुझुनू)



माँ की सेवा मे समर्पित

चुन्नीलालजी भंसाली
एवं समस्त परिवार

टमकौर, जिला झुझुनू
सोजन्य शुभ लक्ष्मी बाईसा बाठिया सपरिवार





JAI SHREE KARNI TRANSPORT CO.

Ph (Off) 0141-2330608 2260289 3130608
Mob 9314268038 (R) 9314268039 (J)
Guj 079 25733020 65136520 Mob 09327775392
M S Charan (9414752342)

Head Office
Shop No 12 Bypass Circle Road No 14
V K I Area Milan Cinema Road Jaipur 302013

Branch Office
9 Jay Jagdish Estate Narol Sarkhej Road
Narol Chowkadi Narol Ahemedabad 382405

दाढी वाली डोकरी



करणी प्रोपर्टीज एण्ड बिल्डर्स
करणी मेडिकल सेन्टर
करणी माता मिनरल्स इण्डिया प्रा. लि.
करणी माता स्टोन एण्ड माईनिंग प्रा. लि.

तीन दुकान विजयबाडी सीकर रोड जयपुर
फोन 0141-2232148 (ऑ) मोबाइल 9829053148

निज मन्दिर



श्री जय अम्बे मिष्ठान भंडार

श्री करणी मन्दिर के पास देशनोक बीकानेर
मॉं करणीजी को समर्पित भक्त चन्दुलालजी मोदी के
परिवार का भगवती के चरणो मे शत-शत नमन्
विनीत रतनलाल मोदी पवनकुमार मोदी
सरूप निकिता सूरज स्नेहा



इतिहास के पन्नों से.......

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूना विनाशाय च दुष्कृता।
धर्म सस्थापनार्थाय सभवामि युगे युगे।।

अवतार क्यों होते हैं?

धरती पर जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब भगवान् को पृथ्वी पर जन्म लेकर साधु वृत्ति के लोगों को पीड़ा से मुक्त करने, दुष्टों का विनाश करने तथा धर्म की पुन स्थापना करने के लिए अवतार का रूप लेना पड़ता है।

जब समार म तामसिक बुद्धि फैल जाती है तो मानव समाज सब बातों को उलटा देखने लगता है, सात्विक वृत्ति का लोप हो जाता है। जब बहुसख्यक मनुष्यों की ऐसी प्रवृत्ति हो जाती है तब धर्म की स्थापना के निमित्त सात्विक वृत्ति को पुन जीवित करने के लिए किसी दैविक शक्ति को समार में जन्म लेना पड़ता है।

जब सृष्टि में दुष्ट लोग अधिक उत्पन्न होकर धर्म के शाश्वत नियमों को नष्ट करके कर्तव्य-अकर्तव्य का बोध खो बैठते हैं, समाज में उच्छृखलता चरम सीमा पर पहुच जाती है मनुष्य का मनुष्य के प्रति, दूसर वर्गों के प्रति तथा सृष्टि के अन्य मूक, निर्दोष जीव-जन्तुओं के प्रति क्या कर्तव्य है—इन सब बातों को भूल जाता है तब जनता को कर्तव्यबोध कराने के लिए किसी दैविक शक्ति को ससार में अवतरित होना पड़ता है।

शक्ति के अवतार

जब दैवी-शक्ति समार में अवतरित होती है तो उसके सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि अवतार पूर्ण कलायुक्त होने की आवश्यकता है या खड कलायुक्त होने की? इसके लिए वह सर्वप्रथम कार्य को और तत्पश्चात् इयत्ता को अपना लक्ष्य बनाती है। जब समाज विशेष की सात्विक वृत्तिया लुप्त होकर वह अर्थ वैपरीत्य को अपना लक्ष्य बना चुका है तो उसके कर्मयोग का बोध कराने के निमित्त किसी भी दैवी-शक्ति को आशिक रूप म आना पडता है।

जिस तरह भगवान् पुरुष रूप में धर्मार्थ का यथार्थ ज्ञान कराने के लिए माता के गर्भ से उत्पन्न होते है, उसी प्रकार उनको आवश्यकता होने पर स्त्री रूप में उत्पन्न होना पड़ता है। स्मरण रहे कि मुझ में और मेरी शक्ति में कोई अन्तर नहीं है। मैं ससार म अपनी शक्ति के द्वारा ही जीवित रह कर क्रिया कर रहा हू। समय और कार्य की आवश्यकतानुसार स्त्री या पुरुष रूप म इस ससार में प्रकट होता रहता हू और आगे भी होता रहूगा। स्त्री रूप मे अवतरित दैवी-शक्ति ने स्वय बताया कि 'मैं ब्रह्माण्ड की अधीश्वरी हू। मैं ही सारे कर्मों का फल भुगताने वाली और ऐश्वर्य देने वाली हू। मैं चेतन एव सर्वज्ञ हू। मैं एक होते हुए भी अपनी शक्ति से नाना रूप भासती हू। मैं मानवजाति की रक्षा के लिये युद्ध ठानती हू और शत्रु का सहारकर पृथ्वी पर शान्ति की स्थापना करती हू। मैं ही भूलोक और स्वर्गलोक का विस्तार करती हू। मैं जनक की भी जननी हू। जैसे वायु अपने-आप चलती है वैसे ही मैं भी अपनी इच्छा से समस्त विश्व की स्वय रचना करती हू। मैं आकाश और पृथ्वी से परे हू। अखिल विश्व मेरी विभूति है। मैं अपनी शक्ति से सबकुछ हू।' इस रूप मे विकसित दैवी-शक्तियों को लौकिक भाषा मे 'दैवी का अवतार' कहा जाता है।

इसके प्रभुत्व का प्रमुख कारण यही रहा है कि अन्याय को नष्ट करने और शान्ति स्थापित करने के लिए शक्ति समय-समय पर अवतार लेती रही है। इसी कारण अवतारों ने जन्म के लिए साधारणतया चारण जाति को पसंद किया और इनकी देवी के रूप में पूजा हुई।

चारण जाति मे ही अवतार क्यो हुए?

चारण जाति शक्ति उपासकों में एक मुख्य जाति है। यद्यपि शाक्त-सम्प्रदाय में जो उपासना क्रम रखा गया है वह इस जाति में प्रचलित नहीं है। भैरवी चक्र का पूजन और पचमकारोपासना को चारण जाति कभी काम में नहीं लाती है न बगालियों या मैथिलों की तरह नवरात्रि में मृण्मय मूर्ति का पूजन करती है और न ही इन क्रियाओं में विश्वास करती है। फिर भी यह जाति कट्टर शाक्त है। चारण जाति अपनी आजस्वी वाणी, काव्य प्रतिभा, विद्वत्ता धर्मप्रियता, अनुपम त्याग एव सत्यनिष्ठा के लिए विख्यात है। देवी गुणों से विभूषित होने के कारण ही इन्हें 'चारण देव' तथा 'देवी पुत्र कहकर सबोधित किया जाता है। भारतीय साहित्य के प्रथम ग्रथ वेद में चार वर्णों के लिए अपनी कल्याणकारी वाणी से उपदेश देते हुए चारण के महत्त्व को बताया गया है।

स्कन्द पुराण में चारण को देवतुल्य कहा गया है। रामायण, महाभारत, गीता आदि धर्मग्रथों बौद्ध एव जैन साहित्य मे चारणो का उल्लेख मिलता है। चारण मूलत शक्ति के उपासक रहे है। चारण कन्याए (सुआसणी) शक्ति का अवतार कही जाती है।

इस जाति में उत्पन्न लडकियो को बचपन से ही माताओ द्वारा यह शिक्षा मिला करती है कि 'तू, साक्षात् देवी है भगवती ने तुझको अपने अश से उत्पन्न किया है' आदि। इस प्रकार की निरन्तर शिक्षा के कारण वह बचपन से ही अपने को माता की सुआसणी' अर्थात् देवी की सहोदर बहिन कहने लगती है। बचपन के ये सस्कार युवावस्था मे विकसित होते है तो प्राकृतिक रूप से महाशक्ति के साथ उसका प्रेम भी उत्कर्ष को प्राप्त हो जाता है। यही कारण है कि भगवती महाशक्ति या श्री जगदीश्वर को स्त्री रूप मे उत्पन्न होने के लिए चारण जाति अधिक अनुकूल जान पड़ी और समय समय पर इस जाति में देवियों के अवतार होते रहे हैं। अनेक चारण कन्याए (नौ लाख शगत) धरती पर क्लेश निवारण कर देवी के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

भगवती आवड़जी और भगवती श्री करणीजी जो भगवती हिंगलाज की क्रमिक अवतार हुई हैं, की अन्य देवियों के समान ही मिश्र राजस्थान, कच्छ काठियावाड़, गुजरात और मालवा में पूजा की जाती रही है और इन्हें सामूहिक रूप से 'चौरासी चारण' कहा जाता है। क्योंकि चारण जाति को महाशक्ति की विशेष कृपापात्र रहने का सौभाग्य मिला है। चारण नारियों का विशेष रूप में उच्च चरित्र और पवित्र जीवन ही वह कारण रहा है जिससे भगवती ने इस छोटे से समाज को इतनी बड़ी कृपा के लिए पसद किया है। इस समाज में अवतरित शक्तियों की समस्त पश्चिमी भारत में पूजा की जाती है। राजस्थान और गुजरात की भाषा और साहित्य का अपनी देन के लिए चारण सुप्रसिद्ध रहे हैं।

चार शक्तिपीठ

वैष्णव सम्प्रदाय में तीन सिद्धपीठ माने जाते हैं। उत्तर में बद्रीनाथ पूर्व में जगन्नाथ और पश्चिम में द्वारकानाथ तथा शैव सम्प्रदाय में रुद्र के बारह ज्योतिलिंग माने गये हैं। इसी भांति शाक्त सम्प्रदाय में देवी के चार सिद्धपीठ हैं। पूर्व में कामाख्या, उत्तर में ज्वालामुखी, पश्चिम में हिंगळाज और दक्षिण में मीनाक्षी। इन पीठो से चारण जाति हिंगळाज देवी के सिद्धपीठ उपासक है। यह पता लगाना कठिन है कि यह देवी कब और कहा उत्पन्न हुई। इतना कहा जा सकता है कि यह एक पौराणिक देवी है।

आद्या भगवती हिंगळाज सर्वतत्त्वमयी आद्याशक्ति है। वे है तो ज्योति-रूप किन्तु अपने भक्तो के समक्ष नाना रूपों मे प्रकट होती है। वे निराकार और साकार भी है। वे एकरूपा भी है। 'हिंगळाज दर्शन प्रत्येक चारण का पवित्र कर्तव्य माना जाता है। चारण जाति के इतिहास में आद्याशक्ति हिंगळाज चारणों की कुलदेवी के रूप में मानी जाती है। इनका पवित्र स्थान पाकिस्तान मे लासबेला की

हिंगोळ नदी के पास स्थित है जहा गुफा में ज्योति के दर्शन होते हैं। वतमान पाकिस्तान के ब्लोचिस्तान में मकरान व लूस को अलग करने वाली गिरिमाला के पहाड़ की अंधेरी गुफा में श्री हिंगळाज देवी का मन्दिर स्थित है। प्राकृतिक गुफा की वह 50 फुट ऊची छत, गुफा के अन्तिम भाग में एक विशाल वेदी, उस पर जलता हुआ एकाकी दीपक। वेदी क इस छार पर एक द्वार और दूसरा द्वार उस छोर पर है, जिससे घुटनों के बल रेंगते हुए देवी के दशन करते हुए निकलना पड़ता है। हिंगळाज की विकट यात्रा ब्लोचिस्तान के मुसलमान भी 'नानी का हज' कह कर करते हैं।

'तन्त्र चूड़ामणि' ग्रन्थ के अनुसार प्रजापति दक्ष के वृहस्पति यज्ञ में भगवान शकर के अपमान स क्रोधित होकर सती ने अपना शरीर यज्ञ कुण्ड में डाल दिया (यह कुण्ड आज भी हरिद्वार के पास कनखल में स्थित है) जिसे कन्धे पर डालकर शिव उन्मत्त भाव से त्रिलोकी में घूमने लग। यह देखकर भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शरीर को टुकड़े-टुकडे कर गिरा दिया। सती के शरीर के खण्ड तथा आभूषण जहा-जहा गिरे वहा-वहा एक-एक शक्तिपीठ और एक-एक भैरव नाना स्वरूप लिए स्थित हुए। सती का ब्रह्मरन्ध्र हिंगळाज में गिरा। इसलिए हिंगळाज को शक्तिपीठों में प्रथम और प्रधान माना गया है। तत्र-ग्रथा में केवल इतना लिखा मिलता है कि महिषासुर के वध के अनन्तर जब भगवती ने अपने शरीर को रखने की आवश्यकता नहीं समझी तो उसके शरीर के चार भाग चारों दिशाओं में विभक्त हो गये। जिनमें ब्रह्मरन्ध्र का भाग भारत की पश्चिम सीमा की ओर गिरा। वहा वह हिंगळाज के नाम से पूजा जाता है। इस सिद्धपीठ पर भारत की पश्चिम सीमा समाप्त होती थी।

शिव और सती

त्रिदेवा अपि मे रूप हर पूर्णो विशेषत ।
उमाया अपि रूपाणि भविष्यन्ति त्रिधा सुत।।
(शि रू अ 10 श्लो 56)

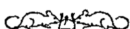
एक बार आशुतोष भगवान् शिवजी ने विष्णु से कहा था कि हे तात! यद्यपि ब्रह्मा, हर तथा तुम—तीनों ही मेरे रूप हो परन्तु विशेष कर हर ही मेरा पूर्ण रूप है, इसी प्रकार लक्ष्मी सरस्वती तथा उमा शक्ति के भी तीन रूप हैं, किन्तु उमा सबो में पूर्ण रूप है। विष्णु रूप की लक्ष्मी, ब्रह्मा रूप की सरस्वती तथा हर रूप की उमा अर्धाङ्गिनी हागी।

शिवजी के वचन को स्मरण कराते हुए विष्णु भगवान् ब्रह्माजी से कहते हैं, हे ब्रह्मन्! विष्णु रूप में मैंने लक्ष्मी को और ब्रह्मा रूप म आपने सरस्वती को ग्रहण किया है। परन्तु आदिशक्ति उमा के अवतीर्ण न होने के कारण सदाशिव अभी अविवाहित हैं। तो आप उमा के अवतीर्ण होने के लिए प्रयत्न कीजिए जिससे प्रजेश दक्ष प्रजापति के यहा उनका अवतार हो और वे सदाशिव की अर्धाङ्गिनी बनें। इस प्रकार ब्रह्मा से कह कर भगवान् अन्तधान हो गये।

ब्रह्माजी भगवान् विष्णु के इस प्रकार के वचनों को सुनकर अतिशय चिन्तातुर हो गये, उनको अहर्निश यह चिन्ता रहने लगी कि किस प्रकार वह आदिशक्ति को प्रसन्न करें जिसक तेज से वह सृष्टि के कार्य को आगे बढाने में सफलता प्राप्त करें। इस प्रकार सोचते हुए वे भगवती की स्तुति करने लगे।

विद्याविधात्मिका शुद्धा परब्रह्मस्वरूपिणीम्।
स्तौमि देवीं जगद्धात्रीं दुर्गाशभुप्रिया सदा।।
सर्वत्र व्यापिनी नित्या निरालम्बा निराकुलाम।
त्रिदेव जननीं वन्दे स्थूलस्थूलामरूपिणम्।।
त्व चिति परमानन्दा परमात्मस्वरूपिणी।
प्रसन्ना भव देवेशि मत्कार्य कुरु ते नम ।।
(शिव रू अध्याय 11 श्लोक 3, 4 5)

विद्या स्वरूपिणी तथा अविद्या अर्थात् माया रूपिणी एव शुद्ध परब्रह्म स्वरूपिणी, ससार का पोषण करने वाली, शम्भु प्रिया दुर्गा देवी की मैं स्तुति करता हू। ससार मे सर्व स्थानों में व्याप्त तथा नित्य पूर्ण अवलम्ब रहित निराकुल ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव—



नों देवो की उत्पत्ति की कारण-स्वरूपा स्थूलो मे ूल होते हुए भी रूप रहित हे भगवती। मै आपकी न्दना करता हू। नमस्कार करता हू। हे भगवती। आप काश रूप है तथा परमानन्द को देने वाली है, आप श्रय परमात्मा का ही स्वरूप है। हे देवी। मै आपको गाम करता हू। आप प्रसन्न होकर मेरा कार्य पूर्ण करे।

ब्रह्माजी द्वारा इस प्रकार प्रार्थना करने पर भगवती अपने स्वरूप को प्रकट किया। वह स्वरूप कैसा है

निग्धाञ्जनद्युतिश्चारूरूपा दिव्या चतुर्भुजा।
सिंहस्था वरहस्ता च मुक्तामणिकचोत्त्का।।
शरद्बिम्बानना शुभा चन्द्रमाला त्रिलोचना।
सर्वावयवरम्या च कमलाङ्घ्रिनखद्युति ।।
(शि रु अध्याय 11 श्लोक 7 8)

वह भगवती अर्थात् चिकने कज्जल के समान कान्तिवाली सुन्दर दिव्य रूपिणी, चतुर्भुजा सिंहवाहिनी वरदहस्ता, मुक्ता मणियों से देदीप्यमान घुघराले केशों वाली, शरत् चन्द्र के समान मुख वाली, मस्तक पर चन्द्रमा धारण किये हुए त्रिनेत्रा तथा सर्वाङ्ग सुन्दर कमल के समान कान्ति युक्त चरणनख धारण किये हुए सुन्दर स्वरूप में प्रकट हुइ।

इस प्रकार देदीप्यमान भगवती को प्रत्यक्ष सम्मुख देखकर ब्रह्माजी ने गद्गद वाणी से अत्यन्त भाव विह्वल होकर उनकी स्तुति की। ब्रह्माजी की आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा प्रेरित स्तुति को सुनकर भगवती ने कहा, ब्रह्मन्। आपको जो कहना है वह शीघ्र कहिये। मेरे प्रत्यक्ष होते ही सबके मनोरथ पूर्ण होते हैं। इसमें सशय नहीं। भगवती के इस प्रकार कहने पर ब्रह्माजी ने अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहा कि

श्रुणु देवि। महेशानि। कृपा कृत्वा ममोपरि।
मनोरथस्थ सर्वज्ञे। प्रवददामि त्वदायज्ञा।।
य पतिस्तव देवेशि। ललाटान्मेऽभवत्पुरा।
शिवो रुद्राख्य य योगी स वै कैलासमास्थित ।।
(शि रु अध्याय 11 श्लोक 20 21)

हे महेश्वरी। आपके पति जो पहले मेरे मस्तक से उत्पन्न हुए थे, वे ही रुद्र नामक योगी रूप शकर, कैलास पर है और वह निर्विकार निर्विकल्प समाधि में स्थित होकर तपश्चर्या कर रहे है। वह पत्नी रहित होकर भी विवाह नहीं करना चाहते। हे सती। जिस प्रकार वह पत्नी ग्रहण करे, आप उनको उस प्रकार मोहित कीजिये। आपके बिना दूसरा कोई भी उनके मन को हरण करने में समर्थ नहीं है। हे भगवती। स्वय आप दक्ष प्रजापति की कन्या के रूप मे उत्पन्न होकर अपने रूप तथा तपस्या से उनको मोहित करके उनकी अर्धाङ्गिनी बनें। ब्रह्माजी के इस प्रकार के वाक्यो को सुनकर भगवती ने मन में विचार किया कि यदि मै ब्रह्माजी को वर नहीं देती हू तो वेद मार्ग नष्ट होगा। अत वे सर्वव्यापक शङ्कर का स्मरण करके बोलीं—

हे ब्रह्मन। दक्ष की स्त्री से सती रूप में उत्पन्न होकर मै शङ्करजी को अपने प्रति आकृष्ट करूगी।

इधर देवी भी दक्ष पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुई। जिसका नाम सती रखा गया।

उधर सती के विवाह के योग्य हो जाने पर सभी देव शिवजी के पास सती से विवाह कर लेने का प्रस्ताव लेकर गये और उनकी स्तुति करने लगे।

तब शिवजी ने कहा कि हे ब्रह्मन। मै अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार ऐसी स्त्री को विवाहूगा जो मेरे तेज को ग्रहण करने में समर्थ हो, जो मेरे योग मे सलग्न हो जाने पर योगिनी हो जाये और काम मे आसक्त हो जाने पर कामिनी बन जाये। वेदों के ज्ञाता बुद्धिमान जिस अक्षर तत्त्व का निरूपण करते है मैं उसी ज्योति स्वरूप सनातन कल्याणमय रूप का चिन्तन करूगा। हे ब्रह्मन। जब उस चिन्तन में तत्पर हो जाऊ तब वह विघ्न करने वाली न हो अन्यथा वह मेरा भविष्य नष्ट करने वाली होगी।

इस प्रकार शङ्कर के वचन सुनकर मैं और विष्णु प्रसन्न होकर हसते हुए नम्रतापूर्वक बोले—हे नाथ। हे महेश। जैसी स्त्री आपने वतलाई है वैसी स्त्री आपको

बतलाते हैं। ह प्रभो! जिसने पहले लक्ष्मी और सरस्वती के दो रूप धारण किये थे वही हमारे कार्यों को सिद्ध करने वाली उमा अब तीसर रूप मे प्रकट हुई हैं। लक्ष्मी विष्णु भगवान् की और सरस्वती ब्रह्मा की पत्नी हुई तथा ससार का हित चाहने वाली तृतीय रूप धारण करने वाली उमा, अभी किसी की पत्नी नहीं हुई। वही आपके लिए सब प्रकार से हितकर होगी। हे देवेश! वही महातेजस्विनी सती आप को ही पति बनाने की इच्छा से आपके लिए ही दृढव्रत होकर तप कर रही है। उन पर कृपा कीजिये, उन्हें वर देने जाइये और इच्छित वर देकर उनके साथ विवाह कीजिये। हे शङ्कर! ब्रह्मा, विष्णु की और सब देवों की यही इच्छा है।

इधर सती ने तप करके वर पाकर घर आकर माता-पिता को प्रणाम किया। सती ने अपनी भक्ति से प्रसन्न हुए शिवजी से जो वर पाया था वह सखी के द्वारा माता-पिता को सुना दिया। सती की सखी से यह वृत्तान्त सुनकर माता-पिता बड़े पसन्न हुए और उन्होंने सती विवाह की तिथि निश्चित कर उसकी तैयारिया प्रारम्भ कर दी।

भगवान नन्दीश्वर पर चढकर शिवजी विष्णु इत्यादि देवताओं के साथ प्रीतिपूर्वक दक्ष के घर पहुचे।

तदनन्तर शुभ मुहूर्त में नवग्रह के बल से युक्त लग्न में शिवजी के लिए दक्ष ने प्रसन्नतापूर्वक सती का कन्यादान कर दिया, शिवजी ने प्रसन्न होकर विवाह विधि से सर्वांग-सुन्दरी दक्ष कन्या का पाणिग्रहण किया।

शिव व दक्ष मे विरोधाभाव

एक समय प्रयागराज में एकत्र हुए समस्त मुनिजनो ने एक महान यज्ञ किया। वहा सिद्ध, देवर्षि, सनकादिक, प्रजापति सहित देवता और मैं भी परिवार सहित महाकान्तियुक्त मूर्तिमान वेद शास्त्रों के साथ उपस्थित हुआ। उत्सव के साथ-साथ वहा विचित्र समाज जुड़ा और अनेक शास्त्रों पर प्रकाण्ड विचार होने लगा। उसी अवसर पर जगत् के कर्ता ससार के हितैषी शङ्कर स्वामी, सतीजी और गणो के साथ वहा आये। सारे देवता, सिद्ध मुनि तथा मैं शिवजी को देखकर भक्ति पूर्वक प्रणाम और स्तुति करने लगे। उसके बाद शिवजी की आज्ञा से सब लोग अपने-अपने स्थान पर बैठ गये और शिवजी के दर्शनो से सन्तुष्ट होकर अपने भाग्य को सराहने लगे।

उसी समय प्रजापतियो के स्वामी तेजस्वी दक्षजी अपनी इच्छा से वहा आये। ब्रह्माण्ड के अधिपति मान्य-मान्यतम महामानी दक्ष बहिर्मुख हो केवल मुझे ही प्रणाम करके मेरी आज्ञा स वहा बैठ गये। उस समय सारे देवता और ऋषियों ने विनय हो हाथ जोडकर प्रणामों और स्तुतियो से महातेजस्वी दक्ष का स्वागत किया। परन्तु अनेक प्रकार लीला विहार करने वाले परम स्वतन्त्र महेश्वर अपने स्थान पर बैठे रहे। उन्होंने दक्षजी को प्रणाम नहीं किया। तब शिवजी को प्रणाम करते हुए न देख मेरा पुत्र दक्ष बडा अप्रसन्न हुआ और शिवजी पर अत्यन्त कुपित हुआ तथा अत्यन्त गर्वित होकर क्रूर दृष्टि से शिवजी को देखता हुआ, सबको सुनाता हुआ ऊचे स्वर में बोला

'ये सब देव, असुर, ब्राह्मण, ऋषि मुझे देखकर प्रणाम करते है परन्तु यह भूत-पिशाचादिकों का साथी महामानी बनकर दुर्जन के समान क्यो बैठा ही रहा है? इस श्मशान सेवी, निर्लज्ज क्रियाहीन भूत-पिशाचो से सेवित मतवाले विधि विहीन नीति के विदूषक ने मुझे प्रणाम नहीं किया। यह पाखण्डी, दुर्जन, पापशील ब्राह्मण निन्दक, सदा वधू में आसक्त रति में प्रवीण है। अत मै इसे शाप देता हू।'

ऐसा कहकर वह महादुष्ट दक्ष क्रोधित हो शिवजी के प्रति बोला—'हे ब्राह्मणो तथा देवताओ! सभी सुनो। यह शिव मेरे द्वारा वध करने योग्य है। इस शिव को मै यज्ञ से बहिष्कृत करता हू। आज से इसे यज्ञ में देवताओं के साथ भाग नहीं मिलेगा क्योकि यह वर्णहीन है।'

यह सुनकर दधीचि ने कहा—भगवान् शङ्कर के बिना तो यह यज्ञ अयज्ञ ही हुआ। विशेषत इसमें तुम्हारा ही नाश होगा। ऐसा कहकर दधीचि ऋषि उस यज्ञ मण्डप से उठकर अपने आश्रम को चले गये। इसके



तीनों देवो की उत्पत्ति की कारण-स्वरूपा स्थूलो में स्थूल होते हुए भी रूप रहित हे भगवती। मै आपकी वन्दना करता हू। नमस्कार करता हू। हे भगवती। आप प्रकाश रूप है तथा परमानन्द को देने वाली है आप स्वय परमात्मा का ही स्वरूप है। हे देवी। मै आपको प्रणाम करता हू। आप प्रसन्न होकर मेरा कार्य पूर्ण करें।

ब्रह्माजी द्वारा इस प्रकार प्रार्थना करने पर भगवती ने अपने स्वरूप को प्रकट किया। वह स्वरूप कैसा है

स्निग्धाञ्जनद्युतिश्चारूरूपा दिव्या चतुर्भुजा।
सिंहस्था वरहस्ता च मुक्तामणिकचोत्कटा।।
शरद्विम्बानना शुभा चन्द्रमाला त्रिलोचना।
सर्वावयवरम्या च कमलाघ्रिनखद्युति ।।

(शि रू अध्याय 11 श्लोक 7 8)

वह भगवती अर्थात् चिकने कज्जल के समान कान्तिवाली सुन्दर दिव्य रूपिणी, चतुर्भुजा सिहवाहिनी, वरदहस्ता मुक्ता मणियों से देदीप्यमान घुघराले केशों वाली, शरत् चन्द्र के समान मुख वाली, मस्तक पर चन्द्रमा धारण किये हुए त्रिनेत्रा तथा सर्वाङ्ग सुन्दर कमल के समान कान्ति युक्त चरणनख धारण किये हुए सुन्दर स्वरूप में प्रकट हुई।

इस प्रकार देदीप्यमान भगवती को प्रत्यक्ष सम्मुख देखकर ब्रह्माजी ने गद्गद वाणी से अत्यन्त भाव विह्वल होकर उनकी स्तुति की। ब्रह्माजी की आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा प्रेरित स्तुति को सुनकर भगवती ने कहा ब्रह्मन्। आपको जो कहना है वह शीघ्र कहिये। मेरे प्रत्यक्ष होते ही सबके मनोरथ पूर्ण होते है। इसमे सशय नहीं। भगवती के इस प्रकार कहने पर ब्रह्माजी ने अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहा कि

श्रृणु देवि। महेशानि। कृपा कृत्वा ममोपरि।
मनोरथस्थ सर्वज्ञे। प्रवददामि त्वदाज्ञया।।
य पतिस्तव देवेशि। ललाटान्मेऽभवत्पुरा।
शिवो रुद्राख्य य योगी स वै कैलासमास्थित ।।

(शि रु अध्याय 11 श्लोक 20 21)

हे महेश्वरी। आपके पति जो पहले मेरे मस्तक से उत्पन्न हुए थे, वे ही रुद्र नामक योगी रूप शकर, कैलास पर है और वह निर्विकार निर्विकल्प समाधि में स्थित होकर तपश्चर्या कर रहे है। वह पत्नी रहित होकर भी विवाह नहीं करना चाहते। हे सती। जिस प्रकार वह पत्नी ग्रहण करे, आप उनको उस प्रकार मोहित कीजिये। आपके बिना दूसरा कोई भी उनके मन को हरण करने में समर्थ नहीं है। हे भगवती। स्वय आप दक्ष प्रजापति की कन्या के रूप में उत्पन्न होकर अपने रूप तथा तपस्या से उनको मोहित करके उनकी अर्धाङ्गिनी बन। ब्रह्माजी के इस प्रकार के वाक्यों को सुनकर भगवती ने मन में विचार किया कि यदि मै ब्रह्माजी को वर नहीं देती हू तो वेद मार्ग नष्ट होगा। अत वे सर्वव्यापक शङ्कर का स्मरण करके बोलीं—

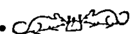
हे ब्रह्मन। दक्ष की स्त्री से सती रूप मे उत्पन्न होकर मै शङ्करजी को अपने प्रति आकृष्ट करूगी।

इधर देवी भी दक्ष पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुई। जिसका नाम सती रखा गया।

उधर सती के विवाह के योग्य हो जाने पर सभी देव शिवजी के पास सती से विवाह कर लेने का प्रस्ताव लेकर गये और उनकी स्तुति करने लगे।

तब शिवजी ने कहा कि हे ब्रह्मन। मै अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार ऐसी स्त्री को विवाहूगा जो मेरे तज को ग्रहण करने मे समर्थ हो, जो मेरे योग में सलग्न हो जाने पर योगिनी हो जाये और काम म आसक्त हो जाने पर कामिनी बन जाये। वेदो के ज्ञाता बुद्धिमान जिस अक्षर तत्त्व का निरूपण करते है मैं उसी ज्योति स्वरूप सनातन कल्याणमय रूप का चिन्तन करूगा। हे ब्रह्मन। जब उस चिन्तन में तत्पर हो जाऊ तब वह विघ्न करने वाली न हो अन्यथा वह मेरा भविष्य नष्ट करने वाली होगी।

इस प्रकार शङ्कर के वचन सुनकर मैं और विष्णु प्रसन्न होकर हसते हुए नम्रतापूर्वक बोले—हे नाथ। हे महेश। जैसी स्त्री आपने बतलाई है वैसी स्त्री आपको



बतलाते हैं। हे प्रभो! जिसने पहले लक्ष्मी और सरस्वती के दो रूप धारण किये थे वही हमारे कार्यों को सिद्ध करने वाली उमा अब तीसरे रूप में प्रकट हुई हैं। लक्ष्मी विष्णु भगवान् की और सरस्वती ब्रह्मा की पत्नी हुई तथा ससार का हित चाहने वाली तृतीय रूप धारण करने वाली उमा, अभी किसी की पत्नी नहीं हुई। वही आपके लिए मब प्रकार से हितकर होगी। हे देवेश! वही महातजस्विनी सती आप को ही पति बनाने की इच्छा से आपके लिए ही दृढ्वत होकर तप कर रही हैं। उन पर कृपा कीजिये, उन्हें वर देने जाइये और इच्छित वर देकर उनके साथ विवाह कीजिये। हे शङ्कर! ब्रह्मा, विष्णु की और सब देवों की यही इच्छा है।

इधर मती ने तप करके वर पाकर, घर आकर माता-पिता का प्रणाम किया। सती ने अपनी भक्ति से प्रसन्न हुए शिवजी से जो वर पाया था वह सखी के द्वारा माता-पिता को सुना दिया। सती की मखी से यह वृत्तान्त सुनकर माता-पिता बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने सती विवाह की तिथि निश्चित कर उसकी तैयारिया प्रारम्भ कर दी।

भगवान नन्दीश्वर पर चढ़कर शिवजी विष्णु इत्यादि देवताओं के साथ प्रीतिपूर्वक दक्ष के घर पहुचे।

तदनन्तर शुभ मुहूर्त में नवग्रह के बल से युक्त लग्न में शिवजी के लिए दक्ष ने प्रसन्नतापूर्वक सती का कन्यादान कर दिया, शिवजी ने प्रसन्न होकर विवाह विधि से सर्वांग-सुन्दरी दक्ष कन्या का पाणिग्रहण किया।

शिव व दक्ष में विरोधाभाव

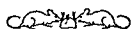
एक समय प्रयागराज में एकत्र हुए समस्त मुनिजनों ने एक महान यज्ञ किया। वहा सिद्ध देवर्षि, सनकादिक, प्रजापति सहित देवता और मै भी परिवार सहित महाकान्तियुक्त मूर्तिमान वेद शास्त्रों के साथ उपस्थित हुआ। उत्सव के साथ-साथ वहा विचित्र समाज जुड़ा और अनेक शास्त्रों पर प्रकाण्ड विचार होने लगा। उसी अवसर पर जगत् के कता ससार के हितैषी शङ्कर स्वामी, सतीजी और गणों के साथ वहा आये। सारे देवता, सिद्ध मुनि तथा मैं शिवजी को देखकर भक्ति पूर्वक प्रणाम और स्तुति करने लगे। उसके बाद शिवजी की आज्ञा से सब लोग अपने-अपने स्थान पर बैठ गये और शिवजी के दर्शनों से सन्तुष्ट होकर अपने भाग्य को सराहने लगे।

उसी समय प्रजापतियों के स्वामी तेजस्वी दक्षजी अपनी इच्छा से वहा आये। ब्रह्माण्ड के अधिपति मान्य-मान्यतम महामानी दक्ष बहिर्मुख हो केवल मुझे ही प्रणाम करके मेरी आज्ञा से वहा बैठ गये। उस समय सारे देवता और ऋषियों ने विनम्र हो हाथ जोड़कर प्रणामों और स्तुतिया से महातेजस्वी दक्ष का स्वागत किया। परन्तु अनेक प्रकार लीला विहार करने वाले परम स्वतन्त्र महेश्वर अपने स्थान पर बैठे रहे। उन्होंने दक्षजी को प्रणाम नहीं किया। तब शिवजी को प्रणाम करते हुए न देख मेरा पुत्र दक्ष बड़ा अप्रसन्न हुआ और शिवजी पर अत्यन्त कुपित हुआ तथा अत्यन्त गर्वित होकर क्रूर दृष्टि से शिवजी को देखता हुआ सबको सुनाता हुआ ऊचे स्वर में बोला

'ये सब देव, असुर, ब्राह्मण, ऋषि मुझे देखकर प्रणाम करते हैं परन्तु यह भूत-पिशाचादिको का साथी महामानी बनकर दुर्जन के समान क्यों बैठा ही रहा है? इस श्मशान सेवी निर्लज्ज क्रियाहीन भूत-पिशाचो से सेवित मतवाले विधि विहीन नीति के विदूषक ने मुझे प्रणाम नहीं किया। यह पाखण्डी दुर्जन, पापशील ब्राह्मण निन्दक, सदा वधू में आसक्त रति मे प्रवीण है। अत मै इसे शाप देता हू।'

ऐसा कहकर वह महादुष्ट दक्ष क्रोधित हो शिवजी के प्रति बोला—'हे ब्राह्मणो तथा देवताओ! सभी सुनो। यह शिव मेरे द्वारा वध करने योग्य है। इस शिव को मै यज्ञ से बहिष्कृत करता हू। आज से इसे यज्ञो में देवताओ के साथ भाग नहीं मिलेगा क्योकि यह वर्णहीन है।'

यह सुनकर दधीचि ने कहा—भगवान् शङ्कर के बिना तो यह यज्ञ अयज्ञ ही हुआ। विशेषत इसमे तुम्हारा ही नाश होगा। ऐसा कहकर दधीचि ऋषि उस यज्ञ मण्डप से उठकर अपने आश्रम को चले गये। इसके



अनन्तर वहा और भी जो शिव भक्त थे, वे सब दक्ष को शाप देकर अपने-अपने आश्रमो को चले गये।

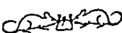
दक्ष ने कहा—मै यही चाहता था तथा बुद्धिमान मन्दात्मा, मिथ्यावादी, दुष्ट, वेद बहिष्कृत, दुराचारी, इन लोगो को तो यज्ञ मे बुलाना ही नही चाहिये। विष्णु आदि आप सभी लोग वेदवक्ता है, आप सब मिलकर मेरे यज्ञ को सफल करें।

सती द्वारा शिव से यज्ञ मे जाने का आग्रह

जिस समय देवता और ऋषि लोग दक्ष प्रजापति के यज्ञ मे जा रहे थे उसी समय गन्धमादन पर्वत पर दक्ष पुत्री सती देवी अपनी सहचारियो के साथ धारागृह मे कौतुक पूर्वक क्रीडाए कर रही थी, उसी समय सती ने रोहिणी को साथ लेकर चन्द्रमा को दक्ष यज्ञ मे जाते देखकर अपनी प्राणो के समान प्यारी सखी विजया से पूछा—'हे विजये। मुझे यह बतलाओ कि रोहिणी को साथ लेकर तीव्र गति से यह चन्द्रमा कहा जा रहा है?' सती के वचन सुनते ही विजया तुरन्त चन्द्रमा के समीप गई और—'आप कहा जा रहे है?' इस प्रकार उनसे पूछा। विजया के वचन सुनकर चन्द्रमा ने दक्ष-प्रजापति के यज्ञ में अपने जाने का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया। उसके वचन सुनकर विजया देवी ने सती के पास आकर जो चन्द्रमा ने कहा था वह सुना दिया। यह सुनकर देवी सती बडी विस्मित हुई। शिवजी के लिए निमन्त्रण न आने का कारण सोचने लगी कि दक्ष मेरे पिता हैं, वीरणी मेरी माता है। फिर उन्होंने मुझे, अपनी प्रिय पुत्री को क्यों भुला दिया? निमन्त्रण भी नहीं भेजा। इसका कारण चलकर प्रभु शङ्करजी से ही पूछना चाहिये। इसके अनन्तर दक्ष पुत्री देवी सती अपनी श्रेष्ठ सखी विजया को वहीं खडा कर शिवजी के समीप पहुची। वहा जाकर देखा कि सभा जुड़ रही है। नन्दी आदि महावीर यूथपति गणा में शङ्कर को देवी सती ने प्रणाम कर अपने पिता दक्ष प्रजापति के यहा से निमन्त्रण न आने का कारण पूछा। शिवजी ने सती का अपने समीप बैठाया और प्रमपूर्वक बोले—'तुम बड़ी आश्चर्यान्वित-सी होकर इस सभा में आई हो। तुम अपने पिता दक्ष के यहा जाने को क्यों उत्कण्ठित हो रही हो? सती बोली—मेरे पिता ने कनखल क्षेत्र में एक महायज्ञ रचाया है, मैंने सुना है कि सभी ऋषि लोग वहा एकत्र हुए हैं। आपको मेरे पिता क महायज्ञ म जाना क्यो अच्छा नहीं लगता? प्रभु आप मुझे शीघ्र बतलाइये। आप सब काम छोडकर मेरी प्रार्थना से मेरे साथ पिता के यज्ञ मण्डप में चलिये। सतीजी के वचन सुनकर शङ्कर भगवान् बोले—'हे देवि। तुम्हारे पिता दक्ष मुझसे विशेष वैमनस्य रखते हैं। जो-जो देवता और ऋषि दक्ष का मान करते है, वही तुम्हारे पिता के यज्ञ में भाग ले रहे है। जो लोग बिना बुलाये दूसरे के घर मे जाते हैं, वो मरण से भी अधिक अपमान को प्राप्त होते हैं। बिना बुलाये जाना हमारे और तुम्हारे लिए महा अनर्थकारी होगा। इसलिये मुझे और तुम्हें दक्ष के यज्ञ में नहीं जाना चाहिये, सम्बन्धिया के आक्षेप से मनुष्य का अन्त करण दु खी होता है, इसलिये जाना अच्छा नहीं है।'

इस प्रकार शङ्करजी ने सती से कहा तो सती क्रोधित होकर शङ्कर से बोली—हे शम्भो। आप वह सर्वेश्वर है, जिनसे यज्ञ सफल होता है, परन्तु मेरे पिता ने आपको नही बुलाया। मै अपने पिता का तथा यज्ञ में आये हुए देवताओ और ऋषियों का अभिप्राय जानना चाहती हू। हे नाथ। मै अपने पिता के यज्ञ में जाना चाहती हू। आप मुझे जाने की आज्ञा दीजिये। इस प्रकार बार-बार सती के कहने पर शङ्कर भगवान् बोले—हे देवि। यदि तुम्हारी वहा जाने की उत्कट इच्छा है तो मैं तुम्हें आज्ञा देता हू। तुम अपने पिता के यज्ञ में जाओ। इस नन्दीश्वर बैल को सजाकर इस पर चढकर बहुत से गण साथ लेकर ठाट-बाट से अपने सब भूषण पहन कर जाओ। शिवजी की आज्ञा से साठ हजार रुद्रगण उत्साहपूर्वक सती के साथ जाने को तैयार हो गये।

सतीजी वहा पहुची जहा कनखल में यह विशाल यज्ञ हो रहा था। सती को आते देखकर उसकी माता (वीरणी) तथा बहिनो ने उसका यथोचित स्वागत किया परन्तु दक्ष-प्रजापति तथा उसके अनुयायियों ने शिवजी की माया से मोहित होकर उन्ह देखकर, कुछ भी आदर नहीं किया। देवी सती ने अपने माता-पिता को प्रणाम किया। सतीजी को बन्धुवर्ग के सामने अपमानित होकर अत्यन्त दु ख हुआ।



ब्रह्माजी ने कहा—दक्ष ने शिवजी को सभा म नीचा दिखाने के लिये एक समय मायापुरी कनखल में एक महायज्ञ का अनुष्ठान किया।

दक्ष प्रजापति ने सबका सत्कार किया। हिमालय के नीचे मायापुरी कनखल तीर्थ म यह महायज्ञ आरम्भ हुआ।

परन्तु दुरात्मा दक्ष ने उस यज्ञ मे शिवजी को नहीं बुलाया। यह कहकर कि 'वे कपाल धारण करते हैं इसलिये यज्ञ के योग्य नहीं है। ऐसे समय पर भगवान् शङ्कर को न देखकर उद्विग्न चित्त होकर शिव भक्त दधीचि ऋषि कहने लगे—'देवताओ और ऋषियो। आप सभी सोचिये कि इस महायज्ञ में शिव भगवान् क्या नहीं आय? यद्यपि इस यज्ञ म सभी देवराज और लोकपाल तथा बड़े-बड़े मुनीश्वर आये हैं, तो भी भगवान् शिवजी के बिना यह यज्ञ सुशोभित नहीं होता। बड-बड़े विद्वान् लोग जिनको सम्पूर्ण मगलों का मूल कहते हैं, वे ही पुराण पुरुष नीलकण्ठ महेश दिखाई नहीं पड़ते। हे दक्ष प्रजापते! उनकी प्राप्ति से अमगल भी मगल हो जाते हैं। इसलिये ब्रह्मा अथवा विष्णु को भेजकर आपको अवश्य ही शिवजी को बुला लेना चाहिये। जहा भगवान् शङ्कर है वहा आप सभी लोगों को जाना चाहिये। हे दक्ष प्रजापते! जगदम्बा श्री सतीजी के साथ शिव भगवान् शङ्कर को अवश्य ही प्रयत्न कर यहा लाना चाहिये, अन्यथा आपका यह यज्ञ अपूर्ण ही रह जायेगा।'

'जिन्होंने समस्त विश्व को पवित्र किया है, उन्हीं मेरे पति भगवान् शङ्कर को आपने क्यों नहीं बुलाया? स्वय यज्ञ स्वरूप, यज्ञ की विधि जानने वालों में श्रेष्ठ, यज्ञ के अग यज्ञ के दक्षिण स्वरूप, यज्ञकर्ता शिवजी के बिना आपने इस यज्ञ का अनुष्ठान क्यों किया? क्या आपने शङ्कर भगवान् को सामान्य देवता समझकर उनका अपमान किया? पिताजी! आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। आपने अभी भगवान् शङ्कर को नहीं पहचाना। आपका यज्ञ कैसे सफल होगा? इस प्रकार सतीजी ने क्रोधित होकर व्यथित हृदय से अनेकों बाते कहीं। विष्णु आदि सभी देवता तथा मुनीश्वर सती के वचन सुनकर भय से घबराकर मौन रहे। तदनन्तर दक्ष प्रजापति अपनी पुत्री के वचन सुनकर क्रोधित हो उन्हे क्रूर दृष्टि से देखते हुए बोले—भद्रे! अधिक कहने से क्या लाभ? तू यहा चली क्यों आई? चाहे यहा रह, चाहे चली जा। हमें तुझसे कोई प्रयोजन नहीं, विद्वान लोग तेरे पति शिव को अमागलिक, अकुलीन, वेद बहिष्कृत तथा भूत-प्रेत, पिशाचों का राजा बताते है। इस कारण कुवेशधारी तेरे पति शिव को यज्ञ में नहीं बुलाया। हे पुत्री! मैंने विचार किया कि देवता तथा ऋषियों की सभा में उसका क्या काम? मुझ मन्द बुद्धि ने ब्रह्मा के कहने से दरिद्र, उद्दण्ड, दुरात्मा शिव को तुम्हे दे दिया। हे शुचिमते! तू क्रोध को त्याग कर स्वस्थ हो। अब तू इस यज्ञ में आई है तो अपना स्थान ग्रहण कर।

इस प्रकार से दक्ष प्रजापति के कहने पर त्रैलोक्य पूजिता सती निन्दित दृष्टि से अपने पिता को देखती हुई अत्यन्त क्रोधित हुई। वे विचार करने लगी कि 'मैं पति दर्शन की इच्छुक हू। कैसे उनके पास जाऊ? वह पूछेंगे तो क्या उत्तर दूगी?' जगत् को उत्पन्न करने वाली देवी क्रोध स बार-बार सास लेती हुई दुष्ट चित्त वाले अपने पिता से बोली—जो शिवजी की निन्दा करते हैं अथवा सुनते है वह जब तक सूर्य, चन्द्र हैं तब तक नरक में निवास करते हैं। हे पिताजी! अपने स्वामी का अपमान सुनकर, मुझे जीने से क्या प्रयोजन? अत मैं अग्नि में प्रवेश करके शरीर त्याग दूगी। यदि मनुष्य में कुछ शक्ति हो तो उस शिवजी के निन्दक की जिह्वा काट लें और यदि असमर्थ हो तो अपने कान बदकर कहीं अन्यत्र चला जाये। तब उसका प्रायश्चित्त होता है। ऐसा विद्वान् लोग कहते है।' इस प्रकार धर्म नीति का वर्णन कर सती पश्चात्ताप करने लगी और दु खित चित्त से शिवजी के वाक्य स्मरण करने लगी। तदनन्तर सती क्रोधित और नि शक भाव से दक्ष तथा विष्णु आदि देवता और मुनियों स बोली—पिताजी! तुम शिवजी के घोर निन्दक हो, अत पछताओगे।'

दक्ष के यज्ञ में इतना कहकर सती मौन हो पुन -



पुन मन मे प्राणप्रिय शङ्कर भगवान् का स्मरण करने लगी। अपने शरीर को त्यागने की इच्छा से सती ने योग मार्ग से शुद्ध हुए शरीर मे पवित्र वायु को धारण किया। तदनन्तर योग में चित्त लगाती हुई सती ने केवल अपने पति क ही चरणो का स्मरण किया, अन्य किसी को भी नहीं देखा। हे मुनिश्रेप्ठ! उसका वह शरीर उसकी इच्छा से सर्वथा विकार रहित होता हुआ एकाएक भस्म हो गया। सती के प्राण छोडने पर जब सभी लोग आपस मे इस विपय की चर्चा कर रहे थे कि इस समाचार को सुनकर शिवजी के गण हाथो मे शस्त्र लेकर उठ खडे हुए। यज्ञशाला के द्वार पर शिवजी के साठ हजार गण उपस्थित थे। वे सब उठ खडे हुए तथा देवताओ आदि का सहार करने लगे, किन्तु भृगु ऋषि ने मन्त्र के बल से उन्हे रोक दिया।

भृगु ऋषि के मन्त्र बल से भागे हुए शिवजी के गण शिवजी की शरण मे आये और प्रणाम कर तेजस्वी शिवजी को सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाने लगे। उन्होंने बताया कि दक्ष तथा देवताओं ने महागर्व से सती का अपमान किया। आपका भाग न देकर अन्य समस्त देवताओ के लिए भाग दिये और दुप्ट दक्ष ने गर्वित हो आपके प्रति बहुत दुर्वचन कहे है। तदनन्तर आप का भाग न देखकर श्री सतीजी को बडा क्रोध आया और उन्होने अपने पति की घोर निन्दा सुनकर अपने शरीर को भस्म कर डाला। भृगु ऋषि ने अपने मन्त्र प्रभाव से हमे पराजित किया है। हे विश्वम्भर! हम भयभीत होकर आपकी शरण मे आये है। हमारे साथ निर्दयता पूर्ण व्यवहार हुआ है। आप कृपा कर हमें निर्भय करें। महाप्रभो! उस यज्ञ में दक्ष आदि दुप्टा ने हमारा अत्यन्त अपमान किया है। यह हमने अपना और सतीजी का तथा उस यज्ञ का सारा वृत्तान्त सुना दिया। अब आपकी जो इच्छा हो वह कीजिये।

ब्रह्माजी न नारद से कहा कि यह सुनकर शङ्कर भगवान् अत्यन्त कुपित हुए। लोक-सहारकारी शङ्करजी ने एक जटा को उखाड़ा और उस क्रोध से पर्वत पर दे मारा। हे मुन! भगवान् शङ्कर की उस जटा के पर्वत पर पड़ते ही दो खण्ड हा गये और महाप्रलय के समान भयकर शब्द हुआ। हे देवर्पि! उस जटा के पूर्व भाग से महा भयकर गणों का अग्रसर महाबली वीरभद्र उत्पन्न हुआ। वह प्रलयाग्नि के समान तेजस्वी, अत्यन्त उन्नत तथा दो हजार भुजा वाला था और महारुद्र शङ्कर भगवान् के क्रोध से जटा के दूसरे भाग से अत्यन्त भयकर और करोडों भूतों से घिरी हुई महाकाली उत्पन्न हुई।

तदनन्तर वीरभद्र बोले—'हे भगवान्! आपकी लीला मात्र से सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं तो भी कृपाकर इस कार्य के लिये मुझे भेजिये। आपकी कृपा से ही मुझमें शक्ति है। आपकी कृपा के बिना किसी में भी वह शक्ति नहीं है।' वीरभद्र के कथन को सुनकर भगवान् सदाशिव प्रसन्न हुए।

उधर महाकाली भी काली, कात्यायनी, ईशानी, चामुण्डा, मुण्डमर्दिनी, भद्रकाली, भद्रा, स्वहिता, वैष्णवी आदि शक्तियों सहित डाकिनी, शाकिनी, भूत प्रमथ गुह्यक कूष्माण्ड, परिचटक, ब्रह्मराक्षस और सपरिवार नवदुर्गा सहित चौसठ योगिनी के समूह के साथ वीरभद्र के साथ चली।

दक्ष की यज्ञभूमि मे भूकम्प होने लगा और दक्ष को मध्याह्न के समय भी अद्‌भुत नक्षत्र दिखाई देने लगे। दक्ष का मण्डप भयकर पवनो से उडने लगा जिसे दक्ष और देवताओं ने मिलकर नवीन और अद्‌भुत बनाया था। दक्षादिक सभी लोग बार-बार रुधिर वमन करने लगे और ताकुओ से छिदे हुए मास खण्ड पवन मे आने लगे। इसी प्रकार समस्त दीपक काप उठे। इस प्रकार देवताओं ने महाअरिप्ट देखा। इससे विप्णु आदि को भी महाभय हुआ, उसी समय वहा आकाशवाणी हुई।

रे दक्ष। तेरे जन्म को धिक्कार है, तू बड़ा पापात्मा तथा महामूढ निकला। तुझे शिवजी से अनिवार्य दु ख प्राप्त होगा। हा! खेद है कि यहा जितने देवता हैं उन्हें भी महादारुण दु ख प्राप्त होगा, इसमें सशय नहीं।

'हे दक्ष! तुमने शिव तत्त्व को न जानकर परमात्मा स्वरूप सर्वेश्वर भगवान् शङ्कर की अवज्ञा की है, जहा पर अपूज्य पूजे जाते हैं और पूज्य का अपमान हाता है



वहा दारिद्र्य, मरण और भय—ये तीनों उपस्थित होते हैं। इसलिये शिवजी की पूजा करो। शिवजी का तिरस्कार करने से ही यह महाभय उपस्थित हुआ है।' उसी समय महासेना को लेकर शिवजी का भेजा हुआ गणनायक वीरभद्र उस यज्ञ में आ पहुचा।

विष्णु बोले। हे दक्ष! आज इसको रोकने के लिये मुझमें शक्ति नहीं, क्योंकि मैं शपथ का उल्लघन करने से शिवजी का द्रोही बन गया हू। मेरा सुदर्शन चक्र भी इस पर कोई असर नहीं करेगा, क्योंकि यह चक्र भी शिवजी के अभक्तों पर चलता है।

उस महावली ने महात्रिशूल लेकर देवताओं को गिराना आरम्भ किया। इस प्रकार समस्त देवता पराजित होकर भागने लगे और एक-दूसर का छोड़कर स्वर्ग को चले गये। भृगु को मृग का रूप धारण कर आकाश मार्ग से भागते देखकर, वीरभद्र ने पकड़कर उनका सिर काट डाला। नन्दीश्वर ने भृगु देवता को पृथ्वी पर गिराकर क्रोध से उसकी आख निकाल ली क्योंकि उसने दक्ष के पक्ष में रहकर शिवजी की निन्दा की। गणों ने उस यज्ञ का बिल्कुल विध्वस कर दिया। दक्ष भयभीत होकर वेदी के पीछे जा छिपा। यह देख कर वीरभद्र ने उसे वहा स भी बलपूर्वक पकड़ लिया।

सभी प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से सिर का कटना असम्भव जानकर पैरों से उसके वक्ष स्थल पर चढकर हाथ से ही उस का सिर तोड़ दिया। यह सब कार्य करके वह वीर जैसे अन्धकार को नष्ट करके सूर्य चलता है, उसी प्रकार कैलास को चला गया।

श्री हिंगळाज माँ एव 51 शक्तिपीठ

उपरोक्त कार्य हो जाने के बाद शकर भगवान सती के वियोग मे बहुत दु खी हुए तथा सती का शव लेकर त्रिलोकी में घूमने लगे। तदनतर विष्णु भगवान ने शिवजी को व्याकुल देखकर शिवजी के द्वारा दिए गए चक्र से सती के शरीर को काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। सतीजी के देह एव आभूषणों के 51 टुकडे भिन्न-भिन्न स्थानों पर गिरे, जिससे भारत में उन-उन स्थानों पर शक्तिपीठ स्थापित हुए, जो इस समय उन्हीं स्थानो पर सुरक्षित हैं। इन शक्तिपीठों की उत्तम कथा कहने और सुनने पर चारों वर्ग—अर्थ, धर्म, कर्म तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। निम्नलिखित शक्तिपीठ देवियां का शुभ स्रोत है और सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाला है।

पुराब्रह्मारध्र गत हिंगुलाजे,
यत कोटरी शक्ति रूपा तु देवी।
तदन्तेऽवसद् भैरवो भीमनेत्रो।
गुहाया गता द्रश्यते साम्प्रत या।।1।।

देवी का मस्तक हिंगळाज में गिरा, वहा कोट्टरी नाम की शक्ति तथा भीमलोचन नाम के भैरव स्थापित हुए।

किरोट किरीट वटस्यापि पार्श्वेऽपतज्जान्हवीतीरदेशे तु भूमौ।
सशक्तिस्ततोवैमलींसविधाय, तुसजतक भैरवसञ्चकार।।2।।

देवी का किरीट, किरीट नगर के वट के पार्श्व में पडा उससे वैमली शक्ति और सवत नाम के भैरव का आविर्भाव हुआ।

सुवृन्दाने केशपाशे विपीर्णे,
उमा शक्तिरेका प्रसिद्धा बभूव।
गतो भैरवस्तत्रा भूतेशसज्ञस्तटे,
यामुने साम्प्रत सविभाति।।3।।

वृन्दावन मे केशों का पात हुआ, जिससे उमा नाम की शक्ति तथा भूतेश नाम के भैरव हुए जो यमुना तट पर स्थित है।

वक्रेश्वरे मन पाते जाता महिषमर्दिनी।
अष्टवक्रतपस्तीर्थे वक्रनाथस्तु भैरव ।।4।।

मन, वक्रेश्वर स्थान में गिरा, जहा महिमर्दिनी नाम की शक्ति तथा वक्रनाथ भैरव हुए।

त्रिनेत्रे पतिते भूमौ करवीरे च सम्प्रति।
क्रोधीशो भैरवो जातो देवी महिषमारिणी।।5।।

तीनों नत्र करवीर देश मं पडे, जहा महिमारिणी शक्ति तथा क्रोधीश नामक भैरव हुए।

करतोयाततटे वामे गते कर्णे त्वपर्णिका।
भैरवा वामनो यत्र वगदेशे प्रकीर्तित ।।6।।

बाया कान बगाल देश की करतीया नदी के तट पर पडा उससे अपर्णा दुर्गा नाम की शक्ति और वामन नाम के भैरव हुए।

श्रीशैले दक्षिणे कर्णे खण्डे शक्तिस्तु सुन्दरी।
भैरव सुन्दरानन्दो जातो देशे च दक्षिणे।।7।।

दाया कान श्रीपवत पर पडा जिससे सुन्दरा नाम की शक्ति तथा कुन्दरानन्द नाम क भैरव हुए।

श्रवसो कुण्डल वात वाराणस्या शुभे तते।
येन शक्ति विशालाक्षी कालस्तुभैरवस्तया।।8।।

कान के कुण्डल काशीजी म गिरे जिससे विशालाक्षी शक्ति तथा काल भैग्व हए।

नासिका तु सगन्धिन्या त्र्यम्वक भैरव मुदा।
सुनन्दास्या महादेवी पतित्वा कुर्वती वभौ।।9।।

सुगन्धा म नासिका गिरी जिससे सुनन्दा नाम की शक्ति और त्र्यम्वक भैरव हुए।

गोदातटे वागमण्डे नष्टे विश्वेश्वरी त्वियम्।
भैरवो दण्डपाणिश्च यत्र रक्षति सवदा।।10।।

गोदावरी के तट पर बाया कपोल गिरा, जिससे महेश्वरी नाम की शक्ति तथा दण्डपाणि भैरव हुए।

गण्डक्या दक्षिणे गण्ड शीर्णे शक्तिस्तु गण्डकी।
भैरव वक्रपाणिश्च शालिग्रामजनो भुवि।।11।।

दाया कपोल जहा शालिगाम की मूर्ति निकलती है उस गण्डकी नदी म पडा जिससे गण्डकी शक्ति तथा वक्रपाणि भैरव हुए।

ऊर्ध्वदन्ते विशीर्णे च शक्तिर्नारायणी वभो।
सहारो भैरवस्तत्र शुचौ बगे वभूव सा।।12।।

बगाल के शुचि नाम के स्थान पर ऊपर के दात गिर जिसम नारायणी शक्ति तथा सहार नामक भैरव हुए।

अधस्था दन्तपक्तिस्तु वाराही निर्ममा भुवि।
पञ्चसागरजे देशे सहार भैरवस्तथा।।13।।

नीचे के दात पञ्चमागर नामक स्थान में पडे, जिसमे वाराही शक्ति और सहार नामक भैरव हुए।

ज्वालामुखी देशगता तु जिह्वा,
श्री सिद्धिका सिद्धिकरी जनानाम्।
पच प्रदेशे विभावादिदानी,
मुन्मत्तरूप दधती गण सा।।14।।

जिह्वा ज्वालामुखी में गिरी, जिससे सिद्धिदा शक्ति तथा उन्मत्त भैरव स्थापित हुए।

ऊधर्वस्थे पतिते चोष्ठे जनता शक्तिरवन्तिका।
भैरवो लम्बकर्णश्च पर्वत भैरवे शुभे।।15।।

भैरव पर्वत पर ऊपर का होंठ गिरा, जिससे अवन्ती शक्ति तथा लम्बकर्ण भैरव हुए।

अध स्थ नाशमापन्ने त्वोष्ठ शक्तिश्च फुल्लरा।
अट्टहासे गते शुभ्रे विश्वेशो भैरवस्तथा।।16।।

अटटहास में नीचे के होंठ गिरने से फुल्लरा शक्ति तथा विश्वेश भैरव हुए।

चिबुकश्चभ्रामरीजाता जलग्रामे च दण्डके।
भैरवोविकृताक्षस्तु भक्तपीडाप्रणाशम ।।17।।

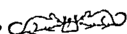
ठोडी से जलगाव दण्डकारण्य के पास भ्रमरी शक्ति और भक्तो के दु खनाशक विकृताक्ष भैरव हुए।

महामाया तु सजाता कण्ठापातेन सत्त्वरम्।
त्रिस्न्ध्येश्वरस्त्रापि कश्मीरेषु तु भैरव ।।18।।

कण्ठ कश्मीर क्षेत्र में गिरा, जिससे महामाया शक्ति तथा त्रिसध्येश्वर भैरव हुए।

नन्दीपुरे कण्ठहारो येन शक्तिस्तु नन्दिनी।
जाता सौख्यकरी देवी भैरवो नन्दिकेश्वर ।।19।।

कण्ठहार नन्दीपुर म गिरा, जिससे नन्दिनी शक्ति और नन्दीकेश्वर नामक भैरव हुए।



श्री शैलेपु ग्रीवा महालक्ष्मी चकार ह।
भैरव सम्वरानन्द कृत्वा ख्याति जगाम मा।।20।।

ग्रीवा श्रीशैल पर पडी जिससे महालक्ष्मी शक्ति और सम्बरानन्द भैरव हुए।

शिरोनली पतन्ती तु नलहटया पुरा भुवि।
शक्ति कालिका चक्रे योगेश तथा भैरव।।21।।

सिर की नाडिया नलहाटी में गिरी, जिससे पृथ्वी पर कालिका नाम की शक्ति और योगेश नामक भैरव हुए।

वामस्कन्धो मिथिलाया गत शक्तिमुमामिमाम्।
कुवन्महोदर भीम भैरव तु सुप्रदम्।।22।।

बाया कन्धा, जनकपुर रोड के आगे मिथिला देश म गिरा वहा उमा नाम की शक्ति और सुखदायक महादेव भैरव स्थापित हुए।

रत्नावल्या गत स्कन्धो दक्षिणे दिश।
कुमारी शक्तिरूपा सा शिवो वै भैरवस्तथा।।23।।

दाहिना कन्धा रत्नावली मे गिरा, जहा पर कुमारी शक्ति और शिव भैरव हुए।

उदरेण समापन्ना चन्द्रभागा प्रभासके।
वक्रतुण्डेन सयुक्ता सोमनाथस्य पार्श्वगा।।24।।

देवी का पेट प्रभास क्षेत्र मे पडा, जहा पर चन्द्रभागा शक्ति तथा वक्रतुण्ड भैरव हुए। यह स्थान सोमनाथ के पास है।

शुभपयस्तु जलन्धरदशग,
स्तनमिद भुवि वामजमेव तत्।
त्रपुरामालिनिशक्तिरिय तता,
भवति भैरवभीषण एव वै।।25।।

मीठे दूध वाला बाया स्तन पृथ्वी पर जलन्धर देश में पडा जहा पर त्रिपुरमालिनी शक्ति एव भीषण नामक भैरव हुए।

स्तनमिद भुवि रामगिरौ गत,
भवति दक्षिणजन्तु शुभप्रदम।
शुभमर्ति तु शिवा कुरूते ततो,
वज्र त भैरवतामिह चण्डक।।26।।

दाहिना स्तन रामगिरि पर पडा, जहा शिवानी शक्ति और चण्ड भैरव हुए।

हृदय वैद्यनाथे च वैद्यनाथ तु भैरवम्।
पतित्वा कुरूते शक्तिर्जयदुर्गामिमा शुभाम्।।27।।

देवी का हृदय वैद्यनाथ धाम मे पडा, जहा जयदुर्गा नाम की शक्ति और वैद्यनाथ भैरव हुए।

पृष्ठ कण्वाश्रमें गत्वा शर्वाणी कुरूते भुवि।
जाता शकुन्तला यत्र निमोपा भैरव गत।।28।।

पीठ जहा शकुन्तला उत्पन्न हुई थी उस कण्वाश्रम मे गिरी, जहा पर शर्वाणी शक्ति तथा निमिप भैरव हुए।

वामो बाहुबहुलाया शक्ति च बहुलामिमाम्।
कुवन्भैरव तत्र भीरूक शोभते भुवि।।29।।

बायीं भुजा बहुला में पडी, जहा बहुला नाम की शक्ति और भीरूक नाम के भैरव हुए।

चट्टले दक्षिणो बाहु पतित्वा चन्द्रशेखरम्।
भवानी भैरव शक्ति कुर्वन् सशोभते भुवि।।30।।

दायीं भुजा चट्टल मे पडी, जहा पर भवानी शक्ति और चन्द्रशेखर भैरव हुए।

शक्तेनिवतमानो वै कर्पूरा मध्यभारते।
मगलचण्डिका शक्ति भैरव कपिलाम्वरम्।।31।।

हाथ की कोहनी मध्य भारत उज्जयिनी मे गिरी, जहा पर मगल चण्डिका शक्ति तथा कपिलाम्बर भैरव हुए।

गायत्रीपर्वते तत्र पतित्वा मणिबन्धक।
गायत्री बधते शक्ति सर्वानन्दनन्तु भैरवम्।।32।।

हाथ की कलाई गायत्री पर्वत पर पडी, जहा गायत्री शक्ति और सर्वानन्द भैरव का आविर्भाव हुआ।



मानसे पात्यमानस्तु देव्या दक्षिणज कर।
शक्तिर्दाक्षायणी जाता यत्र भैरवोऽमर ।।33।।

दाहिने हाथ की हथेली मान-सरोवर मे गिरी, जहा दाक्षायणी शक्ति और अमर नामक भैरव वर्तमान है।

यशोहरे वामहस्त शक्ति चक्रे यशोहरीम्।
भैरव चण्डनामान कृत्वा बगे सुखप्रदम्।।34।।

बायीं हथेली बगाल देश में यशोहर ग्राम मे पड़ी, जहा पर यशोहरेश्वरी शक्ति तथा चण्ड भैरव हुए।

प्रयागे सगमात्क्रोश प्रतीच्यामगुलिगता।
ललितालोपदेवी या राजते भव भैरव ।।35।।

तीर्थराज प्रयाग मे सगम से पश्चिम, कोस भर की दूरी पर हाथ की अगुलियो के गिरने पर ललिता नाम की अलोपश्वरी देवी तथा भव नामक भैरव का आविर्भाव हुआ।

उत्कले विराजाक्षेत्रे नाभिस्तु विमलामिमाम्।
कुर्व भैरव तत्र जगन्नाथ विभाति वै।।36।।

उत्कल देश के विराजा क्षेत्र में नाभि गिरी, जिससे विमला शक्ति तथा जगन्नाथ पैदा हुए।

काञ्च्या पतस्तु ककाले देवगभासुशोभनाम।
कृत्वा शुशुभे तत्र रूरु वै भैरव तथा।।37।।

हड्डिया काञ्ची नगरी में पड़ी, जहा देवगर्भा शक्ति और रूर नाम क भैरव सुशोभित हुए।

वाम नितम्ब सम्पत्य गत वै कालमाधवे।
यत्र काली महाशक्तिरसितागस्तु भैरव ।।38।।

बाया नितम्ब कालमाधव में गिरा, जहा पर काली शक्ति और अमिताग भैरव हुए।

मृशाण पतद्दक्षिण वै नितम्ब,
शुभा नमदा कामदा सज्वकार।
शुभ भद्रसेन महाभैरव तु
जना यान्ति सौख्य सुदर्श विधाय।।39।।

बाया नितम्ब शाणम्रा में पड़ा जहा नमदा शक्ति तथा भद्रसेन भैरव हुए। उनका दर्शन करके लोग सुख प्राप्त करते है।

गिरौ कामदेवे पतन्ती तु योनि,
नुं कामाख्यदेवी मुदा भावयन्ती।
उमानन्दरभ्य महाभैरव वै,
पुरा कुर्वती भक्तवर्गानन विभर्ति।।40।।

कामगिरि पर्वत पर योनि का पात हुआ, जिसमे कामाख्या देवी तथा उमानन्द भैरव हुए, जो भक्तों का भरण-पोषण करते है।

जानुद्वय महामाया भैरवन्तु कपालिनम्।
नैपासे शोभते तत्रगुह्येश्वर्यास्तु मन्दिरे।।41।।

दोनों जानु नेपाल देश मे पडे, जहा गुह्येश्वरी के मन्दिर मे महामाया शक्ति और कपाली भैरव हुए।

जयन्त्या वामजघा च जयन्ती कमदीश्वर।
सर्वलोकहिताथाय शक्ति च भैरव तथा।।42।।

बायीं जघा जयन्ती में पडी, जहा पर जयन्ती शक्ति और कमदीश्वर भैरव हुए।

मगधे दक्षिणा जघा पत्यमाना च सत्वरम्।
सर्वानन्दकरीं देवीं व्योमकेश तु भैरवम्।।43।।

दक्षिण जघा मगध देश में गिरी, जहा पर सर्वानन्दकरी देवी तथा व्योमकेश नाम के भैरव हुए।

त्रिसोतासु वाम पद पत्यमान,
शुभा भ्रामरीं शक्तिरूपा विधाय।
महाभैरव त्वम्बर जायमान,
विलोक्यैव भक्ता सुख सप्रयान्ति।।44।।

बाया चरण त्रिसोता में पड़ा, जहा भ्रामरी शक्ति और अम्बर भैरव हुए, जिनके दर्शन मात्र से लोग सुख को प्राप्त करते है।

त्रिपुरासु गतश्चैव दक्षिण पाद वै।
त्रिपुरसुन्दरीं देवीं त्रिपुरेश तु भैरवम्।।45।।

दाहिना चरण त्रिपुरा में पड़ा, जहा पर त्रिपुर सुन्दर शक्ति और त्रिपुरश भैरव हुए।

विभापके वामगुल्फ पतन् शक्ति कपालिनी।
कपाली भैरवो यत्र वर्गेतिष्ठति साम्प्रतम्।।46।।

बाया गुल्फ, टकना, विभापक देश में पड़ा, जहा कपालिनी शक्ति तथा कपाली भैरव हुए।

कुरुक्षेत्रऽपरा गुल्फ सावित्री स्थाण भैरवम्।
गत्वा सुशोभते नित्य देव्या पीठो महाम्भुवि।।47।।

दाया गुल्फ, कुरुक्षेत्र में पड़ा, जहा सावित्री देवी शक्ति और स्थाणु भैरव हुए, जहा महान देवी पीठ है।

लकाया नू पुरश्चक्रे त्विन्द्राक्षीपतीतो भुवि।
रक्षति सर्वदा यत्र भैरवो राक्षसेश्वर।।48।।

नूपुर लका में गिरा जहा पर इन्द्राक्षी नाम की शक्ति हुई, जिनकी राक्षसेश्वर भैरव सदा रक्षा करते हैं।

दक्षागुष्ठ युगाधाया भूतधात्रीं च निर्ममौ।
ताल प्रकुरुते यत्र क्षीरखण्डकभैरव ।।49।।

दाहिने पैर का अगूठा, युगाधा में गिरा, जहा भूतधात्री शक्ति तथा क्षीरखण्डक भैरव हुए।

कालीपीठे चतस्रस्तु पतित्वांगुलयो भुवि।
शक्तिश्च कालिका जाता नकुलीशश्च भैरवम्।।50।।

शेप दाहिने पैर की चारा अगुलिया काली पीठ में पड़ी जहा कालिका शक्ति तथा नकुलीश भैरव हुए।

वामपादागुलि सर्वा विराटे पतिता सती।
अम्बिकान्तु महाशक्तिममृताक्ष तु भैरवम्।।51।।

बायें पैर की सभी अगुलिया विराट नगर में पड़ी, जिससे अम्बिका शक्ति और अमृताक्ष भैरव हुए।

श्री हिगळाज देवी की स्तुति

ऐका नेका अज्ञेया, अजा अनता नाम,
अगम अलक्षा ईश्वरी, पुनि-पुनि करो प्रणाम।
प्रणमामि भातृ प्रेममुरती, पार्वती परमेश्वरी,
शाति क्षमामय कृपा सागरि, सुखप्रदा सरवेश्वरी
सेयक शिशुके दूरित दारिद, विघ्न टोप बिदारणी,
आदियाशक्ति नमो अबा, हिंगळा अद्यहारणी।।
माँ हिंगळा

सब देविया शिरछत्र, साता द्वीपरी राजेश्वरी,
कोह्वलाप पर्वत कदराकी, निवासी निखिलेश्वरी
आनद वदनी आशुतुष्ठा, कृपा मगल कारणी,
नकलक रूपा नमो अबा, हिंगळा आद्यहारणी।।
माँ हिंगळा

देवा शिरोमणी महादेवी सामरथ सर्वोपरि,
स्तुति करत चारण मिद्ध मुनि, शेप अज शकर हरि
परिताप हरणी प्रणतजन के, सकल कारज सारणी,
ओंकार रूपा नमो अबा, हिंगळा अद्यहारणी।।
माँ हिंगळा

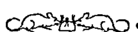
जगधात्रि जागति ज्योतिदेवी, जोगमाया जोगणी,
असवार नाहर तणी अणडर, अहर खल अरोगणी
सोगणी समरथ सुरा सुरथी, महिष मदमत मारणी,
नवलाख रूपा नमो अबा, हिंगळा अद्यहारणी।।
माँ हिंगळा

गिरिजा ब्रह्मचारिणी गौरी, चद्रघटा स्कदमा,
कात्यायनी पुनि कालरात्री, कृपमाडा सिद्धिदा
शरणागती निजदास सुरके दैत्य दुश्मन दारणी,
नवरूप दुर्गा नमो अबा, हिंगळा अद्यहारणी।।
माँ हिंगळा

वृपभासनी वाधासनी, गरुडासनी गजआसनी,
मयुरासनी महिपासनी, हसासनी प्रेतासनी
विध विध वयु आयुध वाहन, धरम हेतु धारणी,
अदभुत रूपा नमो अबा, हिंगळा अद्यहारणी।।
माँ हिंगळा

ब्राह्मी महेश्वरी वैष्णवी, कोमारी दानवदर्पहा,
वाराही ऐंद्री नारसिंधी, चडी चामुडा महा
सुर सत त्राता असुरहाता, अवनि भार उतारणी,
अकलित रूपा नमो अबा, हिंगळा अद्यहारणी।।
माँ हिंगळा

निजदास शकरदास को आरोग्य सुख आयुष प्रदा,
सपत्ति प्रदा सिद्धिप्रदा, शिव भक्ति दत शक्ति प्रदा



सुमति प्रदा शोभा प्रदा, कामना पुरण कारणी,
नारायणी माँ नमो अवा, हिंगळा अद्यहारणी।।
माँ हिंगळा

दोहा

चारण हम माहेश्वरी सब तेरी सन्तान,
दिजे सन्मति सप सुख, विजयी विद्यादान।।

ॐ भैरवाय नम

गोरा तोरो आसरो मन मेरा माहीह।
सोरा राखो सेवगा जमवारा ताईह।
घाटी पत कालो सुघट, मतवालो महमत।
चावड वालो चेलको, सदा रुखालो सत।।

चारण जाति मे कितनी शक्तिया उत्पन्न हुई

हिन्दुओं मे देवी-पूजा बहुत प्रचलित है। हमारे धार्मिक सिद्धाता के अनुसार सभी देविया भगवान शिव की पत्नी उमा का अवतार मानी जाती है। दुर्गा, जो कि उमा का अवतार है, एक प्रमुख देवी है और देश के कोने-कोने में इसकी कई स्वरूपो मे पूजा की जाती है।

राजपूताना प्रान्त में देवियो की जो सामान्य रूप से स्तुति की जाती है उसमे 'नौ लाख लोवडियाल' पद का व्यवहार किया जाता है। जिसका तात्पर्य यह है कि देवी के आज तक साधारण और असाधारण कुल नौ लाख अवतार हुए हैं।

इन देवियो के नाम निम्न प्रकार है

(1) हिगळाज देवी, (2) बॉकल देवी, (3) खूवड़ देवी (4) आवड देवी (5) खोडियाल देवी, (6) गुलो देवी, (7) अम्बा देवी (8) बिरवडी देवी, (9) देवल दवी, (10) लाछा देवी, (11) लाल वाई-फूल वाई, (12) केसर वाई (13) करणी देवी (14) चैरा देवी, (15) नोरी देवी (16) मागल देवी, (17) सैणी देवी (18) नागल देवी, (19) कामेही दवी (20) मई नेहड़ी (21) माल्हण देवी (22) रानल दवी (23) गीगाय दवी (24) मोटवी देवी (25) नाप दवी (26) अणदू नाई (27) चदू नाई, (28) सावेई देवी, (29) राण बाई, (30) शीला दवी, (31) देमा देवी, (32) सुन्दर बाई, (33) मागल देवा, (34) जैत बाइ, (35) सोन वाइ, (36) पुनसरी देवी, (37) जीवणी देवी, (38) जोन बाई, (39) जाहल देवी, (40) बोधी बाई, (41) बाईस देविया, (42) वाछल देवी, (43) सोन वाई, (44) धान वाई, (45) पूना देवी, (46) काग बाई, (47) इन्द्र कुवर वाई, (48) सोनल देवी।

उपरोक्त देवियो मे से हिगळाज देवी, आवडजी व करणीजी के परिचय से पाठको को अवगत कराया जा रहा है। चारण शुरू से ही हिगळाज देवी के उपासक हैं। आवडजी हिगळाज माता की अवतार मानी जाती हैं और करणीजी आवडजी की अवतार मानी जाती हैं। करणीजी सदैव आवडजी की ही पूजा करती थीं।

आद्या भगवती हिगळाज से आठवीं सदी तक हुई चारण देवियों का पता नहीं चलता। हिगळाज के अवतार-रूप में आवडजी (तमडराय) का जन्म मामडजी चारण के घर लगभग 1200 वर्ष पूर्व (वि स 808) में हुआ। आवडजी आदि सात बहिनें थीं। इनके रूप पर मोहित होकर सिन्ध के शासक हम्मीर सूमरा ने विवाह करना चाहा। आवडजी का कोपभाजन बन सूमरों का राज्य नष्ट हो गया। छ बहिनें सिन्ध से जैसलमेर के पास तेमडा पर्वत पर आकर रहने लगीं। सातवीं बहिन लछ्वी भावनगर की कुलदेवी के रूप में सपूर्ण काठियावाड मे पूजी गई। आवडजी ने तेमडे राक्षस का वध किया और तेमडाराय (ते मडा—वह मर गया) कहलाई। आवडजी द्वारा हाकडा समुद्र को सुखाना एक चामत्कारिक घटना मानी जाती है।

श्री करणीजी ने तब अवतार लिया जब राजस्थान अनिश्चितता के दौर से गुजर रहा था। परिस्थितिया निराशाजनक हो रही थीं। छोटे-छोटे राज्यों के स्वामी हिन्दू राजाओं का गृहकलह सामान्य बात बनी हुई थी। जब आक्रमणकर्ताओ ने अपने विजित प्रदेशों पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली थी भय से ग्रसित लोगों पर का

पा लिया था। मगर ये इन लोगों की शूरवीरता के कायल थे। उन्होंने कई युद्धों का अनुभव रखने वाले राठौड, जो मरुस्थलीय क्षेत्र म आए थे, इनको नेतृत्व के लिए उपयुक्त माना। इमी कारण भगवती श्री करणीजी के ऐतिहासिक व्यक्तित्व का महत्त्व राठौड एव भाटी राजवशों को वैवाहिक बधन द्वारा जोड़कर उनके आपसी मनमुटाव को समाप्त करने में अहम भूमिका निभाते हुए कइ महत्त्वपूर्ण काय किये जिनके लिए राठौड व भाटी आज तक ऋणी एव सदैव के लिए नतमस्तक है।

अपनी इस दूरदर्शिता से सनातन धम के प्रति श्रद्धा, पवित्र आचरण और अपने भक्ता की तत्काल सहायता करने की अपनी विशिष्टता के कारण भगवती श्री करणीजी लोकप्रिय बनीं और जनमानस के विश्वास एव मान्यताओ में उन्होंने एक विशिष्ट सम्मान प्राप्त किया।

धर्म जीवन को उद्देश्य प्रदान करता है, अधिकतम समस्याओ का सतोषप्रद हल प्रदान करता है तथा श्रद्धा का प्रारभ भी यहीं से होता है। राजवशों को स्वीकृत धर्मों के साथ सामजस्य स्थापित करना पडता है और पवित्र धार्मिक ग्रन्थों में स्वीकृत सामाजिक मूल्यों के प्रति शासकों की निष्ठा के बदले देवताओं की अभिभावक के रूप में उपलब्धि उनके लिए धर्म की ही भेंट है। सामान्यतया देश में प्रत्येक राज्य का और विशेषतया राजस्थान म प्राचीन राज्यों के अपने-अपने अभिभावक देवता होते थे और स्वाभिमानी राजपूत जो शक्तिशाली सम्राटों के प्रभुत्व को ललकारने स नहीं चूकते थे और न उनके सामने झुकते थे, सदियो से अपने राजवश की स्थापना से अभिभावक देवता के प्रति अहर्निश निष्ठा रखते थे। इन लोगो और इनके परिवारों के भाग्य में अनेकों उतार-चढाव आये फिर भी इनकी श्रद्धा में कमी नहीं आई।

माँ की आराधना इसलिए नहीं की जाती है कि कुछ लोग इसके अस्तित्व की साक्षी देते है बल्कि इसलिए कि उसकी उपस्थिति समय-समय पर स्वय को ऐसे रूप में प्रकट करती है जो जनसाधारण के विवेक को आकर्षित करे। जैसा कि स्वय भगवान कृष्ण ने गीता मे कहा कि जब-जब आवश्यकता होती है, ईश्वर मानव रूप ग्रहण करता है, शायद इसी तथ्य ने जनसाधारण को सर्वाधिक आश्वस्त किया है और ईश्वर में उसकी आस्था को आगे बढाया है। इसी विश्वास के कारण इश्वर और देवी-देवताआ के अवतारो की अत्यन्त श्रद्धापूर्वक उपासना की जाती है। इस उपासना द्वारा प्राप्त लाभों ने इस विश्वास को और अधिक बल दिया है। शक्ति म विश्वास और पारस्परिक प्रेम तथा स्नेह जो लोग अपनी माँ के प्रति रखते है जिस प्रकार बच्चे अपनी माँ के सम्मुख अपने कष्ट और दुखा का वर्णन करते हुए स्वतत्रता महसूस करते हैं उसी प्रकार भक्त भी सर्वशक्तिमान ईश्वर को माँ के रूप मे देखकर उसके सामने अपने सुख-दुख को प्रकट करते है।

राजस्थान के राजपूत राज्यों के महत्त्वपूर्ण अभिभावक देवताओं मे भगवती श्री करणीजी का मुख्य स्थान है। इन राज्यों मे अधिकाश के अपने-अपने अभिभावक देवता होते थे लेकिन श्री करणीजी बीकानेर के राठौड राज्यों की अभिभावक देवी रही है।

इतिहास और समाज की महान् विभूति करणीजी ने दवीरूप मे जन-जन का कल्याण किया। समाज का अराजकता की स्थिति से उबारकर सुशासन व्यवस्था दी। समाज में सौहार्द समानता व सादगीपूर्ण जीवनयापन की दृष्टि से कुछ दिशानिर्देश दिये। देशनोक गाव तत्कालीन राज्य का अभयारण्य माना गया। करणीजी ने गाव के चारों ओर गोचर भूमि के लिये ओरण (रक्षित वन) रखा। इसकी लकडी काटना व जलाना मना किया। केवल दाह सस्कार मे काटने की अनुमति प्रदान की गई। ओरण से पशुधन को चरागाह उपलब्ध होता है तथा गरीब लोग बेर चुनकर आजीविका कमाते है पर्यावरण शुद्ध होता है। पोळदार पक्के मकान बनाने पलग-पालने का उपयोग, घुघरूदार गहने का प्रयोग मना किया ताकि वर्ग-वैपम्य नहीं पनपे। सभी जातिया के वर-वधू करणी माता क जात दन पैदल जाते

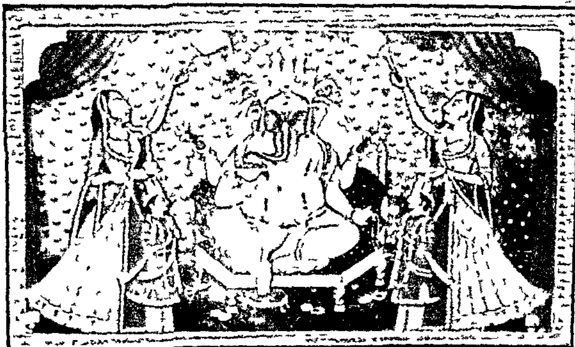
12448
स्टेशन रोड, बीकानेर

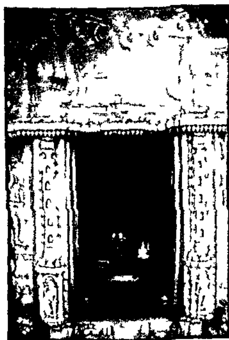
हैं तथा घोड़े पर चढ़कर तोरण तक नहीं मारा जाता। गाव की सीमा में कच्चे बर्तन बनाना, शराब की भट्टी निकालना मास का धन्धा करना वर्जित किया, जिससे पापाचार नहीं फैला। यही कारण है कि अभी तक देशनोक में कसाई, गाञी, माली, कलाल, कुम्हार नहीं बसे हुए हैं। स्थानीय लोग प्रत्येक शुभ कार्य में पूर्व नारेल बधार, ध्वजदण्ड पर चील तथा सफेद काब का दर्शन पाकर स्वयं को धन्य समझते हैं। □

रक्षा-कवच

गीत

ऊँडे पाणी नदियाँ उतरता, झड़ मडिया रण झाटा,
शक्ति कीजे सहाय शेवगा वहता घाटा बाटा।
मेवाशा माझल ठग मिलिया, नाहर आया नेड़ा
कुशल आपरा राखे करनी वहता शायर बेड़ा।
वैरी विषधर सर्प निवारे बळती लाय बुझावे,
लोवड़ियाल तणा भुज लम्बा आचळ दीशा आवे।
डाकण भूत कुवे पग डिगता कड़के बीज अकाशा,
करता याद मेहाशदु करनी। देवि उबारो दासा।
वडाबडी किनियाणी वाका, पोरव पूजगा पाळे
देश विदेश माहि डाढ़ाळी, राज दुवार रुखाळे।
मौत कुमौत टाळणा अम्बा कुमति निवारण माता
सुमति देण दारिद्रय नसावण राखे तन सुख-साता।
बीशभुजा रुखवाळे शेवग बाळक छत्तर छाया,
टेम कुटेम टाळणीं अम्बा, दुख भाँजे दुख आया।
रात दिना पल छिन मो जगदम्ब! रहजो आप सहाई
पूत कपूत क्षमा कर दुर्गा बिरद निभाज्यो बाई।









जय श्री करणीमाताजी की सा

करणी करणी हूँ करूँ, करणी म्हारी माय।
जीमण दीजै बाजरी दूधण दीजै गाय।।

माँ के सभी लाडलों को पुस्तक मे सहयोग राशि प्रदान करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद

विक्रम देपावत पुत्र मूलदान देपावत, देशनोक (बीकानेर)

5-ई-62 गुण उगम माँ भगवती मार्ग जयनारायण व्यास नगर बीकानेर • मोबाइल 09828262929 09468567778



निज मन्दिर

आद्याशक्ति श्री हिगळाज दर्शन



सती कुड, कनखल (हरिद्वार)



श्री हिगळाजमाता, ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान)



चन्द्रकूप दर्शन



हिगोळ नदी



Karnesh Sethia
Director

The House of Food & Entertainment

Jogmaya Bar & Restaurant Pvt. Ltd.

www rocksrestaurant co in • e mail karneshsethia@yahoo com

9, Waterloe Street, KOLKATA 700069

Ph 22317619 Mob 9830063864



सिरकटा गणेशजी दर्शन



माई के महल



शरण कुंडे



विचित्र पहाडियाँ



रेत के पहाड



दुर्गम रास्ते

Lalchand Chhaganmal

176 J L Bajaj Street 2 ᵈ Floor, KOLKATA 700007
Telefax 22681763 / 22720912 Tel 22188542 / 2268 1127
Mobile 9831060747 E-mail vineet@cal vsnl net in

Vineet Golchha

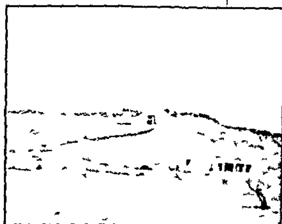
श्री तेमडाराय (आवडमाताजी) दर्शन



श्री तेमडाराय मन्दिर जैसलमेर



मन्दिर परिसर



विहगम दृश्य

SHREE KARNI BEADS CENTRE

Deals in Embroidery Beads Glass Beads Sitara Jari Metalised Beads and Crystal Beads

4, Manohar Das Street (Ground Floor), KOLKATA 700007

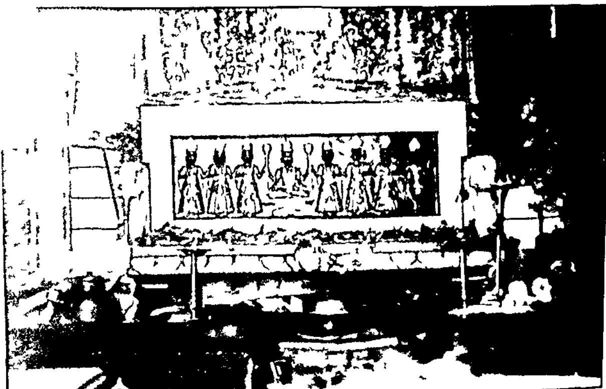
Munna Bhai 9831925629 • P Khatri 9831252581

H. D MOTIWALLA

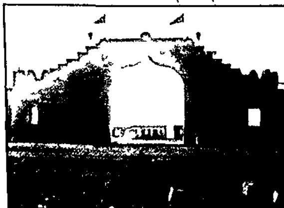
Dealers in Plastic Beads Glass Beads Sequence Embroidery Beads Metalised Beads Dori & Mala Accessories

32 Jamunalal Bajaj Street KOLKATA 7 • Ph 2268 1540 (O) 2274 0978 (R) I K Khatri 98319 25629

श्री काळेडूगररायमाता दर्शन



श्री काळेडूगररायमाता मन्दिर



मुख्य प्रवेशद्वार



अद्‌भुत दृश्य (भोर के समय)

माँ करणी के चरणो मे बारम्बार प्रणाम

छवि मुरति मन मोहिनी धिन दैशाण धिराण।
नित नमू करुणानिधे क्रोड वखत किनियाण।।

नाहटा एव सेठिया परिवार

गाव–मोमासर (चूरू)

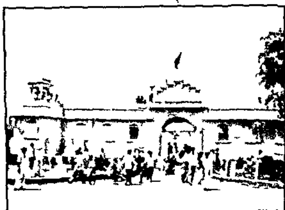
श्री दगरायमाता दर्शन



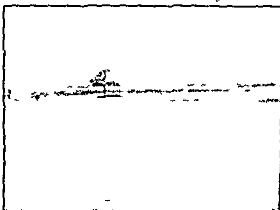
श्री देगराय मन्दिर



निज मन्दिर द्वार



मुख्य प्रवेशद्वार



रक्त तलाई

R. B. SYNTHETICS

15 Noormal Lohia Lane KOLKATA 700007

Ph 22708358 (O) 22357312 (R) Mobile 9831041460

Pradeep Begani Rajendra Begani (Babli) • Ravindra Kumar Begani (Munna)

BEGANI COMMISSION AGENT

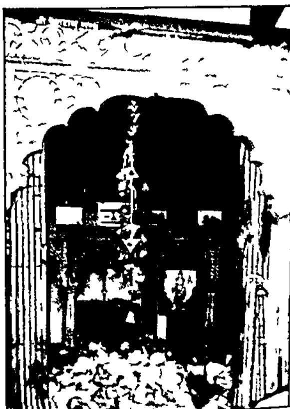
Late Inder Chand Begani & Late Muli Devi Begani

Ph 22708358 (O) 26608494 (R) Mobile 9830274493

श्री देगरायमाता दर्शन



साहगो (लकडी का बना आसन)



जूनी जाळ के नीचे देवळी



श्री देगराय माता



जूनी जाळ दर्शन

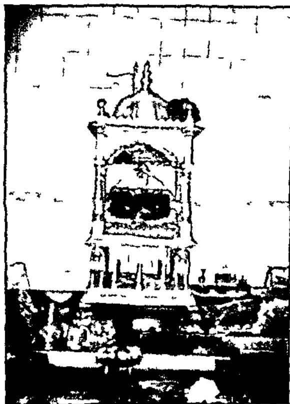


BDB EXPORTS PVT. LTD.

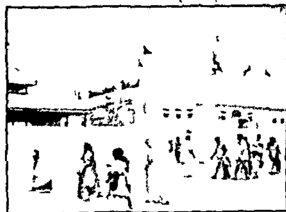
2 Clive Ghat Street Sagar Estate Unit No 5
3rd Floor KOLKATA 700001 (India)

Ph 91 33 3022 4121 (O) 91 33 2282 5030 (R) Fax 91 33 3022 2721
Mobile 9831076525 • E mail nkb2@vsnl net
Nirmal Bhura (Chairman)

श्री भादरियारायमाता दर्शन


श्री भादरियाराय मन्दिर


जूनी जाळ दर्शन (सूखी छड़ी हरी बन गई)


मन्दिर परिसर


बोर पेड टीला



MANJUSHREE TEA EMPORIUM

Wholesale Tea Merchants

8/1, Lal Bazar Street 3rd Floor, Room No 6, KOLKATA 700001

Ph 033 22486623 22486663 40051389 (O) 26503080 26414645

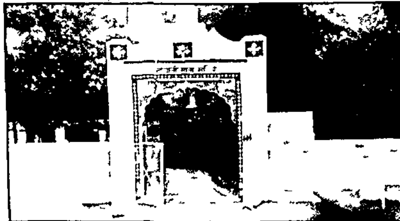
E mail manjushree_tea_emporium@hotmail com

Suresh Kumar Bhojak 09830135351

श्री घण्टियाळीमाता दर्शन



श्री घण्टियाळी माता मन्दिर



मुख्य प्रवेशद्वार

Sunrise Media & Effects (P) Ltd.

Head Office 100/1/1 Alipore Road KOLKATA 700027 • Ph 24794605
Works 55/3 Chanditala Main Road KOLKATA 700053 Ph 24032573 Telefax 24032452

SUNRISE MEDIA

Siddharth Bhura (Director) 9831078467
sidbhura@gmail.com • sunrisem@dataone.in

श्री तनोटरायमाता दर्शन



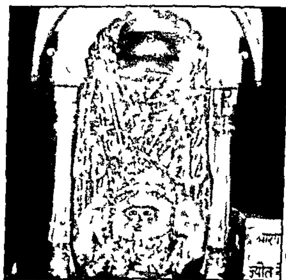
श्री तनोटरायमाता मन्दिर



1965 के युद्ध के साक्षी बम



मन्दिर परिसर



श्री आशापुरामाताजी, पोकरण

गणपत सोनी
हरी सोनी
(देशनोक वाले)

कुन्दन जडाऊ व हीरो के आधुनिक डिजाइन के गहनो के निर्माता
14 वैसाख स्ट्रीट कोलकाता 700007
दूरभाष 033-22742916 033-32977106 मोबाइल 09433011676 09830126724

श्री खोडियारमाता दर्शन

श्री खोडियारमाता भावनगर काठियावाड (गुजरात)



[illegible]

SAMPATLAL SUBHAS KUMAR HIRAWAT

Order Suppliers & Commission Agents

23 Amartalla Street KOLKATA 700001

Phone (O) 22351833 22350248 (R) 26768409



भवरी देवी हीरावत

श्री करणीमाता दर्शन



श्री करणीमाता मन्दिर सुवाप (फलौदी-जोधपुर)

ANKIT ELECTROTECH

11 Pollock Street Ground Floor KOLKATA 700001

Tel 033 22342823 / 878 22530125 / 255

26, Pollock Street KOLKATA 700001

Tel 22342823 / 28 • www philconindia com

Authorised Dealer / Distributor Philcon • D Art • Boom • Modular & Mini Modular Plate Switches & Accessories

Abhay Bhura 9831278396

श्री करणीजी की जन्मभूमि के दर्शन



श्री करणीमाता द्वारा बनाया गया आवडमाताजी का मन्दिर, सुवाप

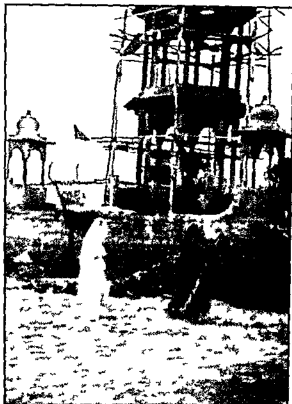


श्री करणीमाता मन्दिर, सुवाप एक दृष्टि

Panna Lal Kamla Devi Mundhra Charitable Trust

29 Mukta Ram Babu Street 1st Floor KOLKATA 700007
Phone 033 22686227

श्री करणीजी की जन्मभूमि के दर्शन



श्री करणीजी की जन्म-स्थली



जिस जाळ (पेड) से करणीजी झूला झूलते थे



इन्ही पत्थरो मे से देशनोक गुम्भारा बना



सुवाप के भोमियाजी दर्शन

Karni Interiors
214, S H K B Sarani, KOLKATA-74
Deepak Kumar-Binita Lunia
Avi
Mobile 9330920606 9339977606

श्री चामुण्डामाता दर्शन

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

५२

६४

सर्व मंगला धारी



VICTOR ELECTRO SERVICES

Manufacturer of Battery Inverters and Chargers Insta Power System
Pure Sinewave Inverter UPS & Ankit Satellite Antenna Systems
Authorised Distributor B4U Movies & Panasonic Batteries
Advertising Agency Cable TV & Satellite Channels
"Shivangan" 1st Floor 53/1/2 Hazra Road Near Ballygunge Phari KOLKATA 19
Phone 24860817 Telefax 24543234
E mail victorkal@rediffmail.com • J M Sethiya (Mobile 9830400800)

दुर्लभ दर्शन

दुर्लभ दर्शन

नेहडीजी स्थान

नेहडीजी स्थान वर्तमान म श्री करणीजी मन्दिर के पश्चिम दिशा की ओर दो किलोमीटर दूर देशनोक में सबस प्राचीन स्थान है। यहा करणीजी सर्वप्रथम रुके थे। इस स्थान पर गायो के लिए प्रचुर मात्रा म "ास था जिस कारण माँ ने सोचा कि इस स्थान से ज्यादा उचित स्थान कहीं नजर नहीं आता है। इसलिए यही स्थान ठीक रहेगा। अत माँ ने अपने परिवार के साथ इसी स्थान पर अपना डेरा डाल दिया। उस समय यह जागलू नामक स्थान था। करणीजी को गायो की सवा करना सबसे प्रिय काम लगता था। इस स्थान पर करणीजी ने एक खेजडी की लकडी जमीन मे गाड दी फिर इसी के सहारे बिलौना किया (अर्थात् नेहडी रोप कर) था। अत यह स्थान तब से नेहडीजी के नाम से प्रसिद्ध हो गया। वह खेजडी की लकडी आज भी लगभग 600 वर्ष पुरानी एक अमरवृक्ष खेजडी के रूप में विद्यमान है। अगर उसको अटूट विश्वास से एक नजर देखेंगे तब आपको आज भी उस पर माँ के बिलौने के वक्त के दही के छींटे नजर आएगे। आजकल इसकी सुरक्षा हेतु पेड के तने को चारा तरफ से लोहे की जाली से ढक दिया है। इसके दर्शनार्थ भक्त दशनोक मे करणी मन्दिर क दर्शन के बाद नेहडीजी स्थान मन्दिर का दर्शन करना उचित समझते है अर्थात् ऐसा न करने पर अपनी यात्रा अधूरी समझते है। नेहडीजी मन्दिर के पीछे एक गुफा भी है जहा महादेव, माँ पार्वती एव गणेशजी की मूर्ति स्थापित है। मन्दिर म बायी तरफ एक सन्यासी साधु टाट बाबा का स्थान भी दर्शनीय है।

नेहडीजी मन्दिर एव गुफा दर्शन

नेहडीजी मन्दिर जहा माँ की नेहडी की वजह से पसिद्ध है वही यह स्थल न जाने आज तक कितने ही साधु-सतों के लिए बडी शुभ और रमणीक जगह माना गया है। इस पावन स्थल पर माँ ने कइ वर्षो तक गायो की सेवा की और पूजा-पाठ करते हुए काफी समय व्यतीत किया। इसी कारण आज कोइ भी भक्त जो दशनोक एक बार आयेगा, वो कुछ समय क लिए नेहडीजी मन्दिर दर्शनार्थ अवश्य जाएगा। दशन के बाद उसको इस स्थान को छोडने की इच्छा ही नहीं रहती है। जो आत्मा को शान्ति और मन को सुकून उस परिसर मे मिलता है वैसा इस धरती पर कहीं नहीं मिलता है। ऐसी उसको यहा अनुभूति होती है। इसी कृपा के बलबूते पर आज 600 वर्षों से खेजडी हरी-भरी प्रफुल्लित मुद्रा में माँ की सेवा मे अडिग खडी है। बार-बार शत-शत नमन है इस वृक्ष को जो मातेश्वरी की सेवा से एक पल भी ओझल नहीं होता। इसी कारण ऐसे आनन्दित वातावरण की अनुभूति दने वाले रमणिक दरबार म सैकडों साधु-सतो ने वर्षों तक माँ की माला फेरी है। उनमे से कुछ के आज तक निशा बाकी है। टाट बाबा, बाबा छोटूनाथ भोलेनाथ बाबा एव आत्मस्वरूपजी महाराज इत्यादि। इनके साथ-साथ कइ ऐसे भी थे जिन्हाने अपनी सेवा को गुप्त रखा। देशाणपुरी की देशाणराय माँ भगवती श्री करणीजी की इस तपोभूमि पर कौन नहीं आना चाहेगा? जा एक बार आ गया समझो यहीं का होकर रह गया। चाह राव रिडमल राव बीका, बाबा छोटूनाथ, टाट बाबा, भोलेनाथ एव आत्मस्वरूपजी महाराज आदि कई ऐसे और भी। सत-तपम्वी है जिन्होंन अपना जीवन सिर्फ माँ की सेवा म यह कह कर लगा दिया कि हम तो माँ के ही पुत्र है। आज के भक्ता में कइ ऐसे भक्त है जिन्हाने देशनोक में माँ की सवा के लिए स्थाई निवास बना लिये है।



गुम्भारा

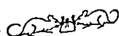
यह गुम्भारा माँ ने स्वय अपने श्रीहाथा म बनाया था। दयालदास मिढायच की ख्यात के अनुसार 'वि म 1594 चैत वदी 2 ने श्री करणीजी आपरे हाथ मू गुम्भारो कियो विना तगारी। नै जाळ रा राकड़ दिया अर सू गुम्भारो कर श्री करणीजी जैसळमेर पधारिया।' इसी गुम्भारे पर वर्तमान प्रसिद्ध करणी मन्दिर बना हुआ है। इसमें करणीजी की इच्छानुसार उनकी मूर्ति की स्थापना कर देपावत क्रम से पूजा करते आ रहे हैं। माँ इसके प्रस्तर बैलगाड़ी पर अपने पीहर सुवाप ग्राम मे लेकर आयी थीं। ऐसे प्रस्तर यहा कहीं नजर ही नहीं आते। माँ ने अपना स्थान चिरस्थाई बनाने के लिए इन पत्थरों को आवश्यकतानुसार एक पर एक बिना चूना-मसाला उनको रख दिया। यह माँ की एक चामत्कारिक लीला ही है जो आज तक वैसे ही स्थित है। इन पत्थरों को चिन कर उनको जाल नामक पेड की टहनियों स ढक दिया। जिस कारण आज भी उसका वैसे का वैसा ही अस्तित्व है। आज एक-एक पत्थर पूजनीय है। अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अगर हम एक-एक पत्थर को माँ द्वारा स्थापित मूर्तियों का रूप दे देवें। क्योंकि मेरा मानना है कि माँ ने समस्त देवगण को इन पत्थरों और टहनियों के रूप में स्वय के श्रीहाथों से स्थापित किया था जिनकी आज दोनों समय आरती होती है तथा दिन में सैकडों बार ज्योत से जिनका प्रकाश दीप्तिमान होता रहता है।

सीमित और निमित्त समय तक गुम्भारे मे रह सकते हैं

माँ साक्षात् रूप में मन्दिर मे बिराजती है। इस बात को बारीदारजी के साथ-साथ हम सब मानते हैं। वैसे तो माँ के गुम्भारे में बारीदारजी दिन मे कई बार प्रवेश करते है। जैसे कि पूजा-अर्चना, जोत-आरती, भोग इत्यादि के लिए माँ की सेवा में घटों तक गुम्भारे मे बारीदारजी मिश्रजी महाराज आदि रहते है। पूजन के समय में 2-3 घण्टे तक रहना पडता है। इनके अलावा अगर बारीदारजी की गुम्भारे में बैठकर माँ की माला फरना, प्रार्थना करना चाहते हो तो माँ उनको 5 मिनट भी अन्दर नहीं रहने देती हैं। ऐसा कई बार बारीदारों को मालूम हुआ है। माँ न किसी न किसी रूप में उनको आभास कराया है कि आप जहा बैठकर अरदास कर रहे हैं वो स्थान नव लाख लोवड़ियाळ का स्थान है। यहा तनिक भी स्थान खाली नहीं है। जब आप पूजा या जप करते हो तब वो सभी मेरी मूर्ति में समाहित हो जाता है। इसी कारण गुम्भारा केवल सेवा प्रधान है।

माँ की मूर्ति

जिस मूर्ति के हम दर्शन कर धन्य समझते हैं— यह मूर्ति जिसकी स्थापना 1595 में चैत्र के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को स्थापित की गई जिसको माँ का एक जन्माध, माँ का अनन्य-भक्त बन्ना खाती (विश्वकर्मा का वशज) ने बनाया। वो जन्म से ही माँ करणी का भक्त था जिसका कारण कि माँ करणी की मौसी की लड़किया, जिनकी शादी बन्ना खाती के क्षेत्र में हुई थी जिनके मुह से वह बार-बार करणीजी की लीला का गुणगान सुनता रहता था जिस कारण उसका मन माँ की आराधना में लग गया। उसने एक ही ध्यान लगाया कि बस एक न एक दिन माँ के चरण छूकर अपने आप को धन्य करूगा। बस इसी अरदास में वह अपने जीवन के आखिरी दौर से गुजर रहा था। उसी दौरान माँ अपने भक्त की पुकार सुन कर व्याकुल हो उठी। सयोग से उसी दौरान माँ का एक और अनन्य-भक्त जैसलमेर राव जैतसी, जिनकी पीठ में अदीठ (कैन्सर) रोग हो गया था तथा वह माँ के दर्शन करना चाहता था मगर आने में असमर्थ था। माँ ने उनको समाचार कहलाया कि मैं स्वय आ रही हू। अत माँ ने अपने आराध्य आवडजी (तेमडाराय मन्दिर, जैसलमेर) के दर्शन करने, अपने अनन्य-भक्त बन्ना खाती को दर्शन देने व अपने सेवक राव जैतसी को आरोग्य प्रदान करने का विचार कर जैसलमेर रवाना हुई। सब कार्य करने के बाद जब बन्ना के गाव पहुची तब बन्ना की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह न देखते हुए भी अपनी मन की हजार आखों से माँ के स्मरण रूप को निहारता ही रहा तथा मन ही मन



मुस्कराता हुआ पत्थर की शिला की तरह माँ के चरणो मे जड होकर पडा रहा। उसकी अनन्य भक्ति-भावना देखकर माँ अति प्रसन्न हुई और कहा कि तुम मेरी मूर्ति बनाओ (क्योकि वह कुशल कारीगर जो था)। उसी क्षण माँ ने उसको आखे देकर अपना रूप बताया और कहा कि तुम जब-जब मेरी मूर्ति बनाओगे तब-तब आखों से दिखायी देगा तथा जब-जब नीद लोगे तब-तब तुम मेरा स्मरण भूल जाओगे। इस तरह बन्ना खाती ने कुछ ही दिनों में माँ की मूर्ति—जैसा रूप माँ ने बताया उसने वैसा का वैसा ही बना दिया। (उसके अन्दर अन्य कोई रूप जैसे—पेड, बादल, धोरे पक्षी आदि नहीं बनाये। क्योकि उसको सिर्फ माँ के बताये रूप के अलावा कुछ नजर नहीं आया था)। बनाने के बाद माँ के दिये गये आदेश बताया कि 'मेरी मूर्ति बनने के बाद तुम उसको अपने सिर के नीचे रखकर सो जाना। वह तुम्हें अपने आप उचित स्थान पर पहुचा देगी'—जैसे ही मूर्ति बनाकर सिर के नीचे रखी उसने माँ के श्रीहाथों से निर्मित गुम्भारे में अपने आपको पाया।

मूर्ति की स्थापना

वि स 1595 चैत सुदी चतुर्दशी शनिवार को उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में अधे सुथार द्वारा बनाई गई मूर्ति को उनके गुम्भारे में स्थापित कर उनके चारो पुत्रो के वशज क्रम से पूजा करते आ रहे हैं।

मूर्ति का पूर्ण दर्शन

गुम्भारे मे श्री करणी माता के उस रूप की मूर्ति मुख्य मूर्ति है जिसका दर्शन बन्ने खाती को नेत्र ज्योति मिलने पर हुआ और उसने यह मूर्ति जैसलमेरी पत्थर पर उसी अनुसार बनाई। इस मूर्ति में माँ का चेहरा सौम्य रूप में मुस्कराता है। नेत्र मुदित है परन्तु ठोडी पर दाढी का चित्रण किया गया है। सिर के मुकुट पर छत्र बना हुआ है। गले मे नकल सहार है और दुलडी मोतियों की माला है हाथा म भुजबध व चूड है जो कि कन्धे से कोहनी तक व कोहनी से कलाई तक स्पष्ट अकित है। पैरो में पायल, कमर में करधनी काचली व धाबली पहने है। दाहिने हाथ में त्रिशूल है जिसके नीचे महिषासुर का सिर है। बायें हाथ में नरमुण्ड की चोटी पकडे हुए है। इस मूर्ति के बिलकुल पास मे बायें व दायें धोला व काला भैरव की मूर्तिया है। दाहिनी ओर माताजी की पाच बहिनो की मूर्तिया पत्थर पर खुदी हुई स्थापित है बायी ओर आवडजी की मूर्तिया पत्थर पर खुदी हुई स्थापित है। आज तक न जाने कितनी बार माँ के चरणो को माँ के पुजारी (बारीदारजी) ने मूर्ति के चरण छुए है चरण वैसे के वैसे ही है। कई बार पोशाक चढाई जा चुकी है। आज मूर्ति पूर्ण रूप से वैसी की वैसी ही है। अत माँ की माया अपरम्पार है। जगत् जननी माँ की लीला अमर है।

पोशाक

माँ की पोशाक परम्परागत तो सिन्दूर की होती आ रही है। मगर समय अनुसार आये बदलाव व भक्ता की अपनी-अपनी पसद से अपनी माँ को वस्त्रों आभूषणो तथा सिन्दूर के साथ बृगकी आकृति डिजाइन कर पोशाकें बनाना प्रारम्भ कर दी गई है। इन पोशाकों से माँ का शृगार वशानुगत बीकानेर के पडित लाभदत्तजी मिश्र का परिवार करता आ रहा है। आज उनके परिवार से गुरु श्री नरेन्द्रजी मिश्र माँ की पोशाक करते है। वैसे प्रतिदिन माँ की आरती के समय से आधा घटा पूर्व बारीदारजी माँ को सिन्दूर की पोशाक आज भी नियमानुसार करते है। माॅ के बाद माँ के लाडले गणेशजी की पोशाक होती है जो सिर्फ बारीदारजी ही करते हैं। माँ के श्रीहाथो से बनाये गुम्भारे के अन्दर प्रवेश की इजाजत केवल बारीदारजी को ही है। इनके अलावा शृगार व पूजन के लिए मिश्रजी एव कुछ निमित्त कार्यों के लिए कुछ ओर लोगा को अनुमति है जिनमें दर्जी, सुथार तथा एक जाच करने वाले खजाची, मोहता आदि को है। जिनका मै अपने जगहनुसार वर्णन करूगा।

माॅ की पोशाक में सिह का मुह नरमुण्ड की तरफ क्यो?

वैसे तो मिश्रजी महाराज माँ के लिए वर्ग से तरह-तरह के शृगार करते है मगर जब माँ के लिए शृगार में शेर की सवारी की आकृति बनाते हैं तब हमेशा शेर का मुह



विपरीत दिशा म अर्थात् त्रिशूल की तरफ न करक नरमुण्ड की तरफ बनाते है। इसका कारण बताते हैं कि—माँ करणी का करुणामय रूप है जहा माँ बच्चों को स्नेह दुलार लाड-प्यार करती है। इसी कारण नरमुण्ड विपरीत दिशा में किया जाता है। जैसा नरमुण्ड माँ के लिए सभी रूपों मे है वैसा तब होता है जब माँ किसी विपदा या दुष्टो का सहार करती है।

माँ की पोशाको मे विभिन्न शृगार

वैसे तो माँ की सेवा में महाराज नरेन्द्रजी (पप्पूदादा) की सेवा सर्वोपरि है। माँ के लिए विभिन्न प्रकार से किये गये शृगारा से माँ की मूर्ति अतिसुन्दर और मनोरम लगने लगती है। शृगार के दौरान माँ के लिए जिस दृश्य को उकेरते है वो अति मनभावन लगता है। जैसे—पेड-पौधे पक्षी, गाये, सिह, मगरमच्छ, मोर, कमल, चक्र, गदा, तलवार इत्यादि आकृतियो से शृगार को अतिसुन्दर रूप दिया जाता है। तब ऐसा लगता है मानो माँ साक्षात् हमारे सामने विराजमान है। ऐसा आभास होता है जैसे अभी बोलने वाली है। इसी प्रकार माँ के भिन्न-भिन्न प्रकार के शृगार होते है। हा, यह बात ध्यान योग्य है कि ये सभी शृगार केवल पूजन के दौरान ही होते हैं।

जोत रूप

जब माँ ने अपने जीवन के 151 वर्ष पूर्ण कर अपने भौतिक शरीर को रखना उचित नहीं समझा तब तक माँ ने सभी कारज सार लिये थे। इस दौरान भक्तो की कई कामनाए पूर्ण कीं, कष्टा का निवारण किया, दुनिया को गायों की सेवा, पर्यावरण शुद्धि तथा अच्छे-बुरे कार्यों के फल का बोध करवाने के बाद माँ ने सोचा कि अब भौतिक शरीर के इस खोळे को खत्म कर देना चाहिए। इसी साच के आधार पर बीकानेर और जैसलमेर राज की सीमा पर गाव गढियाळा म अपने परम सेवक सारग विश्नोई जो कि उनकी गाडी का सारथि था, उसको आदेश दिया कि तुम मेरे शरीर पर इस झारी से जिसमें जितना भी जल है वह मेरे ऊपर उडेल दो। सयोगवश उस झारी म जल की 2-4 बूदें ही थीं। जैसे ही गगाजल समान जल की बूद उडेलीं, एकदम म एक जोत प्रज्वलित हुई। वह जोत डूबते सूर्य के प्रकाश में मिल गई। उस डूबते सूर्य के साथ माँ ने इस दुनिया स महाप्रयाण करते हुए ससार का अपने तेज से चामत्कारित करते हुए अपना स्वरूप जागती जोत के स्वरूप में प्रमाणित कर दर्शन दिये। उसी क्षण माँ ने आकाशवाणी की कि 'मुझे जब भी कोई पुत्र या भक्त कष्ट में पुकारेगा या याद करेगा तब मै स्वय इस जोत रूप में हाजिर हो जाऊगी।' क्योंकि जोत का प्रज्वलित होना ही माँ का साकार रूप है।

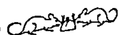
देशनोक मे जोत की परम्परा

जोत म जोत मिलने के बाद उनके चारों पुत्रों ने देशनोक में माँ के दिये गये दिशा-निर्देशों एव आदर्शों की पालना करते हुए आज चारों परिवार सहित बारी बारी सेवा-पूजा करते है। आदेश की पालना करते हुए सर्वप्रथम पाटवी पुना ने माँ से सेवा-पूजा की अनुमति माँगी। माँ ने बताया कि तुम सुबह-साय आवड माँ का नाम लेकर जोत कर लेना। मै उस जोत रूप में साक्षात् हाजिर हो जाऊगी। जब-जब मुझे भीड (विपदा/कष्ट) मे याद करोगे मै समक्ष रहूगी। मै हमेशा आपके साथ ही रहूगी कभी दूर नहीं रहूगी।

इसी कारण मन्दिर में जोत का अधिक महत्त्व है। दिनभर जोत करवाने का मन्दिर में ताता लगा रहता है। वैसे मन्दिर में माँ की नियमित जोत सुबह 4 बजकर 15 मिनट पर तथा साय 7 बजकर 15 मिनट पर होती है। सर्दी-गर्मी मे समय परिवर्तन होता है। इस जोत में भरपूर मात्रा में खोपरा गुग्गुल व घी परोसा जाता है। ताकि माँ का तेजस्वी रूप (जोत मे) चमकता रहे। इस जोत के सापेक्ष माँ की मूर्ति की आरती उतारी जाती है।

जोत

जब मन्दिर में सुबह-साय आरती के समय जोत लायी जाती है उसको गुम्भारे में प्रज्वलित कर बारीदारजी उस जोत मे धूप नारियल एव घी को भरपूर



मात्रा में इस कदर परोसते हैं कि यह जोत आरती के पूर्ण होने के साथ मन्दिर के सभी मन्दिरों आवड़जी, इद्रबाईसा, नरसिंगों के जुंधारू मानुबाईजी, दशरथ मेघवाल पुनों के जुझारओं क भी जोत उतारे तब तक जोत जलती रहती है।

जब जोत आवड़जी मन्दिर पहुचती हैं तब आवड़जी की आरती गायी जाती है, सबके बाद पूनों के जुझारूओं की जब जोत उतारी जाती है तब उनकी आराधना और माँ के प्रति समर्पण रूपी शब्दों का उच्चारण किया जाता है।

हिल-मिल सब ही ध्यान लगाकर, गुण करणी के गावो।
भक्ति-मुक्ति देत भवानी, माता ध्याय मनाओ।।

जब तक जात उतारी जाती है तब तक यह उच्चारण चलता रहता है, इसके साथ ही जोत को दर्शनार्थ भक्तों के सामने से गुजारा जाता है जहा सभी माँ को प्रणाम कर इस जोत मे भभूति लेते रहते हैं। फिर जोत के धूपिये वापस कार्यवाहक पुजारी मन्दिर के अन्दर ले जाकर सौंप देता है। उसके बाद वीर घटा को बजाते हुए बारीदारजी को सौंप देते हैं। बारीदारजी वीर घटा अन्दर रख माँ से आशीवाद प्राप्त कर माँ के चरणों से विन्दिका लाकर सर्वप्रथम कार्यवाहक पुजारी को लगाने के बाद सभी को लगाते हैं। इसके बाद भोग लगाया जाता है। भोग लगाने के बाद कोई भी जोत करवा सकता है। चतुर्दशी के दिन भोग देरी से लगता है उस दिन माँ के विशेष पूजन होता है उस पूजन में माँ को भोग लगाया जाता है।

आरती

मन्दिर में आरती दो समय होती है। सुबह की आरती को मगला कहा जाता है जिसके लिए बारीदारजी अपने नित्य कार्यों से निवृत्त हो माँ की गुफा मे प्रवेश करते हैं। गुम्भारे की साफ-सफाई करने के बाद माँ की सिंदूर की पोशाक करते हैं, उसके बाद गणेशजी के भी सिंदूर की ही पोशाक करते हैं। बाद में उसी सिंदूर से सभी दर्शनार्थियों को विन्दिका दी जाती है। जब तक यह प्रक्रिया चलती है तब तक धूपिया लाने वाला कार्यवाहक व्यक्ति सुबह की आरती व जोत का सामान तैयार करके माँ के दरबार में धूपियों को लेकर बारीदारजी के सामने हाजिर हो जाता है। यह धूपिया जैसे ही माँ के सामने पहुचता है तब ठीक मन्दिर की प्रोल के पास वाले बरामदे से ढोल के डाके की आवाज निकलती है। इस आवाज के साथ ही नगाड़े, ढोल, टाली, इत्यादि सभी का वादन शुरू हो जाता है। बारीदारजी माँ के सामने धूपिया रख कर उसको बगैर झड़फे ही उसमें माँ के नाम का स्मरण करते हुए घी परोसते हैं। यह माँ की ही अथाह कृपा होती है कि एक पल में ही जोत प्रज्वलित हो जाती है।

एक डाका (एक डका, ढोलका)

जब माँ की आरती का समय होता है उस समय जोत के धुपिये माँ के सामने प्रवेश करेंगे तब ढोल के द्वारा एक जोर का डाका (डका) लगता है, अगर आप कहीं पर भी मन्दिर क्षेत्र में होंगे तब आपको स्पष्ट सुनाई देगा। यह डाका माँ के सामने अपनी उपस्थिति और जोत के दर्शनार्थ सभी भक्तों को दशन लाभ का सकेत देता है।

खम्मा

जैसे ही जोत आती है ठीक उसी क्षण मन्दिर में दूर तक दोनों ओर कतारबद्ध महिला एव पुरुषों से एक साथ एक ही आवाज गुजायमान होती है—खम्मा घणी। हे जगत्-जननी मातेश्वरी, दादी माँ माजीसा, डाढाळी आपको घणी-घणी खम्मा। हमें धन, धान, ज्ञान-भरपूर देवें। हमसे ऐसी कोई गलती ना हो इस कारण हमें सद्बुद्धि प्रदान करें। खम्मा माजीसा खम्मा घणीं।

आरती मे सभी हिस्सा लेवें और सहयोग की प्रवृत्ति रखें

अगर माँ के आप सच्चे भक्त है माँ में पूर्ण विश्वास है, तब आपको आरती के समय हाजिर होना चाहिए। उपस्थिति के साथ-साथ आरती के समय पूर्ण



शान्ति एव सहयोग की प्रवृत्ति के साथ सिम्मा राना चाहिए। ताकि जितने भी नय भक्त जो पहली बार माँ के दर्शन करने आये है वो भी भविष्य म सहयोग प्रवृत्ति की सीख लग। इसी कारण आरती म अधिक म अधिक लोगा को पहुचना चाहिए और सहयोग की प्रवृत्ति क साथ अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए।

मन्दिर के अन्दर वाले नगाड़े

मन्दिर के अन्दर रखे नगाड़े, आवड़जी मन्दिर वाले नगाडे एव बिजली वाले नगाड़े इत्यादि सभी को माँ के भोग के समय कोई भी बजा सकता है मगर पूजन की आरती से पहले लगने वाले भोग के समय नगाड़ा, ताली इत्यादि बजाना मना है।

(बीच में काफी समय तक बिजली से बजाने वाले नगाडे आये थे उनका काफी समय तक उपयोग लिया गया।)

भोग लगाते समय नगाडे कब-कब बजते है?

जब माँ की सुबह मगला की आरती होती है तब, सुबह के कलेवे (भोग) में, भोग आरती के समय दिन में अगर किसी भक्त के द्वारा भोग लगाया जाता है तब भी नगाडे बजते है मगर जब माँ के पूजन होता है तब उस पूजन मे आरती से पहले लगाया जाने वाले भोग के समय नगाडे, ताली, वीरघटा आदि कुछ भी नहीं बजाया जाता है। उसम आरती होती है तब बजाया जाता है।

नगाडा

माँ की कृपा से ढोली जाति वर्ग को माँ के दरबार में ढोल नगाडा एव नौबत बजाने का आशीर्वाद मिला हुआ है। जिनका ढोली परिवार आज तक परम्परानुसार माँ के सामने ढोल बजाकर माँ का गुणगान करते हैं। ढोलियों के देशनोक में कई घर हैं जिनमे सभी ने मन्दिर मे बारी बाध रखी है हर महीने परिवर्तन होता है। ढोलियो की मन्दिर मे नियुक्ति होती है जिनका उनको मासिक वेतन दिया जाता है इस वेतन के बदले इनको 24 घटे तक माँ के गुणगान का आदेश है जिसके लिए दिन में दो व्यक्ति रात को दो व्यक्ति इस प्रकार उपस्थित रहते हैं ताकि माँ की सेवा में हाजिरी बराबर रहती रहे।

ढोल, पेटी-बाजा

ढोल व पेटी-बाजा दिन-भर रुक-रुक कर बजाते रहते हैं। आरती के समय सुबह-शाम नियमानुसार बजते हैं।

तावेडा (ढोल)

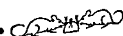
माँ के दरबार के ढोल को ताबेड़ा (ताम्बे की चद्दर पर चमड़ा लगा होने के कारण) कहा जाता है। देशनोक में ताबेड़ के ढोल चार हैं। वो चारों ही माँ के बड़ बेटे पूनोंजी के परिवार के पास हैं। चारों पुत्रों के नाम से ढोल बारी-बारी मन्दिर में माँ की सेवा में लाया जाता है।

नौबत

ढोलियों के पास वाले नगाड़ों का उपयोग माँ की आराधना की एक विशेष रीति होती है नौबत उसके लिए किया जाता है। यह नौबत वादन एक विशेष प्रकार से लगातार आधे घटे तक बजाई जाने वाली वादन प्रक्रिया है जिनके द्वारा माँ की शक्ति के रूप के प्रभाव को प्रभावित करने हेतु माँ का गुणगान है, इनसे माँ को खुश किया जाता है। नौबत के समय माँ के शक्ति रूप के प्रभाव से आस-पास के प्रदूषित वातावरण एव दुष्ट विचारों का दमन होता है। यह नौबत दिन में चार बार बजते है। सुबह आरती से ठीक पहले, दोपहर 12 बजे, शाम आरती से पहले एव रात को 12 बजे लगातार आधा घटे बजाया जाता है।

रक्षा हेतु माँ के सामने अरदास

ढोलियों को इच्छानुसार कुछ रुपये देकर इनको अपनी जाति, नाम व पिता का नाम बताकर माँ के सामने एक विशेष प्रकार से (जो कि इनको गाने का विशेष आशीर्वाद मिला हुआ) उसको गाकर ये लोग हमारी रक्षा हेतु माँ के सामने एक अरदास प्रस्तुत करते हैं जिसको राजस्थानी मे रिख्या (रक्षा) कहा जाता है।



चिराग (मशाल रूपी) कब-कब जलाते है?

माँ की दोनो समय की आरती से पहले मन्दिर द्वारा नियुक्त नाइ हमेशा चिराग जलाता है। वह चिराग हाथ में लेकर तब तक खड़ा रहता है जब तक आरती पूर्ण नहीं होती है। माँ की आरती के बाद आवड़जी महाराज की आरती तक चिराग जलता है। इस चिराग म समय-समय पर एक कूपी से तेल डालते रहते है। चतुर्दशी के पूजन के समय तथा सावण-भादवा प्रसादी के अवसर पर भी नाई भोग के थाल के साथ चिराग जलाता हुआ आगे बढ़ता हुआ मन्दिर में गुम्भारे के बाहर खडा हो जाता है।

चिराग की रुई

मन्दिर में आरती, अखण्ड दीपक एव चिराग की रुई गाव के पिजारों से आज भी लाई जाती है। क्योंकि माँ न जब स इनको अपने यहा आश्रय दिया है तब से ये लोग बडे भक्ति-भाव के साथ माँ को रुई पहुचाते है। इस रुई क बदले इनको माँ का प्रसाद दिया जाता है। ये अपने आप को बड़ भाग्यशाली समझते हैं कि हमारे यहा से माँ की सेवा म बराबर हाजिरी होती है। इस सेवा से इनको अपार खुशी होती है।

चिराग का तेल

रुई की भाति गाव में जब से हिन्दू-तेलियों ने अपने रोजगार के कारण देशनोक मे डेरा डाला तब से इन्होंने अपनी घाणी से चिराग के लिए तेल मन्दिर पहुचाना अपना परम कर्तव्य और सेवा समझते हैं। आज तक यह सेवा-क्रम चला आ रहा था। मगर अब घाणिया लगभग बद हो गयी है। इन्होने अपना व्यवसाय भी बदल लिया है। इस कारण मन्दिर से नाई को एक निमित्त राशि दे दी जाती है। जिससे आज तक बराबर चिराग जलता आ रहा है।

आरती पूर्ण होने तक जोत जलती रहती है

जब माँ की आरती होती है उससे पहले माँ की जोत की जाती है क्योकि माँ का असली रूपदर्शन तो जोत ही है। जोत आने के बाद माँ साक्षात् जोत रूप में विराजती हैं। फिर माँ के सामने आरती उतारी जाती है। जब तक आरती पूर्ण नहीं होती है तब तक जोत को पूर्ण रूप से जलने के लिए उसमे भरपूर मात्रा में खोपरा, गुगुल धूप, घी इत्यादि को परोसा जाता है। जब आरती पूर्ण हो जाती है तब बारीदारजी माँ से आज्ञा प्राप्त कर उस जोत में धूप इत्यादि और परोसते हैं। ताकि श्री गणेश भगवानजी की सेवा के बाद मन्दिर परिसर में श्रीआवड माताजी, इन्द्र बाईसा, माँ दुर्गा मानूबाईजी नरसिंगजी, दशरथ मेघवाल एव पूनोंजी झुझारुओ की भी आरती हो जाए।

गुम्भारे की जोत को बाहर लाकर श्रीगणेशजी की जोत उतारी जाती है

बारीदारजी आरती पूर्ण कर माँ की जोत (अगर आवश्यकता हो तो उसमें खोपरा, घी, गूग्गल इत्यादि और परोसते है) को बाहर लाकर सर्वप्रथम श्री गणेशजी के जोत उतारी जाती है। गणेशजी के जोत उतार कर सहायक को जोत सौंप देते हैं।

जब तक जोत-आरती पूर्ण ना हो छूना मना हे

अगर मन्दिर म आरती का समय है, आरती या पूजन हो रहा हो, आरती होने के बाद जब जोत गुम्भारे से बाहर लायी जाती है, उसके बाद श्री गणेशजी की जोत उतारी जाती है फिर श्री आवड़जी के साथ-साथ मन्दिर परिसर में सभी देवी-देवताओं क जब तक जोत नहीं की हो, तब तक जोत को छूना मना है।

बारीदारजी गुम्भारे में साफा (पगडी) कब उतारते है

वैसे तो आमतौर पर बारीदारजी जैसे ही माँ के गुम्भारे से बाहर आते है अपने आसन पर बिराजते है, उस समय तक साफा रखते है। गुम्भारे से बाहर आने के बाद साफा लगाना जरूरी नहीं है। माँ के गुम्भार में साफा उतारना मना है। मगर जब मॉ की आरती होती

है। उस समय जोत जगने के साथ ही आरती को सजाकर प्रज्वलित करने के बाद माँ भगवती से सविनय वदना करने कोई भूल हो जाए उसके लिए क्षमा एव पूजा-आरती की अनुमति क लिए अपना साफा (पगडी) अथात् अपना स्वस्व क्षणभर माँ के चरणो म रखते है फिर सहर्ष माँ की आरती करते है।

जोत नही करवा सकते

वैसे आप जोत सवेरे आरती के वाद से रात 10 बजे तक करवा सकते है। पूजा के कुछ समय है, जैसे सुबह की आरती, भोग के समय, पूजन के समय, गुम्भारे की सफाई के समय बारीदारजी आराम करते हो इत्यादि समय तक आप जोत नहीं करवा सकते।

जोत कैसे करवाये

जव आप मन्दिर दर्शन करने आते है और माँ के साक्षात् दर्शन हेतु जोत करवाना चाहते है तब आप मन्दिर के वारीदारजी को जोत की निमित्त राशि देकर जोत करवा सकते है। यह राशि उस जोत मे जो घी परोसा जाता है, उसके लिए ली जाती है।

बिन्दिका (सिन्दूर की बिदी)

बारीदारजी सिन्दूर मे घी, इत्र मिलाकर उससे माँ की पोशाक करते है। उस सिन्दूर से बारीदारजी सभी के एक बिन्दी लगाते है। जिसको बिनका (बिन्दिका) कहा जाता है। बिन्दिका लिलाट पर लगते ही एक प्रकार की शान्ति मिलती है। हमें भली-भाति पता है। बिन्दिका मे माँ की कृपा और आशीर्वाद निहित होता है।

सुबह मगला के समय बारीदारजी आरती से पहले बिन्दिका नही लगाते

सूर्योदय से पूर्व बारीदारजी सुबह 3 बजे उठते ही माँ को आत्मिक नमन कर नहा-धोकर जब गुम्भारे में प्रवेश करते हैं तब माँ के चरणों में शीश झुकाकर प्रणाम करत हैं। गुम्भारे की सफाई पूजा आरती की तैयारी से पहल माँ का सिंदूर से शृगार करते है। फिर जोत मगवाई जाती है। जोत व पूजा आरती सपूर्ण करने के वाद स्वय माँ के श्रीचरणों मे त्रिन्दिका लगाते हैं, फिर किलेदारजी को, उसके वाद सभी को विन्दिका लगाते हैं, आरती स पहले नहीं लगाते हैं।

विन्दिका कब लगती है

वैसे सर्वप्रथम त्रिन्दिका मन्दिर के खुलते ही वारीदारजी दिनचर्या के नित कार्य से निवृत्त हो नहाने क बाद माँ के चरणों म पगड़ी रख, माँ से आशीवाद प्राप्त कर आरती करते हैं। आरती पूर्ण होने के वाद जात को वाहर लाकर गणेशजी के जोत उतारते हैं। उसके वाद मन्दिर के मुख्य कर्मचारी किलेदारजी, जो पूरे परिसर में स्थित देवी-देवताओं की पूजा करते है जिनमें आवडजी (करणीजी की इष्टदेवी), मानु वाई, नरसिगो के जुझारुओं के वाद दशरथ मेघवाल, पूनो के जुझारुओं की जात उतारते है। फिर भक्तों को दर्शन करवा कर बारीदारजी के पास आकर जोत पूर्ण करने की सूचना देते है। उसके वाद वारीदारजी माँ को प्रणाम कर चरणों से बिन्दिका स्वय लगाते हैं। फिर बाहर लाकर सबसे पहले किलेदारजी को लगाते हैं, किलेदारजी माँ को शीश झुकाकर दिनभर के कार्य सुसपन्न हो, ऐसी कामना कर अपनी कोटडी (कमरा) में आ जाते है। फिर बिन्दिका सभी भक्तो को बारीदारजी लगाते है। इसके अलावा जब भी कोई भक्त जोत करवाते हैं तब सर्वप्रथम की बिन्दिका बारीदारजी उस भक्त को ही लगाते हैं जिसने जोत करवायी है क्योंकि उसमें माँ का आशीर्वाद होता है।

भोग

मन्दिर मे माँ की सर्वप्रथम आरती (मगला) में मेवा-मिस्री पतासा, फल, आदि का भोग लगता है। उसके बाद सुबह का भोग 9 15 बजे लगता है। उसमें मुख्यत खीर, खिचडी, लापसी, हलवा, मालपुआ खाजा व पूरी इत्यादि बनते है। यह सभी पकवान हर रोज मन्दिर के रसोवडे मे बनते है। फिर इनका भोग लगाया जाता है। माँ के भोग के बाद मन्दिर स्थित आवड़जी,



इन्द्रबाईसा मानुबाई तथा झुझारूओ को भोग लगता है। फिर उस भोग को एक साथ मिलाकर सभी भक्तो को बाट दिया जाता है। इसी क्रम में साय के नियमित भोग म रसोवडे में मन्दिर के कर्मचारी दो बाटी बनाकर उनका चूरमा तैयार कर माँ को आरती के बाद भोग लगाते है। जिनको सिर्फ काबे ही खाते है। उमको बाटा नही जाता। माँ के नियमित भोग के अलावा दिन मे अगर कोई भक्त अपनी इच्छानुसार कम से कम 151 रुपये से लगाकर जितनी इच्छा हो वह बनवाकर माँ को भोग लगा सकता है। हा विशेष बात यह है कि वह भोग मन्दिर परिसर के अन्दर ही बनता है। मन्दिर के कर्मचारी ही बनाते है। 251 रुपये तक का भोग रसावडे म छाटी कढाई में, अगर 501 या इससे अधिक का हो तब बडी कढाई में भट्ठी पर बनता है। दिन भर भोग बनाने का क्रम लगा रहता है।

सुबह-साय माँ का भोग बारीदारजी स्वय लाते है

माँ को सवेरे का मुख्य भोग जो सुबह 9 15 बजे लगता है, जिसको माँ के पोतों की बहुए मिलकर रसोवडे मे बनाती है, जिसमे सात पकवान बनते हैं, बनने के बाद बारीदारजी स्वय रसोवडे में जाकर अपने सिर पर ओछाड से ढककर हाथ में जल का कलश लेकर आते है फिर उस कलश को गुम्भारे के बाहर ही रख कर भाग को अन्दर माँ के पास बाजोट पर रख दिया जाता है। फिर माँ से भोजन का भोग लगाने की अरदास करते है फिर माँ नवलाख शक्तियों के साथ उस भोजन का भोग लगाती है। उस भोग से मॉ के काबे कहा पीछे रहने वाले हैं। वैसे भी उनके बगैर माँ भोग लगा ही नही सकती। काबों एव मॉ के भोग लगाने के बाद प्रसाद रूपी सभी को बाटा जाता है।

भोग आरती के समय खोपरा, गुग्गुल डाला जाता है, अन्य मे नही

माँ भगवती की आरता के समय जब जोत करते है उस समय उसमें खोपरा गुगुल इत्यादि को जोत मे परोसा जाता है। अगर दिन में भी माँ को किसी भक्त द्वारा भोग लगाया जाता है उस समय भी जोत मे खोपरा, गुगुल डाला जाता है। वैसे दिन भर होने वाली जोत में सिर्फ घी ही परोसा जाता है। धूप, नारियल इत्यादि पूजा-आरती तथा भोग के समय ही डाला जाता है। यह इसलिए कि मॉ भोग (भोजन) ग्रहण करे तब तक जोत जलती रहे।

रसोवडा

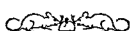
माँ के निज मन्दिर के बायीं तरफ रसोवडा बना हुआ है जहा पर माँ के भोग का प्रसाद बनता है। जिसको बारीदारजी के परिवार की महिलाए ही बनाती है, अन्य किसी को इजाजत नहीं है। इन महिलाओं को रसोवडे मे प्रसाद बनने के बाद रात को मन्दिर मे रुकने की इजाजत नहीं है। मन्दिर बद होने से पहले उनको वापस घर पहुचने का आदेश होता है।

बारीदारजी के परिवार की भूमिका

मन्दिर के पुजारी का बारीदारजी कहकर सम्बोधन करते है। *क्योकि प्रत्येक माह की पूजा परिवर्तन पर* जिसका पूजा-पाठ के लिए नम्बर आता है अर्थात् बारी (नम्बर) आती है इसी कारण इनको बारीदारजी कहते है। सभी लोग, चाहे बारीदार के परिवार के हो, दर्शनार्थी हों सभी इनको आदर सम्मान के साथ बारीदारजी कहकर बुलाते है। इनके परिवार के लोग सहायक बनकर प्रसाद, पूजा-पाठ घी, जात (ज्योत), भोग इत्यादि कार्यों के लिए सेवा मे तत्पर रहते है। परिवार की महिलाए दिन में मन्दिर में रह सकती है, रात्रि में महिला का रहना वर्जित है।

रात्रि मे महिलाओ का मन्दिर मे रुकना मना है

मन्दिर में दिन-भर भक्तो की चहल-पहल बनी रहता है। सवेर 4 बजे से रात 10 बजे तक अनेका भक्त दर्शन लाभ लेते है। मगर एक परम्परा आज भी कायम है, माँ के आदेश को देपावत परिवार निभाते आ रहे हैं। जैसे कि माँ ने अपन पुत्रो को बताया कि मेरा पूजा-पाठ मेर पुत्र बारी-बारी से करेंगे। महिलाए दिन में भाग-



प्रसाद (मानीसा क लिए जीमण) तैयार कर रात्रि में वापस घर जाकर घर के कामकाज करेंगी, घर सभालेंगी। उसी परम्परा का देपावत परिवार की महिलाए निर्वाह करती आ रही है इसी कारण मन्दिर म रात्रि को महिला का रुकना वर्जित है। हा, एक बात अवश्य है कि आसोज एव चैत्र नवरात्रि मे माँ का जन्मोत्सव होने के कारण रात-भर जब भक्तगण चिरजाए (भजन) गाते है तब हर भक्त चाहे महिला हो या पुरुष, सब की आत्मिक इच्छा होती है कि वो माँ की लीलाओ का गुणगान सुने। इसी कारण नवरात्रि मे माँ की इच्छा और अनुमति के आदेश के बाद ही मन्दिर में महिलाए अपने परिवार के लोगो के साथ रह सकती है।

प्रसाद

रसोवडे में माँ के भोग के प्रसाद को बारीदारजी अपनी इच्छानुसार अपने परिवार, रिश्तेदारों, मिलने वालों को भोजन का निमत्रण दे सकते है। क्योंकि यह सौभाग्य ही होता है कि जगत्-जननी माँ करणी के रसोवडे मे, जो माँ अन्नपूर्णा का निवास स्थान है, वहा बैठ कर भोजन करने पर अलग ही आनन्द का आभास होता है। भक्त की भावना पर माँ के प्रसन्न होने से, माँ के आगण मे माँ के आदेश से बनाया हुआ प्रसाद उस भक्त को नसीब होता है, जिसको पाकर वह अपने आप को भाग्यशाली समझता है।

चरणामृत झारी

माँ की मूर्ति के पीछे गगाजल समान पवित्र बरसात के जल का कलश (घडा) भरा रहता है जिसको बावडी के जल से भरते हैं। उस कलश के पानी से नियमित आरती के समय से पहले एक चादी की झारी भरी जाती है। जिसको आरती सम्पूर्ण होन पर माँ को जल चढाकर फिर सम्पूर्ण भक्तों को चरणामृत बाटा जाता है। बाटने के बाद अगर झारी में जल बच जाता है तब उसको काबों की परात में उड़ेल कर खाली कर दिया जाता है। किसी भक्त की माग पर उसे बोतल इत्यादि में डाल सकत हैं। फिर उस झारी को वापस भर कर रखा जाता है। इसी प्रकार जब-जब झारी को सेवा के काम में लिया जाता है, (दोनों आरती तथा भोग आदि में) तब तब झारी को खाली कर वापस भरा जाता है। दिन में एक बार उस कलश को भर कर अन्दर रख दिया जाता है, फिर उसी से झारी को बार-बार भरा जाता है।

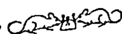
बावडी

माँ के मन्दिर के पीछे की तरफ एक बावडी है जहा बरसात का पानी गिरकर एक जगह इकट्ठा होकर तीन जगह से लगायी गई जालियों से छनकर मन्दिर स्थित बावडी (कुड) में आकर इकट्ठा होता है। माँ का चमत्कार है कि इस जल की तुलना गगाजल के समान होती है। क्योंकि इससे बड़ा साक्षात् चमत्कार क्या होगा कि आज तक वर्षों से यह कुण्ड कभी खाली नहीं हुआ।

वर्तमान मे चमत्कार ही होगा कि बरसात का पानी (पालर पानी) जहा एक जगह इकट्ठा होने के 5 दिन के बाद ही उसमें कीडे पड जाते हैं, जिनको छानना मुश्किल हो जाता है। लेकिन इस पानी में आज तक एक भी कीडा नहीं पडा। इसी कारण इस जल की तुलना गगाजल के समान है। मन्दिर मे पूछने पर बताया कि करीब 3-4 साल पहले इस कुड की सफाई की गयी थी जो कि करीब 25 वर्ष बाद हुई थी जिसमें एक भी कीड़ा नजर नहीं आया। इसलिए चरणामृत की एक बूद भी अगर शरीर पर गिर पडे या पूजा समय चरणामृत मिल जाए तो शरीर के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। तन-मन सभी स्वस्थ व प्रसन्न हो जाते है।

मन्दिर के सभी पूजा के कार्यों मे बावड़ी का जल लिया जाता है

मन्दिर मे पूरे दिन प्रत्येक कार्य में इस जल का प्रयोग लिया जाता है। चाहे गुम्भारे की बार-बार सफाई हो आरती के समय व पूजन के समय बार-बार झारी को भरना चाहे रसोवडे में जितनी सामग्री बनती हो दिन में जितने भी भोग लगते हों एव चाहे सावण-भादवा कड़ाह की महाप्रसादी का बनना हो (जिसम भरपूर पानी लगता है)—इन सभी में इस बावडी का पानी प्रयोग लिया जाता है।



मन्दिर में माँ की सेवा-पूजा, चरणामृत झारी, प्रसाद जितना भी मन्दिर मे बनता है, इसी जल से वनता है जल स होने वाले सभी कार्य मढ मे सैकडो वर्षों से मढ के पीछे बनी हुई बावडी से सगृहीत जल से होते है। चाहे कम-से-कम चरणामृत झारी के लिए जल हो या चाहे सावण-भादवा महाप्रसाद के लिए अधिक मात्रा में जरूरत हो जल की। सभी प्रकार के उपयोग मे जल सिर्फ बावडी का ही काम लिया जाता है।

माँ का त्रिशूल

माँ करणीजी ने स्वय जब देशनोक के ही चौथजी वीठू के ऊट का पैर ठीक किया था (करीब 200 वर्ष पूर्व) तब माँ करणीजी ने खाती का रूप धारण कर ऊट के पैर में सलाखें डालकर ऊट को ठीक किया तथा कहा कि आपके घर पहुचने के बाद ऊट मर जायेगा। जैसे ही ऊटों की कतार गाव पहुची उसी समय चौथजी का ऊट मर गया। मगर ऊट मरने के ठीक पहले माँ की चमत्कारी घटना के लिए ऊट के पैर से सलाखें उसी क्षण बाहर निकल पडी। तब एकाएक चौथजी को याद आया कि यह सलाखे मेरी दादी माँ के हाथ की है। क्योंकि मैंने विपदा में दादी माँ-दादी माँ की पुकार से घने जगल को गुजायमान कर दिया था। उस समय सुनसान जगल में जगली जानवरा के अलावा कुछ न था। उस स्थिति मे एक खाती का आना अपने आप मे एक चमत्कारी घटना ही है। वो खाती नहीं बल्कि खाती का वेश धारण कर मेरी दादी माँ स्वय आयी थी। चौथजी ने सारा वृत्तात परिजनों को सुनाकर उस सलाखों से एक त्रिशूल बनाया जो आज भी माँ के इस गुम्भारे में सुरक्षित है। उसका दर्शन सुलभ नहीं है। हो सकता है आने वाले समय मे उसको कोई उचित स्थान पर रख दिया जाए ताकि दोनों समय उसकी भी पूजा-अर्चना हो सके, भक्तगण दर्शन कर अपने आप को धन्य कर सकें।

अखण्ड दीपक

माँ के गुम्भारे की मूर्ति के पास एक घी का अखण्ड दीपक वर्षों से जगमगा रहा है। हा, समयानुसार उसमें बाट (बत्ती) को बदला जाता है। उसमे जितना भी घी लगता है वह सभी बारीदारजी की तरफ से लगता है।

गुम्भारे में लाइट नही है

माँ के गुम्भारे मे लाइट की व्यवस्था नहीं है। माँ के गुम्भारे में परम्परागत अखण्ड दीपक द्वारा लाइट की व्यवस्था की गई है। अखण्ड दीपक की ज्योति बराबर जलती रहती है। जब कभी गुम्भारे की जाच पडताल की जाती है तब अतिरिक्त रोशनी के लिए एक रुई की मोटी बाट (बत्ती) बनाकर जलाई जाती है।

अखण्ड दीपक की बाट(बत्ती) कब बदलती है

वैसे तो अगर बारीदारजी को लगता है कि बाट (बत्ती) बदलने की जरूरत है तब बदल सकते है, मगर नियमानुसार नवरात्रि मे ही महाराज (मिश्रजी) द्वारा बदली जाती है। उस बाट को इस हिसाब से बनाया जाता है कि वह तीन माह तक लगातार जलती रहे।

आरती की बत्तियो को बटने के लिए शिला

माँ के लिए अखण्ड दीपक की बत्ती एव माँ की नियमित पूजा आरती के लिए सुबह-शाम दोनों समय होने वाली आरती के लिए आवश्यक बत्तियो (बाटें) को मदिर के नियमित कर्मचारी उनको जिस पत्थर की शिला पर बटते (रगडकर) है वह भी पूजनीय है। यह रसोवडे के पास धूपियों के पास रखी हुई है।

गुम्भारे की सफाई

माँ द्वारा बनाये गुम्भारे को माँ ने जाल नामक पेड की टहनियों से ढका था वो टहनिया आज भी यथावत है। कहते है कि जाल नामक पेड की एक विशेषता होती है कि जैसे-जैसे पेड सूखता जाता है या उसकी लक्डी पुरानी होती जाती है। वैसे-वैसे उसकी रेत (मिट्टी) बनती जाती है। इसका वर्णन यहा इसलिए किया गया है क्योंकि माँ के इस गुम्भारे की बारीदारजी कम से कम दो बार तो नित- नियमानुसार सफाई करते हैं। दोनो समय एक ही अनुपात में मिट्टी निकलती है। यह माँ की ही



अद्भुत लीला का सर्वश्रेष्ठ प्रमाण ही है। क्योंकि न तो इसके अन्दर बाहर से मिट्टी जाती है और ना ही कोई कहीं से खोद कर लाते हैं। सुबह से शाम तक न जाने गुम्भारे की कितनी बार सफाई होती है फिर भी मिट्टी की मात्रा म कमी नहीं आयी है।

पूजन

पूजन करवाने के लिए सर्वप्रथम किलेदारजी से अनुमति लेनी पडती है तथा उनकी आज्ञा के बाद पूजा के लिए मिश्रजी महाराज से समझ पूछ कर मन्दिर में उसकी फीस जमा करवानी पडती है। नियत समय पर मिश्रजी महाराजा पूजन सामग्री के साथ गुम्भारे म प्रवेश करते है। फिर मन्त्रोचार द्वारा माँ करणीजी की आराधना कर माँ का शृगार किया जाता है। शृगार सम्पूर्ण होने पर मिश्रजी महाराज स्वय बारीदारजी के सान्निध्य में माँ की आरती उतारते है। आरती सम्पूर्ण करने के बाद पूजन सामग्री को ताबे के थाल म मिश्रजी का सहायक अपने सिर पर रखकर मिश्रजी के साथ 'भज मन नारायण-नारायण-नारायण नाम का उच्चारण करते हुए माँ की परिक्रमा लगाकर माँ को दण्डवत साक्षात् प्रणाम करते हैं। बारीदारजी से आशीर्वाद प्राप्त कर बिन्दिका लगाने के बाद महाराज अपने कक्ष की ओर प्रस्थान करते है। जहा आसन पर बैठकर पूजन करवाने वाले भक्त को कू-कू व केसर की बिन्दिका लगाते है। रक्षा कवच के लिए मोली बाधते हैं। उसके बाद उपस्थित सभी भक्तो को महाराज आशीर्वाद देते है। यह पूजन कई भक्त कुछ बोलवा के अनुसार एक-एक महीना तक लगातार करवाते है। चारों नवरात्रि चैत्र, आसोज तथा दो गुप्त नवरात्रि में मन्दिर की तरफ से नियमित पूजन होता है पूजा के बाद पूर्ण आरती प्रतिदिन होती है। नवरात्रि में अन्य पूजन नहीं होता है।

पूजन सामग्री

चदन रक्तचदन कुमकुम, सिन्दूर, मोळी चमकी गुलाबजळ गगाजळ बावडी जळ, लौंग, सुपारी ईलायची गुगल खोपरा सामीपत्र सूखा खोपरा (बलि की भेट के लिए), हलवे का प्रसाद, पोशाक, (कपड़े की धारण करवाने के लिए), हो सके तो पुष्प माला इत्यादि।

पूजन के पात्र

तामड़ा, पचपात्र, सखी, रूपेटा नग चार आरता छोटी तावड़ी नग एक, वीरघटा, झारी।

नोट—विशेष पूजन नवरात्रि की पूर्ण आरता तथा सावण-भादवा महाप्रसादी इत्यादि अवसर पर विशेष पात्र सोने के होते हैं। जिनमें थाल, झारी, प्याला इत्यादि के साथ-साथ पावड़िया स्वर्ण छत्र, हार इत्यादि के दर्शन भी विशेष होते हैं।

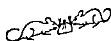
विशेष पूजन में माँ को मदिरा के भोग के लिए मिश्रजी महाराज दाख का रस निकालकर स्वय रस बनाते हैं।

पूजन के समय भोग में मिश्रजी महाराज वीरघटा नही बजाते हैं

वैसे तो माँ के नियमित सुबह-शाम जब माँ के भोग लगता है तब ढोल-नगाडा, वीरघटा वगैरहा सब बडे जोर-शोर से एक सगीतमय माहौल पैदा करते हैं। मगर जब विधि-विधान से पूजन होता है तब माँ का शृगार कराने के बाद आरती से पूर्व महाराज माँ के लिए भोग मगवाते है उस क्षण कुछ भी नहीं बजाया जाता। क्योकि माँ की आरती भोग के बाद होती है, आरती में सभी का वादन होता है। सुबह-शाम की आरती पहले होती है, फिर भोग लगता है तब सभी का वादन होता है। वैसे दिन-भर मे लगने वाले भोग मे सभी प्रकार का वादन होता है।

पूजन के बाद कू-कू का तिलक का नारियल क्यो फोडते?

जब माँ भगवती का पूजन होता है तब माँ को मिश्रजी महाराज चोटी वाले नारियलों को कू-कू का तिलक कर, चावल चढाकर मत्रो से उसको माँ के समक्ष बलि के रूप मे तैयार किया जाता है। उसके बाद उसकी



बलि चढ़ाई जाती है। चाक में से एक ही झटके मे खोपरेनुमा बकरे पर प्रहार कर माँ को बलि का प्रसाद चढाया जाता है। उपस्थित भक्तगण बलि के झटके साथ ही खम्मा घणी के साथ माँ का जयकारा करते हैं।

सर्वप्रथम पूजन

सर्वप्रथम माँ की पूजन बीकानेर महाराजा सूरतसिहजी ने शास्त्रोंक्त रीति से श्री करणी जी के पूजन करवाइ। महाराज न भादवा, आसोज व चैत्र मास की सुदी 14 को बडी पूजा करवाना तय किया। हर महिने की चवदस को छोटी पूजन करवाना निश्चित किया। राज बदल गया मगर पूजन परम्परा आज तक चली आ रही है।

भोग कब-कब नही लगता

प्रत्यक माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन साय आरती के बाद जब तक माँ के पूजन नहीं होता है तब तक मदिर का नियमित भोग (साय के समय वाला) नहीं लगता है। जब पूजन होता है तब मदिर की तरफ से लापसी का भोग लगता है। बाकी दिना म आरती के तुरत बाद भोग लगता है।

आवडजी के भोग के साथ-साथ किन-किन के भोग लगता है

शुक्ल पक्ष की चतुदर्शी की पूजा में सर्वप्रथम माँ की आरती के बाद सिघी परिवार की तरफ से माँ आवडजी का पूजन होता है। उसके बाद माँ करणीजी के मन्दिर की तरफ से पूजन होता है, पूजन आरती में माँ करणी के मन्दिर की तरफ से सवामण लापसी का भोग लगता है। इस प्रसाद को बाद में भक्तों में बाट दिया जाता है। माँ करणीजी के पूजन के बाद मन्दिर की तरफ से माँ भगवती आवडजी का पूजन हाता है। उस पूजन मे माँ आवडजी के साथ-साथ माँ दुर्गा के (जा किसी फौज की तरफ से भेट की गई है) तथा इन्द्रकँवर बाईसा के भी बराबर भोग लगता है। इस पूजन के बाद मन्दिर की प्रोल बद हो जाती है।

ग्रहण मे भी पूजन होता है

जैसा कि बताया गया है कि श्री करणी मदिर आम आदमी के लिए मदिर है मगर देपावतों के लिए वह 'बडेर का घर है' जहा उनकी सबसे बुजुर्ग महिला 'शक्ति रूपा माँ करणी' साक्षात् विराज रही है। इसी कारण जब कभी भी ग्रहण होता है तब मदिर मे भोग लगता है, पूजन होता है, आरती होती है तथा जोत इत्यादि सभी कार्य होते है। माँ के कभी ग्रहण नहीं लगता जो सभी के दु ख दूर करती है, सभी के कष्टों का निवारण करती है भला उनको ग्रहण कैसे लगेगा। जिसके चारो तरफ सभी ग्रह शात है उनकी ठडी नजर की उत्सुकता लिए खडे रहते है। उनकी क्या मजाल कि माँ को कुछ बोले। हम सभी भली भाति जानते है कि क्या ग्रहण म हम सास नही लेते है, कोई भी नित्य कार्य नहीं करते है सब कार्य करते हैं। इसी कारण माँ की सेवा म किसी भी प्रकार की कोई देरी या कमी न रहे यही सोचकर माँ के सभी नित कार्य नियमानुसार होते है। अरे! ग्रहण को छोडो माँ के मदिर में सुआ-सूतक कुछ भी नहीं माना जाता है। सभी अवसर पर आप निसकोच माँ के दर्शन कर सकते है। माँ तो माँ है सभी कार्य माँ की परिधि म ही है।

श्री करणीजी की पोशाको का वितरण

माँ भगवती के लिए भक्तो द्वारा चढाई पोशाको का लेखा-जोखा गल्लदार के पास लिखित में होता है। वह सभी पोशाकें मुनीमजी को जमा करवा देते हैं। मन्दिर मे प्रत्येक भेंट की गई वस्तु (चीज) का मन्दिर में लिखित वर्णन मिलता है। भेट के सामान इत्यादि की लिखा-पढी होती है। जब माँ की पोशाकें अधिक मात्रा म इकट्ठी हो जाती है। तब भक्ता की भावनाओं को देखते हुए उनको निमित्त मात्र राशि प्राप्त कर दे सकते है। पोशाकें दो प्रकार की होती है माँ को धारण करायी जाने वाली पोशाके एव माँ को भट की जाने वाली पोशाके (जिनको कन्याए/महिलाए पहन सके), उनको भी आप खरीद सकते है। अगर आप नियम कायदे से पूजा-पाठ करते है तब तो आपको पूजा-स्थान के लिए



पूजा वाली पोशाक लेनी चाहिए। अन्यथा दर्शनार्थ आप सभाल कर रख सकते है।

करणीजी की गुम्भारे मे श्री इन्द्रबाईसा द्वारा पूजा करना

मॉ करणीजी की वैसे तो पूजा माँ के पुत्र ही करते है मगर एक बार इन्द्रबाईसा देशनोक दर्शनार्थ पधारे थे तब बाईसा ने देपावत परिवार से आग्रह किया कि मैं भी माँ की सेवा-पूजा गुम्भारे मे जाकर करना चाहती हू तब बारीदारजी ने बताया कि गुम्भारे मे सिर्फ बारीदारजी ही पूजा करते है, किसी अन्य को अनुमति नहीं है। इन्द्रबाईसा भी माँ की अनन्य भक्त और आराधिका थीं। उन्होने इनकी बात को स्वीकार कर लिया, मन ही मन माँ से पूजा का निवेदन करते रहे। यह माँ की ही असीम कृपा थी कि बारीदारजी को इन्द्रबाईसा गुम्भारे मे पूजा करते हुए दिखाई देने लगे। इस आभास के बाद इन्द्रबाईसा को अनुमति मिल गई। आज तक इतिहास में ऐसा मौका पहली बार आया था। इन्द्रबाईसा को भक्ति और शक्ति के कारण ही माँ की सेवा करने का उनको सुअवसर मिला। इसी कारण इन्द्रबाईसा के परिवार के लोग गुम्भारे के बाहर बैठकर नवरात्रि की नवमी को पूजन करवाते है।

बारीदारजी

बारीदारजी एक ऐसा गरिमामय पद है कि जिनका सभी सम्मान करते है। चाहे किसी भी उम्र में क्यो न हो 'जी' कहकर सबोधन करेगे। उनका सभी आदर करते है क्योकि एकमात्र बारीदारजी ऐसे हैं जिनको एक माह माँ की सेवा पूजा आरती, भोग आदि सभी प्रकार की जिम्मेदारिया निभानी पडती है। बारीदारजी का अर्थ है—जिसको हम मन्दिर कहते है सही अर्थों में वह मन्दिर नहीं बल्कि देपावतों (देशनोक के चारण जो कि चारों पुत्रों की सतान है) का एक ऐसा बडा घर है जहा उनकी दादी माँ रहती है। उनकी वयावृद्ध अवस्था के कारण प्रत्येक देपावत परिवार से बारी-बारी से दादी माँ की सेवा में आते हैं। इसी कारण इनको बारीदारजी कहा जाता है। बारीदारजी सवेरे मन्दिर की प्रोळ के खुलने से पूर्व अपने दैनिक दिनचर्या से निवृत्त हो, नहा-धोकर नये वस्त्रा के साथ माँ की सेवा में हाजिर हो जाते हैं। वस्त्रों में धोती-चोला, कमीज व सिर पर पगडी अति आवश्यक है। नगे सिर नहीं रह सकते है। माँ की सेवा पूजा व भोग समय को ध्यान में रखकर बारीदारजी जब चाहे तब आराम कर सकते हैं। बारीदारजी के आदर के साथ पाव छुए जा सकते है क्योकि माँ के चरणों को दिन मे सैकडों बार आप स्पर्श करते है। इसी कारण आप धन्य है। बारीदारजी के द्वारा हम भक्तगण उनके चरणो को प्रणाम कर सीधे माँ को दिल ही दिल से अपनी भावनाओं से जोडते है। बारीदारजी को गर्भ गुफा में झुक कर अदर प्रवेश करना पडता है तथा वापस निकलते समय उलटे पाव माँ की तरफ देखते हुए निकलना पडता है क्योकि माँ की तरफ पीठ नहीं कर सकते हैं। माँ को अपने बच्चे रूबरू ही अच्छे लगते हैं। माँ को कतइ अच्छा नहीं लगता कि उनका बच्चा उनके सामने पीठ दिखाये। बारीदारजी को पूरे एक माह तक मन्दिर परिसर मे रहना पडता है। पूजा-परिवर्तन के बाद आप माँ का आशीर्वाद व अनुमति लेकर अपने घर जाते हैं।

बारीदारजी की वेशभूषा

माँ का लाडेसर पोता माँ की सेवा में एक महीने तक मन्दिर में हाजिर रहता है, उनको विशेष रूप से धोती, कमीज, साफा इत्यादि ड्रेस के दो जोडे बनाने पडते है। कमीज की बाह ऊपर चढी हुई नहीं होनी चाहिए। साफा गोल बधा होना चाहिए। जब भी गुफा में प्रवेश करते है। उस समय सिर पर साफा बधा होना जरूरी होता है। अगर बारीदारजी जोत करने के बाद आराम के समय मे जलपान इत्यादि ग्रहण करते हैं तब दुबारा पानी से हाथ-मुह धोकर गुम्भारे मे प्रवेश करते हैं। इन सभी बातों का बारीदारजी विशेष रूप से ध्यान रखते हैं।

बारीदारजी गद्दी (गिद्दी)

माँ की सेवा में एक महीने तक मन्दिर परिसर में रहकर माँ की पूर्ण रूप से सेवा कार्य को करने के लिए

बारीदारजी तैयार रहते है। इनके इस महान कार्य के कारण ही हम सब उनकी सेवा में कोई भी कमी ना हो, इस बात का ध्यान रखते है। बारीदारजी के लिए कुछ साजो-सामान होता है। जिनका विशेष ध्यान रखा जाता है। उनमे एक है गद्दी। जब बारीदारजी गुम्भारे से बाहर निकलते है तब कुछ देर आराम करने की आवश्यकता होती है। तब उनके आसन के लिए एक गद्दी रखी जाती है। जो लाल रग की होती है। उस गद्दी का उपयोग कोई दूसरा नहीं कर सकता। न ही उसको पाव से टच (स्पर्श) नहीं कर सकते। बारीदारजी के आराम के बाद गद्दी को ऊपर कहीं सुरक्षित रख दिया जाता है। ठीक इसी प्रकार बारीदारजी के वस्त्रो, बिस्तर चारपाइ, इत्यादि का भी हम सभी विशेष ध्यान रखते है। धन्य है बारीदारजी की तकदीर। जिस कारण इनको माँ की गुम्भारे के अन्दर जाकर माँ की सेवा-पूजा करने का शुभ अवसर मिला है। बारीदार जी की सेवा करके हम धन्य हो जाते हैं।

चारपाई का उपयोग

माँ की सेवा में महीने भर घर-परिवार से अलग मन्दिर की चारदीवारी के भीतर ही रहने के लिए तैयार होकर माँ का पोता नि स्वार्थ भाव के साथ माँ की सेवा में आता है। इस दौरान उनको सभी प्रकार की सुविधाए दी जाती है। माँ के दरबार में केवल बारीदारजी के सोने के लिए चारपाइ को रखा गया है। इस चारपाई पर दूसरे किसी भी व्यक्ति का बैठना तक सख्त मना है। इसका हम सभी लोग विशेष ध्यान रखते है। बारीदारजी की सेवा मे किसी प्रकार की देरी एव गलती नहीं करते है। माँ के दरबार में चारपाई का उपयोग केवल बारीदारजी के लिए ही होता है।

बारीदारजी के साथ-साथ मिश्रजी महाराज एव बारीदारजी के सहायक के भी पाव छूए जाते हैं

आरती/जोत के बाद बारीदारजी के पाव छूने चाहिए। क्योंकि बारीदारजी एव पूजन के कारण मिश्रजी महाराज इन दोनों पर माँ की असीम कृपा होती है। आप दोनो दिन मे माँ के चरणो में न जाने कितनी बार शीश झुकाते है, श्रीचरणों को छूते है। इसी कारण हम सभी इनके पावो को छूकर माँ के चरणो को छूने का एहसास एव अनुभूति करते हैं। ताकि हमारा मन सीधा माँ के चरणों मे रमता रहे। इनके द्वारा मिलने वाली आशीष सर्वोपरि होती है। बडे-बूढे सभी को इनके पाव छूने की लालसा लगी रहती है। क्योकि सभी को पता है कि इनके द्वारा दी जाने वाली आशीष मे माँ की पूर्ण कृपा और प्यार छुपा होता है। मन्दिर परिसर के देवताओ की पूजा/जोत करने वाले बारीदारजी के भी पाव छुए जाते है।

किलेदार

श्री करणी मन्दिर में किलेदार का पद मुख्य होता है। मन्दिर के पशासनिक कार्यों की देख-रेख किलेदारजी करता है। इनको सम्मान के साथ किलेदारजी कहकर पुकारते हैं। मन्दिर मे किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व किलेदारजी से अनुमति लेना अति आवश्यक है। मन्दिर में तीन प्रमुख पदों मे बारीदारजी, किलेदारजी एव अध्यक्ष होते है। माँ की सेवा-पूजा के लिए बारीदारजी, मन्दिर के आतरिक व्यवस्था के लिए किलेदारजी तथा मन्दिर की आवास व्यवस्था, निर्माण आदि के अधिकार अध्यक्षजी के पास सुरक्षित रहते है।

पूजा परिवर्तन

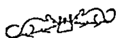
माँ करणी के मन्दिर मे प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (एकम्) को एक प्रमुख कार्य होता है, वह है पूजा परिवर्तन। इस दिन सवेरे की पूजा-आरती के समय नया पुजारी, जो कि उस दिन मे माँ की सेवा मे एक माह तक हाजिर होता है, अपनी तरफ से तन-मन से माँ की सेवा पूजा करने के लिए नये पुजारीजी (बारीदारजी) सवेरे मन्दिर की प्रोल खुलते ही मन्दिर की देहली को प्रणाम कर माँ का स्वच्छ मन से स्मरण कर माँ के दरबार मे हाजिर हो जाते हैं। सुबह चार बजे से वर्तमान पुजारी के पास रहकर लगभग दोपहर दिन तक मन्दिर की सेवा-पूजा की सभी क्रियाओं (पूजा के ढग) को समझ



लेते है। मुख्य बात यह है कि इस दिन से सवेरे की आरती के साथ ही माँ का चढावा, प्रसाद, दक्षिणा, सभी पर नये बारीदारजी का अधिकार हो जाता है। मगर जब तक विधि-विधान से पूजा का कार्यभार नये बारीदारी अपनी जिम्मेदारी म नहीं लेते है तब तक वर्तमान बारीदारजी ही माँ की पूजा करेंगे। दोपहर तक लगभग पाच सौ साल पुरानी परम्परा के अनुसार जिस खजाने की चाबिया बन्ना खाती को दी थी, उन्हीं के परिवार का सदस्य उन्ही चाबियो को लेकर आता है। साथ मे मुनीमजी जाच करने वाले किलेदारजी, माँ के चारो पुत्रो के परिवार से एक-एक पुत्र एव मन्दिर अध्यक्ष इत्यादि एक साथ आते है। एक तरफ वर्तमान बारीदारजी के मुख्य व्यक्ति तथा दूसरी तरफ नये बारीदारजी के मुख्य व्यक्ति उपस्थित रहते है। मुनीमजी अपना सालों पुराना बहीखाता खोलते है। उनमे से सभी सामानो-वस्तुआ का मिलान करते है। जिनको उन्होने वर्तमान पुजारी को सौंपे थे। इस समय मन्दिर के गर्भगृह मे बारीदारी तथा जाचकर्ता दोनो माँ को नमन् कर प्रवेश करते है। एक-एक करके सभी का मिलान कर इस कार्य को सम्पन्न करते है। अगर इस दौरान किसी भी तरह की कमी हो जाती है तब उसी समय वर्तमान बारीदारजी पूर्ति करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान मन्दिर के दर्शनार्थियो के लिए दर्शन होते रहते है। किसी भी प्रकार की रुकावट नही होती है। इस दौरान माँ की पावन पावडियो का दर्शन लाभदायी होता है। जिनके दर्शनों के लिए भक्तगण सवेरे से इन्तजार करते है। दर्शन लाभ लेने के बाद अपने आप को धन्य समझते है। ये सभी दर्शन भाग्य वालों को ही नसीब होते हैं। पावन पावडियों के दर्शन महीने में सिर्फ एक बार होते हैं। जब सारी जाचों से सभी प्रकार का मिलान हो जाता है तब सभी मुख्य पदाधिकारी सतुष्ट हो अपना सारा कार्य पूर्ण कर नये बारीदारजी को बता देते है। मिलान की सतुष्टि पर सभी सतुष्ट हो जाते हैं। इस सपूर्ण कार्यविधि के बाद 5 मिनट क लिए चावियों को रखने का अधिकारी बन्ना खाती के परिवार का सदस्य अपनी चाबिया वर्तमान बारीदारजी को सौंप कर उनसे निवदन करता है कि आप अपने आसन पर खडे होकर इन चाबियों के साथ सूखा खोपरा आखों (अन्न) से भरकर सामने खडे नये बारीदारजी को माँ को साक्षी मानकर सविनय झुककर यह जिम्मेदारी उनको शुभकामनाओं के साथ सौंप देवें। सामने खडे बारीदारजी इस जिम्मेदारी को सहर्ष सम्मान के साथ स्वीकार करते है तथा एक क्षण माँ को अपनी नजरों से नमन् कर भगवान गणेशजी को साक्षी मान दूसरी तरफ जहा वर्तमान पुजारी खडे है उस गद्दी पर आ जाते हैं तथा वर्तमान बारीदारजी दूसरी तरफ उनकी जगह आ जाते हैं। यह कार्यभार हाथो में आते ही उनका मन मोर की तरह मन ही मन इस ढग से उमगित हो जाता है मानो ससार का सुख प्राप्त हो गया है। हमे पता है माँ की सेवा का मौका मिलना हकीकत में सातों सुख का एहसास दिलाता है। इस क्षण बारीदारजी का दिल चाहता है कि तुरत माँ के चरणों को छुआ जाये। इसलिए वे उसी क्षण खजाने की चाबिया उसी सुथार को यह कहकर सौंप देते है कि अब चाबियो की जिम्मेवारी आप ही रखें। मैं तो बस तन-मन से माँ की सेवा करूगा। यह कहकर नये बारीदारजी जोत के साथ मन्दिर की गर्भ गुफा में प्रवश करते है। माँ को शत-शत प्रणाम कर उनकी सेवा पूजा मे कोई भूल हो जाये तो उनको माफ करने व सबकुछ मा के जिम्मे सौंप उनसे पूजा की अनुमति लेते हैं। माँ क पावन चरणों को छूकर वहा से सिन्दूर की बिन्दिका लकर अपनी तरफ से पूजा सम्पूर्ण करने वाले बारीदारजी को बिन्दिका लगाते हैं। फिर सभी पदाधिकारी को बारी बारी से बिन्दिका लगाते हैं। सभी उपस्थित भाई बन्धु उनको शुभकामनाए देकर चले जाते है। सबके मुह से एक ही बात निकलती है कि 'बारीदारजी आप तो तन मन सू माँ री सेवा कर ज्यो। बाकी सगलो ध्यान माँ राखसी। जय माता जी री।

बारी परिवर्तन पर बही मे लिखा-पढी

जब बारी बदलती (पूजा-परिवर्तन) है तब मा द्वारा नियुक्त किये गये बन्ना खाती के परिवार के सदस्य आज भी माँ द्वारा सौंपी गई जिम्मेवारी निभाते हैं। उनके पास 'खजाने की चाबिया और सेवा-पूजा का पूरा



हिसाब-किताब है। उनको सब मालूम होता है किस बेटे का नम्बर कब सेवा-पूजा के लिए आता है। वर्षों से सभी का हिसाब एक बही मे लिखा हुआ है। कुछ पुरानी बहिया है जिनमे उस समय की लिखावट के रूप मे है। अन्य में नई लिखा-पढी जिसको आराम से पढा जा सकता है। इनको सब पता है अब कौन पूजा करेगा। जब कभी किसी को पूजा के नबर म जानकारी न हो तब वह परिवार मन्दिर मे अनुमति लेकर खाती परिवार के सदस्य को मन्दिर में बुलाकर जानकारी प्राप्त कर सकता है।

बारीदारजी पूजा-परिवर्तन के बाद छोटडिया जाते थे

गाव के बडे-बुजुर्ग बतात है कि एक समय जब मन्दिर में बारी (पूजा-परिवर्तन) बदलती थी तब उसके बाद बारीदारजी मन्दिर से सीधे छोटडिया दर्शन का जाते थे। उसके बाद वहा से लूँख (खेजडी—माँ की पावन करणेजडी के पत्त) के पत्ते लाते थे। उन पत्तों को बीकानेर राजा को लाकर देते थे। बताया जाता है कि बीकानेर राजा को उन पत्तो के दर्शन करने पर वह स्वर्ण के दिखते थे।

पावन पावडियो (चरण-पादुकाएँ) के दर्शन

बड़े भाग्यशाली है हम और माँ के दर्शनार्थी। जिन पर माँ भगवती की अति कृपा और आशीर्वाद के कारण ही माँ के पावन श्रीचरणों मे धारण होने वाली पावडिया के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। ये पावडिया माँ के मन्दिर मे सुरक्षित है जिनकी पूजा-परिवर्तन के दिन (जो कि प्रत्येक माह की शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन) इन पावन पावडियों के दर्शन कर्मचारियो की देख-रेख म सुलभ होते है। पावडियों के दर्शन पाकर भक्तगण धन्य होते है।

सावळी (चील) दर्शन

माँ ने जब राव शेखा को उसकी पुत्री रग कुवरी की शादी राव बीका से करवाई तब कन्यादान के समय राव शेखा को मुल्तान से मुक्त कराकर शादी के मण्डप में उचित समय ले आइ। उस समय माँ ने चील (सावळी) का रूप धारण कर शेखा को अपनी पीठ पर बिठाकर अविलम्ब तीव्र गति से कन्यादान के समय पहुचा दिया। तब से सावळी के दशन शुभ माने जाते है। क्योंकि सावळी दर्शन साक्षात् माँ के ही दशन है।

ध्वजदण्ड

श्री करणी मन्दिर मे जहा माँ की मूर्ति लगी है। उस गुम्भारे क ऊपर बनी मन्दिर का जो गुम्बज है उस गुम्भज के सहारे एक ध्वजा लगाने के लिए ध्वजदण्ड है जिसमे माँ की ध्वजा लहरा रही है। इस ध्वजदण्ड पर अगर कभी सावळी आकर बैठती है तो यह दर्शन सबसे अधिक शुभ मान जाते है। ऐसा लगता है कि मानो माँ ने साक्षात् उसी रूप मे दशन दिये है। जिस रूप से माँ ने शेखा को जेल मुक्त कराया था।

ध्वजा

माँ के विशाल मन्दिर के ऊपर खुले आकाश म लहरा रही लाल रग की ध्वजा देखते ही मन रोमाचित हो जाता है। मन ही मन हम सोचते है कि माँ क आचल का एक छोर है जो हवा मे कभी इधर से उधर लहराता हुआ सब पर माँ का आशीर्वाद देता रहता है। वैसे लाल रग की ध्वजा एक मन्दिर होने का सकेत कोसों दूर से दे देती है।

इस ध्वजा को जब नये रूप म बदला जाता है तब पूरे मन्दिर की ध्वजाओं को भी बदला जाता है जिनम माँ की गुफा क अन्दर जहा चादी के छत्र लगे हुए हैं उनके ऊपर चदऊ बना है जिसमें लाल और सफेद कपडे के फूल इत्यादि बने हुए है, जिनको दर्जियों के परिवारों के लोग मन्दिर में रहकर बनाते है इनके परिवारा में भी मन्दिर की गुफा में प्रवेश पाने की बारी बनी हुई है। ताकि कोई भी परिवार माँ के चरण-छूकर आशीर्वाद मागने के अधिकार से वचित ना हो। कितने बड़े भाग किये इन जातियो के लोगों ने जिनको माँ की कृपा से गुम्भारे मे प्रवेश की अनुमति मिलती है, इनको इस कार्य के बदले मे बारीदारजी की तरफ से प्रसादी मिलती है जिसका पाकर ये लोग धन्य हो जाते हैं।



ध्वजा मे कितना कपडा लगता है

माँ की ध्वजा के लिए एक निश्चित मात्रा में कपडा लगता है जिसम गुम्भारे का चदेऊ भी शामिल है। इनके लिए लाल रग का कपडा 46 मीटर (89 मेमी पेना), सफेद रग का कपडा 11 मीटर (110 मेमी पेना) होता है। जिनमें लाल रग से ध्वजाए एव सफेद रग से चदेऊ के पाच फूल तथा भोमियाजी की ध्वजाए बनती है।

ध्वजा कब बदली जाती है

वैसे तो ध्वजा प्रत्येक नवरात्रि में बदलती है, इसी दौरान अगर सावण-भादवा की महाप्रसादी बनती है तब इनको बदला जाता है। इसके अलावा अगर कोई भक्त ध्वजा चढाना चाहता हो तो सिर्फ ध्वजा नहीं चढती बल्कि पूरे मन्दिर की ध्वजाओं को एक साथ बदला जाता है। सभी ध्वजाओं को दर्जी परिवार मन्दिर में आकर बताते है। फिर जो व्यक्ति गुम्भारे में प्रवेश करता है वह मन्दिर मे नहाता है नहाने के बाद माँ को प्रणाम कर गुम्भारे में प्रवेश करता है। फिर ध्वजा बना कर चढाते है।

निम्न जातियों की भूमिका—सुथार, दर्जी, मुनीम, सोनार

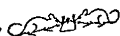
माँ ने अपने परिवार के अलावा सभी को सेवा का मौका दिया है। पुत्रो का परिवार एक महीने तक माँ की सेवा करता है। इनके अलावा नवरात्रि के दिनो में सोनारों के परिवार से दो व्यक्ति माँ का आशीर्वाद प्राप्त कर गुफा में प्रवेश करते हैं। वो गुफा में ही इमली के पानी और नारियल की जोटी से सभी छत्रों की बडी सावधानी से और मेहनत के साथ सफाई करते है। इनके अलावा जब गुम्भारे के अन्दर के चदेऊ (चादनी) एव मन्दिर के सभी देवताओं की ध्वजाओं को बदला जाता है तब दर्जी परिवार के प्रत्येक घर से एक-एक व्यक्ति स्वैच्छिक मन्दिर में हाजिर होते है। इनमे भी जिनका नम्बर होता है वो लोग गुफा में प्रवेश करते है। प्रतिमाह जब पूजा परिवर्तन होती है उस समय गुफा में छत्रो तोरण कटघरा इत्यादि की जाच के लिए बरसों से एक जाचकर्ता (जाची) एव उनके साथ मन्दिर के खजाने की चाबियां को रखने वाले खाती परिवार स एक सदस्य भी गुफा में जाच के लिए प्रवेश करते हैं। ये सभी लाग अधिकतर वस्त्र साथ लेकर आते हैं, मन्दिर में स्नान करके माँ की अनुमति प्राप्त कर गुफा में प्रवेश करत हैं। माँ की इन सभी के परिवार पर असीम कृपा है। इसी कारण इनको गुम्भारे में प्रवेश करने का दुर्लभ शुभ अवसर मिला है। इन सभी को मन्दिर से प्रसाद क रूप म चार लड्डू एव नारियल दिया जाता था। मगर आजकल प्रसाद के साथ कुछ राशि भी प्रदान की जाती है। ये सभी अपने आप को धन्य मानते हैं कि हमें भी माँ के चरणों तक जाकर शीश नमन का अवसर मिला। हमारा जीवन सफल हो गया। सभी कार्य सुसम्पन्न कर माँ को धोक लगाकर खुशी-खुशी अपने घरों की ओर प्रस्थान करते हैं।

जात-झडूले के लिए नाई की नियुक्ति

माँ जब किसी भक्त परिवार की प्रार्थना सुनकर उस परिवार में पुत्र-रत्न की कृपा करती है तब वह परिवार सहर्ष माँ के दरबार में दर्शनार्थ प्रसादी के साथ हाजिर होता है। माँ के दरबार में पुत्र का झडला भी उतारते हैं। झडला उतारने के लिए मन्दिर में नाई जाति का व्यक्ति हर दम तैयार मिलता है। वह व्यक्ति माँ का नाम लेकर उनके लाल के लिए स्वास्थ्य लाभ एव मा की कृपा हमेशा इस परिवार पर बनी रहे इन्हीं शुभ विचारो के साथ वह झडला उतारता है। इसके लिए भक्त उसको अपनी इच्छा के अनुसार राशि दे सकता है। झडले के साथ उस परिवार की माँ को जात भी लग जाती है। किसी की भी बोलवा होती है कि शादी होते ही हम वर-वधू को सपत्नीक माँ के दर्शन को लाएंगे। इस प्रण को पूरा करने हेतु माँ की प्रार्थना-परिक्रमा कर जोत करवाने आते हैं।

मन्दिर मे हथेली टिकाकर बैठना मना है

मन्दिर में यह एक नियम नहीं है फिर भी ऐसा



देखा जाता है कि आप मढ (मन्दिर) की चारदीवारी में कहीं पर भी हथेली जमीन पर टिकाकर नहीं बैठ सकते हैं किसी के कहने व बताने की जरूरत नहीं है। जब आप ऐसा करते हैं तब काबों का एक झुड या एक ऐसा काबा आयेगा वो आपको काट कर तुरन्त भाग जायेगा ताकि आप सम्भल जायें। इसीलिए मन्दिर में सम्भलकर बैठें क्याकि माँ का मढ भक्ति आराधना एव तपस्या स्थल है। यह भक्ति माहौल मे खो जाने की जगह है न कि आराम करने की।

मन्दिर में निषेध—चमडे का बेल्ट, शराबी, जुआ, ताश, नशा इत्यादि

मन्दिर मे प्रवेश करने से पहले चमडे के बेल्ट का कसा होना उचित नहीं है। क्योंकि हम माँ के दर्शनार्थ जा रहे हैं। फिर कमर कस के क्यों जाए? वो भी किसी मरे हुए जानवर के चमडे से बने हुए बेल्ट को पहन कर। ऐसा करना शुभ नहीं माना जाता। मन्दिर में बैठकर किसी भी प्रकार का नशा चाहे वा शराब चरस, अफीम इत्यादि कोई भी हो, सेवन करना सख्त मना है। इनके साथ-साथ जुआ, ताश खेलना, किसी भी प्रकार के मनोरजन के साधना का उपयोग करना भी सख्त मना है। हा माँ के भाग करने वाले पसाद को आप प्रसाद रूप में पा सकते हैं। क्योकि मन्दिर एक आत्म शान्ति और सुकून देने वाली भावनाओं को उत्पन्न करने वाला दरबार होता है। यह मन को विचलित करने वाले किटाणुओं को उत्पन्न करने वाले पीड़ायुक्त, सर्वनाश करने वाली बुरी आदतों का अड्डा नहीं है।

मन्दिर में एडवास बुकिग—जोत, भोग, पूजन एव रातीजोगा

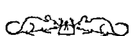
अगर आप मन्दिर में भोग पूजन जोत या रातीजोगा इत्यादि करवाना चाहते है समय के अभाव में रुक नहीं सकते तो उस स्थिति में आप मन्दिर में बुकिग के लिए नियुक्त कर्मचारी के पास अन्यथा मुनीमजी के पास जाकर रसीद प्राप्त कर बुकिग करा सकते है। आपकी अनुपस्थिति में भी माँ तक आप की प्रार्थना पहुचा दी जाती है। जोत के लिए आप वर्तमान में 15 रु, पूजन के लिए 1500 रु, भोग के लिए 251 रु, (भोग आप अपनी इच्छानुसार ज्यादा भी करवा सकते हैं) एव रातीजोगा के लिए 251 रु, निश्चित कर रखे हैं। राशि में समयानुसार परिवर्तन हो सकता है। जोत के लिए एव उपरोक्त छुटकर प्रसाद की रसीद नहीं मिलती है। बाकी सभी की आप रसीद प्राप्त कर सकते है। सभी प्रकार की बुकिग आप तब तक नहीं करवा सकते जब तक की बारीदारजी की अनुमति ना हो।

माँ के काबो के लिए प्रसाद

माँ के लाडले काबों के लिए अगर आप प्रसाद लेना चाहते हैं, लड्डू, पेडे, नारियल, मिश्री पतासे के साथ-साथ अगर घर से चूरमा घी-रोटी बाटी, कच्चे मोंठ, नमकीन भुजिया केले, सेव इत्यादि लाना सुलभ हो तो ये बडे भाव और स्वाद क साथ खाएगे। हमें पता है कि ये सभी मनुष्य जीवन से काबे बनते हैं। काबो से वापिस मनुष्य जीवन में आते है इसका वर्णन आगे पढा-लिखा जाएगा, इसलिए इनकी पसद भी मनुष्य की तरह समय-समय पर परिवर्तित होती रहती है।

मन्दिर के रक्षा प्रहरी

मन्दिर के सभी नियम कायदे-कानून माँ की इच्छा एव आदेश के द्वारा, माँ के भक्तों के लिए ही है। जिनमे एक प्रमुख है माँ के मन्दिर की सुरक्षा की दृष्टि से मन्दिर के पहरेदारो की नियुक्ति। मन्दिर मे रात के 10 00 बजे दरवाजे मगळ (बद) होने के बाद पहरेदारों, किलेदार एव बारीदारजी की देख-रेख में मन्दिर के अन्दर की जाच होने के बाद कुछ पहरेदार मन्दिर की चारदीवारी के अन्दर छत्तों पर एव कुछ मन्दिर के बाहर बारी-बारी से एक-दूसरे की आवाज मिलाते हुए खबरदार-पहरेदार आदि शब्दो के उच्चारणों के साथ सवेरे मगला आरती तक पहरा देते रहते है।



मन्दिर मे सुविधाए—कैमरा, वीडियो, रहना

आज के समय में जो कोई भी दर्शनार्थी आता है उसकी इच्छा होती है कि अपने घर-परिवार के लिए माँ की तस्वीर या यहा की जानकारिया साथ ले जाय। कई मन्दिरो में तस्वीर खिचना मना होता है मगर माँ के दरबार मे सब छूट है इसके लिए कुछ सेवा शुल्क है जैसा कि कैमरा वीडियो शूटिंग इत्यादि के प्रयोग के लिए देशी-विदेशी लोगों से अलग-अलग तरह के शुल्क लिये जाते हैं। शुल्क के बाद आप पूरे दिन उसका उपयोग कर सकते है। एलबम या किसी चैनल के लिए जो कि उसका व्यावसायिक उपयोग लेना चाहता है, उसके लिए मन्दिर ट्रस्ट से अनुमति के बाद रसीद प्राप्त कर प्रयोग कर सकते है। मन्दिर में कुछ कमरे बने हुए जहा बारीदारजी के परिवार के सदस्य रह सकते हैं। नवरात्रि मे इनको मन्दिर के ट्रस्ट द्वारा भक्तो को दे दिये जाते है। इनसे आवश्यकता होने पर ट्रस्ट जब चाहे खाली करवा सकते है।

मन्दिर परिक्रमा मे दोनो तरफ की बारिया

आप जब माँ के मन्दिर मे दर्शनार्थ पहुचते हैं तब परिक्रमा मे बाए एव दाए तरफ की ओर दो बारिया है जिनको बद किया हुआ है। वैसे तो हो सकता है जब मन्दिर बना था दोनो बारिया खुली रहती होगी जिससे मन्दिर का वातावरण अनुकूल रहे। समय अनुसार मन्दिर की सुरक्षा की दृष्टि से इनको बद कर दिया गया है। इनके पास रात को परिक्रमा में अधेरा न हो इस कारण पास ही में दीपक के लिए स्टेंड बने हुए है। भावनाओ के अनुसार मान्यता है की बाइ तरफ की बारी बावडी दर्शनार्थ एव दाई तरफ वाली बारी नेहडीजी के सीधे दर्शनार्थ रखी गई थी। जिससे कि माँ के ध्वजा के दरबार से ही दर्शन हो सके। जहा भक्त आज भी धोक लगाकर माँ की तपोस्थली नेहडीजी दर्शन को आत्मिक स्तुति से नमन करते हैं।

श्री आवडजी मन्दिर के आगे आखा-स्थान

मन्दिर में दायीं तरफ श्री करणीजी की आराध्यदेवी आवडजी का मन्दिर है। इस मन्दिर के आगे थोडा स्थान खाली छोड़ा गया है (जिसको हाल ही मे बद कर दिया गया है जिसको आप चित्र पुस्तक मे देख सकते हैं)। इस कच्चे स्थान पर दर्शनार्थी आखा (गहू, बाजरा इत्यादि) डालते थे। जहा काबे आपको अन्न खाते हुए दिखाई देते थे। यह स्थान एक समय श्री आवड माँ के लिए भैंसे की बलि के लिए सुरक्षित था। जब भक्त मा को प्रसन्न करने के लिए विजय प्राप्ति, शरीर के रोग निदान एव मनोकामना पूर्ण होने पर माँ को भैंस की बलि चढ़ाकर भोग लगाते थे। फिर यह प्रसाद सभी को बाटा जाता था। जैसे-जैसे समय बीतता गया लोगों की भावनाए बदलती गई। इस समय यह प्रथा बद हो गई। वर्तमान में मन्दिर में किसी भी प्रकार की बलि चढाना निषेध है। मगर पूजन परम्परा में माँ करणी को बकरे की बलि के रूप में खोपरा एव आवड माँ को भैंस के रूप में पेठे की बलि दी जाती है। इस बलि को आज भी तलवार के एक वार से बलि देकर माँ को प्रसन्न किया जाता है। माँ करणी को यह बलि प्रत्येक पूजन में दी जाती है तथा आवड माँ को नवरात्रि में पूर्णाहुती के पूजन में भैंसे रूपी पैठे की बलि दी जाती है।

प्रसाद बाटने के लिए लगा प्रस्तर

एक समय जब मंदिर मे बलि चढती थी तब उस बलि के प्रसाद को बाटने के लिए एक निश्चित जगह कर रखी थी। जहा प्रसादी को माँ के चारों पुत्रो के परिवार वालो को बराबर बाटा जाता था। वह प्रस्तर जिस पर प्रसाद का बटवारा होता था, वह आज भी मंदिर परिसर मे मौजूद है। वैसे मंदिर मे आज बलि चढाना निषेध है।

सवासणियो को भोजन करवाना

माँ भगवती के भोग लगाने के बाद कई भक्त गणो की हार्दिक इच्छा होती है कि माँ के भोग के साथ साथ हम कन्याओ को भी भोजन करावें। ये भक्तगण मा को प्रसन्न करने हेतु कन्याओ को भोजन कराना शुभ और फलदायी मानते है। इसी कारण कम-से कम सात कन्याओ को (हो सके तो कुवारी हो) भोजन कराया



जाता है। वैसे अधिकतर माँ करणी की कन्याओं के भोजन के लिए सिर्फ चारण जाति की कन्याओ को ही भोजन कराना माँ क लिए अच्छा होता है। कन्याओं मे कम से कम सात हो, इनके अलावा 9, 11, 21, 31 51, 101 या पूरे देशनोक गाव के चारों वासों की सवासणिया (कन्याओं) को भोजन कराया जाता है। हा, एक वात विशेष ध्यान रखने की है कि कन्याओं को भोजन कराने क बाद दूध से कन्याओं का पाव धोकर भी पीया जाता है एव उनको जितना सामर्थ्य हो दक्षिणा स्वरूप राशि, वस्त्र या कुछ भेट दी जाती है। इसके अलावा एक बात और भी ध्यान रखने योग्य है कि सवासणियों के साथ कम से कम एक बालक को भैरव के रूप म भोजन कराके दक्षिणा दी जाती है तब सवासणिया को भोजन कराने की मनोकामना पूर्ण होती है।

गाव में हेलो (बुलावा)

जब भी माँ किसी विपदा मे अपने परिवार के साथ पूरे ससार के बचाव क लिए किसी बुरी आत्माओं का खात्मा करने के साथ-साथ सकट से उबारने के लिए उनका सहार करती है तब मन्दिर में बारीदारजी को इस बात का अहसास होता है कि माँ ने आज कोइ विपदा टाली है। ऐसा आभास होने पर बारीदारजी सारी बात किलेदारजी को बताते हैं। फिर मन्दिर में ट्रस्ट की सलाह के बाद किलेदारजी द्वारा मन्दिर से एक नाई गाव में हेलो (सदश) करने जाता है कि आज पूरे गाव में लापसी बनेगी और सभी सवासणिया हाथो मे मेहदी लगायेंगी। इस हेले की सभी पालना करते है। इसके अलावा मन्दिर म किसी भी विशेष कार्य के लिए गाव के सभी देपावत परिवार को मन्दिर मे सभा क लिए बुलाने हेतु भी हेले (बुलावा) का कराया जाता है।

नैमित्तिक पूजन

बीकानेर नरेश महाराजा सूरतसिंह का नियुक्त किया हुआ पूजा का विधान इस प्रकार है— (1) वर्ष-भर में 200 रु की चार बडी पूजन, जो चैत्र भाद्रपद आश्विन और माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को होती है नियुक्त की गई। इस दो सौ रुपये की रकम मे श्री करणीजी के बलिदानार्थ सात बकरे, श्री आवडमाता के बलिदानार्थ एक भैसा, मिसरू के कपडे का एक चदवा, एक ध्वजा पचीस रुपये का नैवेद्य— जो कढाह में पकी हुई लपसी हानी चाहिये और 18 रुपये नकद श्री करणीजी को भेट तथा मन्दिर के नौकरों के लगान के लिये नियुक्त किये गये।

(2) शुक्ल पक्ष की उपरोक्त चार बडी चतुर्दशियो को छोडकर, शेष आठ चतुर्दशिया का छोटी पूजन नियुक्त की गई जिनमें बैशाख, कार्तिक और मार्गशीर्ष मास की चतुर्दशियों को बलिदान निषिद्ध है, इसलिये इन तीनों महीनों में केवल मिष्टान्न का भोग लगता है और बाकी पाच चतुर्दशियों म बलिदान और मिष्टान्न दोनों होते हैं। मिष्टान्न के लिये प्रत्येक चतुर्दशी को सात रुपये नियुक्त है और दो रुपये दक्षिणा के भेट किये जाते है।

(3) दिन में दो बार अर्थात् प्रात काल और सायकाल को श्री करणीजी को नैवेद्य अर्पण किया जाता है जिसमे चावल-मूग की खिचडी, खीर-पूरी और हलुवा नित्य-प्रति बनना आवश्यक है। इसके लिये देशनोक के जकात विभाग से निम्नलिखित सामग्री दिलाइ जाती है—

घृत नौ सर छ छटाक, गेहू चौबीस सेर, चावल सात सेर गुड नौ सेर, बूरा साढे तीन सेर मूग नौ सेर दूध के लिये गायो की चराई के लिये दो रुपये नकद, गूगल सवा रुपये और सिन्दूर।

ऊपर एक से लेकर तीन तक की सख्या मे जो पूजन का विधान दिया गया है, वह बीकानेर राज्य की ओर से नियुक्त है और वर्ष-भर की नित्य पूजनो के अन्तर्गत है, चाहे वह आह्निक पूजन हो चाहे अष्टमी या चतुर्दशी का विशेष पूजन हो। परन्तु राज्य की ओर से नैमित्तिक पूजन इसके अतिरिक्त होता है। इसके लिये सिरे ड्योढी से बाहिर के रेतीले चौक में कई छोटे-मोटे कडाह पडे हुए हैं। राज्य के कर्मचारी या यात्री लोग वहाँ पहुच कर 21, 51 101 या 501 रुपये की पूजन किया

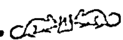


करते है और इस पूजन मे एक या दो बकरो का बलिदान और लपसी का मिष्टान्न होता है। लपसी पकाने के लिये ये कडाह मन्दिर की ओर से बनाये हुए चौक मे पडे हुए है। यात्री वहा पहुच कर केवल अपनी इच्छा प्रकट कर देता है कि मुझको इतने रुपये का पूजन करना है। लपसी के लिये गुड, घी, दलिया और बलिदान के लिये बकरो का प्रबन्ध मन्दिर का किलेदार और चारो थभो के चार व्यक्ति उसी समय कर देते है। पाच रुपये से लेकर पाच सौ रुपये तक का नैमित्तिक पूजन साधारण पूजन है। जब राजा-महाराजा लोग दर्शन करने को आते है और उनको अपनी मानी हुई मन्नतो को पूरी करना होता है तो बहुत बडी नैमित्तिक पूजन की जाती है, वह असाधारण पूजन है। इसके लिये मन्दिर मे दो बडे कडाह पडे हुए है, इनमे से एक का नाम सावन और दूसरे का नाम भादो है। ये कड़ाह लगभग पाच फुट गहरे और अनुमानत बारह-तेरह फुट व्यास के है। इनमे करीब 90 मन दलिया, इतना ही गुड और लगभग तीस मन घी समाता है। इस बडी पूजन मे करीब 5000 रुपये व्यय होते है। यह नियम है कि सावन-भादो के पूजन के साथ चौबीस बकरों का बलिदान होता है और श्री करणीजी के नैवेद्य के लिये सामग्री पकाने के लिये बीकानेर से खास व्यक्ति को बुलाया जाता है। इसमे कई प्रकार के स्वादिष्ट व्यजन, जिनमें मीठा, नमकीन और मास के पकवान शामिल होते हैं, बना कर मद्य के साथ देवी को भोग चढाया जाता है और नैवद्य के इस थाल के साथ सावन-भादो नामक कडाहो मे पकी हुई लपसी के भी दो-दो थाल देवी की मूर्ति के सामने नैवेद्य के अर्थ रखे जाते हैं। परन्तु खेद के साथ लिखना पडता है कि इसम मन्दिर के सेवको के लगान इतने अधिक नियुक्त हैं कि सारा घी, गुड और शक्कर करीब इन्हीं म चला जाता है और पीछे से जो सामग्री बची रहती है उससे लपसी स्वादिष्ट नहीं बनती।

उपरोक्त शिकायत कुछ वर्ष पहले एक बार बीकानेर के शासक समुदाय तक पहुची और बीकानेर के स्वर्गीय कविराज भैरूदान जब अपनी मन्नत पूरी करने के अर्थ पूजन करने के लिये देशनोक पहुचे तो छोटी-छोटी लगाने तो उन्होने चुका दी, परन्तु बडी लगाना को रोक दिया और मन्दिर के पुजारियो को कह दिया कि तुमको खिलाने के लिये यह घी-शक्कर नहीं है, किन्तु भगवती के नैवेद्य के अर्थ लाया गया है। मैं भी माताजी का वैसा ही आत्मीय हू जैसे तुम हो, फिर मै तुम को लगान क्या दू। इस तरह लगानें रोक कर स्वादिष्ट सामग्री बनाकर जब देवी को अर्पण की गई और इस पूजन के अग रूप ज्योति— की क्रिया की गई उस समय पुजारी देवी की मूर्ति के सामने प्रार्थना करने लगा कि आपकी बाधी हुई मर्यादा, जो सैकडों वर्ष से चली आ रही है, आज नष्ट की जा रही है और सन्तान का पेट काट कर मा का पेट भरा जा रहा है। यदि आपको हम लोगों का पालन करना है तो मेरी प्रार्थना है कि ज्योति न आये। कविराज भैंरूदान ने इस प्रार्थना को सुनी-अनसुनी कर दिया और आग में घी परोसने के लिये पुजारी का आज्ञा दी, परन्तु ज्योति नही आई। दो-तीन बार घी पूरा गया फिर भी ज्वाला नहीं उठी, अन्त में कविराज भैंरूदान ने प्रार्थना की कि यदि आप की इच्छा यही है कि इन पुजारियों का ही पेट पाला जाय और आपके नैवेद्य के लिये बेस्वाद चीज बने तो अब आग में घी पूरा जाता है इसके साथ ही जोत आ जाय। निदान घी पूरने क साथ ही ज्वाला धधक उठी और भैरूदान को लागदारों की लगानें बिना किसी आनाकानी के चुका देनी पडी। इसी भाति एक बार किशोरसिहजी बाहर्स्पत्य भी पटियाला नरेश की ओर से 5000 रुपये की पूजन लकर देशनोक गया था, जब लागदाराक ने सारा घी शक्कर आदि लगानों ही में समाप्त कर दिया तो मैंने करीब 400 रुपये का घी शक्कर जुदा मगवा कर उससे स्वादिष्ट रसोई बनाने का प्रबन्ध किया परन्तु किलेदार आदि प्रबन्धकर्ताओं तथा दूसरे व्यक्तियों ने उनको सूचित किया कि पुनर्वार मगवाए हुए घी, शक्कर में स सभी उसी अनुपात में लगानें चुकानी पड़ेगी, तब मुझको विवश हाकर अपना विचार स्थगित करना पड़ा।

सावण-भादवा महाप्रसादी और वितरण

सावण-भादवा के महीनों में माँ की कृपा और आशीर्वाद से माँ के अनन्य भक्त महाराना गंगासिंहजी न



मन्नत पूरी होने के उपलक्ष्य मे माँ को महाप्रसादी करने के उद्देश्य से उन्होंने इन कडावो को बनाने का विचार किया। कडाव बनते ही इनको पूण रूप से भरकर माँ को चढावा करने के आनन्द की अलग ही प्रकार की अनुभूति उनको होने लगी। इनमे प्रसाद कितना बनेगा क्या-क्या सामान लगेगा इसके बारे में देपावता से सलाह ली गई। सभी ने मिलकर उनमे लापसी बनाने का सर्व सम्मति से निर्णय लिया। जाति-वर्ग अनुसार सबको कार्य सौपा गया। उनके बनाये गये नियमो को आज तक हर वर्ग के लोग सहर्ष मानते आ रहे है।

प्रसादी मे पूर्व लागत के बारे में चर्चा हुई तब 10 प्रतिशत मन्दिर खजाने में, 10 प्रतिशत मन्दिर के पुजारी परिवार को 1 प्रतिशत नाइयो के परिवार को गलनी का तथा 1 प्रतिशत ब्राह्मणों को केशर के लिए देने का प्रस्ताव पारित हुआ।

खुशी और रोमाच इस बात का था कि माँ के दरबार में माँ की कृपा से इतने विशाल कडावों में महाप्रसादी बनाने की कृपा हुई है सभी ने सामग्री का लेखा-जोखा तैयार किया। जिनमे आज तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। प्रसादी के लिए निम्न सामान लगता है—

लापसी

गेहू बाट, 90 मण, 1 किलो (35 क्वि 1 किलोग्राम), गुड 45 मण 500 किलोग्राम (18 क्वि 500 किलोग्राम), घृत (घी) 41 टीन (भरती 15 किलो), मेवा 53 किलो (बादाम, काजू, किसमिस, नारियल, मिश्री), लकडी 30 क्वि (75 मण)।

हलवा (सीरा)

गहू आटा 53 मण 26 किलो (21 क्वि 46 किलो), चीनी 92 मण 31 50 किलो (36 क्वि 11 किलो 500 ग्राम), घृत (घी) 111 टीन। मेवा 53 किलो (बादाम, काजू, किसमिस, नारियल, मिस्री), लकडी 30 किवटल (75 मन), दूध 125 किलो।

(सामान की कीमत समयानुसार लगती है)

प्रसादी की लागत मुनीमजी को खजाने मे जमा करवानी पडती है, उसके बाद सामान की खरीददारी मे मन्दिर ट्रस्ट के साथ अगर चाहे तो प्रसादी बनाने वाले भी जा सकते है।

प्रसादी की तैयारी के लिए हर जाति-वर्ग (ब्राह्मण, दपावत, सुथार, नाई, मुनीम इत्यादि) आदेशानुसार प्रत्येक घर परिवार से एक-एक व्यक्ति मन्दिर मे उपस्थित होते है। जाति अनुसार काम को सौंपा जाता है। माँ का आशीर्वाद, ट्रस्ट से प्रसादी की अनुमति, किलेदारजी का आदेश प्राप्त कर सभी कार्य सहर्ष पूर्ण करने के लिए तैयार हो जाते है। सर्वप्रथम सुथार कडावों को सीधा करते है ढक्कन हटाते है। (काफी समय तक कडावो को उलटा रखा जाता था कारण कि इसमे काबो के अन्दर रहने से उनका निकलना मुश्किल हो जाता था। क्योकि महाराजा के अलावा इसमे किसी को प्रसादी बनाने की अनुमति नहीं थी, जिस कारण बरसों बरस से इनमें प्रसाद बनता था। मगर आजकल माँ की कृपा और आशीर्वाद से साल में कई बार बन ही जाता है। फिर भट्टियो को मिट्टी का लेपन करते हुए उनको शुद्ध कर उसमें अग्नि प्रज्वलित करते है, तब तक ब्राह्मण जाति के परिवारों के लोग बाट (दलिया) को घी से चोपड कर तैयार रखते है, उसको नाई जाति के लोग पीपों को भरकर सुविधानुसार गुड के तैयार पानी में कडावो मे डालते है। फिर लम्बे-लम्बे लकडी से बने हुए खुरपों द्वारा उसको एक साथ पाच-पाच लोग आमने-सामने हिलाते हुए उनका मिश्रण करते है। इस प्रकार की प्रक्रिया से पूरे दिन-भर काम चलता है। देर रात तक प्रसाद बन कर तैयार हो जाता है, फिर उसके ठण्डा होने तक अपनी देख-रेख में ध्यान रखते है। इस प्रक्रिया में पूरे तीन दिन का समय लगता है। जब तैयार हो जाता है, उसमें ऊपर से मेवा—नारियल मिस्री बादाम, काजू आदि को मिलाया जाता है फिर उसके ऊपर सिग चढाकर (सिग—तैयार लापसी के प्रसाद के कडाव को भरने के बाद बीच म एक साथ काफी लापसी टूकी चढाते हैं, सवाई रखने हेतु) तैयार करके जजमानो/देपावतों को सौंप दिया जाता है फिर कड़ावो से प्रसाद निकालकर एक



बडा थाल भर कर उसको अलग रख देते है ताकि भोग लगने के समय तक वह प्रसाद ठण्डा हो जाए। इस प्रकार प्रसाद पूर्ण रूप से भोग लगने के लिए तैयार हो जाता है।

भोग लगने से पूर्व

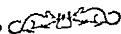
जब प्रसाद बनकर तैयार हो जाता है तब मिश्रजी महाराज अपने आवश्यक पूजन सामग्री के साथ माँ की अनुमति और आज्ञा से माँ के चरणा म शीश झुकाकर नमन् करते हुए पूरे विधि-विधान से पूजन करते है। इस पूजन में प्रसाद चढाने वाले भक्त का पूरा परिवार माँ के दर्शनो का लाभ लेते है। पूजन के समय माँ का पूर्ण शृगार किया जाता है जिसमे माँ की चरण-पादुकाए, नवलखा हार, इत्यादि सभी प्रकार के आवश्यक एव पूजनीय चीजा को उस दिन विशेष रूप से निकाला जाता है ताकि माँ के शृगार म कोइ कमी न रहे। महाराज पूजा को बारीदारजी के साथ मिलकर सपूर्ण करते है। पूर्ण रूप से शृगार करने के बाद सबसे पहले माँ के लिए जोत प्रज्वलित करते है क्योंकि जोत ही है माँ का साक्षात् रूप है। जोत के पश्चात् भोग का प्रसाद चढाते है, भोग लगने के बाद आरती होती है, आरती क बाद महाराज मा के परिक्रमा लगाकर बारीदारजी से आशीर्वाद प्राप्त कर अपने कक्ष की ओर प्रस्थान करते है जहा पर प्रसाद चढाने वाले भक्त को पूजन का प्रसाद व रक्षा कवच मोळी बाध कर सुखी स्वस्थ जीवन यापन का आशीर्वाद देते है। उधर माँ के भोग के बाद उस सावण-भादवो रूपी कडावा मे भरे प्रसाद पर माँ के वशजो (देपावतों) का अधिकार हो जाता है। प्रसाद मे से देपावता द्वारा कुछ प्रसाद उस भक्त को दते है। कुछ प्रसाद मन्दिर दर्शनार्थियों को बाटने हेतु अलग रख दिया जाता है ताकि कोई भी भक्त प्रसाद से वचित न रहे। उसके बाद महाप्रसादी को माँ करणी के पूरे परिवार म (चारो पुत्रों के परिवार) इस प्रकार बाटा जाता है कि प्रत्येक देपावत के परिवार मे उसी माह मे जन्म लेने वाले बच्चे को भी प्रसाद मिल सके। प्रसाद वितरण की व्यवस्था इस प्रकार होती है कि पूरे प्रसाद के वजन को देखकर प्रत्येक देपावत को कितन किलो प्रसाद प्राप्त होगा। उसकी गणित तैयार होती है। उसक बाद एक व्यक्ति रजिस्टर म से प्रत्येक देपावत के परिवार में कुल सदस्यो क नाम की घोषणा करता है फिर नियमानुसार सबसे पहले पूनोजी के बास (मोहल्ला) के लोग प्रसाद प्राप्त करते है। उसके बाद सभी परिवारों को देर रात तक प्रसाद प्राप्त करने का इतजार करना पडता है। देपावतों को प्रसाद मिलने के बाद गाव की माँ की कार्यवाहक कहीं जातिया जो नित कार्यों मे लगी रहती हैं, उनम ब्राह्मणो को सूखी प्रसादी दी जाती है जिनमे प्रसाद की सभी सामग्री होती है। नाई ढोली, मुनीम, सुथार इत्यादि जातियों को भी निश्चित वजन करके प्रसाद दिया जाता है, इसके बावजूद अगर प्रसाद बच जाता है तब उसको अगले दिन मन्दिर आने वाले भक्ता मे बाट दिया जाता है।

प्रसाद मन्दिर की चारदीवारी मे ही बनता है

जिस प्रसाद का भोग माँ के गुम्भारे म बारीदारजी द्वारा लगाया जाता है वह प्रसाद माँ के मढ (मन्दिर) की चारदीवारी के अन्दर ही बनता है। जिसको बारीदारजी के परिवार क सदस्य या मढ के कर्मचारी ही बनाते हैं। बाहर से लाया जाने वाला प्रसाद गुम्भारे के आगे रख गये चादी के थालो में चढाया जाता है। माँ को दोना प्रकार के प्रसाद स्वीकार हैं। मन्दिर द्वारा नियमित भोग का समय है उस समय आप भी भोग लगवाना चाहते हैं तब आप द्वारा बनाया जाने वाला भाग भी माँ क भोग के साथ एक और बाजोट लगाकर लगा दिया जाता है। भक्त द्वारा चढाये जाने वाले भोग के प्रसाद में से कुछ मात्रा में भक्त को दे दिया जाता है बाकी बारीदारजी रखते हैं। मन्दिर के गुम्भारे में लगने वाला भाग लगभग 1 घटे में बनकर तैयार हो जाता है। यह प्रसाद कोई भी भक्त निमित्त राशि प्रदान कर बनवा सकता है। माँ का सभी का प्रसाद सहर्ष स्वीकार है। सब माँ की कृपा है।

देशनोक म पहली बार किसने बनाया महाप्रसाद

श्री पूरणचन्द पारतापमल भूरा परिवार देशनोक में माँ की छत्र-छाया म रहते थे एक दिन किसी बात स



अनबन हो जाने पर उन्होंने सपरिवार देशनोक छाड़ने का विचार करते हुए दो दिन में ही अपना घर-परिवार छोड़कर अन्यत्र बसने की तैयारी कर ली। उनका इस तरह गाव छोड़कर जाना किसी को अच्छा नहीं लगा। सभी ने मनाने की कोशिश की। कही गई बात पर क्षमा भी माँगी। मगर जिनका मन उठ गया, उनको रोक पाना मुश्किल था। सभी ने मिलकर एक असम्भव कार्य को करने का वचन माँगा। वो काय था कि श्रीकरणी मन्दिर में रखे सावण-भादवों कडावों को सूवा (सीधा) करवाने का अथात सावण-भादवों की प्रसादी बनानी होगी। सभी को पता था कि महाराजा के अलावा उनको कोई नहीं बनवा सकता। भूराजी का राज परिवार म आना-जाना लगा रहता था। इसी कारण भूराजी न हा भर दी। दूसरे दिन महाराजा से अनुमति ले ली। महाराजा ने इसको माँ की आज्ञा मानकर स्वीकृति दे दी। उन्होने सावण-भादवो प्रसादी बनवाकर बाटने के बाद अपने सामान के साथ नोखा जाकर रहने के मानस बना लिया। मगर मन ही मन सोचत रहे कि मेरी माँ तो देशनोक मन्दिर में ही है, मैं ता अलग हुआ ही नहीं हू। प्रण लिया कि जब तक मैं माँ का मन्दिर इस धरती पर नहीं बनाऊगा तब तक मेरे घर की एक इट भी नही लगेगी। पहले माँ का मन्दिर बनाऊगा फिर अपना घर। वह मन्दिर जिसकी नियमित पूजा-पाठ आरती होती है, आज भी नोखा में बना हुआ है। मन्दिर के चारों तरफ एक परकोटा है जिसे भूरा चौक कहत हैं। इस भूरा परिवार ने माँ के मन्दिर में एक चादी के किवाड की जोडी चढाई जो कि मन्दिर के नगाड़ों क पास दरवाजे में लगी है।

आखावीज

आखात्रीज (अक्षय द्वितीया) को जब माँ करणी ने अपने श्रीहाथा स राव बीका को आशीर्वाद देते हुए बीकानेर की नींव रखी थी तब से आज तक बीकानेर ने जिस ऊचाई को छुआ, सब माँ की कृपा से ही सभव है। इसी कारण बीकानेर राज परिवार आज भी हर वर्ष आखावीज के दिन माँ के पूजन की परम्परा को निभाता आ रहा है। श्री राज परिवार का एक व्यक्ति मन्दिर आकर पूजन करवाता है। माँ के आशीर्वाद से आज बीकानर, सुसम्पन, एक कर्मस्थली (जिसका न इसे छोटी काशी भी कहा जाता है), भाई-चारे का व्यवहार के साथ सद्भावों और सद्विचारों के कारण ही नई मजिलों की ओर रात-दिन आगे बढता जा रहा है।

आखावीज पर राज परिवार की तरफ से पूजन होता है

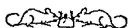
आज भी सैकडा वर्षों से आखावीज (अक्षय द्वितीय) क दिन बीकानेर राज परिवार की तरफ से माँ के मन्दिर में पूजन होता है क्योंकि इसी दिन माँ की कृपा और आशीर्वाद से बीकानेर राज की स्थापना हुई थी।

मन्दिर में माँ को खीचडे का भोग कब लगता है

मन्दिर में भी आखा तीज (अक्षय तृतीया) का त्योहार बड़ी-धूमधाम से मनाया जाता है। मन्दिर मे ठण्डे पानी की नई मटकिया पानी से भरी जाती है। माँ की प्रसादी के लिए खीचड़ा बनाया जाता है जिसको आज भी परम्परागत नियुक्त किये गये माँ के लाडेसर पातों के परिवार स खीचड़ा कूट कर लाया जाता है महेशदानजी की ढाणी म यह खीचडा दो दिन तक कूट-कूट कर तैयार किया जाता है जिसमें बाजरा, मोंठ, चावल इत्यादि मिलाकर तैयार कर मन्दिर मे लाया जाता है। फिर मन्दिर में ही यह खीचड़ा बनता है खीचड़े के साथ-साथ इमली का पानी भी तैयार किया जाता है। खीचड़े के ठण्डा होने के बाद माँ को भोग लगाया जाता है। इस प्रसाद को सभी लोग मन्दिर में बैठकर ग्रहण कर सकते है, भोजन की समुचित व्यवस्था होती है। यह दिन शुभ होता है। इसी दिन जमाने (अच्छी फसल) के शकुन भी लेते है।

मन्दिर मे दीपावली एव होली का त्योहार

माँ के दरबार मे घर-परिवार की तरह दीपावली पूजन के समय माँ के दशन कर बारीदारजी, उनका परिवार, मन्दिर के नियमित कर्मचारी इत्यादि दीपावली



का त्योहार मनाते है इस दिन इन लोगो मे अपार उत्साह होता है यह देखकर कि लक्ष्मीजी के पूजन के बाद सर्वप्रथम माँ के दर्शन करेगे। साथ-साथ में दूकानों, घरो, सगठनो मे पूजन की परम्परा को भी निभाते है। भगवान राम की लका विजय एव अयोध्या प्रवेश की खुशियों को हम सब साक्षात् करते है। इस दिन मन्दिर में बडी जोरदार दीपमाला होती है जिसको पूरा गाव देखने आता है, कुछ परिवार अपने घरों की छतो से मन्दिर की दीपमाला देखना अच्छा मानते है। सवेरे मन्दिर की तरफ से माँ के लाडलो को मिठाई की मनवार की जाती है। 'दीवाली रा राम-राम' और 'जय माताजी की सा' इत्यादि शब्दो की आवाज गूजती रहती हैं। ठीक इसी प्रकार होली के दिन मन्दिर की तरफ से प्लेटों में रखे गुलाल को एक-दूसरे को लगाया जाता है। मीठे की मनुहार करते हुए खुशियो को बाटते है।

मन्दिर के मुख्य पदाधिकारी बारीदारजी, किलेदारजी एव अध्यक्ष

बारीदारजी—मन्दिर के सेवा-पूजापाठ की सारी जिम्मेदारी सिर्फ बारीदारजी की होती है बारीदारजी माँ के गुम्भारे की साफ-सफाई से लेकर भोग, आरती, सामान रखना-निकालना, ज्योत, दीपक, झारी मे जल भरना इत्यादि सेवा-पूजा के सभी कार्य को सभालते है।

किलेदारजी—बारीदारजी के बाद मन्दिर परिसर के सभी कार्य मन्दिर की देख-रेख, प्रसाद के सामान, मन्दिर मे होने वाले प्रमाद की अनुमति, बारी (पूजा) के परिवर्तन पर मन्दिर के सभी प्रकार की भेंट के सामान की जिम्मेदारी इत्यादि मे किलेदारजी की जिम्मेवारी है।

ट्रस्टीयों की शपथ माँ के समक्ष—जब श्रीकरणी मंदिर निजी प्रन्यास के तीन वर्ष पूर्ण होने पर नए ट्रस्टी चुनकर आते है। तब उनको एक-एक शपथ-पत्र हाथ मे थमकार पूर्व अध्यक्ष उनको माँ करणी जी के जोत करवाकर उसमे खोपरा, गुगल इत्यादि परोसकर जोत के समक्ष माँ करणी का स्मरण कर माँ के सामने शपथ-पत्र को एक साथ हाथ जोत के सामने रखकर मन्दिर हितार्थ कार्य सेवा की शपथ लेकर कार्यभार सभालते है।

मन्दिर ट्रस्ट अध्यक्ष—पूरे गाव द्वारा नियुक्त छ सदस्य, सदस्यों द्वारा चुने जाने वाले अध्यक्ष को मन्दिर की प्रशासनिक जिम्मेदारी सौंपी जाती है। जिसमें मन्दिर के लेखा-जोखा से लेकर निर्माण, गाव की पचायती के निर्णय, जब कोई निर्णय न लेने की स्थिति में हो तब गाव की जाजम पर पचायती (मीटिंग) बिठाना, किसी समस्या पर गाव की राय-सलाह लेकर कार्य करना। मन्दिर के सभी कार्यों में अध्यक्ष की सहमति जरूरी है।

देपावतो के लिए मन्दिर न्यायालय भी होता है

मन्दिर म जब कभी किसी भी प्रकार की सेवा या कार्यक्रम के लिए योजना बनाई जाती है तब पूर परिवार के लोगों को मन्दिर में बुलाया जाता है, फिर जाजम पर सर्वसम्मति से किसी बात का निर्णय होता है। ठीक इसी तरह गाव मे किसी देपावत परिवार में कोई समस्या का समाधान न हो तब उस स्थिति में माँ के सामने परिवार क लोगो के साथ बैठ कर निर्णय लिया जाता है। इसके अलावा अगर देपावत परिवारो को मन्दिर ट्रस्टी का कोई फैसला गलत लगता हो तब गाव द्वारा मन्दिर में जाजम पर इसका निस्तारण किया जाता है। देपावतो के लिए मन्दिर ही न्यायालय हाता है।

माँ की पोशाक बनाने वाले कारीगर—दर्जी

पूजन के समय माँ को कपडे की पोशाक धारण कराई जाती है। यह पोशाक आप घर से भी बना कर ला सकते है अन्यथा गाव में ही दर्जियो के परिवार में इस पोशाक के लिए कुशल कारीगर हर समय तैयार मिलते है। देशनोक में हरि दर्जी के पास पोशाक लगभग तैयार मिलती है।

माँ की मूर्तियों के कारीगर

गले में धारण करने वाली माँ की मूर्तियों के लिए जितने कुशल कारीगर देशनोक में मिलते हैं उतने अच्छे अन्य स्थान पर नहीं मिलते हैं। हालाकि मूर्तिया सभी जगह मिलती हैं या तैयार करवाई जा सकता हैं। मूरत

(मूर्ति) की एक अलग तरह की आकृति होती है। जिसको विशेष टाचे में ढाल कर बनाया जाता है। मूर्ति बनने के बाद माँ के चरणों में रख कर जोत के ऊपर से सात बार घुमाकर (अवार) कर मोळी या सूती धागों म पिरोकर धारण की जाती है पहनी जाती है।

माँ करणी की कृपा सोनारों के साथ

मौसूण जाति के सोनार लगभग वि स 1779 मे जागलू से देशनोक आये थे। जैसे-जैसे माँ के चमत्कारों की महिमा बढती गई वैसे-वैसे मदिर में माँ के भेंट के पात्र भी चढ़ते रहे। इसी कारण इन स्वर्ण के, चादी के छत्रो, किवाडों त्रिशूलों, बतनों इत्यादि के पात्रों की सफाई (चमकाने के लिए) के लिए सोनारों को बुलाया जाता था। माँ की सेवा के महत्व को समझते हुए केलुजी सोनार के वशज देशनोक आकर बस गये। इनके परिवार में दयारामजी एव बिन्नोजी मौसूण पैदा हुए। जिनका आज परिवार देशनोक में रह रहा है। दशनोक में आज सोनारों के घर लगभग 45-50 घर है। दयारामजी के परिवार से गगारामजी सोनार ने जब देशनोक में अपना घर बनाया तब घर पर लकड़ी का कार्य तब तक शुरू नहीं करवाया जब तक की माँ के लिए पहले कुछ लकड़ी का सामान न बने। यह माँ की ही कृपा मानी जाएगी कि गगारामजी को पालकी बनाने का आत्मिक आभास हुआ। पालकी बनकर तैयार हुई। जिसको आसोज की नवरात्री में माँ के जन्म-दिवस के दिन माँ की मूर्ति (तस्वीर) को बिठा कर तेमड़ाराय मदिर तक पालकी को माँके वशज जयति के रूप में लाते हैं। हाल ही मे गगारामजी के पुत्र पारसमल ने इस पालकी में माँ की पुरानी श्वेत श्याम तस्वीर की जगह रगीन तस्वीर को चादी के बड़े फ्रेम में मढवाकर भेंट की है। सब माँ की मर्जी एक कृपा से सभव है।

माँ की चिरजाओं के गायक

माँ के भक्तों ने माँ का गुणगान करने के लिए छदों कवित्त, दोहे आदि को लिखकर एक स्वर में गाने लगे तब माँ की आराधना और स्तुति के लिए अपने भावों और विचारों को शब्दों में पिरोकर गायन करके, माँ को खुश करने में अपने आप को सौभाग्यशाली मानने लगे। माँ आज भी अपने बच्चों एव भक्तों द्वारा गाई जाने वाली चिरजाओं से बहुत प्रसन्न होती है जो कि एक लय और उचित उच्चारण के साथ गाई जाती है। मगर समय व वातावरण क साथ सबकुछ परिवर्तन होता रहता है। सब जगह एक जैसा होना सभव नहीं है। भक्त भी इस बात को युग-युगान्तर से सुनते हैं समझते आ रहे है कि माँ तो भावना को समझती है। इसी कारण आज भक्त जिस रूप में माँ की सेवा करता है माँ को प्रसन्नता होती है। माँ को भाव प्यारे हैं, भक्ति प्यारी है। आज भक्ति में अनेकों भक्त एव गायक लीन है जो अपने-अपने शब्दों और स्वरों से माँ की चिरजाओं का गायन करके माँ को खुश करते हैं। माँ की सब पर अपार कृपा है। यह शत-प्रतिशत सत्य है जिसने भी माँ की जिस तरीके से अरदास की है माँ की उस पर कृपा रही है।

श्री करणीजी के लिए साहित्य-सृजन

माँ भगवती श्री करणीजी के बारे में जितना लिखा जाए उतना कम है मगर आज तक कितना लिखा गया है बताना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है। क्योंकि छुटकर कितनी ही रचनाए लिखी जा चुकी हैं। न जाने कितनी ही रचनाए दबी रह गई है, जो सामने आया वो अल्प मात्रा है श्री करणीजी पर सर्वप्रथम रचना किसने लिखी कहना मुश्किल है। मगर जो रचनाए नजर आयीं उनमें देशनोक के ही भोमजी बीठू द्वारा लिखा गया माँ का जीवन-चरित्र है। भोमजी बीठी के छन्दों एव रचनाओं के आधार पर विख्यात ख्यातकार दयालदास सिढायच ने श्री करणी चरित्र नामक पुस्तक को रजवाडे की अनुमति से राज परिवार के लिए लिखी। वो पुस्तक आज भी बीकानेर राजघराने के रिकार्ड में सुरक्षित है। क्योंकि वो दुर्लभ वस्तु मानी गयी है। इसी के आधार पर पटियाला राजघराने के राजकवि किशोरसिंह बार्हस्पत्य ने एक विस्तृत जानकारी के साथ 'करणी चरित्र' के नाम से पुस्तक की रचना की। इसी के आधार पर नई पुस्तकों का लेखन प्रारम्भ हुआ जिनमें थोडा-कुछ नया लेखन



जोडकर लिखा जाता रहा है। कई पुस्तके ऐसी भी है। जिनमे गद्य-पद्य दोनो प्रकार की रचनाए लिखी है। इन पुस्तको में शक्तिसिह बारैठ (जागावत) की सेवा-सुमन, कैलाशदान उज्ज्वल द्वारा लिखी गई हिन्दी और अग्रेजी मे भगवती 'श्री करणीजी महाराज' काफी सराहनीय रही है डा गुलाब सिह की माँ हिगळाज आवड माँ एव करणीजी की छुटकर रचनाओ के साथ-साथ मेरे द्वारा श्री करणीजी पर पहली बार सचित्र वर्णन चमत्कार को नमस्कार, कहानी काबो की, देशनोक गाईड, 'छत्र-छाया', ए रिवीलेशन ऑफ श्री करणीजी एन इनकारनेशन ऑफ शक्ति के अलावा जिसको आप पढ रहे है श्री करणीजी दुर्लभ-दर्शन इत्यादि पुस्तकों म लिखा गया है। इसके साथ ही, अक्षय सिह रतनू, डॉ करणीसिह रतनू, कानदान, कुमेरदान, सोहनदान सिह सिहढायच, गणेशदान शार्दूलसिह का दिया, भवर पृथ्वीराज, मूलदान देपावत, नारायणदान देपावत, नारायणदान छोटडिया, डॉ नरेन्द्रसिह चारण, महावीर प्रसाद सारस्वत, गुलाब बाई द्वारा सकलित शक्ति-सुयस (जिन्होंने सस्कृत मे पहली बार श्री करणी चरित लिखा है। इत्यादि लेखको की रचनाओ से साहित्य सजृन हुआ है। कई अज्ञातजनो ने करणी चिरजाओं, गीतों, कवियों, छदो, दोहों की रचनाओ से माँ की भक्ति की है वो भी माँ के लाडेसर ही हैं। साहित्य के बगैर इतिहास अधूरा है इतिहास के बगैर जानकारी अधूरी है जानकारी के बगैर पत्रिका अधूरी है पत्रिका के बगैर ज्ञान अधूरा है। ठीक इसी तरह जीवन माँ के बिना अधूरा है अगर माँ नहीं तो हम नहीं, माँ है तो हम है।

माँ का गलत प्रचार एव मिथ्या साहित्य रोके

मेरा उन सभी ज्ञात-अज्ञात लेखकों से हार्दिक अनुरोध है जो देवी-दवताओं पर पुस्तकें लिखते हैं अज्ञानतावश किसी भी ऐसे तथ्य को या बात को लिखने की कोशिश न करें जिनके बारे में आपको पूर्ण ज्ञान न हो। जिस तथ्य से किसी समाज या धर्म पर प्रभाव पड़ता हो ठेस पहुचती हो उस तथ्य का सबकी अनुमति या चर्चा के बगैर न लिखा जाए। कई तथ्य ऐसे होते हैं जिनका लिखित प्रमाण नहीं होता। मगर कुछ किवदतिया पूर्ण आस्था और विश्वास के आधार पर अगर किसी समाज पर अमिट छाप बन जाती है तब उस विषय के साथ छेडछाड करना ठीक नहीं है। उनको यथावत रखना ही उचित निर्णय होता है। जब तक आपको पूण ज्ञान न हो, गलत नहीं लिखना चाहिए। आपके द्वारा लिखा गया प्रत्येक शब्द इतिहास बनता है। आने वाली पीढियों क लिए ऐतिहासिक बातें होती हैं।

मन्दिर परिसर के नाम

मन्दिर के आस-पास के क्षेत्र का मन्दिर परिसर निज मन्दिर के बाहर निकलते हैं तब आगे का क्षेत्र—

1 खडेळ—गुम्भार से बारह निकलते ही आखा वाले स्थान को खडेळ कहा जाता है।

2 पखासाल—गुफा से बाहर निकलते ही नगाड़ों वाली जगह जहा गिद्दी, अलमारी, गल्ला इत्यादि होते हैं।

3 तिवारी—आप जिसको बरामदा कहते हैं वह लम्बा कमरा होता है उसे स्थानीय भाषा में तिवारी कहा जाता है।

4 गोखा—जहा श्रीगणेश द्वार बना है भक्त गण बैठकर माँ की चिरजाए गाते हैं उस स्थान को गोखा कहते हैं।

5 ड्योढी—गोखा वाला पूरा स्थान जिसे दरवाजा न 2 कहते हैं जो मुख्यद्वार से थोड़ा [illegible] (ड्योढा) होता है। इसलिए इसको [illegible] जाता है।

6 चौक—गोखा से निकलते ही पूरा परिसर [illegible] ऊपर जाली लगी है उसे चौक कहते हैं।

7 साळ—कमरे के अन्दर एक लम्बा [illegible] जो आगे से खुला होता है उसे [illegible] भाणजी की साळ।

8 ताडो—मन्दिर परिसर [illegible] पूरा [illegible] (परिसर) [illegible] है।

मन्दिर एव गाव के आधुनिकीकरण के निर्माता

माँ के मन्दिर के सभी कार्य आज जिस ढग से निश्चित समयानुसार होते हैं। इन व्यवस्थाओं के प्रणेता है गाव के वो वड़-बुजुर्ग पढ-लिखे लोग सभी ने मिलकर एकमत से जाजम पर एक सभा के साथ एक ऐसे ट्रस्ट का निर्माण किया जो सभी कार्यों की देख-रेख एव मन्दिर क प्रशासनिक कार्यों में अपनी सहभागिता निभाएगा। इस ट्रस्ट का नाम श्री करणी मन्दिर निजी प्रन्यास रखा गया। इस टस्ट में प्रत्येक धडे मे (देशनोक में माँ के चारों पुत्रों के चार वाम है) एक-एक व्यक्ति चुने गये। फिर वो चारों मिलकर एक अध्यक्ष चुनते थे। समय बदलता गया जिस कारण से हाल में 6 सदस्य है जो एक अध्यक्ष और एक सचिव चुनते हैं। इस ट्रस्ट को गठित करने के विचारों क प्रणेता देशनोक गाव के ही लूणदान दपावत (अमर दपावत) के साथ गाव क काफी गणमान्य भाई-वधु भी थे। जिनके काल में ही ट्रस्ट की स्थापना एव श्री करणीजी की जयती की शुरूआत हुई है।

प्रोल कब-कब कितने वजे तक खुली रहती है

प्रोल सवेरे चार वज स साय की आरती पूर्ण होने तक खुली रहती है। सायकाल के भोग लगने के वाद प्रोल मगळ (बद) हो जाती है लेकिन रात की 10 बजे तक खिड़की (वारी) खुली रहती है। दस वजे के वाद मन्दिर के किलेदार पहरेदार, बारीदारजी और नियमित कर्मचारीगण पूरे मन्दिर की सभी प्रकार की देख-रेख करके यात्रियो दर्शनार्थिया को बाहर निकालते हुए प्रोल को वद कर देते हैं। फिर सवेरे चार वजे तक मन्दिर नहीं खुलता है अन्दर पूरी रात माँ की चिरजाए गाई जाती है। रातीजोगा लगता है। सवेरे माँ की प्रभाती (सुबह की) चिरजाओं के द्वारा गुणगान करते हुए माँ को जगाया जाता है।

माँ ने साठिका को क्यो त्यागा

साठिका ग्राम जो वर्षों पूर्व वसा हुआ है, उस गाव में कोइ समस्या नहीं थी। करणीजी के आगमन से साठिका तीर्थस्थल वन गया था। माँ करणी ने सहज-स्नेह अपनत्व और आत्मीयता के भाव के कारण सबको एक सूत्र में पिरो दिया। मानव समाज के मध्य भगवती स्नेह और श्रद्धा का केन्द्र स्थल वन गई थी। करणीजी की उदारता और प्रेम के वावजूद साठिका वाला के भाग्य में ही करणीजी से विछोह था, इसी कारण जब करणीजी की गायों को पानी पिलाने की कठिनाइ साठिका मे उपस्थित होने लगी, हर रोज गाया के लिए साठिका वासियों स बोलचाल होना, करणीजी को गाया की व्यथा देखी न गई। काफी समझाने के वाद भी भाई-वन्धु समझ नहीं। आखिर माँ भगवती को वो निर्णय लेना पडा जिसकी उम्मीद गाव वालो को नहीं थी। केलूजी ने अपने परिवार सहित साठिका त्यागने का विचार कर लिया। सोचा कि जहा गायों के लिए पानी के खातिर झगडा हो रहा है, कुछ लोगा की वजह से पूरा गाव वदनाम हो गया हो, केलूजी परिवार के साथ गायो की खातिर साठिका से निकल पडे। गाव के वे लोग जिनको करणीजी का सहारा था उन्होने लोगों के साथ मिल कर रास्ते में माँ को रोकना चाहा, बिलखते हुए माँ से माफी मागी मगर माँ ने जो श्राप दिया कि 'आज के बाद साठिका में खारा पानी ही रहेगा जिसको न तो इसान पी सकेगा और न ही पशुधन। माँ ने सबकी बातें सुनी, माँ ने उन्हें निराश नहीं किया। इतना कहा कि मेरा विचार अब नहीं बदलेगा। आप लोग इतना विश्वास रखना की मेरी कृपा आप पर बनी रहेगी। आप आखिर हो तो मेरे परिवार के ही। मगर मै यहा नहीं रहूगी मेरा तारण यहीं पर रहेगा। उसको आप सभाल कर रखना। उसकी पूजा-अर्चना करना। इतना कहकर माँ जागलू के बीहड की तरफ पधार गई। मूझासर-साठिका वालो का ऐसा मानना है देशनोक में त्रिशूल लिए खडी है वही साठिका के टीले पर विराजमान है।

साठिका छोडते ही गाव में आग लगना

जैसे ही माँ ने गाव से प्रस्थान किया लोगों ने तोरण का ध्यान नहीं रखा। कहते है साठिका में लाय (अग्निकाड) लग गई। चारणो के घर जल गये। मगर माँ



की लीला अपरम्पार है, तोरण और प्रोल के लपट तक नहीं लगी। सभी भागे जागलू के बीहड में माँ के पास और अरदास की। माँ ने आदेश दिया कि 'तोरण की पूठ पर बस जाओ' (तोरण के पीछे की तरफ) तब से साठिका वैसा ही बसा हुआ है उसके बाद आज तक साठिका में आग नहीं लगी। आज भी तोरण को सभाल कर रखा हुआ है। श्री करणी तोरण मन्दिर बना हुआ है। तोरण की नित्य जोत-आरती होती है। वहा तोरण की बडी महिमा है।

श्री करणीजी का ननिहाल

गीता के इस श्लोक में 'यदा यदा हि धमस्य ग्लानी भवति भारत अभ्युत्थानम धर्मस्य सृजाम्यम' की अवधारणा के अनुसार चारण कुल में भी महान् शक्तियो का अवतार हुआ है। जिसमे आवड माता काअवतार श्री करणीजी बहुत ही प्रसिद्ध है।

सर्वविदित है कि श्री करणीजी का अवतार वि स 1444 मे गाव सूवाप मे मेहाजी के घर हुआ था। इनकी माताजी का नाम देवल बाई आढी था। परन्तु श्री करणी के ननिहाल के बारे मे पूर्ण जानकारी एव उसके वर्तमान स्वरूप के बारे में जानकारी नहीं है।

श्री करणीजी के ननिहाल के बारे मे हमे विस्तृत जानकारी लीम्बडी (नीबडी) कविराज श्री शकरदान जेठी भाई रचित एव प्रकाशित पुस्तक 'चारण देवी श्री करणी' मे निम्न पक्तियो से मिलती है।

'मेहाजी चारण नो विवाह वि स 1438 नी आसपास जैसलमेर अने जोधपुर नी सीमा पर आवेला आढा नामना अनेक प्राचीन गाम ना स्वामि माढा आढीना पुत्र चकलू आढा नी पुत्री देवल बाई नी साथे भयो हतो।'

टीका—मेहाजी चारण का विवाह वि स 1438 के आसपास जैसलमेर और जोधपुर की बीच सरहद पर आया हुआ 'आढा' नाम का एक प्राचीन गाव के स्वामी माढा आढा के पुत्र चकलू आढा की पुत्री देवल बाई के साथ हुआ था।

उपरोक्त पक्तियो के अनुसार आज भी यह गाव प्राचीन जैसलमेर एव जोधपुर सीमा पर तहसील मुख्यालय पोकरण से 24 कि मी दूर रेल्वे स्टेशन 'ओढाणिया' स्थित है।

इस गाव का नामकरण आढा गाम से आढा की ढाणिया बाद मे अपभश होकर ओढाणिया हो गया है। इसके प्राचीन स्वरूप के तहत चारणों के बास से पूर्व रियासत कालीन सूरिया आज भी सरहद के रूप में मौजूद है। आढा ग्राम के प्राचीन अवशेष चारणों की बास से सटे पश्चिम दिशा मे वहाँ बिखरे माटी के टुकडे आज भी है। बुजर्गों द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार एक प्राचीन कुआ एव पग बावडी जो अब अस्तित्व में नहीं है। इस बात की गवाही रहे हैं कि यहाँ कोई प्राचीन गाव था। इस गाव का इस बात का उल्लेख सींथल गाव (बीकानेर) में एक प्राचीन बही में भी है। ओढाणिया निवासी इतिहास के जानकार 70 वर्षीय श्रीनवरत्न रतनू द्वारा अपने परिचय में गाव का नाम बताने पर श्री देथाशकरदान जेठीबाई ने अपने श्रीमुख से कहा भी था कि, 'आप तो श्री करणीजी के ननिहाल गाव के रहने वाले हो।' श्री रतनू श्री कविराज देथा से वि स 2022 में अपने गुजरात प्रवास के दौरान दो-तीन बार मिल चुके हैं। श्री नवरतनदान के पास कविराज शकरदान जठीभाई देथा कृत पुस्तक आज भी गुजराती भाषा म मौजूद है।

श्री करणीजी का विवाह वि स 1473 आसाढ सुदी 9 को हुआ था। ननिहाल पक्ष द्वारा भात (मायेरा) नहीं भरने के कारण शापित आढो द्वारा यह गाव छोडकर करणीजी के बताये मार्ग पर चलते हुए कुछ वर्षो बाद पहाडों की तलहटियो में बस गये।

सरहद पर चारणों के गाव बसाने की परम्परा के अनुसार 'यह गाव वि स 1685 को जमीन हलवा 101 पोकरण भाटी कामदार मेघराजजी मगनोणी एव जैसलमेर राव कल्याणदास हरदासोत के दतब श्री पतोजी रतनू' को दिया गया। इसकी जागीर रतनूओं की है यह उल्लेख जैसलमेर की ख्यात में है। इसी गाव के रतनू शिवजीरामजी को वि स 1944 मे राव बैरीसाल द्वारा

साई मेहता नथमल के समय गाव भू मिला। भू के रतनू शिवजीरामजी को जैसलमेर का कविराज बनने का सौभाग्य मिला वहाँ इनके वशज आज भी नारायणदान कविराज है। बाकी रतनूओ के अन्य गाव चले जाने पर शायद इस गाव का अस्तित्व करणीजी के ननिहाल के रूप मे नहीं रहता। ओढाणिया गाव में श्री करणीजी का प्राचीन एक मदिर है। आज गाव मे अन्य जातियो से अलग चारणों का बास आया हुआ है, इस गाव में रतनूओं के 10 रावले है।

नेहडीजी स्थान पर माँ कब पधारी

माँ जब साठिका को त्याग कर जागलू प्रदेश की तरफ रवाना हुई तव ग्रामवासियो ने पूछा कि आप कहा जाना चाहती है, कहा निवास करना है आपको ? तब श्री करणीजी ने उत्तर दिया कि मैं अपने गोधन के साथ आज का सूर्य जहा अस्त होगा वही स्थान मेरा सदैव का निवास स्थान हो जाएगा। इसी आदेश के साथ जोग माया सपरिवार वि स 1467 के प्रारम्भ मे जागलू के बीहड में पदार्पण किया। इस पुण्य भूमि पर निरन्तर गायें चराकर इसे गोकुल बना दिया। नेहडीजी के चारों ओर फैला विस्तृत ओरण अपने आप में ब्रजधाम बन गया। यह पुण्य स्थान है नेहडीजी का मन्दिर है।

नेहडीजी मन्दिर मे मूर्ति स्थापना

इस पावन भूमि पर माँ ने खेजडी की लकडी रोप कर स्थान को पूजनीय बना दिया। आज भी नेहडी की पूजा होती आ रही है। इस स्थान पर माँ की मूर्ति की स्थापना वि स 1999 (सन् 1942) के आश्विन मास मे इस कल्पवृक्ष खेजडी के पेड के नीचे श्री करणी माता की मूर्ति की स्थापना की गई जिसकी आज तक विधिवत पूजा होती आ रही है।

देशनोक स्थित तेमडाराय मन्दिर की स्थापना

माँ नेहडीजी स्थान पर आकर गायों के लिए घास व पानी के लिए निश्चित हो गई। क्योकि यहा पर प्रचुर मात्रा के घास एव मीठा पानी अथाह था। इसके बाद माँ ने इस बीहड के बीच मे नेहडीजी से पूर्व दिशा में थोडी दूर पर एक उत्तम स्थल को निवास बनाया। इसी स्थान पर तेमडाराय के करण्ड को स्थापित कर एक छोटी मढी बनाइ। इस मढी के सामने ही अपने परिवार का आवास स्थल बनाया। यह मन्दिर आज भी देशनोक स्थित तेमडाराय मन्दिर के नाम से विख्यात है। इस मन्दिर की नींव वि स 1476 की आखाबीज (वैशाख शुक्ला द्वितीया) शनिवार को सूर्य उदय के साथ **(देशनोक नगर का स्थापना दिवस)** ही माँ करणी ने अपने श्री-हाथो से रखी। इसी शुभ घडी के दिन को देशनोक नगर की स्थापना माना गया। देशनोक की पुण्य पावन भूमि माता मेहाई का चिरस्थाई आवास बन गया। राजस्थान मे देशनोक पश्चिम भारत का नूतन शक्तिपीठ बन गया।

देपाजी की तिबारी

माँ द्वारा तेमडाराय के करण्ड की स्थापना के साथ ही माँ का अपना चिरस्थायी आवास स्थान बन गया। करण्ड के सामने ही देपाजी ने अपनी तिबारी बनाई। ताकि करण्ड अपनी नजरों के सामने दर्शनार्थ दिखता रहे। वह दर्शनार्थियों के लिए प्रसिद्ध मन्दिर हो गया। जा कोई भी आता दर्शन के बाद देपाजी की तिबारी अवश्य रुकता। इसी कारण यह स्थान कालातर में देपाजी की तिबारी के नाम से जाना जाने लगा।

महिमा करण्ड (पूजा-मजूषा) की

कन्या शादी पर जब बरात विदा होती है तब वधू पक्ष की तरफ स एक सीख (उपहार) होती है कि लडकी के ससुर को एक बास की बनी हुई छाबडी में कुछ वस्त्र इत्यादि डाल कर उनके सिर पर रखा जाता है जिसको 'सासु छाबडा' कहा जाता है। पश्चिम राजस्थान में बास उपलब्ध नहीं होते है इस कारण एक काठ की पेटी (करण्ड) का प्रचलन चलता था। जब इस करण्ड म कन्यापक्ष की कुलदवी स्वय सुआसिनी के साथ स्वेच्छा से बैठ कर उसके ससुराल चली आती है तब चारण समाज मे इस पुनीत कार्य को छाबडा आना' कहते हैं।

जयपुर के पास हरमाडा गाव के गाढण चारणों म



जहा एक मन्दिर है, जिसमें दुगायमाता की प्रतिमा वास के छावडे में रखी हुई है, छावडे में ही दर्शन होते हैं। हरमाडा में दुगायमाता की बड़ी मान्यता है। करीब 300 वर्ष पूर्व पाली जिले के गाव पाचेटिया की एक चारण कन्या की विदाई के समय उसकी माँ की आख भर आई। भरी आखो से माँ दुगायजी की ओर देखते हुए कहने लगी कि 'आ सुआसिनी तो आज चाली'। माँ की ममता के कारण दुगाय माँ भी उसके छावडे में विराज कर उस सुआसिनी के साथ हरमाडा आ गये। तब से आज तक हरमाडा में छावडी में विराजमान हैं। ऐसी ही कथा साठिका के तेमडाराय के करण्ड (पूजा-मजूषा) की है। एक समय जब राठौडों की राजधानी खेड़ पर अहमदाबाद का नवाब घडसी राठौड राव जगमाल के साथ डटकर दुश्मन को मार भगाया। इस समय घडसी और जगमाल में मित्रता प्रगाढ हो गई। घडसी से अपनी मित्रता के बल पर राव जगमाल इस मेहमान से इतने प्रभावित हुए कि अपनी पुत्री विमलादे के साथ विवाह कर दिया। रणवासे के समय महिलाओ ने एक कपडे का काला साप बनाकर महल के द्वार के सामने रख दिया। राजकुमार घडसी जैसे ही वहा पहुचे अचानक साप दिखा, वो पीछे नहीं हटे, उसको पैरो से दबा दिया। मगर साप तो बनावटी था। वहा हसी का माहौल छा गया। इस घटना पर राजकुमार ने एक दोहे की पक्ति कही—

मै जाणन्तै मेहिल्यो, पमग तणै सिर पाव।

राजकुमार अपने गाव जैसलमेर जाकर भू गाव के चारण आसरत्नजी रतनू, जो कि राज कवि थे, उनको आधा दोहा सुनाकर उसको पूरा करने को कहा। कविराज विद्वान तो थे मगर दोहा बन नहीं पाया। उसी दौरान साठिका निवासी बीठू चारण बोहडजी तेमडाराय के दर्शन करने वहा गये हुए थे। बोहडजी अधिक सावळे (श्यामवर्ण) थे कद भी कम था मगर प्रतिभावान और काव्य के ज्ञाता थे। जब बोहडजी राजकवि के भू गाव मे। उनके घर के आगे से गुजर रहे थे तब राजकवि की पत्नी और उनकी पुत्री वस्तु बाई बोहडजी को देख कर हसते हुए आपस में बाते करने लगी कि इसके भी कोई चढ भागण चावल चेपेगी (सासु का तिलक करना)। लड़की ने कहा कि कौनसी ऐसी लडकी होगी जिसको य राजकुमार ब्याह कर अपने साथ ले जायेगा? इन सब बातो को बोहड़जी ने सुन लिया। मगर चुपचाप तेमडाराय के दर्शनार्थ निकल पडे। दर्शन के बाद आते समय राजकविराज रतनू आसरतनजी ने बोहडजी को रात्रि विश्राम के लिए अपने घर ले गये। बातों-बातों राजकवि ने अपनी समस्या अपरिचित बोहडजी को बताई। तब बोहड़जी बोले कि आप चिता न करें, यह दोहा मैं पूरा कर दूगा। आखिर महारावल घडसी को वह दोहा पूरा करके सुनाया। दोहा राजा को पूरा लगा। खुशी हुई और प्रसन्न होकर उनका पुरस्कार देना चाहा। तब कवि बोहडजी बीठू ने कहा कि यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे पुरस्कार के रूप में आपके राजकवि की पुत्री वस्तु से मेरा विवाह करवा देव। महारावल के दिये गये वचना के खातिर आखिर म भू-कविराजा को हा कहनी पडी। मगर उन्हाने भी एक शर्त रखी कि अगर बोहडजी अपने ग्राम साठिका से विवाह के दिन अपने घर स मेरे घर तक का सफर कुछ समय के अन्तराल में सूयास्त से पहले पहुचे। साथ में बीस गाठ की छडी से मेरी प्रोल में तोरण मारे। यह उनको मालूम था कि सारा कार्य असभव है। मगर भैरव के अनन्य भक्त बोहडजी ने हा भर दी। अपने गाव साठिका पहुच कर अपने इस्ट भैरव की अनुमति प्राप्त कर, बैलगाडी को जोत कर शादी करने निकल पड़े। कहते है कि जब पोकरण के पास पहुचे तब उनका एक बैल मर गया। वहा पर अपनी बहिन के पास गय सारी व्यथा सुनाई। बहिन ने कहा कि 'बीरा। हमारे घर कुछ समय पूर्व ही गाय ने बछडे को जन्म दिया है मगर वह नटखट है। अगर आप की इच्छा हो तो उसको गाडी में लगा देवे।' बोहडजी ने भैरव का नाम ल उसको दूसरे बैल के साथ खडा कर दिया। दूसरी समस्या थी बीस गाठ की छडी तब बहिन ने अपने खेत से खींपड़े की छडी तोड कर ला दी कहा कि यह ले इसमें खूब गाठें हैं। बोहडजी अपार खुशी और विश्वास के साथ अविलम्ब भू गाव की तरफ निकल पड़े। समय से पूर्व पहुच गये। वचनो के धनी राजकवि न अपनी पुत्री

वस्तुबाई का शुभ विवाह साठिका निवासी बोहडजी बीठू के साथ सम्पन्न करवाया। शादी के दूसरे दिन जब वर-वधू तेमडाराय क दर्शनार्थ पहुचे तब वस्तुबाइ की माँ ने तेमडाराय को हाथ जोडकर निवेदन किया कि 'हे मातेश्वरी तेमडाराय! आप बाई वस्तु के साथ पधारना।' बाई का सुहाग चनाये रखना। कहते है कि कविराजा के पूजा घर म रखा करण्ड जिसकी सदैव पूजा-अर्चना कर रहे थे वो करण्ड (जो उनके पास पीढियो से था) वह अपने आप बाई वस्तु के साथ बैलगाडी म आ गया। तेमडाराय ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। यह करण्ड वर्षो तक साठिका मे रहा। बोहडजी के परिवार मे जन्मे केलूजी के पुत्र देपाजी ने जब करणीजी से विवाह किया तब करणीजी अपनी इस्ट देवी जूनी जोगण तेमडाराय के इस करण्ड (पूजा-मजूषा) को अपने साथ देशनोक ल आयीं। देशनोक में अपनी तिबारी के सामने एक छोटा मढिया (छोटा मन्दिर) बना कर उसम सुरक्षित कर दिया। यह करण्ड आज भी देशनोक स्थित तेमडाराय के मन्दिर में सभी के दशनाथ रखा हुआ है। इस करण्ड में सवा सात हाथ लाल वस्त्र नीचे रख कर लाल चोल पर काली ऊन के धागे से बना तेमडाराय सहित सातो बहिनों का स्वरूप विराजमान है। इस करण्ड की देशनोक तेमडाराय मन्दिर में नियमित पूजा-आरती होती है। भक्तगण दर्शन करते है।

करण्ड की पूजा का अधिकार लाखणजी को मिला

माँ की सेवा-पूजा का अधिकार शुरू से ही बडे पुत्र पुण्यराज को दे रखा था तत्र से ही वही परम्परा आज तक चली आ रही है कि 'मकान छोटा बेटा रो अर बारी मोटा बेटा री'। इसी कारण पिता का मकान छोटे पुत्र लाखण का हो गया। तब से करण्ड की पूजा लाखणजी के परिवार वाले करते आ रहे हैं।

देपाजी की सम्पत्ति का बटवारा

खींवसर का झगडशाह डोसी माँ की शरण में आकर बस गया। बीठू परिवार उसका आदर करते थे। देपाजी के चारों पुत्र जब बडे हो गये तो उनका बटवारा माँ के आदेश एव कृपा से झगडूशाह ने कराया।

देपासर कुआ

देपाजी के पुत्र पुनाजी ने देशनोक में एक कुआ खुदवाकर उसका नाम पूनासर रखा। जो कि माँ को अच्छा नहीं लगा। माँ चाहती थी कि कुए का नाम वह अपने पिता के नाम पर रखे। मगर पूनोंजी राजी नहीं हुए। उनका मानना था कि अगर पिताजी का नाम रखूगा तब यह चारों भाइया के नाम हो जायेगा। जबकि सारा खर्च तो मैंने किया है। मगर जिनके साथ माँ की कृपा न हो वह कार्य पूर्ण कैसे हो सकता है। दूसरे दिन कुए में पानी गख-गबडी हो गया। यह देख पूना भागा-भागा माँ के पास गया और चरणों में गिरकर माफी मागने लगा। फिर करणीजी के आदेश अनुसार पूनोजी ने कुए का नाम अपने पिताजी के नाम से देपासर रखा। माँ ने कहा कि तू सोचता होगा कि इससे तो सभी का बराबर हक हो जायेगा, तो होने दे। इससे भाइयो मे प्रेम बढेगा मगर तेरे को हानि नहीं होगी। देपासर नाम से माँ प्रसन्न हुई। इस कुए के बदले में पूनोजी को टिकायत के पद के साथ ही पूनों को पाटवी का पद दिया। इनके अलावा दियातरा का बट (भाग) अकेले पूनोजी को मिला। सबसे उपजाऊ धरती पूनोजी को मिली। पूनोजी प्रसन्न हुए।

ढेढासर कुआ

जब पूनोंजी ने देपासर कुआ खुदवाया तभी देपाजी के भाई ने भी कुआ खुदवाया जिसका नाम ढेढासर रखा। इस कुए के लिए माँ करणी से आशीर्वाद चाहा तब माँ ने बताया कि पानी तो निकलेगा मगर ज्यादा नहीं हागा। इस प्रकार देशनोक म उस समय जब पानी की विकट समस्या थी तब तक देशनोक में देपासर करणीसर एव ढेढासर इत्यादि कुए खुदवाए जा चुके थे। सब कृपा माँ की है।

जब भूरिया को दिया आश्रय

भसाली (जैन) जाति का एक परिवार जब माँ के दर्शनार्थ देशनोक आये थे तब माँ के आशीर्वाद से देशनोक रहना उनको इतना मन भाया कि वो यहीं रहने लग गये। उनके एक पुत्र हुआ उसका रग बिल्कुल भूरा



था। उसका भोलापन और भूरे रग को देख माँ उसे लाड से भूरिया नाम से बुलाने लगी। धीरे-धीरे उसका नाम ही भूरिया पड गया। माँ के आशीर्वाद से उसकी शादी भी हो गई। जब उसके लडका हुआ तब उसका नामकरण माँ ने रखा। भूरिया के परिवार पर माँ की पूर्ण कृपा थी। उसका परिवार फलता-फूलता गया। भूरिया के परिवार वाले भूरा कहलाये। वो आज भूरा जाति से पहचाने जाते है। भूरा जाति सिर्फ देशनोक में ही है, और कहीं नहीं है।

भूरा परिवार आज भी अपने बेटे का नाम बुआजी से निकलवाते है

जब भूरिया के सतान हुई तब उनकी सतान का नामकरण भूरिया की बुआ (श्री करणीजी को बुआ कहते थे) ने किया। इसका कारण है कि देवी की कृपा सदैव बच्चों पर बनी रहे। तब से आज तक भूरिया की सतान से पहचाने जाने वाली सतानों में आज भी अपने बच्चो का नाम किसी पडित मे नहीं निकलवाते हैं। बल्कि माँ करणी की परम्परा से आज भी लडके का नामकरण उनकी बुआजी निकालती है।

बधाऊडा मे बेटी लेना-देना प्रतिबधित

एक गाव है जिसका देपावत परिवार नाम तक नहीं लेते हैं वो है बधाऊडा। जहा पर माँ की लाडेसर पोती मानुबाई की शादी हुई थी। किसी बात की अनबन के कारण मानु बाई ससुराल छोड कर पीहर आ गये। फिर सत्ती हो गये। इस गाव के लोगो के इस व्यवहार के कारण माँ नाराज हो गई और कहा कि आज से इस गाव से हमारा कोई भी रिश्ता नहीं है। पूरा देपावत परिवार आज तक माँ के आदेश की पालना करते आ रहे हैं। इस गाव से रिश्ता तो दूर नाम तक नहीं लेते हैं।

नील के उपयोग पर प्रतिबध

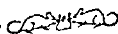
माँ के मन्दिर में नवरात्रि में रगाई-पुताई होती है तब एक विशेष बात को ध्यान में रखने का आदेश होता है कि नील का उपयोग नहीं होना चाहिए। मन्दिर म एव माँ को मानने वाले काफी भक्तों ने भी इस आयग्न का पालन किया जाता है। नील को बनाते समय उसमें चर्बी का प्रयोग किया जाता है इसी कारण इसके उपयोग पर प्रतिबध है इसके साथ मन्दिर में हरे रग का, नीले रग का कम से कम उपयोग किया जाता है। मन्दिर में ज्यादातर प्रयोग लाल-पीले रगों का किया जाता है।

बलि पर प्रतिबध

माँ के भक्त कई प्रकार की प्रसादों की बोलवा के साथ दर्शनो को आते हैं। माँ को प्रसाद करने के लिए मिठाई, नारियल इत्यादि के साथ-साथ मदिरापान का एव बलि का प्रसाद भी बडे चाव से चढाया जाता है। जिसको माँ भक्त की भावना एव श्रद्धा के कारण स्वीकार करती थी। फिर प्रसाद सभी को बाट दिया जाता। आज मन्दिर में वलि चढाना सख्त मना है। मदिरा का माँ को भोग लगाया जाता है, भोग लगाने के बाद प्रसाद वापस दे दिया जाता है। उस प्रसाद को भक्त द्वारा इच्छुक भक्तो को सहर्ष परासी जाती है। माँ के जयकारे के साथ सभी प्रसाद ग्रहण करते है।

मथाणिया मे ओले नही पडेगे, आग नहीं लगेगी

जब माँ जोधपुर किले की नींव रखने गयी थी। तब उसी समय अमरोजी चारण के निवेदन पर आपने मथानिया में विश्राम किया था। वहा पर चारण बन्धुओं एव माँ के परम भक्तगणा ने माँ करणी से उनकी मूर्ति बनवाने का सादर निवेदन किया। मगर माँ ने कहा मैं तो आप की तरह एक साधारण इसान हू, पूजनीय तो आई माँ है अर्थात् आवडमाताजी ही हैं। ग्रामवासियों ने कहा कि आपकी स्मृति बनी रहे इसलिए हमें कुछ ऐसी वस्तु को देवें जिनकी हम पूजा कर सकें। उसके रूप को देखकर हम आपको सदैव हमारे साथ पा पायें। माँ तो अन्तर्यामी थी उनको पता था कि इस गाव के जितने भी जमीनों के पट्टे हैं उनकी सही-नामावली नहीं है। सा इस कारण कभी-न-कभी झगड़ा बढ़ सकता है। इसलिए माँ ने उनसे सभी पट्टे-कागज माग। सभी कागज



मगवाकर उनको एक खड्डे में डालकर ऊपर अपनी चरण पादुकाए (पावन-पावडिया) रख दी। तब से आज तक वो पावन पावडिया यथावत है। लोग आज तक वैसे के वैसे रह रहे है। समयानुसार जो परिवर्तन हुआ है उसको सभी ने मजूर किया है। फिर माँ ने आशीर्वाद दिया कि आज के बाद आपके गाव में कोई घटना नहीं घटेगी। जैसे कि आले नहीं गिरेंगे। आग एक से दूसरे खेत मे नहीं पहुचेगी। (हर साल से मथाणिया में ओलों से फसल को नुकसान होता था। आग एक जगह लगने के बाद सभी खेतों में आगे-से-आगे बढ जाती थी। जिस कारण वो सभी परेशान थे। भयभीत रहते थे।) माँ ने आशीर्वाद देकर सबको खुशहाल कर दिया।

देशनोक मे महामारी नही फेलेगी

माँ के बसाये नगर देशनोक में किसी भी प्रकार महामारी नहीं फैलेगी, इसका साक्षात् प्रमाण है कि माँ के दरबार में भरपूर काबों के होते हुए भी कभी भी प्लेग जैसी बीमारी नहीं होती है, इस का ख्याल भी कोसो दूर है जबकि भारत में कई बार प्लेग फैला है। कहा जाता है कि प्लेग की बीमारी चूहों के कारण फैलती है। मन्दिर के दरबार से माँ का आशीर्वाद प्राप्त कर हर भक्त माँ के लाडेसर काबों (चूहो) का झूठा जल, प्रसाद इत्यादि खुशी-खुशी अपने घर ले जाकर रोगी को खिलाते हैं। प्रसाद मुह मे जाते ही वह स्वस्थ हो जाता है। ऐसी मान्यता है मन्दिर के प्रसाद की।

कोलायत के पानी को स्पर्श तक नही करते है देपावत

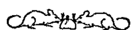
माँ क सबसे लाडले बेटे लाखण (लक्ष्मणजी) की जब कोलायत में डूबने से मृत्यु हो गयी थी तब माँ ने अपनी तपस्या से इनको जीवित किया। धर्मराज से जब वापस लाये थ तब माँ ने उनसे कहा कि आज के बाद मेरी कोई सतान तुम्हारे पास नहीं आएगी। मै उनको मेरे पास 'काबा' बना कर रख लूगी' और कहा 'जब काबा मरेगा तब वापिस मनुष्य के रूप में देपावत बना कर रखूगी। तुम्हारे पास नहीं भेजूगी।' तव से आज तक क्रम अटल है। इसी कारण मन्दिर मे असख्य काबे है। इस दौरान माँ ने अपने पुत्रो एव परिवार को एक आदेश दिया कि आज के बाद देपावत परिवार का कोई भी सदस्य कोलायत के पानी स नहाना तो दूर स्पर्श तक नहीं करेगा। वहा मौजूद कपिल मुनि का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते है। इसकी पालना देपावत परिवार करते आ रहे है। इनके साथ-साथ माँ को मानने वाले भक्त भी कोलायत के पानी को स्पर्श नहीं करते है। पानी स्पर्श तो दूर की बात है। देपावत कोलायत की तरफ जाना भी अच्छा नहीं समझे।

धनेऊ तलाई का महत्त्व

श्री करणीजी ने जैसलमेर राज्य के भाटियों और बीकानेर राज्य के राठौडों को पानी की लडाई के लिए इस स्थान को दोनों के लिए खतरा मानते थे क्योकि तलाई दोनों के हिस्से में आती थी, जब माँ जैसलमेर राजा को अदीठ (ट्यूमर) रोग से स्वस्थ कर वापस लौट रही थी तब दोनों राज्यों के राजाओं से इस तलाई को खुद द्वारा रक्षित करन का वचन ले लिया। दोनो सहर्ष इसके लिए राजी हो गये। दूसरी तरफ यह तलाई माँ के भक्तों के लिए साक्षात् गगा के अश रूप में है। क्योंकि इस तलाई के जल से माँ ने स्नान कर सभी के लिए पूजनीय बना दिया। आज भी भक्तों एव दर्शनार्थियों के लिए यह तलाई एक धार्मिक स्थल है। माँ के चरणा का स्पर्श कर यह तलाई धन्य हो गई। इस धोरा धरती में जहा दूर-दूर तक पानी दिखाई नहीं देता था उस स्थान पर तलाई। मेरी आस्था के आधार पर यह सिर्फ माँ भगवती, जगत् जननी माँ करणी के सशरीर अन्तिम स्नान के लिए महादेव की कृपा से माँ गगा ने इन्द्र देव के साथ साक्षात् माँ करणी के दर्शनार्थ हाजरी दी। जिनके अस्तित्व के स्वरूप आज तक तलाई के रूप में है।

सूघा पर्वत पर माँ ने चामुण्डा माँ के दो बार दर्शन किये

सूघा माता का तीर्थ जालौर जिले की भीनमाल तहसील मे सूघा पर्वत पर स्थित है यहा माँ चामुण्डा



के सप्त मातृकाओं के साथ विराजमान है। यह बहुत प्राचीन मन्दिर है। देशनोक मढ की तरह सूघाराय का अनगढे पत्थरों के खण्डो का गोल मढ बना हुआ है इस मन्दिर के दर्शन हेतु माँ करणीजी दो बार दर्शन करने पधारी थी, ऐसी मान्यता है। एक बार पहले कभी तथा दूसरी बार जब माँ मथाणिया आई थी उसी दौरान सूघा पर्वत पर माँ चामुण्डा के दर्शन लाभ लेने के बाद देशनोक पधारी।

माँ करणीजी तेमडाराय के कई बार दर्शन करने पधारी

माँ भगवती अपनी इष्टदेवी आवडजी के दर्शन करने के लिए भू की गरलाओ की ऊची गुफा में आई, माँ तेमडाराय के दशन करने कई बार सघ के साथ पधारी तथा आखिरी बार जब अपने जीवन की अन्तिम यात्रा के लिए पधारे उस दौरान राव जैतसी के अदीठ के रोग से निरोग करने जैसलमेर पधारी तब यही सोच थी कि मुझे तो माँ आवड से अनुमति लेनी है, इस ससार से विदा होने की। इसी कारण माँ ने तमडाराय के दर्शन किये। यात्रा के दौरान दियातरा मे बीठुओं के गाव मे एक जाळ के नीचे आराम किया।

श्री करणीजी कहा-कहा पधारे

माँ करणीजी सशरीर तो सुवाप मे रहे है ही। इनके अलावा अपने पीहर से ससुराल तक के सफर के सभी गावों को धन्य किया। मगर इनके साथ-साथ करणीजी मागळियावती, सूघामाता, तेमडाराय जैसलमेर साठिका, जोधपुर, बीकानेर, मथाणिया सींथल, छोटडिया, देशनोक कितासर पूगल, बधाळा, खरोडा इत्यादि गावों मे माँ के चरण-कमल पडे। अपने जीवन के अन्तिम पडाव पर माँ ने सशरीर अन्तिम विश्राम जैसलमेर और बीकानेर राज्य की सीमा पर (सीमा विवाद समाप्त करने के उद्देश्य से) धनेऊ तलाई के जल को गगाजल मान अन्तिम स्नान करके माँ ने गढियाळा की पावन भूमि पर आपने महाप्रयाण किया। ज्योतीविलीन हुई।

केलिया गाव (केलूडा वृक्ष)

जब माँ सशरीर इस ससार में थे तब आप किसी यात्रा पर थे। उस दौरान किसी एक स्थान पर खेजडा के छोटे वृक्ष (केलूडा) की छाव में कुछ पल आराम किया था। वह स्थान इतना भाग्यशाली हो गया कि लोग आज भी उस स्थान को पूजते हैं मगर समय निकलता गया और लोग कलूडा वृक्ष को भ्रमित करते रहे। स्थान कलूड की जगह केलिया गाव बन गया, जबकि केलूड गाव नहीं बल्कि वृक्ष था।

करणेत गाव

माँ के ससुराल साठिका के पास एक गाव है वहा का एक राजपूत जाति का माँ का परमभक्त रहता था। जिसका एक प्रण था कि वह हर रोज गाव से देशनोक माँ को दूध चढाने आया करता था। उम्र के अन्तिम पडाव पर वह देशनोक आने मे असमर्थ हो गया तब वह किसी भी तरह से घर से निकल पडा। जैसे ही खेत तक पहुचा वह गिर पडा। उसी समय माँ ने उसको एक लडकी के रूप मे दर्शन देकर कहा कि बाबाजी लाओ दूध मुझे द दो। मै पी लती हू। वह राजपूत माँ को पहचान नहीं पाया। माँ दूध पात ही अन्तर्ध्यान हो गई। जब तक राजपूत ने मुडकर दखा वह लडकी नजर नही आई। तब भक्त को लगा की वह तो देशाणराय थी। वह खेत उसी का था जहाँ मा ने दर्शन दिये आज भी वह स्थान करणेत नाम से जाना जाता है। जहा पर माँ का छोटा सा मन्दिर है जिसको अभी नया रूप दिया जा रहा है।

मथुरा मे श्री करणी मन्दिर

माँ श्री करणीजी के वैसे तो कई तीर्थ हैं जिनमें एक है मथुरा, जहा करणीजी का मन्दिर है। जिसका काफी समय तक देशनोक मन्दिर से सचालन होता था। वर्तमान म इस मन्दिर की दख-रेख स्थानीय लोग करते हैं। जबकि यह सम्पत्ति देशनोक मन्दिर की है। अगर समय रहते इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो यह अधिकार क्षत्र से बाहर जा सकता है।

पुष्कर मे श्री करणी मन्दिर

मथुरा मन्दिर की तरह पुष्कर तीर्थ स्थल पर भी माँ श्री करणीजी का मन्दिर एव धर्मशाला है। जिनका भी श्री करणी मन्दिर, देशनोक द्वारा सचालन होता था। अभी इस मन्दिर की देख-रेख स्थानीय लोग कर रहे है। मगर यह सम्पत्ति देशनोक करणी मन्दिर की निजी सम्पत्ति है।

श्री करणी के कितने नाम

माँ को भक्त जिस नाम से पुकार सकता है वो ही नाम माँ को प्यारा है। माँ के अनन्य नाम—माँ भगवती मेहासदु मेहाई, रिधु माँ डोकरी, डाढाळी, दादी माँ, मातेश्वरी जगळधर री धणियाणी, माजीसा करणी माता नवलाख लोवडियाळ, बीसहत्थी, काबावाळी करणी करनल किनियाणी इत्यादि।

श्री करणीजी के नाम से नाम रखना—

देशनोक मे आज जितने भी राजकीय, निजी स्तर पर कोई बडा कार्य या निर्माण है, वो लगभग सभी माँ करणी के नाम से है। चाहे स्कूल, भवन, हॉस्पिटल, फैक्ट्रीया या धर्मशालाए सभी निमाण माँ के नाम से है। शहरों में भी हर भक्त यही सोचता है कि उसकी रोजगारी का सहारा सिर्फ माँ ही है, इसीलिए प्रत्येक कार्य माँ के नाम से ही होता है। हर कार्य के लिए माँ का ही दरबार दिखता है, इसी कारण जब कोई भक्त माँ से सतान की आशा लेकर नतमस्तक होता है, माँ की उस पर कृपा होती है तब वह अपने होने वाली सतान का नाम माँ के नाम से रखता है। ताकि ताउम्र उसको यह भान रहे कि पुत्र माँ का दिया हुआ दान एव आशीर्वाद है। जैसे—करणीदान मेहरदान आईदान, दुर्गादान आवडदान इत्यादि।

कोजूदानजी के सिर पर तीन पगडी

देशनोक के ही देपावत थे कोजूदानजी। उनकी ख्याति थी कि माँ की कृपा से अपने सिर पर एक साथ तीन पगडी रखते थे। उसमे भी बडी बात तो सिर्फ माँ के दरबार के अलावा किसी के भी आगे ताउम्र नहीं झुके थे। राजदरबार को जब इस बात का पता लगा तो उसको यह बात जमी नही। सोचते रहे कि कौन है जो राजदरबार के सामने नहीं झुकता है? ऐसा हो ही नहीं सकता। कोजूदानजी को दरबार में बुलाया गया। दरबार ने पूछा कि बारहठजी आपने झुककर सलाम क्यों नहीं किया? तब बारहठजी ने बताया कि राजा साहेब! मै आज तक माँ के अलावा किसी और के सामने नहीं झुका। राजाजी ने पूछा कि क्यों? बारहठजी ने बताया कि साहेब! इसका कारण है कि मेरे सिर पर तीन पगडी है। इनमे सबसे ऊपर वाली माँ करणी के नाम की तथा बीच वाली राजदरबार के नाम की तथा सबसे नीचे वाली मेरी खुद की है। अब अगर मे आपके सामने झुकना चाहू भी तो मेरी पगडी को झुकने से पहले इन दो पगडियों को झुकना पडता है, जिसको में झुकाना नहीं चाहता। अब आप चाहते है कि मैं झुक कर सलाम करू अगर आपको मजूर हो कि मै दोनो को झुका दू? इसके लिए मैं तैयार हूँ। उस क्षण महाराजा को तो केवल एक ही बात जची कि आप जैसे आज तक रहे है वैसे ही रहें। जय माता जी की सा।

'देपावत निवास' श्री करणीजी के पोतों के लिए शहर में डेरा (रहने का स्थान)

बीकानेर रियासत का जब विस्तार होने लगा तब जनता के लिए परकोटा बनाया गया। शहर मे लोगो को कई बार आना पडता है। लोग दिन-भर अपने काम से धूप-छाव घूमते रहते। इनकी सुविधा के लिए प्रत्येक ठिकानेदारों की तरफ से शहर मे डेरे (रहने का भवन) बनने लग गये। इसी दौरान राजा साहेब न सोचा कि सभी ठिकानेदारों के डेर हैं। सभी के रहने की व्यवस्था है। श्री करणीजी के पोता के लिए भी डेरा होना चाहिए। यह सोच कर महाराजा ने के ई एम रोड के पास अलख सागर रोड पर देपावत निवास' के नाम से एक डेरे का निर्माण करवाया। जहा देपावता को उचित किराये पर रहने की सुविधा प्रदान की जाने लगी। इस राशि को प्रत्येक माह को श्री करणी मन्दिर में काबों के लिए दूध



और अन्न की व्यवस्था में लगा देते थे। जब राज बदला तब महाराजा ने यह सम्पत्ति श्री करणी मन्दिर को समर्पित कर दी थी। आज श्री करणी मन्दिर निजी प्रन्यास इस सम्पत्ति की देखरेख कर रहा है।

चारण बडी अनमोल चीज

इतिहास के पन्नो से जब हम समाज की तरफ देखते हैं तब पाते है कि जगत् म प्रत्येक जाति परिवार ने अपनी तरफ से भरपूर प्रयास किये है इस ससार को सजाने मे। मगर एक बात विशेष गौर करने लायक है, चारण बडी टेढी खीर है, उनको जितना समझते है उतने ही हम गहराई मे जाते जायेंगे। वाकई चारण बडी अनमोल चीज है। क्योकि इतिहास गवाह है कि चारणा के सहयोग, त्याग तथा लडाइयो से राजस्थान का गौरव कितना बढा है।

धरणे मे जाजम और त्रिशूल का महत्त्व

जब कभी भी किसी अन्याय पर विजय प्राप्त करना होता है। तब सभी समाज मे एक साथ एक मत होकर ऐसा निर्णय लिया जाता है जहा पर सभी की सहमति मे एक ऐसा अन्याय पर प्रहार किया जाता है। जिसमे न्याय की जीत सुनिश्चित हो जाती है। इस प्रकार के कार्य के लिए पूरा समाज एक साथ एक सूती धागो का बना एक आसन होता है। जिसको 'जाजम कहा जाता है।' उस पर आकर सभी विराजते है। सभी के बीचोबीच माँ को साक्षी मानकर माँ का आह्वान करते हुए माँ के प्रतीक रूप मे माँ का त्रिशूल रखा जाता है। इस त्रिशूल के सापेक्ष अन्याय के खिलाफ बड़े से बडा योद्धा माँ के जय कारे के साथ त्रिशूल को नमन कर अपना सर्वस्व न्याय के लिए न्योछावर कर देता है। राजस्थान म ऐसे कई धरने हुए है जिनमे सैकडो न्याय प्रिय लाडलों ने अपने जीवन की आहुतिया दी है। आऊवा गाव का धरना आज भी सजीव सा लगता है। चारणो के इतिहास में इससे बडा धरना कभी नहीं हुआ। उस धरने में न जाने कितने न्याय प्रिय चारणों ने अपनी आहुतिया दी है। कह नहीं सकते हैं। हा इतना जरूर है कि जिस-जिस चारण ने अपनी आहुती दी उसने अपने गले में काले धागे की बनी कठी (काला धागा-यह चारणों की पहचान होता थी उनको गले में कठी बधी रहती थी। बधी होती था। आज इतिहास बता रहा है कि उस धरने मे ऐसी कठिया इतनी इकट्ठी हो गई कि उनका वजन सवा मण हो गया। धन्य है उन शक्ति पुत्रों का जिन्होंने अन्याय के खिलाफ धरने पर बैठकर शरीर की आहुतिया से सत्य की जीत क लिए यज्ञ को पूर्ण किया। आज वो सब अजर है अमर है।

दुर्लभ–लुप्त प्राय शब्द

सस्कृति को सुगधित करने वाली भाषा आपणा 'राजस्थानी भाषा' जिसके सिपहसालार है आपणे शब्द। वो शब्द जो भाषा मे अपनी अनूठी और ठावी ठौड रखते है। लोवडी आछाड, चवर सिग, चिराग, प्यालो, ताडो, खडेळ, कडाव, टैची, महलायत, फिरणी, बावडी, रसोवडा, धूपेडा हेलो, काटडी, पखासाल, नेवज, गोखा, चौक, तिबारी, साल, चदेऊ ड्योढी, बोलवा, ओसिचर्णों, पडाइया आट, रिट्या छत्र, पोशाक, बुर्ज, झडवेरी, झडपिया इत्यादि।

पडाइया

देशनोक मे माँ क परिवार में जब किसी लड़क की शादी होती है लडके का जन्म होता है तब उस परिवार से माँ करणी की इप्ट देवी श्री तेमडाराय माताजी के लिए सवा मीटर/सवा हाथ लाल कपडे पर गेरूआ रग से पेवडी बनाई जाती है। जिसको वही लोग बनाते हैं जो विधि जानते है। माँ के चारों पुत्रों के प्रत्येक बास (मौहल्ला) मे तेमडारायमाता का मदिर है जहा पर हर समय पूजा स्थान पर पडाइया चढी हुई रहता है। यह पडाइया जब किसी के घर में पुत्र जन्म लेता है या लड़क की शादी होती है तब दोनों समय माँ के लिए पड़ाइया चढाई जाती हैं। पड़ाइया चढाते समय पुरानी पड़ाइयों को हटाकर नइ पडाइया चढा दी जाती हैं। जब तक कोई पडाइया नहीं चढाई जाती हैं तब तक यह पड़ाइया मन्दिर में ही चढी हुई रहती हैं।

नेवज (चढावा) प्रसाद

अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर माँ तेमड़ाराय एव माँ करणीजी को प्रसाद चढाया जाता है। यह प्रसाद लापसी का होता है। उसके ऊपर चावल एव घी परोसकर माँ को नेवज का भोग लगाया जाता है। इस प्रसाद से सवासणियों (कन्याओं) को भोजन भी कराया जाता है। अन्यथा प्रसाद बाट दिया जाता है।

झड़पिया

माँ के लिए जोत मगाई जाती है तब जैसे ही गुम्भारे में ले जाकर रख दी जाती है उसके बाद जब जोत के धूपिये (सूखा गोबर) ठीक स प्रज्वलित होते है तब उनको हवा लगाने के लिए एक छोटा लकड़ी का डण्डा लगी चद्दर होती है उसे झड़पिया (झड़पने के लिए कहा) जाता है।

हँसे (हिस्सा) का बटवारा

मदिर से एक नियमित राशि होती है जिसका शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि एव पूर्णिमा के दिन माह में दो बार वितरण होता है। जिसको माँ के चारों पुत्र अपना हिस्सा समझ कर (अधिकार समझकर) सहर्ष लेते हैं। जिसे हैसा (हिस्सा) कहा जाता है। राशि छोटी होती है मगर अधिकार (हिस्सा) बड़ा होता है।

आण (कसम)

जब कभी भी किसी भी बात पर विश्वास नहीं किया जाता है उस स्थिति में वह व्यक्ति अपनी सचाई एव विश्वास के लिए अपने बडे बुजुर्गों या माँ की कसम (आण) दिलाकर अपनी सत्यता को पुखता करता है। हमें पता है कसम खाने के बाद उस पर असत्य का लेबल हट जाता है। वैसे प्रामाणिकता के लिए कसम लेना/खाना व्यक्ति की कमजोरी ही माना जाता है।

भुर्ज

माँ के मदिर के चारदीवारी के चारों कोनों पर एक-एक खुला गोल कमरा होता है जिसे भुर्ज कहा जाता है। जिसमें पहरेदार पूरी रात जागकर पहरा देता है।

जाची

मदिर में जब पूजा परिवर्तन (बारी बदलना) होता है तब मदिर के सामानो की जाच-पड़ताल के लिए पाच व्यक्ति नियुक्त होते है। उसमें एक व्यक्ति को जाच के लिए विशेष नियुक्त किया जाता है। उसे जाची कहा जाता है।

हर धड़े (मोहल्ला) में श्री तेमडाराय मन्दिर

करणी माता की इष्टदेवी आवड़जी के माँ के सभी पुत्रों के धडों में आवड़माताजी का मन्दिर है। जिनकी नियमित पूजा होती है। जहा शादी के अवसर पर पड़ाइया चढ़ाई जाती हैं। हाल ही मे महेशदानजी की ढाणी म भी तेमड़ाराय माता का मन्दिर बना है।

सतीजी का मन्दिर

सतोषी माता मन्दिर के पास श्री करणी मन्दिर दर्शन के बाद जब आप रेलवे स्टेशन की तरफ निकलते हैं तब मन्दिर के निकासी-द्वार के पास एक सतीजी का स्थान है। उनकी मान्यता है की अगर आपको मस्से सम्बन्धी (शरीर पर कहीं भी हो) कोई परेशानी है तब सती माता तुरत ठीक करती है मगर इनको प्रसाद के रूप म नमक चढाना पड़ता है। माँ करणी का नाम लेकर सती माता को नतमस्तक हो माँ के प्रसाद चढाकर आप जा सकते हैं, इस प्रसाद से माँ प्रसन्न होती है आपके मस्से की तकलीफ ठीक होती है, ऐसा भक्तगण बताते हैं।

श्री नेहड़ी मन्दिर के पीछे की तरफ वाले भोमियाजी

वैसे तो माँ की सेवा-पूजा में किसी भी प्रकार की देरी बारीदारजी कभी नहीं करते है। नेहडीजी मन्दिर मे अगर बारीदारजी की सवेरे की आरती के लिए नींद नहीं खुलती है तब मन्दिर की चारदीवारी के बाहर राजपूत जाति के भोमियाजी द्वारा एक ऐसी आवाज होती है कि उस आवाज के कारण बारीदारजी की नींद खुल जाती है और माँ की आरती समय पर हो जाती है। यह भोमियाजी माँ की सेवा मे सदैव तत्पर रहते है। अगर रात को मन्दिर से बाहर निकलना हो तो दरवाजा



खोलते समय खासना या किसी भी प्रकार से आवाज करके निकलना जरूरी है। क्योंकि रात को हो सकता है कि भोमियाजी पहरा दे रहे हो। भोमियाजी के साक्षात् दर्शन एव चमत्कारो को लोगो ने देखा एव महसूस किया है।

देशनोक के भोमियाजी दादोजी इत्यादि

देशनोक पावन भूमि म माँ करणी की लीलाओं की रचना तो दर्शनीय है ही मगर इनके साथ ही भोमियाजी केशूदानजी, जिनको एक खेत में खजड़ी क नीचे पूजा जाता है, जो स्थल उत्तर दिशा म एक खेत म है। केसू दादोजी आज भी रात को सफद वस्त्रों में एक चिराग हाथ में लिए हुए रात को खेतों में पहरा देते हैं। बड़े-बुजुर्गों ने उनको देखा है तथा आज भी देखते हैं।

केशू दादोजी भोमियाजी, पूनों का वास। बुद्ध दादोजी भोमियाजी, सियावतों का वास। पाचावतों के वास में हेमदानजी भोमियाजी दादोजी का भी एक मन्दिर है जहा दोनों समय जोत उतारी जाती है। भोमियाजी हमेशा पुकारने पर हाजिर होते हैं। मान दादोजी, केशू दादोजी भोमियाजी सियावतों का वास। नाहरजी भोमियाजी सियावतों का वास। लाखानों में (सियावतों) बाजार में भोमियाजी का मन्दिर है जिनका सभी जाति के लोग दर्शन करते हैं जिनकी मनोकामना पूर्ण होती है। नेहडीजी भोमियाजी एव अन्य ऐसे कई भोमियाजी है जिन्होंने हमेशा भक्तों की सहाय की है पल-पल ध्यान रखते हैं। भूल माफ करते हुए सदैव कृपा दृष्टि बनाये रखते हैं। हीरदानजी, कई राजपूत एव भीमदानजी ऐसे कई भोमियाजी है। जुझारूओं में एक ऐसे भोमियाजी है जिनकी सवारी हाथी है आप हाथी के ओदे पर सवार है। ऐसा कम ही देखा गया है अधिकतर घोडे पर सवार होते हैं आप है श्री रुघदानजी निवासी सोवा के भोमियाजी है।

गाव के अन्य मन्दिर

पश्चिम दिशा मे ढाणी के पास कुन्तलजो की एक मढी है जिनको प्रसाद रूप म झाड़ू, नमक काचली इत्यादि की भेट चढ़ाकर, वहा एक खड्ड से पाच कड़ाई रेत निकाल कर, बाहर डालने से मस्सा, एलर्जी, खुजला इत्यादि रोग ठीक होता है। गाव में भैरवजी, बायानी, शिवजी, रामदेवजी, ठाकुरजी, सतीमाँ, बालाजी नखतबन्ना-सा, हरीराम बाबा, भटियाणीजी, इत्यादि के मन्दिर है जहा सुबह-शाम आरती-पूजा होती हैं।

ओरण में प्रवेश पर सजा माफ होती थी

माँ द्वारा रक्षित भूमि (ओरण) को माँ ने गायों क चरने के लिए घास, शुद्ध वातावरण, पेड़ों से बर बचन पर लोगों की आजीविका आदि के लिए इस भूमि का रक्षित करके रखा। यह आज भी 10,000 बाथा (लगभग 35 किलोमीटर) की परिधि में फैली हुई है। जो कि सबसे बड़ी ओरण कही जाता है। जहा प्रचुर मात्रा में बोरड़िया (बेर के पेड़) हैं। स्टेट (महाराजा क काल में) के समय बीकानेर राज परिवार अर्थात् रियासत का आदेश था कि जो कोई मुल्जिम कोई गुनाह करके या बचाव के लिए अगर माँ की ओरण में प्रवेश कर लेगा तब उसका गुनाह माफ ही नहीं होगा बल्कि उसको गिरफ्तार नहीं किया जाएगा। जिसका कारण यह था कि अगर बेगुनाह है तो उसको न्याय मिल सके। इस कारण कई बार बेगुनाह एव गुनाहगारों को भी शरण मिली है। कई बार व्यापारी लोग भी कई प्रकार की कर चोरी क कारण माँ की शरण में आते थे। मगर अब समय बदल गया है, राज बदल गया है, वारदातों की बढ़ोतरी होने लगी है। इस कारण सभी की रजामदी से कानून में भी बदलाव लाना पड़ा। ताकि लोग कोई गलत फायदा ना उठा सके।

ओरण की बोरडियो को काटना मना है

देशनोक स्थित ओरण के बेर के पड़ों को काटना अपराध माना गया है। अगर कोई काटता है तब उसको उचित दण्ड या हर्जाना लिया जाता है। इस बेर क पेड़ों को माँ ने एक ओरण के रूप में सुरक्षित रखा है। बोरडियो को सिर्फ दाह-सस्कार के लिए ही काटा जाता है। अगर पड़ अपने आप टूटता है तब उनको मन्दिर के

बाडे मे डाल दिया जाता है, इसकी रक्षा और सुरक्षा हेतु मन्दिर द्वारा कर्मचारी नियुक्त होते है।

एक साथ सैकडो पेड कब काटे गये

बीकानेर से जब पहली बार रेल लाइन डाली जाने लगी तब जोधपुर की तरफ रास्ता निकालने के लिए सैकडों बेर के पेड काटने की नौबत आई तब महाराजा गगासिह ने देशनोक हाजिर हो माँ की जोत करवा, माफी मागी। माँ से जनहितार्थ कार्य के लिए निर्मित इस कार्य को करने की अनुमति मागी, माँ के दर्शन के बाद अनुमति प्राप्त कर प्रत्येक बेर के पेड की एक राशि मन्दिर को जमा करवायी जिनका काबों के लिए अन्न लाया गया।

ॐ श्री करणीजी की रक्षित ओरण लकडी का चदन की तरह जलना

ॐ श्री करणीजी महाराज की जय हो। देपावतों के साथ-साथ प्रत्येक देशनोक निवासी की अतिम इच्छा यही रहती है कि अगर कहीं भी हमारा शरीर खत्म हो तो शरीर को लकडी देशनोक मे माँ की ओरण की मिले। यह एक धार्मिक आस्था के बल पर है। हम हर पल किसी न किसी रूप में सिर्फ माँ के पास रहे। यह माँ की ही कृपा है कि इस हरी-भरी बोरडी का तोड कर अगर दाह-सस्कार म काम लेत है तब भी यह हरी लकडी चदन की तरह जलती है। इस ओरण रूपी रक्षित भूमि में जितनी भी बोरडिया (बेर के पेड़) है उनको काटना-पीटना सख्त मना है। ऐसा करने पर जुर्माना किया जाता, दड दिया जाता है। ओरण में आप गायें चराना, बेर तोडना इत्यादि सभी कार्य कर सकते है। मगर इतना ध्यान रहे कि ओरण की रक्षा और सुरक्षा की जिम्मेदारी हम सब की है।

माँ की ओरण मे चारो दिशाओ मे एक-एक करण बोरडी

माँ द्वारा रक्षित भूमि (ओरण) में चारों दिशाओं की तरफ जहा से देशनोक बस्ती की सीमा प्रारम्भ होती है, वहा पर एक बोरडी (बेर का पेड) पूजा होती है। जिनको करण बोरडी नाम से पूजा जाता है।

मन्दिर, ओरण सभी माँ का आचल है

कोई अगर कहता है कि मै तो माँ के दरबार में जाकर दर्शन करके ही जल-पान ग्रहण करूगा, तब तक पानी भी नहीं पीऊगा इत्यादि कई प्रकार के प्रण भक्त लोग पालते है, माँ की सेवा करते है, अगर माँ पर पूर्ण विश्वास है तो आपको यह भी मानना चाहिए कि माँ पल-प्रतिपल हमारे सामने है। इनके साथ-साथ पूर्ण आस्था रखने वाले भक्तों को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि माँ अपनी इस रक्षित भूमि ओरण में हर जगह मौजूद है। माँ ओरण म भी है, प्रत्येक बोरडी में भी है, हर जगह माँ ही माँ है माँ तो पूरे जगत् की माँ है यह पूरा क्षेत्र माँ का ही आचल है। ओरण मे प्रवेश करते ही आप अपने आपको माँ के दरबार में पहुच गये हों, समझे। ओरण में प्रवेश होते ही माँ की परिक्रमा पूर्ण हो जाती है।

उपासना (प्रार्थना करना)

'उपासना' शब्द 'उप+आसना' का सधि रूप है। 'उप' समीप का बोधक है। इससे स्पष्ट होता है कि जिस महाशक्ति अथवा परम सत्य की हम तलाश करते है वह हमसे दूर नहीं हमारे पास है। उपासना सगुण की होती है और आराधना निर्गुण की। सगुण आराध्य के सान्निध्य की भावना में तल्लीन होना ही उपासना है। इस उपासना के चार अग होते है—अर्चना, स्तुति, जप और ध्यान। अपने इष्टदेव की मूर्ति बना कर उसकी पूजा करना अर्चना है। उपासना का दूसरा अग स्तुति है जिसमे आराध्य के दिव्य स्वरूप का स्तव-गान किया जाता है। अर्चना कायिक उपासना है, जबकि स्तुति वाचक है। स्तुति कहीं भी की जा सकती है उसमें कोई बन्धन नहीं। भगवान् एव भगवती की महिमा का गुणगान कोई भी व्यक्ति कर सकता है। प्रत्येक जीवधारी इसका अधिकारी है। जप मानसिक होता है और ध्यान मन स भी परे बुद्धि से सम्बन्धित है। इन्द्रिया पर काबू पाने

वाला व्यक्ति ही ध्यान में सफल हो सकता है। मन, वचन और कर्म मनुष्य के तीन मुख्य साधन है, जिन्हें 'त्रिकरण' कहा जाता है। मन और कर्म के बीच की कड़ी वाणी है, जो सत्कर्म की साधना से मन को पवित्र बना देती है। इसीलिए स्तुति सबक लिए सुलभ और सुगम है। राजस्थानी साहित्य म शक्ति वदना ही मगलाचरण के रूप में अधिकाँशत प्रयुक्त हुई है, उसी में सरस्वती का रूप समाहित है। चारणी देवियों से सम्बन्धित छन्द और चरजाएँ इतने विपुल एव विशद रूप में प्रणीत हुई हैं कि उस पर कई शोध ग्रथ लिखे जा सकते हैं, श्री करणीजी की कीर्ति सम्पूर्ण भारत में व्याप्त है अत इस देवी के जीवनवृत्त, नाम-महिमा, लीला-विलास और दिव्य चमत्कारों से सम्बन्धित डिगल और पिगल दोनों भाषाओं में प्रचुर साहित्य की रचना हुई है। गेय पदों में चरजाएँ (दिव्य चर्चा) और विशिष्ट पाठ-शैली में डिगल गीतों और छन्दों की रचना पुष्कल परिमाण में उपलब्ध है।

माँ की उपासना से कुछ न मागें

सच तो यह है, परमात्मरूपिणी माँ की उपासना करके उनसे कुछ भी मत मागो। ऐसी दयामयी सर्वेश्वरी जननी से जो कुछ भी तुम मागोगे, उसी मे ठगा जाओगे। तुम्हारा वास्तविक कल्याण किस बात में है—इस बात को तुम नहीं समझते, माँ समझती है। तुम्हारी दृष्टि बहुत ही छोटी सीमा मे आबद्ध है। माँ की दूरदृष्टि ही नहीं है, वह ईश्वरी माता, वह श्रीकृष्ण और श्रीरामरूपा माता, वह दुर्गा, सीता, उमा, राधा, काली, तारा सर्वज्ञ है। वह दयामयी माता तुम्हारे लिये जो कुछ मगलमय होगा—कल्याणकारी होगा, उसी का विधान करेंगे, स्वय सोचेगी और करेगी, तुम तो बस, निश्चित और निर्भय होकर अबोध शिशु की भाति उसका पवित्र आचल पकडे उनके वात्सल्य भरे मुख की ओर ताकते रहे।

नमन छू कर नही बल्कि आत्मा से करे

कई बार ऐसा होता है कि भक्ता मे इस बात की होड लगी रहती है कि माँ के दर्शन पहले कौन करता है? इसके लिए वो लोग व्यवस्थापकों के नियमों को भी तोडते हैं। उनसे आग्रह भी किया जाता है कि आप ऐसा काम न करें जिससे व्यवस्था भग होती हो। इन सबके बावजूद कई लोगों को दर्शन हा भी जाते हैं। मगर जो कतार में खडे होते है उनके मन की भावनाओं को भी ठेस पहुचती है। मगर उनको इस बात का एहसास क्यों नहीं होता कि अगर माँ ने आपको यहा तक बुलाया है तो दशन भी देगी। अगर आप माँ के पुत्र हो, परम भक्त हो तो माँ के दरबार में पहुचते ही अपनी आत्मा से माँ की मूर्ति को निहार कर उसको नमन करते ही समझो माँ के साक्षात् दशन हो गये है। फिर आप एकात में जब भीड़ कम हो माँ के दर्शन लाभ ले सकते हैं। क्याकि किसी ने सच ही कहा है कि 'माँ जब अकेली हो, आप भी अकेले हो तो माँ का ध्यान सिर्फ आपकी तरफ होगा। जब भीड हो तब माँ का ध्यान पूरी भीड की तरफ रहता है।' अब आप स्वय समझदार है दर्शन कब करने चाहिए।

परिक्रमा का महत्त्व

जब भगवान ने सृष्टि को रचा था तब बताते है कि देवताओ मे सर्वश्रेष्ट किसे माने तब एक मत निर्णय हुआ कि 'जो देव गण सबसे पहले पूरी सृष्टि का चक्कर लगा कर आएगा' वो सबसे प्रथम पूजनीय होगा। सभी देवगण अपने-अपने वाहनों से चक्कर लगान तुरत निकल पडे। मगर भगवान् गणेश अपनी छोटी-सी सवारी चूहे के साथ वहीं के खडे रह क्योंकि उनको मालूम था कि पूरी सृष्टि मेरे माता-पिता में ही है। उन्होंने एक मिनट में शिव-पार्वती की परिक्रमा लगाकर सर्वप्रथम पूजनीय बन गए। इसी बात के सहारे हम भी जानते हैं कि माँ करणी मे वो सभी सुख और समृद्धि है जिनके बगैर मानव जीवन अधूरा है। इस कारण हम माँ की परिक्रमा लगाकर माँ को अपने साथ पाते हैं। हर कार्य में हम अग्रणी सफलता पाते हैं।

पैदल यात्रा, दण्डवत यात्रा आदि

माँ ने सबको सबकुछ देने की भरपूर कोशिश की है। मगर बेटो की लालसा कभी खत्म नहीं होती। हमेशा सोचत

है कि माँ ने उसको ज्यादा दे दिया है। इसी कारण वह माँ मे नाराज भी रहता है। फिर माँ को खुश करने के लिए अपने आप को दण्ड देता है। उसको शायद मालूम नहीं कि भगवान ने भी अपने ज्ञान में कहा है कि 'ससार में जो जिसके भाग्य में है उतना उसको हम बगैर मागे ही दे देते है।' फिर भी लोगों की जिज्ञासा दिन-ब-दिन बढती रहती है। बहुत कम भक्त होते हैं जो नि स्वार्थ माँ की सेवा करते हैं, यात्रा करते है, माँ की पैदल परिक्रमा करते हैं। नवरात्रि में व्रत भी रखते हैं नौ दिनों तक पूजा-अर्चना करते हैं। कई भक्त सबसे कठिन दण्डवत यात्रा से माँ की रक्षित भूमि ओरण की परिक्रमा करते हैं। हमें पता है इनके भीतर आत्मारूपी भूल-भूलैया महल में कहीं न कहीं अधिक सम्पन्न होने किसी सकट को टालने, किसी मामले का निबटारा दुश्मन को हार का अहसास दिलाना, अच्छा मुकाम हासिल हो, नौकरी की प्राप्ति हो पुत्र की प्राप्ति, परिवार में सुख-शाति बनी रहे स्वास्थ्य स्वस्थ बना रहे, व्यवसाय अच्छा चले, पुत्र-पुत्रियों की शादी अच्छे परिवार म हो लडकी को पूरा सम्मान मिले, सम्पत्ति का बटवारा शान्ति से हो राग-द्वेष परिवार से कोसों दूर रहे माँ तेरे दर्शनों से वचित ना रहे, कुछ लोग होते हैं नाम के भूखे कुछ होते हैं देखा-देखी होड करने वाले एव कुछ ऐसे होते हैं जो मौज-मस्ती के खातिर यात्रा करते हैं। यात्रा कैसी भी हो, किसी भी विचार मे हो मगर माँ के दरबार में सभी खुश होकर निकलते हैं। सभी को इस बात अहसास हो जाता है कि जैसी मेरी भावना और श्रद्धा माँ के प्रति है, मुझे पूर्ण विश्वास है कि माँ ने मेरी सुनली है। हम भी यही कहते हैं माँ हमेशा सबकी सुनती है और सुनती रहेगी।

माँ के हाथ में नरमुण्ड क्यों ?

माँ के हाथ में नरमुण्ड क्यों है ? माँ भैसे को क्यों मार रही हैं ? माँ राक्षसों का नाश क्यों कर रही है ? क्या वे माँ के बच्चे नहीं है ? उन अपने बच्चों की बलि माँ क्यों स्वीकार करती हैं ?' तुण इसका रहस्य नहीं समझते। उनकी बलि दूसरा कोई चढता नहीं, वे स्वय आकर बलि चढ जाते हैं। अवश्य ही वे भी माँ के बच्चे हैं, परन्तु वे ऐसे दुष्ट है कि माँ के दूसरे असख्य निरपराध बच्चों को दु ख देकर, उन्हें पीड़ा पहुचाकर, उनका स्वत्व छीनकर, उनके गले काटकर स्वय राजा बने रहना चाहते है। स्वय माँ लक्ष्मी को अपनी भोग्या बनाकर मातृगामी होना चाहते हैं, माँ उमा से विवाह करना चाहते हैं, ऐसे दुष्टों को भी माँ मारना नहीं चाहती, शिव को दूत बनाकर उनके समझाने के लिये भेजती। पर जब वे किसी प्रकार नहीं मानते तब दयापरवश हो उनका उद्धार करने के लिये उनको बलि के लिये आह्वान करती हैं और वे आकर जलती हुई अग्नि में पतङ्ग की भाति माँ के चरणों पर चढ जाते हैं।

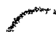
माँ के लिए बलिदान करे

बलिदान जरूर करो, परन्तु करो अपने स्वार्थ का और अपने दोषों का। माँ के नाम पर माँ की दुखी सन्तान के लिये अपना न्यायोपार्जित धन दानकर धन का बलिदान करो, माँ की दुखी सन्तान का दु ख दूर करने के लिये अपने सारे सुखों की, और अपने प्यारे शरीर को भी बलि चढा दो। न्योछावर कर दो निष्कामभाव से माँ के चरणों पर अपना सारा धन, जन, बुद्धि बल, ऐश्वय, सत्ता और साधन, उसकी दीन, हीन, दुखी, दलित सन्तान को सुखी करने के लिये। तुम पर माँ की कृपा होगी। माँ के पुलकित हृदय से जो आशीर्वाद मिलेगा, माँ की गद्‌गदवाणी तुम्हें अपने दुखी भाइयों की सेवा करते देखकर जो स्वाभाविक वरदान देगी उससे तुम निहाल हो जाओगे। तुम्हारे लोक, परलोक दोनो बन जायेंगे। तुम प्रेय और श्रेय दोनों को अनायास पा जाओगे, माँ तुम्हें गोद मे लेकर तुम्हारा मुख चूमेंगी और फिर तुम कभी उनकी शीतल सुखद नित्यानन्दमय परमधाममय गोद से नीचे नहीं उतरोगे।

मन्दिर मे लडाई-झगडा, तेज बोलना व मन्दिर के आगे गोधे का दड़ूकना तक मना है

माँ ने हमेशा एक ही बात कही है कि मेरे आगन मे मेरे सभी बेटे एक समान है। चाहे किसी भी जात का हो, कितना ही अमीर-गरीब हो मेरे लिए सब बराबर हैं। सबको माँ ने समान माना है। इस कारण माँ ने कहा है





कि कभी लडाई-झगडा मेरे लिए मत करना। जिनका माँ के वशज पालन करते आ रहे है। आज तक मन्दिर में कोई झगडा नही हुआ है। झगडा तो दूर माँ को मन्दिर में तेज बोलना, लकडी का पीटना तथा मन्दिर परिसर मे गोधे (बैल) का दडकना भी पसन्द नहीं है। नवरात्रि में ज्यादा भीड हो जाने पर नटखट भक्तों की झगडालू पद्धति के कारण उनको मजबूरी मे स्थानीय पुलिस प्रशासन को सौप दिया जाता है ताकि शान्ति यथावत रहे। कई बार भक्तो और व्यवस्थापकों में छोटी-मोटी तकरार हो ही जाती है। मगर जब उनको मन्दिर की मर्यादा और माँ के निर्देशों मे अवगत कगया जाता है तब उस स्थिति मे ऐसा कोई माँ का पुत्र नहीं है जो माँ के नियमों की उम स्थिति मे अवहेलना करें। हमें पता है माँ किसी एक की नहीं होती माँ तो जगत् की जननी है। पूरा ससार उसका है, फिर माँ कैसे किसी एक के साथ रहेगी ? पुत्र के लिए माँ जिन्दगी भर उसी के साथ रहती है। यह विश्वास आज तक बना हुआ है और हम सब यही मानते हैं।

तेरस पूजा की जिम्मेदारी सिघी परिवार आज तक निभा रहे है

जैन समाज की सिघी जाति मे माँ करणी के प्रति अथाह श्रद्धा है। माँ की इस जाति पर विशेष कृपा रही है। सिघी परिवार आवडजी महाराज की तेरस की सेवा-पूजा की जिम्मेदारी को निभाते आ रहे है। इन्हें भलीभाति इस बात का ध्यान है कि किसी भी परिस्थिति में माँ आवडजी की पूजा बद न हो, माँ आवडजी के दीपक व भोग अवश्य लगेगा। मॉ की पूजा की एक विशेष तिथि होनी है, वो है शुक्ला पक्ष की तेरस। इस दिन अगर इनके परिवार में अगर कोई घटना भी घट जाती हो, चाहे घर में मृत शरीर भी पडा क्यो न हो, तेरस की पूजा अवश्य होगी।

मॉ के भक्तो द्वारा आयोजित भक्ति सध्या कार्यक्रम इत्यादि

माँ करणी के पूरे भारतवर्ष में अपने-अपने तरीकों से छोटे-बडे कार्यक्रमों का आयोजन भक्तगण अपने स्तर पर करते है जिनमें प्रतिवर्ष 15 अगस्त के दिन कलकत्ता में एक दिवसीय भक्ति सध्या एव 16 अगस्त को पुरुलिया (पश्चिम बगाल) में भी भक्ति सगीत का कार्यक्रम होता है। प्रसाद बाटी जाती है। ठीक इसी प्रकार आश्विन शुक्ल पक्ष की अष्टमी को सगरिया में भी कार्यक्रम होता है। इनके साथ-साथ जहा-जहा श्री करणीजी के मन्दिरो की स्थापना हुई है इस दिन को वहा के भक्तगण बडी धूम-धाम से मनाते है। जहा-जहा मा का दरबार है वहा-वहा माँ के अनेको ऐसे भक्त हैं जो लगातार दो दिनो तक माँ का कार्यक्रम खूब धूम धाम से मनाते है। सगरिया मे एक भक्त मण्डल ऐसा है जो प्रत्येक शनिवार को माँ की चिरजाआ का गुणगान बारी बारी से अपने-अपने घरो मे परिवार के साथ मिलकर माँ के नाम भक्ति सध्या का कार्यक्रम करते हैं।

नवरात्रि मे क्या-क्या कार्यक्रम होते है ?

जब आसोज माह का आगमन होता है तब पूरे गाव मे एक अलग तरह की उमग और उत्साह की लहर दौडती है क्योकि इस माह म माँ के सबसे बडे नवरात्रि आते है। जिनमे सबसे बडी बात शुक्ल पक्ष की मप्तमी की है क्याकि इस दिन जगत् की जननी का जन्म हुआ था। इस दिन को देपाजी परिवार के साथ साथ पूरा जगत् धूम-धाम से मनाता है। प्रथम नवरात्रि को हजारो की सख्या में भक्त पैदल आते हैं। इस दिन नवरात्रि की घट-स्थापना होती है। देशनोक में प्रथम नवरात्रि से पचमी तक कोई भी कार्यक्रम हो सकता है। इनक साथ-साथ षष्ठी के दिन शाम को हमारा लुप्त हो रही डिगल भाषा को जीवित रखने उसका लोगों को महत्त्व और इसके वर्चस्व का ज्ञान करवाने क उद्देश्य से इस दिन को अखिल भारतीय डिगल कवि सम्मेलन आयोजित होता है जहा इसी भाषा के महान ज्ञाताओ कवियों आदि को पूरे भारतवर्ष से बुलाया जाता है। कवि-सम्मेलन में डिगल कवियों द्वारा पूरी रात प्रस्तुति दी जाती है जिनको श्रोतागण सवेरे तक रस भरे माहौल में सुनते हैं।

नवरात्र आश्विन एव चैत्र मे क्यों ?

नव शब्द का अर्थ नवीन भी होता है और नौ की सख्या भी। भारतीय धर्मशास्त्रों के अनुसार देवी दुर्गा के भी नौ रूप माने गए है। अत नवरात्र को धार्मिक महत्त्व देते हुए नौ दिन के व्रत की विधि प्रतिपादित कर दी गई। नवरात्र का आश्विन एव चैत्र माह में पडने का वैज्ञानिक कारण भी है। ये दोनों महीने ग्रीष्म ऋतु के सधिकाल माने जाते हैं। स्वाभाविक रूप मे ऋतु परिवतन होने से शरीर प्रभावित होता है। सयोग से शारदीय वर्ष आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होता है और बासती सवत्सर चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से। इन दोनो सवत्सरों के प्रारभिक नौ दिनो को नवरात्र के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा आश्विन और चैत्र माह कृषि उपज के लिए भी महत्वपूर्ण कहे गए हैं।

जयती

सप्तमी के दिन सवेरे पूरा गाव, दर्शनार्थी भक्तगण एव आस-पास के गावो से दूर-दूर से आये हजारों भक्त मन्दिर आ पहुचते हैं क्योंकि आज माँ करणी का जन्मदिन है। इस दिन को हम सब मिल कर जयती के रूप में मनाते है। इस दिन सवेरे 8 बजे बारीदारजी किलेदारजी, मन्दिर ट्रस्ट अध्यक्ष एव माँ के चारों पुत्रा के परिवारो से एक-एक व्यक्ति मिलकर माँ के सामने उपस्थित हो माँ से आत्मिक अरदास करते है कि 'माजी सा आप नवलखो हार धारण कर'र इण सोने रै थाळ में पुरस्योडे भोग नै अरोग र खुशी-खुशी पालकी माथै बिराजो सा आपा जद ताई तेमडराय रा दर्शन कर पाछा पूगा तद ताई आप री पावडिया प्रतीक रूप माय आपरी देवळी रै सामी रैसी जिन पाछै दरसन करणिया भगता नै दर्शन हुय ज्यासी।' इस तरह सू माँ से आत्मिक निवेदन कर पूरे साजो-सामान के साथ माँ के वशज राजस्थानी परिवेश धोती-चोला, साफा आदि पहनकर जयती के पास आकर खडे हो जाते है। इस दौरान माजीसा को सोने का छत्र एव हार धारण कराया जाता है। माँ के सवेरे का भोग लगाते ही जोत सीधी पालकी के पास लायी जाती है वहा पर महाराज पूरे विधि-विधान से माँ को अरदास करते हुए पूजा-अर्चना करते हैं। माँ के पालकी में विराजते ही माहौल आनन्दित हो उठता है। माँ के जोत एव आरती उतारी जाती है। इस समय गिरवरराय की आरती गायी जाती है। आरती के पूण होते ही जोर से हिगळाजराय तेमडाराय, करणी माता, देशाणराय ढाढाळी के जै-कारे के साथ चारो पुत्रों के परिवारों के सदस्यों द्वारा पालकी को कधो पर उठाया जाता है। पालकी के इस उत्सव को जयन्ती कहा जाता है। जिसमें सबसे आगे दोनों पुत्रो में एक पूनोजी के दूसरी तरफ लाखणजी के तथा पीछे की तरफ सियावतजी के एव नरसिगजी के परिवार के व्यक्ति पालकी को उठाते है। यह व्यवस्था 'मनुज देपावत' की मूर्ति तक होती है यहा से तेमडाराय मन्दिर तक कोई भी भक्त सिर पर पगड़ी बाधकर पालकी को सहारा दे सकता है मगर मन्दिर में प्रवेश के समय देपावता को हो पालकी को रखने का अधिकार है। तेमडाराय मन्दिर तक पूरे रास्ते भक्त झूमते-नाचते और गाते हुए, बैंड-बाजो की मधुर धुन एव ढोल की आवाज में इस कदर झूम उठते हैं कि मन रोमाचित हो उठता है। जगह-जगह माँ के स्वागत को आतुर लाग माँ के दर्शनार्थ इन्तजार करती हुई महिलाए बच्चों इत्यादि की खुशी का एहसास इस अन्दाज से लगा सकते हैं कि ये सभी सवेरे से ही घरों के ऊपर जाकर बैठ जाते है जब दूर से माँ की चिरजाओं की आवाज जै-कारे की गूज कानों में पहुचने लग जाती है तब सभी झुक-झुक कर बार-बार देखते रहते है कि अब माँ के दर्शन होंगे अब होगे। यह सोचते हुए उत्सुकता लिये हुए देखते रहते है। तभी अचानक उनको N C C के कैडिटों, स्काउट-गाइड के छात्रों के कतारबद्ध दोनो तरफ हाथ से हाथ पकडे हुए बच्चे दिखाई देते है। कुछ ही समय में माँ की जयती उनके सामने से निकलती हुई तेमडाराय मन्दिर की तरफ आगे बढ जाती है। तेमड़ाराय मन्दिर पहुचने तक रास्ते मे कई जगहो पर शर्बत, शिकजी एव ठण्डा जल इत्यादि की सेवाए भक्तों द्वारा जगह-जगह पर दी जाती है। तेमडाराय मन्दिर पहुचते ही मन्दिर की तरफ से आरती-पूजा होती है। माँ की इष्ट देवी आवडजी माता (तमडराय) की मूर्ति के सामने



जयती को विराजमान करते है। माँ की नजरों के सामने आवडजी का करण्ड दिखता है जिनका सभी दर्शनलाभ लेते है। वहा पर तेमडाराय मन्दिर के बारीदारजी द्वारा माँ आवडजी एव करणी माँ की आरती की जाती है भोग लगाया जाता है। इनके साथ-साथ वर्षों से मन्दिर के पास रहने वाले सोनार परिवारो की तरफ से उदाराम-गगारामजी का परिवार भी माँ को भोग लगा कर प्रसाद बाटते है। तेमडाराय दर्शन के बाद जयती बाजार से होती हुई जब मनुज की मूर्ति के पास पहुचती है तब उस समय जयती में आगे की ओर एक तरफ सियावतजी तथा दूसरी तरफ नरसिगजी के परिवार का सदस्य तथा पीछे की तरफ एक तरफ पूनोजी के तथा दूसरी तरफ लाखणजी के सदस्य जयती को कधों पर रखते है। जाते समय ये दोनों आगे होते है तथा आते समय पीछे की तरफ होते है। इसका कारण है कि माँ के चारो पुत्रा को जयती को सभी तरफ से कधे पर रखने का सौभाग्य मिल सके। जयती मन्दिर पहुचते ही बरामदे मे रख दी जाती है जिनका भक्तगण चतुदशी तक दर्शनलाभ ले सकते है। माँ की जय हो।

जयती कब से प्रारम्भ हुई है ?

गाव के दस-पन्द्रह लाडेसर पोतो ने माँ के जन्म-दिवस को एक समारोह के रूप मे मनाना प्रारम्भ कर दिया। वे लोग माँ के जन्मदिन के दिन श्री करणी मन्दिर से चिरजाए गाते हुए माँ की तसवीर के साथ तेमडाराय मन्दिर पहुचते थे। इसी दौरान तेमडाराय मन्दिर के पास रहने वाले उदाराम-गगाराम सोनार ने अपना घर देशनोक में बनाया और उसमे लकडी का काम जब प्रारम्भ हुआ तब गगारामजी ने सुथारी से कहा कि आप पहल माँ के लिए कुछ बनाओ, उसके बाद घर के काम करना। तभी माँ की कृपा हुई और माँ के लिए एक पालकी का विचार आया और सुन्दर पालकी बन गई। उसको मन्दिर म चढा दिया गया। ट्रस्ट ने इस पालकी का उपयोग एक सहमति से माँ की कृपा से जयती के दिन उपयोग लेने का विचार किया। फिर इसमे एक तस्वीर रख उसकी पूजा-अर्चना करके तेमडाराय मन्दिर तक ले जाने का सर्वसम्मति से निर्णय हुआ। जिस जयती का आज तक हम दर्शनलाभ लेते है वो जयती वर्षों पुरानी है। अभी हाल ही म उसमे रगीन तस्वीर उदाराम-गगाराम परिवार से ही पारसमल सोनार ने भेंट की है जो कि चादी के फ्रेम में मढी है। यह सब माँ की कृपा और अनुमति स ही सभव है। जयती दर्शन शुभ लाभकारी तथा फलदायी होता है क्योकि जयती मे माँ साक्षात् विराजमान होती है। पूरा गाव मिल-जुल कर इस महान उत्सव को एक जयती के रूप म मनाता है।

शिक्षा के पुरस्कार

श्री करणी मन्दिर निजी प्रन्यास एव चारण नारायणसिह गाढण ट्रस्ट द्वारा सामूहिक रूप से राज्य भर के चारणों के लडक-लडकियो की शिक्षा को बढावा देने की दृष्टि से छात्रों को पुरस्कार दिये जाते है। गाढण ट्रस्ट की शुरआत से शिक्षा में काफी बढोतरी हुई हैं। जब से मन्दिर ट्रस्ट भी शामिल हुआ है तब से छात्र छात्राओ में पुरस्कार पाने की होड लगने लगी। पुरस्कार के लिए लडकिया की भी दिन-ब दिन सख्या में बढोतरी हो रही है। काफी समय तक लडके बाजी मारते थे। मगर अब लडकिया और लडको मे असमानता का दौर खत्म हो गया। अब लडकिया लगभग अपने कोटे से अधिक उपस्थिति देती है। इस पुरस्कार के लिए प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना जरूरी है। हर समाज में इस तरह के कार्यक्रम होने चाहिए। ताकि गावों में लड़कियों और लडको की शिक्षा का भेद खत्म हो और अशिक्षा की सोच का अधेरा साफ हो।

चारण नारायणसिह गाढण ट्रस्ट

धन्य है चारण नारायणसिह गाढण की सोच जिन्होने 1988 को अपना सर्वत्र शिक्षा क्षेत्र में झोंक दिया। उनका एक ही सपना था कि शिक्षा के क्षेत्र में नई जागृति कैसे लायी जाय। उनके प्रयास से जहा 1998 में पूरे राजस्थान स केवल 17 लडके पहुचे थ। वही गिनती अब 2009 में 500 पार हो गई।

श्री करणी मन्दिर निजी प्रन्यास की सहभागिता

पिछले 5 वर्षों से श्री करणी मन्दिर ट्रस्ट भी इनके साथ-साथ मन्दिर की तरफ से भी सभी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को एक निमित्त राशि 200 रुपये देना प्रारम्भ किया। इन पुरस्कारो से छात्र-छात्राओं में उत्तरोतर वढोतरी हो रही है।

पट्शती महोत्सव

माँ करणी के छ सौवें जन्म दिवस को वडी धूमधाम से मनाया गया था। पूरे 15 दिवस तक मन्दिर प्रागण में होने वाले हर कार्य को वहुत वढिया तरीके से मनाने का मानस बनाया। कौन से कार्य को किस ढग से मनायें, योजनाए वनाई गई। कई कार्यक्रमों द्वारा जन्म-दिवस को एक महा-उत्सव के रूप मे मनाने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। उसके लिए एक अलग से कार्यक्रम समिति भी वनी। जिसके अध्यक्ष श्री अम्वादानजी वारहठ एव कार्यक्रम का सयोजक मूलदानजी देपावत को वनाया गया। उन्होंने पूरे गाव से हर जाति-वर्ग के लोगा को साथ लेकर सभी को योग्यता अनुसार कार्य सौंपे। पूरे गाव ने मिलकर उस महोत्सव का इतनी धूमधाम से मनाया कि जिसकी आज तक चर्चाए होती है। इस कार्य म कितना पैसा लगा, जिनका लेखा-जोखा मन्दिर म मौजूद है।

नि शुल्क भोजनालय

1987 म जब माँ क छ सौवें जन्म-दिवस को बडी धूम-धाम से मनाया जा रहा था तब मन्दिर की तरफ से एक नि शुल्क भाजनालय चलाया गया था। उस नवरात्रि के बाद कुम्भार जाति क श्रीगगानगर मे रहने वाले लोगों ने अपने स्तर पर एक भोजनालय खोलकर नि स्वार्थ भाव से तन-मन से सेवा की। उनकी सेवा से माँ ने एसा आशीर्वाद दिया कि वह भाजनालय आज तक अनवरत चलता आ रहा है। आज मन्दिर द्वारा उनको काफी वडा भू-भाग भवन के लिए द रखा है जहा उन्होंने बडा भोजनालय भवन वनाया है। वष भर हजारा भक्त नि शुल्क भोजन ग्रहण करते है। भोजनालय के मुख्य सचालक प्रेमजी बड़े शात और सरल स्वभाव के धनी हैं जो अपने क्षेत्र के भक्तो को सेवा के लिए समय-समय पर अवसर देते रहते है। माँ की सेवा में सभी सदैव तत्पर रहते है। आसोज के नवरात्रि मे लालस परिवार तथा खिडिया परिवार (सादुलपुर) की तरफ से भोजनालय पूरे नवरात्रि तक चलते है, वहा भी भीड उमडती रहती है। इनके अलावा एक विशेष भोजनालय का जिक्र भी जरूरी है। प्रत्येक माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को जयपुर के डॉ करणीसिहजी रतनू की तरफ से भी नि शुल्क भोजनालय चलता है, जहा भक्त बडे प्रेम-भाव स प्रसाद ग्रहण करते है। यह सब माँ की कृपा और आशीवाद से ही सभव है कि सभी आयोजन सहर्ष सफल होते है।

म्यूजियम (चित्रशाला)

पट्शती जयती के सफल कार्यक्रम के वाद जो पैसे वच गये थे, उसकी योजना वनाई कि ऐसा क्या किया जाए जो महोत्सव की याद दिलाता रहे। इसी सोच के आधार पर एक म्यूजियम बनाया गया। फिर उसके लिए चित्र वनाये गये चित्र भेंट लिये गये, जिनको म्यूजियम मे लगाया गया। म्यूजियम मे लगे चित्रा को आप टिकट प्राप्त कर देख सकते हैं। यह म्यूजियम मन्दिर के ठीक सामने है।

देशनोक मन्दिर की आवास-व्यवस्था

मन्दिर के दशनार्थिया क लिए माँ के दरबार मे मन्दिर ट्रस्ट द्वारा एव भक्तो द्वारा सभी प्रकार की सुविधाओं की व्यवस्था दी जाती है। भक्तो के लिए गाव में हर स्तर की सुविधा-व्यवस्था है। मन्दिर द्वारा निर्मित धर्मशालाओ में जहा पर आप उचित किराये म रह सकते है। कई ऐसे गेस्ट हाउस है जहा आप आधुनिक सुविधाओ से सुसज्जित व्यवस्थाए ले सकते है इनके अलावा आपको वातानुकूलित की सुविधा वाले कमरों से व्यवस्थित धर्मशाला एव गेस्ट हाउस भी सेवार्थ हाजिर है। इस दरवार म आपको किसी भी प्रकार की परशानी ना हो इस कारण दिन-व-दिन नव-निर्माण



के कार्य भी चलते रहते है। नवरात्रि मे सेवा के लिए अलग से टैंट भी लगाये जाते है। धर्मशालाओं में सैकडो अलमारिया भी है जहा आप अपना सामान रख सकते है। सुलभ सुविधाओ का भी पूरा ध्यान रखते हुए समुचित व्यवस्था भी मन्दिर परिसर में है। अगर आप परिवार सहित आते है, उस दौरान अगर कोई भी क्वार्टर खाली होता है तो मिल सकता है। विवाह/उत्सव के लिए पूरी धर्मशाला भी किराये पर मिल सकती है। रहने-खाने-पीने सभी प्रकार व्यवस्थाए दरबार मे मौजूद है।

नवरात्रि मे व्यवस्था-बिजली, पानी, दवाई, भोजन, पुलिस, यातायात इत्यादि

नवरात्रि के दिनों में कुछ व्यवस्थाओ का अलग स बदोबम्स्त होता है। बिजली, पानी, मेडिकल, भोजनालय एव यातायात इत्यादि कई प्रकार की सुविधाओ के लिए इन महकमो से पूरी सुविधा मिलती है। ताकि दर्शनार्थीयों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, वो नि सकोच इनका सहयोग ले सकता है। इन सुविधाओ म मन्दिर द्वारा शीतल जल की विशेष सुविधा होती है। ताकि भक्त गर्मी के माहौल में ठण्डा जल पी सके। हाल ही में प्रथम नवरात्रि से अष्टमी तक देपावत परिवारों एव भक्तो की तरफ से शर्बत शिकजी, लस्सी, मिल्करोज इत्यादि पेय पदार्थों की भी सेवाए दर्शनार्थियों के लिए की जाने लगी है। विशेष बात है कि प्रथम नवरात्रि क दिन बीकानेर से देशनोक तक प्रत्यक 100 कदम के बीच एक सेवा स्थल तैयार मिलता है। जहा मिठाई, फल, दूध, चाय, नाश्ता इत्यादि की समुचित व्यवस्था नि शुल्क होती है। यह पैदल यात्रियों के लिए एक दिन की सेवा होती है। दिन-ब-दिन पैदल यात्रियो की जितनी सख्या बढती हैं वैसे ही सेवादारों की सेवा में बढोतरी होती रहती है।

मन्दिर के कर्मचारी स्थाई/अस्थाई

मन्दिर की साफ-सफाई एव कुछ जिम्मेदारी वाले कार्यों के लिए कर्मचारी रखे जाते हैं। अच्छा कार्य करने वाले कर्मचारी को स्थाइ कर दिया जाता है। जिनको नियमित कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। नवरात्रि के दिनों मे अधिक भीड होने के कारण दर्शनार्थियों को सभी प्रकार की सुविधाए एव व्यवस्था के लिए 15 दिनों तक काफी सख्या मे अस्थाई कर्मचारी रखे जाते हैं जो पूरे नवरात्रि तक तन-मन से माँ की सेवा में लगे रहते हैं।

साधारण किराये पर मन्दिर से बर्तन-सामान मिलते है

भक्तो एव परिवारों के लिए मन्दिर से उचित किराये के साथ सभी प्रकार के बर्तन मिल जाते हैं, चाहे कितने ही लोगो के खाने की व्यवस्था हो। गाव में किसी भी अवसर पर आवश्यकता हो तो मन्दिर से उचित किराये पर बतन मिल जाते हैं। मन्दिर के ट्रस्ट की यह कोशिश रहती है कि मन्दिर मे सभी प्रकार की सुविधाए हो जिनका देपावत परिवारों के साथ साथ सभी लोग इनका उपयोग ले सके।

रोजी-रोटी की दुकाने

माँ ने अपने दरबार मे सभी को कुछ-न कुछ दिया है। भक्तो की सेवा मे आज से करीब 50 60 वर्ष पूर्व मुल्तान प्रसाद उपाध्याय ने एक खोखे के रूप में दूकान लगाई। वो अपना सामान रात को मन्दिर में रख देते थे। सवेरे वापस लगा लेते। इस क्रम में इनका साथ दिया मोदीजी ने। फिर एक से दो बने। धीरे धीरे शिम्भूदानजी चन्दूजी मोदी एव देवीदानजी रतनू इत्यादि लोगों ने अपना-अपना छोटा-मोटा व्यापार शुरू कर दिया। जो आज एक भव्य बाजार के रूप में सुसज्जित होकर माँ की सेवा में प्रतिपल तत्पर है। जहा तरह तरह के मिष्ठान मिलते हैं वहीं माँ की सेवा-पूजा हेतु सामग्री की दूकानें भी हैं। इनके साथ साथ माँ की भक्ति के लिए कई कलाकारों द्वारा सुरीली आवाजों में गाये गई माँ की चिरजाओं की कैसेट भी मिलती हैं। इन 4 5 वर्षों में एक बात सामने आई है वो है कि माँ के जीवन चरित्र के बारे में लिख गये छदों कविताओं एव सचित्र वर्णनों के रूप में माँ का साहित्य। इससे माँ की तमाम जानकारिया पढ़ने को मिलती हैं।

मोहता धर्मशाला

जब माँ के मन्दिर के मुख्यद्वार का निमाण हो रहा था, उस समय मोहताजी ने माँ के भक्तों के ठहरने की सुविधा हेतु धर्मशाला बनाने की इच्छा जाहिर की। मुख्यद्वार बनाने वाले सेठ चादमलजी ढड्ढा, जो कि मोहताजी के सगे-सम्बन्धी थे, उनके सामने मोहताजी ने इच्छा जताई कि मन्दिर क पीछे एक धर्मशाला मैं भी बना दता ह् जो कि रेलव स्टेशन क बिल्कुल सामने रहेगी। मगर एक अड़चन थी कि उस जगह जल सग्रहण हेतु माँ की सेवा में बावड़ी बनी हुई थी। यह बात पूरे गाँव वालों को अच्छी नहीं लगी कि उस बावड़ी की जगह धर्मशाला बनने से माँ की सेवा-पूजा में काम आने वाला अमृत जल काम मे आएगा। यह कार्य देपावता को उचित नहीं लगा। देपावतों ने मुख्यद्वार निर्माण कारीगर श्री हीरजी सुथार का सारी बात सविस्तार से बतायी। हीरजी के दिमाग में माँ की कृपा से सारी बात समझ आ गई। हीरजी माँ के अनन्य भक्त थे उन्होंने एक ऐसा नक्शा तैयार किया, जिसमें मन्दिर के चारों तरफ मुख्यद्वार जैसे नौ द्वार बनाना उचित समझा। इस नक्शे को महाराजा गगासिहजी के समक्ष पेश कर दिया गया। राजा साहब ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। स्वीकार करने के बाद हीरजी न धर्मशाला की बात कही, तब राजा साहब ने कहा मैं मोहताजी को दूसरी जगह के लिए कह दूगा। जब इस बात का पता ढड्ढाजी को लगा तब नाराज हो गये। मुख्य द्वार का कार्य बद हो गया। दूसर कारीगर आए मगर काम नहीं बना। काफी वर्षों बाद महाराजा ने वापस हीरजी को बुलाकर काम करवाया तब तक ढड्ढाजी देवलोक हो गये। मोहताजी ने मन्दिर में बायीं तरफ लाल पत्थर की प्रोळदार धर्मशाला बनायी। जो आज भी माँ की सेवा में हाजिर है। मगर जो कार्य माँ की सेवा में राजनीति से करते हैं उनका राज नहीं रहता सिर्फ नीति रहती है।

राज परिवार के ठहरने का स्थान लालकोठी

बीकानेर के राज परिवार पर राव बीकाजी से लेकर महाराजा करणीसिंहजी तक माँ की अपार कृपा रही है। महाराजा गगासिहजी के साथ तो माँ के साक्षात् चमत्कार हुए हैं। हाल ही में जब माँ को राज परिवार की उपस्थिति की दुनिया में कमी खलने लगी तब माँ ने महाराजा करणीसिहजी की सुपौत्री सुश्री सिद्धि कुमारीजी को वो मजिल दे दी। जिनक द्वारा बीकानेर राज का परचम दिल्ली तक लोगों की नजरों की सलामी ले रहा है। सब माँ की कृपा से सभव है। महाराजा गगासिहजी जब भी युद्ध पर या विदेश निकलते थे तब माँ के दरबार से ही निकलते थे। आप देशनोक में काफी समय तक रुकते थे। इसी कारण आपने देशनोक मे एक कोठी बनाई मगर माँ के दरबार क सामने गाव में माँ से बड़ा कोई कार्य नहीं हो सकता। माँ के सामने राजा और बालक सभी एक जैसे ही है। जब कोठी का कार्य पूर्णता की तरफ था तब महाराजा को इस बात का एहसास हो गया था कि इतना बडा निर्माण कार्य माँ को पसद नहीं है। इसी कारण उस कार्य को बद करवाकर राजा ने फिर एक साधारण कोठी बनवाई जहा वह आराम से रह सकते थे। वो स्थान काफी समय तक लाल कोठी के नाम से जाना जाता था।

माँ की मर्यादा का राज परिवार द्वारा पालन

मन्दिर के सामने बीकानेर नरेश क ठहरने के लिये कच्ची ईंटों की बनी हुई एक सुन्दर कोठी है, जिस पर टीन के छप्पर पड़े हुए हैं। कोठी, मन्दिर और स्टेशन के बीच म एक पक्की सड़क है। रेलवे स्टेशन से मन्दिर की दूरी करीब चौथाई फर्लांग है और मन्दिर एव स्टेशन के बीच में बीकानेर के सेठ चादमल ढड्ढा की बनाई हुई एक पक्की धर्मशाला है, जिसमें यात्री लोग तीन दिन तक ठहर सकते हैं, इससे अधिक ठहरने के लिय मैनेजर की आज्ञा प्राप्त करनी पडती है। बीकानेर नरेश जब ट्रेन अथवा मोटर में बैठ कर देशनोक आते हैं तो रेलगाड़ी या मोटर देशनोक की सीमा मे प्रवेश करते ही ठहरा दी जाती है। वहीं रेल पटरी के पास एक कच्चा चबूतरा बना हुआ है। गाडी के ठहरते ही कर्मचारीगण इस चबूतरे पर *जाजम बिछा दते हैं तब श्री बीकानेर नरेश गाडी से* चबूतरे पर पहुच कर नमस्कार करते है और क्षण-भर के लिये कुछ प्रार्थना कर वापस गाडी में आ बैठते है। जब



गाड़ी स्टेशन पर पहुचती है तो प्लाटफार्म पर पहिले से एक जाजम बिछी रहती है, उसके सामने उनका सैलून खड़ा हो जाता है और वे उतर कर प्लेटफार्म पर पुन मन्दिर की ओर मुड़ कर प्रणाम करते हैं और वहाँ से पैदल चल कर मन्दिर के सिंहद्वार पर पहुचते हैं, वहाँ भी एक जाजम बिछी रहती है, जहाँ पुन प्रणाम करते हैं और वहीं जूते और मोजे उतार कर मन्दिर के भीतर प्रविष्ट होते हैं। सिंहद्वार से देवी के दर्शन नहीं होते, इसलिये भीतर पहुच कर नक्कारखाने के पास, जहाँ से देवी की मूर्ति के प्रथम दर्शन हो सकते हैं, वहाँ पुन एक जाजम बिछी रहती है, उस जाजम पर खड़े होकर कुछ समय तक करबद्ध हो प्रार्थना (स्तुति) करते रहते हैं। तदनन्तर प्रणाम कर आगे बढते हैं और पखाशाल में बिछी हुई जाजम पर बैठ कर प्रार्थना, स्तुति, दर्शन, नमस्कार आदि करते हैं और कुछ देर के लिये देवी पर चवर डुलाते है। जब तक वे वहाँ बैठे रहते हैं तब तक यात्रिया का उनके कारण से मन्दिर में आना-जाना बन्द नहीं रहता। प्रत्येक व्यक्ति को आने-जाने और प्रार्थना करने की स्वतन्त्रता है। जब तक वे मन्दिर मे रहते हैं तब तक कोई व्यक्ति मन्दिर-सम्बन्धी कार्य को छोडकर अपने निजी काम के लिये बीकानेर नरेश से प्रार्थना नहीं कर सकता और न उनके लिये श्रीमान्, हुजूर, नरेश आदि महत्तासूचक विशेषणो का प्रयोग कर सकता है। तात्पर्य यह है कि मन्दिर में वे अपने को साधारण यात्री की हैसियत में समझते है। यदि किसी दिन वहाँ उनको ठहरना होता है तो उपरोक्त कोठी में पहिले ही से प्रबन्ध कर दिया जाता है अन्यथा आते समय जहाँ-जहाँ खडे रह कर उन्होने देवी को नमस्कारादि किये थे, वहीं-वहीं जाते समय पुन नमस्कार करते हुए अपने सैलून मे बैठ जाते है।

बीकानेर राज महल मे माँ की सेवा

बीकानेर शासन मे राजाजी की सेवा-पूजा स्थल मे करण्ड मे श्री करणी जी की मूर्ति है पहले सेवा करण महल होती थी उसके बाद करण्ड वापस पूजा स्थान पर स्थापित करते थे।

दी बैंक ऑफ बीकानेर के चैक पर करणीजी का चित्र

बीकानेर के महाराजा गगासिहजी ने दी बैंक आफ बीकानेर की स्थापना की। बैंक के प्रत्येक चैक पर श्री करणीजी का चित्र अकित रहता था। राज के बदलते हो माँ की आस्था को देखते हुए बैंक का नामकरण स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर रखा गया। चैक से मा का अकित चित्र हटा दिया गया ताकि चित्र का अपमान न हो।

आयना

माँ भगवती ने जैसा बताया कि 'मैं सब की माता हू' धरती पर जितने भी जीव है सब की जननी हू। करणी अवतार म मेरी शादी देपाजी से हुई जिनकी सताने मेरी सतान है। इस कारण देपावत परिवार मेरा परिवार है मेरी सतान सब बराबर है। न तो काई बडा है और नहीं कोई छोटा। सबको अपनी मेहनत अनुसार प्रसाद मिलता है इसीलिए कोई न अमीर है और न ही गरीब। हा अगर कभी भी विचारों में फर्क आ जाए छोटे बड का। तब भाईया में टकराव न हो इन्हीं विचारों के साथ कुछ आयने रखी है। ताकि वर्ग वेमनस्य न पनपे। जिसके तहत मा ने अपने पुत्रो से कहा कि 'मेरे मंदिर मे बडा कोई मकान नहीं होगा, घर के आगे प्रोल नहीं होगी, दुल्हन घुघरूदार पायल नहीं पहनेगी, लडकी की शादी के अवसर पर दुल्हा पैदल आकर बाजोट पर खडा हो तोरण बाधेगा अर्थात् घोडी चढकर नहीं आएगा, बैंड बाजे नहीं होंगे। सिर्फ ढोली ही ढोल बजाएगा, दहेज में पलग पालने नहीं देंगे। इत्यादि के साथ साथ पर्यावरण की दृष्टि से कहा कि निम्न जातिया अपना व्यवसाय नहीं करेगी। धोबी मेल नही गालेगा, कसाई मास का कार्य नहीं करेगा कुम्हार मिट्टी नहीं पकाएगा और माली गन्दगी मे सब्जी नहीं उगाएगा इत्यादि' अगर ऐसा कार्य हो रहा हो तो उसको तुरत गाव से निकाल देना। अथात् बसने ही मत देना। इनके साथ-साथ ओरण की रक्षा करना, झाडियों को काटना तोडना मना है। इस प्रकार से माँ ने ऐसी कई छोटा-मोटी व्यवस्थाओं को बनाया है

ताकि बच्चों के साथ-साथ गाव में समरूपता बनी रहे। आज वेमनस्य न पनप इसी कारण एसी व्यवस्थाए आज से 600 वप पहले ही तय कर दी। जिनको देपावत परिवार आज तक निभा रहा है।

धर्मशालाए एव गेस्ट हाउस इत्यादि

माँ के दर्शन हेतु आने वाले यात्रियों के लिए मन्दिर ट्रस्ट द्वारा निर्मित एव सचालित धमशालाए है जहा पर उचित किराये पर रहन व खाने-पीने की समुचित व्यवस्था मन्दिर द्वारा की जाती है। मन्दिर के पास सबसे पुरानी मोहता धर्मशाला है। इसक बाद मन्दिर के सामने माँ करणी धर्मशाला है। हाल ही में एक 'सेवा-सदन' नाम की धमशाला बनाई गई है जिसमें 100 कमरों का नव निमाण का कार्य हुआ है। जा दो मजिल इमारत है जहा सभी कमरों में सभी सुलभ-सुविधाए मौजूद हैं इसका निमाण मन्दिर द्वारा कराया गया है। निर्माण के बाद इच्छुक भक्तों ने राशि प्रदान कर माँ की सेवा में समर्पित कर दिये गये हैं। जहा सभी के अलग-अलग शिलालेख मौजूद हैं। इनके साथ ही ओंकारसिह एव प्रभा ठाकुर द्वारा अपन विधायक कोटे से गेस्ट हाउस बना कर। माँ की सेवा में समर्पित कर दिये गये हैं। इनके अलावा एक निजी स्तर पर उचित किराये पर आपको साधारण एव वातानुकूलित कमरों से सुसज्जित कमरों की धर्मशाला की सुविधा भी है जो कि 'मेहाई धर्मशाला है जो मोहता धर्मशाला के पीछे की तरफ आपकी सवा में तत्पर है। धमशाला को चम्पालाल—कानी देवी सिंघी ट्रस्ट सचालित करते है। धर्मशाला का निर्माण माँ के परमभक्त सरदारशहर निवासी कनकमल सिघी परिवार द्वारा माँ के दर्शनार्थियों की सेवा-सुविधा को ध्यान में रखते हुए कराया गया है। यह धर्मशाला साधारण कमरा, वातानुकूलित कमरा, बडे हॉल रसोईघर आदि सभी प्रकार की समुचित व्यवस्थाओं सहित सदैव सेवा में हाजिर हैं। इसके अलावा हाल ही में श्री करणी पैलेस' धर्मशाला का निर्माण भी हुआ है जहा साधारण कमरों के साथ-साथ वातानुकूलित कमरों की सुविधा भी मौजूद है। यह पुलिस थाने के पास है जिसे बद्रीदानजी देपावत का परिवार सचालित कर रहा है।

नवरात्रि एव धर्मशालाओ के लिए बुकिंग

हर भक्त के दिल में एक बात का मथन हमेशा लगा रहता है कि माँ के दरबार में रहने को थोड़ी जगह मिल जाए। ऐस भक्तों के लिए मन्दिर ट्रस्ट आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित कमरों की बड़ी-बड़ी धर्मशालाओं का निर्माण करवा रहे हैं जिनके लिए आप से मन्दिर ट्रस्ट इनकी बुकिंग ले लेते हैं। जिसक तहत आपसे कमरों की लागत राशि ली जाती हैं। जमीन मन्दिर की तरफ से मिलती है। इन कमरों पर अधिकार मन्दिर का होता है। आप जब भी पधारें 15 दिनों तक उनम रह सकते हैं। वह आपका स्थाइ निवास नहीं रहेगा। बाकी दिनों में वह भक्तों की सेवाथ रहता है।

कल, आज, कल यातायात के साधन

एक समय था जब यात्रियों को माँ के दशनार्थ आने के लिए ऊट-गाड़ों से महीनों लग जाते थे। फिर समय आया छोटी-मोटी गाड़ियों का तथा रेल का। जिसके द्वारा 2-4 दिन में माँ के दर्शन हो जाते थे। मगर आज जो सुविधा है वैसी सुविधा की कल्पना बुजुर्गों ने नहीं की थी। माँ की ही कृपा है कि आज विदेशों में बैठा भक्त हजारों किलामीटर दूर रहने वाला 24 घटों में माँ के दरबार में दर्शनार्थ हाजिर हो जाता है। आम आदमी भी अपने निजी साधना से त्वरित गति से कम समय म माँ क दर्शन पा लेत है। जैसे-जैसे समय बदलता गया वैसे-वैस साधन भी बदलते रहे हैं। समय के साथ बदलाव होना लाजिमी है। हाल ही में मन्दिर के पास से ही मिनी बसों का सचालन सुचारू रूप से हो रहा है। जहा आपको उचित किराये पर हर समय बस की सुविधा है। मन्दिर के पास से सवेरे छ बजे से लगाकर साय 7 30 बजे तक साधन मिल जाता है। इसके अलावा निजी स्तर पर छाटी गाड़िया हर समय उपलब्ध रहती है।

मन्दिर ट्रस्ट की भविष्य मे योजनाए

वैसे तो किसी भी कार्य के लिए पहले सोचा नहीं जाता मगर फिर भी कुछ योजना है जिनको सोचकर चलना पडता है। मन्दिर ट्रस्ट आने वाले दर्शनार्थियो के



लिए सभी प्रकार सुविधाओं के लिए तत्पर है। इन सुविधाआ मे दिन-व-दिन धर्मशालाओं के निर्माण का कार्य चलता रहता है। भोजनालया की पूरी सुविधा भक्ता द्वारा वनी रहती है। आने वाले दिना म वढने वाली भीड़ को व्यवस्थित ढग से सभी को दर्शन सुलभ हो इसके लिए मन्दिर परिसर म कुछ ऐसी व्यवस्था की ओर भी विचार चलता है।

मन्दिर द्वारा सार्वजनिक सहयोग

मन्दिर द्वारा ऐसी कई व्यवस्थाए हैं जिनको समाज एव गाव हितार्थ कर रखी है। जिनके द्वारा आवश्यक लोगा को, जरूरतमदों को समुचित फायदा मिलता है— (1) गाव के वृद्धों को जिनका माँ के अलावा दूसरा कोई सहारा नहीं है, उनको मन्दिर द्वारा पेन्शन दी जाती है। (2) अकाल पडने की स्थिति में गायो के लिए दूसरे राज्यो मे घास इत्यादि मगवाकर पूरे गाव में वगैर मुनाफे के साथ सस्ती दर बेचा जाता है। (3) प्राकृतिक आपदा या दुर्घटना हो जाती है उस स्थिति में मन्दिर की तरफ से अविलम्ब सहायता पहुचती है। (4) गाव म किसी भी जाति वर्ग की सुविधा के लिए उचित किराये पर मन्दिर की तरफ से एम्बुलेस की सुविधा भी दे रखी है। (5) वीकानेर के आयुद्ध डिपो मे जब आग लगी थी (करीब 5 वष पूर्व) तब हजारो व्यक्ति देशनोक पहुच गये थे तब उनके खाने-पीने व रहने इत्यादि की नि शुल्क व्यवस्था मन्दिर की तरफ से की गई थी।

श्री करणी मन्दिर द्वारा श्री तेमडाराय मन्दिर, जैसलमेर में धर्मशाला का निर्माण

श्री तेमडाराय मन्दिर, जैसलमेर म श्री करणी मन्दिर निजी प्रन्यास के पूर्व अध्यक्ष कैलाशदानजी के प्रयासो से सायर बाईसा (दाता रामगढ) के कर-कमलो द्वारा माँ का स्मरण कर एक धर्मशाला की नींव रखी गई। यह धर्मशाला आज सभी भक्तो की सेवा मे तत्पर है।

मेरे विचार से

मेरे विचार से यह मेरी आस्था है, मेरा मानना है कि अगर हम सब जिस ढग से माँ के नवरात्रा को धूमधाम से मनाते हैं, जन्म के दिन जयन्ती दर्शन का लाभ लते हैं, उसी ढग से अगर कुछ मुख्य तिथिया भी है, उनको भी अगर उत्सव के रूप में मनाने में हर्ज क्या है?

मूर्ति स्थापना दिवस

चैत्र शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन माँ की मूर्ति स्थापना हुइ है। यह दिवस महान दिवस है मूर्ति क दर्शन पाकर हम धन्य होते हैं।

माँ की जन्म तिथि

आसोज सुदी सप्तमी के एक दिन पूर्व छठ की रात को पूरे गाव में दीप माला कर माँ की कर्म स्थली को जगमगाना चाहिए। इत्यादि।

देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति का देशनोक आगमन

देश क सर्वोच्च पद ने देश की नाक 'दशनोक' में माँ करणी के दर्शन करते समय बताया कि 'जब हम राजस्थान को राज्य पाल पद पर थीं तब हमें माँ क मदि म सफेद काबे के दर्शन हुए थे। तब हमें बताया गया कि सफेद काबे के दर्शन होना शुभ माना जाता है। मनोकामनाए पूर्ण होती हैं। अर्थात् माँ की विशष कृपा होती है। तब हमने मन ही मन माँ से अरदास की कि हमें अगर जब कभी भी देश की बागडोर थामने का अवसर मिल जाएगा तब हम सपरिवार आकर जोडे से जात देंगे एव माँ के पूजन करवाएगे। माँ की कृपा से हमारी इच्छा पूर्ण हुई, राष्ट्रपति स बढकर कोई पद नहीं होता। इच्छा पूर्ण होते ही हम अपने पूरे परिवार के साथ देशनोक आए है।'[1] पति-पत्नी दोनों ने पूजन करवाया। राष्ट्रपतिजा तकरीबन सवा घटा तक मदिर में दर्शनों का लाभ लिया। मदिर की जानकारिया प्राप्त की।

हम जानते है इस ससार म माँ से बढकर कुछ नहीं है। राष्ट्रपतिजी को पता था कि मैं तो देश की सर्वोच्च पद की गरिमा हू। आज से पाच साल बाद कोई और इस सीट पर बैठेगा। मगर माँ तो हमशा ही पूरी सृष्टि पर

सर्वोच्च पद पर विराज मान है। इसी से ससार बसा है। यह सबस ऊपर है। माँ की शक्ति को नमन, माँ के दर्शनों मे सबकुछ सभव है। कुछ भी असभव नहीं है। हम पता है राष्ट्रपतिजी वैस भी राजस्थान के ही हैं। उस हिसाब से वह को तो अपने बुजुर्गों का दर्शन करने आने ही था। वह बहू का फर्ज बनता है दादी सा को प्रणाम कर आर्शीवाद प्राप्त करना।

जाळ की महत्ता

'जाळ इस धरा का वह कल्पवृक्ष है जिसक साथ माँ का गहरा रिश्ता रहा है। माँ ने न जाने कितने सावण क झूले अपने पीहर में जाळ पड़ स झूळे थे। उसी जाळ वृक्ष के नीचे पूगळराव शेखा की फौज को माँ ने अन्नपूर्णा का रूप धारण कर एक बाजरे की रोटी और आधी कुल्हड़ी दही मे पूरी फौज को भोजन कराया। यह जाळ आज भी माँ के पीहर सुवाप में मौजूद है जो कि एक आस्था का स्थल है। यह पूजनीय जाळ सुवाप का एक दर्शनीय स्थल है वहा एक छोटा मन्दिर बना हुआ है। जहा पूजा-अर्चना होती है। जाळ की वह टहनी जिसके सहारे माँ न अपनी बहनों के साथ झूळा झूल थे। उन पर निशान आज भी वैसे के वैसे हैं। आज करीब 621 वर्ष हो गये हैं, जाळ में वही हरियालापन मौजूद है। इसकी महत्ता की वजह से ही जाळ की सूखी लकड़ियों को जलाया नहीं जाता। क्योंकि जाळ पूजनीय है। माँ करणी न अपने श्रीहाथों से देशनोक में जब गुम्भारा बनाया तब गुम्भारे के ऊपर जाळ की लकड़ियों से छत को बनाया। आप जब गौर से देखेंगे तो पायेंगे कि स्वर्ण कपाट के अन्दर गुम्भारे में जाळ की बड़ी टहनी से माँ ने गुम्भारे के मुख्य द्वार पर प्रोळनुमा दरवाजा बनाया है। इसी कारण जाळ अजर-अमर एव पूजनीय है।

किनकी पुकार सुन कर माँ सशरीर अविलम्ब पहुची

जब माँ करणी खारोडा में विराज रही थीं तब अपने परम भक्त अनदा खाती की लाव (कुए मे उतरने की रस्सी) टूट गई थी। जैसे ही उसे लगा कि लाव टूट गई है उसके मुह से एक ही आवाज निकली—हे माँ करणी! माँ ने भक्त की पुकार खारोडा बैठे ही सुन ली और अविलम्ब कुए के पास हाजिर हो माँ ने स्वय घुम्बी (दो मुह वाला सर्प) का रूप धारण कर एक मुह से ऊपर की डोरी तथा दूसरे मुह से नीचे की डोरी पकडकर अनदा को कुए से माँ ने जिन्दा निकालकर उसकी माँ को सौंप दिया। इमसे पहले माँ करणी ने अनदा कि माँ को वचन दिया था कि जब कभी भी कष्ट-पीड़ा हो याद कर लेना। मैं स्वय हाजिर हो जाऊगी। दोहा—

आऊ में टूटी बरत, पैसारे पैढाँह।
अणदो खाती तारियो, माँ खारोडै बैठाँह।।

जैसी पुकार माँ ने अणदा की सुनी उसी प्रकार माँ का अन्नीय भक्त दशरथ मेघवाल, जो कि माँ की गाए चराता था उसकी सुनी माँ जब अपनी लाडेसर पोती सापू बाई सा के ससुराल गाव छोटडिया गये थे उस समय डाकू कालू पेथड और सुजामोहिल ने गायों को घेर लिया तथा मार काट करने लगे। उस समय माँ का सबसे प्रिय बैल मारा गया। तब दशरथ ने जोर-जोर से पुकार की हे माँ—आप कहाँ हो? दुष्टों ने हमें घेर लिया है। उसी क्षण माँ पुकार के साथ ही देशनोक उपस्थित हो दुष्टों का वध कर दशरथ को सभाला। इस दौरान दशरथ अतिम सास ले रहा था। माँ ने उसको रोता हुआ देख पूछा—अरे बेटा दशरथ, तू मौत से घबराकर रो रहा है। दशरथ ने कहा—नहीं माँ, मैं मौत से नहीं घबरा रहा हू। आज से मै आपकी गायों की सेवा नहीं कर पाऊगा इसलिए रो रहा हू। मै आज आपसे दूर हो जाऊगा। करूणामयी मा ने तुरत कहा—बेटा तू हमेशा मेरी आखों के सामने ही रहेगा। आजसे तू मेरा कोटवाल होगा। सुबह-शाम की आरती से मेरी जोत से जब तक तेरी जोत नहीं उतारेंगे तब तक मैं उनकी जोत स्वीकार नहीं करूगी। माँ की जय हो।

जब माँ करणी ने रगकवरी का ब्याह बीका के साथ निश्चित कर दिया था। उसी दौरान राव शेखाजी को डाका डालने के जुर्म में मुल्तान की कैद में डाल



दिया गया तब शेखाजी की पत्नी अपनी पुत्री रगकवरी को साथ लेकर माँ के पास आकर बोली—हे बाई, इस पुत्री के माँ-बाप सब-कुछ आप ही है। आज से यह लडकी आपकी है। जैसा आप कहगे हम वैसा ही करेंगे। आप शादी निश्चित समय पर करा दे। मगर लडकी का पिता मुल्तान जेल में है। उनके बगेर कन्यादान कौन करेगा। (जहा तक सभव हो कन्यादान लडकी का पिता ही करता है।) माँ ने कहा—आप निश्चित रह। शेखा समय पर पहुच जाएगा। माँ करणी ने स्वय चील (सावली) का रूप धारण कर द्रुत गति से मुल्तान हाजिर हो अपनी पीठ पर राव शेखाजी को बिठाकर कन्यादान के समय हाजिर कर दिया।

काढयो तुग्का कैद सू, शेखा री कर स्हाय।
सभळि वालो रूप सजि, पूगल दीध पुगाय।।

इस ढग मे माँ न जान कितने ही भक्तो की पुकार सुनकर अविलम्ब पहुची। माँ की लीला माँ ही जाने। माँ आज भी उतनी ही जल्दी पुकार से पहुचती है जितनी पहले पहुचती थी। मगर फर्क इतना है कि पुकार कौन कर रहे है? क्यू कर रहा है? यह देखना हमारा काम है।

बडेर का घर

करणी माँ जिन्होंने इस ससार रूपी जीवन मे एक साधारण मानव के रूप में अपनी माँ देवल की कोख से पिता मेहा के घर जन्म लिया तथा साठिका ग्रामवासी केलू के पुत्र देपाजी से साधारण रीति-रिवाज से विवाह कर अपना घर-ससार बसाया। भगवान कृष्ण की तरह गो-माता की सेवा को महत्त्व दिया। अपना सम्पूर्ण जीवन गो सेवा व जनसाधारण के कष्टो का निवारण करने व दुष्टों को दण्ड देना ही अपना ध्येय बना लिया। इसी कारण गो माता की रक्षार्थ उन्होने अपने ससुराल साठिका को त्याग दिया क्योंकि उनके ससुराल वासिया का कहना था कि आप की सैकडो गाया के यहा रहने से हमारी गायो के लिए घास व पीने के पानी की कमी आ जाएगी। काफी मनाने पर भी नहीं समझे तब माँ न वहा से निकलने का निर्णय ले लिया। निकलते समय माँ ने श्राप दिया था कि आज से आपक गाव में पीने का पानी कुए से ऐसा निकलेगा कि न तो तुम काम ले सकागे, ना ही तुम्हारे खेतों मे फसल होगी तथा न ही पशुओं क पीने योग्य होगा। कुछ लोगों के माफी मागने व माँ में श्रद्धा रखने वाला के सविनय निवेदन करने पर उन्होंने सिर्फ इतना कहा कि एक समय ऐसा आएगा कि आपका पीने योग्य पानी मिल पाएगा। 600 वर्ष बाद अभा साठिका की सीमा के करीब एक ट्यूब वेल खुदने पर पानी पीने योग्य निकल गया है। जिसे माँ का आशावाद मानते है। मगर माँ अपने परिवार के साथ ससुराल साठिका का त्याग कर देशनोक गाव आकर बस गई। इनके साथ ससुर का पूरा परिवार था। जिन्हान रहने क लिए तेमडाराय मन्दिर के पास अपना घर बनाया मगर माँ ने अपनी गाया सहित वर्तमान में नेहडीजी मन्दिर पर आकर अपनी कुटिया बनाई। क्योकि इस क्षेत्र म प्रचुर मात्रा मे घास था, इसीलिए माँ ने को गाया के लिए उस स्थान को उपयुक्त माना। माँ कई वर्षों तक इस स्थान पर रहीं। बाद मे माँ ने अपने श्री-हाथो से वर्तमान में जहा श्री करणी मन्दिर है, जहा माँ की मूर्ति लगी है वह गुम्भारा माँ ने स्वय बनाया। इस गुम्भारे मे माँ नियमित पूजा-अर्चना करती थी। माँ ने जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन किया। इसी कारण माँ ने अपने पति देपाजी के साथ अपनी छोटी बहिन गुलाब बाई की शादी करवाई जिनके चार पुत्र हुए। पून्ना, नग्गा, मिहा व लाखन तथा एक पुत्री रेडी बाई हुई। लडकी ने अल्प आयु पाई। मा के वचनानुसार इनको नाम करणीजी का मिला। देशनोक गाव मे आज भी पुत्रो के नाम से चार वास हैं। मा का इन पुत्रो व पुत्रवधुओं को आदेश था कि आप दिन भर अपने-अपने कार्यों से निवृत्त होकर मरे पास आ जाया करो। मेरी सेवा में चारों को बराबर का अधिकार है। सभी परिवार माँ के नियमित कार्यों में बराबर सहयाग दत आ रहे हैं। जब भी कोई मेहमान आता है ता उनकी सारी व्यवस्था माँ के समयानुसार हो जाती है। सायकाल क समय माँ द्वारा आवड माँ की आरती के बाद सभी परिवार अपने निवास स्थान पर पहुच जात। माँ अपन पूजा स्थान पर रहकर अपने चारों पुत्रों क परिवारों का अपनी देख-रख में उनको जीवन के मूल्यों का आकलन

समाज के कार्यों की जानकारी एव भागीदारी का बराबर अहसास कराती रहती थी ताकि परिवारों में आपस में वैमनम्य पैदा न हो। इसलिए माँ ने सभी को समान समझा। सामूहिक परिवार का आदश पाठ पढाकर उनको अपनी सेवा में (बराबर) सभी को भागीदार बनाया। पुत्रों ने भी माँ के निवास स्थान को 'बडेर का घर' का नाम देकर एक आदर्श घर बनाया। जहा उनकी प्रत्येक शुभ कार्यों में सामूहिक हिस्सेदारी हाती थी, सभी मिल-जुलकर एक साथ खुशिया मनाते। माँ से हर समस्या का समाधान करवाने एव माँ की आज्ञा-अनुमति प्राप्त कर प्रत्येक कार्य को करने को तत्पर हो जाते। तब से आज तक उसी परम्परा को माँ के चारों पुत्रों के परिवार पालना करते आ रहे हैं। प्रत्येक शुभ कार्य मे सभी परिवारों के सदस्य पहले माँ के चरण स्पश करते है, फिर अपने कार्यों की ओर अग्रसर होते हैं। अपने सभी कार्य माँ पर छोडकर स्वय आजाद हो जाते हैं, कहते हैं हमें पता नहीं, आप जानो। तात्पय यह है कि जो भी कार्य है आपका ही है। आप ही उस का समाधान हैं। हमारा काम था आपको बताना जो हमने बता दिया। वैसे आप स्वय हर कार्य को जानती है। इसी प्रकार मन्दिर के प्रत्येक कार्य में सिर्फ माँ का परिवार ही भागीदार होता है। ठीक उसी प्रकार जिस घर का एक वरिष्ठ सदस्य अपने परिवार के प्रत्येक कार्य में अपनी भागीदारी से सभी कार्यों की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेता है। ठीक वैसे ही माँ ने अपने पूरे परिवार की जिम्मेदारिया को अपने ऊपर ले रखा है। इसी कारण सभी देपावत परिवार हमेशा प्रत्येक जिम्मेदारी से स्वतत्र रहते है। बस एक ही शब्द का प्रयोग करते हैं कि 'सब माँ जाने।

करणीजी की जोत से उतारी जाती है दशरथ मेघवाल की जोत

श्रीकरणी मन्दिर में सभी धर्म, जाति व समुदायो के नर-नारी दर्शन करने आते है। समानता और साम्प्रदायिक सौहार्द को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। सभी लोग जै माताजी सम्बोधन करते है। दुल्हा-दुल्हन करणीमाता के पैदल जात देने आते हैं, जच्चा अपने बच्चे को करणी मन्दिर प्रागण में लिटाकर अपने काम-काज लगती है। यात्रा प्रस्थान से पूर्व नारियल चढ़ाकर अनुमति ली जाती है। लोगो की अगाध श्रद्धा और मान्यता आस्था क सूत्र में पिरोई गइ है। यहाँ करणीजी की गायों की रक्षार्थ काम आने वाले दशरथ मेघवाल, जिसने मरने की चिता न करते हुए सिर्फ इतना कहा कि मा मैं आपसे दूर हो रहा हू तब मा ने उसे कोटवाल का पद देकर कहा कि मरे पुत्र मेरी जोत से हर रोज तेरी भी जोत उतारेंगे, तू हमेशा मेरे सामने ही रहेगा। मा करणी ने जात-पात का भेदभाव मिटाकर धर्मनिरपेक्षता को महान् बताते हुए इस लाडले की सेवा को महान् बताया जिस कारण मन्दिर में उसकी प्रतिमा पूजी जाती है।

आगन्तुक पर्यटकों की सख्या को देखते हुए यहाँ पर पर्यटन विकास की विपुल सभावनाएँ हैं, पयटक विश्रामगृह, मन्दिर परिसर सौन्दर्यीकरण, स्वच्छ पर्यावरण, समुचित पार्किंग स्थल आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था मन्दिर ट्रस्ट के द्वारा बनी हुई है। मन्दिर निजी प्रन्यास यह भी चाहता है कि अगर जिला प्रशासन और राज्य सरकार के सहयोग से अधिकाधिक यात्री सुविधाएँ व्यापक पचार-प्रसार और योजनाबद्ध निर्माण कार्य जुटाने के सार्थक प्रयास हों तो मन्दिर क साथ-साथ कस्बे के विकास का भी मार्ग प्रशस्त होगा।

गौ-सेवा में माँ ने कहा कि सब देव हाजिर है

यह ससार आज भी गौ-माता की आशीष तले फलता आया है और फलता रहेगा। क्योंकि गौ-माता में पूरी सृष्टि समायी हुई है। सृष्टि रचयिता ब्रह्मा, सचालित करने वाले विष्णु और सहायता करने वाले शिव—तीनो ने गौ-माता को महान बताया है। गौ-माता की सेवा को सभी प्रकार की सेवा से श्रेष्ठ बताया है। देवताओ में सबके अग्रणी पूजनीय भगवान श्री गणेशजी ने गौ-माता और अपने माता-पिता की परिक्रमा को, सृष्टि की परिक्रमा लगाना बताकर गौ-माता में पूरी सृष्टि समायी है का एहसास कराया है। श्री गणेशजी ने गौ-माता और माता-पिता को धरा पर देवतुल्य एव श्रेष्ठ बताया है। गायों के खातिर ही भगवान कृष्ण ने अवतार लिया। गायों और धर्म की रक्षा के लिए गीता को उजागर



किया। गायो की सेवा और बचाव के लिए माँ करणी ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। माँ करणीजी बचपन से ही गायों की सेवा को श्रेष्ठ बताते हुए गायो की सेवा करने मे लग गये। आप तो अपने दहेज मे भी सिर्फ गाया को ही लेकर आये थे। इन गायो की खातिर ही अपना ससुराल त्याग दिया। गायो के लिए देशनोक पधारे क्योकि यहा चरागाह अधिक सुलभ और पानी खूब था। गायों की खातिर दुप्ट कान्हे का वध किया। गायो के लिए देशनोक मे 10,000 बीघा जमीन छोडी, जिसको ओरण (रक्षित वन) कहा जाता है। जिसका माँ का परिवार (देपावत) सुरक्षा और ध्यान रखते है। माँ ने स्वय गायो की सेवा-पूजा की है। गायो का दूध निकालना, बिलौना करना, दूध-दही, घी, छाछ इत्यादि का महत्त्व बताते हुए कहा कि इनके बगैर जीवन अधूरा है। शरीर मे सचारित सभी प्रकार की शक्तिया जिनमें इन सभी का होना आवश्यक है। इनके बगैर शरीर नाशवान है। माँ का बिलौना करने का साक्षात् प्रमाण है नेहडीजी मन्दिर की वो दर्शनीय, पूजनीय खेजडी वृक्ष जो आज भी सैकडों वर्षों से हरी-भरी है, जिसको माँ द्वारा एक छडी से रोपी गई थी। जिसके सहारे माँ ने नहडी बनाकर बिलौना किया था। माँ ने अपने परिवार और भक्तो को गौ-माता की सेवा के बगैर अपनी सेवा-प्रार्थना को अधूरा बताया है। माँ ने कहा कि जहा-जहा गौ की पूजा होगी वहा मै सदैव विराजमान रहूगी। गौ-माता की सेवा मे स्वय हाजिर होने की बात को सत्य बताते हुए हमें प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है। माँ का परम भक्त दशरथ मेघवाल, जिसने गायों की रक्षार्थ अपने प्राण त्याग दिये, उसको माँ ने कोटवाल का पद दे दिया। जिसकी आज भी दोनो समय जोत उतारी जाती है। गायों की रक्षार्थ मानु बाई ने माँ पुकार की तब दूसरे ही पल माँ हाजिर हो गई। एक बार जब एक साथ सैकडों गायों को काटने के लिए मुगलों ने इकट्ठा किया तब मकराना के पास इन्दीखा की देवी गिगाय माता ने सभी गायों को शेर बना दिया। सभी गाया को छाड़ना पड़ा। गायों की सेवा और पूजा जब-जब जहा-जहा होगी। वहा-वहा देवी हाजिर होगी, सहायता करेगी। हा यह बात अलग है कि पहले आजीविका का सबसे बडा धन यही था। उस समय घर में धान खेती से तथा दूध दही, घी इत्यादि छुटकर पूर्तिया गाय माता की कृपा स हो जाती थी। आज समय बदला गया है। काफी परिवारों में गौ-माता का पालन किया जाता है। मगर जो सक्षम नहीं वो जब तक दूध देती है तब तक वो रखते हैं, फिर उन्हे खुला छोड देते हैं। जो ठीक नहीं है। एसी गायों के लिए आज जगह-जगह लोगो द्वारा धमार्थ गो शालाओं का सचालन हो रहा है। जो कि सराहनीय कार्य है। उनकी मेहनत से कई गौ-भक्त लोग इनकी सहायतार्थ भरपूर सहयोग करते हैं। वो सेवा भी गौ-पालने के तुल्य है। माँ हमेशा हर गौ-भक्त की सहायता करती है। वो भक्त माँ को अति प्रिय है जो गौ-माता की सवार्थ अपना स्थिति अनुसार सेवा मे हाजिर रहता है।

गाया की महानता के बारे में मेरे शब्दों द्वारा माँ माँ को पणाम।

जिण गाया रे रग-रग में, घनश्याम रमै
जिण गाया री आत्मा में, माँ करणी रो नाम रमै
जिण गाया रै माय, सृष्टि रो वास हुवै
उण गाया खातिर की नीं करा,
भलै ही, अेडौ जीवन नाश हुवै।

विक्रम देपावत

जिन्हें माँ का सानिध्य मिला

जगत जननी माँ भगवती करणी ने ससार में जन्म लेकर दीन-दुखियों की सहाय, दुष्टों का सहार तथा गायों की सेवा कर अपना अवतार लेना सार्थक किया। उसी दौरान माँ की अति कृपा के कारण ही जिन्होंने माँ का सानिध्य प्राप्त कर अपना जीवन धन्य किया। उनके अनेकों नाम है। मगर कुछ विशेष हैं। जिनमें राव रिड़मल जिन पर माँ की अति कृपा रही है। उनको माँ ने जाङ्गल प्रदेश का मालिक बना दिया। रिड़मल की अन्तिम इच्छा थी कि मेरे पास आप की कृपा से दस गांव हो जाए तो मैं आपको कुछ जगह भेंट करना चाहता हूं। हम समझ सकते हैं जिनको सब कुछ माँ देने वाली है। — माँ क्या मागगी। मगर माँ ने जाङ्गलू प्रदेश — ...

कान्हा का वध कर राव रिडमल का राज तिलक करके राजा घोषित कर दिया। राव रिडमल का मन रखने के लिए माँ ने उनके द्वारा देशनोक की जमीन का पट्टा भेंट स्वरूप स्वीकार किया। इसी कडी मे राव बीका, जिनको पुत्र के समान माना। उसको राजा बनाया। उसके चारो तरफ से सुरक्षित किया। बीका के लिए माँ ने शेखाजी, से जो कि माँ का धर्मभाई था। उनसे लाडेसर रग कवरी का हाथ माँगा। सकुशल राव बीका और रगकवरी का ब्याह करवाया उसके बाद बीका ने बच्चो का नामकरण भी देशनोक मे करवाया। माँ ने कभी भी पद, ऊच-नीच, छुआछुत इत्यादि को महत्व नहीं दिया। इसी कारण एक तरफ राजपुतों को अपना सानिध्य दिया। वहीं दशरथ मेघवाल, सारग विश्नोई, बन्ना खाती अणदा खाती आदि पर पूरा स्नेह उडेल दिया। तभी तो माँ की सेवा मे इनके द्वारा की गई सेवा सर्वोपरी है। माँ दशरथ मेघवाल की सेवा से इतनी प्रभावित हुइ थी कि गायों के सभी कार्य दशरथ को सौंपे रखे थे। जो गाये माँ को सबसे अधिक प्रिय थी उतनी ही गायों को दशरथ की सेवा प्रिय थी। दशरथ आखरी दम तक गायों की सेवा में लगा रहा। उसने गायों की खातिर ही अपने प्राण त्याग दिये। उसकी सेवा से प्रसन्न हो माँ ने उसे अपनी नजरों के सामने रखते हुए कोटवाल का पद दिया। जहा माँ की सतान द्वारा दोनो समय जात उतारी जाती है। धन्य है दशरथ की सेवा। ठीक ऐसी ही सेवा सारग विश्नोई ने की जो माँ के रथ (बैलगाडी) की देख रेख करता था चलाता था। माँ के प्रत्येक छोटे-मोटे कार्य करने के लिए वह तत्पर था। माँ को उनकी सेवा से प्रसन्नता होती थी। क्योकि वह विश्नोई था जिसका अर्थ होता है बीस और नौ (उन्तीस) नियम कायदों का पालन करने वाला इन नियमों को पालन करने पर आदमी का जीवन सुधर जाता है। इन नियमों म जीवन का पूरा सार है। यह सारग विश्नोई ही था जिसको माँ ने अपने पुत्रों के समान पुत्र समझा तभी तो माँ ने अपना अतिम स्नान उसके हाथों से किया। हालाकि बडा पुत्र पुनोजी साथ मे थे। माँ को पता था कि मेरे अतिम क्षणों में मेरा पुत्र यह सहन नहीं कर पाएगा कि अब माँ से बिछडना है इसी कारण माँ ने अपने पुत्र को दूर भेज दिया। धन्य है वो भक्त जिनको माँ का सानिध्य मिला।

भाग्यशाली है वो जिन पर माँ की कृपा रही।

जिनको माँ का सान्निध्य मिला वो भाग शाली थे ही मगर जिन पर माँ की कृपा रही वो भी धन्य हो गये। जिनमे महाराजा गगासिहजी जिनके साथ माँ पल-पल रही। गगासिहजी ऐसा कोई भी कार्य माँ का स्मरण किये वगैर नही करते थे। चाहे यात्रा हो ,चाहे ऐतिहासिक फैसले हो, शुभ कार्य हो या फिर किसी दुश्मन का नाश करना हो। सभी कार्यों में माँ का दर्शन कर जब तक माँ का आर्शीवाद स्वरूप सावली, सफेद काबा इत्यादि दर्शन के रूप में आशीर्वाद नही मिलता तब तक आप माँ का दरबार नहीं छोडते थे। जब तक माँ की कृपा न हो, अनुमति न हो तब तक आप छोटा सा कार्य भी नही कर सकते। अब आप सोच सकते है कि हीरजी सुथार (बेलासर निवासी) पर माँ की कितनी कृपा रही होगी। जिन पर माँ ने अपना मदिर बनाने की कृपा की। आज हम जिस मदिर की सुन्दरता स्थापत्य कला को देखकर आश्चर्यचकित होते है। उसको एक देहाती गाव के अनपढ कारीगर ने बनाया। ऐसा दुर्लभ कार्य देव्य शक्ति के बिना होना असभव था। आज माँ का मदिर दुनिया भर मे अपनी स्थापत्य कला का श्रेष्ठ नमुना है। कारीगर हीरजी के साथ इस मदिर निर्माण के लिए जिन्होने धन दिया वो सेठ चाद मल ढढ्ढा और जिनकी बराबर उपस्थिति रही महाराजा गगासिह जी की सेवाए भी सर्वोपरि है। हमें मालूम है ऐसी किसी मे शक्ति नहीं और न ही सोच है कि माँ के बारे में कुछ भी लिख सको। माँ का गुणगान माँ की महर के बगैर नहीं कर सकते। माँ ने अपने बारे मे लिखने के लिए कुछ हद तक आज से करीब 200 सौ वप पूर्व देशनोक के ही माँ के लाडले पोत भोमजी बिठु (देपावत) को जिन्होंने माँ के बारे मे डिगल भाषा मे माँ के जीवन की कुछ महत्वपूर्ण को घटनाओ को, पहलुओं का सरस वर्णन किया है। हालाकि उनसे पहले भी कई लोगों ने लिखा होगा मगर उनका लिखित साक्ष्य नहीं है। माँ की आशीष के वगैर



कोई भी माँ का नाम तक नही ले सकते। वो कहते है ना कि 'हुक्म के वगैर कुछ नहीं हो सकता।' ओर जब हुक्म हो तो कुछ भी हो सकता है। ठीक ऐसा ही हुक्म देशनोक के अम्बादानजी विठु पर हुआ। जिन्होने माँ करणी की इष्ट देवी आवडजी महाराज की चिरजा 'ओम जय गिरवर राया' तथा माॅ करणी की भोग आरती 'सभी मिल शक्तिया' जैसी अमर चिरजाओं की रचना की। इनके अभाव म आज आवडजी की आरती तथा माँ को भोग लगाना अधूरा मानते है। अम्बादान जी ने कई चिरजाओ की रचना की मगर इन चिरजाओं को आज मदिर के साथ सभी स्थानो पर माॅ के सामने गाया जाता है। हालाकि समय परिवर्तन होता जा रहा है। मगर माँ की इन दो चिरजाओ का गान यथावत है। हाल ही मे माँ करणी की आरती मे सोहनदान जी रातडिया निवासी की चिरजाए मदिर मे नियमित रूप से गाई जाती है। जिसमे माँ की लीलाओ का गुणगान है। जय हो माँ भगवती तेरी जय हो। जय हो। जय हो।

दर्शन कैसे करे?

माॅ के दर्शन का सर्वोत्तम उपाय है—दर्शन के लिये व्याकुल होना। जैसा बच्चा जब किसी वस्तु म न भूलकर एकमात्र माँ के लिये व्याकुल होकर रोने लगता है, केवल माँ-माँ पुकारता हो और किसी बात को सुनना ही नहीं चाहता, तब माँ हजार जरूरी कामो को छोडकर उसके पास दौडी आती है और उसके आसू पोछकर उसे तुरन्त अपनी गोद मे छिपाकर मुह चूमने लगती है। अतएव उत्कण्ठित हृदय से व्याकुल होकर रोओ—अपने करुणक्रन्दन से करुणामयी माँ के हृदय को हिला दो—पिघला दो। ऊची पुकार से आकाश को गुजा दो। भगवती माँ तुम्हें जरूर दर्शन देंगी। करुणापूर्ण नामकीर्तन माँ को बुलाने का परम साध' है। समस्त मन्त्रों में यह नाम मन्त्र मन्त्रराज है और इसमें कोई विधिनिषेध नहीं है कोई भय नहीं है। हम—सरीखे बच्चों के लिये तो यही माँ को बाध रखने की मजबूत और कोमल रेशम की डोरी है।

दर्शन अवश्य करे

अगर आपके पास समय है, माँ के दर्शनों का लाभ लेना चाहते है, तब आप कुछ विशेष दर्शन हैं जिनको करने से मन को सुकून मिलता है और स्वास्थ्य मे लाभ मिलता है। जरूरी नहीं कि आप सभी दर्शन करें। तब माँ ज्यादा खुश होंगी। माँ तो हर हाल में अतरात्मा मे की गई पुकार और प्राथना से ही खुश हो जाती है। मगर इस बात को भी हम भलाभाति जानते हैं कि जन्म देने वाली माँ से भी अगर हम साल म एक बार नहीं मिलते हैं तब वह भी नाराज हो जाती है। कवल नाराज ही होती है बुरा नहीं चाहती है। ठीक उसी प्रकार अगर हम माँ के दर्शन कर लेते हैं, माँ खुश हो जाती है। हम भी दर्शन पाकर धन्य हो जाते हैं। अगर समय हो ता निम्न दशन अवश्य करे। चाहे एक ही दर्शन करें या सभी। माँ हर रूप में हर जगह हाजिर है।

1 माॅ करणी के दर्शन

अगर आप देशनोक आए, देशनोक के आसपास आए हा तब माँ करणी के दर्शन अवश्य कर। माँ करणी की परिक्रमा के बाद अगर समय है तब निम्न दर्शन अवश्य करे।

2 नेहडी के दशन

यह वह स्थान है जहा माँ करणी देशनाक में पधार थे तब इसी स्थान पर आकर रुके इसी स्थान पर माँ ने गायों के चारे एव पानी की व्यवस्था की। माँ ने जिस खेजडी की लकडी के सहारे विलौना (नेहड़ा बनाकर) किया। वह छडी आज भी हरी खेजड़ी क रूप में दर्शनार्थ कल्पवृक्ष की तरह खड़ी है। यहा पर ही दुष्ट कान्द का वध किया। यह स्थान देशनोक श्री करणी मन्दिर स 15 किमी पश्चिम की तरफ स्थित है।

3 करण्ड दर्शन

देशनोक श्री करणी मदिर मे 1 किलोमीटर दूर [illegible] के मध्य में स्थित श्री तमड़ाराय माताजी का मन्दिर है। जहा करण्ड (पूजा की पेटी) क दर्शन होते हैं। इस [illegible]

में माँ करणी अपने इष्ट देवी आवड़जी की मूर्ति एव पूजा-पाठ की सामग्री रखते थे। यह वही करण्ड है जिसको दुष्ट कान्हा पूर्ण ताकत के साथ भी हिला नहीं पाया, उठना तो दूर की बात है। इसमें शक्ति का शत अपार है। माँ की जय हो।

4 मोखा तेमडाराय

जिसे छोटा तेमडाराय भी कहा जाता है। यह आवडमाताजी का मदिर है। इसकी मानता है कि अगर आप जैसलमेर बडे तेमडाराय के दर्शन करने नही जाते है तब इस मदिर के दर्शन करने एव परिक्रमा लगाने से जैसलमेर की परिक्रमा मान ली जाती है। ये देशनोक से 41 किमी दूरी पर है।

5 गढियाला

यह वह पावन स्थान है जहा माँ करणी जगत की जननी ने अपना शरीर ज्योति विलीन किया था। इस कारण यह शक्ति स्थल माना जाता है। वो स्थान तो पावन धाम हो गया। ऐसे दशनो को पाकर हम धन्य हो जाते हैं। ये स्थान देशनोक से 125 किलोमीटर (देशनोक-बीकानेर-कोलायत-दयातरा-गढियाला धाम) है अगर आप देशनोक से पहले मोखा दर्शन करते है तब यह 105 किमी पडता है। (देशनोक-माखा-कोलायत-दियातरा-गढियाला धाम)

6 साठिका

यह स्थान करणी माँ का ससुराल है। जहा माँ करणीजी के तोरण की पूजा होती है। माँ करणीजी ने जब से अपने ससुराल को त्याग दिया है तब से माँ के पुत्रो एव माँ को मानने वाले भक्तों की वहा जाने की इच्छा ही नहीं होती है। वहा भी बडा मदिर बन रहा है। यह स्थान देशनोक से 71 किमी पडता है।

7 सुवाप

यह स्थान माँ करणी की जन्म भूमि है। जहा जगत की जननी माँ भगवती ने स्वय एक कन्या के रूप में जन्म लिया। जहा माँ के द्वारा बनाया गया माँ आवडजी का मदिर, जिम जाल के सहारे माँ ने झुले झुले, जहा गव शेखाजी की फौज को खाना खिलाया, जन्म स्थली दर्शन, माँ के चारभुजा दर्शन इत्यादि है। यह स्थान देशनोक से 95 किमी पडता है।

उपरोक्त सभी दर्शन माँ करणीजी के दर्शन है। इनके अलावा आप माँ के इष्ट देवी आवडजी के दर्शन करना चाहते हैं तब आपको एक विशेष माह होता है—भादवा, उसमें समय निकालना होगा। इस माह की शुक्ल पक्ष की सप्तमी के दिन माँ तेमडाराय के दशनो को बडा माना जाता है। इस दौरान म देशनाक स तकरीबन 25-30 बस एव 20-30 छोटे माधनों से देशनोक से दशनार्थी दशनो को जाते है। इस यात्रा मे देशनोक से प्रारम्भ कर वापिस देशनोक पहुचने मे तीन दिन दो रात का समय लगता है तथा 1100 किलोमीटर की यात्रा तय होती है। जिसमें माँ करणीजी की जोत के दर्शन के साथ ही पहला दर्शन मोखा तेमडाराय दर्शन, गढियाला धाम दर्शन श्री काले डूगरराय माता श्री तेमडाराय माता, श्री देगराय माता, श्री घटियाली माता, श्री तनोटराय माता, श्री भादरियाराय माता, श्री आशापुरा माता, श्री करणी माता सुवाप इत्यादि दशनो के साथ ही यात्रा वापिस देशनोक पहुचकर माँ करणी के दशनों के साथ सम्पन्न होती।

देशनोक मंदिर से दूरिया

देशनोक से नेहडीजी	1 5 किलोमीटर
देशनोक से करण्ड दर्शन	1 0 किलोमीटर
देशनोक से सुवाप	95 किलोमीटर
देशनोक से साठिका	71 किलोमीटर
देशनोक से गढियाला	125 किलोमीटर
देशनोक से मोखा	41 किलोमीटर
देशनोक से काले डूगरराय	311 किलोमीटर
दशनोक से भादरियाजी	281 किलोमीटर
दशनोक से देगराय	301 किलोमीटर
देशनोक से तेमडाराय	351 किलोमीटर
देशनोक से घटियालीजी	467 किलोमीटर
देशनोक से तनोटराय	471 किलोमीटर



देशनोक मदिर से ओरण परिक्रमा—35 किलोमीटर (10000 बीघा क्षेत्र)

नोट—तेमडाराय माता के सभी दर्शन जैसलमेर के इर्दगिर्द है इस कारण यात्रा के दौरान कई दर्शनो के लिए बार-बार जैसलमेर आना-जाना पडता है।

जैसलमेर से दूरिया

जैसलमेर से तेमडाराय	31 किलोमीटर
जैसलमेर से भादरियाजी	81 किलोमीटर
जैसलमेर से देगराय	55 किलोमीटर
जैसलमेर से काले डूगरराय	27 किलोमीटर
जैसलमेर से घटियालीजी	115 किलोमीटर
घटियाली से तनोटराय	5 किलोमीटर
देशनोक से जैसलमेर	308 किलोमीटर

नोट—सभी दर्शनो की दूरिया लगभग दर्शायी गई है।

तेमडाराय यात्रा-वर्णन—'महिमा महीने भादवे की'

जब भादवा महीना जैसे-जैमे नजदीक आता है वैसे-वैसे भक्तो और देपावता मे जैसलमेर तेमडाराय दर्शन करने की लालसा बढती जाती है। भादवा महीने की शुक्ल पक्ष की सप्तमी तेमडाराय की बडी होती है। इस दर्शन के लिए देशनोक से 10 दिन पूर्व ही पुरुप-महिलाए 5-10 ग्रुप मे तकरीबन 1000-1500 यात्री तेमडाराय के दर्शन के लिए करणीमाता के जै-कारे के साथ पैदल यात्रा प्रारम्भ कर देते है। सभी पैदल यात्री 350 किलोमीटर की दूरी शुक्ल पक्ष की पचमी तक तय कर लेते हैं। फिर मप्तमी तक वहा रुक जाते है। इधर देशनोक मे वसों एव निजी गाडियों से यात्रा करने वाले दर्शनार्थियों के लिए गाड़िया बुक होनी प्रारम्भ हो जाती हैं। गत वर्प की याना में देशनोक से 28 वसें तथा 35 छाटी गाडिया तमड़ाराय दर्शन को गई थीं। जिनमें देशनोक के दर्शनार्थियों के साथ वो भक्त भी थे जिन्होंने फोन म देशनोक से माँ करणी के दर्शन करने के बाद इन बसों में बुकिंग करवाकर यात्रा प्रारम्भ की। इन बसों में कम-से-कम किराया लकर 1100 किलोमीटर की दूरी तय करवाते हैं। इम यात्रा के दौरान आपको खाने-पीने की सुविधा जगह जगह भक्तों द्वारा दी जाती है। यह यात्रा शुक्ल पक्ष की पष्ठी के दिन सुबह माँ की मगला की आरती के बाद तेमडाराय और माँ करणी के जै कारे के साथ देशनोक से रवाना होकर सीधी छोटे तेमडाराय गाव माखा दर्शन करने के बाद गढियाला दर्शन करते हैं। जहा पर भोजन-प्रसादी ली जाती है। अधिकतर वहा भोजन की व्यवस्था हो जाती है, फिर भी अपने साथ एक समय का भोजन लेना चाहिए। गढियाला दर्शन के बाद मा काली डूगरराय के दर्शन करते हुए शाम को आरता के समय जैसलमेर पहुचते है। वहा पर पूरी रात मा आवडजी का रातीजोगा लगता है। पूरी रात विरदाए गायी जाती हैं। जिससे पूरा भाखर गुजायमान होता है। सवेरे मभी लोग 4 बजे नहा-धोकर तैयार हो जात हैं।

नये वस्त्रो को पहनकर माँ की जोत के दर्शन कर अपने आप को धन्य समझते हैं। (तेमडाराम यात्रा से पहल घर से यह भलीभाति सोच रवाना होना चाहिए कि जब तक माँ तमडाराय के दर्शन न करें तब तक पूरे रास्ते किसी अन्य जाति से बालना खाना पीना कहीं रुकना तक मना है। क्याकि हर जगह आपका शुद्धता नहीं मिलती जितनी शुद्धता भाखर पर होनी चाहिए।) सवा माँ के दर्शनों के बाद पूरे यात्रियों क लिए बद्रीनगना देपावत के परिवार की तरफ से नि शुल्क माँ क प्रसाद क साथ भोजन की व्यवस्था तमड़ाराय भाखर, तनोट माता मन्दिर तथा भादरिया राय माता मन्दिरों क स्थानों पर करते हैं। यह सौभाग्य तो भाग्यशाली लोगों को [illegible] मिलता है। यह प्रसाद ग्रहण करने के बाद [illegible] देगराय माता के दर्शन करने जाते हैं। [illegible] ही भव्य मन्दिर है। उनके दर्शनों के बाद [illegible] अविलम्ब घण्टियाली माता के दर्शन करते हुए [illegible] आरती से पूर्व तनोट माता के दरबार में हाजिर [illegible] हैं। तनोट माँ पूर्णतया फौजियों की [illegible] पूजी जाती है। सेवा-पूजा आरती [illegible] की माँ की सेवा फौजी ही करते हैं। मन्दिर [illegible] मे लेकर भक्तों की [illegible] तक [illegible]

तन-मन-धन, तीनों न्योछावर करते है। माँ भी इनको अपने लाडले पुत्र ही मानती है।

सन् 1965 की लडाई में जब पाकिस्तान की फौज अपने 1000 सैनिकों के साथ घण्टियाळी की माता तक अन्दर आई और धीरे-धीरे कब्जा करती हुई तनोट मन्दिर को अपनी गिरफ्त में लेना लगभग सभव सा कर लिया था। मगर माँ को मजूर नहीं था, ऐसे नापाक लोगों की शक्ल तक देखना। इसलिए पाकिस्तानी सेना द्वारा दागे गये विशाल बमों के गोले माँ को फूलों की वर्षा की तरह लगे। धमाकों के बीच अपने 25 सैनिक बेटों को ऐसे शेर बनाये कि पूरा पाकिस्तान दहल गया। आज तक वो बम मन्दिर में सुरक्षित पडे है। सब पर माँ की कृपा और मेहर आज तक बरकरार है। माँ पल-पल हाजिर हैं। तनोटराय की जय हो। सैनिक बेटों द्वारा माँ की सेवा-पूजा की आरती के दर्शन देखने लायक होते हैं। माँ की आरती के दर्शन देखने के बाद अपने-अपने साधनों से सभी भक्त सीधे भादरिया राय माता के मन्दिर देर-रात तक पहुच जाते है। कुछ अपनी सुविधानुसार जैसलमेर रुक जाते है। सवेरे भादरिया राय माता क दर्शन कर भोजन ग्रहण करके बाद में पोकरण के पास आशापुरा माता क दर्शन करते है। इन दशनों के बाद अगर कर सको यात्रा का हुक्म हो तो बाबा रामदेवजी के दर्शन कर सकते है। इस दिन अष्टमी होती है। इस कारण भीड भयकर होती है। अन्यथा बाहर मे ध्वजा के दर्शन कर धरती को प्रणाम करते हुए बाबा को सभी आत्मिक नमन् कर आगे निकलते है। बाबे के जयकारे के साथ सुवाप गाव की ओर बढते है। इस तीन दिवसीय यात्रा का अन्तिम दर्शन सुवाप मे श्रीकरणी माता का करते है। सभी दर्शनार्थी साय 5 15 बजे तक सुवाप पहुच जाते हैं। सुवाप मे माँ की जन्म स्थली के साथ-साथ माँ क चार भुजा के रूप का दशन, माँ द्वारा निर्मित अपनी इष्ट देवी आवड माता के मन्दिर का दर्शन राव शेखा की फौज को जिस जाल पेड के नीचे खाना खिलाया, उस जाल के दर्शन, (यह वही जाल है जिस पर माँ ने झूला भी झूला था) इन सभी के दर्शना से मन फूला नहीं समाता है। बडे भाग्यशाली होते हैं वो लोग जिनको माँ की जन्म भूमि के इन दर्शनों का लाभ मिलता है। साय को रिधू बाई की आरती स्थानीय परिवार के बारीदारजी करते हैं। इस समय यह दृश्य प्रयाग के त्रिवेणी सगम से कम नहीं होता। जहा माँ करणी के पीहर की सतान, माँ करणी की सतान तथा माँ करणी के भक्त गण—तीनों परिवारों की एक साथ माँ करणी की चिरजाओं की गूज तीनों नदियों के प्रवाहों की गूज से कम नहीं है, इनके स्वरों से गुजायमान माहौल। इन दर्शनो के बाद काइ भी यह माहौल छोडना नहीं चाहता है मगर फिर भी अपने कार्यों तथा कर्मस्थली की ओर निकलना पडता है। मगर इसी आशा और विश्वास के साथ कि अगले वष फिर माँ हमें जल्दी बुलाना। इसी के साथ माँ करणी, रिधु माँ के जै-कारे करते हुए सभी यात्री देशनोक पहुचते हैं। यहा से कुछ यात्री अपने घर-परिवारों मे निकल सकते है मगर अधिकतर देशनोक ही पहुचते है। इसी विचारधारा के साथ कि माँ के दर्शन करने के बाद जाएगे। सवेरे माँ की जोत के दर्शन के बाद सपन्न होती है तीन दिवसीय यात्रा। श्री हिंगलाय माता की जय, श्री आवडमाता की जय, श्री करणी माता की जय, सच्चे दरबार की जय भैरवनाथ की जय हो।

खास-खास भेट—

- बीकानेर के शासन महाराजा डूगरसिह जी जब भुण ब्याह कर जात देने के लिए माँ करणी के दशनार्थ देशनोक पधारे तो उन्होने उस अवसर पर कुछ दिरोब भेंट चढाई थी। जो निम्न है—

1 श्रीकरणी की मूर्ति के ऊपर लगा हुआ तोरण

2 सोने का कटघरा (मूर्ति के आगे दोने ओर बना है)

3 सोने का छत्र (मूर्ति के ऊपर लगा हुआ है सबसे बडा छल है)

4 चन्द्रहार (डूगरसिहजी की महारानी जाडेची जी ने भेट किया।)

- बीकानेर महाराजा स्वरूप सिहजी ने सन् 1909 में आसेज सुद 13 देशनोक पधार कर जात दीनी और सोने के किवाड भेंट किऐ।



• बीकानेर के महाराजा डूगरसिंहजी ने वि स 1933 को सोने के किवाड़ की जोडी चढाई।

श्री करणीजी रे मदिर किवाड़ जाडी 1 हेम री कीमत 3 घर 1611। री माल मसालो सुदी स्वस्ति श्री महाराजा 1008 श्री डूगरसिंह जी बहादुर चढाई 1833 री वैशाख वदी 13 (श्री करणीसिंह किवाड पर सिह द्वार है।)

बीकानेर महाराजा सूरतसिंह जी के शासन म देपालसर के किले को ध्वस्त कर दिया गया तथा उसकी किवाड की जोती देशनोक श्रीकरणी मदिर में भेज दी गई।

• गुम्बारे के सामने चादी की किवाड जोडी—श्री करणी माता जी रे जोडी चढाई गोलछा लालचद परताप चद छगनलाल वालचद सन् 1854 मि सावण वदी 12 (मिवाड पर लिखा हुआ है)

पखासाल मे उत्तर दिशा के दरवाजे की चादी के किवाड की जोडी—स्वस्तिम श्री जनरल हिळ हाइनैस श्री महाराजधिराज राज राजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि महाराज श्री गगासिंह बहादुर महाराज बीकानेर जी0सी एस आइ, सी सी आई ई , जी सी सी ओ , जी सी ई, के सी बी , ए डी सी , एल एल डी ने निज कोश से रु 182611/-। लगाकर यह चादी के किवाड की जोडी जोगमाता श्री करणीजी के मदिर देशनोक म चढाई। सवत् 1888 मिति अश्विन शुक्ल 10 सोरवार (किवाड पर लिखा हुआ है।)

• पखासाल के दक्षिण दिशा के दरवाजे की चादी क किवाड की जोडी। यह जोडी श्री करणीजी रै मेह करी आसोज सुदी 9 स 1880 पुरणचद परताप चन्द सुगनचद हडमानमल हुलासमल राधाकिशन मगलमल भूरा देशनोक वाला व मगराम बेगाराम मदनलाल खाती चूरू वाला।

(किवाड पर लिखा हुआ है।)

एक सोने के किवाड की जोडी 2 वर्ष पूर्व कुदनमल सानी ने भेंट की जिसको माँ की सेवा में 2 दिन तक रखकर खजाने में रख दिया गया।

माँ की निज मूर्ति के शीश पर एक स्वर्ण छत्र हीरों से जड़ित कुदनमल सानी स भेंट किया था।

श्री करणी मदिर की पखासाल म गुफा के प्रवश द्वार के बाहर चादी का कार्य करवाकर माँ को भेंट किया कुन्दनमल सोनी ने। इन कार्यों क साथ कई छोटे-मोटे छत्र, थाल, बाजाट, नेहडजी मदिर के चादी के दरवाजे इत्यादि भेट किए।

• श्री करणी मदिर के मुख्य प्रवेशद्वार (सिहद्वार) के दरवाजे पर चादी की विशाल किवाड की जोडी 2 वर्ष पूर्व सतोपपुरा निवासी कल्याणसिहजी कविया ने माँ के चरणो मे सादर भेंट किए है।

श्री करनीमाता, देशनोक

श्री—श्री शकर अर्द्धागिनी, जग-जननी जनहेत।
क—करनल जग म अवतर्या, भक्ता ने सुख देत।।
र—रजवाडा थरपण अठै, काटण जन री क्लेश।
नी—नीरस भौम सरस करण पठवी आप महेश।।
मा—माता आय'र अवतर्या मेहे री सूवाप।
ता—तारण कुल देपेतणो, साठीके आ आप।।
दे—देशाणों दीपत भयो, करणी रो स्थान।
श—शरणागत बीका भयो, बीकाणो ले थान।।
नो—नोबत बाजे द्वार पर, देशाणें दरबार।
क—कष्ट मिटे कारज सरे 'लालू' ताबेदार।।

एक भक्त द्वारा किये गये शुभ कार्य

डॉ गुलाबसिहजी ने कई शुभ कार्यों की शुरुआत की जिनम श्री करणीजी महाराज की सुवाप जन्मस्थली में जयन्ती हर वर्ष मनाना जयपुर से देशनोक 23 यात्रा पैदल पूरी की ओरण की परिक्रमा हर महीने शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी का प्रारम्भ कर अब तक 201 परिक्रमा पूर्ण की ओरण की प्रथम शुरुआत कर नाक दण्डवत् परिक्रमा एक महीने में पूरी की, खुड़द में श्री करणी इन्द्र राजकीय प्राथमिक विद्यालय बनाकर सरकार को सुपुर्द

किया, सुवाप में श्री करणी मन्दिर का पूर्ण नवनिर्माण कराकर शीश महल बनाकर आधुनिकीकरण का रग दिया, माँ की सेवा म चिरजाओ, आलेखो, चालीसा से काफी साहित्य सजन किया है। इनकी सेवा को नमन।

ध्यान देने योग्य बातें

- मन्दिर प्रात 4 00 बजे से रात 10 00 बजे तक खुला रहता है। मुख्य आरती का समय गर्मियों म प्रात 4 15 बजे तथा साय 7 15 बजे। सर्दियों म प्रात 5 00 बजे तथा साय 6 25 बजे।
- शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी के दिन विशेष पूजा (यह मूर्ति स्थापना दिवस है)।
- आसोज व चैत्र मास में करणीमाता का मेला भरता है।
- दर्शनार्थियों को ठहरने, खाने-पीने की अति सुन्दर व सुव्यवस्था मन्दिर परिसर के अन्दर ही मिल जाती है।
- देशनोक पहुँचने के लिए हर समय आवागमन के साधन मिल जाते है।
- श्री करणीमाता का मेला आसोज मास की नवरात्रि स्थापना से नवमी तक लगता है जिसमें कई सास्कृतिक कार्यक्रम, भक्ति सगीत सध्या तथा विराट् कवि सम्मेलन के आयोजन होते है।
- आसोज सुदी सातम को देशनोक मे श्री करणीजी के जन्मदिन को जयती के रूप में बडी धूम-धाम से मनाया जाता है।

□

प्रार्थना

जय जय भवानी अम्बिके! करनी तुम्हारी शरण हम।
बहुत सोये गाढ निद्रा (अब) चाहते जागरण हम
स्वातत्र्य की तू महासागर तेरे ही हों निर्झरण हम।। जय
क्षात्रबल का उद्धरण माँ! तूने किया अनुसरण हम
परमार्थ में बलिदान अपना कर सिखादें मरण हम।। जय
सतान सच्चे अभय हो तेरे ही तारण-तरण हम,
सामर्थ्य दो माँ! कर सकें यह सिद्ध चारण वरण हम।। जय
वाहन तुम्हारा 'केहरी वर मागता अशरण शरण
आ असुर मर्दिनी चडिके! भूले न तेरे चरण हम।। जय

—ठाकुर केसरी सिंह, बारहठ



आद्याशक्ति श्री हिंगळाज दर्शन



श्री हिंगळाजमाता, ब्लूचिस्तान (पाकिस्तान)



सिरकटा गणेशजी दर्शन



माई के महल

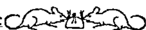


मोती समो न उजलो चन्दन समो न काठ
करणी समो न देवता गीता समो न पाठ

JAI CHAND LAL MAROTI

23, Rupchand Roy Street (3rd Floor) KOLKATA 700007
Ph 033 22690324 32215599 Mob 09831135045

ऐतिहासिक खास बातें



ऐतिहासिक खास बातें

श्री गणेशाय नम

अभिप्सितार्थ सिद्धार्थो पूजितोय सुरासरै ।
सर्व विघ्नछिदते स्मै श्री गणाधिपतये नम ।।

महाराज श्री 108 सूरतसिहजी रे राज

मूहूर्तेकृतो आनन्द महावत फरस पाषाण की बणाई चढाई।

सवत 1868 शाके 1733 प्रवर्तमाने मासोत्तम मासे भाद्र पद शुक्ल पञ्चाया तिथौ शनिवासरे मोहवत प्रतिष्ठापितम्।

मुहता राजरूपजी तत पुत्र अनोपचन्द मोह्बत प्रतिष्ठतम

सुभमवटु वचनात् श्री राव जालु जाती

यह लिखा-पढी गर्भ गुफा के ऊपर लिखा है जहा से आप सिन्दूर की बिन्दिका लेते हैं।

गर्भग्रह स्वर्ण किवाड जोडी लेख

रु 6816 111/11 महाराजा डूगरसिह रु 1933 मि वैशाख बदी 13

'श्री करणीजी रे मन्दिर किवाड जोडी 1 हेम री कीमत 3 घर 16।।। री माल मसालो सुदी स्वस्ति श्री महाराजा 1008 श्री डूगरसिहजी बहादुर चढाई 1933 री *वैशाख* बदी 13'

श्री करणीजी ने बीकाजी से कहा कि बीका अठे थारों प्रताप जोधे सू सवाई बाजी हुई अरूघणा ग्रासिया थारा पायनामी हुसी '

राणे रायमल जी राव जी लूणकरण जी ने नारेल बनायो तिण सू स 1570 माघ बाद 3 जान कर फागण बाद 3 से साहे पर चितौड पधारिया। श्री करणीजी रौ दरसण कर जान री अर्ज करी। तद श्री करणीजी पोता चार मिलिया सागै—सावळ, ईसर, डूगर कानड

श्री करणी की मूर्ति जिण बखत अधे कारीगर घडी उण बखत उण री उम्र 80 वर्ष थी।

पीछै रावळ जैतसी देशनोक पूजा मेली। तोरण रूप रै अज छै।

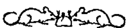
श्री करणीजी रो दरसण कर गुभारे मे बैठा वीनती करै है। तठै हाथ रौ दरसण हुवो अरू वचन हुवौ कै जैतसी राती बासी दे फतै हुसी। तद रावजी ने बल हुवौ जो इम्या तो दीनी पण कबाण तीर जुत मूरत आगै मेली सो पण चढी हजारो चारणी, चक्र वाय रही है।

चिरजा

भिडती खुरसाण जितै दल भाजा,
आयो करण तुहारी ओट।
बीकाणा दैसाणे बासै,
करणादे पलटै किम कोट।1।

मुगला दळ मेटौ मेहाई,
धर जगळ सिर पाव धरौ।
बीकै दुरग थापियौ बाकौ,
काटा सरण उवेळ करौ।2।

आई देस राखियौ औले,
राजा धरम हिंदवौ राह।
करण सिहाय आवता करनी,
पाछा दल मुडिया पतसाह।3।



* आवडमाताजी (तेमडरायजी) की बुआजी बिरवडीजी की सतान, वशज आज भी विध्यमान है (गुजरात मे) गौरीचन्द हीराचन्द ओझा—बीकानेर राजका इतिहास भाग प्रथम मे पृष्ठ सख्या 92 म भी करणीजी का जन्म 20 सितम्बर 1387 है।

गौ ही ओझा बीकानेर राज का इतिहास भाग द्वितीय मे पृष्ठ सख्या 393 में वि स 1870 कार्तिक बदी 2 (11 अक्टूबर, 1813) को महाराज सूरतसिंह जी ने चूरू की ओर प्रस्थान किया। रास्ते मे देपालसर गढ़ी को नष्टकर उसने उसके किवाड करणीजी के मदिर मे भिजवा दिये तथा खासोली होते हुए सेना सहित चूरू पहुचे।

* रणमल को करणीजी की कृपा से जागलू का राज्य वि स 1487 जेठ सुदी 7 को प्राप्त हो गया। रणमल राव चूडा का बडा पुत्र एव कान्हा छोटा पुत्र था।

शेखू भाटी (राव शेखा) महिने म दो बार देशनोक दर्शन वास्ते आते थे। (तवारिख मुन्शी सोहनलाल)

जब शेखा भाटी ने राव बीका से पुत्री का विवाह करना मना किया। तब श्री करणीजी न कहा कि 'तुम क्या समझते हो बीका को, तुम्हारे से बडे-बडे हजारो आदमी बीका की कदम बोसी छे मुतमभी रहेगे (तवारिख मुन्शी सोहनलाल से) जनश्रुति पचलित है कि शेखा को लाते समय मुल्तान मे पीरो ने विरोध किया जो करणी के समझाने पर मान गये और करणीजी को बहन बना लिया।

काढयो तुरका कैद सू, शेखा री कर स्हाय।
सभळि चालो रूप सजि, पूगला दीध पुगाय।।

श्री करणीजी रै चार बेटा आपरी इच्छा सू उत्पन्न किया—रावलवही

* नवरोजा प्रथा बद करवाई राजल देवी ने—

पृथ्वीराज पातसाजी सू सीख माँग द्वारका पधारिया। तठै गाव चिडाव में सकत राजबाई मिलिया। अरू कयो, वीरा थारै कदै काम पड़ै तद मनै याद करजै। पीछे दिल्ली पधारिया। तठै करमचद माया कर काई हुई तारा प्रथीराजजी राजबाई नू याद किया तिण भा[illegible] गीत—

आई आवजै ज्यू, व्रन बाहर आवीजै
देवी साद सिमरिया दीपै,
वल तज कवण पुकारा बीज
काछराय मो ऊपर कीजै।1।

छिलते तेज रथा पाय छणहण
वेगा छेड कठीरव वाहण।
त्रसकत सेवग करण व्रभतण
आई आवजै ग्रहिया उग्राहण।2।

चाल कनै मढ हूता चायरै
झाझरियाल सदामत झूलर।
काछ पचाल लगै छै डाकरै
आइ आवजै व्रन सकटियै ऊपर।3।

श्रवणै साहल सुणा सचाली
त्राय मिलौ मुझ हकण ताली।
पीथल वाहर काछ पचाली,
धावजे चारण धावलिचाली।4।

और गीत कहता पाण राजलबाई आय ऊभा रया। अरू बडी सहाय करी नवरोजे तलाक उण दिन ला। स 1657 तठै प्रथीराज दूहो कह्यो—

केथ वचाना आगरो, चिडारवौ स कथ।
राव सुणता राजई, तै आ अेवा तथ।।

ये पृथ्वीराज राठौड़ वही है जिन्होंने महाराणा प्रताप को पत्र लिख कर चताया था कि तुम जब तक अकबर के सामने खड़े हो तब तक रजपूती शान और राजस्थान की आन सलामत है इनक पत्र व्यवहार की वजह से राणा प्रताप न मरते दम तक अकबर स समर्प हथियार नहीं डाले। इसी पत्र के सहारे कन्हैयालाल सेठिया ने पातल अर पीथळ कविता लिखी था पातल [illegible] प्रताप और पीथळ-पृथ्वीराज राठौड़)

श्री करणीजी री जन्म पत्र का

करणी नाम का कारण

श्लोक काली पुराण रो छै

कारण का काली कपालीप्ट म वादली

इति काली पुराण स 1444 आसु सुद 7 सुत्रवार रो छै।

2 च
12
बु
3 रा
म 1 शु
11
4
10
5
7 श
9 बृ के
6
8

बीकानेर दुर्ग की नींव श्री करणीजी ने वि स 1542 रख नये राज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया राती घाटी में। किले का निर्माण कार्य पूण हो जाने पर वि स 1545 वैशाख शुक्ल 2 शनिवार को प्रतिष्ठा समारोह मनाया।

जाळ की लकडी की विशेपता—जाल की लकडी बहुत ही घटिया किश्म की होती है जो जल्द ही खराब होकर नस्ट हो जाती है। परन्तु निज मदिर में (माँ के गुम्भारे में) अभी तक जाळ की लकडिया, टहनिया और पत्ते तक यथावत रहना सबसे बडा चमत्कार है।

गोदूता घर आँगणै, वणिक तणी सुण वाणि।
तरणि झगड़ तारण, पसर्‌यो करणी पाणि।।

चारण जाति नहीं होती तो राजपूताना इतिहास के कितने ही अध्याया का स्वरूप और होता। युद्ध मे मनोबल का बडा महत्व रहता है और मनोबल निर्माण चारण कवि करते थे। कई हार युद्धों मे चारणों ने पासा पलट दिया। वाणि के साथ जरूरत पडने पर तलवार उठाने में चारण कभी पीछे नहीं रहे। यदि चूडा को शरण देकर चारण उदारता प्रकट नही करते तो इतिहास में राठौड शब्द ढूढने पर भी शायद नही मिलता।

कवित्व चारणो का पैतृक गुण है। चारण कवियो ने हिन्दी साहित्य की बहुत सेवा की है जिसके फलस्वरूप हिन्दी साहित्य के आदिकाल को चारण काल की सज्ञा दी गई तथा डिगल साहित्य तो चारण साहित्य का ही पयार्य बन पाया।

साहित्य के भास्कर वश भास्कर के रचयिता सूर्यमल्ल मिसन, दुरसा आढा करणीदान बारहठ, बाकीदान आसिया आदि कवि तथा नरहरि दास, बारहठ ईसरदास जैसे भक्त कवि एव दयालदास सिह ढाचय कविराज श्याममलदास, किशोरीसिंह बार्हस्पत्य जैसे इतिहासकार, केशरी सिह बारहठ, प्रतापसिह जोरावरसिह जैसे क्रातिकारी तथा नाथूदान महियारिया, उदयराज उज्ज्वल, विजयदान देथा मनुज देपावत मूलदान देपावत, डा शक्तिदान कविया, रैवतदान, मथाणिया कानादान 'कल्पित' आदि आधुनिक साहित्य सेवी चारण जाति की ही देन है।

दीपे बारो देश ज्यारो साहित जगमगै

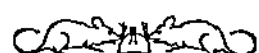
चिरजाएँ

सिगाऊ (प्रार्थना)

चाडाऊ

(सकट कालीन परिस्थिति म उल्लाहना, गाली, सौगध)
करनला किनियाणीजी, धनि धनि धणियाणी जागलदेसरी।
मूरख कानै सगत न मानी, बीरोटनी बखाणी।
व्है सिंघ रूप आछटी हाथळ, मार लियो माढाणी।
रिडमल ल्णी मरूधरा राखी, है साखी हिंदवाणी,
वगसी मात राव बीकै नै, धर थकवट रजधाणी।
करनल

(इन्द्र कुमारी वाइसा, खुडद)



पडसी जद काम दोडसी पाळी, दाढाळी असूरा भुजडाण।
बा आवै ऊपर इकताळी, देशणोक वाली दीवाण।।

गीत (अज्ञात)

कासमीर सारसा, जेम ज्वाला जालधर
कासी अन्नपूरणा, अरबुदा आबू ऊपर,
गढ पावै कालिका, जेम सूध चामुण्डा,
कामाख्या कामरूप, वाद मोहणी वितुडा,
नेपालदेस सिधेश्वरी, कच्छदेश आसापुरा।
बीकाणै करणी 'वाकल' सिर नमै असुरा सुरा।।

• श्री करणीजी का ननिहाल चारणों की आढा जाति में था। करणीजी के नानाजी का नाम चकलू आढा था।

श्री करणीजी का विवाह वि स 1462 की आषाढ सुदी नवमी का हुआ। ◻

जब बख्तावरसिहजी ने अपनी तलवार की मूठ पर मॉ के दोहे खुदवाये

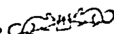
इस विजय के वाद श्री करणीजी के दोहों की रचना की। ये दोनो दोहे बख्तावरसिह के मन्त्र बन गये। उसने उनको अपनी तलवार की मूठ पर खुदा लिया। ये दोहे इस प्रकार हैं

धम धम बाज त्रमागला, हुवै नकीबा हल्ल।
सादा आजे सम्मली किनियाणी करनल्ल।
बाढाली बहताह राढाली त्रम्मक रुडै।
साढाली सहताह, डाढाली ऊपर करै।

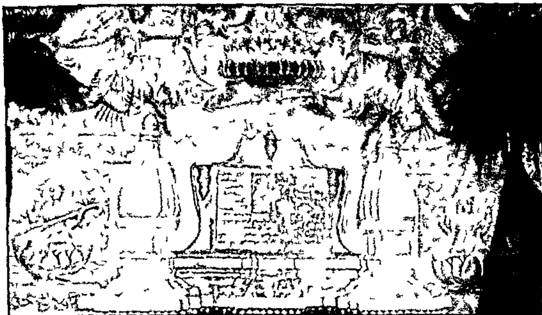
आराधन

सवैया

पूजन पाठ को ठाठ न जानत
साठ घडी सठ पाठ पढे है।
जाप अलाप सलाप न आवत
पापन के अति पुज बढे है।।
प्राण अयाम औ न्यास मुद्रादिक
ध्यान समाधि में नाहि मढे है।।
जानो तो पार उतारो दयानिधि
देवी तिहारी जहाज चढ़ें हैं।।



श्री गणेश एव तोरण दर्शन



श्री गणेशजी दर्शन, श्री करणी मन्दिर बीकानेर



तोरण दर्शन देशनोक



N. D. MARKETING

418/15, IInd Floor, Esplande Road, DELHI 110006

Ph 011-64585404

N K Jain (9312937700) D K Jain (9313221200)



माँ के पूजन हेतु तैयार सामग्री एव पुजारी



पूजन सामग्री से सुसज्जित थाळ



पूजन के लिए तैयार महाराज



महाराज का सहायक

रामलाल रावतमल सिंघी परिवार

सरदारशहर 09460024615

सन्हाया पोलीमर

1ए/144 जहागीर पुरी

जी टी करनाल रोड दिल्ली 110033

फोन 09350809843 09868208457

सुरेन्द्र सिंघी

Laxmi Textile

154 State Bank Colony

G T Karnal Road, DELHI 110009

9312062827 011 2415565

Narendra Singhi

Jain Plastic

3618 Nahargarh Road

12 भाईयो का चौराहा जयपुर

9414058942 9314058942

जितेन्द्र सिंघी

पूजन के पल



पूजन हेतु शृंगार करते हुए



माँ के लिए भोग



भोग आरती



पूजन आरती

बुद्धमल-राजकरण-तेजकरण सिंघी

SINGHI CYCLE CO.

Mfrs & Traders of all kinds of steel Ball & Cycle Parts

Office 431 Kucha Bulaki Bagum Explande Road Chandni Chowk DELHI 110006

Ph 23282089 (O) 27131865 (R)

Resi D 1/D Mahendra Enclave Behind Hans (Vijay) Cinema G T Kernal Road DELHI 110033

Sanjay (9312623720) Ajay (9811074563)

(सरदारशहर निवासी दिल्ली प्रवासी)

मॉ की सेवा मे हर पल-सेवा पात्र



बाजोट



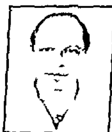
आरती



घडा



चरणामृत झारी



DC

Aarath Gaddi

D. C. SETHIA & SONS

READYMADE GARMENTS

Office IX/6479 Nehru Gali No 2 Gandhi Nagar DELHI 110031

✆ 011 22070510 22076510

D C Sethia (09810123176) Rajesh Sethiya (09810991068)

Rakesh Sethiya (09350888622) Vikas Sethiya (09312276641)

सेवा पात्र



सेवा मे अखण्ड दीपक



वीरघटा



प्याला



धूप डब्बा

Mukesh Garments

Mfg By Mens & Children Wear

X-400, Galı No 4, Ram Nagar, Gandhı Nagar, DELHI 31

Ph (O) 22076947 (R) 22442493 22469254 Mob 9873725257 9312212297

S M Sethıa, Suparsh, Mukesh

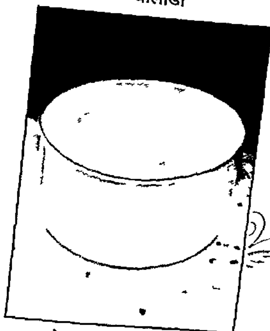
सेवा पात्र



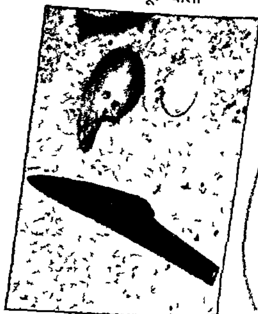
घीलोडी



सिन्दूर प्याली



भोग बाटने वाला प्याला



चोकमा

माँ करणी के चरणो मे शत्-शत् नमन

चम्पालाल-विनोदकुमार सेठिया

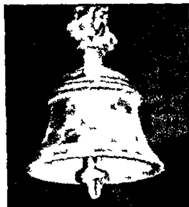
सरदारशहर (दिल्ली)

मोबाइल 09910125560

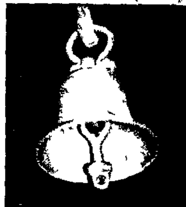
भक्ति मे भागीदारी


चँवर

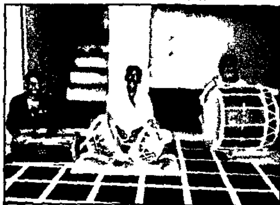

दान-पात्र


टाली


झालर


टाली

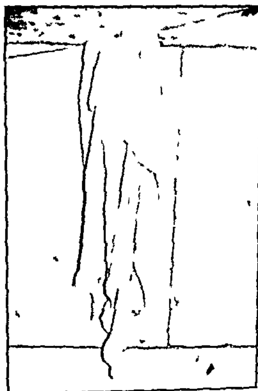

नगाडा


नौबत

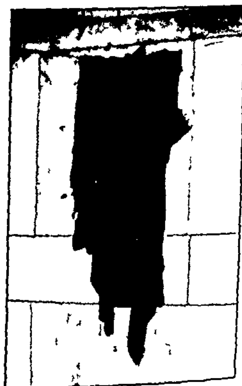
अमरचन्द-आशीष कुमार सेठिया
सरदारशहर-दिल्ली

K.B. POLYCHEM
3007, Bahadurgarh Road DELHI 06
Deals An all kinds of Plastics Raw Material
Mob 09310994999 011 23535319, 27429419 (R) 09873126297

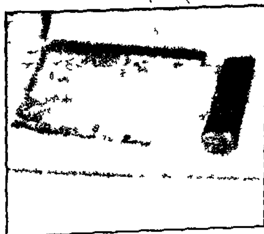
सेवा पात्र



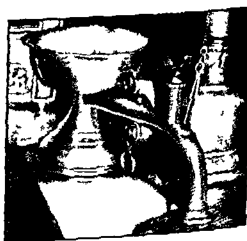
औछाड



साफी (केवल गुम्भारे मे सफाई हेतु)



झडपिया



जोत स्टैण्ड



K L Jain (Pugalia), Sanjay Jain, Ajay Jain
(Sardar Shahar)
Mfd by RAJA NAMKEEN UDYOG
Regd Office 85 Rajpura (Gur Mandi) Delhi-7
www rajanamkeenindia@rediffmail com
PH 09810062276 09811437247

सेवा के द्वार



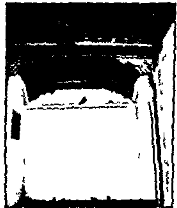
भेट सामान हेतु



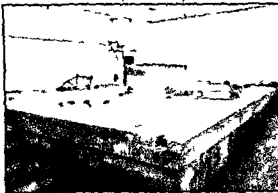
घीलोडी प्रसाद हेतु



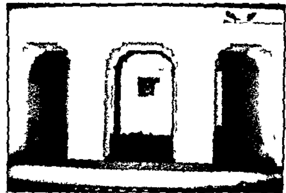
बावडी द्वारे



भोपजी की साळ-भीतरी दृश्य



बावडी



भोपजी की साळ

Vaibhav Granites (India)

Factory Price Showroom

Spl in All Kinds of Granite Slabs

C 13/1, Mansarover Garden Ring Road, Near Hotel Jageer Palace, NEW DELHI 110015

Mobile 09312561320, Vijay Jain 09868484451, Ravi Raj 09350059559



सेवा मे सूर्य की साक्षी



प्रसादी बटवारा स्थल



आखा स्थल–आवडजी मन्दिर

India Trading Company

(A Govt of India Recognised Export House)

1004 Nirmal Tower, 26 Barakhamba Road Connaught Place NEW DELHI 110001 India

Ph +91-11-43720000 (30 Lines) Fax + 91-11 23315377 23730173

www indiatrading com E mail info@indiatradingco com

Sandeep Bhura (Director) 09810391181

लीला काबो की



अन्न ग्रहण करते हुए



आराम के पल

MANOJ HANDLOOM

Deals in School Belt Niwar Buckels Tie Cloth, Tie Batch & Fancy Tie

Shop No 1089 Bartan Market Sadar Bazar DELHI 6

Fact 80, Ram Nagar Colony, Nazafgarh Road, Near Narayan Dharmkanta Nangloi DELHI

Ph 011 23520496 65488919 23558664 (S) Mobile 9212142470 (F) 9811488198

Shiv Bhagwan Gattani Manoj Gattani Kapil Gattani

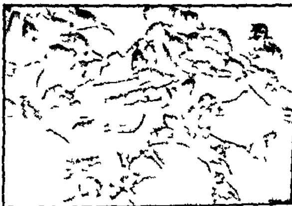
काबे ही काबे



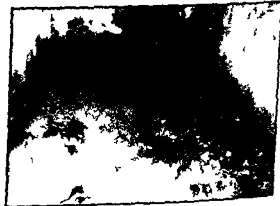
सफेद काबा



दूध पीते हुए



काबे ही काबे



काबे ही काबे



जल ग्रहण करते हुए



लड्डू खाते हुए

माँ करणी के चरणो में नमन्

स्व करणीदान लूणिया की तरफ से

दीपचन्द लूणिया पुत्र करणीदान लूणिया पौत्र समीक्षण लूणिया

निवासी देशनोक

1940/46 कटरा शहशाही दूसरी मंजिल चाँदनी चौक दिल्ली 110006

अद्भुत लीला माँ के लाडलो की



अद्भुत दृश्य



मनोरजन के पल

स्व आशादेवी लूणावत परिवार की तरफ से माँ करणी को बारम्बार प्रणाम

सम्पत लूणावत

पानी की टकी के पास, भीनासर बीकानेर फोन 0151-2270412 9351875571

मनोज ट्रेडिंग कं.

4407 कटरा लेखराय दूसरी मजिल गली बहूजी पहाडी-धीरज दिल्ली

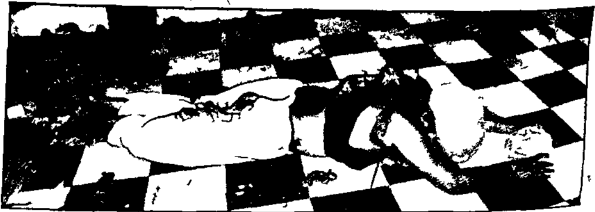
मोबाइल 9313333664 9310791262 9311333665

विचित्र दृश्य









स्व घेवरचन्द सचेती परिवार की तरफ से माँ करणी को शत्-शत् नमन

श्रीमती कमलादेवी पुत्र शिव राजेन्द्र नवरत्न एव ओमप्रकाश सचेती

घेवरचन्द, शिवरतन सचेती
देशनोक (बीकानेर)

वर्धमान एजेन्सी
4399 कटरा लेखराय
गली बहुजी पहाडी चौक दिल्ली

कल्पना एजेन्सी
बजारी चौक रायपुर (छत्तीसगढ)
9302205821

माँ ने पल-पल की रक्षा : प्रजा के रक्षकों की

माँ ने पल-पल की रक्षा : प्रजा के रक्षको की

शक्ति का महत्त्व

"मैं ब्रह्माण्ड की अधीश्वरी हूँ। मैं ही सारे कर्मों का फल भुगताने वाली और ऐश्वर्य देने वाली हूँ। मैं चेतन एवं सर्वज्ञ हूँ। मैं एक होते हुए भी अपनी शक्ति से नाना रूप भासती हूँ। मैं ही मानवजाति की रक्षा के लिये युद्ध ठानती हूँ और शत्रु का संहारकर पृथ्वी पर शान्ति की स्थापना करती हूँ। मैं ही भूलोक और स्वर्गलोक का विस्तार करती हूँ। मैं जनक की भी जननी हूँ। जैसे वायु अपने-आप चलती है वैसे ही मैं भी अपनी इच्छा से समस्त विश्व की स्वयं रचना करती हूँ। मैं आकाश और पृथ्वी से परे हूँ। अखिल विश्व मेरी विभूति है। मैं अपनी शक्ति से यह सबकुछ हूँ।

शक्ति ही जीवन है, शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही गति है, शक्ति ही आश्रय है, शक्ति ही सर्वस्व है, यह समझकर देवीरूपी महाशक्ति का अनन्यरूप से आश्रय ग्रहण करो।

राजस्थान की धरती शूरमाओं की धरती रही है। यहाँ के कण-कण में वीरता और पराक्रम रमा हुआ है। ऐसे वीरों का प्रदेश, शक्तिमानों का शक्तिशाली प्रदेश, मातृ-शक्ति का उपासक हो और यहाँ के कण-कण में शक्ति का संचार होता रहा हो तो क्या आश्चर्य है। यहाँ की प्रकृति और वातावरण सभी पौरुष और शक्ति से ओत-प्रोत रहे हैं। यहाँ के योद्धाओं ने मातृ-शक्ति का आह्वान करके बड़े से बड़े साम्राज्य से भी टक्कर लेने का साहस दिखलाया है। शक्तिमान होकर जीना ही यहाँ पर जीवन की सार्थकता मानी गई है। शक्ति-हीनता यहाँ के जीवन के लिए सबसे बड़ा अभिशाप रही है।

उपासना आराधना क्यो करते हैं?

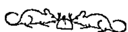
ईश्वर की आराधना इसलिए नहीं की जाती है कि कुछ लोग इसके अस्तित्व की साक्षी देते हैं बल्कि इसलिए कि उसकी उपस्थिति समय-समय पर स्वयं को ऐसे रूप में प्रकट करती है जो जनसाधारण के विवेक को आकर्षित करे। जैसा कि स्वयं भगवान कृष्ण ने गीता में कहा कि जब-जब आवश्यकता होती है, ईश्वर मानव रूप ग्रहण करता है, शायद इसी तथ्य ने जनसाधारण को सर्वाधिक आश्वस्त किया है और ईश्वर में उसकी आस्था को आगे बढ़ाया है। इसी विश्वास के कारण ईश्वर और देवी-देवताओं के अवतारों की अत्यन्त श्रद्धापूर्वक उपासना की जाती है। इस उपासना द्वारा प्राप्त लाभों ने इस विश्वास को और अधिक बल दिया है।

हिन्दुओं में देवी-पूजा बहुत प्रचलित है। हमारे धार्मिक सिद्धातों के अनुसार सभी देवियां भगवान शिव की पत्नी उमा का अवतार मानी जाती है। दुर्गा, जो कि उमा का अवतार है, एक प्रमुख देवी है और देश के कोने-कोने में इसकी कई स्वरूपों मे पूजा की जाती है।

शक्ति मे विश्वास और पारस्परिक प्रेम और स्नेह, जो लोग अपनी माँ के प्रति रखते है, ठीक वैसी ही पूजा की आधारशिला रखते है। जिस प्रकार बच्चे अपनी माँ के सम्मुख अपने कष्ट और दुःखों का वर्णन करते हुए स्वतन्त्रता महसूस करते है उसी प्रकार भक्त भी सर्वशक्तिमान ईश्वर को माँ के रूप में देखकर उसके सामने अपने सुख-दुःख को प्रकट करते है।

राजाओ ने देवी-देवताओ को कुल देवी-देवता क्यो बनाया?

धर्म जीवन को उद्देश्य प्रदान करता है, अधिकतम समस्याओं का संतोषप्रद हल प्रदान करता है तथा श्रद्धा का प्रारम्भ भी यहीं से होता है। राजवशों को स्वीकृत धर्मो



के साथ सामजस्य स्थापित करना पड़ता है और पवित्र धार्मिक ग्रन्था म स्वीकृत सामाजिक मूल्यों के प्रति शासका की निष्ठा क बदले दवताआ की अभिभावक के रूप म उपलब्धि उनके लिए धर्म की ही भेंट है।

सामान्यतया देश में प्रत्यक राज्य का और विशेषतया राजस्थान मे प्राचीन राज्या के अपने-अपने अभिभावक दवी-दवता होत थ और स्वाभिमानी राजपूत जो शक्तिशाली सम्राटा के प्रभुत्व को ललकारने से नहीं चूकते थे और न ही उनके सामने झुकते थे, सदियों म अपने राजवश की स्थापना से अभिभावक देवता के प्रति अन्तर्निहित निष्ठा रखते थे। इन लोगा और इनके परिवारों के भाग्य में अनेकों उतार-चढाव आये फिर भी इनकी श्रद्धा म कमी नहीं आई।

इन राज्यों में अधिकाश क अपने-अपने अभिभावक देवता होते थे लकिन श्री करणीजी बीकानर के राठौड राजवशों की अभिभावक देवी रही हैं।

दही का शकुन

जब राव शखा युद्ध में जाते समय माँ करणी के दर्शन कर रवाना होने लगा तब करणीजी ने आधा कुल्लडी दही व बाजरे की एक रोटी से पूरी फौज को भोजन करा दिया था। उस समय माँ साक्षात् अन्नपूर्णा देवी बन गई थी।

इसी बीच शेखा की फौज मे एक वहम उत्पन्न हो गया। फौज के शकुनी ने अपना सिर हिलाते हुए राय प्रकट की कि जिन अच्छे शकुनों को लेकर फौज ने कूच किया था उनका प्रभाव खट्टा दही खाने से समाप्त हो गया है और अब विजय सदिग्ध हो गई है। भाटियों का शकुनिया पर सदैव ही बहुत अधिक विश्वास रहा है। इस प्रकार की चचा कि खट्टी वस्तु (जिसमे दही भी शामिल है) खाने से शकुन बिगड जाता है शीघ्र ही समस्त फौज म फैल गई और राव शेखा तक भी पहुची। उसने इस बात को अपने तक ही सीमित रखना चाहा और सोचा कि करणीजी से विदा होकर फिर विचार करेंगे कि अब आगे क्या किया जाय। लेकिन वे भगवती से अपनी चिन्ता छिपा नहीं सके। उन्होंने अनिच्छापूर्वक यह बात भगवती को कह दी। करणीजी ने फरमाया कि शकुनी का कहना ठीक है तथापि दवी-प्ररणा म भगवती का उनको जा आशीर्वाद मिला है उसका फल अवश्य मिलेगा। इस विषय पर तर्क न करके और अपने मेहमानों का पुन आश्वस्त करके करणीजी ने उनको सफल-यात्रा का वरदान दिया। शकुनी ने फिर भी इसे मानने से इनकार कर दिया। अत करणीजी ने बाध्य होकर भविष्यवाणी की कि बुरा शकुन केवल शकुनी तक ही सीमित रहेगा समस्त फौज को आशीर्वाद का फल मिलेगा और उसकी रक्षा होगी और यह भी कहा कि भविष्य में दही को अच्छा शकुन माना जायगा और यात्रा प्रारम्भ करने वाले व्यक्ति के लिए दही का शकुन अपना सफलता का द्योतक होगा। फौज ने युद्ध में विजय प्राप्त की। इस युद्ध म वह शकुनी मारा गया। तब स आज तक दही को खाकर निकलना अच्छा शकुन माना जाता है।

माँ ने जब राव बीका के पोते राव जैतसी की पुकार सुनी

बीकानेर राजघराने मे हमेशा से ही माँ करणी की सर्वाधिक मान्यता रही है। राव बीका को तो माँ का पूर्ण सानिध्य मिला। माँ की कृपा से ही जोधपुर और बीकानेर जैसे बडे राठौडों के राज स्थापित हुए। माँ के महाप्रयाण के समय मे जब राव बीका का पोता राव जैतसी, जो कि बीकानेर का राजा था, उस समय मुगल सम्राट बाबर के पुत्र कामरान ने लाहौर के हनुमानगढ (भटनेर) पर चढाई कर उस पर अपना अधिकार कर लिया था। उसके बाद बीकानेर पर आक्रमण की तैयारी करने लगा। यह समाचार जब राव जैतसी के पास पहुचा तब वह अपने 25 सैनिकों को साथ लेकर माँ भगवती करणीजी के चरणा में शीश झुकाने देशनोक पहुच गया। माँ से एक ही बात कही यह शीश सिर्फ आपके आगे झुकता है, किसी और के आगे नहीं। आप ही लाज रखना। माँ ने प्रार्थना सुन ली। इस युद्ध म भगवती ने जैतसी का साथ दिया। कामरान मैदान छोड कर भाग गया। करणीजी के प्रताप से राव जैतसी की फतह हुई।

जब राव जोधा का राजतिलक करणीजी के पुत्र पुनोजी ने किया

विशालकाय रिडमल का बहुत बड़ा कुटुम्ब था। उसके 24 लड़के थे जिनमे जोधा सबसे बडा था। राव रिडमल की मृत्यु के पश्चात् के सस्कार पूर्ण करने तथा राठौडों का नेतृत्व करने का उत्तरदायित्व जोधा पर आ पडा। राव जोधा, जिसका डेरा उस समय कवाणी मे था, उस समय उन्होने छिवेरी की एक धनवान ब्राह्मण महिला से 50,000 रु ऋण लिया। इस धन का उपयोग अपने पिता का मृत्युभोज करने और अपने अनुयायियों की देख-भाल पर किया गया। भाइया और कुटुम्बियो ने सामूहिक रूप से कवाणी म जोधा को राजा और रिडमल का उत्तराधिकारी घोपित किया और अगला दिन राजतिलक के लिये नियत किया गया।

जोधाजी ने करणीजी से इस अवसर पर पधार कर और स्वय तिलक करने की प्रार्थना करने के लिये देशनोक एक दूत भेजा। वे नहीं आ सकीं और अपने लडके पूनोजी के साथ पगडी का दस्तूर भेज दिया।

एकत्रित हुए राठौडों द्वारा जोधा को कार्तिक बदी 5 सवत् 1496 को राठौड-गद्दी पर बैठाया और राव घोपित किया। एकत्रित लोगों की प्रार्थना पर करणीजी के पुत्र पुण्यराज ने करणीजी की ओर से तिलक लगाया। उसने करणीजी की ओर से भट के रूप मे झाडी की पाच पत्तिया दीं जो नये राव ने सम्मान के साथ उस पगडी मे रख लीं जो उसने करणीजी से प्राप्त की थी। समारोह से मुक्त होते ही वह देशनाक पहुचा और करणीजी को श्रद्धा के फूल अर्पित किये तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

राव जोधा को करणीजी ने चेतावनी क्यो दी ?

इस दौरान करणीजी ने राव जोधा को चेतावनी दे दी थी। उन्होंने कह दिया था कि जब तक उनका आदेश न मिल जाय वह किसी बडी लडाई का खतरा मोल न ले। इस प्रकार चेतावनी मिल जाने के कारण राव जोधा पूरे बारह वर्षों तक उसके लिये फैलाए गये जालो से बच सका। वह कवाणी म समय गुजारता रहा।

एक दिन सवत् 1510 म करणीजी ने राव जोधा को अधिकाधिक राठौडों क साथ तुरन्त देशनोक पहुचने का सन्देश भिजवाया। वह देशनोक पहुचा और भगवती के सामने जाकर उनसे सलाह और निर्देश मागा। उन्होंने कहा कि मन्डौर पर आक्रमण करने का समय आ गया है और उसे अपने आदमिया को तुरन्त मन्डौर पर चढाई करने का आदेश दे देना चाहिए।

सात सौ राठौडो के साथ राव जोधा ने आक्रमण बोल दिया। रात को उसने सिढा गाव की सीमा में मोधी मूलानी की ढाणी मे पडाव किया। ढाणी की मालकिन ने राजस्थानी परम्परा के अनुसार उस पर आतिथ्य स्वीकार करने के लिए दबाव डाला। हलवे के लिये आवश्यक मैदा अपर्याप्त होने के कारण उसमें अधिक कीमती मजीठ डाल दी गई। जो उस समय सुलभ थी। मजीठ से राव जोधा का हाथ लाल हो गया और उसकी मूछे भी (जो उसने अपने हाथ से मरोडी थी) लाल हो गई। अत उसने प्रश्नसूचक नजर से मेजबान की ओर देखा। मोधी ने उसको कहा, 'चिता मत करो। मैदे की कमी के कारण मैंने थोडी मजीठ डाल दी थी। आपकी मूछों पर यह शुभ शकुन का रग निश्चित ही करणीजी के आशीर्वाद का सूचक है। तुम्हारी जीत सुनिश्चित है, तुरन्त मन्डौर की ओर बढ जाओ।'

जोधा ने अगला पडाव बेंगटी में किया, जहा हरबू साखला उनका मेजबान था। हरबू साखला राजस्थान के प्रसिद्ध पाच पवित्र लोगों में एक था। इस सत ने राव जोधा और उसके आदमियो को मूग-बाजरा की खिचडी खिलाई। विदा देते हुए हरबू ने जोधा से कहा कि जब तक उसके साथ करणीजी का आशीर्वाद है उसकी कभी हार नहीं होगी और वह अपनी पैतृक भूमि को पुन प्राप्त कर लेगा।

जोधपुर किले की नींव रखते हुए क्या आशीष दी करणीजी ने ?

राव जोधा द्वारा भगवती करणीजी का उनकी



प्रतिष्ठा के अनुकूल राजसी सम्मान किया गया। गढ़-स्थल से बारहठा की जागीर मथानिया के समीप चौपासनी गाव तक पग-पावड़े बिछाये गये। कृतज्ञ शासक अतिथियों और अपनी अभिभावक देवी की अगवानी के लिये चौपासनी तक गये और वहा से निर्माण-स्थल तक उनका साथ दाय, जहा शुभ-मुहूर्त में करणीजी ने जेठ सुदी 11 सवत् 1515 बृहस्पतिवार को किले और जोधपुर शहर का शिलान्यास किया।

करणीजी की उपस्थिति मात्र से वे तपस्वी और उसके शाप को भूल गये। उनको तो और अधिक महत्त्वपूर्ण माग रखनी थी। राठौड़ भाइयों ने अपने देवी मेहमान का स्वागत करते हुए एक आवाज मे उनसे प्रार्थना की कि वे आशीवाद दे कि उनके वशज अनन्तकाल तक शासन करते रहे। करणीजी ने जवाब दिया, 'मुझे खेद है। ऐसे वरदान को स्वीकार करना असम्भव है। यह विधाता के प्राकृतिक क्रम के विरुद्ध है। न राम और कृष्ण जैसे अवतारो को और न युधिष्ठिर और इक्ष्वाकु जैसी पवित्र आत्माओं को एसा वरदान मिल सका। सबको अपरिहार्यता के सम्मुख झुकना पडा। कर्म के सिद्धान्त के अनुसार राज्य बदलते हैं और जो शक्ति का दुरुपयोग करते है उनका स्थान वे लोग ले लेते है जिन्होने पूर्व जीवन मे पवित्रता बरती है। जिसका जन्म हुआ है, वह मरेगा जिसकी स्थापना हुई है वह गिरेगा। यह वरदान तो सर्वशक्तिमान द्वारा भी नहीं दिया जा सकता।'

राव ने पूछा 'चूकि जो हम चाहते है वे आप स्वीकार नहीं कर सकतीं तो आप कृपया हमारे वशजों का भविष्य बतावे।' तब देवीजी ने भविष्यवाणी की, 'इस किले और जोधपुर पर तुम्हारे वशज 28 पीढियो तक शासन करेगे। (अर्थात् राठौडो का 28 पीढी तक राज रहेगा) उसके पश्चात् भोमियो की पीढी शुरू हो जावेगी।'

राव बीका ने पिता का घर क्यो त्यागा?

राव जोधा के बीस पुत्र थे, सभी निडर-योद्धा। उनमें राव बीका सुविख्यात है। उन्होंने स्वतन्त्र रूप से अपना नाम कमाया न कि अपने पिता के कारण प्रसिद्धि पाई।

राठौड़ो को अपनी एक के बाद एक विजय का बहुत गर्व था। अत वे लगातार आगे और विजयों की योजना ही बनाते रहते थे। बीका 27 वर्ष के थे। एक दिन उनके पिता ने देखा कि राव बीका अपने चाचा काधल के साथ बात कर रहा है, यह सोच कर कि यह गुप्त-मत्रणा है उन्होंने ताना मार दिया, 'क्या काधल कोई नये इलाके जीत कर अपने प्रिय भतीजे को उसके सिंहासन पर बैठाने की गुप्त योजना बना रहा है?' चाहे यह ताना हसी में मारा गया हो (जो जोधा के लिये नामुमकिन था क्योकि उसकी अपने बहादुर भाइयों व लड़को को अपने राज्य-हिस्से से वचित रखने की अपनी योजनाए थीं) लेकिन स्वाभिमानी काधल को यह चुभ गया। अत उसने भतीजे का हाथ पकडते हुए उसके लिए एक राज्य ले देने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। अपने भाई से विदा होते हुए उसने घोषणा की कि 'जब तक बीका के लिये कोई राज्य प्राप्त न कर लू आपके सामने मुह नहीं दिखाऊगा।

अपने चाचा काधल और 400 घुडसवारों को साथ लेकर सवत् 1522 मे दशहरे के दिन कुमार बीका ने प्रतिष्ठा प्राप्त करने की तलाश मे दृढ सकल्प के साथ जोधपुर छोड दिया।

बचपन से ही बीकाजी भैरव के भक्त थे, इसी कारण वे भैरवजी और करणीजी के आशीर्वाद मे दृढ विश्वास रखते थे। भैरव की पवित्र मूर्ति अपने साथ लिये वे करणीजी को अपनी श्रद्धा अर्पित करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने सीधे देशनोक पहुचे। अपने गतव्य स्थान पर पहुच कर वे विनमतापूर्वक अपनी आराध्यदेवी के पास गये, उनको अपना लक्ष्य और सकल्प बताया और इस कार्य मे उनसे सफलता की कामना की।

राव काधल ने विनयपूर्वक कहा, 'भुवाजी आपके सरक्षण में हमारे विश्वास के कारण ही हमने जोधपुर छोडा है। आपका यह स्थान ही हमारा लक्ष्य था। हम आपके आदेश पर धर्म की रक्षा के लिये लडने को तैयार है। कृपया हमारा मार्गदर्शन कीजिये। हम आपके निर्देशों का पालन करेंगे।

बीका को श्री करणीजी ने क्या आशीर्वाद दिया ?

बीका के सिर पर अपना हाथ रखते हुए और इस प्रकार देवी कृपा जतलाते हुए करणीजी ने विश्वास दिलाया 'जोधा के पुत्रा में (जो सभी मुझे प्यारे हैं) तुम मुझको सबसे अधिक पसन्द हो। तुम्हारा भविष्य बहुत उज्ज्वल है। इस भूमि म तुम्हारा नाम और ख्याति तुम्हारे पिता से भी अधिक फैलेगी। तुम अपना समय चूडासर में भैरव की मूर्ति, जो तुम्हारे पास है की पूजा करने में बिताओ और आगे के काम के लिये निर्देशो की प्रतीक्षा करो।'

बीका और काधल ने आज्ञा का पालन किया। वे चूडासर को चल दिये। वे तीन वर्ष तक चूडासर म रहे और अपनी फौज को सगठित करते रहे। वे इन्तजार करते-करते थक गये और एक बार फिर उन्होंने अपनी इच्छा करणीजी के सामने रखी। उनके धैर्य की परीक्षा हो चुकी थी। उनके धैर्य और पवित्र जीवन मे प्रसन्न होकर करणीजी ने उनको सवत् 1537 में कोडमदेसर पहुच वहा अपनी भैरव की मूर्ति स्थापित करने का आदेश दिया। उन्होंने कहा, 'यह मूर्ति स्थापना तुम्हारे राज्य रूपी पौध क लिए बीज का काम करेगी और तुम अपनी विजय का अभियान इसी क्षण यह मान कर प्रारम्भ कर सकते हो कि तुम्हार राज्य की प्रथम नींव की स्थापना हो गई।'

प्राचीन बीकानेर रियासत के खुले क्षेत्र में पहले छोटी-छोटी रियासतें थीं जिनमें राजपूत, जाट और मुसलिम खापें राज्य करती थीं। इनमें साखला, मोहिल और भाटी राजपूत प्रमुख थे और अधिकतर क्षेत्र में इन्हीं का राज्य था।

जबकि हिन्दू राज्यों और रजवाडो में परस्पर फूट थी और वे अपने अस्तित्व के लिये सघर्ष करते रहते थे मुसलिम शासक पूर्व और पश्चिम में एक होकर बचे-खुचे हिन्दू राजाओं को समाप्त करने में एकजुट थे। हिन्दुओ मे धार्मिक सगठन का अभाव देखकर मुसलमान लोग इस्लाम धर्म के प्रसार में लगे हुए थे।

उस समय के हिन्दू समाज को ऐसे पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता थी जो हिन्दू शक्ति को आगे बढा सके, खतरे को समझ सके तथा लक्ष्य तक पहुचने के लिये देवी प्रोत्साहन और आशीर्वाद प्राप्त कर सकने वाल उपयुक्त व्यक्ति का चयन कर सके। ऐसे कार्य करने के लिए सिफ करणीजी ही ऐसे थे जो हिन्दू धर्म और राज्या की रक्षा के लिय प्रकट हुए। एक ओर उन्होने हिन्दुओ को एक झण्डे के नीचे सगठित होने की आवश्यकता को महसूस किया और दूसरी ओर इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये राठौड़ो को उचित साधन के रूप मे पाया।

जब उचित समय आया तो करणीजी ने राव बीका और उसके सहयोगियों को जागल प्रदेश और उसके उत्तर तथा पूर्व म बिखरे हुए रजवाडो को मिलाकर एक सयुक्त राठौड राज्य की स्थापना के उद्देश्य से आगे बढने का आदेश दिया। अपने भक्त बीका के लिये उन्होंने राव जोधा से भी बडे राज्य और अधिक सम्मान की भविष्यवाणी की।

राव बीका और उनके सहयोगी तो ऐसे आदेशों का इन्तजार ही कर रहे थे। अत उन्होने करणीजी के आशीर्वाद और उनकी सलाह पर भरोसा करके अपनी विजय के आन्दोलन का सूत्रपात किया।

स्मरण होगा कि करणीजी ने कोडमदेसर म राव बीका को भैरव की पारिवारिक मूर्ति स्थापित करने का आदेश दिया था और कहा था कि इसे ही वह अपने राज्य की स्थापना माने। बीका ने इसका गलती से यह अर्थ लगाया कि यहीं उसे अपने गढ की स्थापना करनी है। अत अपने लोगों विशेष-तौर से राव काधल और नापा साखला के आग्रह पर राव बीका ने किल का निर्माण प्रारम्भ कर दिया।

पूगल के राव शेखा क अधीन भाटियो ने किले के निर्माण को अपनी सुरक्षा के लिये चुनौती समझा। अत उन्होने इसका विरोध किया। बाघोडो ने भी भाटियो का साथ देते हुए विरोध किया। दोनो ने मिल कर युद्ध द्वारा इसके निर्माण को बन्द करने की तैयारिया शुरू कर दीं। इन दोनों का सयुक्त विरोध काफी शक्ति रखता था। अत बीकाजी करणीजी की सलाह लेने देशनोक पहुचे



और उन्होंने अपने शक्तिशाली विरोधियों की योजना बताई तथा करणीजी से कोडमदेसर चलने का आग्रह किया क्याकि उनका विश्वास था कि उनकी उपस्थिति मात्र से ही या तो आक्रमण नहीं होगा और यदि हुआ तो जीत राठौडो की होगी।

बीका की प्रार्थना पर भगवती उलझन में पड़ गईं। उन्होंने बीका को जनता की भलाई के लिये, कानून और व्यवस्था की स्थापना के लिये चुना था। वे उसकी सफलता चाहती थीं। करणीजी यह नहीं चाहती थीं कि बीका वहा किले का निर्माण करे। एक देवी कार्य में लगे हुए राजपूत के रूप में वह दुश्मन का मुकाबला करेगा और अपने निर्णय के फल को बर्दाश्त करेगा। इस परिस्थिति को बचाने के लिये कोई ऐसा मार्ग ढूढना आवश्यक था जो राजपूती शान के अनुकूल हो। अत करणीजी ने उसको अपनी योजना छोडने की इन शब्दों में सलाह दी।

'राज्य की स्थापना के लिये निकले लोगों के भाग्य में युद्ध अवश्यम्भावी होता है। राज्य आसानी से नहीं प्राप्त किये जा सकते। भूमि पर केवल वही शासन कर सकते है जो रक्त बहाने के लिये तैयार हों। विजय से पूर्व बलिदान आवश्यक है। अत अपने दुश्मन का दृढतापूर्वक मुकाबला करो। विजय तुम्हारी होगी क्योकि तुम्हारा अतिम लक्ष्य उत्तम और उचित है। लेकिन इस युद्ध मे मै तुरन्त किसी पक्ष का साथ नहीं दे सकती क्योकि भाटियों का किले के निर्माण के प्रति आपत्ति करना उचित है इससे उनके राज्य को खतरा उत्पन्न होता है। युद्ध जीतो और शान के साथ किले की योजना को छोडो। केवल भैरव अकेले को ही कोडमदेसर मे अपना किला रखने दो। तुम्हारे किले के लिये मै तुमको अधिक अच्छा और सुरक्षित स्थान बताऊगी।'

बीका लौट आया। उसके कुछ दिन बाद राव शेखा आया। उसने करणीजी से कहा कि युद्ध अवश्यम्भावी है और उसने उनके आशीर्वाद के लिये प्रार्थना की।

करणीजी ने कहा, 'तुम्हारा भय सही हो सकता है लेकिन मैं तुम्हें बता देती हू कि आखिर में बीका की ही जीत होगी। वह एक आदर्श के लिये लड रहा है और लूट-पाट से पीड़ित जनता को शाति और समृद्धि का जीवन देना ही उसका लक्ष्य है।'

करणीजी ने राठौड-भाटी मैत्री के महत्त्व को समझा। वे समझती थीं कि शाति और समृद्धि मजबूत सरकार से ही सम्भव है और मजबूत सरकार उसके दोनो भक्त राठौड और भाटियों की मैत्री से ही सम्भव है। उनको इसे एक सयुक्त लक्ष्य बनाना है। अपनी जान से भी अधिक प्यारी दुर्ग-निर्माण की योजना को त्याग कर बीका ने अच्छी सद्भावना का परिचय दिया था और अब भाटियों की बारी थी कि वे भी इसके अनुरूप ही सद्भावना का परिचय देते। परम्परानुसार राजपूतों का एक तरीका यह रहा है कि वे अपने हितैषी के हाथ में अपनी पुत्री या बहिन का हाथ सौंप दे। इसको ध्यान में रखते हुए करणीजी ने राव शेखा को सलाह दी कि वह अपनी पुत्री रगकुवारी की बीका के साथ शादी कर दे। राव शेखा को यह बात बहुत बुरी लगी और उसने करणीजी से कहा, 'आपने ऐसी बात कही है जिसे मानने में मै अपना अपमान समझता हू। बीका राव जोधा का भावी उत्तराधिकारी नही है क्योंकि राव काधल के गुमराह किये जाने के कारण उसने जोधपुर के सिंहासन पर अपने अधिकार को खो दिया है। वह अब राठौडों का नेता नहीं रहा। केवल एक घुमक्कड राजकुमार है। राव जोधा का उत्तराधिकारी अब उसका भाई है। दूसरी ओर मै एक शासक हू। एक शासक की पुत्री की शादी एक अधिकार रहित राजकुमार के साथ कैसे हो सकती है? यदि मैं स्वीकार कर लू तो अपने लोगों में मुह दिखाने लायक नहीं रहूगा।'

करणीजी ने शेखा को बताया, 'बीका का भविष्य उज्ज्वल है। तुम आने वाले समय में अपने शब्दों पर पश्चात्ताप करोगे। बीका के भविष्य को ध्यान में रखते हुए ही मैंने यह प्रस्ताव किया था। तुम्हारी स्वय की प्रतिष्ठा के लिये तुम इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लो बहुत अच्छा होगा।

शेखा अड़ा रहा और उसने कहा 'चाहे मेरे प्राण निकल जाए लेकिन जब तक मैं जीवित हूं यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकता। मैं आपकी सब बातें स्वीकार कर सकता हूं लेकिन यह बात नहीं।

करणीजी ने कहा 'तुम अभी डींग मार सकते हो लेकिन याद रखो विधाता को ऐसा ही स्वीकार है और तुम इसे नहीं रोक सकते।

इस पर राव शेखा ने कहा मैं जानता हूं कि जो कुछ आप करती हैं या चाहती हैं वह अवश्य होता है। आप अपनी अलौकिक शक्ति से बाधाओं को पार कर सकती हैं और मेरी पुत्री की शादी बीका के साथ कर सकती हैं। तो यह भी निश्चित है कि उसका कन्यादान उसके पिता द्वारा नहीं होगा।'

यह कहकर राव शेखा चल दिया। इस वार्तालाप के कुछ दिन पश्चात् राव शेखा मुल्तान पर लूट-पाट करने चला। लड़ाई शुरू हुई। राव शेखा को गिरफ्तार कर लिया गया और निरवस्त्र रक्षकों की देख-रेख में मुल्तान (पाकिस्तान) की एक काल-कोठरी में रख दिया गया।

लगभग दो वर्ष तक जेल में रहा। राव शेखा की पत्नी ने करणीजी से प्रार्थना की। उन्होंने कहा 'हे माँ भगवती क्या यह आश्चर्य नहीं है कि आपका भाई इतने लम्बे समय तक काल-कोठरी में कैद रहे? अवतारी देवी का धर्मभाई एक मुसलिम सूबेदार की जेल में है?'

इस प्रकार रोती-बिलखती हुई वह सो गई। उसने स्वप्न में हाथ में त्रिशूल लिये हुए करणीजी को देखा। करणीजी ने कहा कि राव शेखा को मुक्त कराने का उपाय है रंगकुंवारी की शादी राव बीका के साथ कर दी जाव।

दूसरे दिन सुबह उसने अपने पुत्र हरू को बुलाया और अपना स्वप्न कह सुनाया। उन्होंने देशनोक जाकर करणीजी से निर्देश प्राप्त करने का निश्चय किया। करणीजी ने रंगकुंवारी के बारे में पूछा। रानी ने उनसे उसके लिये योग्यवर की सलाह देने के लिये प्रार्थना की।

करणीजी ने कहा 'मैंने भाई शेखा से इसकी शादी राव बीका के साथ कर देने की अपनी इच्छा प्रकट कर दी थी लेकिन उसने नहीं मानी।

शेखा की रानी ने कहा आपके भाई ने इसके लिये मना कर दिया लेकिन उनको ऐसा करने का कोई अधिकार ही नहीं था। हमारे रीति-रिवाज के अनुसार लड़की के भविष्य के सम्बन्ध में माँ का और लड़के के भविष्य के सम्बन्ध में पिता का निर्णय लेने का पूर्वाधिकार है। अपने इस अधिकार को काम में लेते हुए मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार है और अंत तक अपने वचन को निभाऊंगी।'

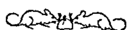
शेखा की रानी ने करणीजी का ध्यान इस बात की ओर दिलाया कि कन्यादान के लिये राव का उपस्थित होना आवश्यक है। इस पर भगवती ने विश्वास दिलाया कि वह चिन्ता न करे और शेखा को समय पर लाने का स्वयं पर उत्तरदायित्व ले लिया।

शादी के लिये बहुत कम समय बाकी रह गया था और इतने कम समय में मुल्तान से पूगल तक करणीजी शेखा को किस प्रकार ला सकेगी, यह विचार रानी को परेशान करता रहता था। वे बार-बार करणीजी से अपने पति के बारे में पूछती थीं और करणीजी उसको यह कहकर सात्वना देती थीं कि चिंता की कोई बात नहीं है, कन्यादान के समय उनका भाई अवश्य आ जावेगा।

दूसरी ओर राव शेखा मुल्तान की कैद में पडा था। उसने मुक्ति की सभी आशाए छोड दी थीं। यह समझते हुए कि उसका अंत समीप है, उसने इन शब्दों में करणीजी की मदद की कामना की

वाहू चली निरम्मली, चख बींभली सुरत्त।
आजे करनल अक्कली, सवली रूप सगत्त।।

पूगल मे दूल्हा ने तोरण मार किले के द्वार में प्रवेश किया। कन्यादान का समय नजदीक आता जा रहा था। अपनी देवी-शक्ति का उपयोग करते हुए करणीजी पलक मारते ही मुल्तान पहुच गई और त्रिशूल हाथ में लिये हुए शेखा के सामने प्रकट हुई। करणीजी को



उपस्थित देखकर चौंकते हुए राव ने साष्टाग दण्डवत किया। करणीजी ने उससे पुन लूट-पाट न करने की शपथ ली और तब उसको मुक्त करके उसी क्षण पूगल म विवाह-स्थल पर लाकर खड़ा कर दिया।

इस प्रकार सवत् 1539 मे रगकुवारी भटियाणी का राव बीका के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। इस विवाह से राठौड़ तथा भाटी एकसूत्र मे बध गये और इससे उत्तरी राजस्थान के पूर्व और पश्चिम की ओर से पड रहे दबाव का मुकाबला करने के लिये एक सयुक्त शक्ति की स्थापना हो गई। करणीजी ने राव शेखा को सलाह दी कि वह विवाह के सम्बन्ध मे अपनी पुरानी आपत्ति को भुला दे और उन्हाने राठौड तथा भाटियों को मित्रता की शपथ दिलाई।

बीकानेर नगर की स्थापना श्रीकरणीजी के द्वारा की गई

विजय-दर-विजय प्राप्त करता हुआ विजेता बीका आशीवाद प्राप्त करने देशनोक आया। करणीजी ने उसको सलाह दी कि वह विधिपूर्वक अपने राज्य की नींव स्थापित करे और अपने नाम पर आधारित इसकी राजधानी का नाम रखे। राव के स्वामिभक्त सिपाही नापा साखला ने सलाह दी कि राजधानी के लिये उस स्थान को चुना जावे जहा मुल्तान, नागौर और अजमेर को जाने वाले राजमार्ग मिलते है।

अपने किले के लिये राव ने रातीघाटी को चुना और शिलान्यास करने के लिये भगवती से प्रार्थना की। उन्हाने प्रार्थना स्वीकार कर ली और सवत् 1545 मे रेगिस्तान म दूसरे राठौड राज्य के किले की स्थापना की और भारत की पश्चिमी सीमा की सुरक्षा को मजबूत बनाया।

जब किला और राजधानी तैयार हो गये तो करणीजी से प्रार्थना की गई कि वे राव बीका के ताजपोशी समारोह में पधारे। मगर जिस प्रकार उन्हान राव रिडमल और राव जोधा क समय इनकार कर दिया था उसी प्रकार इस बार भी आने से इनकार कर दिया और अपनी ओर से पुण्यराज को भेज दिया। पुण्यराज के साथ उन्होंने अपना आशीर्वाद भिजवाया और राज्य क लिये शाति और समृद्धि का विश्वास दिलाते हुए झडबेरी के पाच पत्ते भिजवाये।

राजतिलक क दूसर दिन राव बीका अपनी पत्नी, राव काधल, माण्डाला और बीदा को साथ लेकर देशनोक पहुचा और करणीजी का चरणस्पर्श किया। करणीजी न उसके लिये सुखी और समृद्ध जीवन की कामना की और राज्य में शाति और समृद्धि स्थापित करने के उसके कर्तव्य को याद दिलाया। उन्हान सलाह दी कि वह राव काधल की नि स्वार्थ सेवाओं के आभार को न भूले।

जब करणीजी ने राव जैतसी को सहायता दी

महाप्रयाण के समय सवत् 1595 म बीकानेर कं गद्दी पर बीका का पौत्र राव जैतसी विराजमान था। इ जैतसी के बारे में करणीजी ने कहा था

'सारा में सरदार जाडो जैतसी'

उस समय काबुल और लाहौर बाबर क पुत्र कामरान के अधिकार म थे जो अपने भाइ हुमायू द्वारा छोडे हुए खण्डहरो से विशाल सामाज्य बनाने के स्वप्न देख रहा था।

कामरान ने एक बहुत बडी फौज लेकर सवत् 1595 के आषाढ म भटनेर पर आक्रमण किया। आक्रमणकारिया ने भटनेर पर अधिकार कर लिया और वे बीकानेर पर चढाई की तैयारी करने लगे। जैतसी को विपदा दिखने लगी। इस खतरे के समय अपने पूर्वजों की तरह राव जैतसी देशनोक गया और देवी मदद के लिए प्रार्थना की

जैत कमन्ध कर जोडिया, जीहा एह जयत।
करनल रिणमल बाचरी, पाल करो त्रिसकत्त।।
पाल करो त्रिसकत्त, जेज नह कीजिये।
जैतो सरणै राज, उजारो लीजिय।
लिया सग नव लाख, सगता झलता।
आव करनल आप, उबारण आपता।।

राव ने तीन दिन और रात लगातार प्रार्थना की। उसने दृढ सकल्प कर लिया था कि जब तक देवी सहायता का सकेत द्वारा विश्वास प्राप्त नहीं हो जाता, वह देशनोक नहीं छोडेगा। मन्दिर के द्वार पर वह भूखा-प्यासा बैठा रहा। चौथे दिन दोपहर के समय एक हाथी दात का चूडा पहने हाथ प्रकट हुआ जिसके हाथ मे एक तीर-धनुप म लगा दिया। देवी कृपा की इस अभिव्यक्ति से आश्वस्त हो कर राव जैतसी ने आत्मविश्वास के साथ मुगलों का मुकाबला करने के लिये उत्तर में चढाइ कर दी।

भयानक युद्ध शुरू हुआ। राजपूत ऐसी बहादुरी और साहस के साथ लडे जो केवल राजपूत ही दिखा सकते हैं। इसी समय उनकी देवी शक्ति की सहायता मिली। इस दवी प्रदशन से मुगल सेना हक्की-बक्की रह गई और युद्धभूमि छोडकर भाग गई। राठौडों ने प्रसन्नतापूर्वक भटनेर के किले में प्रवेश किया और इसका नाम बदल कर हनुमानगढ रखा गया क्योंकि राठौडा ने मगलवार को इस पर कब्जा किया था।

विजयी जैतसी देशनोक लौटा, भगवती को नमस्कार किया और देशनोक मन्दिर पर मढ बनवाया। देशनोक के वर्तमान मन्दिर के निज मन्दिर गुम्भारे के बाहर कच्चे मढ का निर्माण करवाया।

तत्पश्चात् दैवी आदेश से उन्होंने अपनी उसी अपर्याप्त सेना के साथ मुगला के उस विशाल सैन्यदल पर रात्रि-आक्रमण किया और मुगल दल को मार भगाने म सफल हुए। इसी प्रसग को लेकर महाकवि हिंगलाजदान कविया, सेवापुरा (जयपुर) ने अपनी रचना *'मेहाई-महिमा' में बडा ही सजीव वर्णन किया है* जो इस प्रकार है—

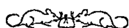
जोय कटक नृप जैत, सहर देसाण सिधायो।
साथ पचीस सवार, ईस्वरी कदमाँ आयो।
वळ दे दे बाकरा, भणे जय जय भगवत्ती।
धारि रुधिर मद धार, छाक दीधी छत्रपत्ती।।
जळमृक सजळ बीजळ जिसी, धकै खाग खेटक धरी।
कर जोड जुलम जालिम कथा, कमध मोड मालिम करी।।
उरड मेच्छ आविया, मुरडि जगळधर माथै।
झगि तोडा दव झडै, खडै घोडा जव खाथै।।
वह हरोळ जळ वीज, कीच चन्दोल कदम्माँ।
थाट जाँण थाटियो, पुन दस आठ पदम्माँ।।
पाताळ लोक आतम पडै, अडै आभ भालाँ अणी।
जाँ हूँत भिडै जैतो जठै, तनै लाज मेहा तणी।।

जब करणीजी ने राव करणसिह की पुकार सुनी?

करणीजी की कृपा की एक अन्य अभिव्यक्ति का सम्बन्ध बीकानेर के प्रसिद्ध शासक करणसिह के जीवनकाल से है। ये मुगल औरगजेब के समकालीन थे। औरगजेब के पूर्वजो का राजपूत राजाओं मे अपार *विश्वास था मगर औरगजेब उनसे भिन्न था।*

औरगजेब ने हिन्दू धर्म को कमजोर करने के लिये कई कार्य किये थे। राजपूतों के विरुद्ध कोई गहरा षड्यन्त्र और योजना चल रही थी। औरगजेब ने उनको अटक के पार भेजने की और हिन्दू धर्म को नष्ट करने की *योजना बनाई। जो पहले मात्र एक अफवाह थी, बाद म* एक मुसलिम सैयद जीवन शाह द्वारा प्रमाणित कर दी गई। सैयद ने कहा—'सिहासन का वर्तमान उत्तराधिकारी आपके प्रत्यक्ष बलिदानों से लाभ उठा रहा है। वह इस्लाम का सच्चा सेवक होने का बहाना कर रहा है और एक पक्का षड्यन्त्रकारी है। वह छल-कपट म विश्वास रखता है और उमकी आपके साथियो के विरुद्ध दूषित योजनाए है। अत जैसे ही आप सिन्धु नदी को पार करके दुश्मन के क्षेत्र में प्रवेश करेंगे और आपका सम्बन्ध अपनी भूमि और मित्रो से टूट जावेगा आपकी छोटी-सी राजपूत फौज को मुसलिम फौज द्वारा घेर लिया जावेगा। इसके लिये बादशाह स्वय मुसलिम सेनानायकों को इस्लाम धर्म अपनाने के लिये दबाया जावेगा।'

राजा ने बिना विचलित हुए कहा 'शेख बादशाह जानता है कि राजपूतों की वैदिक धर्म मे *कितनी निष्ठा है। वह यह भी समझता है कि वे बहादुर* है और धर्म के नाम पर कोई भी बलिदान करने के लिये सदैव तत्पर है।'



राठौड राजा ने जवाब दिया, 'मुझे अपने चाचा जसवन्तसिंह के ये प्रसिद्ध शब्द याद हैं। वे इस काव्य में बन्ध कर अमर हो गये हैं

सबै भूमि गोपाल की, या मे अटक कहा।
जाके मन में अटक हैं, सो ही अटक रहा।।

करणसिंह ने महसूस किया कि मामला बहुत गम्भीर है। वैदिक धर्म का उत्पन्न इस खतरे के समय राजा ने अपने पूर्वजो की तरह अपने परिवार की अभिभावक देवी करणीजी से मार्गदर्शन चाहा। इसका परिणाम तुरन्त हुआ। शंकाएं समाप्त हो गई और दृढ संकल्प लौट आया।

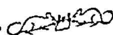
इस चेतावनी को करणीजी का ही आशीर्वाद समझते हुए करणसिंह ने अपने साथी राजाओं की तुरन्त एक सभा बुलाई। उन्होने उनको षड्यन्त्र से अवगत कराया। वे औरंगजेब की नीचता को समझते थे, अतः वे शीघ्र ही आश्वस्त हो गये। करणसिंह ने कहा 'मित्रो, मैंने यह भेद खोलने से पूर्व इसके सब पहलुओं पर विचार किया है। भगवती श्री करणीजी की रक्षक-भुजा राठौडो को सदैव उपलब्ध रही है। यह उन्हीं की कृपा का फल है कि दुश्मनो के डेरे में से एक ने हिन्दुत्व की रक्षा के लिये यह जोखिम लेने का साहस किया और षड्यन्त्र का भेद खोला।' उस सभा मे 36 वंशो के सरदार एकत्रित थे। उन्होने निश्चय किया कि हिन्दू और मुसलिम फौजों के मध्य चल रही दुश्मनी का लाभ उठाया जाय और इस प्रकार इस मामले पर विचार करने के लिये कुछ समय लिया जाय। दूसरे मुसलमानो के विरुद्ध युद्ध के समय मुगल फौज में राजपूत सेना सबसे आगे रहा करती थीं। लेकिन इस बात को प्रतिष्ठा के प्रश्न मे बदल दिया गया। राजपूतो ने कहा कि युद्ध में सबसे आगे रहने के कारण सिंधु नदी को पार करना हमारा अधिकार है। मुसलिम नायक यह नही समझ सके कि इस छोटी-सी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाने का क्या राज है? अतः उन्होने इसका विरोध किया और मुसलमानो के लिये प्राथमिकता का दावा किया। जिस प्रकार राजपूतों का यह तर्क ठोस होता गया कि फौज में सबसे आगे रहने के कारण सिंधु नदी वे पार करेंगे, उसी प्रकार मुसलमानों का भी यह श्रेय प्राप्त करने का संकल्प बढता गया। सेनानायक ने राजपूतो से कहा कि शाहजादों के नेतृत्व के दलों को सिंधु नदी पहले पार कर लेने दिया जाय। अतः उसने सोचा कि उसने राजपूतों का उल्लू बना लिया है। राजपूतों ने समझा कि यह उनकी योजना के अनुकूल पड़ता है। अतः उन्होने साधारण अनिच्छा जतलाते हुए अपनी सहमति दे दी।

मुसलिम टुकडियों को सिंधु नदी के पार उतार दिया गया और नाव राजपूतो को लेने के लिये पुनः किनारे पर लौट आई।

करणसिंह के नेतृत्व में अपनी योजना पूर्ण करने का उचित समय आया जानकर राजपूत जल्दी से इन्तजार कर रही नावों की ओर दौडे मानो कि वे उन पर बैठने जा रहे हैं। गन्तव्य स्थान पर पहुंच उन्होने अपने नेता के इशारे पर नावो को नष्ट करना शुरू कर दिया। करणसिंह को राजपूतो ने स्वेच्छा से अपना नेता मान लिया था और सर्वसम्मति से उनको जगलधर बादशाह की उपाधि दे दी थी।

करणसिंह और अन्य अपनी राजधानियो को वापस लौट आये। औरंगजेब बहुत कुपित हुआ। उसने तुरन्त बीकानेर पर चढाई का आदेश दिया। एक बार पुनः परीक्षा की घडी आ गई थी। करणसिंह ने सोचा कि शक्तिशाली मुगलों के क्रोध का अकले बीकानेर द्वारा सामना करना एक दुस्साहसपूर्ण कार्य होगा। वह अपने बहादुर बीकानेरियो का इस प्रकार अकारथ बलिदान नहीं कराना चाहता था। मार्गदर्शन, सहायता और सान्त्वना की आवश्यकता महसूस करते हुए वह देशनोक गया और प्रार्थना की कि यह संकट टल जाय। वह तीन चार दिन तक देवी के चरणों में बैठा रहा, स्वयं ने एक विरजा बनायी और अपनी इच्छापूर्ति की कामना से बार बार उसे गाया।

दूसरी ओर किसी कारणवश बादशाह को अपना निर्णय बदलना पडा। चढाई को रोक दिया गया। फौजें



वापस दिल्ली लौट गइ। बादशाह ने एक विशेष दूत द्वारा करणसिह को फरमान भेजा कि वह दिल्ली दरबार में उपस्थित हो। करणसिह ने अपने दरबारिया की सलाह ली। उनको दाल मे कुछ काला नजर आया और उन्हाने सोचा कि बादशाह उनको जाल में फसाकर उनको समाप्त करने का षड्यन्त्र रच सकता है।

करणसिह ने कहा, मुझे करणीजी की कृपा पर अनन्य विश्वास है। उनकी कृपा से मै आने वाले खतरे को पार कर सकूगा। उनका नाम रूपी कवच धारण कर मै बहादुरी के साथ इस परिस्थिति और बादशाह का मुकावला करूगा।'

यह सोचना उचित नहीं होगा कि बादशाह न करणसिह को मारने की योजना इसलिये छोड दी कि उसको अपने अन्याय का भान हो गया था। औरगजेब ने विचार किया होगा कि राजा करणसिह जैसे राजपूत की स्वामीभक्ति और बहादुरी की उसके राज्य को बहुत जरूरत है करणसिह को औरगाबाद की सूबेदारी प्रदान कर दी। जगलधर बादशाह करणसिह ने इसका सब श्रेय करणीजी को दिया और उनकी याद में औरगाबाद में एक मन्दिर बनवाया। उस गाव का नाम करणपुरा पडा।

बीकानेर महाराजा गजसिहजी की रक्षा करना

जोधपुर राज्य पर महाराजा अभयसिह का शासन था। अभयसिह एक योग्य सेनानी और बुद्धिमान राजनयिक था।

उसने पिछले वर्ष ही योग्य नायको के नेतृत्व में एक फौज बीकानेर पर आक्रमण करने भेजी थी जो विफल रही थी। अभयसिह स्वय ने बीकानेर पर आक्रमण का नेतृत्व किया। रास्ते मे भगवती करणीजी को नमस्कार करने वह देशनोक ठहरा। वह चाहता था कि देशनोक के चारण उसको उसी प्रकार सम्बोधित करें जिस प्रकार वे बीकानेर के राजा को सम्बोधित करत थे। लकिन बहादुर चारणों ने बिल्कुल इनकार कर दिया।

अभय ने बीकानेर पर चढाई कर दी। नगर की बाहरी किलेबदी की रक्षक सेना कत्लेआम आक्रमण को बर्दाश्त न कर सकी। बीकानेर की ओर से कुअर गजसिह और रावल रायसिह ने लूट से क्रोधित होकर प्रत्याक्रमण की योजना बनाई। महाराजा जोरावरसिह ने उनका रोका और उनकी फौज किले म लौट आई। किले का घेरा जारी था। जोरावरसिह ने अपनी सुरक्षा को मजबूत किया, लेकिन स्थिति निराशापूर्ण थी। जोरावरसिह स्वय एक योग्य कवि थे और उसने अपनी सरक्षक देवी को इस प्रकार सम्बोधित किया

डाढाली डोकर थई, का थू गई विदेस,
खून बिना क्यू खोसजे, निज बीका रो देस।

जब माँ ने सफेद चील का रूप धारण किया

उसी समय एक सफेद चील प्रकट हुई जो भगवती करणीजी का सूचक है। इस समय पर सफेद चील के दशन ने जोरावरसिह को आश्वस्त कर दिया। उसने अपने प्रयास पुन प्रारम्भ कर दिये और अजमेर के महाराजा जयसिह के पास एक मिशन भेजा। आमेर के महाराजा ने तीन लाख की मजबूत सेना को जोधपुर पर चढाई करने का आदेश दे दिया। इसकी जानकारी मिलते ही अभयसिह ने फैसल के लिये अतिम क्षण प्रयास और किया। और जल्दी ही जोधपुर की रक्षा के लिये चलना पडा। लौटती हुई जाधपुर की फौज की बीकानेरियो द्वारा बुरी तरह पिटाई की गई। इस प्रकार एक बार पुन भगवतीजी के आशीर्वाद से बीकानेर की सकट के समय रक्षा हुई।

बार-बार के कत्लेआम और इधर-उधर के भटकने से तग आकर गजसिह देशनोक के लिये चल दिया। वहा मार्गदर्शन की कामना से पूजा और प्रार्थना की। वह जम कर लडाई करने के लिये कटिबद्ध था बशर्ते कि भगवती ऐसी इच्छा प्रकट करे।

समस्त सावधानी का परित्याग करते हुए गजसिह ने व्यक्तिगत रूप से अपने आदमियों का नेतृत्व किया। एक गोली उनके घोडे को लगी और वह खत्म हो गया लेकिन गजसिह ने यह महसूस किया कि जिस चूडा विभूषित बाह ने जैतसी के विजय की भविष्यवाणी का सकेत दिया था, वही हाथ उसकी रक्षा कर रहा है।



महाराजा ने दूसरा घोड़ा लेकर पुन आक्रमण आरम्भ किया। जोधपुर की फौजे इतनी कृत-सकल्प थी कि इस आक्रमण का भी वही हाल हुआ जो पहले का हुआ था लेकिन गजसिह मन्त्रमुग्ध-सा आगे बढता चला गया। उसकी ओर आने वाली गोलियो से उसकी सुरक्षा वही चूडाधारी बाह कर रही थी।

जब वापस लौटती हुई फौजों पर जयपुर के स्वरूपसिह के नेतृत्व में आक्रमण हुआ और उनका पीछा किया गया तो जोधपुर फौज मे भगदड़ मच गई। इस प्रकार सवत् 1804 में महाराजा गजसिह देवी हस्तक्षेप से गोलिया की बौछार से बचते हुए विजयी हुए और अपने राज्य की रक्षा की।

अब तक करणीजी के केवल उन्हीं चमत्कारो का वर्णन किया गया है जो करणीजी के जन्म-स्थान अथवा रहने के स्थान मे सम्बन्ध रखते है। देवी कृपा का उन सभी को लाभ मिलता है जो उसमे विश्वास रखते है। चूकि शक्ति पूजा और करणीजी महाराज की पूजा राठौडो द्वारा प्रमुख रूप से की जाती रही है, अत राठौड राज्य इनके चमत्कारो का प्रमुख क्षेत्र रहे हैं। लेकिन यह सोचना गलत होगा कि देवी अभिव्यक्तिया किसी क्षेत्र विशेष तक ही सीमित रहती है। जब भी और जहा भी भक्त पुकार करता है, उसकी प्रार्थना सुनी जाती है। देवी कृपा की अभिव्यक्ति प्राय अन्य साधारण घटनाओ की तरह होती रहती है। लेकिन जब भक्त पर महान सकट होता है और भक्त तीव्रता के साथ पुकार करता है तभी देवी हस्तक्षेप ऐसा रूप धारण करता है जो स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है और जिसका चमत्कार के रूप में वर्णन किया जाता है।

अलवर के महाराजा बख्तावरसिह की रक्षा करना

उस समय दरबार मे हनुतिया का उम्मेदराम बारहठ भी मौजूद था। वह करणीजी का एक बडा भक्त था। वह बोला 'हमारे धर्म का आधार प्रचार और पाखण्ड नहीं है। जहा आवश्यक श्रद्धा और भक्ति है वहीं चमत्कार हो सकता है। यदि आप भगवती श्री करणीजी मे पूर्ण विश्वास व्यक्त करो तो मैं तुरन्त आपके आराम के लिये उनके हस्तक्षेप के लिये प्रार्थना कर सकता हू।

महाराजा निराकार उपासक थे लेकिन वह इस बात के लिये राजी हा गया कि भगवती और बारहठ को एक मौका दिया जावे। बारहठ ने अग्नि पर घी डाल कर ज्योति प्रज्वलित की। इस ज्योति को भगवती का रूप मान कर विशेष विरजाए गाइ। महल के शिखर पर एक सफेद चील जिसे करणीजी का स्वरूप माना जाता है, आ कर बैठ गई। जैसे ही महाराजा ने चील को नमस्कार किया, दद समाप्त हो गया। इससे सभी शुभचिन्तकों को अपार प्रसन्नता हुई। दर्द से मुक्त राजा ने लगभग 500 रसूलशाही फकीरों को अपने राज्य से निकालने का आदश दे दिया जिन्होंने लोगा के भोलेपन के कारण लूट मचा रखी थी। करणीजी के प्रति अपना सम्मान व्यक्त करने के लिये उसने एक दुर्लभ वस्तु देशनोक को भट में भेजी।

अपने नये भक्त उन्हीं बख्तावरसिह के समय में भगवती राजवश की रक्षा के लिय पुन अभिव्यक्त हुई। बख्तावरसिह को उसके सकुटुम्बी जयपुर के राजा न धोखे से घेर लिया। जयपुर का यह दावा था कि आमेर राज्य स्थित अलवर वाला की जागीर मे कर के रूप में दो लाख रुपया बकाया है। इसके बदले अलवर राजा ने पाच किले समर्पित करने का वचन दिया। तब उसको मुक्त किया गया। चार किला के नायकों ने समझौते की शर्तों का पालन किया लेकिन पाचवें बेहरोड के नजदीक बलनेवगढ़ के नायक ने, जो कि एक बहादुर राजपूत था, समर्पण करने से इनकार कर दिया। उसका तर्क यह था कि उसकी स्वीकृति के बिना उसके किले से सम्बन्धित काई भी समझौता गैर-कानूनी था। अपनी छोटी सी फौज की मदद के लिये उसने खेतडी से सहायता मागी। लेकिन खेतड़ी से सहायता पहुचने से पूर्व ही जयपुर की फौजों ने घरा डाल दिया। घिरी हुई फौज को शीघ्र ही पानी की कमी सताने लगी और यह महसूस हुआ कि प्यास के मारे उनके प्राण निकल जावेंगे। नायक ने अपनी दारुण कथा बख्तावरसिंह को पहुचाई। उसने आश्वासन दिया कि यदि पानी की व्यवस्था हो जाये तो वह हमले को तब तक रोक रखे

सकता है जब तक कि खेतडी से मदद न मिल जाय और यह मदद पहुचते ही वह हमले को विफल कर देगा। राजा को अपने वफादार नायक को बचाने का अन्य कोई उपाय नजर नहीं आया सिवाय इसके कि वह करणीजी से प्रार्थना करे। उसने करणीजी की प्रार्थना में दो दोहो की रचना की। तभी थोडे मे बादल आये और उन्होने किले पर वर्षा कर के सभी तालावो को लबालब भर दिया। कुछ समय पश्चात् खेतडी से मदद भी आ पहुची। किले से एक इशारा मिलने पर खेतडी की फौज ने जयपुरिया पर पीछे से हमला बोल दिया जबकि किले की फौज ने किले से दुश्मन पर भयकर गोलाबारी शुरू कर दी। हमलावर शीघ्रता से पीछे हटे और किला अलवर के पास रह गया।

जब बख्तावरसिहजी ने अपनी तलवार की मूठ पर माँ के दोहे खुदवाये

इस विजय के बाद श्री करणीजी के दोहों की रचना की। ये दोनों दोहे बख्तावरसिह के मन्त्र बन गये। उसने उनको अपनी तलवार की मूठ पर खुदा लिया। ये दोहे इस प्रकार है

धम धम वाज त्रमागला, हुवै नकीबा हल्ल।
सादा आजे सम्मली, किनियाणी करनल्ल।
बाढाली बहताह, राढाली त्रम्मक रुडै।
साढाली सहताह, डाढाली ऊपर करै।

अलवर का धरना

(जो सत्याग्रह से शुरू होता है और आत्मदाह के साथ खत्म होता है।)

भगवती करणीजी के देवी हस्तक्षेप का एक और वर्णन यहा किया जाता है। इसका सम्बन्ध चारणों द्वारा अन्याय के विरुद्ध अपनाए गए 'धरना' से है जो सत्याग्रह से शुरू होता है और आत्मदाह के साथ समाप्त होता है।

इस घटना के घटने के समय तक अलवर के महाराजा विनयसिह का धर्म में विश्वास नहीं था। उनके आचरण से चारण दु खी हो गये और अलवर के चारणो ने धरना शुरू कर दिया। राजा के इशारे पर प्रशासन ने धरना रोकने के लिये कई उपाय किये। दु खी चारण धर्म के नाम पर सबकुछ उत्पीडन और कत्लेआम बर्दाश्त करने के लिये कृत-सकल्प थे। इससे उन्होने जनता की सहानुभूति अर्जित कर ली। महाराजा ने अपने नायक सिपाहियो को चारणो को तितर-बितर करने का आदेश दिया। इस आदेश ने लडाना की नरूका फौज को उत्तेजित कर दिया अत उन्होने विद्रोह कर दिया और धरने की रक्षा करने के लिये आगे बढ गये। नायक सिपाहियों ने आदेश मानने से इनकार कर दिया। महारानी शाहपुरा के रानावत परिवार की एक महिला थी। उसने धरना के लिये जन सहयोग का आह्वान किया। अलवर के लोगों ने इसके जवाब में चूल्हे बन्द कर दिये। सभी रसोईघर, जिसमें महल का रसोईघर भी शामिल था बन्द हो गये। व्यापारियो ने दुकान बन्द कर दीं और पूर्ण हडताल प्रारम्भ कर दी। शहर के सैकडो मन्दिरों मे पूजा बन्द कर दी गई। सहानुभूति रखने वाली भीड ने धरना वालो के चारों ओर घेरा डाल दिया ताकि वे अपनी कार्यवाही विधिवत् बिना किसी हस्तक्षेप के कर सके।

लोगो ने राजा को सलाह दी कि अब भी वह झुक जावे। लेकिन राजा को कोई पश्चात्ताप नहीं था। उसने दरवाजे बन्द कर लिये और किसी से भी बात करना बन्द कर दिया। लोगों को दूर रखने के लिये वह एक चद्दर ओढकर लेट गया। चारों और सन्नाटा छाया हुआ था और वातावरण भयकर विपत्ति की आशका से त्रस्त था। क्रोधित महाराजा ने महारानी रानावतीजी से भी बातचीत करने से मना कर दिया। उसको महारानी के धार्मिक और पवित्र विचार पसन्द नहीं थे।

सामान्य असहयोग से परेशान होकर महाराजा ने अपने मुसलिम प्रधानमत्री उस्पन्दयार को बुलाया और उसे अधिकार दिया कि वह धरना रोक दे और उसमें भाग लेने वालों को हटा दे। महाराजा ने आदेश दिया 'अधिकारियों और फौज के राजद्रोही आचरण से मैं अप्रसन्न हू। मेरे नजदीक के लोगों में तुम्हीं एक हो जिस पर अब भी मुझको विश्वास है।



दूसरी ओर जब धरना निर्णायक स्तर पर पहुच गया तो सयोजक कविनाथ रामनाथ ने भगवती करणीजी से हस्तक्षेप करने की प्रार्थना की।

जिस समय यह प्रार्थना की गई उसी समय विनयसिह ने अपने प्रधानमत्री (दोनो एक ही कमरे में बन्द थे) से पूछा कि उसके पलग के नीचे कौन है। प्रधानमत्री ने कहा, 'मालिक। आपके पलग के नीचे कौन हो सकता है जबकि सुरक्षा सैनिक चारो ओर आपकी रक्षा के लिये पहरा दे रहे है ?'

'तब मेरा पलग कौन हिला रहा है ?' यह कहकर विनयसिह अपने हिलते हुए पलग से नीचे उतर आया।

प्रधानमत्री ने कहा, 'महाराजा। आपने तो केवल पलग को हिलते हुए देखा है लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि सारा महल ही हिल रहा है।'

महाराजा ने भी यह देखा और महसूस किया कि झटकों, जिन्होने भूकम्प जैसा रूप ले लिया था, की आवृत्ति बढ गई है। महारानी रानावती पास के ही कमरे मे थी। उसने महाराजा और दीवान के बीच इन बातों को सुन लिया था। अपने हठीले पति पर इन झटको क आवेग के प्रभाव से वह डर गई। सकट के समय एक हिन्दू पत्नी की सर्वप्रथम कामना अपने पति की सुरक्षा होती है। अपनी अभिभावक देवी भगवती करणीजी को सम्बोधित करते हुए वह बोली, 'कृपया मेरे पति को बचाओ। उसके दोप माफ कर दो। उसको और अधिक सजा देने के बजाय आप उन्हे सद्बुद्धि द ताकि वे अपने आचरण में निहित अन्याय को समझ सके। उन्ह सही मार्ग बताइये ताकि वे अपने आदेशों को बदल दे, धरने मे हस्तक्षेप न करें और लोगों पर जो अन्याय किये गये है उनका प्रतिकार कर सकें।

खतरे से भयभीत प्रधानमत्री ने भी अपने मालिक को सलाह दी, 'मालिक इन झटकों का आवेग करणीजी की नाराजगी के कारण हो सकता है क्योंकि प्रतिरोध करने वालों ने उनक हस्तक्षेप के लिये प्रार्थना की है। मैं समझता हू कि यह अवतार सकट के समय अपने भक्त की रक्षा के लिये शीघ्र आने के लिये बहुत प्रसिद्ध है। मैं मुसलमान हू और मेरा धर्म ऐसे विचारों की अनुमति नहीं देता। फिर भी हिन्दू मालिक क प्रति मेरी निष्ठा मुझ मजबूर करती है कि मैं आपको आपक धर्म और कर्तव्यों की याद दिलाऊ। जो विधाता को मजूर है सो होगा लेकिन मै यह नही चाहता कि आगे आन वाल लोग कहें कि एक गैर-हिन्दू दीवान की अनुचित सलाह क कारण अलवर घराने को दुर्दिन देखने पडे।'

विनयसिह अब भी अडा रहा। उसने दीवान की सलाह को मानने से इनकार कर दिया। दीवान ने अपन पद के प्रमाण-पत्र और मुहर अपने मालिक के चरणों में रख दिये और त्याग-पत्र देकर अपने घर लौट गया।

कुछ समय पहले महाराजा का बडा भाइ हरनाथसिह चारणो और धरने के प्रति महाराजा की नीति से अप्रसन्न होकर राज्य छोड कर चला गया था।

भूकम्प के झटकों की तीव्रता बढती जा रहा था। उस्पन्दयार बेग के जाने तथा उसकी सलाह ने महाराजा पर अच्छा असर छोडा। महाराजा अब अकले रह गये थे। महारानी की प्रार्थनाओं को सफलता मिली। भगवती करणीजी की कृपा से उसका हृदय परिवर्तन होने लगा और उसको अपने आचरण के अन्याय की समझ आने लगी। इसलिये उसने हरनाथसिह को बम्बई से बुलाया और कहा कि वह समस्या का ऐसा शातिपूर्ण हल निकाले जिससे उसकी राजसी प्रतिष्ठा को भी आच न आवे। चारण अपनी राजभक्ति क लिए विख्यात हैं। उन्होंने अपने स्वामी की प्रतिष्ठा को ठेस पहुचाने की स्वप्न में भी कामना नहीं की थी। उन्होंने इस सदाशयता तथा प्रस्तावित फैसल को तुरन्त स्वीकार कर लिया। सफल धरन का समाप्त कर दिया गया और इस अवसर पर कवि रामनाथ न न्याय क लिये भगवती करणीजी क हस्तक्षेप स अनुगृहीत होकर इस काव्य की रचना की—

व्है सिंघ होफरडीह, पतसाहा परचा दिया।
डग भर डाकरडीह, मा आई मवात में।

अलवर मे मॉ करणी का शानदार मन्दिर

परिवर्तित महाराजा ने अपने हृदय परिवर्तन की खुशी में अलवर किले मे करणीजी का एक शानदार मन्दिर बनवाया।

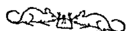
भक्तों की पुकार पर करणीजी के हस्तक्षेप की असख्य घटनाओं का वर्णन करते है। मचाई और न्याय में विश्वास स्थापनार्थ तथा ईश्वर के अवतारों म विश्वास उत्पन्न करने के लिये ऐसे हस्तक्षेप सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आधार बनते है। जब कभी किसी अन्याय पीडित दु खी भक्त ने भगवती करणी की सहायता मागी है उसकी अभिभावक देवी ने प्रचुर मात्रा मे यह प्रदान की है। इससे भक्ता की श्रद्धा और भावना और मजबूत हुइ है। सकट के समय शताब्दियों से लोग करणीजी के आशीवाद की माग करते रहे है और व लोग भाग्यशाली है जिनको सलाह और मार्गदर्शन मिला और इसके फलस्वरूप शाति और आनन्द है। ❑

पडसी जद काम दोडमी पाळ,
डाढाली असुरा भुज डाण।
वा आवै ऊपर इक ताळी
देशनाक वाळी दीवाण ।। 1 ।।

बीकानेर हुवा बिलसाणी
बिरदाणी बहणी वरग्ग।
शाह कृक काना सुनियाणी,
किनियाणी! बधियो करग्ग ।। 2 ।।

दोख रोग मेटण देहारी,
जेहारी जपणा जश जाप।
कहारी रख्या तै कीधी
मेहारी मोटी माँ बाप ।। 3 ।।

बेद पुराण कायवा बरणी,
अघ हरनी जरनी अजर।
सेवग तू चाहै सुख सरनी
तो करनी! करनी! याद कर ।। 4 ।।



श्री तेमडाराय (आवडमाताजी) दर्शन



श्यामसुन्दर-शारदादेवी गूँधड़ा

रोहितकुमार-कृष्णा गूँधड़ा, अजय-रश्मि कोठारी

चमत्कार ही चमत्कार

श्री तुलसी नागरी भण्डार
पुस्तकालय एवं वाचनालय
स्टेशन रोड, बीकानेर

चमत्कार ही चमत्कार

श्री करणीजी का जन्म से पूर्व माँ देवल के स्वप्न मे आना

श्री करणीजी जब माता के गर्भ मे आइ उस समय वे अपने पिता की सातवीं कन्या मन्तान थीं। उस जमाने म कन्या के जन्म पर शोक प्रकट करते थे। लडके के जन्म पर अधिक प्रसन्नता होती थी। जब श्री करणीजी की माता के गर्भ होने का पता मेहाजी को चला तब उनको ऐसा लगा कि इस बार अवश्य पुत्र ही होगा। यह साचकर उन्हाने 8व माह पर ही अपने घर प्रसूतिकाल क निकट होने के कारण दो दाई मोढी मूलाणी और अक्खा ईदाणी को रोक लिया, परन्तु 10वें माह के समाप्त होने पर भी प्रसूति नहीं हुई। प्रतीक्षा करते-करते 12वा 15वा माह भी निकल गया तब दाई मोढी मूलाणी यह कहकर वहा से निकल गई कि न मालूम बच्चा कब जन्म लेगा। परन्तु दूसरी दाई अक्खा ईदाणी वहीं रुकी रही। इसी चिन्ता में एक रात को माता निद्रा में सो रही थी कि उनको स्वप्न में दिखा कि 'सामने एक लडकी हाथ मे त्रिशूल लिए खडी है और माता को कह रही है कि मै तेरे उदर से जन्म लूगी। मै अपनी इच्छा से 21वें महीन के बाद गर्भ से बाहर आऊगी।' 21वे महीने के समाप्त होने पर वष सवत् चौदह सौ चम्मालीस की शरद ऋतु आसोज माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि वार शुक्रवार क दिवस यश की बेला म जब सभी नक्षत्र आदि उत्तम स्थान पर आरूढ थे और सिद्धि योग उपस्थित हो गया था उस धन्य घडी में सोयाप गाव क महाजी किनिया के घर जगत जननी जगदम्बा ने अपनी सम्पूर्ण दिव्यकलाओ के साथ अवतार ग्रहण किया।

जो अखड ज्योति स्वरूपा, आदि शक्ति महाकाली जगन्माता है जो आदि शक्ति नवलाख शक्तियो की शीर्ष मणि है ऋषि-मुनि करबद्ध जिनके नाम का जप करते है, तथा वह उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्ह स्वर्ग, सिद्धिया और मुक्ति प्रदान करती है। जो तीनों ही लोका का मचालन करती है। जगत में सृजन और विसर्जन करती है, उसी अश मे से शगत श्री करणीजा न जगत म शक्ति का उज्ज्वल यश विस्तार करने, राक्षसों का नाश करन और धम की स्थापना करन के लिए धरती पर अवतार धारण किया।

विक्रम सवत् 1444 आश्विन शुक्ल 7 शुक्रवार (दिनाक 20 मितम्बर 1387) को फलौदी (जाधपुर) के पास सुवाप गाम मे चारण कुल के मेहाजी किनिया के घर श्री करणीजी का अवतरण हुआ।

चवदेसौ चम्माळमें, सातम सुकरवार।
आसोज मास उजाळपख, आई लियो अवतार।।

बुआ की अगुलियो को ठीक करना

7वे दिन जब सूर्यपूजन हुआ तब मेहाजी की बहिन सर्वप्रथम प्रसूति-गृह मे पहुची कन्या को देखकर उसके सिर पर ठोला (इचका) देते कहा कि फिर पत्थर आ पडा । बुआ ने दु खी मन से नवजात कन्या क सिर पर ठोला मारा था क्योंकि उनको आशा थी कि इस बार भतीजा ही होगा और मैं भाई के घर से खूब उपहार व बधाई लेकर जाऊगी। जैसे ही ठोला मारा उनकी अगुलिया वैसी की वैसी मुडी हुई रह गई जो वापिस खुल न सकीं। जब करणीजी की आयु 5 वर्ष की थी तब एक दिन बुआ स्नान करा रही थी। एक हाथ से बुआ उनको ठीक से नहीं नहला रही थी तब करणीजी ने पूछा कि आप दोना हाथों से क्यों नहीं नहला रही है? तब बुआ ने जन्म के समय की सारी घटना सुनाई। फिर



करणीजी ने उनका हाथ अपने हाथ मे लेकर कहा कि आपका हाथ बिलकुल ठीक है। बुआ ने अपने भाई व भाभी से इस चमत्कार की चर्चा की। यह देखकर पिता मेहाजी को भी आश्चर्य हुआ और विश्वास हो गया कि मेरे घर देवी का असाधारण अवतार प्रकट हुआ है। इस घटना के बाद बुआ ने कहा कि इस कन्या को साधारण न समझे, यह ससार मे अपनी कुछ करनी दिखलायेगी। तब बुआजी ने कन्या के जन्म के नाम रिधुबाई को बदलकर करणी नाम रखा। इस दिन से ही रिधुबाई का नाम करणी प्रसिद्ध हुआ और करणीजी विश्वविख्यात हुई।

पिता को जीवनदान देना

एक रात को करणीजी के पिता खेत से घर लौट रहे थे। चौमासे की ऋतु होने के कारण जगल मे घास बहुत अधिक बढा हुआ था। मार्ग मे उनका पैर एक काले सर्प के फन को छू गया और सर्प ने डस लिया। सर्प इतना जहरीला था कि मेहाजी घर पहुचने से पहले ही अचेत होकर भूमि पर गिर पडे। देर रात तक घर नही पहुचने के कारण तब उनके परिवार को चिन्ता हुई। सभी लोग ढूढने निकले तब रास्ते में देखा कि मेहाजी गिरे पडे हैं। गौर से देखा तो पता चला कि उनको साप ने काटा है जिसके कारण इनकी मृत्यु हो गई है। कहा जाता है कि साप के काटने पर उस शरीर को जल्दी नही जलाया जाता है। मेहाजी के मृत शरीर को उठाकर घर ले आये और इलाज व उपचार करते रहे। घर के आगन मे ही बालिका करणीजी सो रही थीं। ऐसा कोतुहल देखकर वे जाग गई और अपने पिता के पास आकर बैठ गई। किसी ने भी उनको बताना उचित नहीं समझा कि इस बालिका को क्या बताए कि उसके पिताजी मर गये हैं। जिस जगह सर्प ने डसा, उस पर करणीजी ने अपना हाथ रखा और पिताजी से कहा कि पिताजी उठिये, अपने काम पर लगिये। ऐसा कहते हैं कि मेहाजी तत्काल उठ बैठे हुए।

राव शेखा की फौज को भोजन कराना

करणीजी के चमत्कारों की चर्चा पूगल के भाटी राव शेखा तक पहुची तब उसके भी मन में दर्शन करने की जिज्ञासा पैदा हुई। वह अपने सैन्यदल सहित सुवाप पहुचा। रास्ते में करणीजी दही व बाजरे की रोटियों का भाता (पिता के लिए भोजन) लिये मिल गई। शेखा ने उनके पैरों में नमस्कार किया। करणीजी न कहा कि आप मेरे मेहमान है, कोटडी पधारो। शेखा ने बताया कि हम शत्रुओं से वैर लेने जा रहे हैं, मार्ग मे आप क दर्शन हो गये है, शुभ शकुन है, हमको जाने की आज्ञा दीजिये। करणीजी ने कहा—घर आया मेहमान भूखा नहीं जा सकता। शेखा ने कहा—बाईसा, हम लगभग डेढ सौ आदमी हैं। इससे हमारा पेट नहीं भरेगा। करणीजी ने कहा कि थोडा बहुत चखकर ही सन्तोष कर लेना। करणीजी की आज्ञानुसार सभी भोजन चखने के लिए बैठ गये। करणीजी ने उस दही और थोडी-सी रोटियों से सारे दल का भोजन करा दिया फिर भी दही और रोटिया कम नहीं हुए। यह देखकर शेखा करणीजी के चरणा मे गिर पडा और कहा कि हमें आशीर्वाद दीजिए ताकि हमारी शत्रुओ पर विजय हो। करणीजी ने शेखा को कहा, 'जा, तू विजयी बन कर लौटेगा'। किसी ने कानाफूसी की कि दही का शकुन अच्छा नहीं होता, मुझे विजय होने म सन्देह है। युद्ध के दौरान वह शाकुनिक मारा गया। तब से दही का शकुन शुभ माना जाता है। इस चामत्कारिक विजय के बाद राव शेखा को करणीजी की दैवी शक्ति पर अटल विश्वास हो गया और वह उनका अनन्य भक्त बन गया। बाद में राव शेखा ने करणीजी को अपनी धर्मबहिन बनाया।

श्री करणीजी का विवाह और देपाजी का भ्रम-निवारण

करणीजी की आयु के साथ मेहाजी की भी चिन्ता बढती गई। पिता को चिन्तित देख करणीजी ने अपनी सहेली के द्वारा पिता को कहलाया कि मेरा विवाह जागळू राज्य के साठीका ग्राम में कळूजी के पुत्र देपाजी के साथ सम्पन्न होगा। शिव के अवतार श्री देपाजी न करणीजी से साधारण रीति स विवाह सम्पन्न किया। मेहाजी ने दहेज में खूब धन, चार सौ गायें इत्यादि दिये मगर देपाजी ने यह कह कर मना कर दिया कि या" में त

जायग। करणीजी ने हठ करक लगभग दो मौ गाय अपन माथ ले लीं क्योंकि करणीजी का गाय ज्यादा प्रिय थीं।

वर-वधू सुवाप मे 3-4 कास ही पहुंचे थ कि सबका प्यास लगी। दूर-दूर तक कहीं पानी नजर नहीं आ रहा था। करणीजी ने रथ क अन्दर मे आवाज दी कि आप पीछ मुड़कर देख पानी की तळाइ पास ही नजर आ रही है। जैसे ही देपाजी ने पीछ मुड़कर देखा, तळाई स्वच्छ पानी मे भरी नजर आ रही थी। देपाजी के आश्चय का ठिकाना न रहा पानी मगवाने के बाद देपाजी ने करणीजी का पानी का पूछन के लिए जैसे ही रथ का परदा उठाया तो देखा कि वहा एक सिह पर सवार सृष्य का लावण्य धारण करने वाली रूप और सौन्दय की पुजरूप श्री महाशक्ति स्वय हाथ म त्रिशूल लिय हुए खडी हैं। यह देखते ही देपाजी दूर जा खड़ हुए, तब श्री देवी ने कहा कि आपको मैंने अपना अलौकिक और वास्तविक दोनों रूप बता दिय हैं। आप जिस रूप म मुझे देख सकते हैं क्योकि मेरा भौतिक रूप विरूप, काला रग मोटा और चौड़ा चेहरा है। परन्तु इसका कारण है मैं इस ससार में सासारिक सुख भोगन नहीं आइ हू। दीन-दुखिया पर अत्याचार करन वाले सम्पत्तियो का लूटन वाल व लाग जा अपना कतव्य भूल गय हैं उनको कतव्य का बाध करान मुझ इस लोक म आना पडा। मेरा पिछला अवतार आवडजी का अधिक सुन्दर होने के कारण मर कतव्यों की पूर्ति में कई बाधाए आयी थीं। उन्हीं की पुनरावृत्ति न हो, इस कारण श्री भगवती महामाया ने मुझे ऐसा भौतिक स्वरूप प्रदान किया है। इतना सुनाकर करणीजी ने पुन अपन भौतिक रूप में आकर देपाजी के हाथ से पानी पीकर देपाजी के भ्रम का निवारण किया।

श्रीकरणीजी रो छोटो साणोर

भोमजी वीठू कृत

इल उछब आज सुरा मिल आरभ,
उछव रग घरोघर आज।
गावे घणी वलों वल गायण,
शोभा जाण वणी सुरराज।।1।।

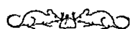
वाजत्र वाज वधावा वाजे,
रच आरभ राजावा रीत।
देपो साह रामचद दूलो,
सकत्या सिध करनादे सीत।।2।।

उछब घण पधारव आगण,
सुमंरा पग झाल सुहाव।
त्रह् लोका आइ जगतारण,
परसै जका वसुधर पाव।।3।।

वेहद मेह मोतिया वरसे,
इमरता रा धारा इण ओड।
इन्द्र झड घटा प्रेम री उमडी,
करगा कर निछरावल क्रोड।।4।।

सूरज धर ऊगो सोने रो,
रग भर कता छयो सिसराज।
मोह चढ़ै भोमा साठीको,
आज वीठू केलू घिन आज।।5।।

अर्थ—सायाप धाम म श्री करणीजी महाराज और शकरावतार देपाजी का शुभ विवाह सपन्न हुआ। वर-वधू का साठीका शुभागमन हुआ। उस समय की शोभा का कविवर वीठू साणार गीत मे वर्णन करते है कि आज धरा और स्वर्ग पर दवगण मिल कर उत्सव क शुभारम्भ का आयोजन कर रहे हैं घर-घर में उत्सव मनाया जा रहा है, उस समय साठीका इन्द्रलोक की भाति सुशोभित हो उठा है। राजरीत के अनुसार चहु ओर बधाई के सुमगल वाद्य बज रहे हैं। जहा बींदराजा कुवर देपाजी भगवान रामचन्द्र की भाति शोभायमान हो रहे हैं, तो नवलाख शक्तियो में शीर्ष श्रेष्ठ श्री करणीजी सीताजी की तरह सुशोभित हो रहे हैं। तीना लोको की तरण-तारणहार मा जगदम्बा जगत जननी जिनके समस्त जगत चरण पूजता है, वदन करता है वही भगवती बडे उत्सव के साथ साठीका म ससुराल के आगण मे पधार कर करणीजी ने अपने श्वसुर के चरण स्पर्श किये। आज अमृत की धाराओ में साठीका गाव में मोतियों का मेह बरस रहा है। प्रम की इन्द्रझड घटाओ से नेह का मेह



वरस रहा है कांटि-कांटि कर न्योछावर कर रहे हैं। आज साठीका में माने का सूर्य उदय हुआ है, तथा चन्द्रमा अपनी पूर्ण कलाओं में आकाश में रस भर रहा है। कविवर भामजी बीठू कहते हैं कि साठीका आज शोभा के उच्च शिखर पर आरूढ़ हो गया है। श्री कनूजी और सम्पूर्ण बीठू समाज धन्य हो गये हैं।

मागळिया राजपूतों को वरदान

देपाजी को अपना स्वरूप दिखाने के बाद जब करणीजी का रथ आगे बढ़ा तो रास्ते में मागळिया राजपूतों का गाव आया, जहा पर करणीजी ने गायों को पानी पिलाने का विचार कर आप एक कलिये (छोटी खेजड़ी) के नीचे बैठ गये। यहाँ पर एक कुआ चल रहा था। करणीजी ने वहा के राजपूत मागळिया को आज्ञा दी कि हमारे पशु बहुत प्यासे हैं लम्बी यात्रा से आए हैं, यहा पर इनको पानी पिलाओ। गाव के सभी निवासी श्री करणीजी को पहले से ही भलीभाति जानते थे। मागळिया ने निवेदन किया कि बाईजी हमारे गाव में कुआ एक ही है और इसमें पानी बहुत कम है गहरा भी बहुत है। फिर भी हम आपके पशुओं को बिना पानी पिलाये जाने देना भी नहीं चाहते हैं। इस पर करणीजी ने आज्ञा दी कि कल तुम हमारी एक मूर्ति बनाकर कच्चे चमडे में रख कुए में उतार कुए का नाम 'करणीसर' रख देना। इससे कुए में अखूट पानी हो जायेगा कभी कमी नहीं होगी तथा इस कलिये (छोटी खेजड़ी) की छाह (छाया) में हमने विश्राम किया है, इसको कभी मत काटना। यह वृक्ष सदैव फूलता-फलता रहेगा।

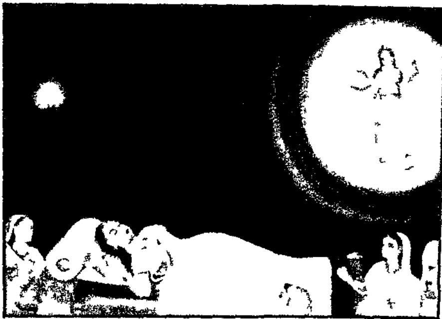
अणदा खाती की रक्षा का वरदान

वहा से रवाना होकर गौधूली समय वे एक गाव पहुचे। वहा का करणा (अणदा खाती) जो श्री करणी के चमत्कारो के बारे मे जानता था, उसने इनको वहीं पर रोक लिया। देपाजी ने ठहरना उचित समझा। नई दुल्हन श्री करणीजी को रसोईघर में बिठाकर अणदा की माँ यह कहकर अन्य गायो की दुहारी करने चली गई कि बाईसा चूल्हे पर दूध गर्म हो रहा है, थोडा ध्यान रखना उफान न आ जाय। गाव की अन्य औरतों से करणाजी बातों में लग गई, बातो-बातों में दूध को भूल गईं। जब दूध उफनता हुआ हंडिया के मुह तक आया तब एकाएक करणीजी के मुह से निकला 'बस यहीं तक'। करणा की माँ यह देख कि दूध मुह तक आ गया है, बाइसा ने जरूर पानी डाला है। अब सुबह घी क्या निकलेगा? अन्य औरतों ने बताया कि वो तो उठी ही नहीं है। करणीजी ने अणदा की माँ से यह दूध अलग रखवाया और कहा कि सुबह देख लेना कि पानी है कि दूध। सुबह सारा दूध घी बन गया। इस चामत्कारिक घटना के बाद अणदा की माँ ने करणीजी से कहा कि अणदा मेरा ही बेटा है जो कुए में नीचे उतर कर उसे ठीक करने का काम करता है। आप उसकी रक्षा का आशीर्वाद दें। करणीजी ने कहा कि उसे कहना—विपदा में हो तब मुझे याद कर लेना। इस आशीर्वाद वचन के साथ ही करणीजी व देपाजी ने वहा से प्रस्थान किया।

खेजडे की लकडी को नेहड़ी बनाना

जब करणीजी को अपने ससुराल साठीका में ऐसा लगा कि लोग चाहते हैं कि हमारी गायों के यहा रहने से, इनके कुए का पानी खत्म हो जायगा। तब हम यहा रहकर क्यों गायों को मरने दें। इसलिए करणीजी ने गोधन की रक्षार्थ सदा के लिए सपरिवार ससुराल साठीका का परित्याग कर दिया। जब श्री करणीजी अपने ससुराल साठीका का परित्याग कर सपरिवार रवाना हुए तब उन्होंने कहा कि जहा आज का सूरज अस्त होगा वही स्थान मेरी कर्मभूमि होगी। सारी उम्र वहीं गुजारूंगी। सूर्यास्त के समय करणीजी सपरिवार गौधन के साथ जिस स्थान पर पहुची वह स्थान था श्री नेहडीजी का मन्दिर (वर्तमान मे यह मन्दिर श्री करणी मन्दिर से 2 कि.मी. दूर पश्चिम की तरफ स्थित है)।

प्रात काल के समय श्री करणीजी ने एक सूखी खेजडी की लकडी को जमीन में रोप कर उस पर दही के छींटे मारे जिससे वह हरी हो गई जिसको करणीजी ने बिलौने के लिए नेहडी के काम लिया। वर्तमान में यह खेजडे की लकडी एक हरे वृक्ष के रूप में खडी है।



श्री करणीजी का जन्म से पूर्व माँ देवल के स्वप्न मे आना

चवदेसौ चम्माळमे, सातम सुकरवार।
आसोज मास उजाळपख, आई लियो अवतार।।

माँ ने स्वप्न मे देखा कि सामने एक लडकी हाथ मे त्रिशूल लिए खडी है और माता को कह रही है कि तेरे उदर से जन्म लूगी। मे अपनी इच्छा से 21वे महीने के वाद गर्भ से बाहर आऊँगी। 21वे महीने के समाप्त होने पर वि स 1444 आश्विन शुक्ला 7 शुक्रवार (20 सितम्बर 1387) को फलौदी (जोधपुर) के पास सुवाप ग्राम मे चारण कुळ मेहाजी किनिया के घर श्री करणीजी का अवतरण हुआ।

श्री

आप हैं हमारे और हम हैं तिहारे। गिनती सभव नहीं है हमसे असख्य उपकार है तुम्हारे।।

चौथमल बालचन्द दूगड़ (कोलकाता)

करणीदान सतोकचन्द बजरगलाल दूगड सरदारशहर (राज)

हनुतमल उदयचद चैनरूप सपतमल रणजीतमल सुरेन्द्र, श्रेयास कुलदीप सदीप, जीनेश दूगड़



बुआ की अगुलियो को ठीक करना



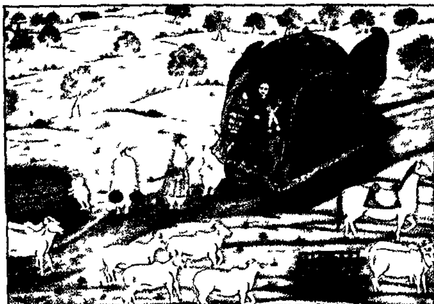
पिता को जीवनदान देना

MRT Signals Limited

Electronics And Electro Mechanical Engineers
(Contractors of Railway Signalling & Telecommunication)
2, Raja Woodmunt Street, 3rd Floor, KOLKATA 700001
Ph 22431573 22434739 Fax 91 33 2213 1828
E-mail mrtsignals@gmail com



राव शेखा की फौज को भोजन कराना



श्री करणीजी का विवाह और देपाजी का भ्रम-निवारण

SHREE BALAJI TEXTILE

Polistar Micro Wholesaler
Bankara HOWRAH (W B)

JAI AMBEY FABRICS

Fancy Market Shop No 59 Bankara HOWRAH (W B)
Resi Shree Krishna Apartment 89/250 Bangur Park 12th Lane Rishra HOOGLY (W B)
Rajkumar Sharma Mob 09051647561 09051647562



मागळिया राजपूतो को वरदान



अणदा खाती की रक्षा का वरदान

Hari Kishan, Sharwan Soni

23 B Kalakar Street
KOLKATA 7 (West Bangal)



खेजडी की लकडी से नेहडी बनाना



दुष्ट कान्हा का वध

Murli Manohar, Umesh Jaria (Soni) Shubhanker Jaria Brother's

39 Kali Krishana Tagore Street 4th Floor
Room No 421 Near HDFC Bank, Bada Bazar, KOLKATA 7



डाकू काळू पेथड और सूजा मोहिल का वध



मृत राजपूत को जीवित करना

JAY KAY ENTERPRISES

All Type of Coal & Coke Suppliers

Office 266/D/1, G T Road, Liluah, HOWRAH 711204

Ph 033-2655-9938 Mobile 9831558999 93396 01471

Sushil Anchalia



राव शेखा को बिजली के प्रकोप से बचाना



झगड़ूशाह की जहाज तार कर रक्षा करना

आस काँई उणरी करूँ है जिणरै दो हाथ
म्है लीधी जिण री शरण वा बीस भुजाळी मात

बसंत सिंधी पुत्र रतनलाल सिंधी

सत्यनारायण गार्डन 273 जी टी रोड लीलवा हावडा (पश्चिम बगाल)



बीका का देशनोक आगमन व बीकानेर की स्थापना

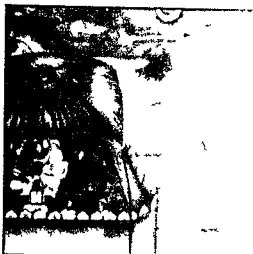


देपावतो का कोलायत स्नान पर प्रतिबन्ध लगाना



मूलचन्द राठी-हीरालाल राठी-जयकिशन राठी

चित्रकूट कोलकाता





बीका का विवाह ओर रा ः श ्   ः मुक्त कराना

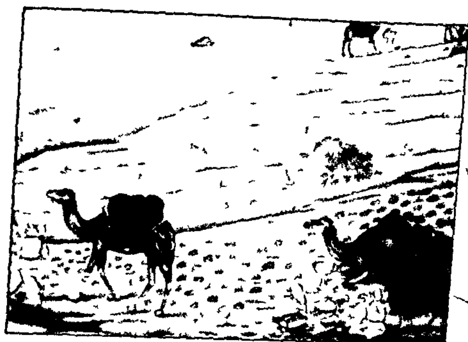


मदार राणा मोकळ के रथ मे सिह को जोतना

गोकुलचन्द मथुराप्रसाद राठी
एव समस्त परिवार

पुरुलिया (पश्चिम बगाल)

मोबाइल 09434749674 फोन 03252-222485



घोंथजी बीठू के ऊँट को काठ का पैर लगाना



गाय के बछडे को जीवनदान देना

प्रयागदास सारड़ा
सुशीलकुमार-सुरेशकुमार सारड़ा

पुरुलिया (पश्चिम बगाल)
मोबाइल 9434001155 फोन 03252-222043



अणदा खाती की रक्षार्थ लाव जोडना



महानिर्वाण



HINDUSTHAN ENTERPRISES

47 Rafi Ahmed Kidwai Road, KOLKATA 700016
Ph 22296217/7893 40017329 Resi 22262944/8529
Fax 2229-4628 Mobile 9830087588
E mail kamal_bhuwalka@hotmail com
Kamal Bhuwalka

श्री इन्द्रबाईसा के आशीर्वाद तले-बनारसीलाल भुवालका चिमनलाल भुवालका



भगवती श्री आवडजी की आराधना करते हुए श्री करणीजी



श्री करणीजी की आराधना करते हुए भक्तगण

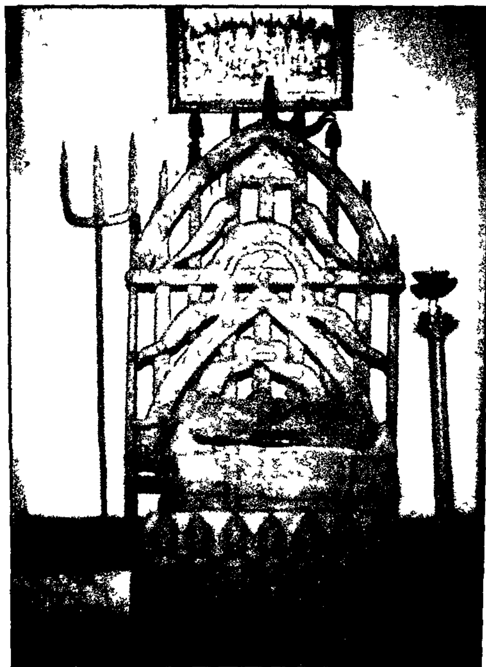


कनकमल कमलपत सिंघी

(घड़ी वाले)

मैन बाजार सगरिया (हनुमानगढ) मोबाइल 09414508479

ऋषभ जैन, अजीत जैन



श्री तेमडारायमाता दर्शन (करण्ड दर्शन) देशनोक

छगनलाल बोथरा की जयमालाजी की सा

टिप टोप साडी सेन्टर

सरदारशहर

मदन स्टोर-नवीन ट्रेडर्स

एस.एल. गारमेन्ट्स

गाधी नगर दिल्ली



श्री तोरण मन्दिर, साठिका (बीकानेर)

मंगलचन्द दूगड़

अभिकर्ता अल्पबचत, लोक भविष्य निधि

09414367827 01564-225522 (नि)

सरदारशहर (जिला चूरू)

करणीजी अपनी अन्तिम यात्रा के एक साल पहले तक यहीं पर रही थीं। उस नेहड़ी के नाम से यहा एक मन्दिर बना दिया गया। जिसे नेहडीजी का मन्दिर कहा जाता है। इसमे माँ की मूर्ति लगी है जिसकी दोनो समय पूजा होती है।

दुष्ट कान्हे का वध

नेहड़ीजी का स्थान साखला राजपूतो के शासनकाल से लेकर आज तक घास अधिक होने के कारण घोड़ों के चरने के लिए सुरक्षित रखा जाता था। करणीजी ने अपनी गाया के लिए भी इस स्थान को अधिक उपयुक्त माना। यहा का शासक कान्हा था। उसको जब पता चला कि करणीजी अपनी गाया के साथ यहा आकर रह रहीं हैं तब उसने अपने आज्ञापालकों को करणीजी की गायो को भगाने का आदेश दिया। ये लोग करणीजी की गायों को भगाने लगे तथा करणीजी के परिवार का भला-बुरा कहा। तब करणीजी ने क्रोध मे आकर कहा कि 'गीदडमुहों भाग जाओ। यह कहते ही इनके मुह गीदड के समान हो गये और भाग गये।

प्रातः जब करणीजी पूजा-पाठ कर रही थीं तब कान्हा अपने दल के साथ हाथी पर सवार हो वहा पहुचा। उसने भी कारणीजी को भला-बुरा कहा। तब पूजा-पाठ करके करणीजी बाहर आईं और कहा—बोल, क्या बोलता है ? कान्हा ने कहा कि तू इसी समय यहा से निकल जा। इस पर करणीजी ने जबाव दिया कि मेरी पूजा-मजूषा (करण्ड) को गाडी पर रखवा दे, मैं निकल जाऊगी। कहा जाता है कि हाथी से खिचवाने पर भी पूजा-मजूषा टस-से-मस नहीं हुई। काफी मेहनत के बाद एक पाया हिल गया। करणीजी ने कहा—यह करण्ड का पाया नहीं टूटा है तेरी आयु खण्डित हो गई है। कान्हा बोला—अगर तू ऐसी देवी है तो मुझे इसी समय मेरी मौत बता। काफी समझाने पर भी नहीं माना, तब श्री करणीजी ने अपने हाथ से एक रेखा खीच दी और कहा कि इसको पार करते ही तेरी मृत्यु होगी। जैसे ही घोडे को ऐड मार रेखा पार करने लगा तभी अचानक एक सिह ने प्रकट हो कान्हा का वध कर दिया। कान्हे के वध के बाद उसी समय करणीजी ने अपने अनन्य भक्त राव रिड़मल को जागळू का शासक बना, राजतिलक कर दिया।

डाकू काळू पेथड और सूजा मोहिल का वध

एक बार करणीजी पूगळ गइ हुई थीं। पीछे से मौके का फायदा उठाते हुए गोगोळाव के स्वामी डाकू काळू पेथड और सूजासर के स्वामी सूजा मोहिल ने अपना गिरोह बनाकर आतक फैलाना शुरू कर दिया। वे देशनाक पर डाका डालने का विचार कर देशनाक ओरण पहुच और करणीजी की गायों को घेर लिया। करणीजी की गाया का चरवाहा दशरथ मेघवाल उनसे जूझता हुआ काम आ गया। काळू पेथड ने करणीजी के प्रिय साड (बैल) को मार दिया तब सापू (लाखण की पुत्री) जो उन दिनों आयी हुई थी, उसने पुकार की कि दादीमा डाकूओं ने आपकी गायों को घर लिया है और दशरथ मेघवाल को मार डाला है। आप जल्दी आओ। सापू की पुकार सुन करणीजी तुरन्त त्रिशूल को हाथ मे लेकर खडे हो गये। डाकू काळू पेथड़ व सूजा मोहिल का त्रिशूल से वध कर गायों को डाकुओ से मुक्त कराया। करणीजी ने दशरथ मेघवाल को कोटवाल का पद देकर उसकी मूर्ति गुम्भारे के सामने स्थापित कर दी जहा करणीजी की जोत के बाद दशरथ की जोत उतारी जाती है। उसका स्थान मुख्य द्वार के उत्तर की ओर स्थित है।

मृत राजपूत को जीवित करना

साठीका को त्याग कर करणीजी लगभग 2-3 कोस दूरी पर 'बधाळा' गाव पहुचीं जहा पर मार्ग में एक नई दुल्हन को विलाप करते देखा। अपना रथ रोक कर रोने का कारण पूछा तो पास के लोगों ने बताया कि यह एक राजपूत की स्त्री है। इसका पति किसी दूर स्थान पर रहने वाला था और अपनी ससुराल से गौना करा कर लौट रहा था। रात्रि के समय यहा पहुचा और रात्रि अधिक बीत जाने के कारण यहीं गाव के बाहर की तिबारी म ही ठहर गये थे। रात को सोते समय इसके पति को पैणा (पीवणा) सर्प पी गया। जिससे इसके पति



की मृत्यु हो गई। यह मृत राजपूत की पत्नी है और अपने पति की मृत्यु के कारण रो रही है। यह वात सुनकर करणीजी को उस नई व्याही हुई राजपूतानी पर तरम आ गया। उन्हाने उमके पति के पास जाकर सिर पर हाथ रखते हुए कहा कि 'वीर, उठ खडा हो'। ये वचन श्रीमुख से निकलते ही मृत राजपूत तत्काल ही जी उठा और दोनों सैंजोडे (जोडे सहित) श्री करणीजी के पैरों में गिर पडे।

राव शेखा को विजली के प्रकोप से बचाना

एक दिन राव शेखा पूगल में दरवार लगाकर वैठा हुआ था। कवियों की कविताओ का आनन्द ले रहा था। कई कवियो की उत्तम कविताओं पर पुरस्कार भी दिया जा रहा था। इतने में आकाश से विद्युत्पात हुआ और राव शेखा के ठीक सिर पर विजली गिरी। उसी समय वह क्या देखता है कि श्री करणीजी उसके निकट खडी हैं और अपनी लोवडी की ओट में उसको लेकर विजली के प्रकोप से वचा रही है। बिजली के करणीजी की लोवडी से टकराकर वापिस आकाश को जाने के बाद शेखा की आखें खुलीं, परन्तु उम समय शेखा को करणीजी नजर नहीं आये। सभी दरवारियों ने भी करणीजी को देखा मगर वाद में उनको भी कुछ दिखाई नहीं दिया। उधर देशनोक में करणीजी की लोवडी के एक पल्ले को फैला हुआ देख पुत्र पूनाजी ने पूछा—माताजी यह लोवडी किसकी रक्षार्थ तानी गई है। करणीजी ने उत्तर दिया कि राव शेखा पर विद्युत्पात हुआ था उसे बचा लिया है। वह सकुशल है। इस घटना के बाद राव शेखा ने प्रत्येक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को देशनोक पहुचकर श्री करणीजी के दर्शन करना अपना नियम बना लिया था।

झगडूशाह की जहाज तार कर रक्षा करना

चित्तौड के महाराणा लाखा ने नाराज होकर प्रसिद्ध सेठ झगडूशाह को अपने राज्य से निष्कासित कर दिया। झगडूशाह करणीजी से रक्षा का वचन लेकर खींवसर (नागौर) बस गया। उसका व्यापार समुद्री मार्गों से होता था। कच्छ-भुज (गुजरात) में वसइ स्थान पर वन प्रासाद कदाचित् इसी झगडशाह से सवधित रह हों, जो उसके समुद्री व्यापार की पुष्टि करते हैं। खींवसर को अपना निवास स्थान वनाकर उसने समुद्री द्वीपा में जहाज द्वारा अपना व्यापार करना प्रारम्भ कर दिया। इसी वर्ष जव वह टापुओं से अपना जहाज लकर भारत लौट रहा था तो उसका जहाज अचानक समुद्री चक्रवात में फस गया। उन दिना के जहाज इतन वडे नहीं होत थे अत साधारण तूफान मे भी फस जाया करत थे। जब वह इस आपत्ति मे पड गया तो उमने श्री करणीजी को यह कहकर स्मरण किया कि आपने मुझको विपत्ति के समय रक्षा करने का वरदान दिया था। मैं इस ममय घार विपत्ति में ह। मेरी जीवनलीला समाप्त हो रही है। कृपया मरी इमसे रक्षा कीजिए। यह कहकर उसने करणी करणी की रट लगा दी। उस समय करणीजी अपनी सास क साथ गायों की दुहारी कर रहे थे। उन्होंने गाय दुहत-दुहते हा तुरन्त अपनी एक वाह पसार समुद्री चक्रवात में घिरे झगडशाह की जहाज को तार कर किनारे ला दिया। तत्पश्चात् दुहारी के बाद सास ने पूछा कि बहू तुम्हारी एक बाह की कचुकी (काचळी) कैसे भीगी है? तव करणाजा न बताया कि झगडूशाह की जहाज को तूफान स बचाया है जिससे मेरी बाह भीग गई है।

बीका का देशनोक आगमन व बीकानेर की स्थापना

जोधपुर से राव बीका अपने चाचा काधल के साथ 100 घुडसवार और 500 पैदल सेना लेकर नया राज्य स्थापित करने के ताने पर निकल कर करणीजी की सेवा में पहुचा। करणीजी ने उसे राजा बनने का आशीर्वाद देते हुए कहा कि 'बीका थारो परताप अठे जाथे सू सवाया वाजी हुसी अरु घणा ग्रासिया थारा पायनामो हुसी। करणीजी ने राव बीका को वरदान दिया कि 'ससार में उदयास्त तक तुम्हारी आन मानी जायेगी दशों दिशाओं की धरती तुम्हारे अधिकार में आयेगी तुम्हारी तेजस्विता, प्रताप बढेगा, तुम्हारे शत्रु सम्मुख युद्ध में मारे जायेंगे पराजित हो जायेंगे। दसों दिशाओं की मनचाही भूमि प्राप्त होगी, अच्छे गढ स्थापित होंगे।

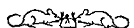
वरदायिनी करणी माता ने बीकानेर को सुमेरु पहाड़ के समान सुदृढ बना दिया। करणीजी ने बीका को आतुर नहीं होने का कहा। फिर बीका ने तीन वर्ष कोडमदेसर में भैंरवजी की मूर्ति स्थापना कर बिताये और दस वर्ष जागळू में काटे। इस तरह बीका अनेक वर्षों तक करणीजी के पास रहकर उनके निर्देशन में प्रयत्नशील रहा। बीका ने कोडमदेसर में अपन उपास्य भैरव के पास ही किले का निर्माण प्रारम्भ किया परन्तु करणीजी ने मना कर दिया क्योंकि यह सीमावर्ती किला भाटी और राठौडों के परस्पर झगड़े की जड़ बनता। करणीजी ने स्थानीय सरदार होने के कारण शेखा की पुत्री रगकवर स बीका का विवाह करा इसकी भी स्थिति सुदृढ कर दी। अब करणीजी ने बीका की स्थिति सुदृढ देख राती घाटी में बीकानेर दुर्ग की नींव (वि स 1542) रखी जिसका प्रतिष्ठा समारोह विक्रम सवत् 1545 वैशाख सुदी 2 शनिवार का मनाया गया। बीका ने करणीजी की आज्ञा से जोधपुर से पैतृक चिह्न प्राप्त किये। बीका को राजसिहासन पर बिठा, करणीजी बीकानेर की कुलदवी प्रतिष्ठित हुई तथा 'बीकानेर राज श्री करणीजी महाराज रो दियो' कहलाया।

देपावतों का कोलायत स्नान पर प्रतिबन्ध लगाना

दपाजी से विवाह सम्पन्न होने के बाद करणीजी की इच्छानुसार चार पुत्र पूर्नो नगो, सिहो और लाखण उत्पन्न हुए। जिनके नाम से देशनोक में चार बास बसाये गये। पूर्नोजी को वश के बधेपे का वरदान दिया। चारों भाइयों में लाखणजी सबसे छोटे छैल-छबीले, घूमने-फिरने व साथियों के साथ पार्टिया मनाने के शौकीन, सबको साथ लेकर जीवन-यापन करने वाली प्रकृति के थे। वि स 1514 कार्तिक शुक्ल चतुदर्शी को आप कोलायत का मेला देखने गये हुए थे। वहा तालाब में स्नान करत समय डूब गये। मित्रों ने उनक शरीर को बाहर निकाला तब तक उनकी मृत्यु हो गई थी। उनके शरीर को बैलगाडी पर सुलाकर देशनोक ले आये। करणीजी धर्मराज से अपने पुत्र को छीन कर वापस लायीं। कहा जाता है कि तीन दिन तक करणीजी ने लाखण को मृत रूप में अपने पास रखा तथा गुम्भारे को बद कर तपस्या की। उसे पुनर्जीवित कर धर्मराज से कहा कि जा, आज के बाद मेरा कोई भी वशज तेरे पास नहीं आयेगा। तब से देपावत मरकर काबा (करणी मदिर का चूहा) और काबा मरकर देपावत बनने का क्रम जारी है। करणीजी ने लाखण को पुनर्जीवित कर देपावतो के लिए कोलायत तालाब त्याज्य कर दिया। इसका देपावत पूर्णत पालन करते है और इस वर्जित तालाब के पानी का स्पर्श तक नहीं करते है।

बीका का विवाह और राव शेखा को कैद से मुक्त कराना

राव शेखा अपनी नियमित यात्रा के दौरान चतुर्दशी के दिन देशनोक आया हुआ था। करणीजी ने सोचा कि शेखा और बीका में परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर दिया जाए तो बीका की स्थिति सुदृढ हो जायेगी। यह विचार कर राव शेखा से चर्चा की तब शेखा ने यह कहकर रिश्ता नामजूर कर दिया कि बाईजी, आप अपने श्रीमुख से मुझसे वह करने के लिए कह रही है जिसका पालन करने में मैं अपना अपमान समझता हू। करणीजी ने कहा कि तू जो चाहे कर लेना तेरी पुत्री रगकवरी का विवाह तो बीका के साथ ही होगा। कुछ समय पश्चात् ही शेखा मुल्तान में पकडा गया। उसे वही बदी बनाकर कैदखाने मे डाल दिया गया। ठकुरानी ने करणीजी से कहा कि बाईसा, आप जैसी बहिन के होते हुए आप के भाई कारागार में वन्दी है। करणीजी ने ठकुरानी से बीका के लिए रगकवर का हाथ मागा। इस पर शेखा की पत्नी ने रिश्ता स्वीकार कर करणीजी से पूछा कि कन्यादान कौन करेगा? तब करणीजी बोले कि भाई ठीक समय पर पहुच जायेगा, चिन्ता न करें। करणीजी ने दिव्य शक्ति से सावळी (चील) रूप धारण कर तुरन्त मुलतान पहुच, शेखा को बन्धनमुक्त करा, अपनी पीठ पर बिठा, कन्यादान के समय मडप में पहुचा दिया। स्वय की उपस्थिति मे मुहूर्त पर उसके हाथ से कन्यादान करवा कर बीका का विवाह सम्पन्न करवाया।



मदार राणा मोकळ के रथ में सिह को जोतना

मदार का स्वामी राणा मोकळ मोहिल जाति का राजपूत और करणीजी का परम भक्त था। एक बार वह अपने शत्रुओ पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ। युद्ध के दौरान शत्रुओं ने उसके घोडो पर प्रहार किया जिससे उसके रथ का एक घोडा मारा गया फिर भी मोकळ बडी चतुराई से वीरतापूर्वक लड रहा था। परन्तु उसका रथ एक घोडे के मारे जाने के कारण आगे नहीं बढ पा रहा था। अब उसके सामने केवल दो ही मार्ग थे कि या तो वह युद्ध से हटे या शत्रुओ से मारा जावे। ऐसे कठिन समय में उसने अपनी रक्षार्थ श्री करणीजी की पुकार की और तत्काल ही क्या देखता है कि मरे घोडे की जगह उसके रथ में सिह जुता हुआ है। इस प्रकार एक घोडा और एक सिह मिलकर शत्रुओ के सन्मुख रथ को खींचकर ले जा रहे हैं। शत्रुओ को अदृश्य तीर-पे-तीर लग रहे हैं। इस घटना से मोकळ को विश्वास हो गया कि श्री करणीजी मेरे साथ हैं, जिनके कारण यह दैवी सहायता पाकर मैंने अपने शत्रुओ के साथ घोर युद्ध किया है और अत में सबको मारकर विजयी हुआ हू।

चौथजी बीठू के ऊट को काठ का पैर लगाना

पहले एक से दूसरे स्थान तक जाने तथा लम्बी दूरिया तय करने का एकमात्र सहारा ऊटो का था। एक बार इसी यात्रा के दौरान एक काफिले में चौथजी बीठू शामिल थे। उनके ऊट का एक पैर टूट गया। 'करणी चरित्र' मे श्री किशोरसिह बार्हत्पत्य ने 'बीठू' की जगह 'खाती' लिखने की भूल की है जिसे अन्य काव्योक्तियो में भी दुहरा दिया गया है। वस्तुत चौथजी बीठू तो देपावतो में दल्लाणियों के धडे म थे जिनके वशज विद्यमान है। ऊटो की कतार चौथजी को अकेला छोड आगे बढ गई यह आश्वासन देकर कि अगले पडाव से दूसरा ऊट लेकर भेज देंगे क्योकि घने जगल म पूरी कतार का रुकना सभव नहीं था। चौथजी दादी माँ-दादी माँ (करणीजी) रटने लगे। सहसा ही उसकी दादी माँ ने प्रकट होकर ऊट को ठीक कर दिया और कहा कि 'गाव जाकर दूसरा ऊट ले लेना यह दुवारा कतार नहीं ला सकगा।' कहकर अन्तर्धान हो गइ। चौथजी इस ऊट स कतार के साथ देशनोक पहुचे। तत्काल ऊट मर गया और उसके पाव म से लाहे की सलाखें निक्लीं। इसन लोहे का त्रिशूल बनाकर निज मदिर दशनोक में पहुचा दिया।

गाय के बछडे को जीवनदान

करणीजी अपने छोटे बेटे लाखण की बेटी सापू जो कि छोटडिया ब्याही हुई थी, से मिलकर वापिस आ रहे थे। रास्ते मे कीतासर नामक गाव से गुजर रहे थे तब उन्होने एक ब्राह्मण कन्या को रोते-बिलखते दखा। यह देख उन्होने रोने का कारण पूछा। कन्या न बताया कि मैंने गाय के बछडे को अपने खत से निकालने के लिए उस पर एक लकडी का प्रहार किया। उस प्रहार स वह मर गया है। जिससे मुझ पर गौहत्या का कलक लग गया है। अब मुझको जाति-निर्वासन का दण्ड दिया जाएगा। मेरे साथ किसी को भी रहने नहीं दिया जाएगा। मेरी सहेलिया मुझसे बात तक नही करेगी। मेरे को सभी परिजन घृणा की दृष्टि से देखगे। मैंने तो सिर्फ बछडे को खेत से निकालने के लिए उस पर प्रहार किया था। यह सोचकर ही मै घबराकर रो रही हू। यह सुन करणीजी को उस पर तरस आ गया। उन्होंने रथ मे उतर कर बछडे के शव पर हाथ फेरते हुए कहा 'बेटा, जा उठो।' उसी क्षण वह पूछ हिलाता हुआ उठकर भाग गया। यह चमत्कार देख सभी ग्रामवासी श्री करणीजी के पैरा में गिर पड़े और आशीर्वाद लेने लगे।

अणदा खाती की रक्षार्थ लाव जोड़ना

करणीजी जब विवाह कर अपने ससुराल रवाना हुई तब सुवाप के पास ही एक गाव में पहुचीं, वहा पर कर (अणदा खाती) जो करणीजी के चमत्कारों क बारे म जानता था, ने अपने घर पर पधारने व रात्रि विश्राम करने की प्रार्थना की। करणीजी वहीं रुक। उस दौरान अणदा की माँ ने करणीजी से पुत्र की रक्षार्थ आशीर्वाद वचन मागा जिस पर करणीजी ने कहा कि तरे पुत्र को कह देना कि जब विकट समय हो तो मरा स्मरण कर ले। मैं सहायता करूगी।

इसके कुछ दिन वाद ही अणदा आऊ नामक गाव में एक कुए में काठ (जमोत) ठीक कर रहा था। ठीक करने के वाद वह चमड़े की चडस पर बैठ बाहर निकल रहा था कि अचानक लाव (चमड़े का रस्सा) टूट गई। वह कुए के तले में गिर ही रहा था कि उस समय उसके मुह से निकल गया कि 'हे करणी, रक्षा करें । ठीक उसी समय एक दोमुहा साप वहा प्रकट हो लाव के टूटे दानों छोरों को पकड़ लिया अणदा को बाहर निकाल लिया गया। उसके बाहर निकलत ही साप अदृश्य हो गया। इस घटना से अणदा इतना प्रभावित हुआ कि वह सपरिवार देशनाक आकर वस गया, जहा आज तक उसके वशज रह रहे है।

अन्तिम दर्शन

जव माँ करणी ने जैसलमेर जाने का निश्चय कर लिया तव उन्होंने अपने आश्रित अनुगत सभी राव, राजा, महाराजा अपने परिवार के लोगों और भक्तों को देशनोक बुलाया। उनको शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता समझाई। जिसका जन्म होता है उसे एक दिन इस ससार को त्यागना पडता है। शरीर नाशवान् है और आत्मा अमर है। मैं पच-तत्त्वों से निर्मित शरीर से अव धरा पर नहीं रहूगी और सदह परमधाम को प्रस्थान करूगी। मेरे लिए काया का वधन नहीं है। मै सदैव सभी स्थानों पर व्यापक हू। अणु से लेकर विराट तक में मैं विद्यमान हू। तुम लोगों को ऐसा समझ कर धर्म का जीवन जीना चाहिए। जव तुम्हारे ऊपर काई विपत्ति आए, कष्ट पडे तो मुझ याद करना। मै जैसे आज तुम्हारी सहायता करती हू माग-दर्शन करती हू रक्षा करती हू उसी प्रकार सदा करती रहूगी। तुम लोग मेरी प्रतिमा की श्रद्धापूर्वक पूजा करना और सदैव यही समझना कि जैसे मै आज हू उसी प्रकार सदा अपनी मूर्ति में विद्यमान रहूगी। तुम्हे मेर शरीर से ममता नहीं होनी चाहिए। उसके न रहने पर शोक न करना चाहिए।' माँ करणी के मुखारविंद से निकले ये अद्वैत वचन गीता के दूसरे अध्याय में भगवान श्री कृष्ण द्वारा अपने भक्त अर्जुन को दिया उपदेश स्मरण करवा देते है—

'न जायते म्रियते वा कदाचिन्नाय भूत्वा भविता वा न भूय ।
अजो नित्य शाश्वतोऽय पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीर।।'
'देहिनाऽस्मिन यथा देहे कौमार यौवन जरा।'

उस समय भीड म उन भक्तों की पलकें आसुओ से गीली हा गई। व्रज की गोपियों के समान उन भक्तों को माँ करणी का वह ज्ञान समझ मे तो आया, लेकिन वे उसे स्वीकार नहीं कर सके। उन सव के लिए वह कठिन घडी थी। सव समझ गए कि माँ करणी के इस पच भौतिक शरीर के आज अतिम दशन कर रहे है। फिर कभी उनको इस रूप में नहीं देख सकेगे।

माँ करणी ने तुरत ही तैयारी करके जैसलमेर के लिए प्रयाण किया। राम-वनगमन पर अयोध्या-निवासी और व्रज से कृष्णजी के मथुरा जाते समय जैसे सब गाप-गोपी उनके साथ दौडने लगे थे, उसी प्रकार माँ करणी के साथ जाने के लिए उनक भक्त वृन्द चल पडे। माँ करणी ने स्पष्ट वाणी में आदेश दिया कि उनके साथ केवल उनका वडा पुत्र पूनराज (पुण्यराज) और उनका भक्त सारथि जागलू निवासी बिश्नोई सारग ही आ सकगे। एकत्रित भीड को माँ का आदेश स्वीकार करने के सिवाय दूसरा काइ चारा नहीं था, परतु उनकी आखे वरस रही थीं।

माँ करणी का रथ मजिल-मजिल आगे बढता जा रहा है। मार्ग के गावो क स्त्री-पुरुष और बालक सभी ओर से उनके दर्शनों को उमडे चले आ रहे है। अपनी समस्याओ को माँ करणी के सामने रखते जा रहे हैं और माता उन सभी समस्याओं का समाधान करती हुई बिना कही रुके, आगे और आगे वढी चली जा रही है। जागल प्रदेश पार किया, और ठरडे में होकर उनके रथ ने माड प्रदेश मे प्रवेश किया।

जब जैसलमेर सात कोस दूर रह गया था तब रोग से पीडित रावत जैतसिह पालकी मे लेट कर अपने परिवार और प्रजाजनों के साथ माँ करणी का स्वागत करने आ पहुचा। रावल जैतसिह न ज्यो ही अपनी पगडी महामाया के चरणों मे रखते हुए दडवत की माँ करणी ने अपना दाहिना हाथ रावल की रोग-ग्रसित पीठ पर रखा।



उस हाथ के स्पर्श मात्र से क्षणभर में ही वह असाध्य रोग गायब हो गया और रावलजी की काया कचन के समान हो गई। उन्ह नव-जीवन प्राप्त हुआ। यह चमत्कार देखते ही माँ करणी की जय-जयकार चारो दिशाआ में गूजने लगी। लोग विस्मित हो गए। रावल जैतमी और जैसलमेर से स्वागतार्थ आए गणमान्य लोग और साधारण जनता ने माँ करणी सहित जब जैसलमेर नगर में प्रवेश किया तो गली-गली से लोग दर्शनार्थ उमड़ पडे। जब जैसलमेर के प्रसिद्ध दुर्ग में रावल जैतसी सहित माँ करणी ने प्रवेश किया तो सब ओर से बधावे के गीत सुनाई देने लगे। माँ करणी का पगमडा किया गया, और राजा से रक तक सभी स्त्री-पुरुषों ने माँ करणी की चरण-रज अपने मस्तप्क पर धारण की। सभी लोग अपनी पगडिया माँ करणी के चरणा में रखकर अपने आप को धन्य समझने लगे। उस अवसर पर रावल जैतसी ने एक गाव माँ करणी को भेंट किया, परतु उदारमना दयालु माता ने उसी क्षण वह गाव ब्राह्मणो को दे दिया।

माता ने जैसलमेर आगमन के दूसरे ही दिन प्रात काल भमण करते हुए एक जन्माँध वृद्ध सुथार (बढई) बना को अपनी गवाडी (घर) के आगे बैठे देखा। दयालु माता ने उसे नेत्र-ज्योति प्रदान कर अपनी मूर्ति बनाने का आदेश दिया। मातेश्वरी ने कहा, 'बना, तुम जन्म से ही अधे हो इसलिए तुमने अभी तक किसी को अपनी आखो से देखा नहीं है, तुम्हारी आख निर्मल है। जैसी मैं तुम्हें दिखलाई देती हू वैसी ही तुम मेरी मूर्ति बनाओ। मूर्ति निर्माण होने तक तुम्हारे नेत्रो मे ज्योति केवल उतने ही समय तक रहेगी जब तक तुम मूर्ति निर्माण कार्य में लगे रहोगे मूर्ति के पूर्ण होने के बाद तुम्हारी आखां म सदैव के लिए ज्योति आ जाएगी। मैं प्रतिदिन तुम्हारे घर आऊगी तुम मेरे स्वरूप को प्रतिमा मे अकित करो।'

इस प्रकार माता अपने पद्रह दिन के जैसलमेर निवास काल मे प्रतिदिन प्रात काल कुछ देर बना के घर जातीं और उसके सामने बैठते ही बना के नेत्रो में ज्योति आ जाती और आदेशानुसार बना मूर्ति घडने लगता। जब माँ करणी उसके सामने से उठतीं उसा समय बना का आखा की ज्योति चली जाती। जैसलमेर से विदा होते समय माता ने बना को आदेश दिया, 'मेरी मूर्ति को तैयार करके देशनोक पहुचा देना।'

जैसलमेर से विदा होकर माँ करणी तेमडाराय गयीं और वहीं अपनी आराध्या तथा जैसमलमेर की कुलदेवा माँ आवडजी के मदिर में उनक दर्शन किए। तमडाराय से विदा होकर माँ करणी सिध प्रदेश क ऊमरकोट राज्य में स्थित खारोडा गाव देवी देवल एव बूट से मिलने गयीं। खारोडा के निवास काल में ही अपने भक्त अणदा खाती (बढई) को आऊ के कुए में गिरने से बचाया—

दोहा

आऊ मे तूटी बरत, पैसारे पैठाँह।
अणदो खाती तारीयो, माँ खारोडै बैठाँह।।

देवल बाई और बूट बाई के समक्ष माँ का चमत्कार

करणीजी ने जैसलमेर के रावल जैतसी स विदा ली और वहा से प्रस्थान कर खारोडा गाव आये। देवल और बूट दोनों ने ही द्वार पर (दरवाजे पर) सामने आकर करणीजी का स्वागत किया, मिलन हुआ। वहा देखते देखते अणदा का उद्धार कर दिया। बूट ने हस कर गर्वपूर्वक उपेक्षा से कहा कि आपने इस कार्य के लिए हम आज्ञा क्यो नहीं दी? यह तो हम भी कर सकती थी। आपने क्यो तकलीफ की। आपको सहयोग देकर भी को मदद देकर हमें सुख होता। प्रसन्नता मिलती। युद्ध में सैन्य बल के बिना केवल अकेला राजा ही क्या कर सकता है? अर्थात् आप हमारी सरताज है परन्तु हमारे सहयोग बिना आप क्या कर सकती है?

अब इधर बूट और देवल तथा उधर करणी किनियाणी थे। बूट की गर्वपूण बात सुनकर करणीजी ने अपनी देवमाया का प्रदर्शन किया। उन्होंने विराट रूप धारण करके अपने कठ का, गले को कई योजन विस्तार कर दिया कई योजन में फैलाया। बूट और देवल ने विस्मयपूर्वक देखा कि इस गले के अन्दर धरती और अन्य लोक बसते हैं इतना विस्तार है। यह अन्तरिक्ष

चमत्कार देखने से बूट—देवल का गर्व विगलित हो गया। देवल ने हाथ जोड कर कहा। हे देवी। आप धन्य है आपने हमें परचा दिया, अपनी शक्ति का चमत्कार बताया। उस दिन से करणीजी का घाटाली' विरद प्रसिद्ध हुआ।

माँ करणी बूट और देवल के साथ खारोडे म कुछ समय ठहरीं और फिर वहाँ से जैसलमेर लौट आई। जैसलमेर से विदा होकर तेमडाराय और भादरियाराय तीर्थों की यात्रा करते हुए माँ करणी बेगटी नामक गाव पहुचीं। बेगटी गाव में राजस्थान के पाच पीरो (सतों) मे से एक हरबूजी साखला से मिलीं। बेगटी से चलकर माँ करणी रामनवमी के शुभ दिन प्रभात के समय धनेरी और खारडी तलाइया के बीच पहुची। जहाँ पर वर्तमान श्री करणी परमधाम स्थल है। वहाँ से सदेह उस लोक में पहुचीं जिसे श्री गीताजी में भगवान् कृष्ण न वर्णन करते हुए कहा है—

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावक ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परम मम।।

अर्थात् जिस परम पद को प्राप्त होकर मनुष्य लौटकर ससार में नहीं आते उस स्वय प्रकाश परम पद को न तो सूर्य प्रकाशित कर सकता है न चद्रमा और न अग्नि ही।' वह सर्वोच्च परमधाम है।

देशनोक मढ मे पहले केवल बीकानेर के राजा-महाराजा ही अपनी कार्य सिद्धि के लिए धरना आदि दे सकते थे। सर्वसाधारण जनता को वहाँ धरना आदि देने की मनाही थी। इसलिए साधारण जनता अपने कष्ट और दु खो के समय सकट-निवारण के लिए यहाँ धरने दिया करती थी और यह प्रसिद्ध है कि यहाँ उनका तीन दिन में कार्य मिद्ध हो जाता था। माता उन्हे अपने इस कार्य में तुरत सफलता का वरदान प्रदान करती।

इस प्रकार यह पावन धाम सर्वसाधारण के लिए खुला है यहाँ अमीर-गरीब सबकी बिना भेदभाव सुनवाई होती है। वस्तुत यह स्थान श्री करणीजी महाराज के सिद्धात को प्रतिपादित करता है।

गडियाला पहुचकर अपने पुत्र पूनोजी को, पास की एक तलाई धिनेरू से नहाने के लिए पानी लाने का कहकर भेज दिया तथा सारग विश्नोई को कहा कि तुम मेरे ऊपर इस झारी के पानी को उडेल दो। उस समय झारी मे पानी की कुछ बूदें ही थी। आज्ञानुसार सारग ने जैसे ही झारी के पानी को ध्यान म बैठी करणीजी पर उडेला तब अचानक एक ऐसी अग्नि की झळ निकली कि सूरज म जोत से जोत मिल गई। इस प्रकार वि स 1595 की चैत्र सुदी नवमी गुरुवार को श्री करणीजी अन्तरधान हुइ। सवत् पद्रह सो पिचानवे के चैत मास शुक्ल पक्ष नवमी तिथि गुरुवार के दिवस (रामनवमी) करणी किनियाणी ने अपनी सम्पूर्ण कलाओं सहित बिना अग्नि के स्वय की ज्योति द्वारा प्रकाशित अग्निरथ पर आरूढ होकर अपने लोक के लिए प्रस्थान किया। विष्णु और शिव ने धन्य हो धन्य हो का घोष किया। महाशक्ति के मानव जीवन की अतिम लीला देख कर प्रत्यक्ष देव सूर्य भगवान और चन्द्रदेव स्तम्भित हो गये, चकित रह गये। करणीजी अपने धारण किये गये दिव्य मानव शरीर द्वारा सशरीर ही अपने परम धाम म प्रविष्ट हुए। परम ज्योति को प्राप्त किया। जोत जगते ही बेटा पूना भाग कर आया और रोने लगा। तब कहते हैं कि आकाशवाणी हुई कि आज तक किसी के माँ-बाप अमर नहीं हुए। जो इस ससार म आया है उसको एक दिन जाना पडेगा। तुम तुरन्त देशनोक जाओ, जहा पर एक अन्धे कारीगर द्वारा बनाई गई मेरी मूर्ति है जिसको वह कारीगर अपने सिर के नीचे रखे हुए मेरे गुम्भारे मे सोया हुआ मिलेगा। उस मूर्ति को तुम मेरे गुम्भारे मे स्थापित कर देना। श्री करणीजी की आज्ञानुसार वि स 1595 की चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को करणीजी के श्रीहाथों से बनाये हुए गुम्भारे म करणीजी की मूर्ति की स्थापना की गई। इस मूर्ति की उस दिन से करणीजी के चारो पुत्रा के परिवार क्रम से नियमित दोनों समय पूजा करते आ रहे है।

पन्नरैसो पिच्चाणमै, चत शुकल गुरुनम्म।
देवी सागण देह सू पूगा जोत परम्म।।



परमधाम गड़ियाला

गडियाला शक्तिपीठ का निर्माण कार्य कई भागा म हुआ है। एक समय यहा पर माँ का आसन स्थल पूजा जाता था। फिर कच्चा मन्दिर बना। माँ की कृपा से यहाँ मन्दिर का पक्का निर्माण भी हा गया तथा यात्रियों के लिए धर्मशालाए भी बन गई।

सफेद मारबल का निर्माण कार्य

माँ की असीम कृपा से माँ के एक अनन्य भक्त पर माँ की इतनी कृपा हुई की उन्हाने माँ के मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाकर पूरा मन्दिर सफेद मारबल से बनाने का निणय ले लिया। आप है श्री नेमचन्दजी पुत्र सूरजारामजी गहलोत के पुत्र जुगलकिशार एव अनिल कुमार गहलोत जिन्होंने माँ के दरबार को माँ की कृपा से नया रूप दे दिया। इस कार्य की आज से 3 वर्प पूर्व नीव रखी। गडियाला शक्तिपीठ मे आज माँ के मन्दिर की सर्वश्रेष्ठ ऊची गुम्बज (59 फुट शिखर) पर माँ की ध्वजा लहरा रही है। गहलोत परिवार कहते है कि 'सब माँ की कृपा' है।

श्री भोपजी चापावत की रक्षा

जोधपुर रियासत मे एक भोपजी चापावत राजपूत की ढाणी थी वह श्री करणी माता का भक्त था। जोधपुर के राजा ने उस पर डाकुओ को शरण देने का आरोप लगा कर चढाई कर दी। उसकी ढाणी छोटे किलेनुमा थी। उन्होंने दरवाजा बन्द करके मुकाबला करना शुरू कर दिया आखिर ढाणी मे पाणी का अभाव हो गया पाणी की तलाई व कुआ बाहर था। श्री भोपजी ने श्री माता जी को याद किया श्री करणी माता न अपने सिर पर घडा रखकर भोपजी की ढाणी में फौज क बीच से बेधडक पानी भरना शुरू कर दिया। इस चमत्कार से प्रभावित होकर राजा ने ढाणी स फौज हटा ली। श्री भोमजी ने देशनोक आकर मदिर में दक्षिण की ओर से तिबारी बनाई जो भोप जी की तिबारी के नाम स प्रसिद्ध है।

सग्राम सिह की जेल छुडाना

सिरड गाव का भाटी सग्राम सिह जो श्री माता जी का भक्त था एक बार वह जोधपुर की कैद में पकडा गया। उसने श्री माता जी को याद किया तो रात्रि में जेल के ताले खोलकर श्री करणी माता ने उसे सिरड गाव पहुँचा दिया।

एक ब्राह्मण को गीता की पुस्तक दिलाना, 'हापै मरठे की मोत बताना'

एक गीतापाठी ब्राह्मण गगा के तट पर गीता का पाठ करता था। एक दिन एक बेलासर गाव (बीकानेर) का एक ब्राह्मण गगा स्नान करन गया हुआ था। उस गीतापाठी ब्राह्मण न अपनी गीता का गुटका उसे देकर कहा कि मैं स्नान करके आता हूँ मेरी पुस्तक रखना। अत्यन्त सुन्दर गुटका देखकर उसका मन ललचा गया वह वहाँ से पार होकर अपने गाव बेलासर आ गया। ब्राह्मण को पुस्तक न मिलने से बड़ा दु ख हुआ वह गगा के किनारे पुस्तक हेतु विलाप करने लगा ता उसे गगा में से आवाज आई कि तुम देशनोक चले जाओ। वह पर्व से देशनोक का पता पूछ कर बीकानेर होते हुए देशनोक पहुचा। जब वह मढ म पहुचा तो दरवाजा मगल हो चुका था, वह दरवाजे के आगे सो गया।

उन दिनो जोधपुर पर हापै मरठे का हमला हुआ था। जोधपुर नरेश ने अपनी रियासत के सारे राजपूतों को मिलकर सामना करने की कसम दरवा दी। उस कसम स प्रभावित होकर पाचों पीर जो राजपूत ही ठहरे श्री करणी माता के पास हापै को मारने का उपाय पूछने आये। पाच पीर है—पाबू, हरबू, रामद माँगलिया मेहा व गोगाजी।

जब ये पाचों पीर मढ के आगे की जाल से घोड़े बाधकर दरवाजे पर आये तो दरवाजा खुल गया। वहाँ पर सोया ब्राह्मण भी जाग कर उनके पीछ पीछे निज मदिर के सामने पहुच गया।

पाचों पीरों ने अपने-अपने नाम से माताजी को प्रणाम करके हापे के मरन की रीति पूछी तो श्री माता जी न बताया कि अमुक खोखर राजपूत जो महान वीर है उस के वार से हापा की मृत्यु होगी। यह देखकर उस ब्राह्मण ने अपनी पुस्तक का पूछा तो कहा कि यहाँ पास वेलासर ग्राम का ब्राह्मण ले गया। मगल आरती के बाद यहाँ से अमुक व्यक्ति के साथ ऊँट पर चढ कर जाना तेरी पुस्तक मिल जायेगी।

सवेरे चार बजे दरवाजा खुला तो ब्राह्मण अन्दर गया। उसने वहाँ खडे लोगा से रात्रि की बीती घटना बताई तो वहीं खडा एक व्यक्ति आरती के बाद उसे ऊँट पर चढा कर बेलासर ले गया वहाँ पर कुए पर पहुचते ही वो ब्राह्मण पाठ करता ही मिल गया। उस ब्राह्मण ने अपनी पुस्तक प्राप्त करक श्री माता जी को चमत्कारी शक्ति माना।

बाबा आत्म स्वरूप पर कृपा

एक आत्म स्वरूप नामक बाबा हरिद्वार में गगा के तट पर भजन करते थे व एक बार भयकर दस्त रोग के शिकार हो गये कोई भी इलाज काम नहीं कर पाया तो बाबा ने गगा मैया से प्रार्थना की। गगा मैया से आवाज आई कि तुम देशनोक चले जाओ। बाबा ने देशनोक जाने की तैयारी की तो कुछ राहत मिली। धीरे-धीरे वे देशनोक पहुच गये। यहाँ आकर माताजी के काबो की कुडी का पानी पीने से वे बिल कुल तन्दुरुस्त हो गये। तब से वे यहीं पर नेडीजी में जाकर रहने लगे। उन्होंने वहाँ रहते हुए श्री करणी माँ से प्रार्थना की कि मैया। मुझे अपना साक्षात् दर्शन दो। एक दिन व बाहर की कोटडी में दोपहर के समय सोये हुए थे। उनके पेट में अचानक दर्द हुआ बाबा दर्द से मैया-मैया कराहने लगे इतने में क्या देखते है कि एक बहुत वृद्ध विधवा औरत उनके पास आई बाबा ने कहा तुम कौन हो? कहा, मै साठीका की चारणी हू।

बाबा ने कहा—मैया! मेरे से तो उठा नहीं जाता तू प्यासी है तो कुड पर जाकर पानी पी लो। श्री माताजी ने कहा बाबा तेरा पेट दुखता है क्या? यह कहकर छोटी-छोटी दो गोली बाबा को दी कि ये ले ले तेरा पेट ठीक हो जायेगा। बाबा ने मन ही मन कहा कि यह धनन्तर की माँ आई है मेरा पेट ठीक करने। पुन आग्रह करने पर बाबा ने गोलिया ले ली और माता जी अलोप हो गई। बाबा को गोलिया लेते ही एकदम आराम आ गया बाबा ने उठकर देखा वहाँ मैया नही थी। बाबा ने दु खी होकर पश्चाताप किया कि वो माई श्री करणी माँ ही थी। आकाश से आवाज आई कि तूने कहा था दर्शन देने का सो मिल गया अब क्यों पश्चात्ताप है। श्री आत्म स्वरूप बाबा फिर नेहडी जी के मदिर के पीछ गुफा बनाकर कुछ काल तक रहे फिर शरीर त्याग दिया। उन्हान शरीर त्याग के बाद अपना शरीर चीलों को फेंकने को कहा था। परन्तु लोगो ने उनके शरीर का दाह-सस्कार कर दिया। दाह के समय उनके पेट मे से एक आतों का गुच्छा आकाश में उछला जिसे एक चील लेकर चली गई उनकी अतिम इच्छा पूरण हुई। नेहड़ी के पीछे ही उनकी समाधि बनी है।

मूलजी हिमताणी (लाखण) की बाढ छापना

एक मूलदान जी नामक लाखण थे जिनका अपने भाइया के साथ बाडे का (प्लॉट) विवाद हो गया एक भाई ने बाडा छापने से मना करते हुए माताजी व दरबार की आण दिला दी। समझौता करवा के मूलदानजी को बाडा छापने को कहा तो मूलदान ने कहा कि माताजी व दरबार आकर ही बाडा छापेंगे मै तो नहीं छापूगा। एक दिन दरबार आये तो दरबार को बाडे पर लाकर हाथ से पाई खडी करने को कहा ज्यो ही दरबार ने पाही खडी करी दूसरी ओर स्वय ही पाई खडी हो गई। अन्य खडे लोगों ने तो इतना ही देखा पर मूलदान जी व दरबार ने श्री करणी माता को साक्षात त्रिशूल से पाई लगाते देखा।

श्री नटवर जी स्वामी को दर्शन देना

स 2020 के आस-पास की बात है एक नटवर जी नाम के सत देशनोक मे गृदी धोरा पर रहते थे। वे



कृष्ण के अनन्य भक्त थे। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर श्री करणी माता ने उन्हें दर्शन दिये।

भयकर गर्मी मे वे मारा मे साथ हुए थे। अचानक उनके सामने एक सुन्दर युवती एक हाथ मे त्रिशूल लिए आकर खड़ी हुई। बारहठ ने सोचा कोई पशु चराने आई होगी बारहठ बोले मैया प्यासी है तो पानी पी ले और गाव में चली जा इस वक्त तुझे अकेले मे नहीं फिरना चाहिए यह सुन कर माताजी और हमी बारहठ ने अपनी आखें बद करली थोड़ी देर बाद आख खोली तो वहाँ न तो वो युवती थी न ही उसके पदचिह्न बारहठ ने विस्मित होकर आखें पुन बन्द की तो कानों में आवाज आई कि मैं श्री करणी हू तूने मेरी झाड़ियों मे भजन किया है इसलिए तुझे दर्शन दिया कह के एक भागवत का श्लोक सुनाया।

गिरधर कविया की जजीरें तोड़ मुक्त किया

गिरधर कविया के लिये आप सन्यासी का रूप धारण करके उसकी बेड़ियों को तोड़ कर साठ घड़ी मे (एक रात दिन) उसे उसके घर ले कर आये। झावर का जगू जाट तो निश्चयपूर्वक आपका शरणागत था, वह एक बार भयकर सकटग्रस्त हो गया था, तब उसकी जजीरें तोड कर उसे पुन अपने घर के प्रागण मे लाकर छोडा। सिरड गाव के ठाकुर सग्रामसिह को राजकोप से पैरों मे बेडी तथा गले मे लोक डाल कर कैद कर दिया था, उसने बन्दीगृह में आपको याद किया आप उसकी पुकार पर वहा पधारे, उसकी जजीरें तोड कर मुक्त किया और पुन सिरड लेकर आये।

चलती चक्की से बचाया बालक को

माँ की लीला तो मा ही जाने किसका किस किस भवर से निकाल कर लाती है। किसी को पता नहीं है। माँ के लिए कोई भी काम असभव नही है। माँ की शक्ति अपरम्पार है। आज से करीब 45 वर्ष पूर्व सुरेशजी भोजक अपने गाव में रहते थे। बचपन की बातें बताते हुये कहते है कि हमारा परिवार पीढी-दर-पीढी से माँ को कुलदेवी के रूप में पूजते आए है। हमारी माताजी अपने नित्य सेवा पूजा किये बगैर किसी भी काम को नहीं करती है। बड़ी सेवा भावी प्रवृति की है। माँ करणी पर उनका अटूट विश्वास है। यह माँ की कृपा है कि आज हमारा बड़ा भाई हमारे सामने सहशरीर जिंदा है। आज से काफी वर्ष पहले हमारे घर में आटे की चक्की थी। एक बार चक्की चल रही थी कि चक्की के पास ही मेरा भाई खड़ा था। उस समय भाई साहब ने चोला पजामा पहन रखा था। अचानक पता नहीं भाई साहब का ध्यान कैसा चुका कि उनके पाजामें का नाडा एक दम से चक्की के पट्टे के नट (लोहे का बना) में अटक गया। माँ ही जाने भाई के शरीर ने पट्टे के साथ कितने चक्कर लगाये होंगे उस मशीन के साथ। यह माँ का चमत्कार ही है कि भाई का एकदम से दुकान के एक तरफ ऐसा फेंका माना किसी ने गोद मे लेकर एक तरफ बैठा दिया हो। शरीर के काफी चोट आई। उनका बराबर इलाज कराया गया थोड़े समय के बाद बिल्कुल स्वस्थ हो गये। अगर माँ ने नहीं बचाया होता तो वो ससार में नहीं होते। आज उस दृश्य को हम आज भी याद करते हैं दिल दहल जाता है। हमारा परिवार आज भी हर सास से पहले मा का नाम लेते हुए जीवन यापन करते आ रहें है।

गाडी सहित पुल से गिरने पर भी बचाया माँ ने

विजयजी गोलछा ने चमत्कारों के बारे में बताया कि माँ के चमत्कार के चमत्कारो को गिनाया नहीं जा सकता। माँ के तो पल-पल चमत्कार है। उन्होंने जो बात बताई वो सुनने केवल में फिल्मी ही लगती है। मगर उनके साथ घटना घटी है। उनके पुत्र जिसको गाडी चलाने का शोक। एक बार वो अपनी धुन में ही गाड़ी को रफ्तार से चला रहा था। गाडी को कलकता की सडको में दौडाना आसान काम नहीं मगर वो सुबह के समय अपनी गाडी को अपनी रफ्तार से पुल का पार कर रहा था न जाने कब उसका ध्यान दिशा से हटा कि अचानक गाडी एक दम से पुल से करीब 40 50 फुट नीचे जा गिरी। वो लोग बताते है कि हमारा सब कुछ खत्म था। अगर माँ नहीं होती तो माँ ने उस गाडी को सडक पर गिराने की बजाय उस स्थान पर गिराया जहा

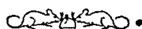
नीचे पुल का निर्माण कार्य चल रहा था (उस निर्माण मे जगह-जगह लोहे की सलाखे काफी मात्रा मे बाहर निकली हुई थी।) जिस पकार भीष्मपितामह तीरों की नोक पर लेटे हुए थे। ठीक उसी तरह यह गाडी उन सलाखों पर जा गिरी। माँ की शक्ति को शत्शत् नमन। सभी सलाखा ने पूरी गाडी को न जाने कितने जगहों पर काटा होगा पता नहीं। मगर इनके पुत्र को एक भी खरोच नहीं आने दी। माँ की कृपा से उसका दिल नही घबराया। वहा से वह सीधे घर आकर जब हादसे के बारे मे बताया तब किसी को विश्वास नही हुआ। जब गाडी लेने गए उस समय वह दृश्य देखकर उनके रोगटे खडे हो गए। दिल मे एक ही आवाज निकली हे माँ।

रात बिताई रेत में

प्रत्येक शुभ कार्य मे श्री गणेश भगवान एव अपने इष्ट देवी-देवताओं को भी याद किया जाता है। माँ को अपनी इष्ट देवी मानने वाले नाहटा परिवार के घर परिवार में शादी थी। तब के एक चमत्कार के बारे मे बताते हैं कि हम सभी शादी मे भाग लेने गाव की ओर जा रहे थे। रात का समय था हसी मजाक का माहौल मे हम सभी माँ का स्मरण करते हुए रास्ता तय कर रह थे। उस समय रास्ता कच्चा था जहा धोरो के बीच से रेत को चीरते हुए हमारी गाडी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी अचानक रात को अर्द्धरात्रि के समय हमारी गाड़ी एक दम से क्षण भर में ही रेत में फस गई। अब रात का समय कुछ भी नजर नहीं आता था। काफी रात थी हाथ से हाथ भी नजर आना मुश्किल था। गाडी की लाईटे भी बद हो गई थी। हम में से कोई भी नशा भी नहीं करता था वरना माचिस वगेरा से कुछ रोशनी कर लेते। दूर-दूर तक कोई बस्ती भी नहीं थी। जैसे तैसे हमने किसी को सहायता के लिए जाने लगे तब गाडी के आगे की तरफ बिल्कुल खाली जगह लगने लगी। हम लोग वही रूक गए। ऐसा लगा कोई खड्डा हो। पूरी रात माँ का गुनगान करते हुए चिरजाओं को गाते रहे। सवेरा हुआ तब माँ की कृपा और आशीर्वाद को हम समझ पाये। वो गहरा खड्डा नहीं बल्कि गहरी खाई थी। हमारी गाड़ी एक ऐसे धारे पर चढ गई थी कि दुसरी तरफ एक तलहटी नजर आ रही थी। अगर माँ का चमत्कार नहीं होता है। तो उस स्थान पर एक कदम दूर हमारा चकना चूर हो जाता था। उम घर म शादी की जगह मातम फैल जाता। माँ की लीला और शक्ति को आज तक कोइ भी समझ नहीं पाया। माँ की महर हमेशा हम पर रही है। हम अपने आपको भाग्यशाली मानते है कि हमारे करणी माँ कुल देवी है इष्ट देवी है।

मेहर मेहाई की

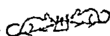
मेहर माता मेहाई शब्द अपने आप मे चरित्रात होता है। इस दुर्लभ चमत्कार मे जिस किसी ने भी देखा अजीब-अजीब की कल्पनाआ के भवर मे सोचता ही रहा। मै माँ के एक ऐस चमत्कार के बारे म बताता हू। जिन्होंने मेहाई नाम का ही सहारा ले रखा है। देशनोक गाव मे एक साधारण परिवार रहता है पन्नादानजी रतनू का जिनका देशनोक मे ननिहाल है। मामा नही होने के कारण आप की माता जी अपने पीहर में ही माता-पिता की सेवा मे आकर रहने लग गये। पन्नादानजी अपने मेहनत की कमाई से अपना गुजारा चलाते थे। इसी दौरान इनके पुत्रों ने अच्छी पढ़ाइ प्राप्त कर ली। इनका बडा पुत्र चन्द्रप्रकाश रतनु जिसने कपाउन्डर की ट्रेनिग कर अपना रोजगार मेहाई क्लिनिक के नाम से पास ही के गाव रासीसर में अपनी सेवाए देकर अपना रोजगार चलाते है। चन्द्रप्रकाश का एक नियम अटल है सुबह के दर्शन माँ के मढ म करते है। तथा साय के दर्शन नेहडी जी के जोतकरवाकर घर आते हैं। मेडिकल की सेवा मे कभी-कभार चूक हो जाती है। मगर माँ की इन पर अथाह कृपा है। आज रासीसर मे आपकी अच्छी पहचान है अच्छा व्यवहार है। सर्दी-गर्मी रात-दिन कभी मरीज के अमरजेंसी हो इस कारण सुविधा हेतु आपने एक इण्डिका गाडी खरीद ली। आज से करीब तीन वर्ष पहले चैत्र के नवरात्री मे आप माताजी, भाई, पुत्र एव मित्र के साथ अपने ससुराल देशनोक निवासी मूलदान जी देपावत के घर व्यास कॉलोनी बीकानेर जा रहे थे। उदरामसर बाईपास के पास आपकी गाडी तेज रफ्तार से बीकानेर जा रही थी। सामने से एक ट्रौले से टक्कर लगकर



आपकी गाड़ी पास ही के रोड कटर दीवार के ऊपर चढ़कर जोर से उछल कर इस कदर उल्टी गिरी कि एक भी जिन्दा बचने की उम्मीद नहीं थी। गाड़ी के चारो पहिय ऊपर की तरफ, गाडी का आगे का हिस्सा झटके से पिचक गया। माँ मेहाई की मेहर से उसी क्षण उनकी गाड़ी को उछल कर गिरते हुए जयपुर निवासी डा गुलाबसिंह चारण ने साक्षात् देखा उन्होने तुरन्त अपनी गाड़ी को रोका और दौडकर इनकी गाड़ी के पास आए। गाडी के शीशे ताड सबको बाहर निकाला उन्होंने खुद ने बताया कि हमारी एक ही चिन्ता थी कि न जाने कितने मरे है एव कितने जिंदा है। जब उन्होंने ऐसी दुघटना के बावजूद सब को सकुशल देखा तब चकित हो गए। सब माँ की कृपा ही है। आप सब सकुशल है। आज आप सबको माँ बहुत बडी दुर्घटना से बचाकर जिन्दा निकाल कर लाई है। माँ करणी को बारम्बार प्रणाम इससे बडी माँ मेहाई की मेहर क्या होगी। आपके लिय। धन्य है आपकी भक्ति जिस कारण माँ ने आप पर इतनी बडी मेहर की।

चार साल की बच्ची ने जब दिल्ली लगाया फोन

यह चमत्कार साक्षात् मेरे घर पर हुआ था काफी समय पहले जब किसी लेखक ने करणी माता के इतिहास के बारे मे गलत प्रचार कर दिया था। तब डा करणीसिह आदि ने मुझे चारणो की आम सभा में देशनोक बुलाया। बीकानेर से देशनोक से जाते समय पत्नी तथा 4 साल की बच्ची एव दो साल के लडके को यह कहकर छोड़ गया था कि मै साय तक वापस आ जाऊगा। पडौसियो को भी कहकर गया। कहना इसलिए पडा क्योकि मेरी धर्मपत्नी के दात जुडने की परेशानी रहती थी। मगर मेरी पत्नी ने पुरा विश्वास दिलाया कि आप निश्चत रहे मै अपना ध्यान रख लूगी। आप माँ का काम है जल्दी देशनोक पहुचे। सर्दी का समय था इस कारण पत्नी ने कहा कि हम सभी छत पर धूप तक बैठें रहेगे। बच्चे भी पढते रहेगे। मैं निश्चित होकर माँ का नाम लेकर सब कार्य माँ पर छोड देशनोक आ गया। देशनोक में सभी ने इस कार्य को अजाम देने के लिए मदिर ट्रस्ट अध्यक्ष कैलाशदान जी डा करणीसिहजी के साथ सभी ने सहर्ष मुझे चुनकर कहा कि आप उदयपुर जाकर उस लेखक से माफी नामा न लिखाकर लाये अन्यथा उनका दशनोक लेकर आये। जैसे ही सभा खत्म कर बीकानेर पहुचा तब घर पर मिलने वाले रिश्तेदारों को इकट्ठा पाया मैंने जल्दी से पूछा कि आप सब यहा पर कैसे आए है। तब मुझ बताया कि चिता की बात नहीं है बिंदणी की तबीयत ठीक नहीं थी। अब ठीक है। इस दौरान मेरी मम्मी तीर्थ यात्रा पर गई हुई थी। मेरी चाची ने बताया कि करीब तीन बजे दोपहर को बच्चे छत पर खेल रहे थे। बिन्दनी सामने ही कमरे में सो रही थी। निंद में सात ही उनके दात जुड गए जैसे ही दात जुड थोडी देर बाद ही हिचकिया आनी शुरू हो गई। तभी मेरी बच्ची बुलबुल जा कि उस समय चार साल की थी। उसने मम्मी की हिचकियो की आवाज सुनते ही दौडकर आई कमरे मे आते ही अपने छोट भाइ दाऊ जो कि 2 साल का था उसको कहने लगी कि दाऊ मम्मी के फोन से हम पापा को फोन करते है। बिटिया ने फोन उठाया और नम्बर दबाने शुरू कर दिये तब आप चमत्कार देखो कि बिटिया के नम्बर सीधे दिल्ली लगे। जो कि मेर सालाजी के मोबाइल नम्बर थे। मगर फोन पर बच्चे बाते करने लगे कि 'बुलबुल कहती है कि दाऊ तुम जल्दी नाव जाकर पानी लकर आओ मम्मी को पानी के छींटे मारते है। पापी भी ऐसे ही मम्मी के दात खोलते हैं। ये सभी बात मेरे सालाजी ने फोन पर सुन ली उन्होंने तुरन्त सोचा कि विक्रमजी शायद घर पर नहीं होंगे। उन्होंने मेरे चाचाजी के घर फोन लगाया फिर पडोसियों को फोन लगाया पाच मिनट में लगभग सभी भागते हुए घर पहुच गये। घर के सारे दरवाजे बद थे। पडौसी के घर से ऊपर से अन्दर आकर दरवाजा खोला थोडी देर में ही तबीयत ठीक हो गई। तब से मैंने एक बात दिमाग में पक्की कर ली की माँ के नाम से कोई भी कार्य करेंगे उस समय मा सभी का ध्यान रखती हैं। मैंने मन-ही-मन सोचता रहा कि अगर फोन दिल्ली नहीं लगता तो क्या होता अगर तबीयत ज्यादा खराब हो जाती तो क्या होता सोचते सोचते परेशान हो जाता हू। फिर मन में दृढ निश्चय



किया कि साक्षात् वीस हाथ वाली करणी हमारे साथ है तो फालतू की बातें क्यों सोचे। तब से आज तक मैंने तबीयत के बारे में मुडकर भी नहीं देखा। माँ की बालाजी की कृपा से आज सब ठीक है। माँ की लीला तो माँ ही जाने। हे माँ! सब कार्य तेरे ही सहारे है। हम सब के लिए आप ही सहारा हो। जय माँ करणी।

मृतप्राण लडके को जिन्दा किया

इन दिनों एक ऐसा चमत्कार हुआ कि सुनने पर आश्चर्य करने की सीमा भी समाप्त हो जाती है। एक ऐसा गाव जहा पर करणीजी का किसी ने नाम भी नहीं सुना। उस गाव में एक पन्द्रह वर्ष का राईका (ऊठ पालने वाली जाति) जाति का लडका जो काफी समय से इस कदर बीमारी से पीडित कि घर वालो ने तो उल्टी गिनती शुरू कर दी। कई महीनों से उसने कुछ नहीं खाया। उसका वजन मात्र हड्डियों का था तकरीबन 15-20 किलो। उसने एक दिन घर वालों को बताया कि मै देशनोक करणी माता के दर्शन करने जाऊगा। सभी ने मृत प्राण बाते करने वाला समझकर रोने लग गए। तभी बडे बुर्जुगो ने पूछा की इसने क्या बताया हैं तब सारी बात बताई गई बात सुनने के बाद पास के ही कस्बे मे पता कराया कि भाई ऐसा कोई स्थान है या नहीं। एक गाडी वाले ने बताया कि मै एक बार गया था यह स्थान बीकानेर के पास है वहा चूहे बहुत ज्यादा है। तुरत देशनोक के लिये तैयार होने लग गए। अचानक फिर लडका बोना कि मै शुद्ध जाति के साथ जाऊगा। आश्चर्य कि बात है कि गाडी का ड्राईवर किसी भी प्रकार का नशा पता तक नहीं करता था। सभी रवाना हो गये। देशनोक पहुचने के बाद उसको निकासी दरवाजे से अन्दर दर्शन हेतु प्रवेश कराया गया। लडका फिर बोला कि मुझे मुख्य दरवाजे अन्दर लेकर जाओ। जो परिवार पहली बार देशनोक आये हो उनको क्या पता कि दरवाजा कौन सा था। सब लीला माँ की रची हुई थी उस दौरान चेत्र नवरात्री थी। जयपुर में जब बम धमाके हुऐ थे इसी वजह से देशनोक में भी सुरक्षा व्यवस्था का इतजाम पुख्ता थे। मुख्य दरवाजे से अन्दर ये दर्शन करने पहुचे। माँ-बाप दोनों बच्चे को तौलिये मे सुलाकर दोनो आगे पीछे पकडकर अन्दर लाये। दर्शन करने वाले सभी देखते रह गये कि ये क्या माजरा है। मदिर ट्रस्ट ने सारी बाते सुनकर ट्रस्ट के पदाधिकारियो ने कहा कि आप माँ के मेहमान है। जब तक यहा रहते है आप से किसी भी प्रकार से किराया नहीं लगगा। रहना खाना सारा खर्च मदिर वहन करेगा। दर्शन के बाद लडका फिर बोला कि पाच दिन तक यही रहूगा। पाच दिन नये वस्त्र पहनूगा। बनियान और हॉफ पेंट खरीदी गई। पाचवें दिन दर्शन के बाद काफी समय बाद लडके ने सवेरे मगला की आरती मे लगने वाले भोग की पसादी मे से एक किसमिस उसने उठाकर खाई फिर माँ का नाम लेकर अपने गाव चले गये। जब अगली चतुर्दशी को सभी पधारे तब लडके के पिताजी को अकेला देखकर सोचते ही रह गए। किसी की इतनी हिम्मत नही हुई कि उनको उस लडके बारे में पूछे। मदिर के ही ट्रस्टी सुरेन्द्रजी देपावत आये उन्होने लडके के पिताजी को धीरे से पूछा की आपके लडके की तबीयत कैसी है। तब आपको विश्वास नहीं होगा कि उन्होंने एक ही बात कही कि आपने ने पहचाना नहीं ये देखो आपके सामने ही तो खडा है। सुरेन्द्र जी बताते है कि मुझे अपने आप पर विश्वास नहीं हुआ कि क्या ये वही लडका है। जिसका सिफ ढाचे का वजन था 15 किलो वो आज 50किलो कैसे हो गया। लडके ने जय श्री माताजी की करते हुए प्रणाम किया। तब से आज तक लडका प्रतिमाह की शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को देशनोक माँ के दर्शनार्थ आता है। आते समय अपने साथ किसी न किसी को अवश्य लाता है। इस चमत्कार के बाद उसके आस पास के गावों में माँ की लीलाओं का बखान चारो तरफ इस कदर फैल गया कि वहा से प्रतिमाह भक्तगण देशनोक दर्शन के लिए आना प्रारम्भ कर दिया। माँ कब क्या करती है कैसे करती है किसको किस ढंग से चमत्कार की कृपा करती है। सब माँ ही जाने।

सेठिया परिवार मे पुत्र को जीवनदान

सरदारशहर का सेठिया परिवार बताते हैं कि



चुन्नीलालजी मेठिया के चार पुत्र थे—पूर्णचन्दजी, रावतमलजी, कालूरामजी एव चौथमलजी सठिया। चौथमलजी के तृतीय पुत्र चन्दनमल उम समय अढाई साल के थे। यह घटना आज मे करीब 81 वर्ष पहल की है। उस समय वालक चन्दनमल वीमार थे और डाक्टरों ने जवाव दे दिया था। मा अपने वीमार पुत्र को गोद में लिए वैठी थी। परिवार के सभी मदस्य वहुत ही गमगीन थे। चौथमलजी के ननीहाल पक्ष म करणी माताजी की धोक-पूज थी। किमी ने कहा कि आप मा करणीजी की ओट क्यों नही लेते। मा बहुत ही जागृत देवी है। उस समय दूसरा कोई रास्ता भी नहीं था। उन्हाने मा को याद किया। और मन में मकल्प लिया कि यदि इस वार यह वालक वच गया तो मै इसका नाम वदल कर मा का दान स्वीकार करते हुए करणीदान कर दूगा। थोडी देर वाद ही उनको अपने पीछे से से मैरून ओढणा ओढे एक ओरत जाते हुए दिखाई दी। कुछ देर वाद ही अन्दर घर से खबर मिली की वालक चन्दनमल अव एकदम ठीक है। उन्होंने पाणी के छींटे दिये और उसी समय से उनका नाम करणीदान रख दिया गया था। और उसी दिन से हमारे घर में मा करणी का थान स्थापित हो गया और धोक-पूजा होने लगी थी। आज करणीदानजी की उमर करीब 84 वर्ष है अपनी उस पीढी के चारो भाइयों के परिवार मे अकेले मौजूद सदस्य है। कालान्तर मे सिर्फ चौथमलजी के ही नहीं वल्कि चारों भाइयों के परिवार मे मा करणी माता की धोक-पूज होने लगी आज हमारे सेठिया परिवार के चालीस से भी अधिक घर हे।

पन्नालालजी मूधडा को मिला जीवनदान

पन्नालालजी मूधडा को ऐसे कई चमत्कारो को देखा और महसूस किया हाल ही मे उनकी आवाज चली गई थी। तब माँ का स्मरण कर देशनोक की यात्रा का विचार करते ही स्वस्थ होना, उनकी पत्नी को भी जीवनदान मिला। पन्नालालजी ने चमत्कार शब्द का गुणगान इस प्रकार किया है। चमत्कार को नमस्कार सत प्रतिशत सत्य है तथापि इस नमस्कार में आतुर्भाव का आभास ला देता है स्वघटित चमत्कार। मा स्वर में ही दात्री, पालिका, अभिभावक, सरक्षण, दया और क्षमा भाव निहित है जिसने जन्म ही दिया है भला उसके पास देने क सिवाय और है ही क्या। लेने वाले की आस्था पर निर्भर है।

ऐसी ही है हमारी करणी माता। चमत्कार ही मा करणी का रूप व स्वरूप है। काबों की भरमार मदिर के प्रागण म रहती है। सदियों से चलता आया है ये मिलशिला, इतिहास जिसका साक्षी है। अतर्काल में दुनिया के इतिहास व भूगोल वदल गये पर मा का दरबार ज्यों का त्यों है। पत्थरा की गुफा में मा विराजमान थी और है। भक्तगण इस निज मदिर के बाह्य रूप को श्रद्धानुवत् सुसज्जित करते आये हैं। और इस मदिर की कलाकृति भी विश्व चर्चित है। ऐसी मा के शरणागत भर होने की देर है। फिर चमत्कार की देर नहीं। मै सपत्नीक उपरोक्त अनुभव का आभास कर चुका हू। इतना ही नहीं हम दोनों को पुर्नजन्म मा करणी की ही देन है और हम इसके प्रत्यक्ष साक्षी है। ऐसे अनेकानेक श्रद्धालुओं की मदिर में भीड लगी रहती है। करणी मदिर दशनोक में स्थित होने से ये छोटा-सा गाव अतराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है और विदेशियों को भी इस मदिर की अद्‌भुतता आकर्षित करती है।

पेट फटा फिर भी चला

सरदारशहर निवासी कर्णेश सेठिया बताते हैं कि मैं कभी भी देशनोक पैदल नहीं गया। जब मैंने कोलकाता मे कुछ कार्य प्रारम्भ किया तब सफलता नहीं मिली। मैं हताश हो गया। उसी दौरान मैं सरदारशहर आया। उस समय आसोज नवरात्रि का समय था बाजार में पैदल यात्रियो को जाते देखा उनमें मरे मित्र भी थे। मैंने पूछा कहा जा रहे हो उन्होंने बताया कि देशनोक करणी माता के जा रहे हैं। मैं भी बाजार से ही सीधे उनके साथ रवाना हो गया। दोस्तों ने सोचा कि कभी गाड़ी से नीचे नहीं उतरने वाला पैदल क्या चलेगा। खैर मैं भी मा का नाम लेकर निकल पडा। डूगरगढ के पास बीकानेर से तब रफ्तार से आ रहे स्कूटर ने मरे इतनी जार की टक्कर मारी कि उसका किक् मेरे पेट को इतना गहरा काट की

खून की धार निकल पडी। सभी दोस्तो ने मना किया कि तुम यहीं रुक जाओ। उन्हाने डूगरगढ म दो घटे तक इलाज करवाया। डॉ ने मुझे आराम करने को कहा। दोस्तों न मुझे मना किया मगर मैं दर्द निवारक गोलिया लकर शर्ट मे पेट का वाधकर यात्रा को निकल पड़ा। मै इसे माँ का वड़ा चमत्कार ही मानता हू कि देशनोक कब आया पता ही नहीं चला। मन्दिर के आगे आकर मै गिर पड़ा। वहाँ मेरे घरवालो ने मेरा बराबर इलाज करवाया। आज सव ठीक है। तव से जैसा माँ का हुक्म साल म एक वार माँ के दशन करने अवश्य आता हू। मेरा कारोवार माँ की कृपा से वढिया चल रहा है। माँ की हमारे परिवार पर असीम कृपा है। ❑

छद

वेदा मंह ढील अती नहँ वरनी
धावळ्याळ रही दिशी धरनी।
वींदग वेल थई वीशरनी,
किण दिश गई हमरके करनी ॥ 1 ॥

आप तणो म्हारे अवलम्वा
आवे मन मैं घणा अचम्भा।
इहग कूक सुणी नह अम्बा
वोली हुई बैठी जगदम्वा ॥ 2 ॥

चडी लाग रही किम चाळे,
माणव सुद लेवा नह भाळे।
रैणव नेश नथी रखवाळे,
वैठ रही पाताळ बिचाळे ॥ 3 ॥

पालण कवि न वेग पधारो,
महमाया हेलो सुण म्हारो।
थानक राय भरोसो थारो
वाँह गह्याँ की लाज बिचारो ॥ 4 ॥

चारण-वरण भणे शुभ चाहो
नृपति कना सू धरम निवाहो।
क्यू करनी सूना छिटकावो
ऊपर देशनोक सू आवो ॥ 5 ॥

ईहग माझ थई अवखाई
रैणव ढील किया सुरराई।
मत सूना मेला जी माई
वानो-विरद लाजशी बाई ॥ 6 ॥

मेरु डगे शिव ध्यान चले मन
कार समद लोपे चहुँ कन्न।
ऊगव अरक पछिम दिशि उण दिन
जगदम्ब सहाय छोडवे जिण दिन ॥ 7 ॥



श्री तेमडारायमाता दर्शन, देशनोक



JET ROAD CARRIERS

163 Rabindra Sarani, Gr Fl KOLKATA 700007

Ph 32938706 30628706 Fax 22714492 (M) 9831184107

Dinesh Bhura

लीला लाडले काबों की

श्री करणीजी मन्दिर, देशनोक



URJA

Orbit 1 Garstin Place Unit 2C KOLKATA 700001

Shree Krishna Gardens Mathura Building

1/1 Raja Rajendra Lal Mitra Road Kolkata 700035

Ph 22130248 22133141 65132830 (O)

E mail urjacal@yahoo co in vinod_cal23@yahoo co in

Dr Vinod Kr Anchalia (9830061330 9831318009)

लीला लाडले काबों की

काबो (चूहो) वाली करणी माता

मन्दिर विश्व के वैभव है। मन्दिरो की प्राचीनता और महिमा को चुनौती नहीं दी जा सकती। बिना आस्था-स्थल के न केवल धर्म नीरस है, बल्कि उसकी बुनियाद भी कमजोर है। वास्तव मे मन्दिर परमात्मा की साकार उपासना के प्रतीक हैं। मन्दिर इट-चूने से बना कोई वास्तुकला से सम्पन्न घर नहीं है, वह तो है परमात्मा के अवतरण का कायगृह। मन्दिर आस्था का वह केन्द्र है जहा इसान की प्रत्येक मनोकामना के पूरा होने का विश्वास मिलता है।

बीकानेर से 30 कि मी दूर दक्षिण में बीकानेर-जोधपुर राजमार्ग पर स्थित 20-25 हजार की आबादी वाला गाव देशनोक श्री करणी मन्दिर की ख्याति के बल पर ससार में जाना-पहचाना जाता है। शताब्दियों से धार्मिक आस्था का केन्द्र, करणीमाता की आराधना स्थली, देशनोक आज अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट पहचान रखता है। किलेनुमा मन्दिर के शिल्प वैभव और काबों की विचित्रता के कारण दिनभर देशी-विदेशी पर्यटकों, शोधकर्मिया और श्रद्धालुओं का ताता लगा रहता है। राजस्थान के मरु त्रिकोण में स्थित बीकानेर के ऊट उत्सव जसनाथी सिद्धो के अग्निनृत्य और श्री करणी माता मन्दिर देशनोक मे स्वच्छद विचरते असख्य काबों के कोतूहल ने विश्व के सैलानियो को अपने आकर्षण में बाध रखा है। हजारों पर्यटक इस मरुधरा मे बार-बार आना पसद करते हैं। आर टी डी सी तथा पर्यटन व्यवसाय से जुड सस्थान अपने मेहमाना को भाव-भरा आमत्रण देते हैं—पधारो म्हारे देश।

इससे राजस्थान पर्यटन निगम, बीकानेर हेरीटेज होटल और विभिन्न ट्यूरिस्ट एजेंसियो के व्यवसाय में लगातार इजाफा हो रहा है, पर देशनोक की दशा-दिशा को कुछ हासिल हुआ हो, लगता नहीं है। इसका प्रमुख कारण बीकानेर से निकटता है। पर्यटन निगम की श्री करणी यात्रिका भी खाली रहती है। हा, इस बात का सतोष जरूर है कि यहा के लोग सास्कृतिक प्रदूषण और विद्रूप विसगतियों से अवश्य बचे हुए है। अन्यथा पुष्कर, बेणेश्वर और जैसलमेर की तरह यहा भी अपनी अस्मिता पर आच आने की आशका से उबरना कठिन हो जाता।

पर्यटका को सर्वप्रथम आकर्षित करता है मन्दिर का मुख्यद्वार। यद्यपि इसकी शिल्पकला बहुत ही सीमित है परन्तु जो भी है अद्वितीय है। सगमरमर की शिला पर छैनी हथौडी का कमाल देखा जा सकता है, जोड ढूढ पाना मुश्किल है। लता गुल्प, सरीसर्प, हसारूढ सरस्वती, काबों की कतारें और प्रात - सध्याकालीन दृश्य नयनाभिराम है। हाथी, सिह सपेरे और परियों का झुमका नमूने है। इस मन्दिर की छटा अनेक देशो में टेलीविजन कार्यक्रमो म प्रदर्शित हो चुकी है।

दूसरा प्रमुख आकर्षण है काबे। करणीमाता के इस मन्दिर में असख्य चूहे हैं जिन्हें श्रद्धाभाव से काबा कहा जाता है। काबे करणीजी की ही माया है। बिल्कुल अलग प्रजाति, जो न बिल खोदना जानते हैं और न ही मन्दिर सीमा के बाहर निकलते है। प्लेग जैसी महामारी के भयावह समय मे भी लोगों की आस्था अडिग रही है कि सकट करणीजी टालती है। चूहों से बचने की बजाय लोग काबों की कुडी का जल चरणामृत मानकर रोग-प्रतिरोधक के रूप में सेवन करते हैं, ऐसा देखा गया है।



करणी मन्दिर मे काबे क्यो ?

श्री करणीजी की इच्छानुसार चार पुत्र पूनों, नगो, सीहो और लाखण उत्पन्न हुए। करणीजी के वशज इन्हीं चार धडा (हिस्सा) में देशनाक मे वमते है। करणीजी का मबसे छोटा लडका लाखण जो उनको सबमे ज्यादा प्रिय था, घूमने-फिरने के शौकीन थे। वह प्राय इधर-उधर घूमने और अपने मित्रा के साथ मिल कर गोठ किया करता था। इसी तरह एक बार अपने मित्रा के साथ कार्तिक शुक्ला चतुदर्शी को वह कोलायत का मेला देखने के लिए गया हुआ था। तालाव म स्नान करते समय वहा डुव गया। उनके मित्रा ने तालाव मे जाल डालकर उसको वाहर निकाला एव उसके शव को बहली (बैलगाडी) मे सुलाकर देशनोक लाए। इस घटना की सूचना पाकर पूरे परिवार पर मानो विजली गिर पडी हो। एकदम शात, चुप। थोडी देर बाद पूरी बात का पता लगा तब उनके क्रन्दन से पूरा गाव शोक मे डुव गया। अपने लाडले की माँ होते हुए भी श्री करणीजी ने एक बुजुर्ग के नाते पूरे परिवार को ढाढस बधाया और कहा कि इस मसार का यह नियम है कि जो इस दुनिया मे आता है उसे एक दिन जाना पडता है। मगर पूरा परिवार इस बात को मानने से इन्कार करता रहा। पूरा परिवार मोह मे अधा था। उन्होने करणीजी से सिर्फ इतना कहा कि आज तक हमने आपसे कुछ नहीं मागा मगर आज आप हमें हमारा लाडला दे दो। हमें हमारा पुत्र लाखण दे दो। उनका क्रन्दन माँ न सुन सकी क्योकि माँ का भी लाखण लाडला जो था। श्री करणीजी अपने लाडले लाखण के मृत शरीर को अपने श्रीहाथो से बनाये गुम्भारे (जहा वर्तमान मे माँ करणी की मुख्य मूर्ति लगी है) में ले जाकर गुम्भारा बद कर उसे अपनी गोद मे विठा लिया। माँ ने तीन दिन तक तपस्या की। इम तपस्या के दौरान धर्मराज ने माँ को बताया कि आप शक्ति अवतार है, आप माँ हैं, आज आप अपने पुत्र को वापिस लेने आयी हैं। हम आपको पुत्र वापिस दे भी देंगे मगर फिर हमारे उस नियम का क्या होगा जो सृष्टि के लिए बनाया गया है ? आज आप अपने पुत्र को वापिस लेने आई हैं आप के बाद भी कई शक्तिया अवतार लेती रहेंगी। वो भी अगर इस तरह से सन्तान मागन लग जायगी तब इस नियम का क्या औचित्य रहेगा ? आज आप अपन पुत्र को वापिस ले जाएगे, कल इनका परिवार भा वढ़गा उनका क्या करेंगे आप ? तब माँ ने धर्मराज का वचन दिया कि 'मेरी सतान तेरे पाम कभी भी नहीं आएगा'। धर्मराज ने उसी क्षण हतात्साहित हाकर पूछा कि आप इतनों को कैमे रखोगी ? माँ ने कहा कि यह मरी चिन्ता है, तुम मुझे इम पुत्र को जल्दी वापिस दो। इसक बा' करणीजी लाखन के प्राण को वापिस लाकर धर्मराज का वचन दिया कि 'आज क बाद मरे वशज देपावत मर कर 'काबा' (करणी मन्दिर का चूहा) और काबा मरकर देशनोक का देपावत ही बनगा।' वचन देकर अपना तपस्या मम्पन्न कर चौथे दिन के मूर्योदय क साथ मा ने अपने लाडले को जीवित कर परिवार को सौंपा। अपने चारो पुत्रा के लिए आपने कहा कि जब तक मैं रहूँगी तब तक मरे सामने किसी भी पुत्र की मृत्यु नहीं हागा। श्री करणीजी ने 151 वर्ष तक जिदा रहकर कई काम किये। धर्मराज का दिये वचन के दिन से करणीजी न देपावतों के लिए कोलायत तालाब त्याज्य कर दिया। इसका देपावत पूर्णत पालन करते आ रहे हैं तालाब क पानी का स्पर्श तक नहीं करते। ऐसा देखा गया है कि देपावता के लिए त्याज्य तालाब को समस्त चारण जाति व करणी माता के भक्त तक स्पर्श तक नहीं करत हैं।

'काबा' शब्द का महत्त्व

(क+आ=का, ब+आ=बा)

कई शब्दकोशों, वीरभाण रतनू विरचित एका... नाम माला व कई आलेखों से चुनकर 'काबा श... अर्थ जाना और समझा कि माँ न जिस रूप में अ... बच्चों को अपने पास रखा है उसका साहित्य में वि... महत्त्व है।

सस्कृत भापा के शब्दकाश में 'क — ... विष्णु अग्नि कामदेव, प्राण जीव आत्मा शरार ... मन इत्यादि है।

आ विस्मयादि वोधक *अव्यय* है पर अ ...

एक विस्तृत रूप है। इसलिए अ का निम्न अर्थ ले सकते है।

अ—अनुमति अनुकम्पा दया इत्यादि।

व—बुनावत वरुण, योनी, तन्तु सन्तान इत्यादि।

वीरभाण रतनू विरचित एकाक्षरी नाम माला मे—

का—इला, शेप अल्प, रथ प्रकाश इत्यादि।

क—अगन विधाता, आत्मा, वनवास इत्यादि।

आ—शिव श्रम सरतर स्तुति इत्यादि।

वा—'वा' का अर्थ वालक के रूप मे दिया हुआ है।

उपरोक्त शब्दो के जुडने से बना शब्द कावा, जिसमें माँ भगवती श्री करणीजी की सतान की आत्मा नजर आती हे अर्थात् 'कावा' भगवतीजी श्री करणीजी की सताना के प्रतिबिम्ब है। काबा एक पवित्र शब्द है, करणी भक्ता के लिए पूजनीय है अत जिस जीव को यह जीवन करणीजी की कृपा से मिला है, इस जीवन मे उसको जगह-जगह भटकने की जरूरत नहीं है।

सफेद काबा

ऊजळ रग मे आवडा, राजे काबे रूप।
अवनी परइण रूप में, उतरया आप अनूप।।

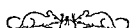
श्री आवडजी ने अपनी साता वहिनों के साथ सफेद कावी के रूप म अवतार लिया। इसलिए श्री करणी मन्दिर मे करणीजी क इप्ट देव के रूप के कारण ही सफेद काबे के दर्शन को शुभ माना है। जब इसका दर्शन किसी भक्त या दर्शनार्थी को हो जाता है तब उसकी मनोकामना पूरी होती है, ऐसा भक्तों का कहना है। मगर इसका दर्शन काफी तपस्या व इन्तजार के बाद ही होता है। अगर आप के मन मे दृढ-सकल्प, अपनी मेहनत पर पूरा विश्वास माँ के प्रति अथाह श्रद्धा व किसी प्रकार का कोई प्रलोभन न हो तब आपको सफेद काबे का दर्शन अवश्य होगा। इस कावे के दशन के लिए बीकानेर के राजा तक एक ही जगह कई घटों तक इन्तजार करते थे। दिखाई देने पर दर्शन कर फिर अपने अभियान की ओर आगे बढते थे।

मन्दिर मे असख्य काबे

मन्दिर के कावो की गिनती असख्य है। माँ करणी *का परिवार इतना बडा है कि अगुलियों पर गिनना* आसान नहीं है। यह मॉ की अद्भुत माया है। दिन म आपको ये बिखरे हुए दिखते है मगर सवेरे आरती के समय तथा साय आरती के बाद आपको इतने अधिक मात्रा मे नजर आएगे कि आख ठहर जाएगी।

काबे और काबो की दादी मॉ

श्री करणीजी शक्ति अवतार होते हुए भी एक एसी माँ दादी माँ के प्रामाणिक रूप मे हमारे सामने है। जिस प्रकार कई पोते-पातियो की दादी मॉ होती है, जिनके साथ उनके पोते स्वतन्त्र भाव से उनके ऊपर चढना पेशाव कर देना बच्चा का नाराज हाना इत्यादि सभी क्रियाए करते हैं ठीक उसी प्रकार आज भी दादी माँ के ये बच्चे रूपी कावे इनके साथ भी उसी भाव से खेलते है। अपनी दादी (श्रीकरणीजी की मूर्ति) के ऊपर चढ जाते हैं, कभी-कभी बच्चों की तरह पेशाब भी कर दते है ये छोटे बच्चो की तरह अपनी दादी से नाराज होकर एकात म चुप-चाप बैठ जाते हैं। जब करणीजी खाना खाते है (भोग के समय) तब ये कुछ देर उसम खाना तक नहीं खाते है। धीरे-धीरे ये अपनी दादी माँ के मुस्कराते हुए चेहरे की तरफ देखते है, फिर अचानक दौडकर आते है, भोजन थाल से खाना उठाकर भाग जाते है। ऐसे नटखट है ये माँ के लाडले पोते। कई बार तो ऐसा भी होता है कि माँ के भोग लगने से पहल ही खाना लेकर भाग जाते है। फिर भी माँ मुस्कराती रहती है। माँ करणी जब कभी किसी भक्त की सहायता हेतु दुप्ट को दण्डित करके आती है तब मॉ थोडी देर के लिए गुस्से मे होती है। आप आश्चर्य करेंगे कि ये माँ के नटखट पोते अपनी दादी माँ को चारों तरफ से बिल्कुल बच्चो की तरह घेर कर उनके ऊपर एक झुण्ड म उछलते-कूदते उनके ऊपर चढते रहेंगे—दौडते रहेगे। अपनी इन क्रीडाओं क द्वारा दादी माँ को मुस्कराने पर मजबूर कर देते हैं। आखिर माँ को मुस्कराना ही पडता है। ऐसे है काबें और उनकी दादी माँ।



काबो से न डरे

गणेशजी की सवारी वाले चूहो और करणी मन्दिर के काबो में काफी अन्तर है। जिन चूहो की कल्पना कर आप मन्दिर में दर्शन करते समय डरते हैं, उछलते है, कूदते हैं, कृपया ऐसा न करें। क्योंकि ये न तो आप के पास आते है न ही काटते है और न ही उछलकर अन्दर गिरते है। आप मन्दिर मे परिक्रमा व दर्शन करते समय अपने पैरो को घिस-घिस कर चले ताकि आपके पैरो के नीचे काबे या इनकी पूछ न दबे। अन्यथा ऐसा होने पर ये डरते है। फिर हो सकता है अपने बचाव के लिए ये मजबूरन उछले और आप को छू जाए। वैसे आमतौर पर सभी काबे अपनी मस्ती मे मस्त कहीं एकात मे आपको सुस्ताते हुए नजर आयेगे।

काबो के रहने का स्थान

वैसे तो ये मन्दिर के पूरे प्रागण में घूमते-फिरते रहते हैं। इन पर किसी प्रकार का कोई बधन नहीं है। मगर अधिकतर काबे सुबह आरती के समय व साय आरती के बाद आपको पूरे मन्दिर प्रागण में अठखेलिया करते हुए अधिक सख्या मे दिखाई देगे। परिक्रमा में अपने बिलो में, सावण-भादवो आदि कडाहों के पास, रसोवडे (रसोईघर) में, आवडजी के मन्दिर के आगे, माँ की मूर्ति के पास तथा झझारू भोमियों के स्थान के आस-पास आपको ये एक झुण्ड के रूप में लडते-झगडते व भागते हुए नजर आएगे।

दूध व लड्डू का ही भोजन करते हैं काबे

मन्दिर के काबे दूध व लड्डू का ही भोजन करते हैं। क्योंकि ये बच्चों का रूप हैं इस कारण से मन्दिर में इनके दूध का विशेष ध्यान रखा जाता है। मन्दिर में दूध-चढाने को भक्त इस कदर अपना भाव रखते हैं कि वो साल-साल भर के दूध की व्यवस्था एक साथ कर देते हैं। मन्दिर में ऐसी व्यवस्था है कि आप अगर दूध चढाना चाहते हैं तब मन्दिर आपको एक साथ रसीद बनाकर दे देगा जिससे नियमित आपका दूध मन्दिर पहुचता रहेगा। अभी मन्दिर में कुल दूध लगभग 51 किलो प्रतिदिन चढता है जिसमें मन्दिर द्वारा लगभ 21 किलो है, बाकी भक्तों द्वारा बाहर से आता है मन्दिर में काबा के खाने के लिए मिठाई रूप : लड्डुओ, पेडे व अनाज आदि का कोई हिसाब नहीं है मन्दिर के पूरे परिसर में आपको काबा के आगे मिठा मिलेगी। काबे मजे से खाते है—पानी पीते हैं और मं जाते हैं। काबा के खाने-पीने के प्रति मन्दिर ट्रस्ट पू सजग है उनका पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है।

मरा हुआ काबा नजर ही नही आता

जिस ढग से माँ ने अपने पुत्रों का रूप काबे का बनाया है ठीक उसी प्रकार न तो किसी ने काबों क प्रजनन की लीला देखी है और न ही किसी ने आज तक मरे हुए काबे को देखा है, ऐसा भक्तों का कहना है। ह कई बार काबा घायल अवस्था में मृत समान आपको दिखायी जरूर देगा। उसकी जब सास छूटता है तब व एकाएक गायब हो जाता है, यह माँ का ही चमत्कार है। अन्यथा अगर घर में कहीं एक भी चूहा मर जाए तब पू घर इस कदर बदबू मारने लगता है कि एक मिन द रुकना मुश्किल हो जाता है। जब किसी भक्त द दर्शनार्थी के पैर के नीचे दबने से कोई काबा घन होकर मर जाता है तब उसको चादी/सोने क प्रतिकात्मक काबा मन्दिर म चढाना पड़ता है। जब त नहीं चढाओगे तब तक रात को नींद में सात स आपको काबे आक्रमण करते हुए दिखेंगे। जैसे ही मन्दि में चढा देते हो उसी दिन से आप सुख की नीं ले सकोगे।

कर्म के अनुसार है काबों को स्थान

कई बार सुनने को मिलता है कि दशनों क हे मजे हैं, जिदा रहे तब तक तो मन्दिर के प्रसा का म लेंगे तथा मरने के बाद मन्दिर में काबों क रू में द मिठाई खाएग। नहीं, ऐसा नहीं है। मन्दिर परिस में स्वर्ग-नरक की तरह सपूर्ण व्यवस्था है। जो नि द करेगा, बुरे कर्म करेगा उसका कड़ाहों व पत क पत्थरों के बीच जगह मिलेगी जिनको मुश्किल म र

कभी लड्डू खाने को मिलगे। वो उमी क्षेत्र मे रहकर अपना जीवन-यापन करेगे। उनसे अच्छे कर्मों वाले पखा साल (दरवाजा न 2) के अन्दर प्रवश करेंगे जहा उनका थोडा खयाल रखा जाता है। मगर जो साधु-प्रवृत्ति के होंगे धर्म मे पूरा विश्वास रखगे किसी का बुरा नहीं है उनको माँ के चरणा तक आने-जाने तथा रहने की सुविधा होगी। वे कावे मूर्ति से मुख्य द्वार तक आ जा सकते है। बिल्कुल ऐसी ही व्यवस्था है मन्दिर के काबों की, जिसका कावे उल्लघन नहीं करते। ऐसा हमने कई वार देखा है कि जो काबा जिस जगह का है वह ठीक उसी जगह के इर्द-गिर्द ही रहेगा।

काबो की सम्पूर्ण सुरक्षा

काबो की सुरक्षा का पूरा ध्यान मन्दिर टस्ट रखता है। काबों को बाहर के पक्षिया से वचाया जाता है। इनकी सुरक्षा हेतु मन्दिर प्रागण पूरा जाली से ढका हुआ है ताकि ऊपर से किसी भी प्रकार का पक्षी आक्रमण कर इनको आघात न पहुचा सके। मन्दिर में ऐसा खुला नाला या झराखा नहीं है जिसमें से कोई जहरीला जीव अन्दर आ सके। जब कभी कोई अन्दर आ भी जाता है तब नियुक्त कर्मचारीगण तुरन्त उसको पकड कर एक ऐसी जगह छोडकर आते है जहा से वह दुबारा आने के सपने भी न ले सके। उनकी सुरक्षा हतु मन्दिर के मुख्यद्वार के पास चौबीसा घटे कर्मचारी नियुक्त रहते है ताकि दरवाज मे से कोई आवारा पशु बिल्ली व कुत्ते आदि प्रवेश न कर सके।

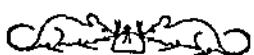
मन्दिर ट्रस्ट के द्वारा इतने पुख्ता इन्तजाम होने के कारण ही ये काबे मन्दिर प्रागण में एक छोर से दूसरे छोर तक स्वतत्र भाव से घूमते-फिरते-दौडते और अटखेलिया करते रहते है। ये काबे खाने-पीने व रहने की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं से सतुप्ट तथा सुरक्षा की दृप्टि से अपने आपको निश्चिन्त पाते हैं। इसी कारण ये स्वतन्त्र रूप से पूरे प्रागण में विचरण करते रहते हैं।

आजकल ये काबे इतन स्वतन्त्र हो गये हैं कि जो नियमित भक्त मन्दिर में बैठकर घण्टो तक माँ की माला फेरते है तब ये काबे उनके शरीर पर चढकर इस कदर उछलते है मानो बच्चे खेल रहे हों। भक्त बडे तन्मय भाव से उनकी इस लीला को देखकर मुस्कराते रहते है।

शहरी चूहो की कुछ रोचक जानकारिया

यह जानकारी उन चूहो के बारे में है जिन्होने पूरे विश्व म अपनी धाक जमा रखी है न कि श्रीकरणी मन्दिर के काबे क बारे में। मैंने कई पत्रिकाओ से चूहा के बारे कुछ रोचक जानकारिया हासिल की है ताकि आपको काबे और शहरी चूहों के बारे मे अन्तर का पता चलेगा।

- मोटे तौर पर एक चूहिया 21वे दिन 10-12 बच्चे देती है जो 3 माह बाद प्रजनन याग्य हो जाती है। एक जोडा वर्ष में अधिकतम 800 बच्चे दे सकता है। इनका जीवनकाल 1 से 2 वर्ष के बीच का होता है।
- विश्व म 2000 प्रजातिया भारत में 100 प्रकार की प्रजातिया।
- भारत म चूहो की सख्या जनसख्या से 6 गुना है, जिनको मारना आसान नहीं है। एक अभियान के तहत एक साल मे सिर्फ 3 लाख चूहे ही मारे गये थे।
- प्रतिवर्ष देश मे 2 5 करोड टन अनाज चूहे बरबाद करत है।
- एक चूहे का जोडा अगर जिदा रहे तो वर्ष में 15000 चूहे पैदा कर सकता है मगर 90 प्रतिशत मर जाते हे।
- एक चूहा दिन में 30 ग्राम वर्ष में 10 किलो अनाज खाता है।
- 1958 में चूहों के काटने से 20 000 रोगी मुम्बई अस्पताल में भर्ती हुए। मगर श्रीकरणी मन्दिर, देशनोक में आज तक एक भी 'काबे' के काटने से कोई मरीज नहीं बना।
- चीन म सर्वाधिक चूहे लगभग 5 अरब हैं।
- 'वृक्ष मूषक' पेडों पर नर व मादा अलग-अलग रहते हैं।



☞ उ अमेरिका म 'कगारू चूहा' पिछली टागों से छलाग लगाता है।

चमत्कारिक शहरी चूहे

☞ चूहे व साप म जन्म का वैर है। परन्तु क्या आपने कभी सुना है कि एक चूहे ने जहरीले साप को मार दिया हो। 1965 मे आस्ट्रेलिया के एक चिड़ियाघर म एक जहरीला साप अपने कटघरे मे आराम फरमा रहा था। अचानक एक छोटा सफेद चूहा किसी तरह कटघरे मे जा पहुचा। उसने आव देखा न ताव फुर्ती से साप की गदन पर सवार हो गया। चूहे ने गर्दन को दातो से इस कदर कुतर डाला की थोडी देर मे ही साप ढेर हो गया।

☞ 1976 में प बगाल मे मूषकजी साक्षात् यमदूत बन गये। 30 जनवरी की रात को एक अस्पताल से तीन माह की बच्ची को माँ के पास से उठाकर ले गये और थोडी देर मे मार डाला।

☞ 1978 मे बेल्जियम मे लील नगर मे एक चूहे ने कुत्ते व कुत्ते के मालिक को काट खाया। दोनो ने बमुश्किल अपनी जान बचायी।

☞ उत्तर प्रदेश के एक रामपुरिया चूहे ने वहा के विद्युत अभियताओ को 16 घण्टे परेशान किया। 7 दिसम्बर, 1978 को रामपुर मे चूहा विद्युत केन्द्र के आइल सर्किट मे कुद पडा जिससे नगर मे विद्युत आपूर्ति व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई।

☞ इटली के एक भीमकाय चूहे ने वहा इतना आतक फैलाया कि उसको आखिर में गोली मारनी पडी। 3 फुट लम्बा और आठ किलो वजनी मूषक महाराज का भूसा भरा शरीर आज भी फरेरा विश्वविद्यालय में सुरक्षित है।

☞ 30 जनवरी, 1980 को एक चूहे ने मुगलसराय पर कालका मेल को 3 घण्टे रोक रखा। चूहा डायनिग कार के होज पाइप में घुस गया तथा वहीं फस कर रह गया।

चूहो को मारना आसान नही है

लम्बी सूड वाले हाथी के समान मूर्ति को हम गणपति देवता मानकर स्तुति करते है। एक सूक्ष्म जीव मूषक को हम विशालकाय देवता का वाहन मानते हैं। इस देवता को हम विघ्नविनायक मानते हैं। किसी भी काम को प्रारम्भ करने से पूर्व गणेश की पूजा करते हैं। यह देवता भारत के साथ कई देशों मे पूज्य हैं। दक्षिण और पूर्वी एशिया में भी कइ देशों मे इनकी प्रतिमाए विपुल सख्या में पायी जाती हैं। श्री गणशजी को हम ऋद्धि-सिद्धि, समृद्धि का दाता भी मानते है।

यह गणपति नामक मारुत घनत्व का देवता है और भू-पिण्ड ही इसका निवास है। पिण्ड का पिण्डत्व या घनत्व बनाये रखना ही इसका काम है। पृथ्वी अग्नि पिण्ड है इसके लिए वेद मे कहा गया है 'अग्निर्भूस्थान'।

पृथ्वी पिण्ड का जो स्वरूप आप-हम देख रहे हैं वह गणपति प्राण के कारण ही है और उसकी रक्षा पीली मिट्टी है। मूषक इसी मिट्टी का निवासी है। गणपति की क्षीणता या शिथिलता का प्रभाव ही मूषक की मृत्यु का कारण है और मूषक की मौत किसी भयानक महामारी की सूचना है। मूषा घनत्व का प्रतीक भी है और रक्षक भी। वह सम्पूर्ण भूपिण्ड में व्याप्त है जैसे भूपिण्ड का अश हो। मूषक ही पिण्ड का वाहक है। वह समाप्त हो जाने का अर्थ पिण्ड की समाप्ति है, परन्तु वह समाप्त भी नहीं हो सकता न उन पर नियत्रण हो सकता है और न ही समाप्त करने का अभियान सफल हो सकता है। जब गणपति और मूषक का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। जब तक सृष्टि में देवताओ में सर्वप्रथम पूजनीय गणरा महाराज है तब तक इनकी सवारी चूहा महाराज रहेंगे। इनको मारना आसान ही नहीं बल्कि असभव है। ❑

शताब्दियो से धार्मिक आस्था का केंद्र करणी माता की आराधना स्थली देशनोक आज अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन चित्र पर ... पहचान रखता है। किलेनुमा मदिर के शिल्प वैभव और कावो (चूहो) की विचित्रता के कारण दिनभर देशी-विदेशी पर्यटक शोधकर्मियो और श्रद्धालु भक्तो का ताता लगा रहता है। करणी मदिर मे स्वच्छद विचरते हुए असख्य कावो के कौतूहल ने विश्व सैलानियो को अपने आकर्षण मे बाध रखा है।

श्री करणीमाता पूरे जगत् की माता है। माँ का हर लाडला यही सोचता है कि माँ उसके साथ है। जब भी कोई माँ को दिल पुकारता है माँ उसी क्षण उसके समक्ष होती है। हमे पता है माँ पल-पल हमारे साथ है। जहा-जहा भक्त माँ को पुकारता है माँ क जाना पडता है। ठीक ऐसा ही एक उदाहरण है दक्षिण भारत मे हैदराबाद म श्री करणीमाता का मदिर। हैदराबाद मे श्री करणीज महाराज ने अपनी तपस्या तेजस्विता प्रताप और प्रभाव से इस क्षेत्र की जनता के कल्याण उत्थान और उपकार के लिए इतनी दू पर आकर अपने दर्शनो से भक्तो को निहाल किया है। सतो ने ठीक ही कहा है कि जब तक किसी देवी-देवता की कृपा न हो तब त एक ईंट का निर्माण तो दूर एक इच जमीन भी खरीदी नहीं जा सकती है। अगर किसी पर अति कृपा हो तब बडे-बडे प्रासाद बनने क्षण भर की भी देरी नहीं होती। ठीक ऐसी ही कृपा एक परिवार पर हुई वो है सोमानीजी का परिवार। वो सोमानीजी जिन्हो तकरीबन 125 वर्ष पूर्व बीकानेर को छोडकर व्यवसाय की तलाश मे दक्षिण की तरफ कूच किया। घूमते-घूमते आप तिरुपतिबालाजी की महर और करणीमाता की कृपा से हैदराबाद मे रहकर अपना छोटा-मोटा कारोबार प्रारभ किया। आपक छोटा-सा परिवार एव छोटा व्यापार, दोनो सुचारु रूप से चलते रहे। श्री मुन्नालालजी सोमानी एक तरफ अपने कारोबार को आ बढा रहे थे वहीं दूसरी तरफ उनकी धर्मपत्नी रतनीबाईजी सोमानी धर्म-कर्म के द्वारा जनता की सेवा मे हर समय तत्पर रहती थी आप दोनो की व्यवहारकुशलता से लोग भली-भाति परिचित थे। इनके घर आया मेहमान कभी भूखा नहीं गया। सब को कुछ-न-कुछ मिला है। उनके पास जैसा था वैसी जरूरत पूरी की। ऐसे दयावान समाजसेवको पर माँ की तो अति कृपा होगी ही। माँ के इस लाडले को जब माँ की याद सताने लगी तब अपनी धर्मपत्नी के साथ हर साल माँ के दर्शनार्थ देशनोक आने लग गए। माँ से मिलन किसको अच्छा नहीं लगता। एक बार देशनोक आने के बाद आपका माँ को छोडने का दिल नहीं करता है। मगर फिर भी जाना पडता है लेकिन इस विश्वास के साथ कि नवरात्रि मे वापस आना है। यह क्रम आज तक अनवरत बना हुआ है। आज से करीब 60 वर्ष पूर्व आपके पुत्र तेजप्रकाश के जन्म से इनके परिवार से कोई न कोई प्रत्येक नवरात्रि मे माँ के दरबार मे हाजिर हो जाते है। सोमानी परिवार मे व्यवसाय को मुन्नालालजी के पदचिह्नो पर कारोबार को ऊचाइयो के शिखर तक पहुचाने मे पाचो पुत्र-जमनालाल तेजप्रकाश चन्दुलाल मुरलीधर एव जयकिशन इत्यादि ने अपनी पूरी मेहनत और लगन से कारोबार को आगे बढाया है। पूरे परिवार ने माता-पिता के शुभ वचनो को आदेश मानकर सहर्ष स्वीकार किया। पिताजी का देशनोक नवरात्रि मे दर्शनो का बनाया नियम आज भी पुत्र निभा रहे है। सोमानी ब्रॉदर्स से ख्याति प्राप्त कर चुके इस परिवार से एक पुत्र चैत्र नवरात्रि तथा एक पुत्र आसोज नवरात्रि मे पूरे नवरात्रि तक माँ की सेवा मे हाजिर रहते है। माँ की कृपा के कारण ही पूरा परिवार आज सामूहिक परिवार के साथ एक छत के नीचे एक साथ बैठकर भोजन ग्रहण करते हे फेसले लते है। यह सब माँ की कृपा से ही सभव है अन्यथा ऐसा केवल चलचित्रो मे ही देखा जाता है।

माँ की इससे बढकर क्या कृपा होगी कि आपकी माताजी की एक परम सेविका शान्ताबाईजी जिनको दक्षिण भारत मे माँ की सेवा का मौका मिला शाताबाईजी ने हमेशा रतनीबाईजी सोमानी से माँ भगवती जगत् की जननी की चर्चाए सुनना इतना मन को भाने लगा कि आपने एक दिन माँ की एक तसवीर मागी। इनके भावपूर्ण निवेदन के कारण माँ की तसवीर उनको दे दी गई। तब से शाताबाईजी माँ की नियमित पूजा-पाठ प्रारभ कर दी। माँ की इन पर इतनी कृपादृष्टि हुई कि आपके मुख से निकला प्रत्येक आशीष वचन खाली नहीं जाता है। शाताबाईजी की आज भी सोमानी परिवार पर अति मेहर है। सोमानी ब्रॉदर्स के पाचो भाइयो पर पूर्ण कृपा है मगर जयकिशनजी पर अति विशिष्ट कृपा है। क्योकि जयकिशनजी माँ के आदेश और शाताबाईजी की कृपा के बगैर किसी भी कार्य को अजाम नहीं देते है। माँ पल-प्रतिपल इस परिवार के साथ है। पूरे परिवार मे जयकिशनजी सबसे छोटे है मगर सब भाइयो

ने इनको कर्म से वडा वना दिया है। माँ की अति प्रसन्नता के कारण ही 3 मार्च 2009 को माँ ने आदेश दिया कि माँ का एक पूजा स्थान ऐसा वने जहा अमीर-गरीब छोटा-वडा आमजन सव दर्शनार्थ आ सके। इसके पीछे माँ की सोच थी कि दक्षिण मे एक ऐसा मदिर वने जहा के भक्तो के कष्टो का निवारण हो सके। जिनको मेरी जरूरत है मै उनके सामने रह सकू। हमे पता है कि माँ का नाम लेकर अगर कोई भी कहीं पर भी माँ की जोत कर लेगा माँ उस जोत के रूप से दर्शन अवश्य देगी। इतनी बडी कृपा के कारण ही जब तीन मार्च को मदिर की सोच का बीजारोपण हुआ तब उनके तीन-चार दिन बाद ही मदिर के लिए जमीन तलाशी गई। जमीन भी उस स्थान पर मिली जहा भगवान राम ने सीता माता को ढूढते समय जिस वाग मे रात गुजारी उस रामबाग स्थान पर माँ के मदिर की 12 मार्च 2009 को जयकिशनजी के हाथो नींव रखी गई। नींव रखने के वाद मदिर का कार्य दिन दूना रात चौगुना पूर्णता की ओर अग्रसर होने लगा। आखिर वो घडी आ ही गई जिसका सभी भक्तो को न जाने कितने जन्मो से इतजार था। अपनी माँ के साक्षात् दर्शनो का। उनका इतजार खत्म हुआ। यह शुभ दिन आया 29 जुलाई 2009 को सावन मास बुधवार शुक्ल पक्ष की अष्टमी का दिन इस दिन मदिर मे मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा हुई। मदिर मे मूर्ति स्थापना तक माँ की मूर्ति को अलग-अलग परिधानो मे रखा गया। मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के दिन भव्य कार्यक्रम रखा गया। मूर्ति की विधिवत पूजा अर्चना की गई। मुन्नालालजी के सुपुत्र जयकिसन के हाथो से मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा हुई। गुलावचन्दजी महाराज के सुपुत्र गोविन्दजी महाराज ने सेवापूजा की जिम्मेदारी को स्वीकार किया। जहा आज नित नियम अनुसार नित्य पूजा-पाठ सुचारु रूप से हो रहा है। मूर्ति की स्थापना के ठीक एक दिन पूर्व जब मूर्ति को मखमल की गद्दी पर शयन करवाया गया तब ठीक वैसे ही जेसे माँ ने राव शेखा को जेल से मुक्त कराने के लिए स्वय ने चील (सावली) का रूप धारण किया वैसा ही रूप जब मूर्ति को शयन की गद्दी से उठाया गया तब मूर्ति की पीठ की तरफ सिदूर से साक्षात् सावली का रूप दर्शन सबको हुआ। आज भी वो दर्शन यथावत है। सब को विश्वास हो गया कि माँ देशनोक से हैदराबाद के पाण्डुरगपुर के अत्तापुर क्षेत्र मे रामबाग मे सहर्ष साक्षात् दर्शन देने को पधार गयी है। इस क्षेत्र के लोग धन्य हो गये है। माँ का एक सबसे बडा चमत्कार सोमानीजी के घर मे हुआ। जिसे सुनकर रोगटे खडे हो जाते है। सोमानीजी के घर मे एक दिन इतना जोरदार गगन गुजायमान धमाका रसोई के स्टोर मे हुआ जिसको काफी दूर तक लोगो ने सुना जिसका आज तक पता नहीं चला कि यह कैसे हुआ। रसोई के गैस सिलेण्डर वगैराह सब सही थे। उस धमाके से दरवाजो के परखचे उड गए स्टोर के ठीक सामने माँ का पूजा स्थान था। जोरदार आवाज से पूजा मदिर का दरवाजा खटाक से खुल गया। जैसे ही माँ की नजरो ने पूरा नजारा देखा माहौल शात हो गया। पूरे परिवार ने माँ की कृपा को महसूस किया। हमे पता है जिन पर माँ की कृपादृष्टि हो उनका कोई भी बाल बाका नही कर सकता। ऐसे छोटे-मोटे अनेको चमत्कार माँ ने अपने भक्तो को समय-समय पर दिखाये है। माँ की महिमा अपरम्पार है। अजर हैं। अमर है जैसी माँ की दयादृष्टि आज सभी पर है— वैसी ही बनी रहे। माँ हमेशा यही चाहती है कि पूरा परिवार एक साथ रहे। परिवार मे कभी कोई झगडा न हो। इसी कारण माँ ने कई आयनाओ (प्रतिबधो) को सबको मानने के लिए राजी किया है। सभी माँ का आदेश मानकर आज तक निभाते आ रहे है। माँ की मेहरबानी कि बदौलत आज सोमानी ब्रॉदर्स परिवार ने पडपोते का मुह देख लिया है। बहुत कम लोग होते है जिनको सो वर्ष की आयु अथवा पडपोते का मुह देखने को मिलता है। हा इतना जरूर है कि जो परिवार माँ का स्मरण कर परिवार के साथ रहते है सुख-दु ख मे कधे-से-कधा मिलाकर चलते है वहा दु ख कष्ट हानि बुरी नजर झगडा इत्यादि कोसो दूर रहते है। वहा सिर्फ माँ की कृपा से समृद्धि खुशिया सुख-शाति धन-सपदा की अपार वृद्धि होती है। बद मुट्ठी की ताकत पूरे परिवार की शक्ति होती है। अगर अलग-अलग खुले हाथ हो परिवार मे बिखराव हो, टकराव हो तब हर कोई भी अगुली उठा सकता है। किसी ने सच ही कहा है कि पत्थर (सामूहिक परिवार) से आसमान मे छेद हो सकता है ककर (अकेला परिवार) से नहीं। श्री करणीजी ने हमेशा समाज के उत्थान भाईचारे और दीन-दुखियो की सेवासहायता के लिए जोर दिया। जब जब जरूरत पडी माँ ने अपने चमत्कारो से दुष्टो का सहार किया भक्तो की सहायता की। माँ को जितनी खुशी सामूहिक परिवार से कन्याओ के मान-सम्मान से धर्म-कर्म के कार्यों से होती है उतनी दिखावे के आडम्बरो से नहीं। माँ हर समय हमारे साथ है साथ ही रहेगी। जब कभी भी कष्टपीडा हो परेशानी हो चिन्ता हो माँ का एकान्त मे स्मरण करने से माँ कष्टो का निवारण भय से मुक्ति और सुख-शाति दिलाती है। माँ की जय हो। जे-जैकार हो।

श्री हिंगलाज माँ दर्शन

निज मन्दिर श्री करणीमाता, देशनोक



Arun Kumar Singhania

Ram Prasad Singhania

Purbanchal Housing Estate

K-15, Cluster-IX, Saltlake City, KOLKATA 700097

Phone 033 23353932 Mob 09830011589

श्री हिगलाज माँ दर्शन

श्री हिगलाज माँ

शक्ति शब्द की प्रकृति है मस्कृत का शक' धातु जिमका अर्थ है सामर्थ्ययुक्त होना एव पीठ का अर्थ है आधारस्थल। अत शक्तिपीठ से उन स्थानों का बोध होता है जहा शक्तिरूपा भगवती का अधिष्ठान है। सती क अग एव आभूषण जहा-जहा गिरे वे शक्तिपीठ बन गए।

देवी पुराण (महाभागवत) में भी भगवती न स्वय यह कहा है कि मेरा वह शरीर अनेक खडों में विभक्त होकर पृथ्वी पर गिरेगा और उन स्थानों पर पापों का नाश करने वाले महान् शक्तिपीठ उदित हागे—

वैसे तो जगत्-जननी पराम्बा जगदम्बा क माहात्म्य एव परिचय को लिख पाना जीव के सामर्थ्य से बाहर की ही बात है। उसका थाह किमने पाया है? वह क्या है? कहा है? क्या करती है? कैसे करती है? इन प्रश्नो के उत्तर प्राप्त करना क्या सभव है? वह तो स्वय ही यदि कृपा करे तो अपने स्वरूप की झलक मात्र किसी-किसी अपने प्यारे बालक को दर्शाकर कृतार्थ कर सकती है 'सो जानहि देही देउ जनाइ, जानत तुम्हहि तुम्हहि हुइ जाइ।' अत यदि ऐसा सौभाग्य प्राप्त भी हो जावे तो भी उसका वर्णन क्या जीव की सामर्थ्य में है?

पुराणा में हिगुलापीठ की बडी महिमा बताई गई है। श्री मद्भागवत महापुराण म वर्णन आया है कि हिमालय क पूछने पर देवी ने अपने प्रिय स्थाना को बताया, उसमें हिगुला को महास्थान कहा गया है 'हिगुलाया महास्थानम्।' इसी प्रकार ब्रह्मवैवर्तपुराण मे कहा गया है कि आश्विन मास में शुक्ल पक्ष की अष्टमी को हिंगुला में श्री दुर्गाजी की प्रतिमा का दर्शन, पूजन एव उपवास करने से पुनर्जन्म के कष्ट का निवारण हो जाता है।

माँ हिगलाज सामान्य अथ में एक पौराणिक दवी है जा आद्य शक्तिपीठ के रूप मे हिगोल क्षेत्र में *अवस्थित है। यह वह स्थान है जहा सती के हिगुला* लगाने वाले भाग ब्रह्मरध्र का निपात हुआ था। शास्त्रो के अनुसार यहा की शक्ति कोट्टविशा एव भैरव भीमलोचन है। यह बहुत ही प्राचीन तीर्थ है एव इसकी प्रसिद्धि *महाभारतकाल के भी पहले से होने का उल्लेख* श्री हिगलाज सेवा मडली के वेवसाइट पर किया गया है। ऐसे प्रमाण बताए गए हैं जिनके अनुसार सिध के राजा जयद्रथ, सम्राट विक्रमाजीत, राजा टोडरमल, राजा बिहारीमल, राजा माधोसिह राजा जगतसिह आदि ने इस पवित्र तीर्थ की यात्रा की थी। राजस्थान के प्रसिद्ध पीर रामदवजी ने भी अपन सेनापति अगवा लल्लू जखराज के साथ हिगलाज यात्रा की बतलाई। गुजरात के महान सत दादा मरवान श्री हिगलाज तीर्थाटन के *लिए आए थे एव इन्हें ही सर्वप्रथम माँ हिंगलाज का* कापडिया कहा गया था, जिसके पश्चात् प्रत्येक हिगलाज माँ के यात्री को गर्भगुफा से निकलने के बाद हिगलाज के कापडिया उपनाम से भी सबोधित किया जाता है एव वह दूमरो की माला धारण करने का भी अधिकारी हो जाता है। हिगलाज तीर्थ यात्रा के प्रभाव से ही भगवान राम एव श्री लक्ष्मण का रावण वध की ब्रह्महत्या का पापमोचन हुआ था एव इसके प्रमाण स्वरूप श्री राम ने हिगलाज गुफा क सामने उच्च पर्वत *शिखर पर लटकती हुइ चट्टान पर सूर्य एव चाद अकित* किए थे। यह ईश्वरीय कृत्य आज भी इसका साक्षी है।

माँ आवडजी के पिता श्री मामडजी ने भी सात



यार हिंगलाज यात्रा की बतलाई एव इसक आशीर्वाद स्वरूप माँ हिंगलाज न स्वय आवडजी सहित सात बहिनो के रूप में प्रकट हो एक चमत्कारी पवित्र जीवन जीया था, जिसके परवाडो से डिंगल साहित्य अटा पडा है। इसी प्रकार माँ करणीजी के पिता श्री मेहाजी ने भी हिंगलाज यात्रा मे अपना नामगा चल जाने की पुत्रैषणा माँ हिंगलाज से की थी, जिसे आकाशवाणी के उद्घोष से स्वीकृति मिली थी। इस आशीर्वाद एव आश्वासन के फलस्वरूप ही माँ करणी जैसी महान शक्ति ने मेहाजी की पुत्री के रूप मे प्रकट हो ऐसा नामगा चलाया कि दिन दूना और रात चौगुना बढता ही जा रहा है और हम सभी को आश्रय प्रदान कर रहा है।

चारणो के लिए तो हिंगलाज यात्रा जीवन के एक प्रतिफल के रूप मे अग्रणी मानी गई है। इसका सुअवसर प्राप्त कर लेने वाला चारण अपने आप को अत्यन्त सौभाग्यशाली एव कृत-कृत्य समझता है। इसके अतिरिक्त ब्रह्मक्षत्रिय, खत्री, सिंधी समुदाय की माँ हिंगलाज कुलदेवी है एव पूरा समाज माँ को समर्पित है। बगालियों मे भी माँ हिंगलाज के प्रति लगाव एव आस्था रही है।

माँ हिंगलाज के दर्शन आज क समय मे इतने सुलभ नहीं है फिर भी अगर माँ का बुलावा हो भक्त की भावना हो, उसको रोकना कठिन ही नही बल्कि नामुमकिन है। हाँ, समय को देखते हुए जिस तरह की यात्रा पक्रिया है उसके अनुसार चलना पडता है। एक देश से दूसरे देश जाने के लिए सवप्रथम आपके पास पास पोर्ट होना चाहिए। फिर उसके आधार पर आपको वीजा (आज्ञाप्रपत्र) की आवश्यकता होती है। जिसमें आपको उन स्थानो तथा कितना समय रूकना है। सब अकित होता है। यह वीजा माँ हिंगलाज यात्रा के लिए नई दिल्ली स्थित पाकिस्तानी उच्चायाग (हाई कमिश्न) के यहा से प्राप्त करना पडता है।

ब्लूचिस्तान जाने के रास्तो का चयन

भारत से जाने वाले यात्री को सबसे पहले कराची पहुचना पडता है। यहाँ से आगे की यात्रा प्रारम्भ होती है। कराची पहुचने क तीन मार्ग अभी उपलब्ध हैं—रल मार्ग, सडक मार्ग तथा हवाई मार्ग।

रेल मार्ग

पाकिस्तान जाने के लिए दो रल मार्ग हैं

1 समझोता एक्सप्रेस द्वारा

दिल्ली से अटारी होते हुए लाहौर एव फिर लाहौर से कराची जाना पडता है। राजस्थान से जान वाले यात्रियो के लिए यह मार्ग सुविधाजनक नहीं है।

2 थार एक्सप्रेस द्वारा

जोधपुर से बाडमेर होत हुए मुनाबाव तक, फिर भारतीय जीरो लाइन से पाकिस्तानी जीरो लाइन तक एव वहा से कराची। यह मार्ग ही राजस्थान से जाने वाल यात्रियो के लिए उपयुक्त है। रेल का जाने आने का समय रेलवे समय सारिणी म दिया गया है। अभी इसमें केवल द्वितीय श्रेणी शयनयान ही उपलब्ध है।

रेल मार्ग की समस्याए

यद्यपि थार एक्सप्रेस से रल मार्ग द्वारा जाना सस्ता है पर इसमे कुछ समस्याए है जा यात्रिया को ध्यान में रखनी चाहिए

1 सुरक्षा की दृष्टि से रेल मार्ग कम सुरक्षित है।
2 'नो मैन लैंड' का करीब 30 माटर का रास्ता जो भारत एव पाकिस्तान की जीरो लाइन क बीच का है, उसमे यात्री को अपना सामान स्वय ही लेकर जाना पडता है। बुजुर्ग एव अक्षम यात्रियों क लिए यह कष्टप्रद है।
3 भारतीय इमिग्रेशन एव कस्टमस् तथा पाकिस्तानी इमिग्रशन एव कस्टमस् में गहन सुरक्षा जाचों में बहुत अधिक समय लग जाता है। सामान्यतया रेल के एक फेरे में यदि 500 यात्री भी हैं और प्रति यात्री केवल 2 मिनट भी लगें ता 6 7 घंटे इधर एव उतने ही उधर लग जाते हैं। इस बाच भारतीय क्षेत्र में ता व्यवस्था सुविधाजनक है परन्तु

पाकिस्तानी क्षेत्र म अभी वैसी सुविधाए उपलब्ध नहीं हैं। आशा है, कालातर मे इन समस्याओ का कोई सरलीकरण हो जाए।

सडक/बस मार्ग

अभी मुनाबाव वाली तरफ मे सड़क मार्ग खुला नहीं है एव पाकिस्तानी क्षेत्र में करीब 20-22 कि मी तक बालू रेत के टीलों म से ही जाना पड़ता है। श्री जसवतसिहजी साहब सड़क मार्ग से इसी रास्ते से यात्रा पर कुछ वर्ष पूर्व पधारे थे एव इसका अनुभव कोई सुखद नहीं रहा। वैसे भी फिलहाल सामान्य व्यक्ति के लिए इस मार्ग से जाना सभव नहीं है।

बस मार्ग केवल अटारी के रास्ते लाहौर तक उपलब्ध है, अत यह राजस्थान से जाने वाले यात्रिया के लिए अनुपयुक्त है।

हवाई मार्ग

सुविधा एव आराम की दृष्टि स हवाई मार्ग सर्वोत्तम है। वायुयान इदिरा गाधी अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, नइ दिल्ली एव मुम्बई से कराची के लिए जाते है। राजस्थान के यात्रिया के लिए दिल्ली से उडान भरना सुविधाजनक है। अभी आने-जाने का किराया प्रति व्यक्ति लगभग 16,000 रुपये है। सप्ताह मं तीन दिन (सोम, बुध एव शनि) दिल्ली एव कराची से पाकिस्तान एयर लाइन की अतरराष्ट्रीय विमान सेवा उपलब्ध है। उडान का समय लगभग डेढ घटा है। कराची से आने वाला विमान ही कुछ देर बाद वापस दिल्ली से कराची के लिए उडान भरता है।

साथ ले जाने के लिए हवन व पूजा की सामग्री

अगरबत्ती, कपूर धूल-गूगल, गाय का घी करीब 1 किलोग्राम, रौली मोली सिंदूर, गिट 11 के लगभग प्रति व्यक्ति, जटा का नारियल भारी से भारी पानी वाला एक प्रति व्यक्ति, (चद्रकूप के लिए) जौ पाव भर, काले तिल पाव भर हवन के लिए चावल पाव भर हवन का पुड़ा, पचमेवा श्रद्धानुसार, मिस्री अन्दाज से प्रसाद के लिए, मिठाइ अन्दाज से प्रसाद के लिए कुमकुम, चूडिया साडी चूदडिया जितनी चढाना चाहें या चढाकर वापस परिवार म बाटने के लिए एक ध्वजा चिरजा व स्तुति पाठ के लिए पुस्तक। छत्र चढाना हो तो श्रद्धानुसार ले ल।

अलील कुड एव हिगोल नदी का पवित्र जल लाने के लिए छोटी जरीकेन 5 किलोग्राम वाली या एक-दो बोतलें कराची मे खरीदी जा सकती है।

यात्रा में साथ जाने वाले व्यक्तिया का ठीक चयन करना चाहिए इसमें एक दल की सख्या 5 से कम एव 8 से अधिक नही होनी चाहिए। आठ व्यक्तियों से बडे दल को यात्रा करवाने में व्यवस्थापको का परेशानी होती है, अत सख्या का ध्यान अवश्य रखा जाए। छोटे बच्चों अधिक वृद्ध एव अशक्त जनो के लिए यह यात्रा कष्टदायक है। अपने दल मे से एक व्यक्ति को चुनकर उसकी देखरेख एव निर्देशन में सभी को रहना चाहिए इससे अनावश्यक परेशानियो से बचा जा सकता है। अधिक बोलने वाला चचल एव निरकुश साथी सभी के लिए दु खदायी सिद्ध हो सकते है विशेषतया पाकिस्तान जैसे राष्ट्र की यात्रा में।

विदेश यात्रा मे उस देश की करसी (मुद्रा) ही ले जानी चाहिए। पाकिस्तानी करसी हर जगह सुगमता से उपलब्ध नहीं होती है अत ऐसी परिस्थिति में अमेरिकन डॉलर सबसे श्रेष्ठ है। इसका रूपान्तरण आवश्यकतानुसार सब जगह सभव होता है। डॉलर कुछ नकद एव ज्यादातर ट्रैवलर चेक क रूप मं रखने चाहिए ताकि खो जाने आदि का भय न रहे। इन ट्रैवलर चेकों की फोटोकॉपी करवाकर अलग से रख लेनी चाहिए एव इनके गुम होने की परिस्थिति में तुरत सूचित करना चाहिए।

अब प्रश्न है कि कितना धन साथ ले जाना चाहिए? यह एक बडा ही जटिल प्रश्न है और इसका एक ही उत्तर सभव नहीं है। इस सदर्भ म मै एक अग्रेजी कहावत का अनुसरण किया करता हू जिसके अनुसार 'यात्रा मे जाने के लिए जितनी जरूरत समझो उससे आधे कपडे और जितनी जरूरत समझो उससे दुगुना धन साथ



ले जाना चाहिए।' फिर भी मेरे अनुमान से औसतन 20 से 25 हजार रुपये मूल्य की विदेशी करंसी तो प्रत्येक यात्री के पास म होनी ही चाहिए।

भारत से कराची तक लगने वाला समय

भारत मे कराची (पाकिस्तान) तक पहुचने में लगभग डेढ़ घटे का समय लगता है। कराची पहुचते ही हिंगलाज यात्रियों की सेवा म सहर्ष अगुवानी करने के लिए वहा के माँ हिंगलाज के लाडले भक्त, सेवक श्री वरसी भाई लगभग मौजूद रहते हैं। क्योंकि पाकिस्तान में हम जैसे ही लोग रहते हैं। वहा भी भारतीय सस्कृति की झलक है मेहमाननावजी है अपनापन है। अनावश्यक भय एव सका की कतई आवश्यकता नहीं है। लेकिन होना चाहिए पूव सपर्क।

हवाई अड्डे से 20 किलोमीटर की दूरी पर मोहम्मद अली जिन्ना रोड पर स्थित स्वामी नारायण मदिर में एक घर आता है जहा 'हिंगलाज हाउस' लिखा है। वह हाउस वरसी भाई का है जहा माँ की कृपा होती है तभी उनको सेवा का आपको सेवा का लाभ मिल सकता है। क्योंकि पाकिस्तान की सप्ताह भर की यात्रा वरसी भाई के बगैर करना मुश्किल होती है।

यह स्वामी नारायण मदिर परिसर एक ऐसा मदिर परिसर है जहा सभी देवी-देवताओं, श्रीगुरुग्रथ साहिब स्थापित है जिनकी नियमित सेवा पूजा की सुदर व्यवस्था है। इस परिसर मे कई छोटे-छोटे क्वार्टर बने हैं। जिनमे लगभग 100 परिवार निवास करते हैं। परिसर के आवासियो की एक समिति है जो इसकी देखभाल करती है। परिसर का एक मुख्य द्वार है जो 20-25 चौडाई वाला है। जहा निजी सुरक्षा की आवश्यकता भी रहती है। कराची से लगभग 30 किलोमीटर दूरी से ब्लूचिस्तान का इलाका आरम्भ हो जाता है। जहा आपका बजर इलाका, अजीब पहाडो की शृखला जो बालू के नुकीले मीनार नुमा पहाड हैं जो अपनेआप मे अजुबे हैं। 100 किलोमीटर की दूरी लगभग तय करने के बाद मील का पत्थर मदिर से अगोर 117 किलोमीटर और ग्वादर बदरगाह 527 किलोमीटर है पहले यह रास्ता कच्चा रेतीला था। जिससे सफर करने में प्रन्द्रह बीस दिन लग जाते थे। मगर इस बदरगाह की सुविधा के कारण जिस सडक को बनाया गया है। तब यह रास्ता सरल हो गया है। इस रास्ते का निमाण करीब 6 वर्ष पूर्व ही हुआ है। अब इस रास्ते पर अघार तक नियमित बस भी आने-जाने लगी है। इन सुविधा क होते हुए भी माँ की कृपा से आज आप सबको वरसी भाई जैसे सज्जन पुरुष मिलना बहुत जरूरी है। इनका साथ और सहयाग आवश्यक है।

यहा से एक घटे के बाद एक पुलिस चौकी आती है जहा आपको अपने कागजात चैक करवाने पडते हैं। वहा आपको एक जीप के द्वारा कच्चा मार्ग तय करते हुए चन्द्रकूप की यात्रा करनी पडती है। गाडी 'पीर हसन फराई स्थान पर पहुचती है जहा से चन्द्रकूप (भभकनाथ) पहाडी दिखाई देती है। जीप को रेतीले मार्गों से होते हुए बडा मुश्किल से निकलते हुए बाबा चन्द्रकूप तक पहुचता है। बाबा का जमीन से 300-400 फुट ऊचा स्थान है जिसके चढाई करने के बाद आपको चन्द्रकूप क दर्शन होते हैं। यह पहाडी राख, मिट्टी, ककरों से बनी है आपको कहीं खड्डे कहीं ढलान तो कहीं सपाट मिलती है। चन्द्रकूप स्थान 100-150 गज के घेरे म पानी मिट्टी एव राख का दलदल भरा है। जिसमे बुदबुदे एव भाप उठती रहती है जिससे नजदीक स्थान बेहत चिकना बना रहता है। पाव टिकना मुश्किल हो जाता है अगर एक तरफ फिसले तो दलदल दूसरी तरफ फिसले तो पहाडी क नीचे गिरने का डर लगा रहता है वायु भी तेज चलती है। खैर जैसे तैसे टिक रहना पडता है। यहा पर अगरबत्ती, धूप करके अपने-अपने नारियल चन्द्रकूप भगवान को भट करके उनसे यात्रा की एव माँ के दर्शनो की अनुमति प्राप्त की जाती है। यह हिंगलाज यात्रा का पहला पडाव पूरा होता है। यहा 40-50 क्लिोमीटर चलने पर अघोर नामक स्थान आता है जहा से मुख्य सडक छोड कर पहाड की तलहटी से कच्ची सडक पर चलना होता है। यह सड़क रेतीली नहीं है गाडी आराम से चल सकती है।

इस मार्ग पर हिंगोल नेशनल पार्क एव किलोमीटर के बोर्ड लगे होते हैं। वहा से निकलते ही आपको एक छोटा जलाशय दिखाई देगा यही पवित्र हिंगाल या अघार

नदी है। जो एक गहरे खड्डे का रूप धारण कर जलाश्य वन गया है। जिममें मगरमच्छ, मछलिया काफी मख्या मे है। इस स्थान से 15 किलोमीटर की दूसरी पर किलेनुमा पहाड दिखाई देता है तथा बायीं तरफ हिंगोल नदी कभी दूरी कभी पास बहती हुई दिखाई देती है। यहा आवादी कम है। इस हिंगोल नदी के किनारे हाथ मुह धोकर यहा पूजा-अर्चना, जोत, फल एव नारियल की प्रसादी चढाई जाती है। बरसात के मौसम मे नदी का वेग तेज होता है। नदी को पार करना सभव नहीं होता है। पुल निर्माण था जो ध्वस्त हो चुका है यहा से जैसे ही माई के महल प्रवेश करते है। चारो तरफ सुन्दर पहाडो का अद्भुत नजारा देखने को मिलता है।

माइ के महल में प्रवेश होते ही चारों तरफ सुन्दर पहाडा का अद्भुत नजारा देखने को मिलता है। घाटीनुमा रास्ते पर पक्की सडक श्री हिंगलाज सवा मडली ने निर्मित करवाई है। पहले पूजा स्थल 'सर कटा गणेश' या 'मुड कटा गणेश' पर मब को रुकना चाहिए। सडक की बायी ओर एक तिकोनी विशाल शिला है। हिंगलाज सेवा मडली ने अब एक छोटी गणश प्रतिमा स्थापित कर दी है। आदिदेव विनायक की मभी को भाव से पूजा-अर्चना दीपक जलाए, प्रसाद चढाये एव स्तुतिया करनी चाहिए।

करीब 3-4 कि मी चलने पर दाहिनी आर मुडते ही एक चौरस मैदान आता है। जिसके एक ओर एक पट्ट पर अग्रेजी एव उर्दू में 'नानी मदिर लिखा हुआ है। यहीं गाडी से उतरना है। सभी को माँ हिंगलाज एव माँ करणी के जयकारो के उद्घोप करने चाहिए। यहा एक ओर दो छोटी-छोटी गुमटिया है ये आशापुरा माई एव बजरगबली के मदिर है। इसके दूसरी ओर एक विश्राम स्थल है। जहा फाटक से अदर घुसते ही चौक के बगल में दो सुदर हालनुमा कमरे है, एक सुविधा कक्ष, चौक के एक ओर एव एक कमरे के अदर भी है। 25-30 व्यक्तियो को ठहरने की आरामदायक व्यवस्था है।

माँ के द्वार पहुचकर मन दर्शनों के लिए उतावला हो जाता है। पहले शायद अधेरे के कारण प्रात काल का समय ही दर्शनों के लिए उपयुक्त होता था पर अब श्री हिंगळाज सेवा मडली के सद्प्रयासों से पूरा क्षेत्र, मदिर तक का रास्ता चहु ओर से फ्लड लाइटस् की रोशनी मे जगमगा रहा है। दो ऊचे पहाडा के बीच घाटी में से रास्ता है जो बीच मे बह रहे झरने के कारण कभी इस तरफ और कभी उस तरफ घुमा-घुमाकर बनाया गया था। बहुत सभल कर चलना पडता है। कुछ ही दूरी पर आता है—कालिका माता का चबूतरा। उस पर स्थापित माँ काली की पतिमा, दीवार में एक बडा बाबीनुमा छेद था, जिस पर मिदूर आदि लगा था। यहा प्रणाम कर आगे बढे तो छोटे-छाटे देवल मार्ग मे आए। इनम एक मेलडी माई का था जो ऊट पर सवारी करती है।

अघोर नदी के पार होते ही समतल रास्ते से गुजरने के बाद कुछ ही दूरी पर सामने चिर प्रतिक्षित माँ हिंगलाज का मुख्य मदिर दिखाई देने लग जाता है। मदिर के ठीक सामने कुछ समय पहले तक एक 'शरण कुड था जिसमे यात्री स्नान कर पूजा के लिए आगे बढता था। अब यह वर्षो से मिट्टी से भर चुका है। मदिर का प्रवेश द्वार आठ से दस सीढिया चढने पर नजर आता है। मदिर में पवेश करते ही एक चौक आता है तीन-चार सीढिया चढने पर एक चबूतरा है। जिसके बायी तरफ एक वेदी बनी है। यही है माँ हिंगलाज की विशाल गुफा मे बनाई गई पूजा की वेदी। यह विशाल गुफा पहाड को काट कर बनी है जिसकी छत लगभग 50 फुट ऊची है। यह चट्टान झुलती हुई नजर आती है जिसके लटने के कारण पूजा की वेदी और चबूतरा ढका हुआ नजर आता है। वैसे यह खोहनुमा गुफा मदिर की निर्मित चार दीवारी के बाहर से ही शुरू हो जाती है। और अत में गहरी एव ऊची बन जाती है। उसके एक भाग को चार दीवारी बनाकर द्वार लगाकर इसको मदिर का रूप दे दिया है। सामने वेदी पर जो सिंदूर रजित नेत्रयुक्त पिडिया सुशोभित है। जिनमें से एक माँ हिंगलाज के मस्तक की प्रतीक तो दूसरी भैरव बाबा प्रतीक बताते है। एक और अखण्ड दीपक जलता रहता है। जहा पर त्रिशूल लगें है ऊपर लाल चूनरिया सोभायमान रहती है। माँ हिंगलाज मदिर के पास ही यक्षो द्वारा निर्मित माई के महलो की कारीगरी देखने लायक है। झरोखे खिडकिया साक्षात्

नजर आती है। यह सभी नजारे माँ हिंगलाज मंदिर के परिसर मे है जब माँ हिंगलाज के दर्शन करने होते हैं। तब सभी को एक झरने से हौदनुमा इकट्ठे पानी में स्नान करने के बाद गिले कपडो के साथ ही गर्भ गृह में बायीं ओर प्रवेश कर दायीं ओर से बाहर निकलना पड़ता है। समर्पण और निष्ठा के बल से सभी दर्शनार्थी इसके पार पहुचते है। बस श्रद्धा और विश्वास होना चाहिए। गुफा के रास्ते में कोई कठिनाई नहीं होती है घुटनों के बल पर रेग कर चलना पडता है। वहा से बाहर निकल कर नवजात शिशु की भाति रोने का उपक्रम करना पड़ता है। वहा आपको मिश्री एव जल की घुटी दी जाती है। उस समय आपको मन ही मन अरदास करनी चाहिए कि हे माँ! हम मे नई चेतना भरे नई ऊर्जा भरे और आशीर्वाद प्रदान करे कि जीवन के जिस चरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य जन्म मिला है। उस लक्ष्य की प्राप्ति में ही शेष जीवन निकले। माँ की जय हो।

जन्म घुटी के बाद पुन स्नान करके पहने हुए कटी वस्त्र वही छोडना होता है। एक समय में निवस्त्र गुफा में से निकलना पडता था। वर्तमान म ऐसी कोई शर्त नहीं है। नये वस्त्रो को धारण करने के बाद माँ के दर्शन करने होते है। प्रसाद चढाई जाती है माँ के दर्शन के बाद एक विकट चढाई पर 'चौरासी' की यात्री मे जाना होता है। जिसको कुछ लोग ही जाते है चट्टान विकट है जहा से आप अलील कुड का जल ला सकते है।

पहाड के ऊपर समतल स्थान है जहा श्री गुरु गोरखनाथजी के चरणचिह्न (पत्थर पर पैरो के निशान) एव श्री गुरुनानक की पावडिया (खडाऊ) बनो है। कुछ गुजराती भक्तो ने अभी हाल ही मे खोडियार माता की एक प्रतिमा भी लगा दी है। इसके पास ही रामझरोखा के भग्नावशेष हैं। यहीं एक तरफ एक 100 फुट ऊची विशाल गुफा है जिसका कोई ओर-छोर पता नहीं लगता। अथाह स्वच्छ पानी का सुदर अलील कुड है। जिसके किनारे लाल कनेर का छोटा पौधा लगा है। पानी मे एक साढे पाच-छह फुट लबा प्राकृतिक शिवलिंग है और पास में ही एक छोटा जल का कुड है। पहाड पर कोई जानवर या पशु-पक्षी नही है, एकदम निर्जन स्थल है।

मन्दिर के बाहर निकलते ही हमें ऊपर, बहुत ऊपर माँ के देवल के ठीक सामने एक छोटी गुफा पर झूलती हुई चट्टान दिखाई देती है। उसी पर स्पष्टत सूर्य और चन्द्र अकित है। भगवान श्रीराम, गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से रावणवध के बाद ब्रह्महत्या से मुक्ति पाने हेतु जब मा हिंगलाज के दरबार में आए थे तो उन्हाने अपनी उपस्थिति और ईश्वरावतार प्रमाणित करने के लिए ये सूर्य और चद्र अपने हाथो से अकित किए थे। यह दवी कृति कल्पनातीत है। कोई भी मनुष्य पर्वत की ऊची चोटी पर इस प्रकार की आकृति अकित करने में समर्थ नहीं हो सकता। अगर आप चौरासी की यात्रा पर न जा सकते हैं तब आपको मंदिर के पास ही एक विशाल शिला मन्दिर के सामने झरने के किनारे पडी है, इसकी तीन प्रदक्षिणा कर लेने पर चौरासी की यात्रा का फल यहीं प्राप्त हो जाता है।' यह प्रदक्षिणा भी सरल नहीं और आसान होती भी कैसे? आखिर चौरासी की परिक्रमा जो है। इस शिला के बारे में चर्चित है कि जब श्री गोरखनाथजी महाराज तपस्यारत थे तो उनके मन में पहाड के ऊपर स्थित अलील कुड की गहराई नापने की जिज्ञासा हुई। उन्हाने यह शिला कुड म गिरा दी जो सीधी माँ हिंगलाज के मंदिर के सामने आकर ठहरी। तभी से इस पवित्र शिला की परिक्रमा चौरासी की परिक्रमा के समकक्ष मानी जाने लगी।

नगर थट्टा

माँ हिंगलाज की यात्रा से एकदम दूसरी दिशा में जाना है कराची शहर को छोडने के बाद हाइवे पर करीब 100 किलोमीटर की दूरी पर नगर थट्टा है। इलाका उपजाऊ है। पानी की बहुतायत है। लगभग पूरे मार्ग पर सडक के दोनो ओर हाथों में मछली लिए बचने वाले खडे रहते है। नगर थट्टा में घुसने के एकदम पहले मतला नामक स्थान पर दाहिनी ओर सिंह भवानी का मंदिर है। प्रमुख मन्दिर देवीजी का है, जिन्हें लोग माँ हिंगलाज की बडी बहिन बतलाते है। मात्र सिंदूर रंजित सिर के पिंड का विग्रह था और इसी की पूजा होती है। इस मूर्ति को भूमि में से स्वप्रकट बताया गया।

इसके बाहर एक देवल में माँ काली विराजमान है जिन्हे प्रणाम कर आगे बढें। जैसा कि यहा परिपाटी है, मुख्य देवता के अतिरिक्त प्राय सभी प्रमुख देवी-दवताओं की प्रतिमाए यहा मौजूद है एव प्रागण में अलग-अलग मन्दिरों में स्थापित थीं। राधा-कृष्ण, भगवान शकर, राम दरबार श्री गणेशजी महाराज एव बजरगबली सभी अपने-अपने कक्षो में शोभायमान हो रहे हैं।

मुख्य मन्दिर के दाहिनी ओर सीढियों से उतरकर एक पानी का कुड था। जिसके बारे में बताया गया कि इसमे अटूट पानी हर समय विद्यमान रहता है, यद्यपि कोई स्रोत सामने नजर नहीं आया। कहते हैं कि माँ हिगलाज के अलील कुड की तरह यह भी पातालफोड़ है।

इस मंदिर के महत्त्व पर बताया जाता कि इस मन्दिर म दर्शन किए बगैर माँ हिगलाज की यात्रा पूर्ण नहीं मानी जाती। बताया गया कि भगवान श्री राम भी माँ हिंगलाज की यात्रा के लिए यहीं से आज्ञा लेकर गए थे, अत इस मन्दिर के दर्शना का विशेष महत्त्व है।

हिगलाज यात्रा आसान नही

हिगलाज यात्रा कैसे की जाए किसकी सेवा ली जाए तथा कब-कब क्या-क्या करना चाहिए। इनका दर्शन कर पाठकों को यह वरणन् पहुचाने का प्रयास है। इसकी पढने के बाद यात्रा सबधी आवश्यक जानकारी मिल जाती है।

हिगलाज यात्रा रास्तों के जिन कष्टों के कारण दुर्गम मानी जाती रही है, रास्तों की वैसी दुर्गमता अब नहीं है, परन्तु यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि अब भी यह यात्रा दुर्लभ ही है। पूर्व में कठिनाइया और प्रकार की थीं और अब दूसरे प्रकार की है। आज पासपोर्ट, वीजा की औपचारिकताए, पाकिस्तान जैसे इस्लामिक राष्ट्र की दिक्कतें, भारतीय पर्यटकों को सुरक्षा जाच में शका की दृष्टि से देखा जाना एव स्थानीय आतककारी घटनाओं के कारण यात्रा को सरल नहीं माना जा सकता। स्थान-स्थान पर जो सावधानी बरतने की ओर इगित किया गया है उन्हें अवश्य ध्यान में रखा जाना चाहिए।

श्री हिगलाज सेवा मडली कराची के सहयोग के बिना यह यात्रा असभव है। अगर वरसीमलजी जैसे सज्जन साथ रहते हैं तो यात्रा सुगम व सुलभ हो सकती है।

मैंने हिंगलाज माता के दर्शननार्थ यात्रा का जो भी वर्णन आपको सुलभ कराया है। वो सभी जानकारिया डॉ करणी सिह जी रत्नू 'शरण हिगलाज' से ली गई है। करणी सिह जी सपत्नीक अपने साथियों के साथ हिगलाज माता दर्शनों करने पधारे थे। उन्होंने अपने यात्राओं के अनुभवों और यात्रियो को माँ के दर्शनों का लाभ सुलभ हो। इस उद्देश्य के कारण उन्होंने 'यात्रा वृत्तात' के आधार पर 'शरण हिगलाज' पुस्तक की रचना की। डॉ करणीसिहजी रतनू के प्रयासो से इतनी विस्तृत जानकारी भक्तों को मिली है। रतनू जी आज ससार में नहीं है। मगर उनका साहित्य एव मार्गदर्शन हमेशा इस पुस्तक द्वारा हमारे सामने रहेगा। रतनूजी की इच्छा से ही यह जानकारिया पुस्तक में दी गई है। माँ हिगळाज माता डॉ रतनूजी को अपनी शरण में रखे। 'शरण हिगळाज' पुस्तक देशनोक जयपुर इत्यादि सब जगहों पर मौजूद है।

माँ हिगळाज सम्बन्धी सेवार्थी सस्थाए

किसी भी प्रतिष्ठित देवालय के रख-रखाव पूजा-व्यवस्था यात्रा-व्यवस्था आदि के लिए सेवार्थी सस्थाओं का कार्यरत रहना आवश्यक है। श्री हिगलाज माता के स्थान के लिए उपरोक्त कार्यों हेतु एक अति गतिशील सस्था लबे समय से कार्यरत है। श्री हिगलाज सेवा मडली नामक इस सस्था का मुख्यालय लासबेला बलूचिस्तान पाकिस्तान में है एव इसकी एक प्रमुख शाखा 100/110, स्वामी नारायण मदिर, मोहम्मद अली जिन्ना रोड, कराची पर स्थित है। इस सस्था क पदाधिकारी अत्यन्त रुचि से माँ हिगलाज मदिर की देखभाल करते हैं। यह सस्था मुख्यरूप से ब्रह्मक्षत्रिय समाज-खत्री सिंधी समुदाय द्वारा चलाई जा रही है। इस समाज की कुलदेवी आराध्या श्री हिगलाज है और इनके प्रति समाज की निश्चल श्रद्धा, अटूट विश्वास एव समर्पण अनुकरणीय है। इस समाज ने जयपुर एव अजमेर

म भा माँ हिगलाज के पूजा स्थान बना गए है। यह महान महिषासुरी परशुराम के मारग म। माँ हिगलाज की शरण में है और उनों के मान्निध्य एव कृपा म परशुराम क फग्म म इनकी रक्षा हो सकी थी।

श्री हिंगलाज सेवा मडली के मुख्य लक्ष्य एव उद्देश्य—

— माता हिगलाज के मदिर की मरमत एव सुरक्षा तथा पूजा व्यवस्था।

— हिगलाज माँ के वार्षिक मेला का सचालन।

— हिगलाज माँ के सभी यात्रियो को हर सभव सहायता एव सुविधा उपलब्ध करवाना।

श्री हिगलाज सेवा मडली के प्रमुख कार्यकलाप—

— हिगलाज माता के मन्दिर का विस्तार

— आशापुरा माता तक पक्की सड़क का निमाण (9 कि मी)

— सामुदायिक भवन का निमाण

— हिगलाज माता मदिर परिसर में नियमित भडारा सचालन एव उसके प्रयाजनार्थ भवन का निर्माण।

— सुविधाओ का निर्माण एव जल सरक्षण की व्यवस्था

— आशापुरा मे माँ हिगलाज मदिर तक बिजली की लाइन डालना।

जेनरेटर की व्यवस्था

श्री हिगलाज सेवा मडली का ई-मेल hinglajyatra@yahoo com तथा वेबसाइट www hinglajmata com है। माँ हिगलाज मे आस्था रखने वाले सभी व्यक्ति श्री हिगलाज सेवा मडली के अनुग्रह के आभारी है कि जिनके प्रयास से आज माँ हिगलाज का स्थान अपने पूरे रख-रखाव, पूजा व्यवस्था एव यात्री सुविधाओ के साथ सवारकर रखा जा सका है अन्यथा हिगलाज दर्शन मात्र सपना ही रहता। जिन विपरीत परिस्थितियो म यह सस्था यह कार्य सुचारु रूप म कर रही है, यह एक सुखद आश्चर्य है एव मा की कृपा का ही परिणाम कहा जा सकता है। अत सभी हिगलाज भक्तो स मेरा व्यक्तिगत अनुरोध है कि हम अपना आ मे भी हर सभव सहयोग और सहायता इस सस्था को प्रदान कर जिसस इन कर्मठ पदाधिकारियो का मनोबल मिले एव इनकी हौसला-अफजाई हो।

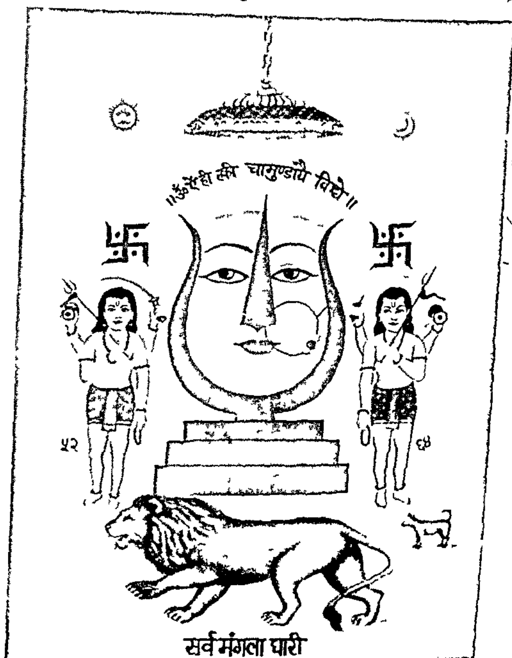
गत वर्ष मुख्य सयोजक श्री वरसामलजी दवाना ने अपने जयपुर प्रवास में श्री करणी चारण छात्रावास में आयोजित सम्मान समारोह में एक समानान्तर सस्था गठन भी चालन का सुन्दर परामर्श दिया था। इसी के परिणाम स्वरूप एक पजीकृत सस्था श्री करणी हिगलाज सेवा समिति का गठन किया गया है, जिसके वर्तमान में मानद अध्यक्ष डॉ करणीसिंह रतनू एव मानद सचिव प्रोफेसर डॉ रूपसिहजी बारैठ हैं। इस सस्था ने स्थानीय चारण समाज की उदार सहायता से हाल ही में बाड़मेर के बाढ़ पीड़ित चारणों की सहायतार्थ सामान वितरित किया था, जिसमें तारे की चद्दरें, कबल, रजाइया आदि जरूरतमदो को उपलब्ध करवाई गई थी।

इस सस्था का अब यह प्रयास रहेगा कि मा हिगलाज की वीजा प्राप्ति की प्रक्रिया का सरलीकरण हो, अभी हाल ही मे इसके सद्प्रयासो के कुछ परिणाम भी सामने आने लगे हैं और श्री प्रणव मुखर्जी, विदेश मत्री, भारत सरकार ने इस ओर प्रयास तेज करने का आश्वासन दिया है। सस्था चाहती है कि चाहे मात्र 101 यात्री ही प्रतिवर्ष भेजे जाए जिसमे एक नियमित चैनल बन सके एव एक प्रक्रिया इसके लिए तय हो सके। कालान्तर म यह सस्था आर्थिक सहयोग प्रदान करने की भी मशा रखती है जिसमें सभी का सहयोग अपेक्षित रहेगा।

इसी प्रकार इग्लैड के लिस्टर शहर में भी श्री हिगलाज माता ट्रस्ट का गठन किया गया है जो इसी प्रकार के कार्यों में प्रयासरत है। □

श्री आवड़ माँ दर्शन

श्री चामुण्डामाता दर्शन



Hanuman Mal Anchalia • Pramod Kumar Anchalia • Paras Kumar Anchalia Bharat Anchalia
Brama Apartment, 49/1 Dr Abani Dutta Road 5th Floor HOWRAH 711106 Ph 26757678

Our Concerns

P P UDYOG JET STAR TECHNOLOGY PVT LTD
134/1 M G Road 2nd Floor Room No 478 KOLKATA 700007 Ph 2271 9453 Mobile 9830084554 9333184354

SHREE KARANI COMPUTER & ELECTRONIC CHENOY TRADE CENTRE
116 Park Lane Shop No 55 Cellar SECUNDERABAD 500003 Ph 040-6638536 32184647

SHREE BALAJI SYSTEM
1 7 234 A, S D Road, 4th Floor Chandra Lok Residential Complex, Near Paradise SECUNDERABAD 500003 Mobile

श्री आवड़ माँ दर्शन

आवडजी का अवतार

शक्ति के रूप में चारण जाति मे प्रथम अवतार आवड़जी ने लिया था। सऊवा शाखा के चारण चेला जी पहले सऊवाण ग्राम सिध प्रदेश में रहते थे। सिन्ध में यवनों क अत्याचार आतक से दु खी होकर चेलक गाव (वर्तमान जैसलमेर के पास स्थित हैं) को अपना निवास स्थान बनाया। उनक एक पुत्र चाचकजी हुआ। चाचकजी के पुत्र सुराजी, सुराजी के साजनजी हुए। साजण के दो पुत्र मामड़िया व खतरीयों जी हुए। ये हिंगलाज माता क परम भक्त थे। जिनका वर्तमान में पाकिस्तान में भव्य मदिर बना हुआ है।

माड प्रदश की उस समय राजधानी लौद्रवा थी उसका शासक लौद्र शाखा का परमार राजपूत था। राजा जसभाण मामडियाजी का विशेष आदर करता था। प्रात उठकर राजा मामड़ियाजी का ही मुह दखकर अन्य राज कार्य करता था। एक दिन कार्य वश मामडियाजी समय पर लौद्रवा नहीं आ सकें। तो जैन बाठियाजी आ गए उन्हें देखकर राजा उदास हो गया यह दखकर सेठ ने राजा से कहा कि आप मुझे देखकर उदास हो गए है मै तो बेटी-बेटों का बाप हू मेरा अपशकुन नहीं होता है अपशकुन तो मामड़ियाजी का मुह देखन स होता है क्योंकि वे बाझडा (नि सतान) है। उनका मुह हम राज्यवासी भी नहीं दखते हैं।

यह बात जब मामडियाजी के पास पहुची तो वे बहुत दु खी हुए तथा माँ हिंगलाज की सात फेरे (पैदल यात्रा) करने का निश्चय कर लिया जब सातवीं बार परखमा (फेरी) पर हिंगळाज माँ ने प्रकट होकर मामडियाजी से वरदान मागने को कहा। तो मामडियाजी ने माँ हिंगळाज से अपन घर सतान रूप म जन्म लेने का आग्रह किया। इस पर भगवती ने कहा कि आप मेरे सात बार पैदल चलकर आए हो इसलिये मै आपके घर छ बहिनों के साथ जन्म लूगी, साथ में एक भाई लाऊगी। लेकिन यह बात आपकी पत्नी को बता देना कि वह पवित्रता से घर म रहे तथा खाखर वृक्ष का पालना बनाकर उसको लाल रग से रग दे तथा घर पर लाल ध्वजा बाध देना प्रात जल्दी उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर मेरा स्मरण करते हुए पालना को सात बार झुला लेना। लेकिन इस बात को तुम दोना के सिवाय गुप्त रखा जाए।

यह बात मामडियाजी ने अपनी पत्नी मोहवृत्ति को बताई तब मोहवृतिजी ने पूरे नियमो का पालन किया। विक्रमी सवत् 808 चैत्र सुदी नवमी बार मगलवार को आवड (उमट) जी का जन्म हुआ।

आवडजी के बाद क्रम वार जन्म लेने वाली छ बहिनें निम्न प्रकार है—

1 आशी (आछी), 2 सेसी (छेछी), 3 गेहल (गुली), 4 होल (हुली) 5 रूप (रूपली), 6 लाग (लागादे) तथा भाई महरखोजी पैदा हुए।

उपरोक्त सातों देवियों में आवडजी प्रथम पैदा होने, असाधारण दैविक शक्ति सम्पन्न होने के कारण प्रथम पूजनीय है। सप्तामत मूर्तियों म कमलासन पर विराजमान तथा चार भुजा वाली शक्ति के रूप में इन्हें दर्शाया गया है।

लागदे व भाई महरखिये जी गुजरात में पूजनीय है वहा पर लागदे के पाताल से भाई को जीवित रखने के लिए अमृत लाते वक्त पाव में चोट आ गई थी जिसके कारण वह खोडा कर चलने लगी। इसलिए वहा पर खोडियार देवी के रूप

में पूजी जाती है। महरखियेजी के वशज आज भी गुजरात मे (गढवी) रहते है। कलयुग मे शक्ति के अवतार इसी के आधार पर आवडजी तथा उनकी बहिनो को माँ शक्ति के अवतार में माना जाता है। शक्ति के नौ अवतार जैसे——1 कुष्माण्डा, 2 सिद्धिदात्री, 3 स्कन्दमाता, 4 कामायनी, 5 कालका, 6 शैलपुत्री, 7 चन्द्रघटा, 8 महागौरी, 9 दुर्गा (उमा, जगदम्बा)।

आवडजी के चमत्कार

काले नाग बनना (नागणेच्या देवी)

एक दिन कणती ने कहा कि पास में ही जगल मे जो हाकडा दरिया बहती है उसके निर्मल जल मे स्नान करने में बडा आनन्द आता है। वहा एकदम निर्जन जगल है। मै बहुधा वहा स्नान करने के लिए जाया करती हू। आज आप सब भी मेरे साथ वहा स्नान करने के लिए चले। आवडजी और उनकी माताजी ने इससे असहमति प्रकट की। लेकिन कणती के बार-बार आग्रह करने पर और यह विश्वास दिलाने पर कि वहा कोई आदमी नही होता है और एकान्त है। सभी बहिनो की राय देखकर आवडजी सब बहिनो और कणती के साथ स्नान करने हाकडा दरिया पर चले गए।

एकान्त और निर्जन स्थान देखकर उन्होने एक 'वट' वृक्ष के नीचे अपने कपडे रख दिये और सभी स्नान हेतु दरिया के जल म प्रवेश कर गई।

सयोगवश शाहजादा नूरन के मित्र लूचिया नाइ ने इनको स्नान करते हुए कहीं से छिपकर देख लिया और उसने उनके कपडों को भी छडी से छू दिया। स्नान करके जब वो सब कपडे पहनने आई तो आवडजी ने किसी पुरुष के पद-चिह्नो को वहा देखकर कहा कि यहा कोई पुरुष आया है जिसने हमारे कपडो को अपवित्र कर दिया है। अब ये अपवित्र कपडे हमारे पहनने के काम के नहीं रहे है। लेकिन बिना कपडों के झोंपड़ियों पर कैसे पहुचा जाए। इस पर विचार करके आवडजी ने अपनी दैवी शक्ति से अपने सहित सबको काले नाग बना दिये और कहा सब इसी रूप में झोपडियों तक चलो। माँ आवड़जी के काले नाग बनने से 'नागणेच्याजी' देवी नाम से विख्यात हुई।

आवडजी का सिह बनना

नूरन ने वास्तविकता का पता लगाने के लिए वो उन नागों के चिह्नों को देखते हुए झोंपड़ियों तक पहुच गए। उनको वहा आया हुआ देखकर आवडजी ने सभी बहिनो सहित सिह का रूप धारण किया और झोंपडियों में बैठ गई। नूरन झोंपडियो में सिह बैठे देखकर बहुत घबराया और उसी समय अपने महल को वापिस चला गया।

हाकडा दरिया को सोखकर माड प्रदेश को प्रस्थान

नूरन से परेशान हो मामडजी ने आवडजी से सिध प्रदेश से बाहर निकलने को कहा। सभी परिवार सहि साय होते ही आवडजी माड प्रदेश के निवासियों के साथ हाकडा दरिया मर पहुचे। हाकडा दरिया का पानी से भरा पाट बहुत लम्बा-चौडा और गहरा था। बिना नाव क नदी को पास करना किसी भी तरह सम्भव नहीं था। इधर बादशाह के आदेश से दरिया की सभी नावें वहा स हटा ली गई थीं। लोग बडे परेशान थे कि पानी से भरा इतनी चौडी और गहरी नदी को पार करके वो लोग कैसे जा सकेगे। लोगों को परेशानी म दखकर आवडजी न हाकडा दरिया स नम्र निवेदन किया कि हमारा धर्म सकट म है। हम उसकी रक्षार्थ अपने प्रदेश जाना चाहते हैं। इस सकट के समय आप हमें रास्ता देकर हमारी सहायता करे। लेकिन हाकडा दरिया ने आवडजी की इस विनय पर कोई ध्यान नहीं दिया। तब उन्होंने शेराव भाग स तडगिये भैंसे को काटकर भक्ष्य देने के लिए कहा।

तडगिये भैंसे का भक्ष्य लेकर आवड़जी अपने असली रूप में आये और भयकर अट्टहास करके हाकड़ा दरिया में से सात चल्लू पानी को भरकर पी गये। जिससे हाकड़ा दरिया का सारा पानी समाप्त हो गया। वहा उस रेगिस्तान में अब भी मरे हुए जल जन्तु शख और [illegible] इत्यादि देखने को मिलते हैं। हाकड़ा दरिया का [illegible] पानी सोख लेने के बाद आवड़जी का परिवार माड़ प्र[illegible]

के निवासियो के साथ दक्षिण दिशा की ओर आगे बढा। वहा से लगभग 65 किलोमीटर चलकर बाहला नामक स्थान पर एक वट वृक्ष के नीचे सब आराम करने लगे।

नूरन का प्राणान्त

दूसरे दिन प्रात नानणगढ निवासियो ने बादशाह को सूचित किया कि हाकडा दरिया सूखा पडा है। उसमें बिलकुल पानी नही है। इसके अलावा माड प्रदेश के सभी लोग आवडजी के साथ हाकडा दरिया को पार करके यहा से प्रस्थान कर चुके है। उसी समय उसको यह भी बताया गया कि उसके शहजादे नूरन के मुह से खून निकलकर उसका प्राणान्त हो गया है। यह सुनकर बादशाह और नानण गढ निवासी भयभीत हो गए। सभी को इस घटना से बडा सदमा पहुचा।

भाई महरखा को जीवनदान

आवडजी द्वारा दिये गये शाप के कारण वहा उनके भाई महरखे को पीवण सर्प' न डस लिया। वह बेहोश हो गया। सूर्योदय होने से पूर्व ही इसका इलाज करना पडता है। यदि इलाज न हो सके तो सूर्योदय होने पर आदमी का प्राणान्त हो जाता है। सर्प डसने पर सभी परिवार वालो को बडी चिन्ता हुई। सब बहिनों ने भाई को बचाने के लिए योजना बनाई जिसक अनुसार बहिन लागदे को पाताल लोक से अमृत लाने के लिए भेजा गया और आवडजी ने जब तक भाई की चिकित्सा न हो जावे सूर्य देव से उदय न होने के लिए प्रार्थना की। सोलह पहर बाद लागदे अमृत ले आई। लेकिन रास्ते मे गिरकर लगडी हो गई। जिससे उनका नाम खोडीयार (लगडी) हुआ। भाई को अमृत पिलाने पर जब वह जीवित हो उठा तभी सोलह पहर बाद सूर्योदय हुआ।

पाडे के रक्त से वस्त्र (लोवडी) को रगना

आवडजी ने भादरियाजी को आदेश दिया कि पहले इस तडगिये पाडे को काटकर हमें भक्ष्य दो। पाडे का भक्ष्य देने पर आवड़जी ने सब बहिनो सहित उस पाडे का रक्त पान किया और पाडे के सिर को 'देग' बनाकर उसके रक्त का देग में गरम करके उससे अपने वस्त्र रगे। वस्त्र रगने के लिए पाडे के सिर को देग बनाने के कारण यहा आवडजी को देगरायजी कहने लगे।

जाल की छडी का हरा होना

तणुराव व रानी सारगदे आवडजी के दर्शनो के लिए बडे अधीर हो रहे थे। रात होने पर रानी सारगदे ने रथ हाकने की जाल वृक्ष की छडी को जमीन मे गाडत हुए मन में प्रार्थना की कि यदि आवडजी हम दर्शन देने के लिए यहा पधार तो जाल की यह सूखी छडी हरी हो जाये। प्रात होने पर देखा कि जाल की छडी जाल के हर वृक्ष के रूप मे परिवर्तित हो गई है। रानी को अपनी अभिलाषा पूरी होते देख बडी प्रसन्नता हुई। यह जाल का वृक्ष बोर टीबे पर (भादरियाजी) अब भी आवडजी के देवल के पीछे विद्यमान है। सेवक लोग श्रद्धा के साथ 'जूनी जालरी धणियाणी कहकर इसका पूजन करते है।

तणुराव द्वारा भगवती आवडजी का अभिषेक

तणुराव ने भगवती आवडजी को लकडी क बने आसन 'साहगे पर बिराजमान किया। तीन बहिनों को उनकी दाई तरफ व तीन को उनकी बाई तरफ खडा किया। भाई महरखाजी को भी बाई तरफ खडा किया। तणुराव और उनकी रानी सारगदे सोलकनी ने चवर ढुलाते हुए सभी बहिनो का भाई महरखाजी सहित आदर के साथ विधिवत अभिषेक किया व आशीर्वाद लिया। साहगे पर बिराजने से यहा भगवती आवडजी सहागिया देवी के नाम से विख्यात हुई। तणुरावजी क प्रण' क अनुसार जैसलमेर के सभी भाटी राजा जैसलमेर स्थित आवडजी के सात मुख्य देवलों म से भादरिया राव के स्थान को विशेष महत्त्व देते है और यहा भगवती का राजसी पूजन करत हैं।

तेमडा दैत्य का नाश

वर्तमान में जहा जैसलमेर शहर है इस स्थान से लगभग 22 कि मी दक्षिण म गरलाऊवे नामक एक पहाड पर एक लम्बी चौडी गुफा है जिसमें उन दिनों तेमडा नाम का एक भयकर दैत्य रहता था। यह बड़ा



उत्पाती था। इसके उत्पातों से जनता अत्यधिक भयभीत थी। इस राक्षस के खात्मे से लोगों को चैन की सांस मिली। लोग बड़े प्रसन्न हुए। तेमड़ा राक्षस को मारने के कारण वहा की जनता ने भगवती आवड़जी का तेमड़राय कहकर उनका बड़े हर्ष के साथ पूजन किया। देवी के दर्शनों से तणुराव कृतार्थ हुए। तणुराव ने भगवती आवड़जी को भाटी कुल की रक्षक देवी मानकर वहा मन्दिर की स्थापना पर सातों बहिनों की मूर्तिया स्थापित की और भगवती को तनोट राय के नाम से सम्बोधित किया। वहा आज तक भी भगवती आवड़जी तनोटराय देवी के नाम से पूजी जाती हैं।

घटीये नामक राक्षस को मारना

तनोट दुर्ग व अपने देवल की प्रतिष्ठा करके जब भगवती आवड़जी तेमड़ेराय पधार रही थी तब रास्ते में ज्ञात हुआ कि घटीया नामक राक्षस बड़ा उत्पात कर रहा है और उसके कारण यहा की जनता भयभीत और परेशान है। जनता को भय और दुखों से मुक्त करने के लिए भगवती आवड़जी ने घटीये राक्षस का नाश कर दिया। इससे भगवती आवड़जी वहा घटीयाल देवी के नाम से प्रसिद्ध हुई।

भगवती आवडजी का महाप्रयाण

भगवती आवड़जी ने अपनी 191 वर्ष की आयु मे माड प्रदेश के अनेक दुष्टो व दनुजों का सहार करके भयभीत जनता को अभय किया। दुखियों के दुखों को दूर किया। समस्त प्रदेश में शान्ति स्थापित की। सभी लोग आनन्दपूर्वक रहने लगे। माड प्रदेश में आवडजी की कृपा से भाटियों का सुदृढ राज्य स्थापित हो गया था। आवड के वरदान के अनुसार तणुरावजी का पौत्र सिद्ध देवराज माढ प्रदेश का नवगढा नरेश था। वह शूरवीर योद्धा था। उसने दिग्विजय की थी। जनता को वह पुत्रवत चाहता था और जनता के हर दु ख को दूर करता था। आवडजी ने अपने अवतार लेने के उद्देश्य को पूरा हुआ जानकर अपनी बहिनो की सलाह से विक्रमी सवत 999 में माड प्रदेश के भक्तों, ब्राह्मणों, बनियों, चारणो राजपूतों और सिद्ध देवराज आदि को तेमड़े पर्वत पर बुलाकर सबको आदरपूर्वक बिठाकर आशीर्वाद दिया और कहा कि अब आप सभी लोग आनन्दपूवक सुख शान्ति के साथ अपना जीवन बिता रहे हैं हमारा अवतार लेने का उद्देश्य पूरा हो गया है। इसलिए अब हम अपना भौतिक शरीर छोड़ना चाहती हैं। यह कहकर विक्रमी सवत 999 की माह सुद सातम को तेमड़राय पर्वत पर सातों बहिनें तारंग शिला पर बैठकर पश्चिम दिशा की तरफ हिंगलाज माता को देखते हुए अदृश्य हो गई।

महारावल सिद्ध देवराज ने सात स्थानों पर भव्य मन्दिरो का निर्माण करवाया। माड-प्रदेश में स्वांगीयाजी (आवड़जी) के कुल 52 देवल हैं। उन्होंने स्वांगीयाजी की सप्तामत मूर्तिया रखकर पूजन किया।

भगवती श्री आवड जी (श्री स्वांगीया जी) व उनकी छ बहिनें आजन्म ब्रह्मचारिणी रहीं थीं। विक्रमी सम्वत् 999 में माघ सुदी सप्तमी को महा प्रयाण (अदृश्य) होने के बाद महारावळ श्री देवराज जी, जो स्वांगीया जी के अनन्य भक्त थे, ने बावन स्थानों पर देवी के मदिरों की स्थापना की थी। दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इन मदिरों की स्थापना की गई थी। ये मंदिर कई दुर्गों में पहाडों की चोटियो पर, कदराओं में रेत के टीलों (धोरा) पर, तालाबों के पास, मैदानों में व वृक्षों के नीचे स्थापित किये गये थे। माड प्रदेश के निवासी श्री स्वांगीया जी के सोने-चादी के ठाळे (मूर्ति) को आज भी बडे चाव से गले में पहनते हैं। महारावळ देवराज जी ने भगवती स्वांगीया जी के जीवन काल मे ही सात स्थानों का विशेष महत्त्व होने के कारण वरदात्री व विजयदात्री के रूप में देवळों की स्थापना करवा दी थी जिनका कालान्तर मे विकास होता रहा है। उस समय से ही सप्तामत मूर्तियो का निर्माण करवाकर मदिरों की स्थापना करवा दी गई थी। उन सात मदिरों में सबसे प्रमुख मदिर श्री भादरिया राय जी का है जहा पर वर्ष में दो बार जैसलमेर अधिपति को दर्शनार्थ जाना आवश्यक था। वहा पर राजसिक पूजन होता था जो आज तक परम्परागत रूप से चल रहा है।

1 श्री भादरिया राय देवळ (मदिर)

भगवती श्री स्वागीया जी का यह स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है जहा भगवती ने तनोट अधिपति तणुराव को प्रथम बार दर्शन देकर कृतार्थ किया था। सिन्ध प्रदेश से हकडा नदी को शोषण (पोकर) कर जब वे माड प्रदेश में अपने कुटुम्ब सहित यहा पधारी थीं तब तणुराव जी ने इस स्थान पर भगवती का प्रथम बार अभिनन्दन किया था। यह स्थान बोर टीबे के नाम से प्रसिद्ध था। तणुराव जी ने अपने भाई बहादरिया जी को श्री स्वागीया जी के पास देगराय नामक स्थान पर दर्शन देने की अभिलाषा से भेजा था। भाटी शासक तणुरावजी आवडजी के दर्शन के उत्सुक थे इसलिये उन्होंने अपने भाई वहादरियाजी को आवड़जी के पास देगराय भेजा लेकिन उनका कोई सदेश तणुराव के पास नहीं पहुचा इसलिये तणुराव व रानी सारगदे सोलकणीजी ने बार टीले पर उनकी प्रतीक्षा की। बोर टीला जहा आज भादरियाजी का भव्य मदिर वना हुआ है वहा पर पहले विशाल टीला था। यहा पर बर वृक्षों का सघन जगल था।

इधर राजा तनुराव व रानी सारगेदेव आवडजी के दर्शन पाने के लिए प्रतीक्षा करते रहे। उनका कोई सदेश नहीं पाकर रानी ने आवड़जी का स्मरण करते हुए कहा हे माँ भगवती! अगर इसी स्थल पर दर्शन देने है तो मै यह जाल की सूखी लकडी (बैल हाकने के काम आती) रोपती हू उसे हरी कर देना ताकि हम आपक दर्शना की यहीं प्रतीक्षा करें। सुबह वही हुआ वह लकडी हरी हो गई दो चार कोंपले भी पत्ते के रूप में निकल गई।

वह जाल का वृक्ष विशाल रूप में आज भी मदिर के पिछवाडे मौजूद है। बहादरियाजी की प्रार्थना पर आवडजी भाई व छ बहिनों सहित तणुराव व रानी को दर्शन देने के लिए बोर टीले पर पधारी। आवडजी के पधारने पर राजा व रानी ने लकडी के बने सिहासन (जिसे साहगों के छते हैं) पर विराजमान किया तथा छ बहिनों की 3/3 दायीं बाई तरफ खडी की तथा भाई महरखोजी को बाई तरफ खडा करके उनका अभिषेक व पूजा अर्चना की। साहगों पर विराजने तथा सभी की एक साथ (सेहगों) पूजा करने के कारण स्वागिया कहलाई जो भाटी वश राजपूतों की कुलदेवी स्वागिया कहलाती तथा सातों की सप्तमूर्ति के रूप म पूजा की जाने लगी।

आवडजी बेर वृक्ष पर झूला बाधकर झूली थी जो हींडे री बडबोरडी आज भी पुराने मदिर के पूर्व मे स्थित है।

जाल के आगे (पूर्व में) महरखिये जी की मूर्ति की पूजा की जाने लगी लेकिन पशुबलि को देखते हुए भादरिया महाराज ने वहा से हटाकर पुराने मदिर के आगे पुन स्थापित करवा दी गई।

राव तणुराव ने अपने भाई बहादरियाजी को बोर टीले के वृक्षाकार क्षेत्रफल मे बसे गावो को जागीर में दे दिये। बहादरियाजी के एकमात्र सतान बुली बाई थी जो आवडजी की परम भक्त थी जो आजीवन ब्रह्मचारिणी रही।

बहादरियाजी के नाम पर वर्तमान गाव का नाम बाहदराराय भादरा राय तथा वर्तमान भादरिया राय पडा। महारावळ देवराजजी के समय म इस स्थान पर जाल वृक्ष की ओट में कच्चे मदिर का निर्माण कर मूर्तिया स्थापित की गई थीं। कालातर में इसमे परिवर्तन होते रहे है। वर्तमान म भादरिया गाव एक विश्व प्रसिद्ध स्थल बन गया है। भादरिया गाव वन-सरक्षण के साथ-साथ कुछ और कारणों स भी प्रसिद्धि पा रहा है।

पुस्तकालय एव अनूठा विश्वविद्यालय

ससार में इस समय अमेरिका की काग्रेस का जबकि दूसरा इग्लैड एव रूस के सबसे बडे पुस्तकालय मौजूद है। भादरिया का ग्रन्थागार एशिया का प्रथम एव विश्व के दूसरे स्थान पर लाने के प्रयास युद्धस्तर पर किये जा रहे है। उपरोक्त पुस्तकालयों को इस सग्रहालय में माइक्रोफिल्म मे सग्रह करने का सोच रखा।

इस पुस्तकालय की नींव सत श्री हरवशसिहजी के कर कमलों द्वारा 1981-1983 मे शिलान्यास किया गया जो आज प्रथम चरण लगभग 4 करोड रुपये की लागत लगकर पूर्ण हो चुका है। इस पर 500 करोड और



खर्च होने पर ससार के सग्रह योग्य ग्रथा से भर जाएगा। इस भवन के दो भाग हैं। पहला अध्ययन के लिये एव दूसरा सग्रह के लिये। सग्रह वाला भवन 225 बाई 360 फुट मे बना है जो एक विशाल भवन है उसम 3 बाई 6 फुट की 562 अलमारिया बनी हुई है। दीवारा के अन्दर इनके अतिरिक्त 16 हजार फुट टैक्स पुस्तकों को रखने के लिये बनी हुई है। इसमे 18 कमरे भी है जिनमें इन्टरनेट की सीडी माइक्रोफिल्म तथा वीडिया फिल्मों का सग्रह किया जा सकता है। योजनानुसार सग्रह होन तथा कम्प्यूटर इटरनेट से जुडने के बाद ससार का पहला सगहालय बन जाएगा। पूर्ण सग्रह होने के बाद भारत के शोधकर्ताओ को एक ही स्थान पर सम्पूर्ण सुविधाए उपलब्ध हो जाएगी। यह पुस्तकालय भूमिगत है दीवारों मे लगे शीशे अलग ही शोभा बढाते हैं। भूमिगत यह सग्रहालय अग्रेजी के टी आकार मे बना हुआ है।

अध्ययन केन्द्र

अध्ययन भवन एक विशाल भवन है जिसकी चौडाई 60 फुट एव लम्बाई 370 फुट है। 18 फुट ऊचे इस अध्ययन केन्द्र मे 4 हजार से अधिक विद्यार्थी एक साथ बैठकर अध्ययन कर सकेगे। यहा टी वी सर्किट लगाए गए है। फर्नीचर का काम पूरा हो गया है इस भूमिगत भवन की विशेषता यह है कि इसके बीच मे स्तम्भ नही है प्लास्टर ऑफ पेरिस से सुसज्जित इसकी छत एव चमकदार रोशनी की व्यवस्था है। इसको ई-मेल से जोडने की प्रक्रिया जारी है ताकि शोधकर्ता घर बैठे कम्प्यूटर लाइब्रेरी का लाभ उठा सक।

विश्वविद्यालय

यहा एक विश्वविद्यालय स्थापित किया जा रहा है जिसका विधान तैयार हो रहा है। एक कॉलेज के लिए भवन बन चुका है। एक हॉस्टल व स्टाफ आवास तैयार है।

शोध भवन सस्कृति सस्थान विश्व के राष्ट्रो की नई- पुरानी मुद्राओं को सग्रह रखने के लिए 4 बाई 6 फुट के शीशे के बोर्ड सहित भवन तैयार हैं।

इस विश्वविद्यालय का क्षेत्रफल 88 वर्ग किमी है यहा आने वाले शोधकर्ताआ क लिये 150 फुट लम्बी व 20 फीट चौडी लाइब्रेरी तैयार की गई ह एक साथ 250 कुर्सिया-टेबल लगाए गए हैं।

विश्वविद्यालय, कृषि वि वि बनाया जाएगा ताकि कृषि क्षेत्र में अपार सभावनाए तथा ग्रामीण किसानों एव युवाओं को प्रशिक्षण दिया जा सके तथा उन्नत पैदावर प्राप्त कर सक। इससे सबद्ध कॉलेजों में प्रोफेशनल कोर्मेज चलाए जाएगे ताकि ग्रामीण एव गरीब प्रतिभाए कम खर्च में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के साथ-साथ कृषि नर्सिग, बी सी ए, बी एड, मैनेजमेट, एल एल बी इजीनियरिंग व पी एच डी डिप्लोमा पाठ्यक्रम व कोर्स सचालित किए जाएगे। ग्रामीण युवा शहरो की चकाचौंध से दूर रहकर ग्रामीण आचल से जुडे रह सकें तथा उच्च प्रतिभा का निखार सके।

गौशाला एव गोचर

श्री भादरिया महाराज ने राज्य की गौ तस्करी को रोकने में सराहनीय भूमिका निभाई है। शायद ईश्वर न गौ सरक्षण के लिए आपको पृथ्वी पर अवतरित किया है। पूर्व बताए अनुसार श्री सतजी ने लगभग 1 लाख गायों को बूचड खानों म कटने से बचाया उन्हीं के भय स कितनी लाख गायों की तस्करी पर रोक लगी। भादरिया गौशाला मे लगभग 15 हजार गाया क चारे पानी की पूर्ण व्यवस्था की गई है यह राज्य की सबसे बडी गौशाला है। गायों की छाया के लिये टिन सेड बनाये गये है तथा चारा स्टोर के लिये 22 स्टोर (गोदाम) बनाए गए है। इस समय चारा पैदा करन के लिये 12 नलकूप तैयार किये गये है। जिसमे 1400 बीघा जमीन पर हरा-चारा पैदा किया जाता है। इनका लक्ष्य गौवश को सरक्षण प्रदान करना है। तथा लुप्त होती थारपारकर नस्ल को बचाकर अच्छी दुधारू नस्ल पैदा करना है। य बेकार साडो को बधिया करने के पक्ष में नहीं है इसलिये बेकार साडों का विशाल अभयारण्य बनाना चाहत हैं पशु-पक्षियों के लिये देश म कई अभयारण्य है लेकिन

नील गायों व साडों का एक अनोखा अभयारण्य बनाने की योजना है।

श्री भादरिया माताजी के मंदिर के आस-पास 80 वर्ग किमी की ओरण का विशाल भू-भाग है। जो राजस्व न्यायालय के द्वारा अपने एक ऐतिहासिक निर्णय में इस भू-भाग को जगदम्बा सेवा समिति के नाम किया। जो 1 लाख 11 हजार बीघा जमीन है। इनमे पहले भी बेर व खेजडी के वृक्ष सघन मात्रा मे है फिर भी भादरिया महाराज की तरफ से इसे और हरा-भरा करने के लिये प्रयास जारी है। भादरिया से धोलिया के बीच 9 कि मी में लगाए गए वृक्षो की कतार एक स्वर्ग का एहसास करवाती है। सडक के दोना तरफ नीम के लहराते वृक्ष तथा रग-बिरगे फूलों की लताए ऐसे लगती है। जैसे स्वग मे पहुच गए हों जहा पानी के लिये लाग तरसते थे वहा ऐसी हरियाली आश्चर्यजनक ही है। गाव के दोनो और आर्मी प्रशिक्षण एरिया होने की वजह से इस क्षेत्र में कार्य नहीं करवा सकते हैं। अगर महाराज को अनुमति मिल जाए तो पृथ्वी पर छोटा-सा स्वर्ग बना दें।

अभी हाल ही मे तपस्वी सत महाराज जिनके सतत प्रयासो एव माँ की कृपा से आज भादरिया मन्दिर विश्व विख्यात हो गया है ऐसे सत को माँ न हमेशा के लिए अपनी शरण में ले लिया है। महाराज हरवशसिहजी के दिशा-निर्देशो का पालन स्थानीय कमेटी कर रही है। सत की आत्मा को नमन्। उनको द्वारा किये गये सराहनीय कार्यों को सतत नमन्।

2 श्री तन्नोट राय जी देवळ (मंदिर)

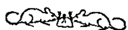
भगवती श्री स्वागीया जी के आशीर्वाद एव आदेशानुसार भाटी तनुराव जी ने विक्रमी सम्वत् 847 मे आसोज सुदी 10 को तन्नोट गढ की नींव रखी थी, गढ में सर्व प्रथम स्वागीया देवी का मदिर बना कर मूर्ति स्थापित की थी। वही दो सप्तामत मूर्तिया आज तक तन्नोट राय मदिर में विराजमान है। अपने नाम पर देवी का 'तणोटीया देवी' या 'तन्नोट राय' कह कर सम्बोधित किया था। उसी नाम स वह आज तक प्रसिद्ध है। विक्रमी सम्वत् 888 में श्री स्वागीया जी ने तनोट पधार कर तनोट दुर्ग एव मदिर की प्रतिष्ठा करवाइ थी। उस समय तणुराव भाटी ने अपने पुत्र विजय राव को श्री स्वागीया जी से वरदान देने की प्रार्थना की तो भगवती ने प्रसन होकर अपनी पहनने की सोने की दिव्य चूड निकाल कर विजय राव को दी, तथा आशीर्वाद दिया कि यह चूड युद्ध मे तेरे हाथ में रखना, तुम्हारी निश्चित रूप से विजय होगी, तथा तुम्हारा पुत्र दिग्विजयी सम्राट होगा।

उस समय मदिर मिट्टी की ईटों से बनाया गया था। उम समय स लेकर आज तक श्री तन्नोट राय के मदिर मे अखण्ड ज्योति प्रज्वलित होती रहती है।

श्री तन्नोट राय अब मुख्य रूप से भारतीय सैनिको की श्रद्धा का केन्द्र है। जैसलमेर एव सुदूर प्रान्तों से यात्री श्री तन्नोट राय श्रद्धा के साथ दर्शनार्थ जाते है। वहा तक पक्की सडक का निर्माण हो जाने से यात्रियों को बेहद सुविधा हो गई है। वहा पर ठहरन के लिए धर्मशाला भी बन चुकी है तथा यात्रियों के ठहरने व खाने की व्यवस्था सैनिको द्वारा बडी आत्मीयता से की जाती है। सप्ताह में एक बार जैमलमेर से तन्नोट जाने के लिए राजस्थान पथ परिवहन निगम की बस भी जाती है।

इस मदिर का महत्त्व सन् 1965 क भारत-पाक युद्ध से और बढ गया है तथा भारतीय सेना के जवान व अधिकारी इस चमत्कारिक देवी स्थान के दर्शनार्थ अवश्य जाते है। भारतीय सैनिक स्थलो पर पूरे भारत में जगह-जगह तन्नोट राय के मदिरो का निर्माण करवाया गया है।

यह युद्ध 16 नवम्बर 1965 को हुआ था। तन्नोट युद्ध से पूर्व शत्रु सेना (पाक सेना) ने किशनगढ से 74 कि मी पूर्व में बुइली (सरकारी) तक तथा पश्चिमी म साहेवाला शाहगढ तक 150 कि मी तक के भू-भाग पर अपना कब्जा कर लिया था। तन्नोट चारों तरफ से घिर चुका था। तन्नोट से रामगढ जाने वाले रास्ते पर घटीयाली के पास एन्टी पर्सनल व एन्टी टैंक माइन्स बिछाकर तनोट को चारों चरफ से घेर कर भारी तादाद में पद्रह सौ सैनिकों को झाक दिया गया। उनके हथियार



आधुनिकतम 124 सपोर्टिंग गना मोरटार्स और टी 16 वैपन कैरियर के साथ हमला किया गया। कर्नल जयसिह जी राठोड़ (थैलासर) बीकानेर के नेतृत्व में हमारे केवल तीन सौ सैनिक थे जिनमें 13 गर्नेडियर्स का केवल एक स्क्वेड्रन तथा 13 सीमा सुरक्षा बल को दो कम्पनिया तैनात थीं। शत्रु ने तीन तरफ से धुआधार हमला कर दिया। हमारे जवान साहस क साथ तीन दिन तक निरन्तर लड़ते रहे।

इस विकट परिस्थिति में श्री तनोट राय की कृपा से दूसरे दिन युद्ध होने से पहले तक एक जवान को भगवती का भाव आया कि घबराने की आपवश्यकता नहीं है। वर्तमान पोजिशन को छोडकर पूर्व की तरफ चले जाओ, तुम्हारा बाल भी बाका नहीं होगा, तुम्हारी विजय निश्चित है। हुआ यही, दुश्मनो ने भारतीय सेना की उस जगह पर धुआधार तोपखाने से गोले बरसाये जहा तक तीन दिन पूर्व युद्ध हुआ था, उन्हे पता नहीं लगा कि भारतीय सेना ने अपना स्थान बदल लिया है। वह भोपा (सैनिक) बार-बार मोर्चे के बाहर दिन में खुला खडा होकर अपने सैनिको का साहस बढाता रहा, तथा तनोट राय की जय बोलता रहा। तीसरे दिन के निर्णायक युद्ध मे जब शत्रु दल उत्तर की तरफ से मदिर पर आखिरी भयकर हमला करने को अग्रसर हुआ तो तनोट राय की कृपा से हमारे सैनिका के शौर्य के आगे शत्रु सेना अपने पाच सौ जवानों की लाशे युद्ध स्थल मे छोडकर भाग खडी हुई जिनकी कब्रे तनोट युद्ध के मैदान में साक्षी रूप मे विद्यमान है।

आश्चर्य तो इस बान का है कि मदिर के आस-पास 3,000 बम बरसाये थे, गोल फटे ही नहीं। यदि कोई गोला फट भी गया तो मदिर के एक खरोच भी नही आई। भारतीय सेना के किसी जवान को कोई चोट नही आई और शत्रु फौज हताश हो कर पाच सौ शव छाडकर भाग खडी हुई। 1971 के भारत-पाक युद्ध मे शत्रु सेना ने इस तरफ आख उठा कर भी नहीं देखा।

आठवीं शताब्दी से लेकर आज तक तनोट राय की कृपा मे यह सैनिक महत्त्व का स्थान सदा अजेय रहा है तथा स्वागीया जी की कृपा से अब भी अजेय रहेगा।

3 श्री तेमडे राय जी देवळ (मदिर)

भगवती श्री स्वागीया जी ने जैमलमेर से सात कोस (21 कि मी) दक्षिण में गरलाऊणे नामक पहाड पर गुफा में रहने वाले दुर्दान्त-दैत्य त्रेमडे का विध्वस किया था। यह दैत्य उस समय माड पदेश के निवासियों को मबसे ज्यादा त्रास देता था। उनके स्वजनों को व पशुओं को मारकर जाता था। अपनी सुरक्षा के लिए इस पहाड़ पर उसने कई कोस लम्बी गुफा बना ली थी जिसमें वह अपने आप को सुरक्षित महसूस करता था। श्री आवड़ जी जब गढ नानण (सिध) से वापस माड़ प्रदेश मे पधारीं तो उन्हें विजडासर नामक स्थान पर माड प्रदेश के निवासियों ने दुष्ट दैत्य त्रेमड़े के अत्याचारो का निवेदन किया तो श्री आवड़ जी छहों बहिनों सहित त्रमडे दैत्य को मारने हेतु वहा से प्रस्थान कर गरलाऊए पहाड़ पर पधारीं तो राक्षस त्रेमड़ा भगवती स युद्ध करन को उद्यत हो गया और नाना प्रकार के दैत्यानुकूल आचरण करने लगा। भगवती श्री आवड़ जी ने त्रिशूल से छेदन करके उसे गुफा के दरवाजे पर डाल दिया। छहो बहिनों ने जब उत्सुकता वश आवड़ जी से आकर पूछा कि दैत्य गुफा मे चला गया, क्या बात है? तो श्री आवड़ जी ने कहा—तेमड़ो छै।। यानि यह मड़ा (शव) है। इसका मैन अत कर दिया है। गुफा के आगे पत्थर की शिला रख दी गई जिसे 'तारग शिला' कहते हैं तथा श्रद्धालु भक्त-गण आज भी उस पवित्र शिला के दर्शन कर अपने आप को धन्य समझते है।

तेमडे राक्षस का वध करने के बाद भगवती श्री आवडजी ने अपनी छहों बहिनों सहित कई वर्षों तक तेमड़े राय पवत पर ही निवास किया था। माड़ प्रदेश के एव सुदूर प्रान्तों के दर्शनार्थी यहा पर दर्शन करने अते थे। भगवती स्वागीया जी के कई वर्षों तक यहा निवास करने से इस स्थान को दूसरा हींगलाज समझा जाता है। यहा आज भी लाग अपार श्रद्धा के साथ दर्शन करने आते है। अब यह स्थान जैसलमेर से पक्की सड़क से जुड़ गया है। मदिर गरलाऊ पहाड़ की खाह (कदरा) में बना हुआ है जो जमीन के धरातल से 250-300 फुट

ऊचा एक रमणीक स्थान है। यहा पर श्रद्धालु भक्तों को आज भी श्री स्वागीया जी की कृपा से छछुन्दरी के रूप में दशन होते हैं जिससे अपने आपको धन्य समझता है। कभी-कभी दो-दो दिन तक दशन नहीं होते हैं और जिस पर देवी की कृपा होती है उसे धूप-दीप कर नैवेद्य अपण करते ही दर्शन हो जाते है।

इससे पूर्व सात नागो के फनों पर सात कन्याओ के रूप में दर्शन होते थे। स्वागीया जी के सेवक 'भोपे' यहा पर गोगली भाटी हैं। उनके डरने से तथा आवड जी से निवेदन करने से नागों के फनों पर कन्याओ के दर्शन होना बद हो गया है, अब छछुन्दरी के रूप में ही दर्शन होते हैं, जो भक्तों के लिए सौभाग्य-सूचक है। सम्वत् 1651 में भाद्रपद सुदी 13 का जब बीकानेर महाराजा श्री रायसिह जी व जैसलमेर महारावळ श्री भीमसिहजी, जिनकी बहिनें आपस मे एक-दूसरे को ब्याहीं हुई थीं, श्री तेमडे राय दर्शन करने को पधारे तो वहा छछुन्दरी के रूप में दर्शन तो दशनोक में हमेशा होते रहते है, जहा मदिरों में हजारा काबा (चूहे) रहत हैं। इस शका पर जब गोगली (भोपे) ने व महारावळ जी श्री भीमसिह जी ने श्री आवड जी का आह्वान किया तो सात नाग के फनो पर सात कन्याओ के रूप में दर्शन देकर उन्हें कृतार्थ किया था। इसके उपलक्ष्य में बीकानेर महाराजा ने अपनी यात्रा की यादगार में एक बुर्ज का निर्माण करवाया था जो जीर्ण होने के वाद नया बनाया गया है। यह बुर्ज मदिर के सामने आज भी विद्यमान है।

4 श्री घटीयाळी राय जी देवळ (मदिर)

आई परमेश्वरी श्री स्वागीया जी जब तनोट दुर्ग की प्रतिष्ठा करने पधारी थीं, तब वापस तेमडा राय के रास्ते में तन्नोट से तीन कोस दक्षिण-पूर्व मे घटीये नामक दैत्य का उत्पात था। उस दैत्य को देवी ने मारा था। उसकी याद में श्री घटीयाळ राय का मदिर तनोट-रामगढ सडक के दक्षिण में बना हुआ है। पहले यह कच्चा मिट्टी का कमरा बना हुआ था। इन वर्षों में रामगढ के सोलकी दशमी को सोलकी सरकार मिलकर भगवती को भैंसे का भक्ष्य देकर पूजन करते हैं। 1965 के भारत-पाक युद्ध में पाकिस्तान के सैनिका ने इस मदिर की मूर्तियों की मामूली-सी तोड़-फोड की थी। रात को 12 (बारह) शत्रु सैनिक रामगढ-तनोट रास्ते पर माइन्स बिछाने आये थे। उनको सड़क मिली ही नहीं जबकि मदिर के पास ही सडक चलती थी। वे रास्ता भटक कर उत्तर-पूर्व की तरफ चले गये, जहा सुबह मरे हुए पाये गये। किसी के कोई चोट लगी नहीं थी, सब के मुह से खून निकला हुआ था। दूसरे दिन जब भारतीय जवानों को उनके पैरो के निशान मिले तो उन्होने लाशें देखीं व वापस पैर लिए तो देखा घटीयाळी मदिर की मूर्तियो को तोड़ा है। भगवती श्री स्वागीया जी के अदृश्य चक्रा से वे शत्रु सैनिक अपनी करनी का फल भुगत कर मौत को प्राप्त हुए थे।

घटीयाळी देवळ में इस अप्रत्यासित घटना के बाद लोगों की श्रद्धा और बढी है। तन्नोट जाने वाले यात्री रास्ते में पडने वाले इस मदिर को श्रद्धा के साथ नत-मस्तक होकर अपने को धन्य समझता है।

5 श्री काले डूगर राय जी देवळ (मदिर)

जैसलमेर से उत्तर-पूर्व 9 कोस पर स्थित काले रग के पहाड की चोटी पर बने भव्य मदिर को काले पहाड को वजह से काळे डूगर राय कह कर सम्बोधित करते हैं। माड प्रदेश की भाषा मे पहाड को डूगर कहते हैं। इसलिए सप्तामत् भगवती आवडादि का नाम डूगरेचीया देविया प्रसिद्ध हुआ।

नानणागढ (सिध) को नष्ट कर हाकडा नदी को सोख कर, जब सप्तामत देविया माड-प्रदेश में पधारी तो सर्वप्रथम आईता नामक स्थान पर कई दिन प्रवास किया था। माड निवासियों ने वहा जाकर देवियो का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन किया था। भगवती आई परमेश्वरी के प्रथम बार अलौकिक शक्ति-सम्पन्न होकर यहा पधारने पर माड निवासियों ने उस स्थान को 'आई आयाहता 'ऐथ' कह कर प्रसिद्ध किया। कालातर में यह स्थान आईता कहा जाने लगा। आईंता मैदान में स्थित था। पर्याप्त पानी भी नहीं था इसलिए सप्तामत देवियों आवडादि ने काले डूगर की चोटी को उपयुक्त समझते



हुए, वहा अपना निवास स्थान रखा जहा तालाब जागणीसर व बरोयो म भी पानी पयाप्त था एव जगह भी अत्यन्त रमणीक थी। आवड़ादि देविया यहा पर कई महीनो तक विराजमान रही। माड़-प्रदेश क तमाम गैर राजपूत कौमो ने यहाँ पर आकर आशीवाद प्राप्त किया था इसलिए अधिकतर हिन्दुओ म यही कौम काले डुगर राय क दशन करने, मनौतिय मनाने प्रति वर्ष आती रहती है।

6 श्री देग राय जी देवळ (मंदिर)

श्री देगराय मदिर जैसलमेर स पूर्व की तरफ 50 कि मी दूरी पर देवी कोट-सेतरावा पक्की सड़क पर स्थित है। यह मदिर देग राय तालाब की पाज पर बना हुआ है। इस स्थान पर आवडादि देविया भोजासर से रवाना हो कर पधारी थीं। उस समय यहा पर दुष्ट सावड़ बगा सेलावत रहता था। उसके भैसिया का टोळा था। उसका गवाल गरीब राजपूत भारवलीया पड़िहार था। इस स्थान को माड निवासी रणककळ तालाब कहा करते थे। जहा सेलावत की भैंसिया निर्बाध रूप से चरती रहती थीं। उसमे एक दैत्य भैंसे के रूप में छिप कर रहता था। आवड जी ने भारवलीये से कहा, यह भैसा हमें काट कर भक्ष्य दे दो, हम भूख भी शान्त कर लें तथा हमारे कपड़े (लोहडिया) ओढण की साडिया भैंसे के खून से लाल रग लेवे। भारवलीये ने कहा—बाई यह भैसा तो सावड़बगा सेलावत का है, मै तो ग्वाला हू। यदि मैंने आपको भैसा दे दिया तो वह दुष्ट मुझे मार देगा। भगवती आवड ने कहा तेरा सेलावत कुछ भी नहीं बिगाड सकेगा। तुम को जब भी कष्ट हो मुझे याद करना मै तो सहायता करूगी।

तन्नोट अधिपति तणुराव के लघु भ्राता बहादरिया जी आवडादि सप्त देवियो के दर्शनार्थ तन्नोट से चलकर रण-ककण तालाब पर पहुचे तो भवगती आवड ने बहादरिया जी से कहा—यह भैसा काट कर हमे भक्ष्य दो। इस पर भारवलिया मना करता रहा। बहादरिया जी ने तगडिये भैंसे को अपनी तलवार चक्राली से काट कर भगवती को निवेदन किया तो सातो बहिने भैसे के खून को पीकर तृप्त हो गई। वहा कपड़ रगने का कोई बर्तन उपलब्ध नहीं था, इसलिए भैंस के शाश (सिर) का ही देग बनाकर उसमें खून गर्म करके अपनी लाहडिया (साड़िया) रगी। भैंस तगड़ीय के सिर की देग बनाने से इस स्थान का नाम देगराय दिया गया है। जहा पर आवड़ादि देविया ने देग बनाकर कपड रगे थे। उसी स्थान पर देगराय तालाब की पाज पर देवी का भव्य मदिर है जिसे महारावळ अखैसिंह जी ने विक्रमी सवत् 1798 वैशाख सुदी दूज को निर्माण करवाया है। उसका उत्कीर्ण मदिर के आगे तोरण द्वार क अन्दर की तरफ किया हुआ है। करीब ढाई सौ वर्ष पूर्व निर्मित पक्का मदिर आज भी बड़ा भव्य लगता है। इस में आवडादि सप्त देवियों की मूर्तिया विराजमान हैं। निज मदिर में सात बहिनों की ही त्रिशूल भैस क सिर में घोपा हुई सौम्य मूर्तिया है। बाहर हॉंडे में स्थापित मूर्ति अलौकिक एव भव्य रूप है जिसमें सप्तामत देवियों के साथ भाई महरखो जी भी दर्शाये गये हैं। इस मूर्ति को दखकर अति आनन्दानुभूति होती है। श्रद्धालु भक्त अपलक निहारते ही रहते है।

मदिर के बिल्कुल सामने ही एक पठियाल का निर्माण महाराजाधिराज महारावळ जी श्री मूळराज जी ने विक्रमी सवत् 1853 मिति वैशाख वदी 5 को कराया था जिसे कचहरी की पठियाल भी कहा जाता है। उसमें एक शिलालेख लगा हुआ है, जो इस प्रकार है—

कुल देव्य, श्री सहागीया जी रे थान साल कराया महाराजाधिराज महारावळ जी श्री मूळराज नी अव्याधिमा शरीरेण दीर्घायु भवतु ।।स 1853 मिति वैशाख वदी 5 लिखी व्यास श्री पती ।।श्री।। श्री।।

यह स्थान अत्यन्त ही अलौकिक स्थान है। यहा पर रात को मदिर मे कोई नहीं रह सकता है। कहते हैं रात मे यहा नगाडा की ध्वनि व नृत्य करते घूघरों की ध्वनि स्पष्ट कई बार सुनाई देती हे। दीपक भी स्वत ही जल उठते हैं। इसके चारो तरफ बारह कोस मे आरण (सुरक्षित चारागाह) है जिसकी एक भी टहनी तक कोई नहीं काटता है। यदि भूल वश काट देवे तो उसका

अनिप्ट निश्चित है। अत लोग बहुत सावधानी रखते हैं। इसके पुजारी (भोपे) पडिहार शाखा के राजपूत है।

देगराय मदिर से दक्षिण 2 कि मी दूरी पर सावडा मठ राय का मदिर वना हुआ है। यह वह स्थान है जहा साबडबूगा सेलावत ने गरीव भैसियो के ग्वाले भारवलिय को जिन्दा जलाने के लिए आग लगा कर उसे अन्दर फैक दिया था, लेकिन भगवती आवडादि सप्तदेव्यो की आराधना पर भारवलिये को आवडजी ने सकुशल बचा लिया, लेकिन सावडबूगे को प्रज्वलित अग्नि म फैंक जला कर भस्म कर दिया था।

7 महामाया श्री स्वागीयाजी का देवळ

जैसलमेर शहर से एक कोस उत्तर पूर्व की तरफ श्री गजरूप सागर तालाब के पूर्व म समतल पहाड की चोटी पर श्री स्वागीया जी का मदिर स्थित है। यह मदिर जैसलमेरर के राजाओं द्वारा निर्मित अतिम मदिर है। इस मदिर का निर्माण महाराजाधिराज महारावळ जी श्री गजसिह जी ने विक्रमी सम्वत् 1895 के आश्विन शुक्ला नवमी को किया था। श्री गजसिह जी के वृद्ध होने से श्री भादरिया राय नही पधार सकने की वजह से, भादरिया राय मदिर के भोपे चाडक सहागीदान से राय लेकर भगवती श्रीआइ परमेश्वरी की आज्ञा से इसका निर्माण करवाया था। महाराजा श्री गजसिह जी जैसलमेर दुर्ग से प्रात उठते ही इस मदिर के दर्शन करते थे। अत पहाडी की चोटी पर स्थित यह मदिर दुर्ग से स्पप्ट दिखाई देता था। प्रात ही घोडे या हाथी पर सवार हो कर नित्य कुल देवी के दर्शन करके ही वे अन्न ग्रहण करते थे। इस प्रकार माँ ने एक अनन्य भक्त द्वारा इस मदिर का निर्माण कराया गया था।

इस मदिर के निर्माण से जैसलमेर नगर के श्रद्धालु भक्तों को भी सुविधा हो गई है। जो भक्त गण भादरिया तन्नोट रा, तेमडेराय या काले डूगर पर नहीं जा सकते है वे यहा जा कर दर्शन कर अपने को धन्य समझते है। ❑

झले त्रिशूळ पत्र झूळ
शत्र मूल धारणी।
प्रगत पत पूळ झाळ
चाळ भाळ चारणी।।

चढ लकाळ बाध चाल
रुद्र गाल रातडा।
भजे निशुभ शुभु भूप
आप रूप आवडा।।
जा आप रूप आवड़ा।।

श्री जुबली नागरी भण्डार
पुस्तक वि... एवं वाचनालय
स्टेशन रोड, बीकानेर

खोडियाळमाता दर्शन, भावनगर, गुजरात



C S K JEWELLERS

39 Shivtalla Street (Daccapatti) 1st Floor KOLKATA 700007
Ph 22741505 22743131
Dhanraj Soni (9830030035)
Chaagan Lal, Shyam Sunder Soni (Basalpurwale)

JAI KARANI JEWELLERS

Outside Jassusar Gate BIKANER (M) 99829892003

षट्शती जयन्ती महोत्सव

श्री करणीजी के 600वे जन्म दिवस को (1444–2044) एक महोत्सव के रूप मे मनाया गया



कविराजा विभूतिदानजी की मूर्ति अनावरण के अवसर पर

बीकानेर रियासत के कविराजा परिवार के वशज डॉ गुमानसिंह बीठू

पूर्व सरपच सींथल एव पूर्व अध्यक्ष मण्डलीय चारण सभा बीकानेर
लालसिहपुरा सींथल बीकानेर



रणजीतसिंह



रमाकान्तसिह



डॉ कुलदीपसिह



डॉ ...

षट्शती जयन्ती महोत्सव के अवसर की झलकिया



श्री करणी मन्दिर के प्रागण मे मा के दर्शन



महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर श्री बी के गढवी (वित् राज्य मत्री, गुजरात)



सवाईसिंह पुत्र जसूदानजी बीठू

लालसिंहपुरा सींथल बीकानेर

हाल सादुल कॉलोनी जसवन्त निवास बीकानेर

मातेश्वरी मार्बल एव एजेन्सी

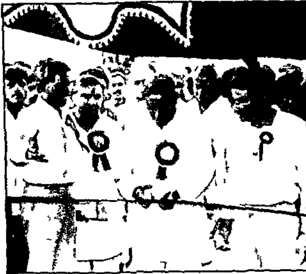
सोफिया स्कूल के पास जयपुर रोड बीकानेर

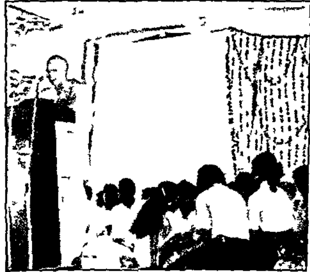
अश्विनीसिंह बीठू, डॉ नरपतसिंह बीठू

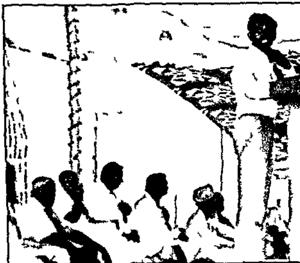
09413207025 09414968359 09828313271

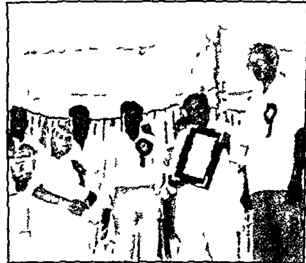


जन्मोत्सव समारोह के उद्घाटन अवसर की झलकिया


उद्घाटन करते हुए बी के गढवी


उद्घाटन अवसर पर मन्त्रोच्चार करते हुए लाभदत मिश्र


महोत्सव की जानकारी देते हुए
समिति सयोजक मूलदान देपावत


माँ करणी की तस्वीर भेंट के अवसर पर बी के गढवी नगेन्द्रबालाजी
समिति अध्यक्ष अम्बादानजी बारठ एव सयोजक मूलदान देपावत



प्रभुदान-भैरूंदानजी वीठू

हमीरा का बास सींथल बीकानेर
श्रीमती मनु कवर-सरपच ग्राम पचायत सींथल
विनीत गणेशदान डूगरदान रघुवीरसिंह
गणेशदान बीठू जिला उपाध्यक्ष देहात युवक काग्रेस कमेटी बीकानेर
09784544145 9460226449


गणेशदान बीठू

जन्मोत्सव के अवसर पर सास्कृतिक कार्यक्रम की झलकिया



महोत्सव के अवसर पर मधुसुदनजी का
स्वागत करते हुए मूलदान देपावत



महोत्सव के अवसर पर गजल गायन करते हुए
पकज उदास (गुजराती चारण)



महोत्सव के सास्कृतिक सध्या के अवसर
पर आकाशवाणी कलाकारो की प्रस्तुतिया



श्रीमती नगेन्द्रबालाजी (पत्नी अमर देपावत)
विधायक कोटा राजस्थान की प्रथम जिला प्रमुख
अध्यक्ष समाज कल्याण बोर्ड



गिरधारी दान
09414452383

गिरधारीदान पुत्र भवरदानजी बीठू

ग्राम सींथल बीकानेर फोन 0151-2762738
हाल चारण छात्रावास के पीछे सादुलगज बीकानेर
करणीदान श्यामसिह भवानीशकर गोपालदान
मदनमोहन मनमोहन गोविन्ददान मोहित



स्व भवरदान

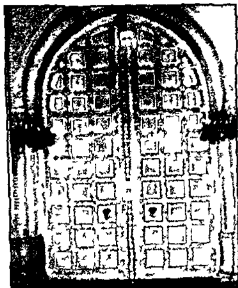
जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर जन्मदिवस के दिन जयन्ती के दर्शन



जन्म दिवस के दिन माँ का अद्भूत श्रृंगार दर्शन



जयन्ती दर्शन के साथ सेवार्थी अम्बादानजी
नारायणदानजी एव जगदीशदानजी इत्यादि



जन्म दिवस के दिन दीपचन्द भूरा द्वारा दरवाजा भेट



जयन्ती के दर्शनो को उमड़ा जन-सैलाब



ठा उमरदान सान्दु

उमरदान पुत्र बिसनदानजी सान्दु

ठिकाणा गुन्दीसर-डेगाना (नागौर)

वैभव ग्रेनाइट (इण्डिया)

सी-13/1 मान सरोवर गार्डन रिंगरोड
जहागीर होटल के पास नई दिल्ली 110015

रविराजसिंह सान्दु (09350059559) शेखरसिंह सान्दु (09828851202)



कुँवर शेखरसिंह

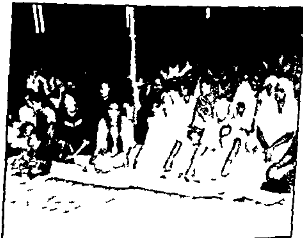


कुँवर रविराजसिंह

षट्शती जयन्ती महोत्सव के अवसर की झलकिया



महोत्सव के अवसर पर औंकारसिंह लखावत एव सी पी देवल इत्यादि



महोत्सव के अवसर पर नगेन्द्रबालाजी इत्यादि



भक्ति सगीत मे लीन चम्पा और मैथी



सास्कृतिक कार्यक्रम की झलकिया



भक्ति सगीत मे लीन भूगर खा





सास्कृतिक झलकिया

भीवड़दान, लागीदान पुत्र मेहरदान एव करणीदान, उमाकात पुत्र लागीदान

मेहरदान किशनदान आसूदान पुत्र भीवडदान

चन्द्रकान्तदान माधोदान घनश्यामदान कैलासदान भवानीदान विसनदान गोविन्ददान जयसिंह

चन्द्रकातदान पुत्र उमाकात दान

तिलक नगर बीकानेर मोबाइल 09887301137



चन्द्रकान्तदान

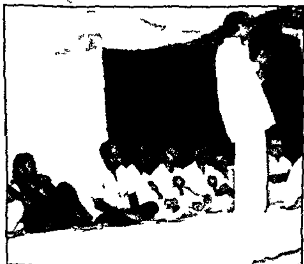
जन्मोत्सव के अवसर पर विराट अखिल भारतीय कवि सम्मेलन



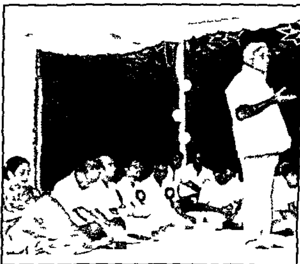
जन्मोत्सव के अवसर पर माँ करणी की लीलाओं
का स्तूति गान करते हुए सोहनदान सिहढायच



कविता पाठ करती हुई कवयित्री श्रीमती प्रभा ठाकुर
(वर्तमान राष्ट्रीय महिला कांग्रेस अध्यक्ष)



अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर
कविता पाठ करते हुए कानदान कल्पित



अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर
कविता पाठ करते हुए रेवतदान मथानिया



सुभाष ऐरिज इण्डिया प्रा लि
हरियाणा प्रभारी सिरसा



युवराजसिंह

पवनदान पुत्र हजारीदानजी किनिया

गाव-भाणेका गाव कोलायत (बीकानेर)
हाल श्री करणी सदन हाजी मार्केट के पीछे ए-139 कान्ता खतूरिया कालोनी बीकानेर
मोबाइल 09460893152 09214540967 09416620185 (सुभाषचन्द्र)
ओमप्रकाश सुभाषचन्द्र पुत्र किसनदान गोपाल प्रहलाद किसनदान
रामेश्वरदान पन्नादान मोतीदान कुवर युवराजसिंह दिव्या भवर-विराट वन्दना
पवनदान किनिया-जिला अध्यक्ष मानवाधिकार निगरानी समिति बीकानेर
वार्डन-श्री करणी चारण छात्रावास सादुलगज बीकानेर

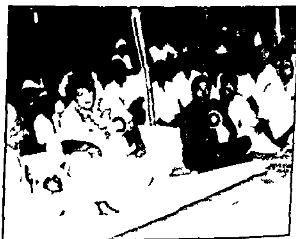


पवनदान किनिया

जन्मोत्सव के समारोह के समापन अवसर पर पधारे बीकानेर नरेश



बीकानेर महाराजा श्री करणीसिंहजी अभिनन्दन करते हुए



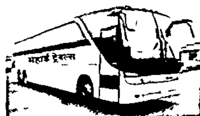
समापन अवसर पर जन-सैलाब के साथ महाराजा श्री करणीसिंहजी



समापन अवसर पर समिति सयोजक मूलदान देपावत



पधारे महानुभवों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए समिति अध्यक्ष अम्बादान बारहठ



मेहाई ट्रेवल्स

रासीसर, नोखा रोड, बीकानेर

वेदप्रकाश बिश्नोई 09414416906



श्री आवड़ चालीसा

चंद-बरदायी-कृत भगवती-स्तुति

श्री करणी चालीसा

श्री आवडमाता दर्शन

श्री क करणी दैव्ये नम

श्री करणी भय हारिणी त्रिजगता ध्याये जगत् तारिणी।
नाना देश विहारिणी भगवती ब्रह्माण्ड सचारिणी।
सर्वापद्धि निवारिणी जन्मन स प्रार्थितम् कारिणी।
भक्तानाम् परतो भयाति शमनी शत्रुन्क्षणान मर्दिनी।
विघ्न हरण मगल करण मूर्ति परम् अनूप।
करणी मम् हृदय बसो भूपन की तुम भूप॥

पिताजी स्व शुभकरणजी ... (राजस्थान) ...

जे.के. ओवरसीज

216 ओल्ड चायना बाजार स्ट्रीट

रूम न 12 (पहला तल्ला) कोलकाता 700001 दूरभाष 033 22315278

जे.के. इण्टरप्राइजेज

झोचे टोल फरीड स्ट्रीट कान्तिपुर (नेपाल) दूरभाष 003771 4245857



श्री आवड चालीसा

'दोहा'

ुर गणपत दीजे सुमत, उकती हिये उजास,
ार दे वीणा वादनी, वसो कथ में वास ।। 1 ।।
िरपा कीजे करनला धरूँ तिहारों ध्यान।
आवड चालीसो उच्चरू, गहन दीजिये ज्ञान ।। 2 ।।

'चोपाई'

जय जय आवड आद भवानी,
वेद पुराण मुनिजन मानी ।। 1 ।।
शक्ति तू हिंगलाज सरुपा,
इला धारियोरुप उनूपा ।। 2 ।।
मामड तातरु मीणलामाता,
वश देव चारण विख्यात ।। 3 ।।
कच्छ भोमरी शक्ति कहाणी,
माढ धरा री तू महाराणी ।। 4 ।।
बैठ विमाण गगन सू आइ।
पावन पय धारा प्रगटाई ।। 5 ।।
सातू बहन रुप धर सुन्दर।
आवड बडी जिकारे अन्दर ।। 6 ।।
जरकस धावल चीर जडाऊ।
भुज बाजू बन्ध लूब लडाऊ ।। 7 ।।
भालसिंदूर तेज रवि भलके।
मोती नाथ झूमरा झूलके ।। 8 ।।
हीरहारगल मालदभ के।
कडा जडाउ चूड चम के ।। 9 ।।
घण गूधर रमझोल रण के
दण हण नेवर पाव ठण के ।। 10 ।।
सातू बहना सग सुहात।
रामत रमै ऊजली रात ।। 11 ।।
गहरी धुनी नौबता गाजे।
बीण सितार बसरी बाजे ।। 12 ।।
राग अलाप गिरव्वर गूजे।
धरता पाव धरतरी धूजे ।। 13 ।।
जगमग जोत दिपै उजियाला।
सेवग री राखे रिछपाल ।। 14 ।।
आवे शरणे भगत अपार।
हरष उचारे जय जयकार ।। 15 ।।
पुत्र विहीणा पुत्र खेलावै।
पावा चलण पागला पावे ।। 16 ।।
अधाने जोती चख आपै।
रावा अटलराज गढ थापै ।। 17 ।।
रक धरा थिर सम्पत थावे।
रोगी जन रो रोग मिटावे ।। 18 ।।
अगर चदण गूगल उक्खे वे।
साज सवार आरती सेवे ।। 19 ।।
केसर चन्दण सुगन्ध सुहावे।
मेवा मिसरी भोग लगावे ।। 20 ।।
महिपवली मद छाक छिकावे।
रुद्राणी निजरूप सजावे ।। 21 ।।
जोगण चौसट आवे जोडा।
खेतर पालसग में खोडा ।। 22 ।।
काला गोरा आवे भैरू,
डक डक हाथ बाजवे डैरु ।। 23 ।।
शगती केहर पीठ सुहावे।
आदकरन्ता अविलम्व आवे ।। 24 ।।

राजे गिरवर तेमड राया।
महाअसुर मार्‌यो महमाय ।। 25 ।।
सिंध अधिपत करी अनीती।
बेला अबखी मामड बीती ।। 26 ।।
शगत्या नागिणी रुपस जायो।
नूतन को कुल राजनसायो ।। 27 ।।
सोख्यो घृट हाकडो सिन्धू।
विषधर पियो जिवायो बन्धू ।। 28 ।।
माढ प्रदेश माय जदआई।
आइता आई कहलाई ।। 29 ।।
काले डूँगर री धणियाणी।
नृप जसराज पवार पूजाणी ।। 30 ।।
भैसो असुर तडगियो भखणी।
भाखलियेरी रिच्छा रखणी ।। 31 ।।
माथो महिष देगमडाणी।
देगराय तब नाम कहाणी ।। 32 ।।
तनुराव सारग देराणी।
जिणरी साची भगती जाणी ।। 33 ।।
बोरटीबे पर दरश दिखायो।
जाल उगायथान थप वायो ।। 34 ।।
तनुराव कृ वचन दरायो।
गढ तन्नोट मायमढ थायो ।। 35 ।।
सागे पर सुरराय विराजी।
मोटे बिडसागिया बाजी ।। 36 ।।
चूड दीवी बिजराज कवर ने।
माँ मार्‌यसे घटियाल असुर ने ।। 37
बींजो मार वजी बींजाणी।
मामडियाल तुही महराणी ।। 38
आवड घणा असुर सघार्‌या।
आयाशरणे भक्त अवार्‌या ।। 39
सोहन सदा चरण रे शरणे।
बुध अनुरुप कीरती बरणे ।। 40 ।

'दोहा'

आदशगत आवड तणो। धरोहिये मे ध्यान।
पापज पूरबला कटे। उरसू अटे अज्ञान।।
रागत सरगरीनाथ तो। गुरु दिक्षा ले ज्ञान।
आइनाथ बज आवडा कुडल धारया कान।।

चंद-बरदायी-कृत भगवती-स्तुति

दोहा

चिंता-विघन-विनाशनी, कमलासनी शकत्त।
वीस हथी हँस-वाहनी, माता देहु सुमत्त।।

छद भुजगप्रयात

नमो आदि अन्नादि तुही भवानी,
तुही जोगमाया तुही वाक बानी।
तुही धार्नि आकाश विभू पसारे,
तुही मोह माया विषे शूल धारे।।
तुही चार वेद पट भाप चिन्ही,
तही ज्ञान विज्ञान में सर्व भीनी।
तही वेद विद्या चऊदे प्रकाशी,
कलामड चोबीस की रूप राशी।।
तुही रागनी राग वेद पुरान,
तुही जत्र में मत्र में सर्वजान।
तुही चद्र में सूर में एक भास,
तुही तेज में पुज में हो प्रकाश।।

तुही सोषनी पोषनी तीन लोक,
तुही जागती सोवनी दूर दोष।
तुही धर्मनी कर्मनी जोगमाया,
तुही खेचरी भूचरी वज्रकाया।।
तुही रिद्धि की सिद्धि की एक दाता,
तुही जोगिनी भोगिनी हो विधाता।
तुही चार बानी तुही चार खाबी,
तुही आत्मा पच भूत-प्रमानी।।
तुही सात द्वीप नवे खड मडी,
तुही धाट ओ घाट ब्रह्माड डडी।
तुही धर्नि आकश तू वेद बानी,
तुही नित्य नौजोवना हो भवानी।।
तुही उद्र में लोक तीनु उपावे,
तुही छन्न में खान पान खपाये।
तुही एक अन्नेक माया उपावे,
तुही ब्रह्म भूतेशविष्णु कहावे।।
तुही मात हो एक ज्योतिस्वरुप
तुही काल महाकाल मायाविरूप।
तुही हो निराकार ओंकार वानी,
तुही स्थावर जग में पोषवानी।।
तुही तु ही तु तुही एक चण्डी,
हरि शकरी ब्रह्म भाखे अखडीं।
तुही कच्छ-रूपउदद्धी बिलोही,
तुही मोहिनी देव दैता विमोही।।
तुही देह बाराह देवी उपाई,
तुही ले धरा थभ दाढों उठाई।
तुही विप्रह मे सुरापान टार्यो,
तुही काल बाजी रचीदेत मार्यो।।
तुही भरजा इन्द्र को मान हार्यो,
तुही जाय के भ्रग्गु को गर्वगार्यो।
तुही काम-कल्ला विषे प्रेम भीनी,
तुही देवदैता दमी जीत दीनी।।
तुही जागती जोति निद्रान लेवे,
तुही जीत देनी सदा देव सेवे।
अजोनी सजानी उदासीन सासी,
न बैठी न ऊभी न पोढी प्रकासी।।

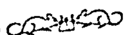
न जागे न सोवे न हाले न डोले,
गुपती न छति करती किलोले।
भुजाल विशाल उजाल भवानी,
कृपाल त्रिकाल करालदिवानी।।
उदान अपान अछेही न छेही,
न माता न ताता न भ्राता सनेही।
विदेहा न देहा न रूपा न रेखी,
न माया न काया न छाया विशेषी।।
उदासीन आसी निवासी न मडी,
सरूपा विरूपा न रूपा सु चडी।
कमखा न सखा असखा कहानी,
ह्रीं ङ्कार शब्द निरकार वानी।।
नवोढा न प्रौढा न मुग्धा न बाली,
करोधा विरोधा निरोधा कृपाली।
अभगा न अगा त्रिभगा न जानी,
अनगा न अगा सुरगा पिछानी।।
शिखर पे फुहारो असोरूप तोरो,
अजोनी सुपावो कटे फद मोरो।
पढे चद छद अभैदान पाऊँ,
निसा वासर मात दुर्गे सुध्याऊँ।।
सुनी साध की टेर घाई भवानी,
गज डुवते ही ब्रजराज जानी।
भजे खेचरी भूचरी भूत प्रेत,
भजे डाकिनी शाकिनी छोड खेत।।
पढे जीत देनी सवेदैत नाश,
भजे किंकरी शकरी कालपाश।
भजे तोतला जत्र मत्र विरोले,
भजे नारसिंगी बली वीर डोले।।
निशा वासर शक्ति को ध्यान धारे,
सुनैन करी नित्य दोष निवारे।
करो वीनति प्रेमसो भट्ट चद,
पढते सुनते मिटे काल फद।।
तुही आदि अन्नादि की एक माया,
सबे पिंड ब्रह्माड तु ही उपाया।
तुही वीर बावन्न वदे सुभारी,
तुही वाहनी हस देवी हमारी।।

तुही पच तत्त्व धरी देह तारी,
तुही गेह गेह भई शील वारी,
तुही शैलजा श्री सावित्री सरूपी,
तुही शिवविष्णु अज थीर थप्पी।।
तुही पान कुभ मधुपान कर्नी,
तुही दुष्ट धातीन के प्रान हर्नी।
तुही जीवतु शिवतु रीत भर्नी,
तुही अतरीरूख तुही धीर धर्नी।।
तुही वेद में जवीरूप कहावे,
निराधार आधार ससार गावे।
तुही त्रिगुनी तेज माया लुभानी,
तुही पच भूत नमस्ते भवानी।
नमोङ्कार रूपे कल्यानी कमल्ला,
कलारूप तु कामदा तु विमल्ला।
कुमारी करूमा कमखा कराली,
जया विजया भद्र काली किंकाली
शिवा शकरी विश्वविमोहनींय,
वराही चमुडा द्रुगा जोगनीय।
महा लच्छमी मगलारत अख्खी,
महातेज अबार जालद्र मख्खी।।
तुही गग गोदावरी गोमतीय,
तुही नमदा जम्मना सर्सतीय।
तुही कोटि मूरज्ज तेज प्रकाशी,
तुही कोटि चदानन जोत भासी।।
तुही कोटिधा विश्व आकाश धारे,
तुही कोटि सूमेरू छाया अपारे।
तुही कोटि दायानल ज्वालमाला,
तुही कोटि भेमीत रूप काराला।।
तुही कोटि शृगार लावण्यकारी,
तुही राधिका रूप रीझे मुरारी।
तुही विश्वकर्ता तुही विश्वहर्ता,
तुही स्थावर जगम में प्रवर्ता।।

द्रुगामा दुरीजन्न वदे न आय,
जपे जाप जाल दरी तो सहाय।
नमस्ते नमस्ते सुजालेंद्रानी,
सुर आसुर नाग पूजत प्रानी।।
नमोङ्कार रूपेसु आपे विराजे,
क्लीङ्कार ह्रींकार ऐंकार छाजे।
ओहकार देवी सोहकार भास,
श्रियकार हूकार त्रींकार त्रास।।
तुही पातकी-नाशनी नारसींगीं,
तुही जोगमाया अनेका सुरगी।
तुही तूज जानेसु तोरे चरीत,
कहा मे लखों चद तोरी सुकीत।।
अपार अनत जगरूप जानी,
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानी।
नमोज्वाल ज्वालामुखी तोहि ध्यावे,
अभैशिघ्र वरदान को चद पावे।।
कहालो बखानु लघू बुद्धि मेरी,
पतगी कहाँ सूर सामो उजेरी।
रती है तुम्हारी मति है तुम्हारी,
चिती है तुम्हारी गती है तुम्हारी।।
जुग हाथ जोरी कहे चद छद,
हरो भक्त के दु ख आनदकद।
हिये में विराजी करो आप वानी,
नमस्ते नमस्ते नमस्ते भवानी।।

दोहा

करि विनतीयो वदीजन, सनमुख रह्यो सुजान।
प्रकट अंबिका मुख कह्यो, माँग चद वरदान
शील रम्या सन्तोष दृढ कीरति भाव प्रयोग।
ऐते सम्पत्ति छोपजो विध्या यह सजोग।।



श्री करणी चालीसा

दोहा

देवी करनल मात रो, याद करता नाम।
शगती रो शरणो लिया, मिटे विघ्न तमाम।।
नौदुर्गा दु ख मेटणी, सदा रहो परसन्न।
करणी मा किरपा करो, विनवै गोवरधन।।

चौपाई

गजानन्द गणपति, को ध्याऊ।
गुरु गौतम की आज्ञा पाऊ।।1।।
जय जय करनी, मात कृपालु।
हो, पुत्र कुपुत्र, तू मात दयालु।।2।।
नमो नमो अम्बे दु ख हरणी।
नमहु मात करनल सुख करणी।।3।।
मास इक्कीस गर्भ में रहिया।
गर्भ मे बोल, सबद शुभ कहिया।।4।।
कर त्रिशूल, आर सिंह सवारी।
माँ दर्शन कर, भई सुखारी।।5।।
भुआ को करतब दिखलायों।
करणी नाम, तभी से पायों।।6।।
सर्प दप पितु, जीवित किन्हा।
ब्राह्मण शुवे को, वर दिन्हा।।7।।
शेखे जी की क्षुधा मिटाई।
कीन्हो आप, धर्म को भाई।।8।।
दीन्हो फेर, अमर वरदान।
मुक्त करण, धाई मुल्तान।।9।।
सावली रूप धर्‌यो, तब सगता।
करूण पुकार, करी जब भक्ता।।10।।
झगड शाह की, नाव उबारी।
गाय दूहन्ता, बाह पसारी।।11।।
पिता को पुत्र प्राप्त करवायो।
राठोडा को मान बढायों।।12।।
मेहा पिता, देवल महतारी।
ग्राम सुवाप, सगत अवतारी।।13।।
साठिका सुसराल सवाया।
पति सग बहन का, ब्याह रचाया।।14।।
पति का दिन्हा, भरम मिटाई।
तब देवी, देशाणे आई।।15।।
नेडीजी म, नेहडी रोपी।
कान्हे कार, वही पर लोपी।।16।।
देवी के सब, आवे शरणे।
वो माता हीणोक, आयो मरणे।।17।।
सूजो मोहिल, पेथड कालों।
मार्‌या दे, छाती में भालों।।18।।
लडता दशरथ, आयो काम।
मन्दिर माहि, थरपियो थान।।19।।
लूट खसोट मची, बड भारी।
राज बण्या जब, अत्याचारी।।20।।
मिनख मिनख ने काटण लागे।
धरा पाप से फाटण लागे।।21।।
तब लेवे करणी, अवतार।
चमके त्रिशूला, तलवार।।22।।

रग कुवरी बीके सू परणी।
बीकानेर थरपियो करणी ।। 23 ।।
देशनोक मन्दिर, मन भावन।
ओयण जाणे, मधुवन पावन ।। 24 ।।
डर डाकर मेटे डाढाली।
जय मा करणी, कावा वाली ।। 25 ।।
प्राण तज्यो सुत, कपिल सरोवर।
कोप कियो तब धर्मराज पर ।। 26 ।।
ताहि समय से है मयादा।
मम वशज सब बणसी कावा ।। 27 ।।
मृषक बण मन्दिर मे आसी।
चारण की मेटी चौरसी ।। 28 ।।
घण पुत्रा घण पौत्रा वाली।
जय जगदम्बा जोता वाली ।। 29 ।।
अणदे की जब आरत बाणी।
दौडी माता, पगा उभाणी ।। 30 ।।
कामेही, श्री बिरवड, आवड।
कृपा करो हे, करनल मावड ।। 31 ।।
चौथे ऊट, पग भागो।
हे करणी कह रोवण लाग्यो ।। 32 ।।
काठ तणों पग, जोड के लाई।
जगल में जा, करी सहाई ।। 33 ।।
वन्ने अन्ध, परिक्रमा दीन्ही।
तिनकी आख गरुड सी किन्ही ।। 34 ।।
करणी परचा, दिया करोड़।
आज आसरो, किण विध छोंड़ ।। 35 ।।
दुख दरिद्र मात, मोहि घेरो।
तुम विन कौन, हरे दुख मेरो ।। 36 ।।
पुत्र कुपुत्र है मात तिहारों।
मेहाई मोही एक सहारो ।। 37 ।।
मै अति दुर्वल, शत्रु सतावे।
मात विना कुण हिये लगावे ।। 38 ।।
गोवर्धन चरणा धर सीसा।
जो नित पाठ ये करे चालीसा ।। 39 ।।
तन मन धन से, करे जो भक्ति।
निश्चय शरणो देवे शक्ति ।। 40 ।।

स्तुति

देव धेनु सम तव दया मेरे सदन सदाय।
दवी अभिमत फलप्रदा रहो हिगोल जगराय।।
दु खी दान धनहीन का दो अखूट धन अन्न।
अम्बा माँ आशापुरा मुझ पर रहो प्रसन्न।।
दशनोक थानक दिप हुवे नगारा हल्ल।
ज्याँ व्है ज्याँ सू आवजे (माँ) किया शाद करनल्ल।।
दिन पलटे पलटे दुनी पलटे सह परिवार।
मेहाई पलटो मती बीशहती उण बार।।
करनी करनी मात आ हरणी विघन हजार।
म्हारे तो तू ही धर्णी निरधारा आधार।।
जोत धुपेडा जागती कावा लड़ता केक।
दर्शन करनल देव रा आयल छटा अनेक।।
आवड़ वरवड़ अम्विका चावड चालकनेज।
करनी लाघी कोड सू, हिवड़े राखो हेज।।

जगळधर में जाय ओयण देखू आपरो।
मूँघो करनल माँय ऊ दिन फेर उगावजो।।
जगळधर में जाय, श्रवणा बाजा शाभळू।
मूघो म्हारी माय, ऊ दिन फेर उगावजो।।
मोत्या सू मूघो मिले, हीरा पाज हरत।
करनी दरशन कारणे प्यारो थळवट पथ।।
कण-कण हुवा कुटुम्ब गाम-धाम सबही गया।
आप उबारो अम्ब बाई! पाछी बेल कर।।
बैठी कटै पिंयाळ औठो ले तू अम्बिका।
धजबन्ध साम्ही न्हाळ अबके बाहर आवजो।।
बरवड थारा बालक्या जेज न कर जगदम्ब।
बारू वाळा बश रे और नहीं अवलम्ब।।
शरणाई साधार रो आई बिरद अटल्ल।
कवि ऊपर करती कृपा क्यों भूले करनल्ल।।

श्री नेहडीजी मन्दिर दर्शन



GANPATI HERITAGE

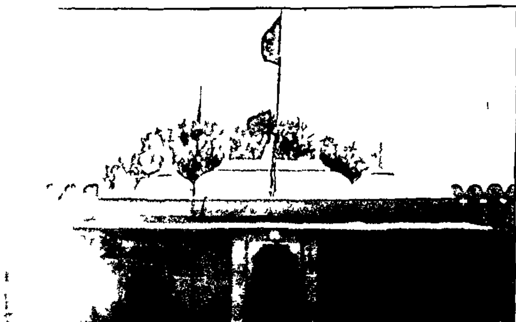
Furniture Handicrafts Interiors

Factory G 1, 89 90, Badharna Industrial Area

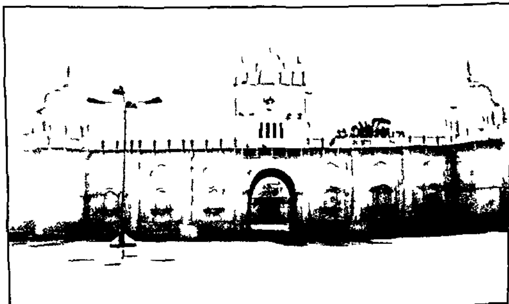
Near Road No 14 V K I A Extension, JAIPUR 13

Tel 0141-2460241 Fax 0141-4034927 Cell 09829056927 9829087563

E mail tantricpath23@yahoo com Website www ganpati heritage com



पुराना रूप श्री नेहडीजी मन्दिर



वर्तमान श्री नेहडीजी मन्दिर

सुरेन्द्रसिंह-दुर्गादानसिंह रतनू

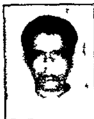
ठिकाना-नाँगल-जयपुर

हाल सी-55 सत्य मार्ग डण्डलोद कॉलोनी सिविल लाइन्स जयपुर

कुलदीपसिंह-सुरेन्द्रसिह रतनू (लेखाकार जेडीए जयपुर)

09829667390 0141-2213881

मुख्य प्रवेशद्वार श्री नेहडीजी मन्दिर



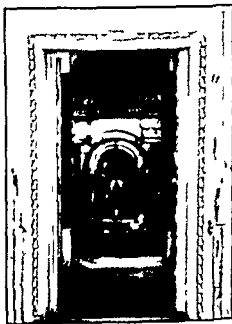
मदनसिह-नरेन्द्रसिंह पातावत (निमकी)

प्लॉट न 25 जयनगर हरमाडा जयपुर

09314047726 0141-3223697



गुम्बज दर्शन



निज मन्दिर



अष्टविनायक द्वार



अष्टविनायक द्वार



गिगाय माँ की आशिष से

पाबूदान नगराजोत (बीठू) परिवार का माँ करणी को शत-शत प्रणाम

सुरेन्द्रसिंह-गोरखदान बीठू

इन्दौखा-मकराना (नागौर) 09783318701 9983286841

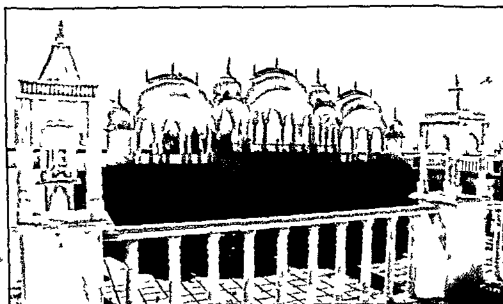
जय अम्बे मार्बल

शिवबाडी रोड अयप्पा मन्दिर के सामने बीकानेर (राज)



कैमरे की एक नजर







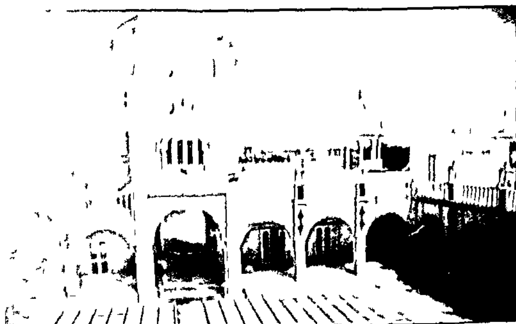
श्री मेहाई क्लिनिक

रासीसर नोखा रोड (बीकानेर)

चन्द्रप्रकाश-पन्नादान रतनू

घोडारण (नागौर)

घनश्याम दान रतनू हर्ष पुल्कित







भूरदान आसिया-बागदानजी आसिया

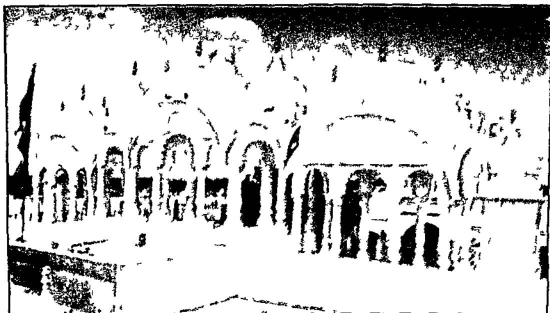
रासदान, शक्तिदान आसिया

दिनेशदान, लक्ष्मणदान, सवाई, बाबू, विक्रम, छगन, जसवन्त

एव समस्त आसिया परिवार, गाव भलूरी (बीकानेर)

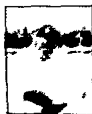
मोबाइल 9602436626 (दिनेश)











देवल परिवार, शेरूवाला

रुघदान पूजदान टीकमदान मनसुखदान किशनदान हरखदान (पुत्र राणीदानजी देवल)
हडवतदान कैलाशदान लीलदान मोहन लूणदान मुरारदान श्रवण
शेरूवाला
9929347905





माँ के चरणो में कोटि-कोटि वदन

B.K.P. GRAPHICS

19, Synagogue Street, 335A City Centre, KOLKATA 700001

Tel 033-22484549

नवीन नौलखा • प्रवीण नौलखा • अमित नौलखा



श्री आवडमाताजी दर्शन



श्री लालबाई–फूलबाईजी भाई श्री सारगजी के साथ



चारण नारायणसिंह गाढ़ण ट्रस्ट

दशनोक (बीकानेर)

गाव–डाडूसर (बीकानेर)

हाल नारायण निकुज रतनसागर कुए के पास फड बाजार बीकानेर

जगदीशदान गाढण (09460317840) शुभम्सिह गाढण



श्री करणीमाता मन्दिर, सीगोदडी

श्री करणीं मन्दिर
(सीगोदडी)



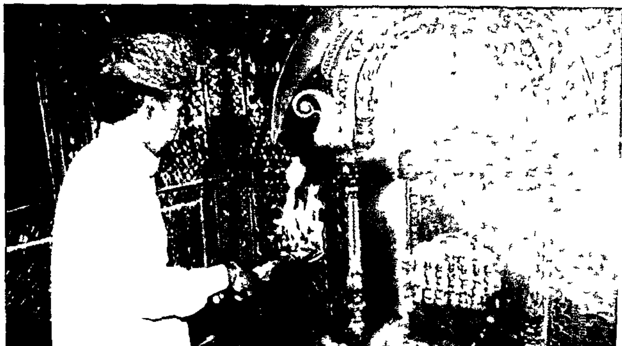
CHARAN TRADERS

Dealers : All Rice Quality

Krishi Upaj Mandi Gate Jaipur Road, SIKAR (Raj)

Pratap Singh, Bhagwati Singh

01572-296905 (O) 9413981286 9460931649 (R)



श्री आवडजी जोत दर्शन (श्री करणी मन्दिर देशनोक)



श्री पावन पावडिया दर्शन



बारी परिवर्तन (पूजा परिवर्तन)

UTKAL PUMPS (P) LTD.

25, Cuttack Road 1st Floor, Chintamaniswar Square

BHUBANESWAR-751006 (Orissa) भण्डार

Phone (0674) 2314394, 2312389 (S) 2421479 (R) Telefax + 91 674 2312070

Cell 9937022333 9338022583 • e mail utkalpumps@rediffmail.com

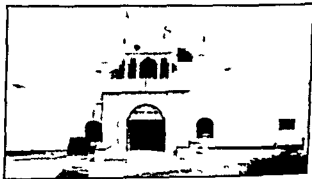
Meghraj [illegible] *(Jain)* 9437022333

स्टेशन रोड. बीकानेर

श्री करणीजी दर्शन, छोटडिया (चूरू)



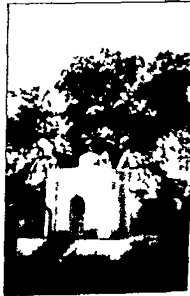




श्री करणी मन्दिर, छोटडिया

श्री आवडजी दर्शन एव मुख्य प्रवेशद्वार









SHIVAM DEVELOPER'S

Opp DRM Office, Chugh Mension, 1st Floor, BIKANER

Kunwar Man Singh Narukа

Mob 09772222198



श्री आवडमाता जी

बाहू चळी निरम्मळी चख बींभळी सुरत्त।
आजे करनल अक्कळी (तू) सँवळी रूप सगत्त॥

वासुदेव दान मेहडू

खारीयारणान् (बीकानेर)

मो 9784001061, 9413143502

भण्डार
वाचनालय
स्टेशन रोड, बीकानेर



श्री महाराजा गगासिहजी



श्री हीरजी मिस्त्री



श्री चाँदमल ढड्ढा



श्री अम्बादानजी (चिरजाओ के रचयिता)



VASUDEV SHARMA

Caterıng & Caretaker Contractor

241, Madhavkunj, Vivek Vihar, New Sanganer Road JAIPUR

Phone 0141-2293233 Cell 9829056155

Vasudev Bulakidas Sharma

Deshnoke (Bıkaner) Ph 0151-2825264

श्री देवियाण दर्शन

श्री जुबली नागरी
पुस्तकालय
स्टेशन रोड, बीकानेर

श्री करणीमाता दर्शन, सुवाप



SETHIA TEXTILE

131 Cotton Street (Gandhi Katra)
Gr Floor Nr Satyanarayan Park A C Market KOLKATA 700007
Manik Chand Sethia Manju Sethia Gautam, Siddharth Rohit Sethia
Motilal Sethia Purnima Sethia Rakesh Sumit Vandana Sethia
रश्मिदेवी सुराणा पानादेवी पतावडी सुन्दरदेवी पींचा
Cell 9831455650 9831511230 9007208638 9433313169

श्री देवियाण दर्शन

बारहठ ईसरदास

चारणों की काव्य-साधना जग-प्रसिद्ध है। काव्य-साधना का गुण जन्म-जात से होता है। चारणों को सरस्वती-पुत्र भी कहा जाता है। इसी चारण कुल मे बारहठ ईसरदास का जन्म वाड़मेर के भाद्रेस गाव में अमराबाई की कोख से सवत् 1595 के चैत सुदी 9 को हुआ। बचपन में ही उनके माता-पिता का देहावसान हो गया। तब उनका पालन-पोषण उनके चाचा आसोजी ने किया। ईसरदास के जन्मकाल के विषय मे प्रचलित दोहा भी है।

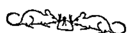
पनरासौ पिच्चाणवै, जनम्या ईसरदास।
चारण वरण चकार में, उण दिन हुवौ उजास।

कवि होने के साथ यह बडे भक्त भी थे। इनकी भक्ति को लेकर कहावत चली आ रही है—ईसरा सो परमेसरा। ईसरदास तो परमेश्वर के अवतार है यह कहकर उनका महत्त्व बढ़ाया गया है।

ईसरदास ने अपने जीवन के आरम्भिक 21-22 साल अपने चाचा के साथ रहे थे इसी दौरान इनकी शादी देवलाबाई से हुई जिनके दो पुत्र हुए—जागोजी और चूडोजी। शीघ्र ही देवल बाई का देहान्त हो गया। जिससे उनके मन में विरक्ति-सी आ गई। तब उनके चाचा ने उस वातावरण से मुक्त करने के लिए उनको देश-भ्रमण हेतु अपने साथ द्वारका-यात्रा पर ले गये। लौटते समय जामनगर की सभा में गये। वहा ईसरदास ने स्वरचित डिंगल गीत सुनाकर अपनी काव्य-शक्ति का परिचय दिया। जामनगर के राजा जाम साहिब कविता प्रेमी थे वे ईसरदास की काव्य प्रतिभा से इतना प्रभावित हुए कि उसको अपने पास ही रख लिया। कई गाव व करोड प्रसाव दिया। इस पुरस्कार से इनकी ख्याति फैल गई जो जामनगर के राज्य कवि क मे प्रतिष्ठित हा गई, वही पर ईसरदास ने दूसरी शादी सवूसूरा शाखा के चारण पथाबाई गठवी की पुत्री राजबाई से की। जिनसे उनके चार सतान हुई। लगभग 65 वर्ष की उम्र तक गुजरात काठियावाड मे रहन के बाद ईसरदास अपनी भूमि भ्रादेस आ गये। यहा आकर लूणी नदी के तट पर एक कुटिया बनाई और मृत्यु पर्यन्त वही रहकर भगवद् भजन करते रहे।

प्रात स्मरणीय ईश्वर रूप ईसरदास बारहठ भक्ति साहित्य के एक कीर्तिस्तम्भ है। उन्होंने हरिरस ग्रन्थ का पूण कर द्वारिका जाकर श्रीकृष्ण और रुक्मणी के सामने उसे पढकर सुनाया। ग्रन्थपाठ पूर्ण होने पर, ऐसा कहत है कि रुक्मणीजी ने मुखरित होकर कहा—'ईसरदास तुमने देवीपुत्र होकर पिता के प्रेम में माता को भुला दिया।' ईसरदास ने अपनी भूल स्वीकार की और गाव लौटकर प्रस्तुत ग्रन्थ 'दवियाण' की रचना की। पुन लौटकर रुक्मणी जी को यह ग्रन्थ सुनाया। कहते हैं कि वह पुन मुखरित हुई और बोली—'ईसरदास यह देवियाण दुर्गा सप्तशती के समान भक्तों को फलदात्री सिद्ध होगी।' यही कारण है कि देवी भक्तों में 'देवियाण का आज भी अत्यधिक प्रचार है।

ईसरदास का अमर ग्रन्थ देवियाण जिसमें, 85 छन्द 'अडल' और 'भुजगी' तथा अन्त में 3 छप्पय है। इसमे महाशक्ति देवी की सर्वशक्तिमत्ता और महिमा का बखान किया गया है। वह अनेक नाम-रूपो में प्रकट होती है सृष्टि की उत्पत्ति पालन और सहार करने वाली है। वह समग्र कार्यो के मूल में है और आद्या शक्ति है। कर्ता, कर्म और कारण ज्ञाता ज्ञेय और ज्ञान, शक्ति शिव और सिद्धि ब्रह्मा विष्णु और शिव—सब



वही है। वह धूम्रलोचन, रक्त बीज, शभु निशुभ का वध करने वाली है। नाम रूपात्मक सृष्टि में शक्ति के अनन्तर कुछ नही है। देवी-देवताआ, नदी-तीर्थ आदि सभी मे उसका निवास है। एक प्रकार से कवि ने देवी को सम्बोधित कर उसकी विविध प्रकार से स्तुति की है।

दोहा

वाचो दुर्गा सप्तशती, या वाचो देवियाण,
पाठी श्रोता को परम, सुखप्रद उभय समान।

देवियाण .

छन्द अडल

करता हरता श्रींकारी
काली कालरयण कौमारी,
ससिसेखरा सिधेसर नारी
जग नीमवण जयो जडधारी।।1।।

हे महामाया। आप शक्ति का मूल स्रोत हो। श्रीं ह्रीं बीजमन्त्र हो। सृष्टि का उद्‌गम, विकास और विनाश आप में समाहित हैं।

हे जगज्जननी। आपने स्वेच्छा से इस सृष्टि को प्रसव किया है। हे करुणामयी। वात्सल्य भाव से भावित होकर आप विश्व का पालन-पोषण करती हो।

हे मुक्तकेशी महाकाली। कालरात्रि के रूप मे आप अपनी रचना को ध्वस्त कर देती हो। हे बीजबाला। चन्द्रभाला। शिवसहचरी। जटाधरी। आपकी जय हो-जय हो। आप ही सृष्टि की आधार हो, आप ही पालनहार हो।

धवा धवळगर धव धू धवळ।
क्रसना कुबजा कचत्री कमळा,
चलाचला चामुडा चपला
विकटाविकट भू बाला विमला।।2।।

हे देवी। आप कैलासपति शिव की शोभा हो शिव की वामाङ्गना हो और आप शिव के शीश पर सुशोभित धवलाङ्गी गगा हो।

हे महाकाली। आप कुब्जा और त्रिजटा जैसी विरूपा है तो रक्ताम्बरा लक्ष्मी जैसी महालावण्यमयी हैं।

हे मातेश्वरी। आप रणाङ्गण में महावेगवती चपल चामुण्डा जैसी विकट स्वरूपा हैं तो आप ही वीणापाणि माँ शारदा और सीता माता जैसी सौम्य स्वभाववाली हैं।

सुभगा सिवा जया श्री अम्बा
परिया परपार पालम्बा,
पिसाचणि साकणि प्रतिबम्बा
अथ आराधिजे अवलम्बा।।3।।

हे अम्बाजी। त्रिपुरसुन्दरी भगवती उमा दुर्गा और महालक्ष्मी आप ही है। आप पराशक्ति हैं, आपकी अपार महिमा है भला आपको कौन जान सकता है।

हे दैत्य विनाशिनी दुर्गे। रणभूमि मे आपका अनुगमन करने वाली पिशाचिनी-शाकिनी आप ही के प्रतिबिम्ब हैं। कवि ईसरदास आरम्भ में आपका स्मरण करता है, आपको नमन करता है। ईसरा को आपका मोटा आसरा है।

स कालिका सारदा समया
त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया,
ओह सोह अखया अभया
आई अजया विजया उमया।।4।।

भक्तकवि ईसरदास बारम्बार भगवती का स्मरण कर रहे हैं—

हे मगलमयी मातेश्वरी। हे महाकाली। हे माँ शारदे। हे बाला त्रिपुरसुन्दरी। हे तारा। हे शिव रञ्जनी त्रिनयना। आप ही मेरा उद्धार करने वाली हो, आप ही महाशून्य में व्याप्त प्रणवनाद हो, आप अजपाजाप हो, आप अक्षय हो, अभय हो, आपकी जय हो।

हे आई माँ डूगरराय। हे गौरी गिरिजा। आप ही अजया हो, विजया हो, आपकी बारम्बार जय हो।

छन्द भुजगी

देवी उम्मया खम्मया ईसनारी
देवी धारणी मुड त्रिभुवन्नधारी,

देवी सब्बदा रूप ॐ रूप सीमा
देवी वेद पारख्ख धरणी ब्रहम्मा।।1।।

हे देवी। आप शिवजी की वामाङ्गी करुणामयी भवानी हो। महान् क्षमाशील हो। आप तीनो लोको की आधार हो। हे मुद्राळी। रौद्र रूप मे आप मुण्डमाला धारण करने वाली मुक्तकेशी महाकाली हो।

हे जगदम्बा। शब्द ब्रह्म के रूप मे विश्व ब्रह्माण्ड में व्याप्त प्रणवनाद ओंकार आप ही का विराट् स्वरूप है। आप चतुरानन के कण्ठ से उच्चारण होने वाली वेद-वाणी हो।

देवी कालिका माँ नमो भद्रकाळी
देवी दूरगा लाघव चारिताळी,
देवी दानवा काळ सुरपाळ देवी
देवी साधक चारण सिध सेवी।।2।।

महात्मा इसरदास महाशक्ति को माँ कहकर सम्बोधित करते है। माँ को प्रणत भाव से बारम्बार नमस्कार करते है। माता के विराट् स्वरूप का भद्रकाली देवी दुर्गा के रूप में अन्तर्मन से ध्यान करते है। कवि का कथन है—

हे आनन्दरूपा माँ काली। हे कल्याणकारिणी माँ भद्रकाली। हे साधनागम्य देवी दुर्गा। आप महान् लीलामयी हो। आपके अनन्त चरित्र है जिनका स्मरणकर हृदय आनन्द विभोर हो उठता है। आप दानवो के लिए काल हो और देवताओं के लिए सुरपाल।

हे मातेश्वरी। आदिकाल से सिद्ध साधक और चारण आपकी आराधना करते आये हैं।

देवी जख्खणी भख्खणी देव जोगी
देवी निमळा भोज भोगी निरोगी,
देवी मात जानेसुरी व्रन्न मेहा
देवी देव चामुड सख्याति देहा।।3।।

हे जोगमाया। आप भगवती तेमडाराय के रूप में बलि भाग ग्रहण करती हो और आप ही आई माँ डूगरराय के रूप में शुद्ध सात्विक भोज्य पदार्थों का भोग लेती हो। हे आईनाथ। आपकी रोग रहित दिव्य काया है।

हे माँ भागीरथी। वर्षा के स्वच्छ नीर जैसी आप धवल धारा है। हे माँ चामुण्डा। आप एक ही बार में अनेक देह धारण कर लेती है। आपकी असीम लीला है, आपके असख्य स्वरूप है।

देवी भजणी दैत सेना समेता
देवी नेतना तप्पना जया नेता,
देवी कालिका कूबजा कामकामा
देवी रेणुका सम्मळा राम रामा।।4।।

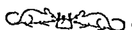
हे चण्डी। आप दुर्धर्ष दैत्यों का उनकी विकटवाहिनी सहित अकेली ही विनाश करने मे समर्थ है। हे अपर्णा। आप महातेजोमयी तपस्विनी है। हे कालिका। आप घोररूपा विरूप अगा है और आप ही महालावण्यवती कामाङ्गना है। आप प्रतापी परशुराम की जननी रेणुका है और आप ही सौम्य स्वभाव वाली सीता माता है।

देवी मालणी जोगणी मत्त मेधा
देवी वेधणी सूर असुरा उवेधा,
देवी कामही लोचना हाम कामा
देवी वासनी मेर माहेस वामा।।5।।

हे देवी। आप मुण्डमाला धारण करनेवाली विकरालमुखी काली है। आप दैत्य विनाशिनी दुर्गा की सहचरी चवसठ योगिनी है। आप महामेधा माँ शारदा है। आप देवगण को स्वर्ग मे स्थापित करने वाली और असुरों का विनाश करने वाली है। हे मात कामाक्षी। आपका रूप-सौन्दर्य कामाङ्गना रति के समान है। हे शर्वाणी। आप कैलासवासिनी हैं, कैलासपति शिव की वामाङ्गना हैं।

देवी भूतडा अम्मरी वीस भूजा।
देवी त्रीपुरा भैरवी रूप तूजा,
देवी राखस धोम रे रक्त रुती
देवी दुर्ज्जटा विकट्टा जम्मदूती।।6।।

हे भूतेश्वरी माँ भवानी। आप कलियुग में देसाणराय बीस भुजाळी करणी माता हैं। हे शिवप्रिया।



[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हो उठीं। आप स्वेच्छा से स्वग त्याग सहसा गहज गति से भू लोक की आर प्रवाहित होने लगीं, किन्तु आधे आकाश को पार करते ही प्रबल वेगवती हो चलीं। उसी तीव्र प्रवाह क साथ देवतात्म हिमालय के उन्नत शिखर पर धूजटि शिव के शीश पर आ अवतरित हुइ।

हे दयामयी! आपने गगाधर क मस्तक पर पूरा मा विश्राम भी नहीं लिया कि राजा सगर के अधोगति प्राप्त पुत्रा का उद्धार करने को महाभाग भगीरथ के साथ अनजाने मार्ग पर चल पडी।

देवी हारणी पाप श्री हरि रूपा
देवी पावनी पतिता तीर्थ भूपा,
देवी पुण्य रूप देवी प्रम्म रूप
देवी क्रम्म रूप देवी ध्रम्म रूप।।12।।

हे गगे! आप पापो का नाश करने वाली स्वय विष्णु हो आप ही लक्ष्मी स्वरूपा है। हे पतितपावनी! आप तीर्थराज प्रयागराज की शोभा है। हे दवी! आप महान् पुण्यवती है निराकार परमात्मा का साकार स्वरूप हैं। आप सत्कर्मों की प्रेरणा स्रोत है और धर्म का मूल आधार हैं। आपकी पावन धारा मे स्नानकर श्रद्धालु जन अपने आप को निर्मल-निष्पाप अनुभव करते है। आपका शीतल सुखद स्पर्श मानव को धर्मप्राण बना देता है।

देवी नीर देख्या अघ ओघ नासे
देवी आतमानद हिये हुलासे,
देवी देवता स्रब्ब तू माँ निवासे
देवी सेवते सिव सारूप भासे।।13।।

देवियाण के स्तव-गान में कवि आरम्भ म जगज्जननी को श्रीमाँ और आप कहकर आदर सूचक सम्बोधन देता रहा है। यहाँ आते-आते भक्तकवि इसरदास मातेश्वरी के अगाध प्रेम की गहराइयों म उतर गया है। माता क प्रति अभिन्न भाव जाग्रत हो उठा है। अन्तर में उल्लास छा गया है। इस महाभाव म मस्त हुआ कवि माँ को तू कहकर पुकारने लगा है।

हे गगा मैया। तेरी पावन धारा को निहारते ही समस्त पापपुञ्ज विलीन हो जाते हैं। तन-मन निर्मल-निष्पाप हो जाता है। हृदय हर्षित हो उठता है। आत्मा मे आनन्द छा जाता है। हे विश्वेश्वरी! तुम सब देवताओ की जननी हो। हे शिव सहचरी! जब तुम तन्मय होकर शिव सेवा में सलग्न होती हो तो स्वय शिव-स्वरूप हो जाती हो। हे सौम्या! तुम शिव का सौंदर्य हो।

देवी नाम भागीरथी नाम गगा
देवी गडकी गोगरा रामगगा,
देवी सर्सती जम्मना सरी सिद्धा
देवी त्रिवेणी त्रिस्थली ताप रुद्धा।।14।।

हे भगवती भागीरथी! हे गगा माई! तेरा पावन अञ्चल सिद्ध महात्माओ की तपस्थली है। हे सुरसरिते! तेरे अनक नाम है अनक जल प्रवाह है। रामगगा यमुना सरस्वती, गडकी, गोगरा तेरे ही रूप है। हे धवलाङ्गी! त्रिवेणी सगम तेरा पवित्र धाम है। हरिद्वार प्रयागराज और गगासागर तेरी पावन त्रिस्थली है जो त्रयताप से तप्त मानव मात्र को परमशीतलता प्रदान करती है।

देवी सिन्धु गोदावरी मही सगा
देवी गोमती धम्मळा बाणगगा,
देवी नमदा सारजू सदा नीरा
देवी गल्लका तुगभद्रा गभीरा।।15।।

हे जलमयी मातेश्वरी! इस धरा पर बारह मास प्रवाहित होने वाली सिन्धु नदी, गोदावरी, गोमती नर्मदा सरयू, तुगभद्रा, बाणगगा आदि पवित्र नदियाँ तेरे साकार स्वरूप है।

देवी कावेरी तापि क्रस्ना कपीला
देवी सोण सतलज्ज भीमा सुसीला,
देवी गोमगगा देवी वोमगगा
देवी गुप्तगगा सुची रूप अगा।।16।।

हे सुरसरिते! तेरी पावनधारा आकाशगगा, पातालगगा और गुप्तगगा म प्रवाहित हो रही है। ऐसा ही स्वच्छ निर्मल नीर कृष्णा-कावेरी, सोन-सतलज ताप्ती-भीमा और कपिलाश्रम के चारा ओर प्रवाहित होन वाली जल-धारा के रूप में आनन्दवर्धन कर रहा है।



देवी नीझरण नवे सो नदी नाळा
देवी तोय ते तवा रूप तुहाळा,
देवी मथुरा माइया मोक्षदाता
देवी अवती अजोध्या अघ्घहाता।।17।।

देवी कहाँ द्वारामती काचि कासी
देवी सातपुरी परम्मा निवासी,
देवी रग रगे रमे आप रूपे
देवी घृत नैवेद ले दीप धूपे।।18।।

इन पवित्र नदियों की भाति भारत भूमि मे अनेक नदी-नाले एव निर्झर हैं। शुद्धमना श्रद्धालु जन इनके निर्मल नीर मे स्नानकर गगा स्नान का सा आनन्द अनुभव करते रहते है। हे कलकल निनादिनी भगवती भागीरथी! इन सभी नदी-नालों और निर्झरों में तेरी ही पावन धारा प्रवाहित हो रही है। हे नीररूपा! तेरा करुणा-भाव तरल जल बनकर धरा पर वह रहा है, प्राणीमात्र को जीवनदान दे रहा है। हे माँ! तेरी अपार महिमा है। शुद्ध मन से जब कोई श्रद्धालु जन जहाँ कहीं हर-हर गगे कहकर जल धारा में डुबकी लगाता है, वही जल उसके लिए गगाजल बन जाता है।

हे लीलामयी! कहीं तुम पावन जल धारा के रूप मे प्रवाहित हो रही हो तो कहीं भव्य देवालयो में मूर्तिमान होकर विराजमान हो। तेरी असीम लीला है तेरा अपार सौदर्य है। हे देवी! सप्तपुरी में तेरे ही श्री-विग्रह हैं जहाँ गगन चुम्बी मन्दिरो म तुम अनेक रूपों मे पूजा ग्रहण कर रही हो।

हे मोक्षदायिनी महामाया! हे पापविनाशिनी परमेश्वरी! काशी-काचिपुरम्, अवन्तिका-अयोध्या मथुरापुरी-द्वारकापुरी और गगाद्वार हरिद्वार में तुम अनेक रूपों में रम रही हो। हर्पोल्लास मे आनन्दमग्न श्रद्धालुभक्त दीप-धूप और घृत युक्त विविध नैवेद्य के साथ तेरी पूजा अर्चना करते रहते है।

देवी रगत बबाळ गळमाळ रुडा
देवी मूढ पाहारणी चड मुडा,
देवी भाव स्वादे हसते वकत्रे
देवी पाणपाणा पिये मद्य पत्रे।।19।।

देवी सहस्र लख कोटीक साथे
देवी मडणी जुद्ध मैखास माथे,
देवी चापड़े चड ने मुड चीना
देवी देवद्रोही दुह धमी दीना।।20।।

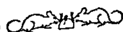
हे विकरालमुखी काली! तर गले में रुधिर से लथपथ विशाल मुण्डमाला झूल रही है। तूने महामूढ दैत्य योद्धा चण्ड-मुण्ड का दमन करने को कमर कस ली है। तुम रणाङ्गण में मद-पात्र को हाथों में उठाकर महास्य वदन मदपान का रसास्वादन ले रही हो। तेरा मुखमण्डल भयावह होता चला जा रहा है। उसी रौद्र भावमुद्रा में मस्त हुई विकट अट्टहास कर रही हो।

हे सर्वबला! तुम अकेली ही हजारों, लाखों, करोड़ों क्रूर आततायियों से लोहा लेने में समर्थ हो। हे चण्डिका! तुम प्रवल पराक्रमी दैत्यराज महिषासुर से युद्ध रचने वाली हो। हे चामुण्डा! तुम चौगान में चण्ड-मुण्ड को देखते ही उन पर टूट पडी। घोर गर्जना के साथ तूने दोनों देवद्रोही महादैत्यों को ललकारा, तलवार के प्रहार से दोनों के सिर काटकर उन्हें धराशायी कर दिया।

देवी धूमलोचन्न हूकार धोंस्यो
देवी जाडबा में रगतबीज सोस्यो,
देवी मोडियो माथ निसुभ मोडे
देवी फोडियो सुभी जों कुभ फोडे।।21।।

देवी सुभ निसुभ दर्पान्ध छळिया
देवी देव स्रग थापिया दैत दळिया,
देवी सघ सुरा तणा काज सीधा,
देवी क्रोड तेतीस उच्छाह कीधा।।22।।

हे अम्बिका! तूने दैत्य सेनापति धूमलोचन को एक हूकार मात्र से भस्म कर दिया। हे रौद्रमुखी! तू अनेक रक्तबीज एक ही बार में डकार गई अपने दातो में दबाकर महादैत्य रक्तबीज का पलभर में रक्तपान कर गइ। तूने रणाङ्गण में महाबली निशुम्भ को मस्तक मरोडकर मार गिराया। हे माता चामुण्डा! ईसरदास तेरी अमोघ शक्ति का कहाँ तक बखान करे तूने खेल ही खेल में दैत्यराज शुम्भ का मस्तक माटी के घड़े की भाति फोड दिया।



हे त्रिशूलधारिणी! तूने मदान्ध महादैत्य शुभ-निशुभ का दर्प दलन कर दिया। तूने दैत्य दल को कुचलकर देवताओं को पुन स्वर्ग मे स्थापित कर दिया। हे देवी! तेरे प्रताप से सुरगण की कार्य सिद्धि हुई। विजयोल्लास में हर्षित तेतीस कोटि देवताओ ने स्वर्ग को हस्तगतकर बडा महोत्सव मनाया।

देवी गाजता दैत ता वस गमिया
देवी नवे खड त्रिभुवन तृझ नमिया,
देवी वन्न में समाधी सुरथ ब्रन्नी
देवी पूजते आसपूर्णा प्रसन्नी।।23।।

देवी वैस सुरथ्थ रा दीह वळिया
देवी तवन तोरा किया सोर्क टळिया,
देवी मारकडे महा पाठ बाध्यो
देवी लगो तव पाय नो पार ताध्यो।।24।।

हे सिहवाहिनी! घोर गर्जना करते अभिमानी असुरों के अनाचार से क्रोधित हो तू अकेली ही रणाङ्गण मे उतर आई। तेरी अमोघ शक्ति के सामने दैत्य-दल टिक नहीं पाया। हे महाबला! तूने उनका नाम-निशान ही मिटा दिया। तेरे महापराक्रम का स्मरणकर तीनों लोक और नवखण्ड तेरे चरणा में लौटते हैं।

हे भगवती! राजा सुरथ और समाधि वैश्य ने वन में आसन जमाकर तेरी आराधना की। हे आशापूर्णा! तू शीघ्र ही प्रसन्न हो गई। हे करुणामयी! तेरा स्तव-पाठ करने पर सब शोक टल गये। तेरी कृपा से राजा सुरथ और समाधि वैश्य के सुदिन लौट आये।

इस कथानक को लेकर महामुनि मार्कण्डेय ने श्री दुर्गासप्तशती जैसे महापाठ की रचना की जिसमें महामुनि ने महाशक्ति का पार पाने के लिए पूरा प्रयत्न किया। किन्तु हे देवी! तेरी असीम लीलाओ का कहीं ओर-छोर ही नहीं मिला, तब शरणागत होकर तेरे पाव पकड़ लिए।

— पूर्व काल मे सुरथ नाम के एक राजा ने समस्त भूमण्डल पर अपना अधिकार कर लिया। वह धर्मपूर्वक राज्य करने लगा। कालातर में शत्रु-सेना ने उस पर आक्रमण कर दिया। राजा सुरथ युद्ध में परास्त हो गया। उसका बल क्षीण हो गया। दुष्ट मन्त्रियो ने उसे धोखा दिया। हार खाकर वह अकेला निर्जन वन की ओर प्रस्थान कर गया, जहाँ उसे एक शोकमग्न वैश्य मिला जिसे धनलोलुप स्वजनों ने घर से निकाल दिया था।

राजा सुरथ और सेठ समाधि वन में भटकते हुए एक आश्रम मे मेधा मुनि की सेवा मे उपस्थित हुए और उन्हे आपबीती सुनाई। मुनि मुसकराए और बोले, 'भगवती महामाया के प्रभाव से यह जगत मोहित हो रहा है। पराजित होने पर एक को राज्य की चिता सता रही है, तो घर से निर्वासित होने पर दूसरे को अपने परिवारजन की। भगवती महामाया ही मोह ग्रसित प्राणियो को प्रकाश दिखा सकती है। तुम दोनो माँ भगवती की आराधना करो।

दवी सप्तमी अष्टमी नोम नूजा
देवी चौथ चौदस्स पूनम्म पूजा,
देवी ससती लख्खमी महाकाळी
दवी कन्न विष्णु ब्रहम्मा कमाळी।।25।।

हे जगन्माता! तुम महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती हो। चतुर्थी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी चतुर्दशी और पूर्णिमा तेरे पूजा-दिवस है। हे जगन्मयी! पितामह ब्रह्मा, भगवान् विष्णु, मुण्डमाली शिव और गोकुल के श्यामसुन्दर तेरे हो स्वरूप हैं।

देवी रगत नीलमणी सीत रग
दवी रूप अबार विरूप अग,
दवी बाल युवा वृध वेपवाळी
देवी विस्व रखवाळ वीसा भुजाळी।।26।।

हे देवी! तुम अरुणवसना माँ लक्ष्मी, नीलवर्णा माँ श्यामा एव श्वेतवसना माँ शारदा हो। हे विश्व मोहिनी! तुम्हीं महालावण्यवती बाला त्रिपुरसुन्दरी हो और तुम्हीं विरूप अगा करालवदना कालिका हो। हे अम्बाजी! आप बाल, युवा और वृद्ध वेप धारण करने वाली धोळामढ की राय हो। हे जोगमाया! आप विश्व रक्षिका बीसहथी देवी देसाणराय हो।—



—गुजरात मे आवू के निकट आरासुर पर्वत पर अम्बाजी का मदिर है जो धोळामढ की राय कहलाती है। लोकदेवी के रूप में गुजरात म अम्बा माता की सर्वाधिक मान्यता है। यात्रियो के सघ आते रहते है।

आरासुरी का सगमरमर का मुरम्य प्राचीन मढ है। माता का मनोरम शृगार हाता है। अम्बाजी प्रात बाला मध्याह्न युवा और साय वृद्धा के रूप में दिखायी देती हैं।

देवी वैष्णवी महेसी व्रहम्माणी
देवी इन्द्राणी चन्द्राणी रनाराणी,
देवी नारसिंघी वराही विख्याता
देवी इला आधार आसूर हाता।।27।।

हे देवी! तुम असुरो का विनाशकर पृथ्वी का पालन करने वाली हो। तुम्हीं वैष्णवी, महेश्वरी, ब्रह्माणी, इन्द्राणी रेवती, रानादे, नारसिही और वाराही के नाम से विख्यात हो।

देवी कौमारी चामुडा विजैकारी
देवी कुबेरी भैरवी क्षेमकारी,
देवी मृगेस व्रख्ख हस्ती मइखे
देवी पख केकी गरुड धिरट पखे।।28।।

हे कुमारी! तुम दैत्यो पर विजय पाने वाली चामुण्डा हो। तुम रक्षा करने वाली कुबेरी और भैरवी हो। सिह, हाथी, महिष, वृषभ मयूर, हस एव पक्षीराज गरुड तेरे विविध वाहन है।

देवी रथ्थ रेवत सारग राजे
देवी विमाण पालखी पीठ व्राजे,
देवी प्रेत आरूढ आरूढ पद्म
देवी सागर सुमेरू गूढ सद्म।।29।।

हे देवी! क्षीरसागर और कैलास पर्वत तेरे रहस्यमय आवास है। तेरे नाना रूप है कहीं तू कमलासना है तो कहीं शवासना। हे सिहवाहिनी! तुम कभी अश्वरथ पर आरोहण करती हो तो कभी विमान अथवा पालकी में।

देवी वाहन नाम कै वप्पवाळी
देवी खग्ग सूळधरा खप्पराळी,
देवी कोप रे रूप में काळजेता
देवी कृपा रे रूप माता जणेता।।30।।

हे लीलामयी! तरे अनेक रूप हैं, तेरे अनेक वाहन हैं। हे कापालिका! त्रिशूल और खड्ग तरे प्रसिद्ध आयुध हैं। हे रौद्रमुखी! जव तुम कुपित हाती हो ता कालजयी हो, स्वय यमराज भी तुम्हारे सामने नहीं टिक पाता और जव प्रसन्न होती हो तो तुम परमवात्सल्यमयी माता हो।

देवी जग्त कत्ता र भर्त्ता सहरता
देवी चराचर जग्ग सव में विचरता,
देवी चार धाम स्थल अप्ट साठे
देवी पाविये एकसो पीठ आठे।।31।।

हे जगदीश्वरी! तुम जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय की कारणभूत सत्ता हो। चराचर में प्राणीमात्र में तुम प्राणशक्ति के रूप में व्याप्त हो। सुदूर पश्चिम में आदि शक्तिपीठ हिगुलालय, उत्तर में ज्वालामुखी, पूर्व म असम कामगिरि पर कामाख्या और दक्षिण भारत में मदुरै में मीनाक्षी का विशाल देवालय तेरे चार महाधाम हैं। भारत भर मे फैले अडसठ तीर्थ तेरे स्वरूप है। देवीभागवत में वर्णित एक सौ आठ शक्तिपीठ तेरे दिव्य धाम है।

देवी माइ हिंगोळ पच्छम्म माता
देवी देव देवाधि वरदान दाता,
देवी गढ्रपावास अर्बद्द ग्रामे
देवी थाण उडियाण समसाण ठामे।।32।।

हे वरदायिनी! तुम देवराज इन्द्र और देवगण को परित्राण देने वाली हो। हे माता! पश्चिम दिशा मे बलूचिस्तान की मकरान गिरिमाला के विशाल गुफा गृह मे तुम आदि-शक्ति हिगलाज माई हो कश्मीर के उत्तरी क्षेत्र मे जल से घिरे एक सुरम्य द्वीप पर योगमाया क्षीरभवानी हो, आबू पर्वत की उन्नत चट्टानों के बीच अर्बुदा देवी हो, उज्जैन नगरी में रुद्र सागर के तट पर श्मशानवासिनी हरसिद्धि माता हो और पश्चिम राजस्थान मे गिरलाओ पहाडी की ऊची खोह म आई माँ परमेश्वरी तेमडाराय हो।



देवी गढे कोटे गरन्नार गोखे
देवी सिन्धु वेळा सवालाख सोखे,
देवी कामम पीठ अघ्घोरे कुडे
देवी खखरे द्रुमे कस्मेर खडे।।33।।

हे त्रिशूलधारिणी! तुम दुर्गरक्षिका के रूप में अनेक किलों में प्रतिष्ठित हो। हे अम्बा! गिरनार पर्वत के शिखर पर तेरा आवास है। अघोर कुण्ड के निकट हिगलाज और कामगिरि पर कामाख्या तेरे महाशक्ति पीठ हैं। कश्मीर में पत्रहीन पेड़ों के बीच उत्तर मे क्षीरभवानी तेरी। भारत के दक्षिण छोर पर, सागर तट पर जहाँ लाखों लहरें उठती रहती है तुम कन्याकुमारी के रूप में सागर को मर्यादा में रखती हो।

देवी उत्तरा जोगणी पर उजेणी
देवी भाल भरुअच्च भजनेर भेणी,
देवी देव जालधरी सप्त दीपे
देवी कदरे सख्खरे वाव कूपे।।34।।

हे जालधरी! सप्त द्वीप में तेरा आवास है। हे योगिनी! उत्तर भारत में तेरी पूजा है। उज्जैन, अरणेज भरूच और भुजनगर म तेरे भव्य मन्दिर है। कन्दराओं, पर्वत की चोटिया, बावडी और कुओं में तेरे अनन्त पूजा स्थल हैं।

देवी मेटळीमाळ घूमे गरब्बे
देवी काछ कन्नोज आसाम अम्बे,
देवी सब्ब खडे रसा गिरिश्रृगे
देवी वकडे दुर्गमे ठा विहगे।।35।।

हे आनन्दमयी! गुजरात में गरबा के सग तुम स्वय रास रमती हो। कच्छ सौराष्ट कन्नौज और असम में तेरे अनेक श्रीमन्दिर हैं। भरत खण्ड म धरती पर और पर्वत-शिखर पर तेरे देवालय हैं। हे देवी! विकट दुर्गमस्थल, जहाँ केवल पक्षियों की पहुच है, तेरे मढ़ है।—

—माताजी का गरबा नारी समाज का अपना धार्मिक आयोजन है, जिसम केवल महिलाए भाग लेती है। गिरनार पर्वत पर अम्बाजी का आवास है। गिरनार पर्वत घडे की आकृति का है जिसे गुजरात में गरबा कहते है। गरबो गढ़ गिरनार की उक्ति प्रसिद्ध है। गुजरात म गरबा नर्तन का प्रचलन है। एक घडे के छेद निकाल कर उसम घी का अखण्ड दीपक जलाते हैं जो गरबा कहलाता है । यह गरबा गिरनार का प्रतीक है। लोक मान्यता चली आ रही है कि गरबा की स्थापना अम्बाजी का आगमन है। गरबा को लेकर नवरात्रि मे हर्षोल्लास और भाव-भक्ति के साथ आनन्दोत्सव मनाया जाता है।

एक ताली, दो ताली और तीन ताली के साथ महिलाए मण्डलाकार घूमकर मनोहारी नृत्य प्रस्तुत करती है। स्वर, ताल और लय में लीन हुई, एक तन और एक मन होकर अम्बाजी का यशगान करती है। जब नृत्य आनन्द की सीमा में प्रवेश कर जाता है तो यह अवधारणा चली आ रही है कि स्वय अम्बाजी गरबा नृत्य में उतर महिलाओं के सग रास रमने लगती है।

देवी वम्मरे डूगरे रन्न वन्ने
देवी थूवडे लींबडे थन्न थन्ने,
देवी झगरे चाचरे झब्ब झब्बे
देवी अबरे अन्तरीखे अलबे।।36।।

हे मातेश्वरी! पर्वत पर गुफा म घाटी में, घने वन में, रेतीले टीले पर अथवा द्रुमहीन पठार पर स्थान-स्थान पर तेरे आवास हैं। हे भवानी! तरु-लताआ से घिरे ओरण (रक्षित वन) में और मातृ-मन्दिर के पवित्र चौक मे तेरा विमल प्रकाश फैल रहा है। केवल पृथ्वी पर ही नहीं, अनन्त अन्तरिक्ष में एक तेरी ही सत्ता व्याप्त है। हे महाशक्ति! समस्त विश्व ब्रह्माण्ड की तुम एक मात्र अवलम्बन हो। कवि ईसरदास तेरी असीमता का पार नहीं पा रहा है।

देवी निझरि तरवरे नगे नेसे
देवी दिसे अवदिसे देसे विदेसे,
देवी सागर बेटडे आप सगे
देवी देहरे घरे देवी दुरगे।।37।।

महात्मा ईसरदास परमशाक्त हैं। ईसरदास के हृदय में मातेश्वरी के प्रति महाकर्पण जाग उठा है। माँ भगवती भक्तवत्सला हैं। कवि के शुद्ध प्रेम से प्रसन्न होकर करुणामयी ने उसे अपना लिया है। ईसरदास को भगवती



का सान्निध्य लाभ मिल गया है। इस परमावस्था को पाकर कवि आनन्द विभोर हो रहा है, वह भगवती को सम्बोधन कर कहता है—

हे मातेश्वरी। नदी-निर्झरों में, सघन वन में, पर्वत पर अथवा गाव मे मुझे तेरी दिव्य उपस्थिति का निरन्तर अनुभव होता रहता है। दिशा-विदिशा में, सागरतट पर, जल से घिरे टापू पर, देवालय मे अथवा घर में, मैं जहाँ भी जाता हूँ तुझे साथ पाता हूँ। हे मेरी मोटी मावडी। इस ईसरा को कैसी आनन्दमयी दिव्यानुभृति हो रही है।

देवी सागर सीप में अमी श्रावे
देवी पीठ तव कोटि पच्चास पावे,
देवी वेलसा रूप सामद वाजे
देवी बादळा रूप गैणाग गाजे।।38।।

हे जगदीश्वरी। तेरे अनन्त आवास हैं, अनेक शक्तिपीठ है। हे लीलामयी। सीप के मुख में तुम अमृत वर्षण करती हो, समुद्र में तुम लहरों के रूप में हिलोरें लेती हो और आकाश में मेघ बनकर गर्जना करती हो।

देवी मगळा रूप तू ज्वाळ माळा
देवी कठळा रूप तू मेघ काळा,
देवी अन्नल रूप आकास भम्मे
देवी मानवा रूप प्रतलोक रम्मे।।39।।

हे महिमामयी। तुम अग्नि स्वरूपा हो और उसम धधकती हुई ज्वालमाला हो। तुम जलमयी हो और गगन में गहराती हुई श्यामल घटा हो।

हे ज्योतिर्मयी। भगवान् भास्कर के रूप मे तुम अविराम गति से आकाश में भ्रमण करती हुई प्राणीमात्र को जीवन दान दे रही हो और मरणधर्मा मानव के रूप में इस धरा पर विचरण करती हुई कैसा वैभव विलास दिखा रही हो।

देवी पन्नगा रूप पाताळ पेसे
देवी देवता रूप तू स्रग्ग देसे,
देवी प्रम्म रे रूप पिंड पिंड पीणी
देवी सून रे रूप ब्रह्माड लीणी।।40।।

हे महामाया। सर्प के रूप में तूने पाताल लोक में प्रवेश पा लिया है, स्वर्ग लोक में तुम देवताओं के रूप मे सुख भोग रही हो, प्राणीमात्र में तुम परमतत्त्व के रूप में समा रही हो और महाशून्य के रूप में विश्व ब्रह्माण्ड सहित सम्पूर्ण सृष्टि को अपने में विलय कर लेती हो।

देवी आतमा रूप काया चलावे
देवी काया रे रूप आतम खिलावे,
देवी रूप वासन्त रे वन्न राजे
देवी आग रे रूप तू वन्न दाझे।।41।।

हे देवी। जीवात्मा के रूप में तुम काया का सचालन कर रही हो और काया के रूप में तूने जीवात्मा को वन्धन में डालकर कैसा खेल रच दिया है कि मोह-माया में फसकर यह नित्यमुक्त आत्मा पराधीन बनी बैठी है, इधर ऋतुराज वसन्त के रूप में तुम वन के लता-द्रुमों के बीच सुशोभित हो रही हो और दावाग्नि के रूप में तुम हरे-भरे वन को दग्ध कर देती हो।

देवी नीर रे रूप तू आग ठारे
देवी तेज रे रूप तू नीर हारे,
देवी ज्ञान रे रूप तू जग्त व्यापी
देवी जग्त रे रूप तू धर्म थापी।।42।।

हे देवी। आप महाप्राण हो, आप ही पच महाभूत हो। जल के रूप मे तुम दहकती हुई अग्नि को शीतल कर देती हो और सूर्य की तेजस्विता में तुम जल का हरण करती रहती हो।

हे योगमाया। चेतना के रूप में तुम विश्व में व्याप्त हो रही हो और विश्व के पालन के लिए तुम धर्म की सस्थापिका हो।

देवी धर्म रे रूप शिव शक्ति जाया
देवी शिव शक्ति रूपे सत्त माया,
देवी सत्त रे रूप तू सेस माही
देवी सेस रे रूप सिर धरा साही।।43।।

हे जगन्माता। धर्म के रूप में तुम शिव-शक्ति का महामिलन हो, जहाँ शिव शक्ति में समाहित हैं। हे योगमाया। यह विश्व तेरी आनन्दमयी लीलास्थली है जहाँ तेरे अक्षुण्य प्रभाव से माया सत्य भास रहा है। माया का सम्मोहन इतना विमुग्धकारी है कि सब

जीवधारी लोटपोट हो रहे हैं, किन्तु कल्पान्त में सब कुछ विलीन हो जाता है। केवल सत्य शेष रह जाता है। तत्वत यह सत्य ही शेषनाग है, जिसने स्वेच्छा से इस पृथ्वी को अपने शीश पर धारण कर लिया है। सत्य से विचलित होते ही धरा आधारहीन हो जाती है, यह सत्य ही सबका नियामक है।

देवी धरा रे रूप खमया कहावे
देवी खम्मया रूप तू काळ खावे,
देवी काळ रे रूप उदड वाये
देवी वायु जळ रूप कल्पात थाये।।44।।

हे देवी! तेरा धरा के रूप में क्षमाधारिणी कहकर यशगान किया जाता है। धरती माता अचला कहलाती है। हे कालरात्रि! प्रचण्ड पवन के रूप में जब तुम रौद्र रूप धारण करती हो तो विनाशलीला आरम्भ हो जाती है। प्रबल झझावात और निरन्तर घोर वर्षा के कारण पृथ्वी जलमग्न हो जाती है, सर्वत्र प्रलय हो जाती है।

देवी कल्प रे रूप कल्पात दीपे
देवी विष्णु रे रूप कल्पात जीपे,
देवी नींद रे रूप चख विमन रूढी
देवी विसन रे रूप तू नाभ पूढी।।45।।

हे भुवनेश्वरी! तुम कल्प की कालगणना हो और तुम्हीं कल्पात हो। विष्णु के रूप में तुम कल्पात में भी कालजयी हो।

हे योगमाया! तुम योगनिद्रा के रूप म शेषशायी विष्णु के नयनों में छा जाती हो और सृष्टि के बीज रूप में विष्णु की नाभि म शयन करती रहती हो।

देवी नाभ रे कमळ ब्रह्मा निपाया
देवी ब्रह्म रे रूप मधुकीट जाया,
देवी रूप मधुकीट ब्रह्मा डराये
देवी ब्रह्म रे रूप विष्णु जगाये।।46।।
देवी विष्णु रे रूप जघा वधारे
देवी मुकुद रे रूप मधुकीट मारे,
देवी सावित्री गायत्री प्रम्म ब्रह्म
देवी साच तण मेलिया जोग सम्मा।।47।।

हे विश्वेश्वरी! तुम नाभि-कमल में ब्रह्मा उत्पन्न करती हो, विष्णु के कान से मधु-कैटभ प्रकट करती हो, महाअसुरों को देख ब्रह्मा भयभीत हो जाते है, तब ब्रह्मा की प्रार्थना सुनकर तुम विष्णु को योगनिद्रा से जागाती हो।

चक्रपाणि विष्णु इन महादैत्यों से वर्षों तक घोर युद्ध करते हैं। हे महामाया! तेरे अपरिमित मोहजाल म फसकर मधु-कैटभ स्वय ही अपने अन्त को आमन्त्रित कर लेते हैं, जिसके फलस्वरूप जलमग्न धरा पर विष्णु अपनी जघा का विस्तार कर उन दोनों शत्रुओं के सिर काट लेते हैं।

हे देवी! तुम शाश्वतसत्ता हो, चिन्मयस्वरूपा हो। ब्रह्मा, विष्णु, सावित्री, गायत्री सब तेरे रूप हैं। हे योगेश्वरी! मानव को योग पथ पर अग्रसर होने की क्षमता तुम्हीं प्रदान करती हो। तेरी माया का आवरण दूर होने पर ही सत्य के दर्शन होते है।

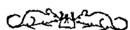
देवी सुनी रे दूध तें खीर राधी
देवी मारकड रूप तें भ्रात बाधी,
देवी मत्र मूल देवी बीज बाला
देवी वापणी सव्व लीला विसाला।।48।।

हे योगमाया! तुझे कौन जान सकता है, तू महालीलामयी है। सब तेरी माया के आवरण मे आच्छादित हैं। सासारिक जीवो की तो बात ही क्या चण्डीपाठ के रचनाकार महामुनि मार्कण्डेय स्वय तेरे प्रत्यक्ष दर्शन पाकर भी तुझे नहीं पहचान पाये, कुतिया के दूध की खीर देखकर उन्हें भ्रान्ति हो गई। महामुनि तुझे एक किरातकन्या मान बैठे। यथार्थ में तुम साक्षात् योगमाया क्षीरभवानी थी।

हे देवी! तुम बीजाक्षर हो, तुम मन्त्र का सार तत्त्व हो तुम सर्वव्यापी हो, तेरी अद्‌भुत लीला है। तुम ससार की समस्त क्रियाशीलता हो।

देवी आद अन्नाद ओंकार वाणी,
देवी हेक हकार ह्रींकार जाणी,
देवी आप ही आप आपा उपाया
देवी जोग निद्रा भव तीन जाया।।49।।

हे पराशक्ति! तेरा नित्य स्वरूप महाशून्य में



व्याप्त प्रणवनाद ओकार है। शिव स्वरूप अ और शक्ति स्वरूपा ह तक तेरा नाद-विस्तार है, जब नाद एकाकार हो जाता है तो एक हकार शेष रह जाता है।

हे बीजवाला। बीजाक्षर रूप में तुम ह्रीं हो यह ह्रींकार ही तेरा तन्त्रोक्त तात्त्विक स्वरूप है। अपने को उत्पन्न करने वाली आप स्वय ही हो। हे लीलामयी। तूने विष्णु की योगनिद्रावस्था में ही कमलयोनि चतुरानन को उत्पन्न कर दिया और चतुरानन के रूप मे त्रिभुवन की रचना कर दी।

देवी मन्नछा माइया जग्ग माता
देवी ब्रह्म गोविन्द सभु विधाता,
देवी सिद्धि रे रूप नव नाथ साथे
देवी रिद्धि रे रूप धनराज हाथे।।50।।

हे जगदम्बा। तुम महामाया हो, परब्रह्म की मनेच्छा हो। हे महाशक्ति। तुम त्रिदेव का सृजन करती हो। हे सिद्धेस्वरी। तुम सिद्धि के रूप मे नवनाथो म सुशोभित हो रही हो और रिद्धि के रूप में धनराज कुबेर का श्रीवैभव हो।

देवी वेद रे रूप तू ब्रह्म वाणी
देवी जोग रे रूप मच्छद्र जाणी,
देवी दान रे रूप बळराव दीधी
देवी सत्त रे रूप हरचद सीधी।।51।।

हे देवी। वेदो के रूप मे आप जगत् पिता चतुरानन का श्रुति-पाठ ब्रह्मवाणी हो, योग के रूप में तुम महायोगी मछन्दरनाथ की योग सिद्धि हो दान के रूप में तुम उदारमना दैत्यराज वलि की दानवीरता हो और सत्य के रूप म अयोध्या के सत्यनिष्ठ राजा हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता हो।

देवी रुद्र रे रूप दसकध रूठी
देवी सील रे रूप सौमित्र तूठी,
देवी सारदा रूप पींगल प्रसन्नी
देवी माण रे रूप दुर्जोण मन्नी।।52।।

हे माँ शारदा। पिंगल पर प्रसन्न हाकर तूने उम छन्द-विद्या के अष्टप्रत्यय म पारगतकर छन्दशास्त्रवेत्ता बना दिया।

हे भगवती। तुम बुद्धिप्रदा हो, मानव को उसके सस्कारानुसार सद्बुद्धि और दुर्बुद्धि देने वाली हो। तरी अकृपा से महादुराग्रही दैत्यराज दशानन अपनी विकटवाहिनी सहित धूल मे मिल गया और तेरी कृपा से शीलव्रतधारी रामानुज सौमित्र शक्तिबाण लगन पर भी बच गया। अभिमान के रूप में तुम दुर्योधन के मन पर छा गई, जो उसके सर्वनाश का हेतु बन गया।

देवी गदा रे रूप भुज भीम साई देवी साच रे रूप जुहिठल्ल ध्याई, देवी कुन्ती रे रूप ते कर्ण कीधा

देवी गदा रे रूप भुज भीम साई,
देवी साच रे रूप जुहिट्ठल ध्याई,
देवी कुन्ती रे रूप ते कण कीधा,
देवी सास्त्रा रूप सैदेव सीधा।।53।।

हे देवी। तुम गदा के भीषण प्रहार के रूप में पाण्डुपुत्र भीम की भुजाओ मे रम गई और सत्यवादिता के रूप मे धर्मराज युधिष्ठिर की वाणी पर आ विराजा। हे लीलामयी। तूने कुन्ती के शील की रक्षा करते हुए महावली कर्ण पैदा कर दिया और सहदेव को शास्त्रवेत्ता के रूप मे सिद्धि प्रदान कर दी।

देवी बाण रे रूप अर्जुण बन्नी
देवी द्रौपदी रूप पाचा पतन्नी,
देवी पाच ही पाडवा परे तूठी
देवी पाडवी कौरवा पर रूठी।।54।।

हे देवी। धनुर्धर अर्जुन के धनुष पर तुम अचूक वाण बनकर आसीन हो गई। पाचाली के रूप में पाचों पाण्डवा की पत्नी वन गई।

हे देवी। तुम पाचों पाण्डवों पर प्रसन्न हो गई और कौरवों पर कुपित हो उठी। हे भवानी। तरे प्रताप से महाभारत क घोर सग्राम में पाच न सौ पर विजय प्राप्त कर ली।



देवी पाडवा कौरवा रूप बाधा
देवी कौरवा भीम रे रूप खाधा,
देवी अजुण रूप जैद्रथ्थ मार्यो
देवी जैद्रथ्थ रूप सौभद्र टार्यो।।55।।

हे कालिका! तूने कुरुक्षेत्र के रणाङ्गण में कैसी विनाश लीला रच दी। तेरी कैसी विचित्र माया है कि भाई, भाई के खून का प्यासा हो गया। हे चामुण्डा! भीम के रूप में तू कौरवों का भक्षण कर गई। उधर अधर्मी जयद्रथ को कैसी दुर्बुद्धि दी कि निहत्थे अभिमन्यु पर प्रहार कर बैठा और इधर धर्मप्राण अर्जुन में कैसा साहस और शौर्य जाग्रत कर दिया कि विषम परिस्थिति में भी सूर्यास्त से पूर्व उस दुरात्मा जयद्रथ को धराशायी कर अपना प्रण पूरा किया।

देवी रेणुका रूप तैं राम जाया
देवी राम रे रूप खत्री खपाया,
देवी खत्रिया रूप दुजराम जीता
देवी रूप दुजराम रे रग्त पीता।।56।।

हे अम्बा! तूने रेणुका के रूप मे परशुराम जैसे महाप्रतापी पुत्र को जन्म दिया। हे चण्डी! तू परशुराम के रूप में अभिमानी क्षत्रिय सहस्रबाहु का रक्त पान कर गई इतना ही नहीं तूने द्विजराम के रूप मे अधर्मी क्षत्रियों का विनाश कर दिया। किन्तु वह वीरवर परशुराम जब मर्यादा पुरुषोत्तम राम रामानुज लक्ष्मण और कुरुनन्दन भीष्म के सम्मुख खडा हुआ तो पराजय का मुख देखना पडा।

देवी रग्त रे रूप तू जग्त जाता
देवी जोगणी रूप तू जग्त माता,
देवी मात रे रूप तू अमी श्रावे
देवी बाळ रे रूप तू खीर धावे।।57।।

हे देवी! बिन्दु के रूप में तुम जगत् की रचना करती हो और रुधिर के रूप में तुम प्राणशक्ति हो। हे अम्बा! लोकदेवी जूनीजोगण आई माँ परमेश्वरी के रूप में तुम जगत् की माता हो। हे जगदम्बा! माता के रूप में तुम अपनी सतति को स्तन-पान कराकर स्नेह वर्षण करती रहती हो और शिशु के पोषण हेतु मातृ-स्तन से दूध की धारा बनकर बहती रहती हो।

दवी जस्सुदा रूप कान दुलारे
देवी कान रे रूप तू कस मारे,
देवी चामुडा रूप खेतल हुलावे
देवी खेतला रूप नारी खिलावे।।58।।

हे करुणामयी! तुम माता यशोदा के रूप में बालगोपाल श्यामसुन्दर को प्यार-दुलार करती हो और गोपाल के रूप मे महाबली कस को मार गिराती हो।

हे माता! तेरा कैसा विचित्र स्वभाव है, जिसका स्मरणकर कवि ईसरदास भावमग्न हो रहा है। तुम चामुण्डा के रूप में रौद्र रूप धारण कर लेती हो, किन्तु अपने सहज वात्सल्यभाव को भूलती नहीं तुम रणाङ्गण म वटुकभैरव को उपस्थित पाकर उसे दुलारने लगती हो। हे आनन्दमयी! तुम क्षेत्रपाल के रूप मे निपूती नारी को सपूती का वरदान देकर परमप्रसन्न कर देती हो।

देवी नारि रे रूप पुरसा धुतारी
देवी पुरसा रूप नारी पियारी,
देवी रोहणी रूप तू सोम भावे
देवी सोम रे रूप तू सुधा श्रावे।।59।।

हे सुन्दरी! तुम रमणी के रूप म पुरुष को सम्मोहित कर लेती हो और पुरुष के रूप में तुम्हे रमणी प्राणप्रिय लगती है। हे देवी! तुम रोहिणी के रूप म चन्द्रमा के मन भा गइ हो और सुधाकर के रूप में तुम धरा पर अमृत वर्षण करती रहती हो।

देवी रुकमणी रूप तू कान सोहे
देवी कान रे रूप तू गोपि मोहे,
देवी सीत रे रूप तू राम साथे
देवी राम रे रूप तू भग्त हाथे।।60।।

हे बाला! तुम रुक्मणी के रूप में द्वारकेश कृष्ण के चित्त चढ गयी हो। हे लीलामयी! तुमने मुरलीमनोहर के रूप में गोकुल की गोपियों को मोहित कर लिया है। हे देवी! आप महासती सीता के रूप मे पुरुषोत्तम राम की



व्याप्त प्रणवनाद ओकार है। शिव स्वरूप अ और शक्ति स्वरूपा ह तक तेरा नाद-विस्तार है जब नाद एकाकार हो जाता है तो एक हकार शेष रह जाता है।

हे बीजवाला! बीजाक्षर रूप में तुम हीं हो, यह हीकार ही तेरा तन्त्रोक्त तात्त्विक स्वरूप है। अपने को उत्पन्न करने वाली आप स्वय ही हो। हे लीलामयी! तूने विष्णु की योगनिद्रावस्था मे ही कमलयोनि चतुरानन को उत्पन्न कर दिया और चतुरानन के रूप म त्रिभुवन की रचना कर दी।

देवी मन्नछा माइया जग्ग माता
देवी ब्रह्म गोविन्द सभु विधाता,
देवी सिद्धि रे रूप नव नाथ साथे
देवी रिद्धि रे रूप धनराज हाथे।।5(

हे जगदम्बा! तुम महामाया हो, परब्रह्म मनेच्छा हो। हे महाशक्ति! तुम त्रिदेव का सृजन हा। हे सिद्धेश्वरी! तुम सिद्धि के रूप मे नवन सुशोभित हो रही हो और रिद्धि के रूप मे धनरा का श्रीवैभव हो।

देवी वेद रे रूप तू ब्रह्म वाणी
देवी जोग रे रूप मच्छद्र जाणी,
देवी दान रे रूप बळराव दीधी
देवी सत्त रे रूप हरचद सीधी

हे देवी! वेदों के रूप म आप जगत् पित का श्रुति-पाठ ब्रह्मवाणी हो, योग के रू महायोगी मछन्दरनाथ की योग सिद्धि हो दान तुम उदारमना दैत्यराज बलि की दानवीरता हो के रूप में अयोध्या के सत्यनिष्ठ राजा हरिश सत्यवादिता हो।

देवी रुद्र रे रूप दसकध रूठी
देवी सील रे रूप सौमित्र तूठी,
देवी सारदा रूप पींगल प्रसन्नी
देवी माण रे रूप दुर्जोण मन्नी।।52।।

हे माँ शारदा! पिगल पर प्रसन्न हाकर तूने उसे कर

माता-पिता के प्रति सेवाव्रत धारण किया। वही श्रवणकुमार राजा दशरथ के हाथ भावीवश मारा गया।

हे देवी! तेरी माया से भ्रमित होकर महारानी कैकेयी कैसा खोटा वरदान माग बैठी, किन्तु राम के रूप में तूने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। फलत दाशरथी राम युवराज से वनवासी बन गया।

देवी मृग्ग रे रूप तें सीत मोई
देवी राम रे रूप पाराध होई,
देवी बाण रे रूप मारीच मारी
देवी मार मारीच लखण पुकारी।।66।।

हे विश्वमोहिनी! तूने सोने का मृग बनकर वैदेही को विमोहित कर लिया। हे महामाया! तूने कैसी विचित्र लीला रच दी कि पुरुषोत्तम राम को पारधी बनना पडा। वे सर सधानकर मृग को मारने दौडे। रामबाण से मारीच मारा गया, किन्तु मरकर भी वह हाय लक्ष्मण की पुकार मचाने लगा।

देवी लख्खण राम पीछे पठाई
देवी रावण रूप सीता हराई,
देवी सक्रारी रूप हनमत ढाळी
देवी रूप हनमत लका प्रजाळी।।67।।

हे पराम्बा! तेरी विराट् इच्छा से प्राणीमात्र यन्त्रवत् परिचालित हो रहे है, तेरी कैसी विचित्र माया है कि महामति लक्ष्मण अपने अग्रज राम की वाणी नहीं पहचान पाया, आजानुबाहु धनुर्धारी राम को एक मृगशावक से बचाने के लिए सीता को वन म अकेली छोड़कर दौड़ पडा।

हे योगमाया! तूने दशानन की बुद्धि पर कैसा आवरण डाल दिया, कि स्वय ने ही अपने विनाश के बीज बो दिये, वन में अकेली पाकर पराई नारी को बलात् उठा ले गया।

हे देवी! तूने मेघनाद के रूप में महाबली बजरग को एक पाश में बाधकर अपने वश में कर लिया और उधर वही वीर वानर तेरे प्रताप से काचनमयी लकापुरी को उछल-कूद कर जला आया। सारे राक्षस असहाय की भाति निरुपाय खडे लका-दाह देखते रहे।

देवी साग रे रूप लखण विभाडे
देवी लख्खण रूप घननाद पाडे
देवी खगेस रूप तें नाग खाधा
देवी नाग रे रूप हरसेन बाधा।।68।।

हे महाबला! तेरी अमोघ शक्ति का कैसा अचूक प्रभाव है कि एक बाण के प्रहार को वीरवर सौमित्र सह नहीं सका, चेतनाहीन होकर धराशायी हो गया।

हे लीलामयी! तेरी कृपा से कैसे सुयोग आ बने कि रामानुज पुन सचेत हो युद्धरत हो गया, वज्रायुध देवराज को परास्त करने वाले महादैत्य मेघनाद से घोर सग्रामकर उसे मार गिराया।

हे देवी! पक्षीराज गरुड के रूप में तुम विषधर भुजगों का भक्षण कर जाती हो और सर्पों के रूप मे तुम राम की सेना को नागपाश में बाध लेती हो।

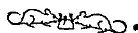
देवी छकारा रूप तें राम छळिया
देवी राम रे रूप दसकध दळिया,
देवी कान रे रूप गिरी नख्ख चाडे
देवी नख्ख रे रूप हृणकस फाडे।।69।।

हे महामाया! तेरे अपरिमित प्रभाव से एक मृगशावक ने पुरुषोत्तम राम को छल लिया और वनवासी राम के रूप में तूने महाप्रतापी रावण का दर्प दलन कर दिया, दशानन का धरती पर से नाम ही मिटा दिया।

हे देवी! तूने गिरधारी के रूप में ब्रजभूमि को बचाने के लिए नख पर गोवर्धन धारण कर लिया और तूने नखों के प्रहार से महादैत्य हिरण्यकशिपु को विदीर्ण कर दिया।

देवी नाहर रूप हृणकस खाया
देवी रूप हृणकस इन्द्र हराया,
देवी इन्द्र रे रूप तू जग्ग तूठी
देवी जग्ग रे रूप तू अन्न वूठी।।70।।

हे देवी! तेरी शक्ति पाकर दैत्यराज हिरण्यकशिपु



लीला सगिनी हो और राम के रूप म प्रेमी भक्तों के वशीभूत हो।

देवी सावित्री रूप ब्रह्मा सोहाणी
देवी ब्रह्म रे रूप तू निगम वाणी,
देवी गोरजा रूप तू रुद्र राता
देवी रुद्र रे रूप तू जोग धाता।।61।।

हे देवी। सावित्री के रूप में चतुरानन के मन में तुम रम गई हो और चतुरानन के द्वारा वेदवाणी के रूप में मुखरित हो रही हो। हे अपर्णा। शर्वाणी के रूप में तुम शिव में अनुरक्त हो स्वय शिवमयी हो। नटराज का अर्द्धनारीश्वर रूप तेरी विलास लीला है। हे योगेश्वरी। आदिनाथ शिव के रूप में तुमने योगसाधना का मगलमय मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

—योग-साधना स्वानुशासन है, जिसमें योगी साधक प्राण-सयम के बल पर चित्तवृत्ति को सुस्थिर रखकर सहज विरक्तावस्था में रमण करने लगता है तन-मन से एकरस रहता है, इससे अन्तर में समत्व भाव जग जाता है।

समय पाकर योग-साधना से घट म व्याप्त अज्ञान-अन्धकार ज्ञान प्रकाश से परिपूर्ण हो जाता है। योगी आत्मबोध की ओर बढता है, वह अपने अह को परम सत्ता मे विलीनकर एकाकार हो सदेह अमरत्व प्राप्त कर लेता है। यह आदिनाथ शिव का योगामृत मार्ग कहलाता है।

देवी जोग रे रूप गोरख्ख जागे
देवी गोरख रूप माया न लागे,
देवी माइया रूप तें विष्णु बाधा
देवी विष्णु रे रूप ते दैत खाधा।।62।।

हे देवी। तुम योग के रूप मे गुरु गोरखनाथ मे जाग्रत हो रही हो और गोरखनाथ के रूप में माया के बन्धनो से मुक्त हो। महायोगी गोरखनाथ तेरा मायातीत स्वरूप है।

हे महामाया। तेरी माया के प्रभाव से कोई बच नहीं पाया। तुमने माया के रूप में भगवान् विष्णु तक को वशीभूत कर लिया और चक्रपाणि विष्णु क रूप में तुमने देवद्रोही दैत्या का दलन कर दिया।

देवी दैत रे रूप तें देव ग्रहिया
देवी देव रे रूप कै दनुज दहिया,
देवी मच्छ रे रूप तू सख मारी
देवी सखवा रूप तू वेद हारी।।63।।

ह विश्वरूपा। तेरी आसुरी शक्ति पाकर दैत्यों ने देवताओं को पराजित कर दिया और तर प्रताप से सुरगण कितनी ही वार असुरों का विनाश करने में समर्थ हुए।

जब जलप्रलय की महारात्रि में निद्राग्रस्त चतुरानन के मुख से महादैत्य शखासुर वेद हर ले गया तब हे भगवती। तूने मत्स्य का रूप धारणकर शखासुर को मारकर वेदों का उद्धार किया।

देवी वेद सुध वार रूपे कराया
देवी चारणा वेद तें वार पाया,
देवी लख्खमी रूप तें भेद दीधा
देवी राम रे रूप तें रतन लीधा।।64।।

हे जगन्नमयी। शखासुर के रुधिर से लिप्त वेदों को तूने जल रूप धारणकर पुन शुद्ध कर दिया। जोगमाया का रूप मानकर वह जल चारणा ने सहर्ष ग्रहण कर लिया, जिसके फलस्वरूप उनमें विलक्षण काव्य प्रतिभा जाग्रत हो गइ।

हे कमलासना। समुद्र मथन के समय सागर से अवतरित हो तुमने रत्नाकर का सारा भेद देवगण का बता दिया। तेरी कृपा से देवता अमृतपान कर अजर-अमर हो गये। हे जगन्माता। तूने त्रेतायुग में रामावतार धारण कर सागर से रत्नराशि ग्रहण की।

देवी दसरथ रूप श्रवण विडारी
देवी श्रवण रूप पितु मात तारी,
देवी केकयी रूप तें कूड कीधा
देवी राम रे रूप वनवास लीधा।।65।।

हे महातपा। तूने श्रवणकुमार के रूप में अपने

माता-पिता के प्रति सेवाव्रत धारण किया। वही श्रवणकुमार राजा दशरथ के हाथ भावीवश मारा गया।

हे देवी। तेरी माया से भ्रमित होकर महारानी कैकेयी कैसा खोटा वरदान माग बैठी, किन्तु राम के रूप में तूने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। फलत दाशरथी राम युवराज से वनवासी बन गया।

देवी मृग रे रूप तें सीत मोई
देवी राम रे रूप पाराध होइ,
देवी बाण रे रूप मारीच मारी
देवी मार मारीच लखण पुकारी।।66।।

हे विश्वमोहिनी। तूने सोने का मृग बनकर वैदेही को विमोहित कर लिया। हे महामाया। तूने कैसी विचित्र लीला रच दी कि पुरुषोत्तम राम को पारधी बनना पड़ा। वे सर सधानकर मृग को मारने दौड़े। रामबाण से मारीच मारा गया, किन्तु मरकर भी वह हाय लक्ष्मण की पुकार मचाने लगा।

देवी लखखण राम पीछे पठाई
देवी रावण रूप सीता हराई,
देवी सक्रारी रूप हनमत ढाळी
देवी रूप हनमत लका प्रजाळी।।67।।

हे परामबा। तेरी विराट् इच्छा से प्राणीमात्र यन्त्रवत् परिचालित हो रहे हैं, तेरी कैसी विचित्र माया है कि महामति लक्ष्मण अपने अग्रज राम की वाणी नहीं पहचान पाया, आजानुबाहु धनुर्धारी राम को एक मृगशावक से बचाने के लिए सीता को वन में अकेली छोड़कर दौड़ पड़ा।

हे योगमाया। तूने दशानन की बुद्धि पर कैसा आवरण डाल दिया, कि स्वय ने ही अपने विनाश के बीज बो दिये, वन में अकेली पाकर पराई नारी को बलात् उठा ले गया।

हे देवी। तूने मेघनाद के रूप में महाबली बजरग को एक पाश में बाधकर अपने वश में कर लिया और उधर वही वीर वानर तेरे प्रताप से काचनमयी लकापुरी को उछल-कूद कर जला आया। सारे राक्षस असहाय की भाति निरपाय खड़ लका-दाह देखते रहे।

देवी साग रे रूप लखण विभाडे
देवी लखखण रूप घननाद पाडे
देवी खगेस रूप तें नाग खाधा
देवी नाग रे रूप हरसेन बाधा।।68।।

हे महाबला। तेरी अमोघ शक्ति का कैसा अचूक प्रभाव है कि एक बाण के प्रहार को वीरवर सौमित्र सह नहीं सका चेतनाहीन होकर धराशायी हो गया।

हे लीलामयी। तेरी कृपा से कैसे सुयोग आ बने कि रामानुज पुन सचेत हो युद्धरत हो गया, वज्रायुध देवराज को परास्त करने वाले महादैत्य मेघनाद से घोर सग्रामकर उसे मार गिराया।

हे देवी। पक्षीराज गरुड के रूप में तुम विषधर भुजगों का भक्षण कर जाती हो और सर्पों के रूप में तुम राम की सेना को नागपाश में बाध लेती हो।

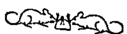
देवी छकारा रूप तें राम छळिया
देवी राम रे रूप दसकध दळिया,
देवी कान रे रूप गिरी नखख चाडे
देवी नखख रे रूप हुणकस फाडे।।69।।

हे महामाया। तेरे अपरिमित प्रभाव से एक मृगशावक ने पुरुषोत्तम राम को छल लिया और वनवासी राम के रूप में तूने महाप्रतापी रावण का दर्प दलन कर दिया, दशानन का धरती पर से नाम ही मिटा दिया।

हे देवी। तूने गिरधारी के रूप में ब्रजभूमि को बचाने के लिए नख पर गोवर्धन धारण कर लिया और तूने नखों के प्रहार से महादैत्य हिरण्यकशिपु को विदीर्ण कर दिया।

देवी नाहर रूप हुणकस खाया
देवी रूप हुणकस इन्द्र हराया,
देवी इन्द्र रे रूप तू जग्ग तूठी
देवी जग्ग रे रूप तू अन्न बूठी।।70।।

हे देवी। तेरी शक्ति पाकर दैत्यराज हिरण्यकशिपु



ने देवराज इन्द्र को परास्त कर दिया। हे परमेश्वरी! तूने पाषाण स्तम्भ मे नाहर के रूप मे प्रकट होकर अत्याचारी हिरण्यकशिपु का प्राणान्त कर दिया।

हे कल्याणी! तुम सुरराज के रूप में यज्ञ की आहुतियों से परितोष पाकर वर्षा करती हो, जिससे धरा धन-धान्य पूर्ण हो जाती है।

देवी रूप हैग्रीव रे निगम सूस्या
देवी हग्रीव रूप हैग्रीव धूस्या,
देवी राहु रे रूप तें अमी हरिया
देवी विष्णु रे रूप तें चक्र फरिया।।71।।

हे वरदायिनी! दिति पुत्र हयग्रीव तुझसे वरदान पाकर विश्व में निशक विचरण करने लगा। वह अहकार के वशीभूत होकर ब्रह्माजी से वेद छीन ले गया। बेचारे ब्रह्मा वेदविहीन हो गये। हे भगवती! तूने स्वय हयग्रीव अवतार धारणकर परमपराक्रमी हयग्रीव का वधकर वेदो का उद्धार किया।

समुद्र मथन के बाद राहु नाम का दैत्य देववप धारण कर देवताओं में आ मिला और अमृत-कुभ से अमृत-पान करने लगा। हे देवी! तूने तत्काल विष्णु के रूप में सुदर्शन चक्र के प्रहार से कपट वपधारी राहु का सिर धड़ से अलग कर दिया।

देवी मकर रूप त्रीपुर वीधा
देवी त्रीपुर रूप त्रीपुर लीधा,
देवी ग्राह रे रूप तें गज्ज ग्राया
देवी गज्ज गोविन्द रूपे छुड़ाया।।72।।

हे परमेश्वरी! तूने रुद्र के रूप में मय दानव द्वारा निर्मित त्रिपुरी को अपने बाहुबल से ध्वस्त कर दिया और त्रिपुरासुर के रूप में तूने तीनों लोकों को जीत लिया।

हे देवी! तूने ग्राह के रूप में गज को ग्रस लिया और गज की करुण पुकार सुनकर चक्रपाणि विष्णु के रूप में ग्राह को मारकर गज का उद्धार किया।

देवी दधीची रूप ते हाड दीधो
देवी हाड रो तखख तें वज्र कीधो,
देवी वज्र रे रूप ते व्रत्र नास्यो
देवी व्रत्र रे रूप तें सक्र त्रास्यो।।73।।

हे योगमाया! तेरी दिव्य अस्थियाँ दान मे दे दीं और तूने विश्वकर्मा के रूप मे उन अस्थियों का महातीक्ष्ण वज्र तैयार कर दिया। हे तेजोमयी! वस्तुत वज्र के रूप में तुम स्वय प्रतिष्ठित हो रही थीं, जिसके अमोघ प्रहार से महाबली दैत्यराज वृत्रासुर का प्राणान्त हो गया।

हे भगवती! तेरी कैसी अद्भुत लीला है कि जिस विकट पराक्रमी भीमकाय वृत्रासुर के सामने देवगण श्रीहीन हो गये और देवराज इन्द्र टिक नहीं पाया, वही इन्द्र वज्र हाथ लगते ही ऐरावत पर चढकर वृत्रासुर को ललकारने लगा।

देवी नारद रूप तें प्रश्न नाख्या
देवी हस रे रूप तत ज्ञान भाख्या,
देवी ज्ञान रे रूप तू गहन गीता
देवी कृष्ण रे रूप गीता कथीता।।74।।

हे देवी! तूने देवर्षि नारद के रूप में तत्त्वज्ञान से जुडे गहन प्रश्न पूछे, जिन्हे सुनकर पितामह ब्रह्मा निरुत्तर हो गये, तब तूने हंसावतार धारणकर अपनी वरदवाणी से सुन्दर समाधान किया।

हे चिन्मयी! ज्ञान के रूप में तुम गहन गीता हो। योगेश्वर कृष्ण के रूप में तूने विषाद में डूबे महारथी अर्जुन को कर्तव्यबोध और जीवन-दर्शन से परिपूर्ण गीता का गूढ़ ज्ञान सुनाया।

देवी वालमीक व्यास रूपे तू कृत्त
देवी रामायण पुराणे भागवत्त,
देवी काया रे रूप तू पाथ लूटे
देवी पाथ रे रूप भाराथ जुटे।।75।।

हे वीणापाणि! तूने आदिकवि वाल्मीकि के रूप में रामायण और महर्षि वेदव्यास के रूप में पुराण एव श्रीमद्भागवत-महापुराण की रचना की।



हे शक्तिरूपा! जिस धनुर्धर अर्जुन ने तेरी शक्ति पाकर महाभारत के युद्ध म अनेक महारथियों को परास्त कर विजय प्राप्त की, उसी अर्जुन को द्वारका के मार्ग में वटमारों ने लूट लिया।

देवी रूप अधेर रे सूर गजे
देवी सूरज रूप अधेर भजे,
देवी मैख रे रूप देवा डरावे
देवी देवता रूप तू मैख खावे।।76।।

हे देवी! तुम अधकार के रूप में सूर्य को विलुप्त कर देती हो और सूर्य के रूप में अधकार को मिटा देती हो।

हे लीलामयी! तेरा बल पाकर महादैत्य महिषासुर ने देवताओं को भयभीत कर दिया। हे देवी! तेरी शक्ति पाकर देवगण शक्ति सम्पन्न हो गये और महासुरो को मार गिराया।

देवी तीथ रे रूप अघ विषम टारे
दवी इस्वर रूप अधम उधारे,
देवी पौन रे रूप तृ गरुड पाडे
देवी गरुड रे रूप चत्रभृज चाडे।।77।।

हे जगदम्बा! तुम तीर्थ के रूप में विषम पापों से छुटकारा दिलाने वाली हो और परमेश्वरी क रूप में पतितपावनी हो।

हे देवी! तुम प्रचण्ड पवन के रूप में पक्षीराज गरुड की गति को अवरुद्ध कर देती हो और गरुड क रूप मे चतुर्भुज विष्णु की वाहन हो। प्रचण्ड पवन में अथवा पक्षीराज के परों में जो महावेग है वह तुम हो।

देवी माणसर रूप मुगता निपावे
देवी मराल रूप मुगता तु पावे,
देवी वामण रूप वळराव भाडे
देवी रूप वळराव मेरू उपाडे।।78।।

भक्त कवि ईसरदास ने महाशक्ति को मातृसत्ता के रूप में अन्तर्मन से अगीकार कर लिया है। वह बाल भाव से मातेश्वरी की आराधना करता है। माता के असीम करुणा भाव विपुल वैभव और अतुल पराक्रम का स्मरणकर कवि भावमग्न हो रहा है। भगवती की विचित्र लीलाओं का कवि देवियाण के स्तव-गान म एसा ही कुछ बखान करता है।

ईसरा की आराध्या चिन्मयी ब्रह्म शक्ति है वह चाहे तो क्या नहीं कर सकती उसके लिए सबकुछ सम्भव है। वह चाहे तो सरोवर में मोती निपजादे, वामन स त्रिलोकी नपादे घड मे अगस्त्य जन्मादे और अगस्त्य के उदर में समूचा समुद्र समादे। यहाँ कवि कह रहा है हे दवी! तुम मानसरोवर में मोती उत्पन्न करती हो और हस के रूप मे मोती चुगती हो। हे महाशक्ति! तेरा बल पाकर राजा बलि ने देवताओ के आग्रह पर समुद्र मथन हेतु विशाल मन्दराचल को उखाड़ लिया। हे लीलामयी! तूने वामन बनकर दैत्यराज बलि को पाताल पहुचा दिया।

देवी मेरगिर रूप सायर वरोळे
देवी सायर रूप गिरमेर बोळे,
देवी कूर्म रे रूप तू मेर पूठी
देवी वाडवा रूप तृ आग ऊठी।।79।।

हे दयामयी! तू मन्दर गिरि के रूप मे समुद्र मथन में सहायक हो गई और सागर के रूप म तूने समुद्र मथन के समय मन्दराचल का जल मग्न कर दिया।

हे महेश्वरी! तूने कूर्मावतार लेकर मन्दराचल को अपनी विशाल पीठ पर धारण कर लिया। हे ज्योतिर्मयी! तुम वाडवाग्नि के रूप मे पानी मे प्रकट हो गई।

देवी आग रे रूप सुर असुर डरिया
देवी सरसती रूप तें तेथ धरिया,
देवी घडा रे रूप अगसत्त दीधो
देवी अगस्त रूप सामद पीधो।।80।।

समुद्र मथन म सलग्न सुर-असुर जब वाडवाग्नि को देखकर डर गये तब ह अभया! तू ने शारदा के रूप में प्रकट होकर देवासुरों का भय मुक्त कर दिया।

हे जगन्माता! तेरे अमित प्रभाव से महर्षि अगस्त्य



ने कुभ मे जन्म ग्रहण किया और वही कुभज अगस्त्य कालकेय दानव के अनाचार से उद्वेलित हो तेरी प्रवल प्रेरणा से महासागर को उदरस्थ कर गये।

देवी समुद्र रूप तें हेम छळिया
देवी पाडव हेम रे रूप गळिया,
देवी पाडवा रूप तें भ्रात भागी
देवी भ्रात रे रूप तृ राम लागी।।81।।

हे जलमयी मातेश्वरी। तेरी यह कैसी विचित्र छलना है कि तुम महासागर से उठकर हिमालय तक पहुच जाती हो, जहाँ उन्नत शिखरों पर हिम बनकर छा जाती हो।

हे अम्बाजी। कुरुक्षेत्र के क्रुद्ध क्रन्दन और कुरुपरिवार की अबलाओं के हाहाकार से दग्ध अभागे पाण्डवो को अन्तत हिमालय की ऊचाइयों पर तेरे हिमक्रोड में समा जाना पडा।

हे महामाया। मानव मन की आप ही नियामक हैं। तेरी कैसी अनोखी लीला है कि पाचों पाण्डवों में लोकमर्यादा के विपरीत एक ही रमणी का सहवास करते हुए भी परस्पर जीवनपर्यन्त किसी प्रकार की कोई भ्रान्ति पैदा नहीं हुई और उधर तूने पुरुषोत्तम राम के मन मे कैसी भ्रान्ति पैदा कर दी कि महासती वैदेही को पुन वनवास भोगना पडा।

देवी राम रे रूप तू भगत तूठी
देवी भगत रे रूप वैकुठ वूठी,
देवी रूप वैकुठ परब्रह्म वासी
देवी रूप परब्रह्म सब में निवासी।।82।।

हे देवी। राम तेरा सर्वमान्य रूप है, तुम राममयी हो और राम रूप मे सहज ही प्रेमी भक्तों पर प्रसन्न हो जाती हो। तुम भक्तों के रूप में वैकुण्ठ धाम के सुख-भोग भोगती हो।

हे माता। वैकुण्ठ के रूप में तुम परमात्मा की लीलास्थली हो और आत्मा के रूप मे तुम प्राणीमात्र में व्याप्त हो।

देवी ब्रह्म तू विष्णु अज रुद्राणी
देवी वाण तू खाण तू भूत प्राणी,
देवी मन्न तू पवन तू मोख माया
देवी क्रम्म तू ध्रम्म तू जीव काया।।83।।

हे विराट्रूपा। तुम ब्रह्मा, विष्णु, महेश और गौरा गिरिजा हो। तुम परा, पश्यति, मध्यमा और वैखरी वाणी हो। तुम अडज, उद्भिज, जरायुज और स्वदेज योनि हो। तुम पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश पचभूत हो और तुम्हीं प्राणीमात्र में चेतना हो।

हे जगदम्बा। तुम काया का आधार मन हो और उसे धारण करने वाली प्राणवायु हो। तुम बन्धन और मोक्ष की हेतु हो। तुम प्राणी मात्र की काया हो और उसमें सचरण करने वाली जीवात्मा हो। तुम चराचर की समस्त क्रियाशीलता, हो और तुम्हीं मानवसमाज में परमार्थ का मूल आधार धर्माचरण हो।

देवी नाद तू बिन्दु तू नव्व निद्धी
देवी सीव तू सक्ति तू सव्व सिद्धी,
देवी बापड़ा मानवी काई बूझे
देवी ताहरा पार तू हीज सूझे।।84।।

हे वरदायिनी। तुम अष्टसिद्धि और नवनिधि की दात्री हो। हे रक्ताम्बरा। समस्त भौतिक वैभव तेरे चरणों में लोटते हैं।

हे माँ भवानी। तुम नाद-बिन्दु हो और तुम्हीं शिव-शक्ति हो। हे देवी। बिन्दु के रूप में तुम काया में समा रही हो और अनाहत नाद के रूप में घट में अनवरत मुखरित हो रही हो।

हे महामाया। तेरी माया के आवरण में उलझा बेचारा मानव तुझे क्या जान पायेगा। तेरा कौन पार पा सकता है, तेरे ऐश्वर्य को तू ही जानती है।

देवी तूज जाणे गती गहन तोरी
देवी तत्त रूप गती तूज मोरी,
देवी रोग भव हारणी त्राहि माम
देवी पाहि पाहि देवी पाहि माम।।85।।

हे मातेश्वरी। तेरी गति बड़ी गहन है जिसे तू ही



जानती है, दूसरा कोई जान नहीं पाता। सब तेरी माया के आवरण में लोटपोट हो रहे हैं।

देवियाण का कवि कहता है कि मुझमें जो चेतना है वह तेरी ही सत्ता है, तत्त्वरूप में मैं तुझसे ही गतिमान हो रहा हूँ।

हे करुणामयी माता! कृपाकर मेरा आवागमन मिटा दे। तेरी लाखी लोवड़ी के सुखद अञ्चल में मुझे शरण दे दे। मैं तेरी शरण में हूँ, मेरी रक्षा करो, रक्षा करो, रक्षा करो।

देवियाण के भव्य मातृ-मन्दिर में आरम्भ के चार अडल छन्द अम्बाजी का पावन चाचरचौक है, जहाँ आई माँ आनन्दमग्न हुई रास रम रही है।

छन्द भुजगी श्रीमद के पिचासी मणिमय सोपान हैं, जिनका स्पर्श पाकर माता का प्रेमी भक्त पुलकित हो उठता है। देवियाण में समापन की तीन छप्पय परमपावन मातृमन्दिर के शिखर पर सुशोभित दिव्य स्वर्ण कलश है।

प्रथम छप्पय मातेश्वरी का महिमागान है। माता के महान् चरित्र का एक बार पुन स्मरणकर देवियाण का कवि भावविभोर हो बारम्बार नमन करता है, माँ चामुण्डा की चरण वन्दना करता है। दूसरी छप्पय सिहवाहिनी भवानी का सुखद आगमन है। करुणामयी माता कवि के मन-मन्दिर में उतर आई हैं। अन्तर आलोकित है, आनन्द वर्षण हो रहा है।

तीसरी छप्पय में सिहवाहिनी के आगमन से भयभीत अबोध पशु भग जाने का उपक्रम करने लगा, इतने में आई माँ परमेश्वरी ने रमते-खेलते तलवार चला दी। पशु का प्राणान्त हो गया। ज्ञान के कपाट खुल गये। भक्त ईसरदास में देवत्व बोध जाग उठा, भीतर-बाहर अलौकिक आनन्द छा गया, ईसरा परमेसरा हो गया।

देवियाण का यही महाफल है।

छप्पय

रगता सेता रणा, नमो माँ क्रसना नीला,
सीकोतरी आसुरी, सुरी सुसिला गरवीला,
दीरघा लघु वपु द्रढा, सबेही रूप विरूपा,
वकला सकला व्रजा, उपावण आप आपुपा,
घण पवन हुतासण सू प्रबळ, चामुण्डा वदू चरण,
कवि पार तूझ ईसर कहे, कालीका जाणे कवण।।1।।

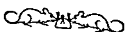
हे माँ! तेरे विराट् चरित्र का स्मरणकर कवि ईसरदास आत्ममग्न हो रहा है। हे रक्ताम्बरा! तेरे अनेक रूप है, अनेक रग हैं, तू गौर और अरुणवर्णा है और तू ही श्याम और नीलवर्णा।

हे भुवनेश्वरी! तू देवशक्ति है और तू ही आसुरीशक्ति, तू सौम्या है और तू ही रौद्ररूपा, तू लावण्यमयी कोमलाङ्गी है और तू ही भीमकाय वज्राङ्गी, तू सर्वसुन्दरी है, तू ही विरूपअगा, तू त्रिगुणातीत है और तू ही त्रिगुणमयी। हे माता! तुम सर्वशक्ति हो, तुम निराकार हो, साकार हो और स्वेच्छा से देह धारण करती हो।

हे चामुण्डा! कवि ईसरदास तेरी चरण-वदना करता है। तुम तीव्र जल-प्रवाह, प्रचण्ड वायु-वेग और विकराल ज्वालाओं से भी प्रबल हो। कवि कहता है—हे कालिका! तेरे विस्मयकारी विराट् चरित्र का कौन पार पा सकता है।

घम घमत घूघरी, पाय नेऊरी रणझण,
डम डमत डाकली, ताल ताळी बज्जे तण,
पाय सिंघ गळ अडे, चक्र झळहके चउदह,
मळे क्रोड तेतीस, उदो सुरियद अणदह,
अदभूत रूप सकती अकळ, प्रेत दूत पालतिय,
गह गहे वार डमरू डहक, महमाय आवतिय।।2।।

पद-आभूपणों में लगी घूघरी की घमकार और नूपुरो की रणझण हो रही है। वाद्य स्वरलहरी लहरा रही है, तालियों की मधुर ध्वनि गहरा रही है। भक्तों को अभयदान देनेवाली भवानी सिहारूढ हुई चली आ रही है। माता का एक चरण मृगराज की ग्रीवा पर सुकोमल शटा के बीच सुशोभित हो रहा है। भवानी की भुजाओं में चक्र, त्रिशूल और चन्द्रहास आदि विविध आयुध चमक रहे है।



मातेश्वरी के आगमन से उत्साहित हो देवराज सहित तैंतीस कोटि सुरगण जयघोष करते हुए हर्षोल्लास के साथ आनन्द मना रहे है। महाशक्ति की अद्भुत तेजस्विता देखकर प्रेत और यमदूत पलायन कर गये हैं। डमरू की डहक के साथ इस मनोरम धूमधाम को निहार कवि आनन्दित हो रहा है।

चढे सिंघ चामुड, कमळ हूकारव कढ्ढो,
डरो चरतो देख, असुर भागियो अवढ्ढो,
आदि सक्ति आपडे, रूक वाहिये रमता,
खाळ रगत खळहळे, ढळे ढींगोळ धरता,
हींगोळराय अठ दस हथी, भ्रखे मख भुवनेसरी,
कवि जोड पाण ईसर कहे, उदो उदो आसापुरी।।3।।

माता वह्नि रणककळ सरोवर की तीर रम रही हैं। सहसा आई माँ परमेश्वरी ने सिंह पर सवार हो तीव्र हूँकार की। महिष के रूप में चर रहा अधम असुर महिस भयभीत होकर भागने लगा। इतने में चामुण्डा सामने ही आ खडी हुई और रमते-खेलते तलवार का प्रहार कर दिया, रक्त का नाला बह चला, महिष वहीं ढेर हो गया। अठारह भुजाओं वाली भुवनेश्वरी हिंगोळराय महिष का भख ले गई।

हे आदिभवानी आई माँ आशापुरा! तेरे इस अद्भुत चरित्र का स्मरणकर कवि ईसर हाथ जोडकर तेरी जय-जयकार कर रहा है।

□

देवियाण सुणि देविये श्री मुख किये बखान।
देवियाण किये ईशरा चण्डी पाठ समान।।
मार्कण्ड मुनिराय कृत चण्डी पाठ समान।
ईशर कृत देवियाण को महातम बडो महान।।

देवियाण को प्रति दिवस जे घर होस पाठ।
ते घर रहसे रिद्धि सिद्धि राज-पाठ सम ठाठ।।
कायम बाँचे के सुणे देवियाण जे कोय।
इच्छित औहि सुख अमित पावे मानुष सोय।।

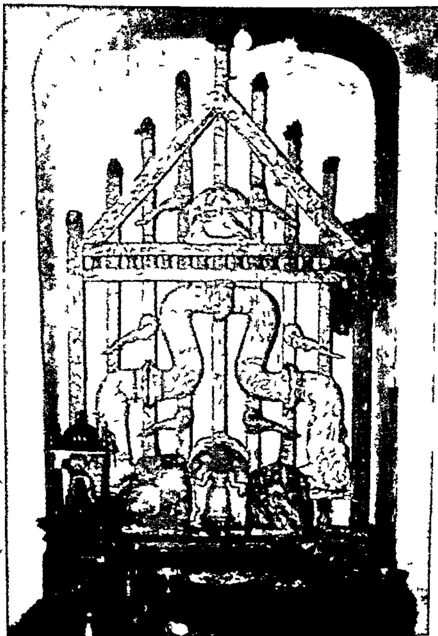
□□□

एक बार द्वारका जाते समय इसरदास वेणू नदी के किनारे एक छोटे से गाव में सागा गौड नामक एक राजपूत के यहा ठहरे। निर्धन होने पर भी उसने उनकी बडी आवभगत की और जब वे जाने लगे, तो उसने प्रार्थना की कि मै एक *कम्बल बनाकर* भेंट स्वरूप आपको देना चाहता हू लौटते समय अवश्य लेते जाए। इसी बीच सागा अपने पशुओ को चराकर गाव आते समय वेणू नदी को पार कर रहा था कि नदी मे बाढ आई और वह पशुओ समेत उसमे बह गया। डूबते समय उसने वहा खडे लोगो के द्वारा ईसरदास को कम्बल देने की बात अपनी मा तक पहुचवाई। कुछ समय पश्चात् ईसरदास सागा के घर पहुचे और उसकी मा से उसकी मृत्यु का समाचार *जाना।* वे तत्काल सागा के डूबने के स्थान पर पहुचे और आवाज देकर उसको बुलाया। सामने से आवाज आई कि मै आ रहा हू और थोडी देर मे सागा अपने पशुओ समेत आ गया। इस सम्बन्ध मे कतिपय दोहे प्रचलित हैं जिनमे से एक यह है

नदी बहती जाय साद ज सागरियै दियौ।
कहज्यौ मोरी माय कवि नै दीजै कामळी।।

देशनोक
शब्द-व्युत्पत्ति और अर्थ

श्री तोरण दर्शन, साठीका



GULGULIA ENTERPRISES

Deals in Readymade Garments

173 Mahatma Gandhi Road 1st Floor, KOLKATA 700007

Ph 22707528 22723547 (O)

Kishore Gulgulia 9903044581 Sushil Gulgulia 98304 97177

RATANLAL KAMLA DEVI GULGULIA

Sadar Bazar, Deshnok

देशनोक : शब्द-व्युत्पत्ति और अर्थ

मरुभारती के वष 26, अक 3 (अक्टूबर 1988) में श्री मूलचद प्राणेश 'देशनोक शब्द का लकर इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि देसणा+ओक दो शब्दों स मिलकर 'दशनोक शब्द बना है। देसणा (उपदेश) और ओक (स्थान) अथात् 'देशनाक' शब्द का अर्थ 'उद्बोधक स्थान' मान कर श्री प्राणेश जी ने इसे करणीजी क उद्बोधन (उपदेश) स्थान के रूप में प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया।

आपने विभिन्न विद्वानों की सम्मतिया लेने के उपरात अपना यह मत प्रगट किया है। करणी चरित्र में भी श्री किशोरसिह बार्हस्पत्य ने देश+नाक मिलकर 'दशनाक माना है, जिस पर श्री चन्द्रदान चारण न दयालदास सिढायच का हवाला दकर सहमति व्यक्त की है। डा शक्तिदान कविया इससे अलग दैणोक, याठणोक धरणोक की तरह पीछे 'ओक' (स्थान) शब्द जुडा देसणोक (देसण+ओक) करणी जी से पहले का बसा हुआ प्राचीन गाव मानते हैं तथा एक प्राचीन गीत में दसणोक शब्द का मिलना बताते है। डा मनोहर शर्मा की राय में करणीजी के परिवार या देशनोक म पुराने कागज विगत बही आदि से इस सबध में सही जानकारी मिल सकती है। इसी वक्तव्य के अनुसार आगे इस विषय पर कुछ चर्चा की जाती है।

आम मान्यता है कि भगवती करणीजी ने तत्कालीन जागलू राज्य के जोड़ (चरागाह) में अपने गोधन के साथ डेरा डाला था। करणीजी का जन्म फलोदी तहसील के सुवाप गाव में चारण मेहोजी किनिया क घर वि स 1444 में हुआ तथा विवाह बीकानेर जिले क गाव साठीका के बीठू देपाजी के साथ सम्पन्न हुआ। उनके ससुराल में तथा दहेज में विशाल गोधन था। साठीका जागलू से 4-5 कोस की दूरी पर है, जहाँ राज्य क घोडों का चरागाह तथा विपुल जल-सुविधा उपलब्ध थी।

करणीजी अपने पशुधन को लेकर देशनोक के पास वर्तमान नेहडीजी स्थान पर आकर रहने लगीं। जागलू के तत्कालीन शासक राव कान्हा ने इस पर आपत्ति की और करणीजी क कोप मे वह मृत्यु को प्राप्त हुआ। रिडमल के पुत्र जोधा के जोधपुर तथा जोधा के पुत्र बीका के बीकानेर की नींव करणीजी के हाथों रखी गई।

करणी माता इस क्षेत्र की जन जन की पूज्य देवी है। देशनाक स्थित विख्यात मदिर के गर्भगृहा का निर्माण स्वय करणीजी ने बिना चुने-गारे के प्रस्तर-चट्टानों को चिन कर और जालवृक्ष की टहनियों से उसे आच्छादित कर दिया था (दयालदास सिहढायच री ख्यात) और देशनोक नगर की स्थापना वि स 1476 वैशाख सुदी 2 शनिवार को की थी (श्री करणी चरित्र, किशोरसिह बार्हस्पत्य)। करणीजी के चार पुत्र हुए। उनके वशज देपावत चार घडा में देशनोक में आबाद है।

डा शक्तिदान कविया न 'देशनोक' को पाचीन गाव बतलाया है परन्तु एसी बात नहीं है। डा कविया ने देसळ, देसण आदि शब्दों का पाया जाना भी कहा है परन्तु वे उनका 'देशनोक' स सबध और अर्थ स्पष्ट नहीं कर सके है।

श्री मूलचन्द 'प्राणेश' का निष्कर्ष भी समुपयुक्त नहीं लगता क्योकि श्री करणीजी कोई धर्म प्रचारिका या प्रवाचिका नहीं थी अपितु समाज के उद्धार उत्थान और कल्याण के लिए क्रियाशील रह कर प्राणी मात्र के सुख समृद्धि और शांति के लिए समर्पित महान् तपोमय



तेजस्वी व्यक्तित्व तथा अलौकिक गुणों वाली शक्तिरूपा प्रतिष्ठित देवी थीं।

मुन्शी सोहनलाल की 'तवारीख राज बीकानेर' मे देशनोक तथा गौ ही ओझा के बीकानेर राज्य का इतिहास' में देसणोक और अनेक छदो मे देसाण, देसाणो आदि शब्द मिलते हैं, जो एक ही शब्द के विभिन्न र है। इन पक्तियों के लेखक ने राव रिडमल के ए मुहरशुदा प्राचीन अभिलेख की प्रति देखी है, जिसमें द गावो की सीमा (सींव) मिलाकर देशनोक की स्थाप का उल्लेख है। वह अभिलेख इस प्रकार है—

मुहर

श्रीकरणी जी नू रायाराव श्री रिडमलजी रो दत



श्री करणीजी नू राया राव श्री रिड़मालरो दत
श्री करणीजी सू काले चाडावतरे
राज बैका रिड़मलजी अरज कीजी मारे जायगा
दुवेलो दस गांव आपरे नजर करू लैसू थारो
मनोरथ माताजी सीध कीया तांहरा राव
कयो अबे गाव हजार दू तद माताजी कयो
पीहर दस गांवा रो एवज तो गाव एगतो
करो तद दस गावांरी सीमा भेला कर
देसनोक मांड दीनो चेत सुद ७ संवत
१४८७ री:

श्री करणीजी सू कान्हे चाड़ावत रे राजबका रिडमलजी अरज कीवी मारे जायगा हुवे तो दस गाव आपने नजर करू तैमू आरा मनोरथ माताजी मीध किया ताहारा राव कयो अवे गाव हाजर छै। तद माताजी कयो पीहर दस गावा रो एवज ले गाव पृगतो करो तद दस गावा री मीमा भेळी कर देशनोक माड दीनो चेत सुद 7 सवत 1487 रा

इस अभिलेख की पुष्टि वीठू भोमजी (देपावत) कृत श्री करणी चरित्र से भी होती है—

धर आधी धजवध, अमर करनल नै आपै।
तठै आप कर तिलक, थिरे रिणमल कर थापै।।
ध्रव इण चोथौ वट, पेस रख अरज प्रमाणा।
थिरै पाट थापसा, देस वदळै देसाणा।।
दस कुवा जोड वळ गाव दस, थप सासण गिर थाण रौ।
रिणमाल राज थापै रिधु, दिपसी छक देसाण रौ।।

श्री किशोरसिह वाहस्पत्य देशनोक वसाने की श्रीगणेश तिथि वि स 1476 वैशाख सुदी 2 शनिवार मानते हैं, जिसकी पुष्टि इस कवित्त मे भी होती है—

सुभ चवदे सै समत साल छियतरै सुदीपत।
सुकल बीज सनिवार मास बैसाख मयमत।।
सकल कला विसतार, दीप साता दरसाई।
इन्द्र आद औळगै, इळा सझ वेस उमाई।।
छय रग रग आकास छत, झुक हुलास इमृत झरै।
देसाँण थपै सासण दुगह, मीढ इडग गिरमेर रै।।

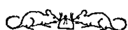
इसके साथ ही एक प्राचीन बही से (राज्य अभिलेखागार) बीकानेर राज्य के चारणों के गावों की विगत उद्धृत की जा रही है जिसमें बीठू चारणों के गावों म देशनोक के बारे में इस प्रकार लिखा है—

श्री परमेश्वरजी

श्री बीकानेर इलाकै चारणा रा सासण पटा इण भात छै—

समत 1467 राव रिडमलजी राव चूडाजी रा नु श्री करणी जी रो वरदान गाव जागलू मे हुवो। सु आ बात इण तरै छै—

श्री करणीजी चारण जात कीन्या नाव मेहोजी परगने फलौधी रै गाव सोइयाप रहै छै जिण मेहेजी रै बेटी करनीजी हुवा अर गाव साठीकै रै चारण जात रोहडिया देपैजी नु परणाया हुनी सु यारै गाया, भैस्या, ऊठारू वगरै घणो धन हुतो सो कैरसाली रै कारण सो धन चरावण वास्तै जागलु रा बीड म माताजी पधारया छा। राठौड राव कानाजी चूडैजी रै रे एक सौ पच्चीस गामा रो उतन सावला रो कानैजी वट में छै सो इण राव कानै माताजी नु कहायौ थारो धन लेर साठीकै परा जावो सो माताजी मानी नहीं। तिणा-दिना मै राव रिडमलजी मेवाड सू मडोर आया हुता सो राव सतैजी इणा नै पट्टो दैण सारू कहायो सो रिडमलजी कबूल नहीं कीयो पछै राव रिडमलजी जागलु आया छै सु उण दिन राव कानैजी आपरा मिनपा नै इसौ कहयो के करणोजी रो धन कूवै आवै तो पिवण मत दौ सु धन नु पीवण न दीना तै कारण सु करणोजी रथ असवार हुय जागलु आया जठै रिड़मलजी करणीजी रो दरसण कीयो वा भेंट करी अर रिड़मलजी भाई कानैजी कनै आदमी मेल कवायो करणीजी रा धन पीवण सारू आयो छै सु पीवण दो पालो मती सु आ बात कानैजी मानी नहीं तै पर राव रिडमलजी घोडा पजाळी में दे कृवो तिवायो अर करणीजी रो सारो ही धन पायो। पछै करणीजी राव रिडमलजी नु दवा दी इसी तरै कहयो रिडमल मनै तो इण धरती मै तू इ तू दीसै छै। थारौ प्रताप घणौ बधसी तारा रिडमलजी कहयो म्हारै जमी आवै तो आधी जमी आपरै भट करू तरै करणीजी कहयो आधी जमी रो कहयो सु तो ठीक पिण औ बीड जागलु रो दस गाव री सीव सु छै ओ भेट कर। पछै माताजी नु दस गावा री सीम सु जागलु रो बीड हुतो तिण रा सासण सर-सतै परवाणो कर भेंट कियो अर राव रिडमल सीप कर मेवाड नु गया उण दिन हवीज राव कानो असवार हुय करणीजी रो डेरो बीड में हुतो तठै आयो करणीजी सू तकरार कीयो र कहयो इसा सीध हो तो म्हारी मृतू बतावो पछै करणीजी नाहर रो सरूप कर कानै नु मारीयो। पछै महराणा मोकलजी री मदत सू



मडोर लीयो तठै सतोजी मडोर रा मालक हुवा ताहरा काम आया। जणा पछै करणीजी इण बीड में कुवा कराया अर गाव बसायो। गाव रो नाव देसओट दीयो जिण नाम नु हमार दसणोक कहै छै।

इस विगत मे पारम्भिक नाम देशओट (देश की ढाल) तथा प्रचलित नाम देशनोक बताया गया है। एक ही गाव क दा-दो तीन-तीन नाम भी पाए जाते है, जैसे श्रीबालाजी बडोडो गाव और भग्गू तीना एक ही गाव के नाम ह परन्तु ज्यादा प्रचलित श्री बालाजी है। इस प्रकार देशओट देशनोक में अधिक प्रचलित देशनोक रह गया। प्रसिद्ध स्थान होने के कारण सम्मान सूचक देसाण या देसाणो भी प्रयुक्त हुआ है, जैसे जोधाणो, बीकाणो, जेसाण आदि। भगवती करणीजी का पूजनीक स्थान होने से विशेषण लगा कर देसाण पुरी (आठवीं पुरी) करणीधाम देश की नाक (इज्जत, स्वर्ग) आदि नामो से भी पुकारा जाता है। भोमजी बीठ्ठ का कवित्त द्रष्टव्य है—

सिरै धाम सासणा, थाप देसाण सुथानक।
इळा जिती फिर आण, छिब सुराण तणी छक।
अछे पुरी आठवी सुरा मिल झूल समेळा।
निज सकतै नवलाख, मिळै धण जाती मेळा।
नवकोट (मारवाड) रूप मांटै नखत, राजै सकत सुरेश्वरी।
कृत कळा कृपण जिम करनला देसनोक द्वारा पुरी।।

सवत् 1476 (चौदह सौ छियतर) का वर्ष, वैसाख माह शुक्ल पक्ष द्वितीया शनिवार के पावन दिन शक्ति ने देव कला का विस्तार करते हुए सातों द्वीपों में दर्शनाय, जिस इन्द्र इत्यादि देवता भी देखने आते हैं, जब धरती ने उमा के साथ नव-वेष धारण कर लिया है, आकाश भांति-भांति के रगों से रग उठा है, अम्बर उल्लास के कारण धरती पर झुक आया है और अमृत की वर्षा कर रहा है। इस प्रकार के उल्लासमय वातावरण में सुमेरु पहाड़ के समकक्ष दृढ़ता के साथ शासन श्रेष्ठ देशनोक की स्थापना की। (जो शासक पर अकुश रख सके और जिसके स्वय का शासन स्वतंत्र और सार्वभौम हो)।

शासन सिरताज देशनोक की स्थापना की गई। यह धरती पर देवपुरी की छवि धारण किये पावन आठवीं पुरी है (भारत में पवित्र सप्त पुरिया हैं आठवीं पावन पुरी देशनोक) जहा समस्त देवताओं के समूह एकत्रित होते हैं देवताओ के सम्मेलन होते है, वहा नवलाख शक्तिया के मेले लगते हैं। महान पराक्रमी सुरेश्वरी ने अपना नवीन स्थान, नया कोट स्थापित किया है, जहा वह विराजमान है। मा करणी भगवान कृष्ण की भाति सोलह कलाओं से युक्त है, तो देशनोक द्वारिका के समान पावन है।

इन पक्तियो के लेखक को करणीजी का वशज होन का गौरव प्राप्त है तथा उसके पास करणीजी का एक प्राचीन चित्र है, जिसमें देशनुक बिकानिर लिखा है। डा कविया के अनुसार प्राचीन गीत मे मिले शब्द दहणोक (दसनोक) से भी यही ध्वनि निकलती है। इस प्रकार 'देशनोक' शब्द व्युत्पत्ति और अर्थ में दस गावा की सीमाओ का मिलाकर बना गाव ही अधिक ठीक और सटीक लगता है। □

देशनोक एक दृष्टि—देशनोक जिसका शाब्दिक अर्थ दसनोक (सीव) अर्थात् दस गाँवों की सीव (जगळा रासीसर, सोवा मढ़िया की ढाणी (कितासर) केसरदेसर जाटान गीगासर आम्बासर सूजासर पलाना एव बरसिहसर) को मिलाकर बना शब्द दसनोक जा कि आगे चलकर 'देशनोक शब्द बनकर व्यवहार मे आने लग गया। आबादी लगभग 25 हजार जातियाँ देपावत (65%) अन्य 43 प्रकार की जातियाँ विद्यालय 8 सरकारी 24 निजी 2 मदरसे औषधालय एलोपैथिक आयुर्वेदिक एव होम्योपैथिक, श्रीकरणी मन्दिर की तरफ से एम्बूलेंमस गाड़ी की सुविधा है। वाचनालय एक साक्षरता 60 प्रतिशत। नगर पालिका पुलिस थाना बिजली जलदाय दूरसचार विभाग पोस्ट ऑफिस म्यूजियम पशु चिकित्सालय बैंक रेलवे व बस सेवा इत्यादि सभी सुविधाओं से सुसज्जित है।

देशनोक बस स्टैण्ड का नाम 'करणी नगर — राज राज्य परिवहन निगम के बीकानेर आगार में बीकानेर से देशनोक की यात्रा में देशनोक बस स्टैण्ड का नामकरण 'करणीनगर नाम स है। प्राप्ति टिकट पर करणीनगर लिखा जाता है।

श्रीकरणी मंदिर का उत्तरोतर निर्माण

दुर्लभ चित्र, श्री करणीमाता

श्री करणी माता

देशनोक बिकानेर







MAHAVEER MARKETING

(Agarbathi Box Sweet Box Notebook Wrappers & Lables)

'Sanjana Complex Chairman A. Shanmuganadar Road Room No 65 1st Floor SIVAKASI 626123 (TN)

Ph 04562 222531 (O) 222431 227781 (R) Banechand Anchalia (9443149781)

श्रीकरणी मंदिर का उत्तरोतर निर्माण

गुम्भारा

इस पवित्र धाम देशनोक में लगभग पाँच सौ वर्ष प्राचीन मन्दिर का निमाण विभिन्न चरणों में हुआ। सर्वप्रथम श्रीकरणीजी महाराज वर्तमान नेहडीजी नामक स्थान पर रहीं। इस स्थान के पश्चात् करणीजी कुछ समय वतमान वडे मन्दिर के स्थान पर आकर रहीं। इस स्थान पर उन्होंने अपने श्री हाथो से विशाल प्रस्तर खण्डों को एक के ऊपर एक रखकर विना चूने-गारे के एक गोलाकार गुम्भारे का निर्माण वि स 1594 की चैत बदी 2 को किया। ऊपर से छत जाल की लकड़ियो से आच्छादित की। जाल की घटिया लकडी जल्द ही समाप्त हा जाती है परन्तु करणीजी की ही माया है कि वे टहनियाँ व पत्ते तक अद्यावधि विद्यमान हैं। उन्हीं की माया है कि गुम्भारा आज भी उसी अवस्था में स्थित है।

इस गुम्भारे के बीचोबीच मातेश्वरी करणीजी की जैसलमेर के पीले पत्थर पर कोरनी की गई भव्य आकर्षक मूर्ति स्थापित है। जो करणीजी की आज्ञानुसार जैसलमेर के अधे कारीगर द्वारा बनाई गई बताते है। इस मूर्ति का शिल्प अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि का है। मूर्ति का मुँह लम्बोतरा है, सिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल बाये हाथ मे त्रिशूल जिसके नीचे महिष का सिर पिरोया हुआ है दूसरे हाथ में नर-मुड लटक रहा है। गले में आड, वक्षस्थल पर मोतियों की दुलड़ी माला और दोनों हाथों में चूडियाँ धारण हैं। लहगे और साडी पर पहनते समय की कुदरती सलवटें पडी है पर वे सिन्दूर लगा होने के कारण स्पष्ट दिखाई नहीं देती हैं। विशेष पूजन पर लहगा और साड़ी धारण कराई जाती है। यह मूर्ति करणीजी की इच्छानुसार वि स 1595 की चैत शुक्ल 14 उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में स्थापित की गई थी।

मूर्ति की पीठ पर स्वर्ण का तोरण बना हुआ है। मूर्ति की बार्यी तरफ करणीजी की सातों बहिनों और दार्यी ओर श्री आवडजी की सातों बहिनों की मूर्तिया लगी है। मूर्ति के दोनो पक्षों में सोने का कटघरा तथा मूर्ति के ऊपर सोने का छत्र लगा है। गुम्भारे के द्वार पर भी सोने के मढे किवाड लगे है।

कच्चा मढ—बीकानेर के शासक जैतसी ने श्री करणी के आर्शीवाद स्वरूप मुगल बाबर के पुत्र कामरान को माँ करणी के आशीर्वाद से वि स 1595 आसोज सुदी 6 को युद्ध में परास्त किया। इस समय श्री करणी जी ज्योतिर्लीन हो चुके थे। इस विषय के उपलबध मे राव जैतसी ने देशनोक पहुचकर गुम्बारे के ऊपर कच्ची ईटों का मढ (मदिर) बनवाया।

कच्चे मढ के चारा और परिक्रमा एव पखासाल—बीकानेर के शासक महाराजा सूरतमिहजी ने देशनोक श्री करणी मदिर में कच्चे मढ के चारो और परिक्रमा एव गुम्भारे के आगे पखासाल (मण्डप) इत्यादि बनवाये।

कालान्तर में नरेश सूरतसिहजी ने कच्चे मढ की जगह पक्का गुम्बजदार मन्दिर, उसक चारों ओर परकोटा तथा मन्दिर का सिहद्वार बनाया। मन्दिर के सिहद्वार पर लोहे से जडे हुए विशाल किवाडो की जोड़ी चढी हुई है जो देपालसर के किले को तोडकर वहाँ से लाकर चढाए गए थे। देशनोक के दीपचन्द भूरा ने (1987 में) भी इसी आकार का और जस्ते से निर्मित विशाल द्वार चमकदार जडाऊ काम करवाकर माँ करणी के दरबार में मुख्यद्वार की शोभा में सादर समर्पित किया है।

पक्का गुम्बाजदार मदिर एव पक्का परकोटा—बीकानेर के शासक महाराजा सूरतसिहजी



एक बार जोधपुर से बीकानेर लौट रहे थे। रास्ते में आते समय श्रीकरणी जी के दर्शन के लिए हाथ जोर बीकानेर रवाना हो गए। बीकानेर पहुचते ही पेट म जोर से पीडढ हाने लगी। दर्द रूक ही नहीं रहा था। अधिक असहाय पीडा होने पर लोगो ने महाराजाको बताया कि आपने श्रीकरणी जी की अवज्ञा की है। आप सवारी मे बैठे-बैठ ही माँ। को प्रणाम किया था। नीचे उतरकर दर्शन नहीं किए थे। महाराजा ने भूल के लिए माँ से क्षमा याचना की तथा पश्चाताप मे श्री करणी जी का पक्का मढ बनवाने की प्रार्थना की। श्री करणीजी की कृपा से दर्द उसी समय शात हो गया। दूसरे ही दिन महाराजा दशनोक पहुचे। श्री करणी जी के दर्शन किए पूजन करवाया। इसके बाद राव जैतसी द्वारा बनवाये गए। कच्चे मढ के स्थान पर पक्का गुम्बददार मदिर एव उसके चारो ओर एक पक्का परकोटा व मदिर का सिह द्वार बनवाया।

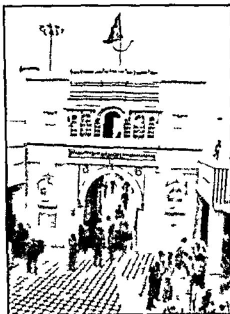
मन्दिर में सगमरमर का कार्य

महाराजा गगासिहजी करणीजी के अनन्य भक्त थे। उन्होंने इस मन्दिर को सगमरमर का बना दिया। निज मन्दिर के बाहर एक सगमरमर की तिबारी है जिसे पखाशाल कहते है। इसमें नगारो की जोडी रखी है तथा चाँदी की बीर घटा लटक रही है। इस शाल मे बैठकर लोग दर्शन करते है। पखाशाल के बाहर काले और सफेद सगमरमर मे जडा सुन्दर चौक है जिसमें एक ओर रसोवडा बना हुआ है। माँ करणी का नियमित भोग इसी में बनता है तथा जोत के लिए धूपिये तैयार रखे जाते है। (रसोवडे का नया रूप—राजेन्द्र बैगानी के पिताश्री इन्द्रचन्द बैंगानी माता मूलीदेवी बैंगानी की श्री करणी माताजी में अथाह लगाव था। माँ के प्रति सच्ची भक्ति और समर्पित भाव का ही फल है कि माँ की असीम कृपा से बैगानी परिवार को रसोवडे को नया रूप प्रदान करने का सुअवसर मिला। बैगानी परिवार ने अपने पिताजी की याद में वि स 2059 भादवा सुदी 7 को रसोवड़े का नवनिर्माण करवाकर माँ की सेवा में समर्पित किया।) इस चौक के बाहर खासा ड्याढी है जो सगमरमर की बनी है। इसकी छत में अत्यन्त सुन्द सुनहरी कार्य किया हुआ है। इसके दोनों आर सगमरम की दो तिबारियाँ है। इसके बाहर कभी बालू का कच्च चौक था, फिर लाल पत्थर के चौके जडे गए थे परन्तु अब सुन्दर टाइल्स लगा दी गई हैं। इस चौक के चारो ओर तिबारे बने है जिनमें एक भोपजी की शाल, एक नक्कारखाना तथा एक होमशाला बनी है। करणीजी मन्दिर की दायीं ओर मे श्री आवड माता का मन्दिर बना है जिसमें इन्द्रबाईसा महाराज की प्रतिमा भी लगी है। पास ही एक गुमटी है जिसमें करणीजी की पोती मानूबाई और उसकी एक सहेली (सुथार कन्या) की मूर्ति स्थापित है। सामने ही दशरथ कोटवाल है। बायीं ओर जुझारू भोमियों का स्थान है। मन्दिर क अन्दर बडे बडे कडाव रखे हैं जिनके नाम सावन और भादवा हैं। सबमे बडा पूजन-प्रसाद इन्हीं मे बनता है। इन दोनों कडावों में 90 मण बाट (गेहूँ का दलिया) की लापसी बनती है (लगभग 14 हजार कि ग्रा)। करणीजी के मन्दिर के अलावा गाँव म तेमडाराय का पुराना मन्दिर है, जिसमें माँ करणीजी की वह पूजा-मजूषा (करड) रखी है जिसे करणीजी अपने साथ रखते थे। यहाँ नियमित आरती जोत होती है। करणीजी के जन्मदिन आसोज सुदी 7 को श्री करणीजी की शोभा यात्रा इस मन्दिर तक निकाली जाती है।

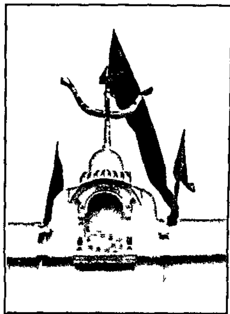
श्रीकरणी मन्दिर, देशनोक मुख्यद्वार

श्री करणीमाता का मन्दिर अपनी उत्कृष्ट स्थापत्यकला तथा काबो (चूहों) की विचित्रता के लिए विश्वविख्यात है। उज्ज्वल धवल सगमरमर पर झीनी कोरनी, बेलबूटे तथा मूर्ति-शिल्प देखकर चकित हुए बिना नहीं रहा जा सकता। वीणावादिनी के झकृत तारों पर मत्रमुग्ध मृग हस पर सवार सरस्वती बीन बजाते सपरे शैल कदराओ में बैठे सिह झूमते श्यामवर्ण हस्ती योगमुद्रा में लीन साधुओं की मूर्तियाँ दर्शक मूर्तिवत निहारता है। प्रात कालीन दृश्य में पहाड़ों की ओट से निकलता सूर्य पेडों की फुनगी पर चहचहाती चिड़ियाँ उछलते-कूदते बन्दर पानी में पख फड़फड़ाती बत्तखें

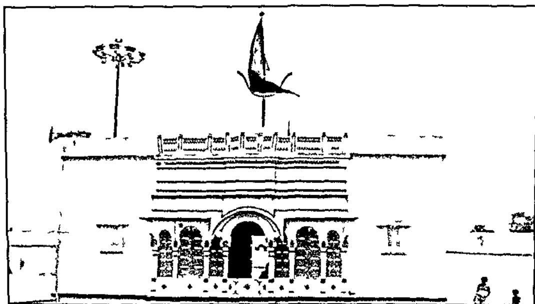
महिमा मन्दिर की



मुख्यद्वार–भीतर से



ध्वजा दर्शन



महलायत

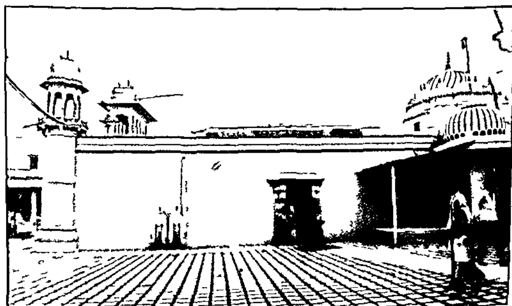
मोती समो न उजळो, चदन समो न काठ।
करणी समो न देवता गीता समो न पाठ।।

भगवानदास मालू

परिवार का माँ भगवती जगत् जननी श्री करणीजी को बारम्बार प्रणाम



श्री करणी मन्दिर का ऊपरी दृश्य



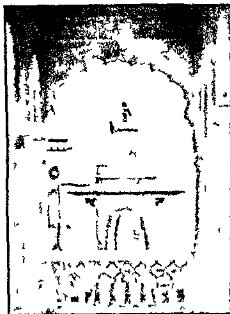
श्री करणी मन्दिर-एक दृष्टि

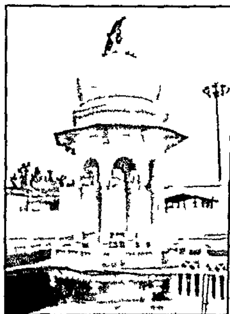
सोनीदेवी सेठिया

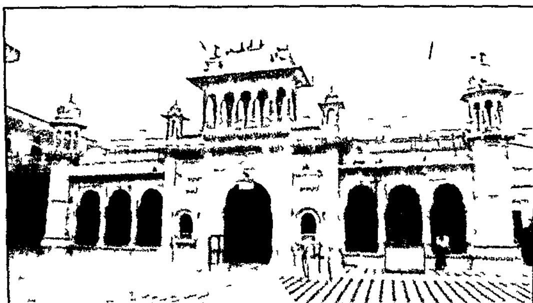
गर्ल्स कॉलेज सुजानगढ

निर्मलकुमार-चित्रादेवी सेठिया

कैमरे की नजर







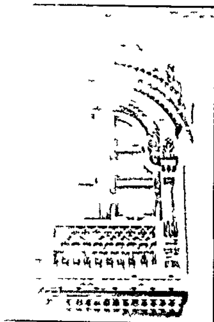
ड्योढी द्वार (प्रवेश दरवाजा न 2)

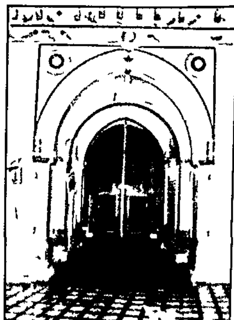
भीखमचन्द गुलगुलिया

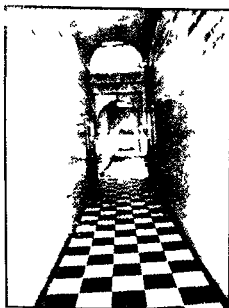
देशनोक

हाल त्रिपुर कोयम्बटूर

फोन 0421-2220204 (ऑ)


बारी


प्रोल भीतर से


परिक्रमा


गुम्बज दर्शन

Harish Hirawat

Kundan Jadaw Set Nawratan Rashi stone

1414, 22 B 1st Floor Chandigarh 160022

Mobile +91 9815781153

मॉ के दर्शन


श्री यहुचरादेवी, गुजरात


श्री अम्याजी


श्री विरवडेदेवीजी, अजमेर


श्री खोडियार माता गुजरात


श्री भादरिया माता जैसलमेर


श्री करणीमाता , देशनोक


श्री देवलदेवी, खारोडा सिन्ध पाकिस्तान


श्री राजलमाता गढवाडा रोहिट

मॉं करणी के श्रीचरणों में

भागीरथसिंह राठौड़

भाजपा देहात अध्यक्ष, रतनगढ

करणी स्टोन माइन्स, बीदासर
करणी लीज, बीदासर



करणी स्टोन माइन्स, बालियासर
करणी लीज, बालैसर



श्रीकरणी माता मन्दिर दर्शन, जुढिया, जोधपुर


घम्पालालजी साड

चम्पालाल शान्तिलाल साड

सेठ चम्पालाल साड मार्ग देशनोक (बीकानेर)
के जी कॉम्लेक्स रानी बाजार बीकानेर फोन 0151-2549128

विनीत

शान्तिलाल विमलादेवी सजय-सुरेखा अजय-ज्योति भावना तुषार प्रजय रितिका एव समस्त साड परिवार

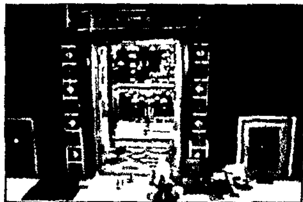
रजि ऑ शान्ति निवास न 50 7 क्रॉस विलसन गार्डन बैंगलोर 560027
फोन - 080-22235726 22225734 मोबाइल 09448125726

डायमण्ड पाइप एण्ड ट्यूब्स प्रा लि पाइप प्रोडक्ट्स आफ इण्डिया साड पाइप इण्डस्ट्री प्रा लि पूनम इन्टरनेशनल

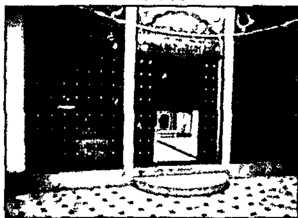

श्रीमती सुवटी देवी साड

श्री करणी मन्दिर के दर्शन, मथाणिया (जोधपुर)


श्री करणीजी की पावन पावडियो के दर्शन


जोत दर्शन


मुख्य प्रवेशद्वार


एक दृष्टि मन्दिर


भोग आरती दर्शन


आरती दर्शन

सुलक्ष ज्याणी पुत्र रामकुमार ज्याणी

5-डी-33, जय नारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर

मोबाइल 09414137613

विनीत अजात ज्याणी, एकार्थ, दिव्यलोचन

श्री भोमियाजी दर्शन, देशनोक



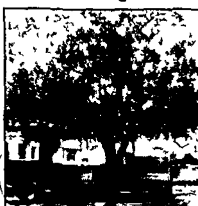
केशुदादोजी दर्शन



श्री केशुदादोजी की पूजनीय खेजडी दर्शन



श्री बुद्ध दादोजी केशुदादोजी, मानदानेजी



हीरदानजी दादोजी दर्शन



हेमदानजी दादोजी दर्शन



नाहरसिहजी भोमियोजी



श्री नेडीजी भोमियोजी



आत्मस्वरुप बाबा समाधि दर्शन



SANTOSH BHOJNALYA
Santosh Multicusine Air con. Restaurant
& New Santosh Air con. Bhojanalaya
Station Road, JAIPUR • Ph 2206313
RAJASTHAN BHOJNALAYA
94 Cotton Street KOLKATA • Ph 22688452

आसोज की सप्तमी (माँ के जन्मदिवस के दिन) के जयन्ती दर्शन



आसोज की सप्तमी के दिन जिस जयन्ती के दर्शन हम करते है उस पालकी को बनाकर गगाराम पुत्र उदाराम सोनार निवासी देशनोक ने भेट किया था। सोनीजी ने अपने नवनिर्मित मकान मे लकडी का कार्य तब तक नहीं करवाया जब तक माँ के लिए लकडी का आसन न बने। माँ की अति कृपा हुई पालकी बनकर तैयार हुई। जिसको जयन्ती के दिन उपयोग मे लिया जाता है। हाल ही मे उसमें इनके परिवार से चादी के फ्रेम मे मढी माँ करणी की रगीन तसवीर भेट की गई।

श्री करणी ज्वैलर्स

तेमडाराय मन्दिर के पास देशनोक
पारसमल पुत्र गगाराम सोनी

माँ भगवती इण्डस्ट्रीज देशनोक * माँ भगवती कटला मैन बाजार देशनोक
माँ भगवती ज्वेलर्स सिटी कोटवाली के पास बीकानेर
अशोककुमार पुत्र पारसमल सोनी

मन्दिर सेवा मे जिम्मेदार कर्मचारी



सेवा मे बारीदारजी



खजान्ची गण (मुनीमजी)



वर्तमान किलेदारजी रामकिशनदान



वर्तमान बारीदारजी



सहायक खजान्ची कर्मचारी



माँ की सेवा मे



भवरसिह



सहदेवसिह

जय श्री करणीमाताजी की सा

सहदेवसिह पुत्र भवरसिह रतनू

कमीरसर-झुझुनू (राजस्थान)

जय भवानी एण्टरप्राईजेज

शॉप न. 14 9 587 चूडी बाजार रोड पुरेरत बाजार हैदराबाद 500006 (आप्र)

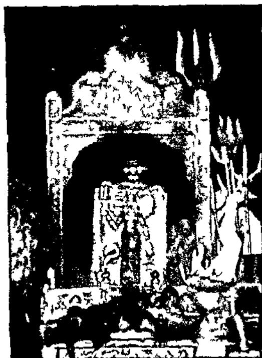
सहदेवसिंह अध्यक्ष श्री करणी चारण समाज-आ प्र मोबाइन 09246195324



धर्मवीरसिह



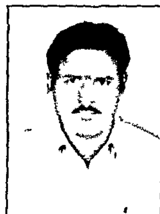
पकजसिह



निज मन्दिर

KARNI TRADING CO.

Shop No 20, Vardhman Market
Gali Ghante Wali
Chandani Chowk, Delhi 110006



Teju Singh
09868036472 09829397572 (R)



प्राचीन चित्र

हरिहर फर्टिलाइजर्स

बीज खाद पेस्टीसाइडस्
94, पुरानी धान मण्डी सगरिया (राज)



सूरजभान गोयल

प्रकाशचन्द गोयल सुमित गोयल

फोन 01499-222528 (ऑ) 09214400006 (शॉ)
09602033228 (पी)



माळा फेरते हुए

मै. किशनलाल खदरिया

पुराना बारदाना के व्यापारी

52/ए नई अनाज मण्डी, सगरिया (जिला हनुमानगढ)

फोन 01499-220210 01499-220410



मोबाइल 09480604810 (के एल के) 0414091310 (एकेके)



दुर्लभ चित्र

गुप्ता पानवाला

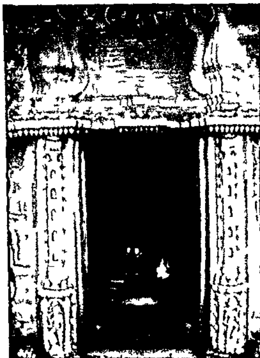
मैन मार्केट सगरिया

(हनुमानगढ) राज



पवन गुप्ता पुत्र श्री विशेशरलाल गुप्ता

स्नेहलता पत्नी श्री पवन गुप्ता



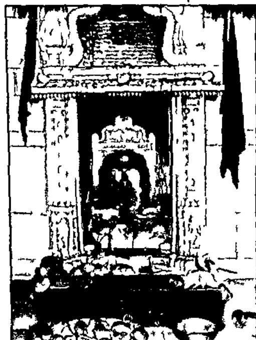
करणी तू करुणामयी, शरणायी साधार।
राखो शरणे राज रे, सहज दया सचार ॥

Dr. K.S. Ratnu

(M D MNAMS (Nephro)
Sr Physician & Consultant Nephrologist
Former Prof & Head Nephrology Department
S M S Medical College - Hospital, Jaipur



Residence
1/412 Vidyadhar Nagar Jaipur
Phone 2236129
Mobile 98280 19030 93513 70100



कानसिंह पालावत

ठिकाणा किशनपुरा (जयपुर)
हाल ए-4 करणीकृपा शास्त्रीनगर जयपुर
9829386417 0141-2300264



ओमप्रकाश महेशसिंह
सुरेन्द्रसिंह, कैलाशसिंह



श्री तेमडाराय मन्दिर, देशनोक

कीरो ज्योतिष केन्द्र

एक परामर्श आपका भाग्य बदल सकता है

नजदीक सार्थ फार्मा न्यू सूरज ट्रैवल्स राजीव कॉलोनी
एन एच 8 दिल्ली-जयपुर रोड गुडगाँव (हरियाणा)

आचार्य हरी स्वामी

(हस्तरेखा विशेषज्ञ)

9953975660 09466873378 (गुडगाँव)





माँ करणी प्रोपट्रीज-रेवाड़ी

भगवानदास बीठू

पूर्व पार्षद 09255029221

सुनीलकुमार बीठू-विनोदकुमार बीठू



श्री नेहडीजी मन्दिर, देशनोक

नगेन्द्र बाला (नीतूसिंह)

ज्योतिषाचार्य

09215172111 (रेवाडी)

220 कमला पैलेस धारूहेडा चुंगी रेवाडी (हरियाणा)



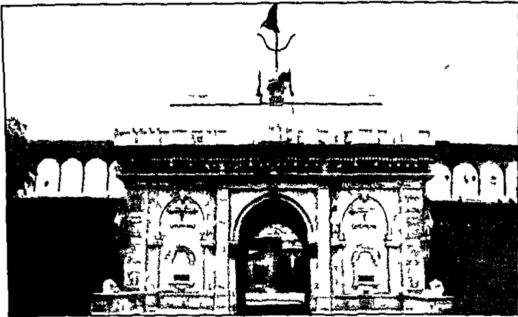


गीता बाईसा

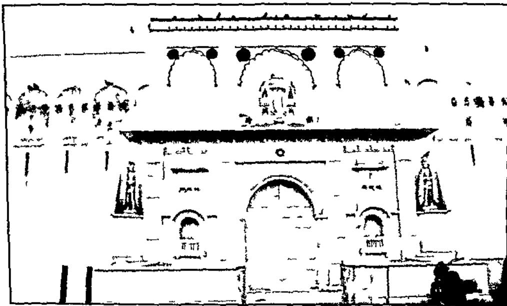
ज्योतिषाचार्य (हस्तरेखा विशेषज्ञ)

आरजेडएफ 14-बी वेस्ट सागरपुर दिल्ली

09718311350



मुख्य प्रवेशद्वार–श्री करणी मन्दिर, देशनोक



निकासी द्वार

श्री करणी कृपा ट्यूर एण्ड ट्रेवल्स

10 ख ज्योति नगर–सहकार मार्ग जयपुर

महेन्द्रसिह राठोड 09829067110

ब्राच ऑफिस–बीकानर जैसलमर, जाधपुर उदयपुर

रात्रिकालीन दृश्य





केशरसिंह चारण

श्री करणी चेम्बर्स, खातीपुरा रोड, झोटवाडा, जयपुर

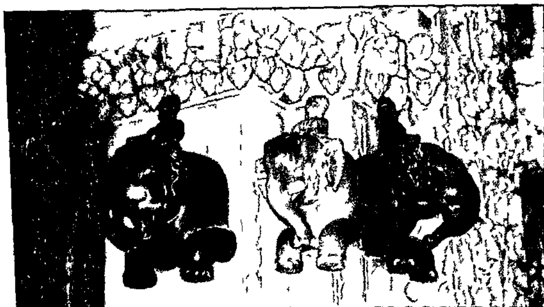
आवासीय व कृषि भूमि के विक्रेता–क्रेता

Ph 09414077947 0141-2340244 (H)

अद्‌भुत कलाकृतिया


लक्ष्मीजी


परिया का झुमका


पहरेदार हाथी



डॉ. जगदीशदान पुत्र सीताराम बारहठ

गाव-सींथल (बीकानेर)
हाल केशरीसिह बारहठ कॉलोनी डुप्लेक्स रोड
सतीमाता मन्दिर के पास बीकानेर
09214670611 0151-2526362




समयानुसार सेवा हमारी



निद्रावस्था



सजग प्रहरी

भगवानपुरी गोस्वामी

परिवार का माँ करणी को शत-शत नमन

झुझारा का मठ, वाजोर, सीकर

ओमप्रकाश-रामकुमार-गिरधारी-साँवर-हरि-शिम्भू पुरी गोस्वामी

हरिपुरी गोस्वामी (व्याख्याता हिन्दी) 09461044243 01572-222149

अस्सी वर्ष पूर्व श्री करणी मन्दिर की एक झलक





जाजम पर विराजमान बुजुर्गगण



जाजम पर विराजमान बुजुर्गगण



सुखदान

माँ की सेवा में समर्पित

सुखदानजी बारहठ

पूर्व अध्यक्ष नगरपालिका एव श्री करणी मन्दिर निजी प्रन्यास देशनोक
सुख निवास वार्ड न 4 देशनोक बीकानेर
विनीत हनुमानसिंह बारहठ पूर्व अध्यक्ष श्री करणी मन्दिर निजी प्रन्यास देशनोक
नगरीय अध्यक्ष अखिल भारतीय मानवाधिकार निगरानी समिति
प्रवीणसिह मनीषसिंह (एडवोकेट) कुवरी मेहाई बारहठ
09413300620 09887664000 मेहाई फाईनेंस 09414451249

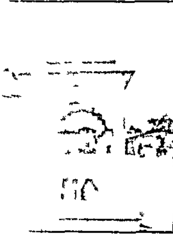


प्रवीणसिंह



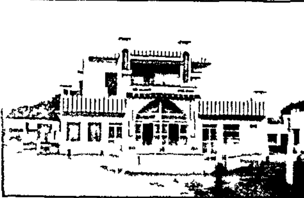
हनुमानसिंह

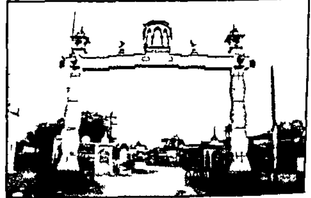
पूजनीय स्थान एव आवास

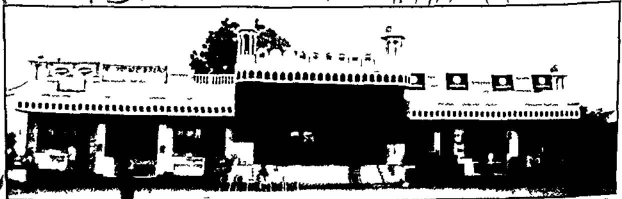

सती दर्शन


मस्सी माता दर्शन


माँ दर्शन


पट्शति सभागार (म्यूजियम)


करणी द्वार


भक्ति सगीत एव कवि सम्मेलन कार्यक्रम स्थल—मच


रूपसिह दान
09246340676

रूपसिह दान पुत्र मगेजदानजी खिड़िया

जगदीशपुरा-परबतसर (नागौर)

हाल गायत्री निलियम फ्लैट न 203 म न 11/14/261 एल बी नगर हैदराबाद

शीशदान प्रहलादसिह देवीसिह दशरथसिह

ओमश्री मार्बल्स **श्री करणी मार्बल्स**

ओमश्री ग्रेनाइट एण्ड टाइल्स **ओमश्री मार्बल एण्ड ग्रेनाइट**


रघुवीरसिंह
09885606404

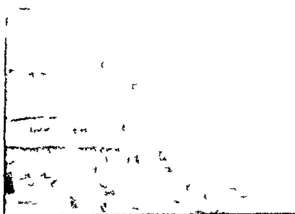

मलवीरसिह
09293327649

रूपसिंह दान विशेष सलाहकार श्री करणी चारण सेवा समिति हैदराबाद

मॉ की सेवा मे सेवा ... जी

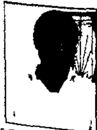








फर्म श्री मुल्तानचन्द जगदीशप्रसाद उपाध्याय



जय श्री करणीमाताजी की सा

मुल्तानचन्द जगदीश प्रसाद उपाध्याय

श्री करणी मन्दिर के सामने देशनोक

जगदीश प्रसाद 09636178711

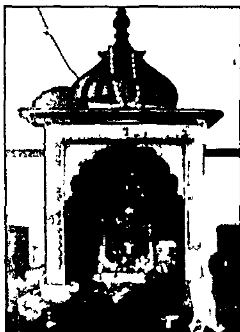
राजेन्द्र प्रसाद 09414451139

श्याम सुन्दर शर्मा 09928244979

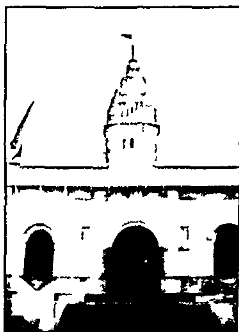
मुल्तानचन्द जयकिशन शर्मा-शर्मा ट्रेवल्स देशनोक 09828827489



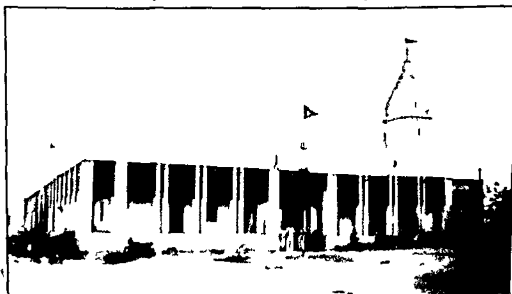
श्री करणी मन्दिर के दर्शन, गढियाला (बीकानेर)



पावन धाम दर्शन, गढियाला



मुख्यद्वार



एक दृष्टि श्री करणी मन्दिर गढियाला



नेमचन्द गहलोत

जय श्री करणीमाताजी की सा

नेमचन्द गहलोत पुत्र सूरजारामजी गहलोत

करणी कृपा गगाशहर रोड बीकानेर

विनीत

जुलगकिशोर-विपीन रेणु उमाशकर • अनिलकुमार-डालचन्द

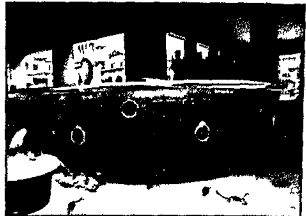


ज्यानादेवी

सावण-भादवा महाप्रसादी के दर्शन









गायो की रक्षार्थ बलिदान देने वाला भक्त दशरथ मेघवाल। जिसको माँ करणी ने कोटवाल का पद देकर उसकी सेवा को सर्वोपरि बताया। दशरथ मेघवाल की देवळी सावण-भादवा महाप्रसादी कडावो के पास स्थापित है।

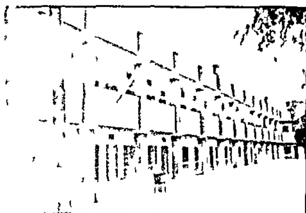


SUNDER LAL DUGAR

RDB INDUSTRIES LIMITED • RDB RASAYANS LIMITED
REGENT TRUCK TERMINAL • REGENT HOUSING
INFRAVISION DEVELOPERS PVT LTD
R D MOTORS PVT LTD

Bikaner Building 1st Floor 8/1 Lal Bazar Street, KOLKATA
Ph 033 22305666 (8 Lines) Fax +91 33 22420588

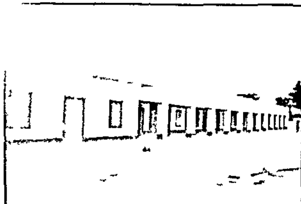
सेवा मे तत्पर धर्मशालाए एव गेस्ट हाउस



सेवा सदन



सेवा सदन का मुख्यद्वार



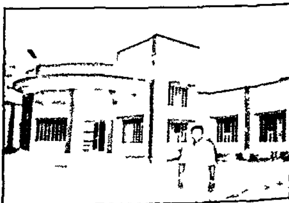
श्री करणी धर्मशाला न 2



श्री करणी धर्मशाला न 1



प्रभा ठाकुर गेस्ट हाउस



ओकारसिह लखावत गेस्ट हाउस

माँ करणी के श्रीचरणो मे शत-शत नमन

नवरतन, प्रकाशचन्द पुत्र हजारीमलजी हीरावत

देशनोक-बीकानेर (राजस्थान)
हाल दिल्ली

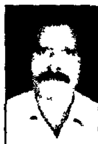
मोबाइल 09311502310 (प्रकाशचन्द हीरावत)



दाढी वाली डोकरी

सुरेशकुमार बारेठ

मोबाइल 09416065697
रेवाडी (हरियाणा)





नरेश चारण हरियाणवी

कार्यकर्ता विश्व चारण केन्द्र दिल्ली

अश्विनी बारेठ

09466817703
श्री करणी पदयात्रा सेवार्थी, रेवाडी (हरियाणा)



चाँदी पर उकेरा हुआ श्रीकरणीजी का चित्र

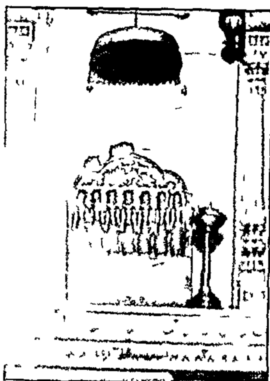
BARETH ART STUDIO
KARNI PHOOL BHANDAR
ARYAN COMPUTER CENTRE

Sajjan Market Sanyas Ashram Road FATEHABAD






Dayanand Choredia 09315612886
Manoj Singh Choredia 09812682244
Soniarani Choredia 09671400234
Gourav Singh Choredia 09466417317


श्री आवडजी मन्दिर

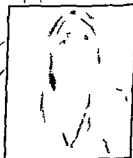
अमरसिंह कोचर
दिनेश कोचर




मिल गेट नजदीक कप्तान स्कूल
शिव नगर हिसार (हरियाणा)

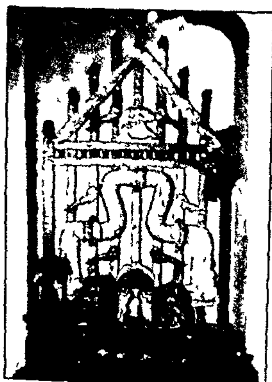

पावन पावड़िया

श्री करणी पैलेस
पुलिस थाने के पास देशनोक

बद्रीदान बारठ
परिवार का माँ को शत-शत प्रणाम

कुलदीपदान, माधोदान
घनश्यामदान कुबेरदान धन्नेसिह
डूँगरोतो का बास देशनोक



तोरण दर्शन साठिका



हडमानदान 'ठाकर'

देशनोक बीकानेर

मोबाइल 09610093535 09783245171



त्रिशूल दर्शन

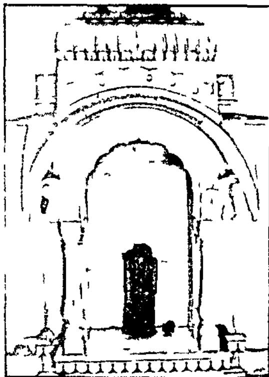
चारण मिष्ठान भण्डार

श्री करणी मन्दिर के सामने देशनोक



शिम्भूदान देपावत परिवार का
माँ करणी को बारम्बार प्रणाम

रुघदान-दिनेशदान देपावत
9024430199



मानू बाईजी

जगत् जननी चूड़ी सेन्टर

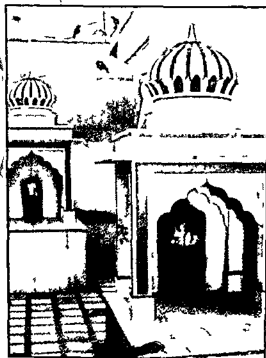
श्री करणी मन्दिर के पास, देशनोक





नारायण राम परिवार का
माँ को प्रणाम

नवरतन शर्मा (9929802115)
पवन शर्मा (9928752893)
देवकिशन शर्मा (9829340191)



नरसिगो के जुझारूओ के दर्शन

मोहनलाल सारदादेवी मोदी

फडबाजार बीकानेर



सुनीलकुमार मोदी

श्री करणी मदिर के पास देशनोक
9252747990

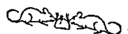
अतीव मनमोहक लगती हैं। प्रोल की कोर पर पक्तिवद्ध चूह (काबा) और डैने मुखाती हसावली बडी मनाग्म है। दरवाजे क दानो ओर एक ही साँचे म ढली-सी आकृतिया की समरूपता म किंचित् भी अन्तर नहीं है। पसरी हुई बेलों पर फुदकती गौरैया, सरसराती छिपकलियाँ द्रुमलताओं मे लिपट गुंथ, जीभ लपलपात सर्प, फन किए काले नाग देखन याग्य है। गुलाब, कमल तथा भाँति-भाँति के ओम से भीग फूल-पत्तो की छवि देखते ही बनती है। दरवाजे के बीच लटक्ता परियो का झूमका गजब का नमूना है।

इस प्रमुख द्वार का सगमरमर का कार्य महाराजा श्री गगासिंहजी क शासनकाल मे हुआ। प्रसिद्ध नगरसेठ श्री चाँदमलजी ढड्ढा न अपना नाम अमर करने वाला सगमरमर का भव्य कलात्मक द्वार बनाने का निश्चय किया। बीकानेर से कारीगर हीरजी सुथार को बुलाकर काम सौंपा गया। हीरजी न अपने गाँव बलासर मे भाई छौगजी, गगाराम क साथ पचास-साठ सुथार कारीगरा को बुलाकर कार्य प्रारम्भ किया। मकराना स लाए उत्तम सगमरमर की शिलाओ पर चित्र बनाकर समझाते पत्थर पर रखाकन करत और स्वय भी घडकर बताते। पूरी शिला पर सजीव चिरती आकृतियाँ बस दखते ही बनती हैं कहीं भी जोड नहीं मिलगा। इनका घड-घड कर वे प्रस्तर शिलाएँ रखते जाते। लगभग साल-भर हुआ कि किसी घटना को लेकर सेठजी तथा कारीगर म मनमुटाव हो गया। चलमो हीरजी बोले—आप जैसे सेठ बहुत है। चाँदमलजी का बात अखर गई। बोल—जाओ तुम्हारे जैसे कारीगर बहुत है। और काम ठप्प हो गया। हीरजी अपना दल लेकर पलायन कर गए।

सेठजी ने लालगढ के प्रसिद्ध कारीगर आसूजी सुथार को बुलाकर काम सौंपा। उसने अपने कारीगरा तथा सिलावटों के साथ काम प्रारम्भ किया। बाँसा गहरी और चौड़ी नींव भरी गई। घडे-घडाए पत्थरों का जोडना शुरूकर लगभग आदमकद ऊँचाई तक चिनाई हो गई। परन्तु ऊपर का पत्थर नीचे और नीचे का अन्यत्र जडने से काम गडबडा गया। आसूजी के समझ से बाहर हो गया। निराश होकर आसूजी ने हाथ पसार दिए काम बीच में बन्द कर देना पडा जो बीसा बरसा तक इसी स्थिति म पडा रहा। सेठजी की आर्थिक दशा भी गिर गई और उनका स्वर्गवास हो गया।

आखिर महाराजा श्री गगासिहजी साहब ने काम को अपन हाथ म लिया। हीरजी को बुलाकर कहा—हीरा काम प्रारम्भ कर। हीरजी बोले—अन्नदाता चाँद तो अस्त हो चुका। दरबार ने कहा—जैसे तैस इसे कर द। हीरजी की उम 70 पार कर गइ थी बड भाई छौगजी का देहान्त हो चुका था। भाइ गगाराम तथा अन्य सुथार कारीगरा को लेकर पुन देशनाक लौट। पूरी नींव छैनी हथौडा स तोड-तोड कर दो-चार महीना म खाली कराई। पत्थर उतार-उतार कर अलग रख। फिर काम शुरू हुआ तथा लगभग 10 वर्ष लगाकर वि स 2000 क आस-पास वर्तमान द्वार बन कर तैयार हुआ। अनक अनगढ और अधगढे पत्थर रेत म दब पड रह गए कई पत्थर काम नही आए प्राळिया की चार मूर्तियाँ अभी भी अन्दर रखी हुई है। यदि हीरजी क नक्श मुताबिक काम पूरा होता तो अद्वितीय होता फिर भी जो काम हुआ है वह भी विश्वभर के हजारों पर्यटका को अपनी ओर आकर्षित करता है। अनक वृत्तचित्रो पत्र-पत्रिकाओ टलीविजन फिल्मो म इसे दर्शाया और सराहा गया है। नि सन्देह यह दर्शनीय एव सराहनीय है।

निकासीद्वार—श्री करणी मदिर के दर्शनार्थ बढ रही भीड को एक ही दरवाजे से प्रवेश करवाना एव निकालना जब अनियन्त्रित होने लगा। तब एक दरवाजा और बनवाने का बनाने का निर्णय लिया। भक्तो से भी दरवाज के निर्माण हेतु सलाह ली गई। आखिर में श्री करणी मदिर निजी प्रन्यास अध्यक्ष मोहन दान देपावत ने माँ को प्रणाम कर जोत के दर्शन कर मदिर की उत्तर दिशा की तरफ मदिर के विशाल परकोटे की दिवार म एक निकासी द्वार का कार्य प्रारभ करा दिया। माँ की कृपा और आशीर्वाद से इस शुभ कार्य मे भक्त गण भी कहा पीछे रहने वाले थे। जिसन जितना हो सका गुप्त सहयोग दिया। सन् 1998 में निकासी द्वार दर्शनार्थियो के लिए खोल दिया गया।



नेहडी मदिर का निर्माण कार्य

माँ ने नेहडीजी के स्थापना के साथ ही यह स्थान पृज्यनीय हो गया। यहा पर विक्रम सवत 1999 को एक मूर्ति की स्थापना की गई जहाँ सुबह-शाम पूजा आरती होती है।

पक्का मदिर बनाना—इस मदिर के चारों तरफ एक पक्का मदिर एव चार दीवारी का निर्माण देशनोक के ही नृसिह दास मोहता ने निर्माण करवाया।

सफेद मारवल का मदिर—हाल ही मे कच्चे मदिर के स्थान पर एक भव्य मदिर का सफेद मारबल के द्वारा नया रूप दिया गया है देशनोक के ही दोहिते कुन्दन मल सोनी के द्वारा, आप पर माँ की अथाह कृपा है। इसी कारण नेहडीजी के मदिर को पूरा सफेद मारबल से निर्माण करवाया गया।

तेमडाराय मदिर देशनोक

तेमडाराय मदिर मे करण्ड को माँ ने स्थापित कर इस मदिर की स्थापना माँ ने स्वय अपने हाथो से की थी। तब तक एक कच्ची मढी थी। उसके बाद एक कच्चे मदिर का निर्माण मदिर द्वारा करवाया गया। अभी हाल ही मे एक सबसे ऊचे गुम्बद के निर्माण के साथ ही पूरे मदिर में मारबल का कार्य श्री करणी मदिर निजी प्रन्यास द्वारा कार्य करवाया गया।

श्री करणी धर्म शालाए, सेवा सदन इत्यादि

श्री करणी मदिर निजी प्रन्यास द्वारा श्री करणी धर्मशालाए 1 एव 2 का निर्माण करवाया गया। हाल ही मे कैलाशदानजी के कार्यकाल में श्री करणीजी के दर्शनार्थियो की सेवार्थ सेवा सदन धर्मशाला का निर्माण करवाया गया।

श्री करणी मन्दिर के पास प्याऊ का निर्माण

देशनोक गाव के बस स्टैण्ड को जब मन्दिर के पास लाया गया तब देशनोक के सुखदानजी बारठ ने दर्शनार्थियो एव यात्रिया को जल की सुविधा के लिए मन्दिर के पास ही आज से 45 वर्ष पूर्व एक प्याऊ बनवाई। हाल में इस प्याऊ का विश्रामगृह (मच स्थल) के पास ही नया निर्माण करवा दिया गया है। □

दोहा दरवाजे रा

कान सुण्यो सीख्यो कदै को पण देख्यो कद।
करणीजी कृपा करी, (जद) हीरे कर दी हद।।
जग माता करनी जटै देशणोक रो द्वार।
वारू अब बैकुठरा, इण पर द्वार हजार।।

सोरठा

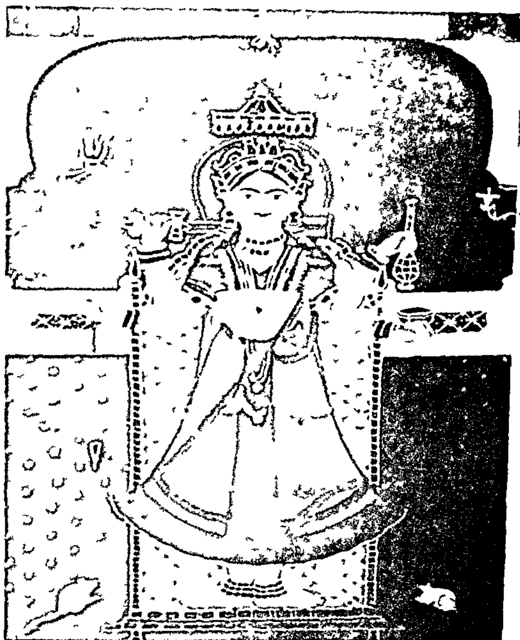
सेवा वृन ससार तो ध्यावै नित प्रत तिके।
देवी थारै द्वार सुख पावे सेवक सदा।।
साँपरतेक सुथार सेवक हीरो हो सदा।
देखो रचियो द्वार, करी कृपा जद करनला।।
का बीका का बीलुआँ
दीपे जगल देश।।
जगदम्बा शरणी जाण ओहिज मोटो आसरो
आप तणा आपाण विरद निभाहज्यो बीसहथ।



माँ करणीजी की ओरण

श्री जुबली नागरी भण्डार
पुस्तकालय एवं वाचनालय
स्टेशन रोड, बीकानेर

प्राचीन चित्र, श्री करणीमाता



VINAY ELECTRICALS

Dealer of Electrical Appliances

9, Armenian Street(1st Floor), KOLKATA 700001

Ph 22359186 (O) Mobile 9831537356

Champalal Umed Vinod Vinay Sethia

Sardarshahar Kolkata Delhi

मॉ करणीजी की ओरण

सध्या वदन समे, आप इम मुखा उचारे।
सुर कादो जागसी, सींव दस गावा सार।।
प्रतख हू जाल पलट्ट, उछव वोरा आडरर।
वणसी वड विसतार, वहुत वोरा आडरर।।
छिव दख सुरा आसत छति, पूर सुजस मुख मुख पणें।
सिरताज आज परचो असभ, वींसहथी ता सू वणें।।

अथ—एक दिन सायकालीन आरती क बाद आपन अपने श्रीमुख म इस प्रकार वचन कह कि इन दस गावों की सीमा में देव वृक्ष (झडबेरी वद्रीफल) उग आयेंगे, जाल क पड़ स्वत समाप्त हो जायग, आकाश में ऋषिगण उत्सव मनाएग यहाँ विस्तृत बेर वन उत्पन्न होगा।' इस प्रकार का अलौकिक दृश्य देखकर देवता बारम्बार धन्य हो धन्य हो मुह मे कहत हुए करणीजी का सुयश बखान कर रहे हैं। ह वीसहथी, ह नवलाख शक्तियों की सिरमाड इस प्रकार का असभव अलौकिक प्रकृति परिवतन का महाकार्य आपसे ही सभव है।

माँ करणी जी की अगम्य दूरदर्शिता

करीब 600 वप पूर्व न गोचर भूमि की ही कमी थी न पयावरण प्रदूषण की किंचित भी समस्या लेकिन भविष्य द्रष्टा माँ न गाय व गोचर को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर इस विशाल ओरण की स्थापना की व इसकी रक्षा हेतु अनेक उपाया की घोषणा की तथा ओरण रक्षा हेतु कडे नियम निर्धारित कर निम्न आयनाओं (परम्पराओ) की घोषणा की—

ओरण की आयना (परम्परा)

1 इस भूमि मे कोई भी व्यक्ति हल नहीं चला सकता।

2 हरे वृक्ष की लकडी काटना तो दूर दातुन तोडना भी वर्जनीय है।

3 इधन के रूप म सूखी लकडी का काम म लेना मना है।

4 ओरण सीमा व गाव म चूल्हे के अलावा किसी भी प्रकार का प्रदूषण मना है।

5 कसाईखाना व पशु वध्याकरण सर्वथा मना है।

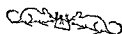
6 कुम्हार का आवा धातु की भट्टी लगाना भी मना है।

7 ओरण म अभयदान था स्टेट टाइम मे कितना भी बडा अपराधी क्यू ना हो ओरण सीमा म प्रवेश क बाद बीकानेर राज्य का कोई भी कानून लागू नहा होता था।

8 पशु चरने व बेर तोडने पर किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लागू है।

महाराजा श्री गगासिहजी की ओरण के प्रति आस्था

करीब सौ वर्ष पूर्व पहली बार बीकानेर स मेडता तक रेल लाइन बनी तो महाराजा साहब ने देशनोक से 9 किलोमीटर दूर गींगासर ग्राम की सीमा म देशनोक का रेलवे स्टेशन बनवाया जिसके अवशेष अब भी मौजूद है क्योकि गाव की सीमा से रेल लाइन निकालने पर ओरण के कुछ वृक्षा का काटना अनिवार्य था जो श्री गगासिहजी को मजूर नहीं था। देशनोक ग्रामवासियो का उतनी दूर जाने म बहुत दिक्कत होती थी अत सामूहिक रूप स ग्रामवासियो द्वारा निवेदन करने पर श्री गगासिहजी ने मंदिर म आकर अक्षता द्वारा श्री करणीजी



महाराज से आज्ञा मागी व आज्ञा मिलने पर अपने इजीनियरो से कहा कि रेल लाइन को इस तरह से वनाया जाय कि ओरण के वृक्षा की कम-से-कम क्षति हो बहुत ही प्रयास के बाद भी करीब 50 वेर वृक्ष काटने पडे उसका हर्जाना प्रति वृक्ष 100 चादी के सिक्के (जो वर्तमान मे पेतिस हजार रुपये प्रति वृक्ष होते है,) श्री करणी मदिर के खजाने म जमा करवाये गये।

महाराजा साहब जब भी देशनोक दर्शन हेतु पधारते तो ओरण सीमा मे प्रवेश के पूर्व ही स्पेशल गाडी रुकती व वहाँ पर साष्टाग दण्डवत प्रणाम करने एव नारियल पूजा के बाद गाडी रवाना होती है।

ओरण की अद्‌भुत विशेषता

यह ओरण भूमि माँ करणी जी की दिव्य चरण से अलकृत ब्रजरण के समान अत्यन्त ही पवित्र है। ओरण म प्रवेश के समय ही प्रत्येक व्यक्ति को कुछ-न-कुछ अनोखापन महसूस हाता है। श्रद्धालु व्यक्तियो के लिए तो ये साधारण वृक्ष न होकर माँ करणीजी की कृपा से पल्लवित पोषित होकर कल्पवृक्ष के समान मनोकामना पूर्ण करने वाले है। ओरण प्रवेश के समय ध्यान से सुना जाए तो रेलगाडी की चाल व ध्वनि से स्पष्ट फर्क महसूस होता है।

बुजुर्ग पुरुषो से सुना है कि ओरण में अनेक तपस्वी सिद्ध-सत तपस्या करते है जिन्हे हम चर्मचक्षुआ से नहीं देख सकते है। कुछ लोगों की तो मान्यता है कि ये साधारण वृक्ष न होकर ऋषिमुनि ही वृक्ष के रूप मे माँ की अर्चना व परोपकार में लीन है। ये भी मान्यता है कि कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी को गोपीचन्द भरथरी भी ओरण मे प्रवास करते हैं।

वृन्दावन की तरह ही ये माँ करणीजी की तपोभूमि अत्यन्त पवित्र है व अमरशहीद (गौ भक्त) दशरथ मेघवाल की गोरक्षा हेतु बलिदान की ये भूमि साक्षी है।

देशनोक गाव के लिये ओरण का वरदान

आज गोचर भूमि की प्रत्येक गाव मे इतनी कमी है कि लोगो को बरसात के मौसम में भी अपने पशुआ को बाधकर रखना पडता है मगर देशनोक का पशुधन अत्यन्त सौभाग्यशाली है कि इस विशाल ओरण में चरने हेतु ग्रामवासिया के किसी भी पशु पर कोई भी प्रतिवन्ध नहीं है व चराई हेतु किसी प्रकार का शुल्क नहीं देना पडता है।

इसी प्रकार अनगिनत वेर वृक्षों से हजारों मण रसीले मीठ वेर फल भी वहुतायत से मिल जात हैं। विटामिन सी से भरपूर स्वादिष्ट इन फलो को तोडने हेतु किसी पर कोई मनाही नहीं है। जिसको जितना चाहिये ले जाए, अनेक गरीव व्यक्ति वेर वेच कर अपना पेट पालन करते है। आज कोई भी सरकार या सस्था करोडों रुपये खर्च करके भी इतने विस्तृत भूभाग में इतनी बडी सख्या में वृक्षारोपण नहीं कर सकती। यह तो माँ करणीजी का चमत्कार ही है।

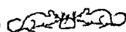
श्री करणी माता जी की ओरण की सुरक्षा

श्री करणी मदिर व ओरण एक दूसरे के पूरक है व ओरण तो मदिर व गाव का आवरण ही है, ओरण मे गाव की शोभा है। यह आरण रक्षा की परम्परा एक अमूल्य परम्परा है व लाक जीवन की अनुपम थाती है। इस अमूल्य सम्पदा की सुरक्षा पर गाव व क्षेत्र के प्रत्येक बाल युवा व वृद्ध को गौर करना है। यह हम सबकी जिम्मेवारी एव कर्तव्य है।

वर्तमान व भावी पीढी मे ओरण के प्रति जागृति पैदा हो इस हेतु कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को घरों में दीप मालिका करके व ओरण परिक्रमा का विशाल सामूहिक आयोजन व अन्य कार्यक्रम रखकर प्रतिवर्ष वर्षगाठ मनाई जाय तो यह एक अच्छी शुरुआत होगी। ओरण परिक्रमा म हजारों लोग प्रतिवर्ष जाते हैं लेकिन इस आयोजन को और विशाल पैमाने पर परिक्रमा की जाय तथा ओरण सुरक्षा के प्रति जनमानस म जागृति पैदा किया जाने की जरूरत है।

ओरण की महत्ता

माँ करणी जी की कृपा का एक अनूठा उदाहरण जब माँ ने एक सन्यासी को दर्शन दिये।



ग्राम देशनोक में ही पूर्व दिशा में ओरण के मध्य में गूदीधोरा स्थित है। सन् 1973 में स्वामी कृष्णप्रेमजी— (पूर्वाश्रम श्री नटवर जी गोस्वामी, गोस्वामी चौक बीकानेर) ने देशनोक में सन्यास लिया व कुछ दिन गूदीधोरा में रहे। स्वामी जी सुदशना कॉलेज के पास स्थित अनाथालय के पीछे स्थित मन्दिर मे प्राय रहते थे। 1999 को स्वामी जी लीलालीन हो गये।

स्वामी जी ने मुझे बताया कि उस वर्ष प्रथम श्रावणमास के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि थी। मैं दोपहर में ध्यानावस्था में बैठा था, अचानक आख खुली तो देखा कि एक किशोरवय की बालिका हाथ में त्रिशूल लिय सामने खडी है, मैंने सन्यास धर्म के नाते तुरन्त आख बन्द करली व सोचा कि पशु चराने हेतु आई हुई यह बालिका पानी पीने आई है। इस हेतु मैंने आख बन्द किये ही कहा माँ अगर प्यास लगी है तो पानी पीयें, पास ही कुछ पानी के मटके रखे हुए थे, इतने मे आवाज सामने स आई या मेरे हृदय से कह नहीं मकता कहा कि बेटा तूने मेरे गाव में सन्याम लिया है। इसीलिए तुझ सम्भालने आई हू।

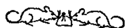
स्वामी जी ने बताया कि यह सुनते ही मेरे रोम-रोम से आनन्द का समुद्र वहने लगा व तुरन्त आख खोली तो सामने कुछ भी नहीं था। मै एकदम अवाक् स्तम्भित व आश्चर्यचकित।

—पूज्य स्वामीजी श्रीकृष्णप्रेमजी स्वनामधन्य कल्याण सम्पादक पूज्य श्री चिमनलालजी गोस्वामी के भाजे थे। व इनके जीवनकाल का ज्यादातर समय गीता वाटिका गारखपुर मे पूज्य भाई जी श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार व बाबा चक्रधरजी (राधाबाबा) के सान्निध्य में बीता स्वय अच्छे लेखक, कवि व शास्त्रो के मर्मज्ञ विद्वान थे 'महाभाव दिनमणी श्री राधाबाबा नामक कालजयी कृतिके विशाल सातो खण्डों के लेखक आप ही थे। इनके जीवन की अन्तिम दो वर्ष की अवधि डा करणीसिह जी रतनू के हरमाड़ा (जयपुर) स्थित फार्म हाउस मे बीती। डा दम्पती ने अन्तिम समय तक इनकी बहुत मेवा की।

स्वामी जी ने बताया कि मैंने तो उम्रभर राधा नाम का जप किया व कट्टर कृष्ण-भक्त होने के नाते मेरी तो श्रद्धा भगवान राधाकृष्ण में ही अटल रही। बीकानेर का होने क नाते सन्यास से पूर्व एक-दो दफा देशनोक मदिर अवश्य आया था, मगर श्री करणी जी के प्रति मेरी आस्था न होने के बावजूद माँ करणी जी क्या इतनी अकारण करुणामयी है कि उन्होंने मुझे दर्शन दिये। मेरी आखों से उस दिन निरन्तर अश्रु प्रवाह होता रहा।

फिर भी मैं सोचता व बार-बार प्रार्थना करता माँ आप कौन हैं? मैं तो आपको साधारण योगिनी ही समझ रहा था, अब मेरी कुछ भी समझ म नहीं आ रहा है।

इसके बाद करीब मै महीना भर देशनोक मे रहा व गूदीधोरा के बाद मूधडा बाम स्थित श्री राधाबाई की कुटिया मे कुछ दिन रहा व प्रस्थान से पूर्व श्री नेहडी जी मदिर में रहा जो गाव की पश्चिम दिशा मे ओरण के मध्य स्थित है। एक दिन जब मैं श्री नेहडी स्थित धर्मशाला में सध्या के समय बैठा हुआ था व मुझे भूख भी लग रही थी एक वृद्धा वेश म माई मेर पास आइ व कहा कि मै तेरे लिए भोजन बना देती हू उनके थैले मे आटा घी, चीनी आदि सब सामान था व हलवा बनाने के उपक्रम के समय मे जैसे ही मैंने उस वृद्धा के चरण स्पर्श करने चाहे क्षणभर म ही सब कुछ अदृश्य हो गया व आकाशवाणी के माध्यम से दिव्य वाणी मे बहुत ही मधुरशब्दों मे एक ही 'श्लोक के माध्यम से मेरी सारी शकाओं का यह कह कर समाधान कर दिया कि सम्पूर्ण जगत म जो कुछ भी दृश्य मात्र है वह सब मै ही हू। इसके बाद मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि माँ करणी जी साक्षात् पूर्णब्रह्म परमेश्वरी है व श्री कृष्ण व माँ करणीजी म कोई फर्क नहीं है। □



माला फेरते हुए श्री करणीमाता



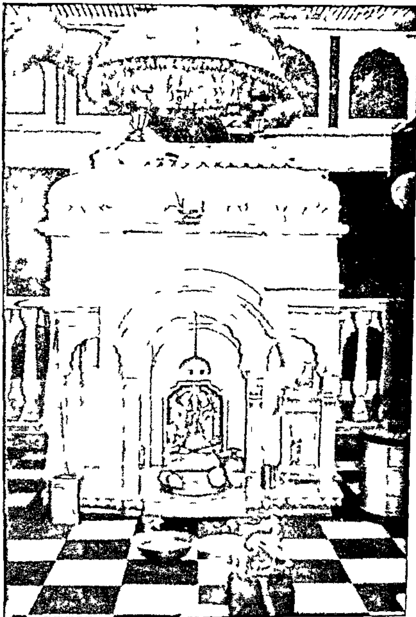
DAMODAR PRASAD MOHTA

Post–Sinthal, BIKANER (Raj)

Mob 09374715997

माँ करणी
लोक देवी कैसे बनी

श्री करणीमाता दर्शन, नेहडीजी



निर्मलकुमार
09840126784

पुखराजदेवी
09003270058

सजीव कुमार
09884410266

कौशल देवी
09884097966

विजेता दुगड
09841179595

औल्ड फोर न्यू सात भगवानदास गुप्ता स्ट्रीट नियर हिन्दी प्रचारिणी सभा चैन्नई 600017

माँ करणी लोक देवी कैसे बनी

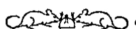
इतिहास और समाज की महान् विभूति करणीजी ने देवीरूप में जन-जन का कल्याण किया। समाज को अराजकता की स्थिति से उबारकर सुशासन व्यवस्था दी। समाज में सौहार्द, समझता व सादगीपूर्ण जीवनयापन की दृष्टि से कुछ दिशा-निर्देश दिये। क्षात्रधम के पुनरुद्धार और सामाजिक सुव्यवस्था की स्थापना हेतु श्री करणीजी जैसी युग निर्मातृ-विभूति का जन्म ऐसे समय हुआ जब छोटे-छोटे शासन पूजा-लुटेरों के रूप में असहाय प्रसासनो को लूटना ही अपना कर्म समझते थे। आतताइयो के जुल्मों से सत्रस्त होकर सामान्य जन-जीवन म सुशासन और शाति की आशा भी एक प्रकार से मृत-प्राय हो चुकी थी।

अस्थिरता और अराजकता के इस परिप्रेक्ष्य मे श्रीकरणीजी ने वीर राठौडो की नवोदित शक्ति को अपनी दैवी और मानवीय शक्तिया से प्रति स्थापित किया।

माँ करणी सर्व कला समर्थ शक्ति का अवतार थीं। उनका सपूर्ण जीवन सतत लोक-कल्याण के लिए कार्य करत बीता। उन्होने अपने जीवन द्वारा बता दिया कि मानव नर से नारायण, साधारणजन से असाधारण और अपूर्ण से पूर्ण बन सकता है। परिस्थितियो की परवाह न करते हुए माँ करणी ने अपने अपूर्व त्याग-तपस्या, समाज-सेवा और कर्तव्य-निष्ठा से असभव को सभव कर दिखाया। राजमुकुट उनकी चरण-रज में टिके रहते थे, धन-सपत्ति उनके चरणों में लोटती थी परन्तु उनकी व्यक्तिगत सरलता और सादगी सदा बनी रही। उनकी दिव्यता में चमत्कार एकरूप हो गए थे। जोधपुर एव बीकानेर के उत्तुग दुर्गों की नींव रखनेवाली माता स्वय एक जाल की लकडियों की झापडी में रहती थीं। इतना ही नहीं, हाथ जोडे नरेश उनकी आज्ञा-पालन को तत्पर सदैव सामने खडे रहते थे, पर उन्होने अपने दीर्घ जीवन मे कभी किसी से नहीं कहा कि वे उनकी सतान को जागीर या गिरास दे दे। उनका त्याग महान् था।

उस साधारण गुभारे (गुफा) में निवास कर माँ करणी ने महान् चमत्कार किए। मृतको को जीवन-दान दिया, भूखों को अन्न दिया। लोक करुणा और सबके लिए समान भावना के कारण ही माँ करणी ने अपने मढ में अस्पृश्या और दलितो तक की पूजा करवाई।

वह अपने युग की राजनीतिक सूत्रधार थीं। उन्होने अनेक दुष्टो के राज्यो का नाश किया और नये राज्यों की स्थापना की। परतु उनकी मातृ-वत्सलता सभी गरीबों, कमजोरों, पिछडे लोगों के लिए समान भाव स बनी रही। उनके युग के सभी राजनीतिक तथा सामाजिक निर्णय उनके ही आदेश मे देशनोक में लिए जाते थे। माँ करणी का व्यक्तित्व अपूर्व था। वह गृहस्थ के नित्य-कार्य जैसे अपने पधुधन के लिए घास-चारे की व्यवस्था करना गाए दुहना, दही बिलोना अतिथियो का स्वागत-सत्कार उनके रहने की व्यवस्था करना यानी एक गृहस्थ के सभी कार्य उसी सरलता और पूर्ण तत्परता से करती थी जिससे उस समय के राजाआ सामतों और विपुल सपत्ति वाले व्यापारियों के निर्णय करती थीं। भारत के लबे इतिहास पर यदि हम दृष्टि डाल तो माँ करणी से पूर्व एक ही उदाहरण हमें मिलता है और वह है भगवान् श्रीकृष्ण का जिन्होंने अपने लिए कुछ न करके सभी कुछ औरो के लिए ही किया था। माँ करणी ने किसी नए धर्म या सप्रदाय का सूत्रपात करने के लिए कभी सोचा तक नहीं, लेकिन समाज में आई हुई कुरीतियो और रूढियो को समूल उखाड फेंका। धर्म का पवित्र लोककल्याणकारी स्वरूप सदा सामने रखा।



सर्वसाधारण के साथ उनका वैसा ही व्यवहार था जैसा किसी बडे राजा के साथ। क्षणमात्र के लिए भी अपनी पूजा कराने कीर्ति गवाने या अपने प्रचार के लिए उस जोगमाया ने कभी सोचा तक नहीं। वे लोगो के सुख-दु ख और कल्याण में समान रूप से सदा लगी रही। उन्होने अपने जीवन के उद्देश्य के अनुरूप असहायों-निर्बला की सहायता की और जो शक्तिशाली थे उनसे शाति राज स्थापित कराकर जनकल्याण के लिए मार्ग-दर्शन किया। उन्होंने मन, वचन कर्म से अन्याय का पूर्ण विरोध किया। वह क्षमा की मूर्ति थी। अत्याचारी भी अत्याचार छोडकर धर्म के रास्ते पर आ जाता था तो वह तुरत क्षमा कर देती थीं, चाहे फिर उसका कितना ही गुनाह क्यो न हो। माँ करणी सबकी माता थी चाहे कोई अमीर हो या गरीब हो। जिस पुकार से वह राजाओं के पीढियों के आपसी बैर मिटा देती थीं उसी ढग से साधारण लोगो के आपसी बैर-विरोध मिटाती, उनका न्याय करती। यथा—

'जीतायो थे जैतसिंह राव तणो अमराव।
काचे पय साचो कियो, नर दोना रो न्याव।।'

उनके लिए न कोई बडा था, न छोटा। वह इस लोक मे जीवन-पर्यत सदा जल में कमलवत् रही। इस मरुस्थल में वृक्षों की उपयोगिता को देखते हुए वृक्षो के साथ भी मातृभाव रखा। वृक्षारोपण करना, वृक्षा की रक्षा करना सार-सभाल लेना उनकी नित्य दिनचर्या का एक अग था।

माँ करणी किसी जाति विशेप म उत्पन्न काया का नाम नहीं वह तो एक उच्च आदर्श का नाम था। इसीलिए आज माँ करणी सभी धर्मों सभी सप्रदायो सभी वर्गों और सभी जातियो की आराध्या है और सभी से पूजित हैं। जन-जन की श्रद्धा पात्र है। करणीजी ने आज स 500 वर्ष पूर्व, जवकि छुआछूत के बधन बहुत कठोर थे, अपनी गायों के ग्वाले (चरवाहे) दशरथ मेघवाल की पूजा अपने मढ में शुरू करवा दी थी। देशनोक के मुमलमान तेली आज भी भगवती के मढ में जितना तल चाहिए, उतना भेंट करना अपना धर्म समझते है। इससे अधिक और धर्म-निरपेक्षता क्या हो सकती है?

करणी जी के समस्त स्थानों पर अहर्निश सव जातियो व सप्रदायों के व्यक्ति श्रद्धा से दर्शन करत हुए मिलते है।

माँ करणी क वाल्यकाल में ही पूगल का राव शेखा इनके चामत्कारिक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर इनका भक्त वन गया एव कालातर में वह राखी-वद भाई हो गया। माँ करणी ने रक्षा-वधन के उम कच्चे धागे की मर्यादा का पालन करते हुए कदम-कदम पर भाटियों की रक्षा की।

जोधपुर से माता देशनोक लौटते हुए, बारहठ अमराजी, जा देशनोक से ही करणीजी के साथ सेवा में थे, की प्रार्थना पर उनके गाव मथाणिया में कभी अति ओलावृष्टि, रोग, अग्निकाड आदि प्राकृतिक प्रकोप नहीं हागे।

जो रक्षा का वरदहस्त माँ करणी ने राव रिडमल के सिर पर रखा था, वही वदहस्त राव जोधा, बीका, नेरा, लूणकरण और राव जैतसी छ पीढियो तक इस वश पर रहा। माँ करणी की दैवी कृपा से राठौड राज्य का बीज नवकिमलय मे प्रकट होकर फूला, फला और उसने एक विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया। उस वृक्ष की छाया पूरे राजपूताने और भारत के अन्य प्रदेशा मे पाच शताब्दियो तक छायी रही।

लेकिन सैकडो वर्षों से राठौडो और भाटियों में जो बैर का बीज बोया गया था वह हमेशा दोनों वशों के रक्त से सींचा जाता रहा और द्वेष तथा बैर का वृक्ष सदा हरा-भरा रहता था। एक के स्वामित्व और दूसरे के प्रभाव क्षेत्र के उल्लघन का प्रश्न था। इसलिए ऐसा लगता था। जैसे भाटी और राठौड दोनो वशो ने एक दूसरे के सर्वनाश की ठान ली थी। राठौड़ों ने इस क्षेत्र पर अधिकार कर बसना तो भाटियों ने अपन प्रभाव क्षेत्र का उल्लघन और अपने राज्य की सीमाए न टूटने देने का सकल्प कर लिया था।



दोनों ओर के लोग सदा पशुधन की चोरिया करते थे। दोनों ही ओर के क्षेत्रों में वाणिज्य-व्यापार बद हो गया था। इम क्षेत्र का आशादीप केवल एक करणीजी महाराज थे, जिन पर राठौड और भाटी दोनो पक्ष पूर्ण विश्वास करते थे और उनकी आज्ञा मानते थे।

जैसलमेर और बीकानेर राज्यों की सीमाए सदा रक्तपात का कारण बनी रही। कभी कोडमदेसर तालाब पर तो कभी धनेरी तलाई पर दोनों ओर के पच बैठकर एक निर्णय पर आने का प्रयास करते। परतु वे ज्या ही वहाँ से उठते, फिर वही खून की प्यासी तलवारे लपलपाने लगतीं। इस प्रकार कभी कोई स्थायी समाधान न हो सका। पहले का रक्त सूखता तो नया रक्तपात हो जाता। गडियाला रण दोना सेनाओं का रणक्षेत्र था।

उस क्षेत्र की शाति और सुख नष्ट हो गया था। साधारण जनता अपनी सुरक्षा के लिए देशनोक श्री करणीजी महाराज के पास जाती और अपना दुखडा रोती। उधर राठौड और भाटी भी अपना-अपना रोना रोने के लिए करणीजी महाराज के पास देशनोक जाते। वे लोग एक-दूसरे के दोष बताते, लाछन लगाते। गजग्राह का अत लाने के लिए कोई तैयार नहीं था।

अतत दीनजन की आर्त पुकार, नित्य होनेवाली लड़ाइयो से त्रस्त मानव का करुण क्रदन, सद्य विधवाओ का हाहाकार सुन-सुन कर श्री करणीजी ने राठौड और भाटी दोनों ही पक्षो को मामने खडाकर अपना अतिम निर्णय दे ही दिया कि अब उनकी मानवलीला का समय शीघ्र ही समाप्त होने जा रहा है। उस समय जहाँ से वह अपने लोक को प्रयाण करें, वही स्थान दोनो राज्यों की सीमा निर्धारण करेगा। इस समाधान पर दोनो ही पक्ष सतुष्ट और सहमत हो गए।

जैसलमेर के रावल जैतसी की पीठ में अदीठ (कैंसर) हो गया था। अनेक इलाज-उपचार किए गए परतु कोई काम नहीं आया। आधुनिक युग जैसी चिकित्सा उस समय नहीं होती थी। अपना मृत्यु समय निकट आया जान कर रावल जैतसी ने जीवन के अतिम क्षणों में माँ करणी के सदेह दर्शन की तीव्र इच्छा से अपना एक अनुचर देशनोक इसलिए भेजा कि माँ करणी उन्हें जैसलमेर से देशनोक आने की आज्ञा प्रदान करे। सदेशवाहक के मुह से यह सुन कर माँ करणी ने कहा, 'रावल जैतसी के लिए इस बीमारी की हालत में इतनी लबी यात्रा करना उचित नहीं। वह स्वय जैसलमेर जाएगी और रावल जैतसी को दर्शन देगी।

चारण जाति में भेत मिटाने के लिए काछेला चारण जीवराम सूधा को गुजरात के काठियावाड का निवासी था। काछेला चारण जीवराम छोटडिया गाव में आकर थोडो का व्यापार शुरू कर दिया। छोटड़िया के आस-पास जितने भी चारणो के गाव थे। वो परिवार इस काछेला चारण को बराबरी का नही समझते थे। कोई भी उमको लडकी देने में तैयार नही था। आखिर वह गुजरात जाने लगा तब राठौड बीकाजी ने उसको श्री करणी जी के पास भेज दिया। उसने करणीजी के सामने अपनी व्यथा प्रगट कर दी। श्री करणी जी स्वाभिमानी जीवराम से काफी प्रभावित हुई। करणी जी ने उसे आश्वासन देते हुए कहा कि चारण सब समान है जो भेद बुद्धि रखते है वो मूढ है। तुम गायो, घोडो की सेवा करो और छोटडिया मे सुख शाति से रहो। इस फेरे के पश्चात श्री करणीजी ने चारण जाति के भेद मिटाने के लिए साहसिक कदम उठाया और अपने पुत्र लाखन की बडी पुत्री सापू का विवाह काछेला युवक जीवराम से कर दिया। सापू को श्री करणीजी ने आशीर्वाद हेतु हए वचन दिया कि मै दिन के आठ पहर म एक बार तेरे पास जरूर आऊगी।

नारी उत्थान के लिए माँ करणी के सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जाग्रति लाने का सभव प्रयास किया। करणी जी का उद्देश्य समाज मे साहस का सचार कर सद्भाव कर चलाना था। इस हेतु माँ ने पतिव्रता विश्वास एव धर्मपालन का अखण्ड रूप समाज के सामने अपने आचरण के प्रस्तुत किया।

माँ का रूप श्री करणी जी ने अपने आचारण से मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव को अस्वीकार करके सदेश दिया कि वर्ग छोटा-बडा रूप-प्ररूप और छूत-



अछूत नही है। माँ के लिए सभी मॉ की सतान है। लडकी के जन्म को जहा अभिशाप माना जाता था। वहीं माँ ने समाज का पहली सीख दी कि तुम लडके-लडकी म भेद क्या करते हो? मॉ ने स्त्रियो पुत्रियो को समाज मे बराबरी का दर्जा दिलाया। माँ ने पर्यावरण की रक्षा और उसके लाभ को ध्यान मे रखते हुए पर्यावरण की सुरक्षा करने के लिए ओरण को रक्षित कर छोडा। लोगो को पेड-पौधो की हरियाली का पाठ पढाया। माँ को मालूम था कि शरीर के लिए जितनी पानी की आवश्यकता है उनसे फलस्वरूप शुद्ध एव शात का वातावरण की भी है।

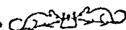
विश्व के मानचित्र पर श्री करणीजी

वीर भूमि राजस्थान मे शक्तिपूजा का अत्यधिक महत्त्व रहा है। शक्ति विजय का प्रतीक है। महिषासुर मर्दिनी शक्ति की देवी दुगा यहाँ आद्या भगवती हिंगलाज, तेमडाराय, शिलादेवी शाकम्भरी, चामुण्डा, चाळकनेचि नागणेची, करणीमाता, सतीमाता आदि नाना रूपा मे पूजित एव प्रतिष्ठित है। आश्विन तथा चैत्र नवरात्रा मे देवी के प्रसिद्ध स्थानो पर मेले भरते है। इन मेला मे बीकानेर जिले के देशनोक स्थान का श्री करणीमाता का मेला प्रमुख है। जहॉ राजस्थान के साथ-साथ दूरस्थ प्रान्तो से भी हजारों यात्रीगण आते हैं।

करणी माता के भव्य प्रासादनुमा मन्दिर की छवि मरस्थल की चाँदनी रात में देखते ही बनती है। मन्दिर में सगमरमर की उत्कृष्ट स्थापत्यकला को देखकर बरबस दाँता तले अँगुली दबानी पडती है मन्दिर म स्वच्छन्द विचरण करते असख्य चूहे विश्व के पर्यटकों को विचित्र आकर्षण में बाँधे हुए हैं। इन चूहा को श्रद्धा से कावा कहा जाता है जो वडी-वडी परातों म दर्शनार्थियों द्वारा चढाए गए दूध मिष्टान्न पानी का निर्भय होकर सेवन करते हैं यह सब करणी माता की ही माया और चमत्कार माना जाता है।

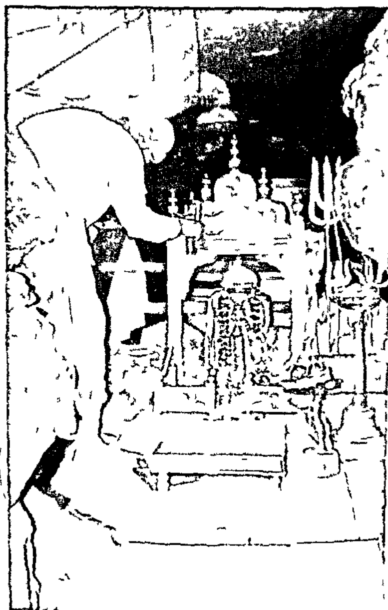
पश्चिमी देशों मे रहने वाले लोगा में देशनोक मन्दिर के वारे मे अत्यधिक भ्रमपूर्ण एव अज्ञानपूर्ण धारणाएँ प्रचलित है। वहाँ पर इस मन्दिर को 'चूहों का मन्दिर' क रूप में ही जाना जाता है। इससे प्राय सभी लोग यह समझते है कि इस मन्दिर मे चूहा को खूब खिलाया पिलाया जाता है तथा उसकी पूर्ण रूप से सुरक्षा की जाती है। वहाँ के लोग 'काबो' की पवित्रता तथा तत्सम्वन्धा मान्यताओ से अनभिज्ञ है। क्योंकि विदेशी पयर्टकों को क्या पता कि यह 'चूहा का मन्दिर' नहीं है यह एक एसी देवी का मन्दिर है जो हिन्दुओ मे प्रतिष्ठित तीन महान् देवियो (पार्वती, लक्ष्मी एव सरस्वती) में से पार्वती का अवतार समझी जाने वाली देवी करणी का मन्दिर है हिन्दू दर्शन के अनुसार पार्वती शाक्तमत की अधिष्ठात्री देवी है और शक्ति का प्रतीक होने के साथ-साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सृजनहार है। अत यह 'चूहों का मन्दिर' नहीं अपितु पार्वती का अवतार मानी जाने वाली करणी माता का मन्दिर है जो 14वीं एव 15वीं शताब्दी मे विद्यमान थी तथा जिनके वरदानो से जोधपुर तथा बीकानेर जैसे बडे राज्यो की स्थापना हुई।

कई विदेशी विद्वानो प्रोफेसरो व लेखकों ने करणीजी के ऐतिहास का सकलन करके अपने देशा में श्रीकरणीजी से सम्बन्धित सभी भ्रान्तियाँ दूर की हैं। जिनमें आस्ट्रेलिया के सिडनी विश्वविद्यालय व एन एस डब्ल्यू विश्वविद्यालय के इतिहास नेतृत्व विभाग ने करणी माता सम्बन्धी शोध योजना की स्वीकृति 'एम हारकोर्ट' को दे दी। नृतत्त्व विज्ञान विभाग की कुमारी किम पौल ने भी नृतत्त्व-शास्त्र की दृष्टि से शोध करने का निश्चय कर पीएच डी के शोध प्रबन्ध के लिए 'करणी माता और उनका सम्प्रदाय' विषय चुना। इस प्रकार अनेकों विदेशी पर्यटका ने श्रीकरणीजी के बार में अपनी ओर से काफी जानकारियाँ लोगों तक पहुँचाया है जिसका प्रमाण है कि आज प्रतिदिन सैकड़ों विदेशी पर्यटक करणीमाता की जानकारी लेकर उनकी ख्याति का समझते हैं। □



साहित्य में
शक्ति का गुणगान

श्री करणीजी की आरती करते हुए बारीदारजी



करणी भक्त मण्डल

सरदारशहर से देशनोक पैदल यात्री सघ

सचालक किशनालाल आँचलिया

साहित्य मे शक्ति का गुणगान

राजस्थान की धरती शूरमाओ की धरती रही है। यहा के कण-कण में वीरता और पराक्रम रमा हुआ है। ऐसे वीरों का प्रदेश, शक्तिमानों का शक्तिशाली प्रदेश, माँ शक्ति का उपासक हो और यहा के कण-कण मे शक्ति का सचार होता रहा हो तो क्या आश्चर्य है। यहा की प्रकृति और वातावरण सभी पौरुष और शक्ति से ओत-प्रोत रहे हैं। यहा के योद्धाओं ने माँ शक्ति का आह्वान करके बड़े से बड़े सामाज्य से भी टक्कर लेने का साहस दिखलाया है। शक्तिमान होकर जीना ही यहा पर जीवन की सार्थकता मानी गई है। शक्ति-हीनता यहा के जीवन के लिए सबसे बडा अभिशाप रही है। ऐसे प्रदेश का साहित्य भी माँ शक्ति के गुण-गान से गुजरित और भरपूर हो—यह स्वाभाविक ही है। प्राचीन राजस्थानी साहित्य और लोक-गीतों के माध्यम से माँ शक्ति का यशोगान यहा के निवासी परम्परा से करत आ रहे हैं। दोहा, सोरठा, छप्पय और कवित आदि अनेक छन्दों, डिगल गीतों और चिरजाओं द्वारा यहा के कविताओं ने मुक्त कण्ठ से शक्ति का यशोगान किया है। परम्परा से गाये जाने वाले लोक-गीतों में भी शक्ति-स्तवन काफी मात्रा में विद्यमान है। यहा के महाभाग कवियों मे, जिनमें चारणों का प्रमुख स्थान रहा है—शक्ति के यशोगान में समृद्ध साहित्य का सृजन किया है, जो डिंगल गीतों और चिरजाओं के रूप में बाहुल्य से पाया जाता है। यहा के योद्धा राजपूतों ने भी जिनमें राजा और सामन्त भी शामिल है शत्रुओं द्वारा घिरे जाने एवम् विपम सकटों के उपस्थित होने पर माँ शक्ति का आह्वान अपने शत्रुओं का हराने तथा उन्हें शक्ति प्रदान करने के लिए किया है जो उन्हीं द्वारा रचित गीता तथा दोहों से प्रगट है।

इस लेख मे प्रथम उन नरेशों और राजपूत सामन्तों द्वारा रचित प्रासगिक फुटकर रचनाओ पर प्रकाश डाला जा रहा है।

पूगल का राव शेखा भाटी जो विक्रम की पद्रहवीं शती के अन्तिम चरण म विद्यमान था, सिन्ध और मुलतान के प्रान्तो में लूट-पाट किया करता था। एक बार मुसलमानो द्वारा किसी प्रकार पकडा जाकर वह मुलतान के किले में कैद कर दिया गया। कैद से अपनी मुक्ति का अन्य कुछ भी उपाय न देखकर उसने शक्ति की अवतार मानी जाने वाली चारण कुलोत्पन्न देवी करणी को याद किया। यह दाहा रचकर बडे ही आर्त भाव से वह बार-बार उसे रटता हुआ करणीजी को पुकारने लगा—

बाहू चळी निरम्मळी, चख बींभळी सुरत्त।
आजे करनळ अक्कळी, सँवळी रूप सगत्त।।

कहा जाता है कि करणी की कृपा और चमत्कार से उसे उस कैद से मुक्ति मिली।

स 1591 वि मे मुगल सम्राट् बाबर के द्वितीय पुत्र कामराँ ने—तो उस समय काबुल प्रान्त का स्वामी था—बीकानेर के राजा राव जैतसिह पर चढाई की—

मालिक काबुल मुलक रो, कमरो साजि कटक्क।
जग करण नृप जैत सू, आयो लाघि अटक्क।।

(मेहाई महिम')

भटनेर का गढ राठौडों से जीतकर वह सीधा बीकानेर पर आया। उसके साथ कवच बख्तरा से लैस बहुत बडी घुडसवार सेना थी। उस विशाल एवम् शक्ति-शाली सेना का मुकाबला करने मे अपने को असमर्थ जानकर और



बीकानेर दुर्ग की रक्षा का भार अपने वीर सरदारों पर छोड़कर राव जैतसी देशनोक पहुंच और करणीजी के मंदिर में उपस्थित होकर उन्होंने आर्तभाव से युद्ध में दैवी सहायता के लिए देवी से प्रार्थना की—

छप्पय

जैत कमध कर जोडिया, जीहा ये जपत्त।
करनळ रिडमल वाघ री, पाळ करो त्रिसकत्त॥
पाळ करो त्रिसकत्त, जेज नह कीजिये।
जैतो सरण राज, ऊबारे लीजिये॥
लिया संग नवलाख, सकत्तिया झूलरा।
आवो करणा देवि, ऊबारण आपरा॥

तत्पश्चात् देवी आदेश से उन्होंने अपनी उसी अपर्याप्त सेना के साथ मुगलों के उस विशाल सैन्यदल पर रात्रि-आक्रमण किया और मुगल दल को मार भगाने में सफल हुए। इसी प्रसंग को लेकर महाकवि हिंगलाजदान कविया सेवापुरा (जयपुर) ने अपनी रचना मेहाई-महिमा में बड़ा ही सजीव वर्णन किया है, जो इस प्रकार है—

जोय कटक नृप जैत, सहर देसाण सिणायो।
साथ पचीस सवार, ईस्वरी कदमाँ आयो।
वळ दे दे बाकरा, भणे जय जय भगवत्ती।
धारि रूधिर मद धार, छाक दीधी छत्रपत्ती॥
जळमृक सजळ बीजळ जिसी, धकै खाग खेटक धरी।
कर जोड जुलम जालिम कथा, कमध मोड मालिम करी॥
उरड मेच्छ आविया, मुरडि जगळधर माथै।
झगि तोडा दव झड, खडे घोडा जव खाथै॥
बह हरोळ जळ बीज, कीच चन्दोल कदम्माँ।
थाट जाण थाटियो, पुन दस आठ पदम्माँ॥
पाताळ लोक आतम पडे, अड आभ भाला अणी।
जा हूत भिडै जैतो जठै, तनै लाज मेहा तणी॥

सं. 1797 वि. में जोधपुर के तत्सामयिक राजा अभयसिंह ने अपनी शक्ति-शाली सेना के साथ बीकानेर को जा घेरा।

वहां के कतिपय विद्रोही सरदार भी महाराजा अभयसिंह से जा मिले। ऐसी संकटापन्न स्थिति का सामना करते हुए बीकानेर के तत्कालीन नरेश जोरावरसिंह ने देशनोक स्थित देवी करणीजी को उपालंभ देते हुए आर्तभाव में प्रार्थना की—

डाढाळी डोकर थइ, कातृ गइ विदेस।
खून विना क्या खोसते, निज बीका रो देस॥

अलवर के राजा बख्तावरसिंह ने करणीजी की स्तुति में दो दोहे रचकर अपनी तलवार की मूठ पर खुदवाये थे—

घम् घम् बाजे त्रिमागळा, हुवे नकीया हल्ल।
सादा आजे सम्वळी, किनियाणी करनल्ल॥
वाढाळी वहताह, राढाळी त्रम्बक रुडै।
साढाळी सहताह, डाढाळी ऊपर करै॥

शेखावाटी के प्रमुख शहर नवलगढ के चतुर्थांश के अधिकारी एवम् मुकुन्दगढ के ठाकुर रावल बाघसिंह शक्ति के अनन्य उपासक थे। उन्होंने दुर्गा सप्तशती (संस्कृत) का छन्दोबद्ध हिन्दी अनुवाद रचकर अपनी काव्य-प्रतिभा और शक्ति-उपासना का अच्छा परिचय दिया था। उनकी रचनाओं में से दो दोहे यहाँ उद्धृत किये जा रहे हैं।

दोहा

सप्त लोक चवदह भुवन, देशाँ कीरति खम्ब।
सिंह चढी दुष्टन दलन, जय जय जय जगदम्ब॥
आदि शक्ति अन्नाद, श्री जगदम्बा ईश्वरी।
कर बाधा न याद, शरण चरण राखो सदा॥

रियाँ (मारवाड) के ठा. गणपतसिंह मेडतिया (राठौड) की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमकुमारी शेखावत खडेला ने खुडद ग्राम में जन्मी शक्ति का अवतार मानी जाने वाली इन्द्र कुंवरी की प्रशस्ति में 'इन्द्र यशोदय' नाम से पद्यमय रचना का सृजन किया था, जिसके प्रारंभ में समर्पण के दोहे इस प्रकार है—

खुडद भूम खेजड घणाँ, आक कैर अणपार।
इन्द्र कुवरि प्रगट्या उठै, बार बार बलिहार॥



चिरजावाँ उत्तम चरित, गायन प्रेम गवाय।
कराँ समरपण कोड सूँ, इन्द्र कुवरि सुण आय।।
मीराँ ने गिरधर मिल्या, म्हानै इन्द्रा माय।
कर जोडे अरपण करूँ, चिरजा-गायन चाय।।
आँधा नै दी आँख, पग दीधा केई पागळाँ।
जननी मो दिस् झाख, प्रेम भक्ति सुण प्रेमरी।।

चारण कवियों ने तो सभी ने अपनी योग्यतानुसार माँ शक्ति के यशोगान में कविताएँ रचकर राजस्थानी साहित्य के भण्डार को भरने और समृद्ध बनाने का अथक पयत्न किया है। प्रत्येक शताब्दी और प्रत्येक समय के चारण कवि ने हिंगलाज, आवड़, बिरवड़ी, राजबाइ और करणी आदि शक्ति अवतार मानी जाने वाली देवियों एवम् दुर्गा, चामुण्डा तथा काली आदि नव दुर्गाआ की स्तुति में सैंकड़ों ही नहीं हजारों छन्दों, गीतों और चिरजाआ का सृजन किया है। उन सभी ज्ञात और अज्ञात कवियों द्वारा रचित शक्ति-स्तोत्रों का यदि सकलन किया जाये तो कई बड़े-बड ग्रथ तैयार हो सकते है।

चारणा में श्री हुक्मीचद खिडिया का नाम उच्च श्रेणी के डिंगल-गीतकारों की अग्रिम पक्ति मे आता है। उनके रचे हुए एक गीत के, जिसकी गणना सर्वश्रेष्ठ गीतों में की जाती है—तीन दोहे इस प्रकार है—

वेदा वरन्नी अलोका भेदाँ, तुलज्जा तरन्नी वाला,
रगी सूळ ओकाँ तोकाँ धरन्नी रगत्त।
अधोका राकेस सीस, धरन्नीधरन्नी ईस,
सरन्नी त्रिलोका नमो करन्नी सगत्त।।1।।
आभानळे नूर छाजे, नमीना मयक वाळी,
छीना लकवाळी, बाजै घटिका छुद्राळ।
जुगाँवारी दिहारी पै विहारी अनन्ता जयो,
मेहारी तन्नजा जयो, घटाळी मुद्राळ।।2।।
मत्ती क्रोध दावा दूठ, दाहणी असन्त माडाँ,
सन्त चाडाँ आवै सीघ्र, चाहणी सादेस।
बूडती जिहाजाँ सिन्धु-थाहणी अथाह बाहाँ,
ग्राहणी साहाँ-सिंधवाहणी आदेस।।3।।

अब एक और अन्य गीत का नमूना भी देखिये—

गीत

थडाँ सोखणी राक्षसा पाता पोखणी भरोसै थारै,
रवि पथाँ गैणागाँ रोखणी सुराँ राय।
तमो गुणी खळाँ, सिन्धु थोगणी साह नैं तारै,
बीदगाँ आवरू आद जोगणी बधाय।।1।।
लोपताँ प्रजाद काज सन्त रै न ढील लाई,
कुचाल छुडाई पातसाह री करूर।
वेळ प्रथीराज री करी तूँ अम्बा राज बाई,
जेज लम्बा हाथवाळी न लाई जरूर।।2।।
गुणाँ ब्रह्मा वेद भाषा भेद ले पुराणाँ गायो,
पायो न को नाग देवाँ रूप रो प्रमाण।
आसुराँ सुराँ रै घणों उराँ में अचभो आयो,
समायो उद्र में माता 'हाकडो' सन्हाण।।3।।

तीसरा गीत

इच्छा वैराट उपाया, जै नमस्ते नमो आदेसुरी,
समस्ते रचाया रूप अनेकाँ सनाद।
गणाँ पति सारदा ब्रह्मा बिष्णु रुद्र गाया,
अम्ब महामाया नमो सगत्ति अनाद।।1।।
सुप्रभा मोहनी देवाँ दानवाँ मथाया सिन्धु,
बाघ-आरोहिणी महक्काँ सुराँ विहड।
चण्ड रक्तबीज शुभ, त्रिसूलाँ डोहनी चडी,
मडी टेक प्रचडी, सोहनी विश्व मड।।2।।
गैण लागी छटा में, बीजळा झळा रूप गाजै
इन्द्र कळा रूप छाजै छटामें अनूप।
छोळाँ सिन्धु तटा में प्रजादा राणा रूप छाजै,
राजै रुद्र जटा में तरगाँ गगा रूप।।3।।
प्रथी अम्ब बाय तेज आकास समाणी प्रभा,
बडा बडी कहाणी, अनन्ताँ प्रळै बार।
रुद्राणी ब्रह्माणी महाराणी श्री जानकी राधा,
देवी त्रिहुँ लोक प्राणी बाँधा माया द्वार।।4।।

बीसवीं शताब्दी विक्रमी के उत्तरार्द्ध में विद्यमान महाकवि हिंगलाजदान कविया गाव सेवापुरा (जयपुर) रचित 'मेहाई-महिमा के आरभ के दो छप्पय साहित्य-



सेविया के मनोरजनार्थ नीचे उद्धृत किये जा रह है। इनकी रचनाओ म डिगल काव्य की सभी विशेपताए पाई जाती है। बैणसगाई, अनुप्रास आदि का तो अतिसुन्दर खुलकर प्रयाग किया गया है।

छप्पय

आकार अपार, पार जिणरो कुण पावै।
आदि मध्य अवसाण, थकाँ पिण्डाँ नहँ थावै।।
निरालम्ब निरलेप, जगत गुरु अन्तर जामी।
रूप रेख बिण राम, नाम जिणरो घण नामी।।
सच्चिदानन्द व्यापक सरब, इच्छा तिण सूँ ऊपजै।
जगदम्ब सकति त्रिसकति जिका, ब्रह्म प्रकृति माया बजै।।
जिण दानव जीतिया, महादारुण रण मड्या।
सजि नौ कोड सरीर, बीर रणधीर बिहड्या।।
लोयण धुम लुळाय, सुभ निसुभ सहार्‍या।
रक्तबीज आरोगि, मुण्ड चण्डादिक मार्‍या।।
खड्या अनेक आकृति खळाँ, जोति हेक बपु जूजवा।
जाँ मध्य राज राजेस्वरी, हिंगळाज परगट हुवा।।

खुडद गाव में शक्ति का मठ स्थापित करके करणी माता की सेवा करने वाली इन्द्र कुवरी बाई ने, जिन्हे अधिकाश श्रद्धालु भक्त शक्ति का अवतार मानते थे और अब भी मानते है—करणी माता की स्तुति मे अनेक चरजाएँ रची थीं, उनमे से एक चरजा नीचे उद्धृत की जा रही है—

चरजा

करनल किनियाणी, धनि धनि धिरीयाणी जगळ देसरी।।टेर।।
मृरख कान्ह सगत न मानी, बीरोटणी वखाणी।
हो सिंघ रूप आछटी हाथळ, मार लियो माडाणी।।
रिडमल तणै मरुधरा राखी, है साखी हिन्दवाणी।
वकसी मात राव वीका नै, धर थळवट राजधाणी।।
वाई इन्द्र रावळी वाळक, तेडै दरसण ताणी।
रामत खुडद पधारो रमवा, अम्वा धावळयाणी।।
करनल किनियाणी

इस प्रकार प्राचीन और अर्वाचीन राजस्थानी साहित्य में शक्ति-स्तवन का साहित्य भरपूर मात्रा में पाया जाता है।

वीरभूमि राजस्थान अपने शौर्य, पराक्रम, जौहर, शाका और सती-शूरमाओं के लिए सुविख्यात है। अत राजस्थानी काव्यो में शक्ति-स्तवन की समृद्ध एव सुदीर्घ परम्परा प्राप्य है। राजस्थानी नरपुगवों ने साक्षात् शक्ति-स्वरूप धारण करके मरुधरा में मौत की हाटें लगाई हैं तो रण-चडिका भी रास रचकर मरण की मगलवेला की कामना करती रही है। राजस्थान क राजपूत व चारण-समाज में शक्ति-पूजा की प्रधानता रही है। चारण अपने को देवीपुत्र मानते है। फिर डिगल काव्यकार प्राय चारण, राजपूत होने से भी शक्ति-स्तवन सहज स्वाभाविक है। शक्ति-पूजा के मूल म भय व कष्ट-निवारण, इष्ट-प्राप्ति आध्यात्मिक एव आत्मिक-सतोप की भावना रही है।

देवी के अवतारो सम्बन्धी विपुल राजस्थाना साहित्य रचा गया है। अनेक चिरजाएँ, गीत, नीसाणी पवाड़े, स्तुतियाँ, दोहे, सोरठे विभिन्न कवियो ने रचे है। करणीजी सम्बन्धी अनेक डिगल गीत, चिरजाएँ व अन्य विधाआ के काव्य मिलते है। आवड जी, करणी जी राजबाई और जीणमाता के पवाडे या परवाडे तो प्रसिद्ध है। यहाँ के कवि शक्ति का शौर्यपूर्ण आह्वान करते आए है। प्रस्तुत सोरठा देखिए—

वडकै डाढ बराह, कडकै पीठ कमट्ठ रीं।
धडकै नाग धराह, बाघ चढै जद बीस हथ।।

पृथ्वीराज रासो के रचयिता कवि चन्दबरदायी ने श्रद्धाभाव से आदि शक्ति की स्तुति की है—

नमो आदि अन्नादि तू ही भवानी,
तू ही जोगमाया तू ही वाकवानीं
तू ही भूमि आकाश वियौ पसारै,
तू ही मोहमाया बिरवै शूल धारै।।
तू ही वेद विद्या चवद्दी प्रकाशी,
तू ही मुण्ड चौवीश की रूप राशी।।



तू ही एक अन्नेक माया उपावै,
तू ही ब्रह्म विश्वेश विष्णु कहावै।।

कवि चन्द ने शक्ति को अनादि यागमाया वाणी, भूमि, आकाश, भवानी सर्वस्व बताया है। हरिरस तथा हालाँ झालाँ रा कुडळिया के कवि ईसरदास तो 'ईसरा सा परमेसरा' प्रसिद्ध है। इस भक्त कवि के काव्य 'देवियाण' में शक्ति का स्वरूप विवेचित है। कवि ने कहा है—

देवी सरस्वती लक्ष्मी महाकाली।
देवी कन्निया कृष्ण वामा कमाली।
देवी पनगा रूप पैयाल पसँ।
देवी देवता रूप तू स्वर्ग दर्शे।।
देवी आदि अनादि ओंकार वाणी।
देवी हक्क हकार हकार जाणी।
देवी मनच्छा माइया जगत् माता।
देवी ब्रह्म गोविन्द शकर विधाता।
देवी वापडा मानवी किसू बूझै।
देवी ताहरा चरित तोहीज सूझै।।

कवि ने देवी की विविध नामों से स्तुति करते हुए उसे ही सीता चडी कालिका, केकयी हिंगळाज, ब्रह्मा गौरी, सावित्री अष्ट सिद्धियाँ और नवनिधियाँ आदि कहा है।

कविया मानदानजी ने हिंगलाज माता के अवतार आवडजी की स्तुति करते हुए कहते है

मदध सिंध देश में समद नाम हाकडो।
हिलोल लेत पोल को सलील छोल छाकडो।।
समेट थेट थाह लेय पेट में मुवावडा।
नमो ज मात बीस हाथ पात पाल आवडा।।

एक गीत में इस विशाल समुद्र को सोखने का वर्णन मिलता है—

आठसै कोस बहतो समँद हाकडो।
छोल जल छाकडो जोम छायो।।
पेट रो चडो परमाण मत्र पाकडो।
मात वो हाकडो केम मायो।।
आचरी भरी एका चलू ऊधरी।
धारणा क्रोध री निजर धेटी।।
शगत कर गई इक घृट उण समद री।
दूसरी भरी ना फेर दीठी।।

अलवर नरेश विनयसिंहजी के समय धरना में बैठे कविया रामनाथजी (पाबूजी रा सोरठा एव करणा बहत्तरी के रचयिता) ने करणीजी की चुनौती भरी स्तुति की तो देवी को प्रकट होकर नरेश के महल ढोलिया को हिलाना पड़ा। कवि का आह्वान था—

व्हे सिंघ होफरडीह, पतशाहा परचा दिया।
डरपी डोकरडीह, मा आती मेवात म।।

महाराजा महल व ढोलिया के हिलने पर दीवान से परामर्श करने लगे और इस सकट में महारानी देवी से पति-रक्षा की याचना करने लगी। अत में कवि को भी तुरन्त न्याय के लिए मदद करने पर देवी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करनी पड़ी—

व्हे सिंघ होफरडीह, पतशाहा परचा दिया।
डग भर डोकरडीह, मा आई मेवात मे।।

फिर तो नरेश ने अलवर के किले मे करणीजी का मदिर तक बनवाया। अलवर नरेश बख्तावरसिंहजी ने तो करणी सम्बन्धी दो दोहे तलवार की मूठ पर खुदवाए थे, जो उनके लिए महामत्र थे। यह तलवार आज भी अलवर मे मौजूद बताते है। युद्धार्थ शक्ति का शौर्यपूर्ण आह्वान है—

घम घम बाज त्रमागळा, हुवै नकीबा हल्ल।
सादाँ आजे सम्मळी, किनियाणी करनल्ल।।
बाढाळी बहताह, राढाळी त्रम्मक रुडै। (रुडै)
साढाली सहताह, डाढाली अपर करै।।

अत मे भगवती करणीजी के ही अवतार इन्द्र बाईसा खुडद द्वारा गाई गई हिंगलाजदान जी सेवापुरा कृत चरजा- को उद्धृत करने का लोभ सवरण नहीं कर पा रहा हू जिसमें अनेक परचो या परवाडों का उल्लेख है।

चरजा

करनल किनियाणी जी धिन थिन धिनियाणी जगळ देस री।।टेर।।
मूरख कान्ह सगत न मानी, बीरोटणी बखाणी।
व्है सिंघ रूप आछटी हाथळ, मार लियो माडाणी।।1।।
रिडमल तणी मरुधर राखी, है साखी हिंदवाणी।
बगसी मात राव बीका ने, धर थळवट रजधाणी।।2।।
खडतो ऊँट टूटता खाती, बोल्या आरत वाणी।
करणी काठ तणों पग कीधो, जग सकळाई जाणी।।3।।
सँमली रूप धार शखा री, छिन में कैद छुडाणी।
दम्मी रूप कूप अणँदा रै, पकडी लाव पुराणी।।4।।
डूबत नाव (झाझ) त्यार डाढाली, उदधि किनारै आणी।
समँदर नीर सीर दशाण, सहर अजौ सहनाणी।।5।।
बाई इन्द्र रावळी बालक, तेडै दरसण ताणी।
रामत खुडद पधारो रमवा, अम्बा धावळियाणी।।6।।

ऐसी भगवती करनल के परवाडो का वर्णन सभव नहीं। मोतीसर बखतवर जी सींथल के शब्दो मे यही कह सकते है—'प्रवाडहु तूझ तणा नहि पार, कलू करनल्ल कला अवतार।। राजस्थानी काव्य में शक्ति-स्तवन की अखण्ड परम्परा मे करणीजी विषयक काव्य मार्मिक एव बहुमूल्य है। शक्ति-पूजा की दृष्टि से यह काव्य भावुक भक्तो के लिए जीवन का अभिन्न अग है। मानव-मूल्या की स्थापना एव अक्षुण्णता मे ही नहीं, भक्ति-भावना की अभिवृद्धि मे भी इस काव्य की विशिष्ट महत्ता है। न मालूम कितने लोगा को यह नित्य नवीन प्रेरणा प्रदान करता है न मालूम कितने भक्तो मे नई आशा उमग और आस्था का सचार करता है। सामाजिक धार्मिक, नैतिक आध्यात्मिक एव सास्कृतिक दृष्टि से राजस्थानी शक्ति-स्तवन-काव्य उपादेय है। भारतीय भक्ति-साहित्य म इसका अनुपम स्थान है। सम्पूर्ण सृष्टि की आदि शक्ति का सूचक यह काव्य भावात्मक एकता की दृष्टि से भी बेजोड है।

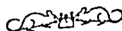
राजस्थान का इतिहास वीर एव वीरागनाओं की जीवन गाथाओं से प्रकाशमान है। यह सत्र शक्ति की महिमा है। राजस्थान शक्ति का पुजारी है। यहाँ बहुत बड़ी सख्या म माता क 'स्थान' हैं। दुगा-पूजा क दिनों मे राजस्थानी जन-साधारण के हृदय में अपार उत्साह हिलोरें लेने लगता है। घर-घर में लोग 'ज्योति' के दर्शन करके धन्य होते है। अनेक स्थानों पर छोटे-वडे मेले लगते है। इन मेलो में दूर-दूर से भक्त-यात्री आते है और अपनी मनौती मना कर धन्य होते है।

जिस प्रकार राजस्थानी जन-जीवन मे शक्ति-पूजा की महिमा व्याप्त है, उसी प्रकार राजस्थानी साहित्य भी दुर्गाभक्ति विषयक विविध रचनाओं से परिपूर्ण है। राजस्थानी भक्ति-साहित्य मे राम-भक्तिर और कृष्ण-भक्ति के समान ही दुर्गा-भक्ति सम्बन्धी एक प्रबल काव्यधारा भी पुरानी परम्परा से चली आ रही है। परन्तु अभी तक इस दिशा में पर्याप्त अध्ययन नहीं हो पाया है। राजस्थान मे पौराणिक और लौकिक देवियो की चरित्र-कथाओ के अतिरिक्त उनके स्तुति-स्तवन अति मात्रा मे विरचित हुए है, जिनका अल्पाश भी अद्यावधि प्रकाश मे नहीं आ सका है।

चारण जाति में उत्पन्न होने के कारण पीरदान क लिए शक्ति का उपासक होना स्वाभाविक ही है । उसने अपने काव्य *गुण हींगळाज रासौ*' में देवी की प्रार्थना की है। 'दुर्गा सप्तशती' की भाँति कवि ने असुरविनाशिनी देवी के अनेक अवतारो और स्वरूपो को एक ही आदि शक्ति का रूप मान कर वर्णन किया है। आरम्भ में ही वह स्तुति करता है—

'हे किनिया शाखा मे उत्पन्न माता करणी आपको नमस्कार है। आपके अत्यधिक बल को दैत्य भी जान गये। आपने वडे-बडे असुरा का मद-मोचन किया है। आपने महिपासुर को पकड कर मार डाला। राक्षसों पर आपका दड-प्रहार हमेशा होता है। हे चामुडा! अज्ञानी चण्ड और मुण्ड आपके स्वरूप और बल को पहचान न सके। शुम्भ और निशुभ जैसे दुर्धर्ष व छली दैत्यों को भी आपने मार डाला और इस प्रकार त्रिलोकी के स्वामी तक का भय दूर किया—

करनल मात निमो किनियाणी, तूँ जारावर दइता जाणी।
माटे असुर तणा मद मोडे, तूँ मयासुर झालि मरोड़े।
दइता रै ऊपरि थारो दड, चड मुड कद चीना चामड।
सभ निसभ सरिखा छळिया त्रिभुयणनाथ तणा भौ टळिया।



एक शक्ति राजबाई और उनका साहित्य

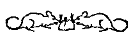
राजबाई का जन्म सोलहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध म हुआ था। इनके ग्राम का नाम चिडासरा, चूडियासरा या चूडियाला था। यह ग्राम जैसलमेर के पास है। इनके पिताजी का नाम उदोजी था जिसके आधार पर राजबाई के लिए डिगल गीतो में उदाई' नाम प्रयुक्त हुआ है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित गीत द्रष्टव्य है—

चूडियाळो चारणा रो, जठै जागी जोत।
भला जलम्या राजबाई, हरख कविघर होत।।
तो उदोत जी उदोत, धिन पिताघर उदोत।

राजबाई ने वचपन से ही अपने आपको करणीजी की उपासिका वतला कर सासारिकता से दूर रह कर पवित्र जीवन व्यतीत किया। पाँच वप की आयु में इन्होन पिता के साथ कोलायतजी की यात्रा की। एक लोक-प्रवाद प्रचलित है कि इस यात्रा मे उनकी 'वैली का एक बैल थकावट के कारण चलने में असमर्थ हो गया था अत उन्होंने उसे महाराजा पृथ्वीराज के यहाँ छोड दिया और उसके स्थान पर उनसे दूसरा वैल लेकर यात्रा की। वापस लौटते समय पृथ्वीराज ने उनका खूव आतिथ्य भी किया और कई दिन तक उन्हे करणीजी के मदिर मे ठहराया। इससे राजबाई इनस बडी प्रसन्न हुई और अपना बैल लेकर जैसलमेर चली गई।

बादशाह अकबर, आमेर के मानसिह और पृथ्वीराज का विवाह जैसलमेर के भाटियो के यहाँ हुआ था। एक बार ये तीनों किसी विवाह के अवसर पर जैसलमेर गये हुए थे। वहाँ राजबाई भी उपस्थित थी। स्त्रियों ने इन तीनों से ही अश्लील प्रश्न किये। उनका बादशाह और मानसिह तो उत्तर दे रहे थे परन्तु पृथ्वीराज मौन थे। जब उनसे पूछा गया ता उन्हाने कहा—मै राजबाईजी के सामने ऐसी धृष्टता कैसे कर सकता हूँ।' इस पर राजबाई ने कहा—पीथल। तुमने मेरी लाज रखी अत समय पडने पर मै तेरी लाज रखूगी।' दूसरे दिन अकबर की विवाहिता भटियाणी जी ने पृथ्वीराज की विवाहिता किरणा देवी से एक साथ भोजन करने का आग्रह किया तो उन्हाने कहा—'मेरा और आपका धर्म अलग-अलग है, अत मै आपके साथ भोजन नहीं कर सकती।' इस पर भटियाणीजी किरणा देवी से नाराज हो गई और उनसे वदला लेने की ठान ली। एक दिन अकबर भटियाणीजी के रूप की प्रशसा करने लगा तो उन्होने कहा—'मेरी बहिन किरणा के रूप के सामने मेरा रूप कुछ भी नहीं है।' इस पर अकबर ने पृथ्वीराज के नाम से किरणा देवी का एक नकली पत्र लिखवा कर उसे आगरा बुलवा लिया और मीना बाजार म उसकी इज्जत लूटने का निश्चय कर लिया। पृथ्वीराज को नजर कैद कर लिया गया। उस समय पृथ्वीराज अपनी आराध्य देवी राजवाई की स्तुति करने लगे। पृथ्वीराज द्वारा रचित राजबाई की स्तुति से सम्बद्ध निम्न डिगल गीत अत्यन्त प्रसिद्ध है—

गोखा गिरनार हूत गज गामण।
काकडराय आप शिव कामण।।
ज्वाला मुखी आव जग जाँमण।
सकट हरण महा सुर साँमण।। 1।।
धवला गिरै साधे धिणियाणी।
सिंघल दीप हुता सुर राणी।।
कामरु देश कमख्य कहाणी।
करि छोरु ऊपर किनियाणी।। 2।।
काशमीर मन इच्छर काळी।
चामुड चालराय चिरताळी।।
तेमडराय बाजता ताळी।
वहना सहित आव बिरदाळी।। 3।।
बिरवड अन्नपूर्ण वेदाई।
हिंगलाज गिरि हेम सुताई।।
काछ पचाळ कोटडा राई।
हेलो सुणत आव मेहाई।। 4।।
मढ दुगोर राय जग माता।
राणी माढ आप रग राता।
साकभरी स्वदीपा साता।
त्रिपुरा आप आव तन त्राता।। 5।।
बदनोर सुथानक गिरवासी।
नगर कोट नीमडा निवासी।।
बागा अम्ब बसत विलासी।
काटण कष्ट आव पति काशी।। 6।।



तू पारवती हेम सु तनया।
खीर समद रूप चित खमया।।
त्रिपुरा तारा तरणी तनया।
अरबुद हूत पधारो उभया।। 7।।

ऊभै बधव कीधा अगवाणी।
सकति झूल सह साथ सुहाणी।।
सेवग साद सुणत सयाणी।
कीनी ढील किसू किनियाणी।। 8।।

विमरा गिरा तरा नित वासी।
सूर कोटि तन जोति प्रकासी।।
खड आवो नाहर रथ खासी।
आशावरी पूरवण आसी।। 9।।

सकट हरण महा सुरराई।
गुण बेदा बिरम्मा मुख गाई।।
हेलो सुण सभो उदाई।
ऊपर करण पधारो जी आई।। 10।।

घाट विकट मेटण घटाळी।
नाता खडो बाजता ताळी।।
पढता चाडज काछ पचाळी।
धाबों करनल धाबलवाळी।। 11।।

साँचा धणी मेट दुख समरथ।
पूत पुकार न जेज करो पथ।।
बिरद सँभाल आपरो बड हथ।
आवो बेग राखवा यल कथ।। 12।।

शेखा वार जिहाज सुतारणि।
आई पीथल लावू उवारणि।।
सेवग चायज काज सुधारणि।
चेला सहित पधारो चारणि।। 13।।

एक अन्य गीत की कुछ पक्तियाँ भी द्रष्टव्य है—

कर कपट पतिशाह राज बुलाई राणी।
सुणी यात पृथ्वीराज अधिक चिंता मन आणी।।
आर नहीं आसरो आज मात तर आई।
श्रवणा अरज सुणो राजबाई उपाई।।
जण जै जेज लागै जणा, ताखड बाहन तेडियो।
सेवगा काज तादिन सगत, खाखर बाहन केडियो।।
पीथळ साज्या काछ पचाळी।
ध्याज्यो राजल धावळयाळी।।

एक दोहला और देखिए

अम्मा मोकू छोड अबकै, बादशाह सुण बाक।
नवरोजा फेर ल्यू तो तीन सौ तल्लाक।
तो धन धाक जी, धन धाक धूजै पातस्या धन धाक।।

एक राजबाई की प्रसिद्ध चरजा जो चारण कवि कल्याणदान द्वारा रचित है उदाहरणार्थ नीचे दी जाती है—

राजल धर मृगपत को रूप भूप की लाज रखाई है।।टेर।।
इक दिन शाह हुरम से कह था।
खुदा रूप दिया तुमको कैसा।
ऐसी ओरत ओर हमारे निजर न आई है।। 1।।
हुरम कहे सुण मति बदशाही।
रूपवती तुम देखी नाही।
मोसो छोटी बहन शहर बीकाणै ब्याही है।। 2।।
सुणत शाह बाहर उठ आया।
कोटवाल को तुरत बुलाया।
पृथ्वीराज से कहो तेरी ओरत बुलवाई है।। 3।।
पृथ्वीराज को पास बिठाया।
खुद दसकत कागज लिखवाया।
दूती दो बुलवाय शाह ने गुपत पठाई है।। 4।।
कागज बाचत ही महाराणी।
तुरत तज्यो सब अन्न जल पाणी।
पीथळ तणी देख सहनाणी बेगी ध्याई है।। 5।।
पीथळ याद किया महमाई।
सकट हरण पधारो बाई।
धावळयाळ पधार विपद मेरे सिर पर छाई है।। 6।।
महाडोळ मे बैठ भवानी।
सब भूपन मन देख गलानी।
हरण भूप को दु ख रूप बब्बर दरशाई है।। 7।।
डोळा देख खुशी होय आए।



आय नजीक कनात उठाए।
सिंह रूप हो पकड शाह सतखण सिधाई है।।8।।
कोप होय दुरगा फरमावै।
पीर मना तेरी ज्यान बचावै।
आज सगत नोलाख तेरो भख लेवन आई है।।9।।
आदि भवानी तेरे आगै।
पीर क्या पैगम्बर भागे।
देखलई इस बखत घटी सबकी सकळाई है।।10।।
हिन्दू देव शरण में आया।
गाय-गाय कर प्राण बचाया।
'नोरोजा' छुडवाय सात सोगन कढवाई है।।11।।
गाय-गाय सुण आरत बानी।
क्रोध शान्त भई सु आदि भवानी।
कवि किंकर 'कल्याण' राज की चरजा गाई है।।12।।

कुछ दोहले भी इस विषय मे प्रसिद्ध है—

हुरम खाना कुक मारै, याद कर अल्लाह।
पीर ख्वाजा वीर भाज्या देहली दरगाह।
तो पतशाह जी पतशाह प्राण न ऊबरै पतशाह।।1।।

मदद अल्लाह हार मानी, परे निवले पीर।
मदै ही मोहम्मद रसूला, मुसल्लों के मीर।
तो हमगीर जी हमगीर हिन्दू देवता हमगीर।।2।।

इन दोहलों के अतिरिक्त राजबाई सबधी लोक-साहित्य मे एक यह चरजा गाई जाती है—

बीबी करो खुदा को याद नबी नै ज्यान बचाई है।।स्थाई।।
दखत खुशी हुयो मन माही, हूर परी काई आई है।
महा डोळ म देखी मै तो सिंह रूप दरशाई है।।1।।
हिन्दु देव तो वडे उकाबी, पीर डटण नहीं पाई है।
महाडोळ से पकड मुझे तो गढ पै जाय घुमाई है।।2।।
एक पीर आडो नहीं आयो कछू नहीं सकळाई है।
अल्लाह खैर सू प्राण ऊबरे पिछली कोई पुन्याई है।।3।।
एक नवाब हुआ मै एसा, निज मुख कही न जाई है।
उदर भरण कै कारणै मै कुळ को नाश कराई है।।4।।
क्या कहूँ कहणी नहीं आवै ठेट् लाग छुडाई है।
नौरोजा तो माफ किया है कसम खुदा की खाई है।।5।।
चारण काम आदि सूँ चण्डी वेद पुराण बताई है।
पहली पता नहीं था मुझको छत्रिन की यह स्याही है।।6।।
कुल रजपूत मुकत के मुकता, मोसू लाग छुडाई है।
पृथ्वीराज की भगती पूरण बव्र रूप बण आई है।।7।।
बीस हथी अरू बहिन बैचरा, राजल नाम कहाई है।
कह 'हिंगळाजदान' शुभ कीरत पार इला नहीं पाई है।।8।।

□

स्तुति

व्हे सिंह होपरडीह पतशाहा परचो दियो।
डग भर डोकरडीह माँ आज्यो म्हारी बखत।।
खाडल व्हे खोडीह बलि द्वारे क्यू बैठगी।
आजे झट दोडीह, मोडो कर मत मावडी।।
चावड म्हे चोरीह, कोठारा कीधी नही।
महमाया मोरीह बिरियाँ बहरी बीशहत्थ।।
जग जननी तू जो रख दोनू भेळा रक्ख।
लाज रखे तो जीव रक्ख (माँ) लज बिन जीव न रक्ख।।
काहू के धन माल है, (माँ) काहू के परिवार।
म्हें ता एक गरीब हूँ (इक) आप तणो आधार।।
काबा ज्यू काठोह कर राखो माँ मढ तलै।
अलघा सू आबोह, बण नहि आवे बीशहथ।।
राखा जिण विध हूँ रहूँ, कदे न लापू कार।
आज्ञा वश हूँ आपरे, आई। बेग उवार।।
चित मत डरपो चारणा, नासक समय निहार।
जगदम्बा राख जिको मनख सके कुण मार।।
आई रा अहलोल बाई रा यारा पहर।
कवि जन करत किलोल शरण तिहारे शकरी।।
शुध मन सू ध्यावे थनै जीव नहच्चा जाण।
परचा व्हे साचा प्रगट कळजुग में किनियाण।।

दाडी वाली डोकरी



पन्नालाल विजयकुमार

भसाली यास

01564-220451 222451 09414086151

वर्धमान एण्टरप्राइजेज

राजघराना के पास सरदारशहर 09828748204

माँ करणी से सम्बन्धित :

दोहे छद सवैया छप्पय कवित्त इत्यादि



श्री करणीजी की पूजन-आरती करते हुए मिश्रजी महाराज



मरुधर एपरल

16/17 वीओपी नगर कोंगू मैन रोड त्रिपुर 641607
फोन 0421-2221808 (ऑ) मोबाइल 09843020679
प्रो राजेन्द्रकुमार नाहटा

माँ करणी से सम्बन्धित

दोहे, छद, सवेया, छप्पय, कवित्त इत्यादि

त्रोटक छन्द

जय श्री जगदम्ब, जयो करनी।
शरणागत सकट सहरनी।
महि जगल मगल मोद मयी।
छिति पालक सत्य सुछत्र छयी॥ 1॥

शिर हेम किरीट सुशोभित है।
दमकै द्वितीया शशि की द्युति है।
त्रय लोचन रोचन लोक तिहू।
कमलाकृति मोचन क्लेश कहू॥ 2॥

अवलोकनि अम्बुज ज्यो उभरी।
प्रसु पोषण प्रेम पियूष भरी।
कुसुमाकृति कानन कुडल है।
मुख मण्डल तेजस मण्डल है॥ 3॥

बिच भ्रकुटि विन्दु बिराज रही।
शुक नासिक लौंग सु छाज रही।
रद पकति कुन्द कली रुचि भा।
मुख पकज फुल्ल मयक प्रभा॥ 4॥

कच कुचित सौरभ सकुल ह।
मणि माल लसै गल मजुल ह।
लखि आड अभूषण अन्य लजै।
शिति कण्ठ गले गरलेव सज॥ 5॥

रुचिरा शुचि कचुकि रेशम की।
चुडला सित दन्ति द्युती दमकी।
वलयाग्र रुची पहुची बगडी।
मणि ककण रत्न जडी मुदडी॥ 6॥

भुज दक्षिण दिव्य त्रिशूल धरे।
नर मुड विराजत वाम करे।
हृद उन्नत हीरक हार लडी।
तगडी कटि कचन की तगडी॥ 7॥

सलमारू सितारन को सळियो।
धृत पाट बनारस धाबळियो।
जडितागद जोड सु जोधपुरी।
चमकै रिम झोळ घणी सुथरी॥ 8॥

बहुमोल अतोल वने विछिया।
समलकृत जावक है सुछिया।
पद पकज पकज की रज मैं।
रत भक्तन के मन भ्रग भ्रमै॥ 9॥

नित लोवडियाळ लवेश नमो।
सरवेश्वरि सम्भळि भेश नमो।
शरणागत रक्षण ही सरजी।
भुज दो बिच शक्ति सु बीस भुजी॥ 10॥

पृथ्वी महिषासुर मुण्ड पर्यो।
कृपया सुर शत्रु विखण्ड कर्यो।
छविवन्त जरीन सुजीन छज्यो।
जगदम्ब समीप मृगिन्द सज्यो॥ 11॥

करूणा वरूणालय श्री करणी।
वसुधा अवलम्ब विशभरणी।
त्रिपुरेश्वरि शोक त्रिलोक हरी।
धर भार उतारन देह धरी॥ 12॥



वर दायिनी वेदन में वरणी।
तुम मा भवसागर की तरणी।
सिणदूर चरच्चित सूरत य।
थरपी सुमुहूरत मूरत ये।। 13।।

वर वस्त्र विभूषण के विनहीं।
तडितेव चमत्कृत है तनही।
नित नूतन ज्योतिय सी निसर।
प्रतिमा प्रसु रम्य प्रभा प्रसरै।। 14।।

सुखदायक स्वच्छ छटा सरमा।
वरस शिशु वच्छलता वरसा।
घन नाद नगारन के गहर।
धुनि घण्टन लाल ध्वजा फहर।। 15।।

इहिं भाति विराजिय मा उर में।
मम मानस मन्दिर सुन्दर में।
तुमही मम मातु पिता तुमही।
तुमही हित वन्धु धणी तुमही।। 16।।

तुमही धन जीवन विद्वतता।
तुमही सरवस्व मदीयमता।
अखिलादि रु मध्य रु अन्त तुम्हीं।
अनवद्य अनादि अनन्त तुम्हीं।। 17।।

तन धारित में तुम आतम हो।
तुम ही रज सत्व तथा तम हो।
तुम ही प्रकृती तुम पुरुष हो।
त्रय लोक नियन्त्रक अकुश हो।। 18।।

नियती तुम ब्रह्म निरजन हो।
जग रेल चलावन अजन हो।
उतपादक पालक औ प्रलया।
अखिलाधिप हो तुम ही अभया।। 19।।

सकला ऋधि हो निधि हो सिधि हो।
बहु विश्व विधाननकी विधि हो।
तुम कालहु के ध्रुव काल तथा।
जननी जग व्यापित जाल जथा।। 20।।

तुमही प्रसु एक अनेक तुम्हीं।
तुमही व्यतिरेक विवेक तुम्हीं।
सरवोच्च सुन्याय अधार तुम्हीं।
सरकार बडी सरकार तुम्हीं।। 21।।

दुनियाँ दरदी मरदी दुखदा।
समपावत मा गरमी सुखदा।
जब ग्रीषम भीषम प्रज्जलव्है।
वरषा जल भूतल शीतल व्है।।22।।

त्रय लोक त्रिकाल त्रिदय तुम्हीं।
भुवनेश्वरि भैय अभय तुम्हीं।
जप जाग क्रिया व्रत काज तुम्हीं।
तप तीरथ तीरथराज तुम्हीं।।23।।

मत सगति साधु प्रसग थया।
जमुना जरा गग तरग जया।
निगुणी सगुणी अपरच तुम्हीं।
तत पच प्रभूत प्रपच तुम्हीं।।24।।

तुम व्यास वशिष्ठ स्वय शुक हो।
कपिलाख्य मुनी सनकादिक हो।
समृती रु श्रुती षट शास्त्र तुम्हीं।
त्रिगुणीय पदारथ मात्र तुम्हीं।।25।।

जग की हित कारक हो जननी।
हिय क कुविचारन की हननी।
तुम जन्तर मन्तर तन्तर हो।
रुज अन्तक वैद धनन्तर हो।।26।।

बलवन्तन में तुमसो वल ना।
तुमरी कर कौन तक तुलना।
फिरते हम व्हे करता फरजी।
जग होवत होवत जो मरजी।।27।।

नृप रक रु रक नरेश बनै।
बुध अज्ञ रु अज्ञ गनेश बनै।
पल में जल औ जल व्है थल में।
पलट रचना पल की पल में।।28।।

दिन रात रु रात बनै दिन की।
क्षमता गिरि पगु उलघन की।
जनमन्ध अमन्द उजास बनै।
बहरो गहरो श्रुति भाष बनै।।29।।

सच्चिदानन्द आनद कन्द सती।
तुम सत्य सनातन हो सगती।
बल हीनन दीनन के बल हो।
हमरे कटु प्रश्नन के हल हो।।30।।

मठ मन्दिर मस्जिद औ गिरजा।
गुरुद्वारन राज रही गिरिजा।
सब ओर तुम्हीं तुम हो सरवे।
सब ठार समावृत या सरब॥31॥
सरवेश्वरि हो सरवज्ञ तुम्हीं।
यजमान पुरोहित यज्ञ तुम्हीं।
मुखिया तन इन्द्रिन में मन हो।
चरितारथ मा जड चेतन हो॥32॥
जब जो कुछ सो सब हो जननी।
भवदीय विभूतिय वेद भनी।
अणु में कण में अप्रमाण तुम्हीं।
परमेश्वरि हो परमाणु तुम्हीं॥33॥
लिछमी रु सरस्वति कालिय हो।
पृथु व्है पृथवी प्रतिपालिय हो।
अज अव्यय ईश्वरि हो यदपी।
तुम धम सुथापन कौ पदपी॥34॥
अपने जन सन्त अवारन कौ।
बलसौ खल वृन्द विदारन कौ।
जगती अप क्रत्य बढ जबही।
तन धार पधारत हो तबही॥35॥
हुय बावन पावन तीन मही।
बलिरोकि त्रिलोकि लही तुम ही।
हुय राम तुम्हीं दशकन्ध हन्यौ।
जनता हित राज प्रबन्ध ठन्यौ॥36॥
जगती जस ज्योति ज्वलन्त हुई।
हित राम तुम्हीं हनुवन्त हुई।
तुम अम्बुधि लघन कीन्ह त्वरा।
पुर लक निशक दई प्रजरा॥37॥
नद नन्दन व्है ब्रजचन्द बने।
सम कस अनेक नृशस हने।
दृढ नेम सु द्रोपद प्रेम पखी।
कुरु राज समाज सु लाज रखी॥38॥
हठ भारत पारथ मोह हर्‌यो।
करनी शुचि ज्ञान प्रदान कर्‌यो।
तब सिन्धु विमन्थन कीन्ह तुम्ही।
अतिसेयन अमृत दीन्ह तुम्हीं॥39॥

अमरीप ऋषीश्वर सौं उबर्‌यो।
हरिणी दुख हन्त तुरन्त हर्‌यो।
तन बुद्ध प्रसिद्ध भये तुम्ही।
पशु प्रानन त्रान थये तुमही॥40॥
गुरुता तवकी अवला न गई।
जस तिब्यत चीन जपान जई।
तिरथकर विंशतिचार तुम्हीं।
अरिहन्त सुपन्थ प्रचार तुम्हीं॥41॥
दरि खम्भ सु अम्ब बनी नृहरी।
प्रहलाद विषाद विपत्ति दरी।
तुम मच्छ तथा तन कच्छ तुम्हीं।
हयग्रीव बराह विलच्छ तुम्हीं॥42॥
सुनि टेर अवेरन की सुनई।
गजराज उबारन काज गई।
द्विज राज दत्तात्रय हस दिपी।
सचराचर अश स्वकीय छिपी॥43॥
बननी बसुधा करिबे हलकी।
कलि की कटि तोरन कौ कलकी।
शिवि रन्तिय देव उदार तुम्हीं।
सुदधीचि तनृ प्रदतार तुम्हीं॥44॥
हरिचन्द अमन्द धृती तुमही।
सु युधिष्ठिर सत्य व्रती तुम्ही।
वर शोध सनातन धर्म जये।
अभयकर शकर आप भये॥45॥
सिख पन्थ दिगन्त तुम्ही सृजनी।
गुरु नानक गोविन्द सिंह बनी।
सति जसलमर चितौर खरी।
कर जाहर धन्य चिता न जरी॥46॥
छिति छाप अकब्बर ताप छये।
तब आप प्रताप प्रताप भये।
शुचि रान किये बलिदान सही।
हिंदवानन धाक रू नाक रही॥47॥
पुनि लाज रखी भल पीथल की।
नव रोजन होन न दी हलकी।
अवरग हमै करि तग अर्‌यो।
हुय आप शिवा तब ताप हर्‌यो॥48॥



तुमही गुरु गोरख ज्ञान भई।
भरतृहरि गोपिय चन्द भई।
नृहरी अपि ईसरदास अलू।
कविता तुलसी कृत सूर कलू।।49।।

बहु वीर कबीर कथी करनी।
गवरग महा प्रभु बग बनी।
तुमही किय शक्ति कहा तियकी।
झगरा वनि रानिय झांसिय की।।50।।

सविवेक विवेक अनन्द गुनी।
अभिराम सु तीरथ राम मुनी।
चढि केसर देवल काज चितै।
हुय पब्बु रच्यो रन धेनु हितै।।51।।

प्रसरी भवदीय कृपा प्रदता।
हिंद राज सुनैतिक जागृतता।
घटना क्रम अद्‌भुत अत्र घटे।
परताप जितेन्द्र जिसे प्रगटे।।52।।

तिलकादिक भगत सुभाप अहा।
प्रगटे बहु बीर रु धीर महा।
अगरेजन सो सहसौ अटके।
हसते भट फाँसिन पै लटके।।53।।

करणी करुणा कृत मन्त्र कई।
भुवि भारत आज स्वतन्त्र भई।
हमनै धिक आतम स्वीय हन्यो।
छल के वल पाकिस्तान बन्यौ।।54।।

निज मातृ मही कृत नाशु करे।
टुक टेक रखी न करे टुकरे।
भटकै मन याद विषाद भरी।
हिंगलाज विराज तहाँ विछुरी।।55।।

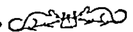
भल इष्ट विना सव भ्रष्ट भई।
गरिमा रजपूतन केर गई।
पुनि मा अवलम्बन जो पकरै।
पुनि काज न का विगरे सुधरै।।56।।

सवैयो

वरणी चहुवेदन मे वरणी,
भरणी सुख सपद भूरी भरो,
धरणी जग जीवन की धरणी,
नित मात कृपा मम काज सरो,
कुल चारण तारण ओ तरणी,
हम बालक पर शुभ दृष्टि धरो,
हरणी नित दासन के दुख की,
करणी महमाय सहाय करो।

दोहे

घम-घम बाज त्रमागलो, हुवे नकीबौ हल्ल,
सादा आजै सबली, किनियाणी करनल्ल।
बाढाली वहताह, राढाली त्रबक रूडै,
साढाली सहताह, डाढाली उपर करै।
ह्वे सिंह होफरडीह, पतसाहाँ परचा दिया,
डरपी डोकरडीह, मा आती मेवात में।
ह्वे सिंह होफरडीह, पतशाहा परचा दिया,
डग भर डोकरडीह, मा आई मेवात में।
आवड तूठी भाटियाँ, गीगाई (मेहाई) गौडाह।
श्री बरबड सीसोदियाँ, करनल राठौडाँह।।
बडकै डाढ बराह, कडकै पीठ कमटठ री।
धडकै नाग धराह, बाघ चढै जद बीस हाथ।।
करनल किनियाणीह, धणियाणी जगळधरा।
आळस मत आणीह, बीसहथी लाजै बिडद।।
देवी देसाणेह, धर बीकाणे तू धणी।
जोगण जोधाणेह, मानीजै मेहासधू।।
साख बीसोतरे पाख मेहासद्ध,
छेड सू. धाक दरियाव हालै।
ओट आगा तणू कोट तम ऊवरू,
मिनर जागा तणृ चाव मोनै,
धरम धागा तणृ राखजे धिराणी,
ताम तागा तणी लाज तोनै।।
आठै अडतीसै समत, मधु सुद नम शनिवार।
महमाया मामड घरै, आवड लियो अवतार।।

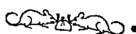


साल अठ्यासी मे सुणी, आठो समत अनूप।
आवड जग में अवतरी, श्री हिंगलाज स्वरूप।।
चवदैसे चम्मालवै, सातम सुकरवार
आसोज मास उजालपख, आई लियो अवतार।
चवदैसे तिण समत, चवा सो बरस चमाळै
सुपै तित्थ सातम, वार सुकर जस बेला।
तिके शुभ इत्याद, मिले सिधजोग समेला।
धिन मात वखत सोयपधिन धिन जु तात बीकाणघर।
जगराय सकल लीधो जनम, कला सपूरण मेह घर।।
कुलडी भरियो दधि कियो, उदधि समान अखूट।
जिकण प्रवाडे जीत री, क्रीत वधी चहूकूट।।
पारवती महा सोहपुर, शिवपत खुशी साठीक।
केलव घर देपो कँवर करनल मेह घर कीक।।
आ सचत भव आगली पारवती वर पाय।
शिव देपो उण पुल सज्यो मेहा सुतन महमाय।।
माता कयौ निज मात नै तात टीकौ कर त्यार।
पेरवो जाय साठीक पुर केलव राजकुमार।
प्रथम कँवर पाटवी सुपै पुन राज सिंधाळो
नखतबली नगराज अठै कूळ सीढ अजाळो
जुग राखण जगवास लिया वृद' आदू लाखण
देव सुतन कुळदीप मोट वृनवट मुगटामण
काढ्यो तुरका कैद सू, शेखा री कर साय।
सवळि वाळो रूप सझि पृगल दीध पुगाय।।
पनरै सै पैताळवै, सुद बैसाख सुमेर।
थावर बीज थरप्पियो, बीकै बीकानेर।।
गो दूता घर आगणै, बणिक तणी सुणि वाणि।
तरणी जगडू तारवा, पसर्‌यो करणी पाणि।।
पनरै सै पिच्याणमै, चैत शुकल गुरुनम्म।
देवी सागण देह सू पूगा जोत परम्म।।
बाहू चळी निरम्मवळी, चख बीमळी सुरत्त।
आजे करनळ अक्कळी, सवळी रूप सगत्त।।
करनल किनियाणीह, धिणियाणी जगळ धरा।
आळस मत आणीह, बीसहथी लाजे विरद।।
'जब दियौ टहौलौ भुवा जास।
तत्काल आगळी जुडी तास।
बालापनै रमता बाई पुगल धणी लगायो पाय।
सारा साथ सहित सेखा नै जितू पोखियौ ही जिमाय।।

वाहू चळी निरम्मळी, चरव बीभळी सुरत्त।
आजे करनल अक्कळी, (तू) सँवळी रूप सगत्त।।
कान्है लोपी कार, मति हीणे पायो मरण।
वाघ थमी तिण वार, सझि हाथळ मेहा सदू।।
सिंघ रूप हुय सालुळी, मार्‌यो कान्ह पमग।
राज दियो रिडमाल नै, रग मा करणी रग।।
कपिलायत लक्ष्मण डूवि मर्‌यौ।
त्रिदिनातर जीवित आप कर्‌यौ।।
मोती समो न ऊजळौ चनण समो न काठ।
करनी समो न देवता गीता समो न पाठ।।
रजधानी हिंगलाज मे, हुवै भली हलचल्ल।
सभा करे नव लखसगत, सभापति करनल्ल।।
आऊ म टृटी बरत, कृए मझ पैठा ह।
अणदो खाती तारियो, खारोडै बैठा ह।।
जुध में ध्याई जगदम्बा, सेखव भाई सार।
आई पृगल आवज्यो, बाई धरम बिचार।
ओरण चम्पा आब ज्यू, जळ गगा जोडीह।
देसाणे मढ देखिया, काबा नग कोडीह।
ओयण रो उमाहणो, दीपासर रो न्हाण।
दरसण करनल देव रा, हवै तृठा रहमाण।।
करणी तू करुणामई शरणाइ साधार।
राखौ शरणे राजर सहज दया सचार।।
आस काई उण की करु, है जिण रै दो हाथ।
मै लीधी जिणरी शरण, (वो) बीस भुजाली मात।।
छबि मूरति मन मोहिनी, धिन देशाण धिराण।
नित नमू करूणा निधे, क्रोड बखत किनियाण।।

सोरठा

धीरज मन में धार, करणी री सेवा करै।
है वा तारणहार, वार न लावै वीस हथ।
म्हारा अवगुण माय, देखे मत देसाण पत।
सकट माय सहाय, कीजे वेगी करनळा।
ध्याऊ धणियाणीह, माता दिन प्रत मोकळी।
कीज्यो किनियाणीह, किरपा मो पर करनळा।।
रूपिया भड शेख रावरा जो महि पीवण जूट।
नव धण ब्रिवड जिमाय नृप, यू हुय दही अखूट।।



रिधू नाम सोहि, राखता, भुआ काम सुभ भाय।
आद्य सुलट कर ईशरी, करनल नाम केवाय।।
'तापियौ नाथ चिड़िया पच ठौड तद,
समृरत मापिया नक् सोधै।
अचळ मेहासधू हुकम तद आपियौ,
जदे गढ थापियौ राव जोधै।।
अबद पनरोतरै समत पनरै इळा,
वाघ चढणोत रै वेद वरनी।
गेह वड भाग किनिया तणै गोत रै,
कळा साजोत रै रूप करनी।।
मेहाई मग तोह, थगथगतो आवण थटै।
पिसळै मो पगतोह, डग तो राखे डोकरी।।
करनी तू केदार, करनी तू बदरी कमळ।
ह देवी हरद्वार, मथुरा तू मेहासधू।।
पोकर मथुरापुरी, सेतबध रामेसर।
कर वदरी केदार, इधक आवू अचळेसर।
पापा हरण प्रयाग, गया गगा गोमत्ती।
मुगत दण सुरमाय, सकळ महिमा सुरसत्ती।
कुरुखेत्र नाथ कासी अटळ,
जात घणा जुग जीविया।
करनला तुझ दरसण किया,
(माँ) कव इतरा तीरथ किया।।
मिंदर माटी तणौ, आप निज हाथ उपायौ।
करामात आकरी, दुनी ऊपर दरसायौ।
सीस छत्र सोवनौ, रिधू किनियाणी राजै।
सात बहन सिरताज, वीच आवडा विराजै।
सत विरद लीध मेहासधू, भाग उदित भो भल्ल रौ।
आज रौ भला ऊगौ अरक,
कियो दरस करनल्ल रौ।।

(दोहा)

जोग पथ सकर तजै, व्है गिरमेर गरक्क।
करनी ऊपर नहँ करै, (ता) ऊगै केम अरक्क।।

(छप्पय)

हर रथ माठौ होय, सकत रथ होय सयाणौ।
सितरथ देवै पूठ, घटै उतराद पयाणौ।
हस हाल परहरै, वचन पलटै दुरवासा।
मह मारा झड मडै, इन्द्र नह पूरै आसा।
प्रहळाद भगति छोड परी, कळजुग सतजुग नै कळै।
(तौ) सेवगा तणा मेहासधू, साद न करनी सभळै।
सीता छाडै सत्त, जत्त लिछमण सू जावै।
महाजोध हडमत, कळा वळहीण कहावै।
नारद जुध निरखता, तिको पिण हासौ तज्जै।
भयण अभ भोजन्न, भूख जीमिया न भज्जै।
जावै न तृषा पीधा सुजळ, निज ध्रम कीधा नह फळै।
(तौ) सेवगा तणा मेहासधू, साद न करनी सभळै।।
रिध-सिध देवण रैणवा, कव्या सुधारण काज।
अमला वेळा आपनै, रग करनी महाराज।।
जिण दिन करनल जनमिया, सगत रूप संदेह।
मानो वरस्यौ मोतिया, मेहा रै घर मेह।।
हथ जोडै सुर नर असुर, *खडग खपर हथ झल्ल।*
तू नवहत्था पर चढै, वीसहथी करनल्ल।
वडावडी लघुता वडी, राखै तू सुराय।
करनी थारै वीस कर, तो कर नीं कहवाय।।
रीत अनोखी करनला, अचरज आवै जोय।
जै करनी सेवक कहै, जै सेवक री होय।।
राम किसन ज्या पूजिया, वाज्या भगत प्रतीक।
करनी पूजी चारणा, चारण व्हा पुजनीक।।
करणी हरणी विघन री, थळवट धरणी थव।
वरणी च्यारू वेद में, जै करणी जगदम्ब।।

दोहा दरवाजे रा

कान सुण्यो मीख्यो कदै, को पण देख्यो कद्द।
करणीजी कृपा करी, (जद) हीरे कर दी हद्द।।
जग माता करनी जटै, देशणोक रो द्वार।
वारू अब वैकुठरा, इण पर द्वार हजार।।

सोरठा

सेवा वृन ससार, तो ध्यावै नित प्रत तिके।
देवी थारे द्वार, सुख पावे सेवक सदा।।
साँपरतेक सुथार, सेवक हीरो हो सदा।
देखो रचियो द्वार, करी कृपा जद करनला।।

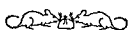
का बीका का बीठुआँ
दीपे जगल देश।।
जगदम्बा शरणौ जाण ओहिज मोटो आसरो
आप तणों आपाण विरद निभाहज्यो बीसहथ।

अभिलाषा

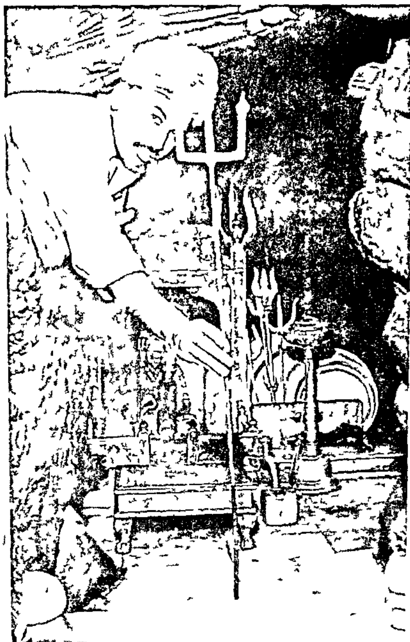
सहाय करीज्यो शकरी, सदा रहीज्यो सात।
कर किरपा कर राखज्यो, माथै ऊपर मात।।
रोम रोम मै रम रहो पवन वण प्राण।
हिरदे मै हरदम बसो, हे देवी दैशाण।।
काई माँगू करनला, बसज्यो म्हारै मन्न।
परम जोत परमेश्वरी, पूरण रहो प्रसन्न।।
मन मै बसगी मूरती, देह म बसग्यो धाम।
जावू जतै भूलू नहीं, मात तिहारो नाम।।
कावो होस्यू करनला, मरिया पाछै माय।
चरणा मै चढ जावस्यू, आइ थारै आय।।

एक भक्त के भाव

कळजुग में करणी बण्यो गा पालक-गोपाल
जग मै देइ देवता, जुग जुग हुया अनेक।
अवड्या आडी आवणी, कळजुग करणी एक।।
दूक्या सारा तीरथा, आयो काइ'न दाय।
तीरथ तो देशाण है, दरश देशाणा राय।।
चाखो पीवो, अमर-जळ, न्हावो बारम्बार।
करणी-सागर-नीर सू, कटसी कष्ट हजार।।
पाळा भरै जो पावडा, करै जो कणक डडोत।
अणहोणी होवै नहीं, मरै'न अकाळी मौत।।
दरद उठै जद रात मै, कुण आ करै सहाय
जक पड बीनै किया? दौडी आवै माय।।
अबडी वेळ्या जद हुवै, और'न बचै उपाव।
जदे निकळसी मूह सू, 'करणी वेगी आव'।।
करो गूज गुम्भार मै, द्यो आरण आवाज।
पग ना पहर पगरखी, आसी पाळी भाज।।
बिलखो दीखै बाळको, आवै झट सू माय।
ढलता आसू देखकर, ले छाती चिपकाय।।
उडती आव सावळी, माथै पर मडराय।
दशा देखकर आख सू, मा न कैवै जाय।।
डागदरा री डागदर, आ बैदा री बंद।
आ कै हाथा औपदी, आ ही मेटै खेद।।
इण मेहाइ मात सू, मुख ना लीज्यो मोड।
'करणी' 'करणी' कैवज्यो, कटसी कष्ट करोड।।
'करणी' 'करणी' कैवता, हियै भरै हुलास।
'माई' 'माई' कैवता, मुह मै भरै मिठास।।
चिन्ता काई चित्त मै, मन रै। मति डर।
जग मै कुणसो काम जो, करणी नही करै।।
धरा धसै, अबर गिरै, नाही बचै वजूद।
तो भी कोई डर नही, जद माजी मौजूद।।
काई मागू करनला, म्हारै बसज्यो मन्न।
परम जोत परमेश्वरी, पूरण रहो प्रसन्न।।
थाको विडद विचार, दया करो इण दीन पर।
होवै गुनाह हजार, माफ करो मेहा सदु।।
रहस्या जीया राखस्यो, है ही काइ हाथ।
अरज अतिसी आपसू, थे मत छोड्या साथ।।
सहाय करीज्यो शकरी, सदा रहीज्यो साथ।
कर किरपा कर राखज्यो, मेहाई मम माथ।।
रोम रोम म रम रहो, रहो पवन बण प्राण।
हिडदे मै हर दम बसो, हे देवी देशाण।।
मन मै बसगी मूरती, देह मै बसग्या धाम।
जीवू जतै भूलू नही, मात तिहारो नाम।।
कावो होस्यू करनला, मरिया पाछै माय।
चरणा मै चढ जावस्यू, आई थारै आय।।
आज फरूक आखडी, मन मै मोद भरै।
हिचकी पर हिचकी चल, माजी याद करै।।
कुण नेडो कुण आतरै, अब आ अतर नाय।
माई म्हा कै माय नै, म्हे माई कै माय।।
आप बिराजो हो बठै, देशाणा-राय जठै।
पग पूजिया आप रा, म्हाका करम कटै।
सिद्धा मेळो कुभ रो, बारह बरसा थाय।
नित प्रत मेळो चारणा, देशणोक रै माय।।
□



त्रिशूल दर्शन



मॉ करणी के चरणो मे बारम्बार प्रणाम

SHREE KARNI KRIPA ENTERPRISES

29 Muktaram Babu Street, KOLKATA 700007

Mob 09339207409

B L Mundhra

एक चारण शक्ति, श्री करणीजी की परम उपासक : श्री इन्द्र बाईसा महाराज

एक दैवी उपासक : दुर्गाबाईसा

दक्षिण भारत में पहला श्री करणी माता का मंदिर



श्री गणेशजी दर्शन



श्री करणीजी दर्शन



श्री पावन पावडिया दर्शन



श्री सावली दर्शन

।। जय माँ करणी नम ।।

चवदेसो चम्माळवें सातम सुकरवार
आसो मास उजाळपख आई लियो अवतार

श्री चरणो मे : राजकुमार मोहता

मोबाइल 09873426467 • गाधी नगर नई दिल्ली

एक चारण शक्ति, श्री करणीजी की परम उपासक श्री इन्द्र बाईसा महाराज

श्रीकरणी भक्त एव आवडावतार अनत श्री विभूपित अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत धारिणी, सुश्री इन्द्रकुवर बाईसा अन्नदाता का प्राकट्य स्थल राजस्थान के नागौर जिले की मकराना तहसील के अन्तर्गत गाव 'खुडद है। जो कि मकराना से करीब 20 किमी दूरी पर स्थित है। खुडद एक अत्यन्त छोटा सा गाव है पर इसकी महत्ता बडी है।

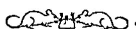
इस स्थान पर पहुचने के लिए बेसरोली और गच्छीपुरा रेलवे स्टेशन लगते हैं। यह फुलेरा जक्शन के जोधपुर बीकानेर मार्ग पर है। इस गाव म श्रीशिवदानजी रतनू शाखा के चारण रहते थे श्रीशिवदानजी के पुत्र श्रीसागरदानजी के घर उनकी सहधर्मिणी श्रीमती धापू देवी जो कि जयपुर जिले के बूढला चारण वास के श्रीदानजी जागावत की पुत्री थी उस माता की उज्ज्वल कुक्षि से सुश्री इन्द्रकुवर बाईसा का जन्म हुआ।

श्रीसागरदानजी व धापू देवी श्रीआवड माताजी के परम भक्त थे। सागरदानजी प्रतिवर्ष आवड माता के दर्शनार्थ तैमडाराय की यात्रा करते थे। तैमडाराय (आवडमाता) का स्थान जैसलमेर से 21 किमी दक्षिण में गिरलाओ पवत पर है। यह यात्रा पैदल थार के मरुसल को चीर कर करनी पडती थी। उस जमाने में इस मार्ग में पानी और छाया का नितान्त अभाव था। इसी से इस यात्रा की दुर्गमता का अन्दाज लगाया जा सकता है कि कितना कठिन कार्य था। फिर भी वे छ बार पैदल इस यात्रा पर गये। अगाध श्रद्धा दृढ सकल्प और समर्पण के सामने सभी कठिनाइया तुच्छ प्रतीत होती है।

इस प्रकार वे जब सातवीं बार तेमडाराय की यात्रा पर गये तो, देवी ने उनका दर्शन दिए। सागरदानजी आवडमाता के पूजा स्थल के सामने आखे बद किये माता का ध्यान किये हुए बैठे थे तभी एक सफेद मूषिका (काबा) जो कि माताजी के साक्षात् दर्शनों का प्रतीक माना जाता है, उनकी गोदी में आकर उछल-कूद करने लगती है। जब सागरदानजी ने आखे खोलकर देखा तो मूषिका गोदी में से कूदकर पूजा स्थल में जाकर अन्तर्धान हो गई। इस नजारे को देख कर सागरदानजी का हृदय गद्-गद् हो गया और आखो से मातृ प्रेम के आसुओ की झडी लग गई। बार-बार माता स्तवन वदन करते हुए श्रीसागरदानजी ने अपने गाव की ओर प्रस्थान किया।

सागदरदानजी अपने गाव आकर अपने गृहस्थी के कार्यों में इतने व्यस्त हो गये कि श्रीआवडजी ने जो उन्हें दर्शन देकर उनके घर आने या अवतार लेने का सकेत दिया था। उसे भूल ही गए। उन्हे क्या पता था कि उस सफेद मूषिका की भाति स्वय आवडजी एक दिन उनकी गोदी में बेटी बनकर उछल कूद करेगी।

आखिर वह शुभ दिन आ ही गया जिस दिन श्री हिंगलाज माताजी पूर्णावतार आवड माता राजस्थान की इस पुण्य धरा पर गाव खुडद में श्रीइन्द्र कुवर बाईसा के रूप में अवतरित हुई। वह दिन था आषाढ शुक्ला नवमी वार शुक्रवार वि स उन्नीस सौ चौसठ का। इस दिन सागर दानजी के घर माता धापू की कोख से हिंगलाज पीठाधीश्वरी श्री करणी की कला (करतूत) लेकर पैदा हुई।



दोहा

गुण बीस चौपठ मे, पाढ शुकल तिथ नौम।
आवड आय नै अवतर्या, धिन खुडद री भौम।।

कहते है कि होनहार बिरवान के होत चिकने पात। जब सागरदानजी के निवास म कन्या उत्पन्न होने का समाचार मिला तो खुडद गढवाडे मे आनद की लहर छा गई। ब्राह्मण से कन्या के ग्रह-गोचर एव नक्षत्र आदि पूछे गये तो ब्राह्मण ने भी इस बात पर बल दिया कि नक्षत्रो के राजा स्वाति नक्षत्र मे पैदा हुई यह कन्या कोई साधारण बालिका प्रतीत नहीं होती है। निश्चित रूप से यह बाईसा परिवार एव जन-साधारण के लिए अमृत के समान सुखकारी व दु खहारी सिद्ध होती।

दोहा

सुलखणी, सुनखतरी, शुभ ग्रह लगन सुभाव।
जोशी जिण रो राखियो, श्रीकरणी इन्द्र नाव।।

श्री इन्द्र बाईसा के नैसर्गिक रूप-सौन्दर्य का वर्णन करना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। देवी के दिव्य व अलौकिक रूप का दर्शन करने आस-पास के लोग आने-जाने लगे थे। यथा रूप तथा गुण होने के कारण साधु-सत एव ज्ञानी-ध्यानी लोग भी उनकी प्रशासा करते। घर मे सुबह-शाम पूजा एव देवी की ज्योति प्रज्वलन के समय जब श्री इन्द्र बाईसा पद्मासन म बैठकर ध्यानावस्थित होती तो घटो इसी मुद्रा म रहती। इनका सौम्य सुशात चेहरा गभीर मुखमुद्रा और असाधारण क्रिया-कलापा को देखकर लोगो मे सहज ही विश्वास होने लगा कि वास्तव में यह चारणी कन्या रतनू कुळ रतन तथा दिव्य शक्ति सम्पन्न देवी है।

चिरजा

इन्द्र बाइ सा री इन्द्र अम्बा आवड रो अवतार,
थारो पाय सके कुण पार।।टेर।।
अम्बे माँ रूप अनूप वेश मरदानो, मुरधर देश मजार।
धिन-धिन सागर पितृ ने धापू जननी कृख मजार।।1।।
इन्द्र अम्बा आवड

अम्बे माँ रीझे जिण पर तूँ राजेश्वरी, अन्न धन्न देत अपार।
खीजे दुष्टन पर खडगाली देत धके दूधार।।2।।
इन्द्र अम्बा आवड

अम्बे माँ आधा आवे शरण आपरी, आख्या देत उगार।
काया कोढ हूत कर कचन पीड ईड व्है पार।।3।।
इन्द्र अम्बा आवड

अम्बे माँ पावे पाव पागला परतख नेम धार नर नार।
बाधे बाझ अनेक बारणा, पुत्र वढे परिवार।।4।।
इन्द्र अम्बा आवड

अम्बे माँ वरी वद-वद धेख वाध कर, लागा म्हार लार।
सागर सुता मेट झट सकट आयर बेग उबार।।5।।
इन्द्र अम्बा आवड

अम्बे माँ बीदग जुग कर जोड वीनवे, सगती काज सुधार।
'सोहनदान' रावले शरणे करदे वेडा पार।।6।।
इन्द्र अम्बा आवड रो अवतार, थारो पाय सके कुण पार

□

स्तुति

प्रथम पीठ हिंगलाज सू नोलख सगत प्रणाम
मिद्ध चौरासी चारणी तिण म प्रमुख बखाण
चौरास्या सिरमौर है आवड मामड जाय
द्रग चाळकनू अवसुरा साहूआ कुळ रै माय

समो चवदवों साल चम्माळो सातम सुकरवार
मेहा सुद मा करनला आवड तणो अवतार
रतनू कुळ कन्या रतन समद सुता इन्द्रेश
पुरप तणे परिधान मे वजिया खुड़द नरश



बाल रूप श्री करणीजी

देशनोक वाली
श्री करणी माता (बाल रूप)



श्री चरणों में

SHREE KARNI COLLEGE
SHREE KARNI HOSPITAL

Karni Palace 200 Feet Byepass Road Maa Karni Nagar, Vaishali Nagar Jaipur 302021
Ph 0141 2471312 9314878787

Director Youvraj & Company • President Karni Sewa Samiti • Patron Shree Karni College
Dr Gulab Singh Ex Councillor Jaipur Municipal Corpn Ex Medical Officer M C

माळा फेरते हुए श्री करणीजी



09818835366

सुमेरसिंह, रघुवीरसिंह खिडिया

इन्द्रपुरा-डिडवाना (नागौर)

भगवती मार्बल्स

प्लॉट न 16 सेक्टर 34ए हीरोहोडा चौक गुडगाव हरियाणा

09958418631 (उम्मेदसिंह)

सुमेरसिंह अध्यक्ष चारण समाज (गुड़गाव-दिल्ली)



09810045015

अंदाता श्री इन्द्रबाईसा, श्रीमढ खुड़द

श्री इन्द्रबाईसा दर्शन, खुडद-मकराना (नागौर)



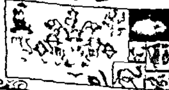
OMJI BHAI JAWERI

Jaweri Market, Jain Chowk
NOKHA 334803 (Bikaner)

Om Prakash Soni





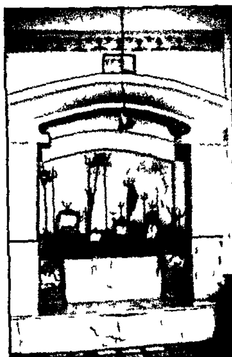


Durga Silver Works

Katla Chowk, NOKHA 334803 (Bikaner)
Ph 01531-221075, 221225

Shivratan-Ravi Soni
9414147075, 9351505288





पूनोजी के जुझारू

दीपचदजी भूरा एव छोटादेवी भूरा
के परिवार का माँ करणी को प्रणाम

झवरलाल रतनलाल, सम्पतलाल
सुन्दरलाल जतनलाल एव कन्हैयालाल भूरा

करणी बैंगल हाउस दिल्ली
09811160100

करणी कगन, दिल्ली
09212460100

करणी कलेक्शन, गगाशहर बीकानेर

करणी सुहाग भडार, बीकानेर
09414546987



त्रिशूल दर्शन

A.K. Enterprises

476, Sakhar Peth
Solapur (Maharastha)

Ph 0217-2327889

Lilam Kumar Sand
Mob 09423588831

Shri Karni Textile Agency

E-10/11, B J Market
Pur Road, BHILWARA (Raj)

09413346814 (Bhilwara)
09423588831 (Solapur)
09461036710 Uttam Kumar Lunawat



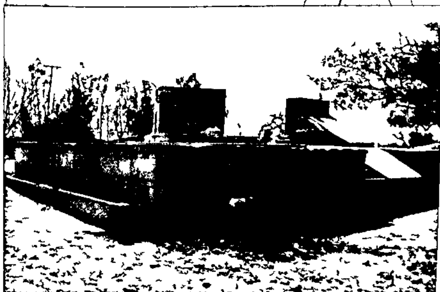
रामदीन ओमप्रकाश दर्जी

राजपूती पोशाके, ड्रेस मटीरियल शूटिग-शर्टिंग
राजाशाही साफे एव शेरवानी के विक्रेता
सदर याजार, डेगाना ज (राज)
फोन 01587-222068 (शॉ), 223057 (नि)



ओमप्रकाश 9414548758 राजेन्द्रप्रसाद

देपासर कुआ, देशनोक



माँ के चरणों में-धनराजसिह खिड़िया

इन्द्रपुरा-डीडवाना (नागौर)



गोरधनदान-सुखदानजी सिंहढ़ायच

रातडिया-नोखा (बीकानेर)





हाल 5-ई-63 माँ भगवती मार्ग ज न व्यास कॉलोनी बीकानेर

बहादुरसिह 09772033279

शिवदानसिह 09829287697

रामसिह युवराजसिह छोटू, सुरभि नेहा

S D Charan
Marketing Officer Indusind Bikaner



शम्भूदान आढा परिवार का माँ को शत-शत नमन





अंकित केमिकल्स

आढो का बास सींथल (बीकानेर)

अरविन्द सिह आढा 09252549754

दिनेश सिह आढा 09784550788

अशु खुशी



रामदेव नॉधू (सुरपालिया) परिवार का
माँ को शत-शत नमन





मातृ-छाया 4-ई-331
जयनारायण व्यास कॉलोनी बीकानेर

जुगलसिह चारण 09694690430

मनोजसिह चारण 09024246902

दीशा चिराग नाँधू (लक्की) अशिका (खुशी)



सादुलसिह गाढण परिवार का
माँ को बारम्बार प्रणाम

ठिकाना कालियासर (झुझनू)




हाल 7-क-15 पवनपुरी साउथ (बीकानेर)

कुँवर कैलाशदान शैतानसिह महेशदान
अक्षयसिह गाढण 9351969983
भँवर अकित उज्जवल राजवीर एव भैरु

एक दैवी उपासक . दुर्गाबाईसा

साक्षात् दुर्गा ने आशीवाद म्वरूप अपनी कृपा दृष्टि उन पर की है। इस शुभ दिन में दुर्गा बाईसा का अवतार हुआ। ललाणा पावन धरती पर पुत्री के रूप म। आपका जन्म जोधपुर में हुआ। इस दौरान नारायण सिहजी (पिताश्री) की नौकरी भारत माँ की सवा (फौज म) क कारण जोधपुर म थी। दुर्गा बाइमा का मन बचपन से ही अपन पिता की तरह श्रीकरणीजी की सेवा म लगन लगा। करणीजी की सेवा क माथ-साथ आपने दसवीं कक्षा तक अध्ययन भी कर लिया। सन् 1976 में आपने कर्म-भूमि के लिए पैतृक गाव ललाणा को बनाने का विचार कर लिया। हालाकि इस दौरान घर परिवार जमीन-जायदाद का कुटुम्ब-कडुम्बे में बट हो चुका था। विकट परिस्थितिया के बावजूद आपने बडी ही सादगी से जीवन यापन को स्वीकार किया। ललाणा गाव में श्रीकरणीजी के नाम से गायों की सेवार्थ छोडी गई गोचर भूमि आरण जहा करीब 500 वर्षों से ललाणा की स्थापना से राठौडो द्वारा स्थापित अपनी इष्ट देवी श्रीकरणीजी की प्रतीकमात्र पत्थर के रूप में छोटी सी मूर्ति एक खेजडी के नीचे रखी हुई थी। दुर्गा बाइसा न उसमें साक्षात् माँ के दर्शन को देखा। उसी स्थान पर 8 मार्च 1976 को आपने कठोर तपस्या प्रारम्भ कर दी। आपके भाई ने आपमे साक्षात् देवी कृपा को देख लिया था। इनके साथ इमी दिन आपके बडे भाई जगदीशसिह जी शादी करके सीधे नवली दुल्हन के साथ तब से उनकी सेवा में हाजिर हो गये। दुर्गा बाईसा ने साधना के तहत एक-डेड साल तक खुले में ही सर्दी-गर्मी तपस्या की। एक गहरा खड्डा खोद उसमें अखण्ड दीपक जलाकर माँ की माला फेरनी शुरू कर दी। जिस दिन डेरा डाला उसी दिन एक साप ने उनको काट लिया। ये उनकी परीक्षा थी। मगर उन्हाने माँ का स्मरण किया। मत्र माँ की कृपा है। कुछ नहीं हुआ उस दिन से आज तक उन्होंने माँ क अलावा किसी ओर के घर जाकर परिचय तक नहीं दिया। काफी समय तक आपने अन्न-जल को त्याग दिया। एक बार आप बाला सतीजी के यहा पधारे थे। तब बाला सतीजी ने फरमाया कि आप एक समय का भोजन अवश्य ग्रहण कर। सतीजी के आदेश का काफी समय तक पालन किया। भोजन तो नहीं किया मगर एक समय फलाहार लेना स्वीकार किया। आपने माँ की मेवा पूजा एव पशु-पक्षिया की सेवा को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया। धीरे-धीरे अपने स्थान पर माँ का मदिर बना लिया। पहले छप्पर फिर, पक्का मदिर बना लिया। श्री करणी मदिर के अलावा आप अपने गुरु भवर बाइसा जिनका साचोर तहसील परबतसर में ही एक गाव है। जहा पर दर्शनार्थ जाते है। आप करीब 20 वर्ष के लगभग केवल दूध फल आदि का नाश्ता करते है। एक मात्र देशनोक माँ के दरबार मे किसी भी वस्तु को ग्रहण करने, खाने-पीने इत्यादि की मनाही नहीं है। अगर किसी के घर आना-जाना हो, ता भी मना नहीं करते है। देशनोक म माँ के परिवार में किसी को मनाही नहीं है। आपन माँ के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए जनकल्याण की सेवा म तत्पर है। माँ की कृपा है कि आज दूर-दूर तक ललाणा क्षेत्र में पीन को मीठा पानी नजर तक नहीं आता वही ओरण में आपने माँ का स्मरण कर एक ही बात कही कि 'पानी घणा ही है' वहा ट्यूब वैल खोदा गया आज तक पानी का स्तर एक इच भी नीचा नही हुआ। पूरा गाव पानी पाकर धन्य हो गया। आज आप हमेशा जन सहयोग हेतु तत्पर है। जितना हो सका सब की सहायता की है। पक्षियो की कलरवो शात माहौल, शुद्ध वातावरण दूर-दूर तक पेड-पौधा का शृगार रूप के कारण अति रमणीय लगता है। एक

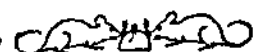


बार उस स्थान पर माँ की आरती के दर्शनों के समय उपस्थित होकर देखने से ऐसा लगता है। मानो पूरा वातावरण अपने-अपने ढग से सगीत को लय दे रहा है। यह बात शतप्रतिशत सत्य है कि माँ की कृपा हो वो स्थान तो पावन हो ही जाता है। दुर्गा बाइसा की सादगी और जो अपनापन झलकता है। दर्शनार्थी का मन गदगद हो जाता है। वह स्थान छोडने का मन ही नहीं करता। पूरे परिसर मे शीतला माता, ज्वाला माता, बजरगी बली इत्यादि देवताओं की भी नियमित पूजा होती है। वहीं पक्षियो के लिये नीम के पेड के नीचे एक बडा सा पक्का चबूतरा बना हुआ है। छोटी सी पानी भी तलाई भी बनी है। दिन-भर दर्शनार्थियो का आना-जाना लगा रहता है। दुगा बाइसा फरमाते है कि 'माँ तो जगत की जननी है यह सभी काम ठीक ही करती है। आप सब कार्य माँ का नाम लेकर उस पर छोड दे। विश्वास और सत साथ होना चाहिए।' माँ सब का भला ही करती है। माँ तो माँ ही है। दुर्गा बाईसा ने माँ के नाम से कई शुभ कार्यो में भागीदारी निभाई है। आपने श्री हाथों से देशनोक श्रीकरणी गौशाला म पानी के ट्यूब बेल का उद्घाटन सहित माँ के कई मदिरो की विधिवत् पूजा अर्चना करके भक्तों के लिए लोकार्पित किये है। माँ की सेवा मे समर्पित रजपुती शक्ति को शत्-शत् नमन।

ललाणा खुर्द जाने के लिए—ललाणा खुर्द गाव के लिए आपको ट्रेन मार्ग से गच्छीपुरा उतरा पडता है। वहा से 18 किमी दूरी पर है। स्वय के साधन से जाना चाहते हैं तो आप डेगाना से कीतलसर-बाजोली-रतनास-कूराडा-गूलर-लललाणा-ललाणा खुर्द पहुच सकते है। इन गावो से होते हुए आप गाडी से बस से अर्थात् स्वय के साधन स जा सकते है। डेगाना से यह दूरी 30 किमी पडती है।

माँ करणी की कृपा पात्र झमकू माँ सा

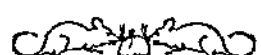
माँ भगवती की असीमकृपा हुई चुन्नीलालजी भसाली पर। माँ भगवती न साक्षात् उपस्थित हो अपना आशीर्वाद इस परिवार पर उडेल दिया। कृपा स्वरूप आपके परिवार म चुन्नीलालजी के सुपुत्र तोलारामजी के दो पुत्रों एव पाँच पुत्रियों म चतुर्थ सतान के रूप में एक ऐसी पुत्री को इस ससार में भेजा की उसने साता पीढी को तार दिया। सौभाग्यशाली है भसाली परिवार। इन पर माँ की महर से इनके घर वा शुभ दिन आया जिस दिन झमकू बाई का जन्म हुआ। इस परिवार में झमकू बाई का जन्म तो होना ही था क्याकि कई ऐसे कार्य थे जिनको माँ करणी झमकू द्वारा करवाना चाहती थीं। जिनम पानी की समस्या के समाधान के लिए गाँव में पानी क कुड को बनवाया। माँ की कृपा से सेठ चुन्नीलालजी के परिवार में पुण्य एव धर्म क वातावरण को और दृढ करना। झमकू माँ सा की आस्था बचपन से प्रखर होने लगी। कण्ठों म सरस्वती विराजती है। जो वचन कहेगी सत्य कहेगी। सब का भला ही चाहती है। झमकू बाई का शुभ विवाह चूरू निवासी श्री हणूतमलजी बाठिया के सुपुत्र श्री शुभकरणजी बाठिया के साथ हुआ। श्री झमकू माँ सा का बाठिया परिवार में बहू रानी के रूप में पधारना सौभाग्य एव देवी वरदान ही था। झमकू माँ सा मे त्याग की भावना सर्वोपरी है। इस क्षेत्र मे कभी मुँह नहीं मोडा सामाजिक व्यवहार निभाना, सुख-दु ख में साथ देना अपना पराया न समझना सभी को आदर सत्कार दना इत्यादि के गुणा की खान है आप। माता झमकू के श्री हाथा से ऐसे कई शुभ कार्य हुए है जिनम मारखाणा ग्राम में 2000 वर्ष पुराने शिव मन्दिर का जीर्णोद्धार कर नया रूप देना इसी गाव म सुसवाणी माता एव सरस्वती माताजी का भव्य एव सुन्दर मन्दिर बनाना गाव टमकौर मे कुलदेवी करणी माता का भव्य मन्दिर एव कुण्ड पर दादाजी के चरणों की स्थापना करना। मन्दिर की स्थापना के दिन देशनोक से अखण्ड दीपक लाया गया। वसत पचमी 25 जनवरी 2001 मे माँसा के सान्निध्य मे स्थापना हुई। माताश्री झमकू की कृपा एव आशीर्वाद के वचनो को लिखना या वर्णन करना तो ऐसा होगा जैसे सूर्य को दीपक दिखाना। फिर भी एक कोशिश की है कि कुछ अमुख जानकारिया लोगों के सामने भक्तो के सामने रखी है। यह माँ सा का छोटा वर्णन है। माँ करणी की परम उपासिका है माँ सा। धन्य है झमकू माँसा, भसाली वश एव टमकौर गाव जहा इस माँ करणी की परम उपासिका ने वहा जन्म लेकर कई परिवारों में कष्टों का निवारण किया। धन्य किया। जय माँ करणी। □



दक्षिण भारत में पहला श्री करणी माता का मंदिर

शताब्दियासे धार्मिक आस्था का कद्र करणी माता की आराधना स्थली देशनाक आज अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट पहचान रखता है। किले-नुमा मंदिर क शिल्प वैभव और काबों (चूहों) की विचित्रता के कारण दिनभर देशी-विदेशी पर्यटकों, शोधकर्मियों और श्रद्धाभक्ता का ताता लगा रहता है। करणी मंदिर में स्वच्छद विचरते हुए असख्य कावा के कौतूहल ने विश्व के शैलानियों का अपने आकपण मे वाध रखा है।

श्री करणी माता पूरे जगत की माता है। माँ का हर लाडला यही सोचता है कि माँ उसके साथ है। जब भी कोई माँ को दिल से पुकारता है माँ उसी क्षण उसक समक्ष होती है। हमें पता है माँ पल-पल हमारे साथ है। जहा-जहा भक्त माँ को पुकारता है माँ को जाना पड़ता है। ठीक एसा ही एक उदाहरण है दक्षिण भारत मे हैदराबाद मे श्री करणी माता का मदिर। हैदराबाद मे श्री करणीजी महाराज ने अपनी तपस्या, तेजस्वीता प्रताप और प्रभाव से इस क्षेत्र की जनता के कल्याण, उत्थान और उपकार के लिए इतनी दूरी पर आकर अपने दर्शनो से भक्तों को निहाल किया है। सतों ने ठीक ही कहा है कि जब तक किसी देवी-देवता के कृपा न हो तब तक एक ईंट का निर्माण तो दूर एक कदम जमीन भी खरीदी नहीं जा सकती है। अगर किसी पर अति कृपा हा तब बडे-बडे प्रासाद बनने में क्षण भर भी देरी नहीं होती। ठीक ऐसी ही कृपा एक परिवार पर हुई वो है सोमानीजी का परिवार। वो सोमानीजी जिन्होंने तकरीबन 125 वर्ष पूर्व बीकानेर को छोडकर व्यवसाय की तलाश मे दक्षिण की तरफ कूच किया। घूमते-घूमते आपको तिरुपतिबालाजी की महर और करणी माता की कृपा से हैदराबाद म रहकर अपना छोटा-मोटा कारोबार प्रारभ किया। आपका छोटा-सा परिवार छाटा व्यापार दोनो सुचारु रूप से चलता रहा। श्री मुन्ना लालजी सोमानी एक तरफ अपने कारोबार को आगे बढा रहे थे हीं दूसरी तरफ उनकी धर्मपत्नी रतनी बाईजी सोमानी धर्मकर्म के द्वारा जनता की सेवा में हर समय तत्पर रहती थी। आप दाना के व्यवहारकुशलता स लोग भली-भाति परिचित थे। इनके घर आया मेहमान कभी भूखा नहीं गया। सब को कुछ-न-कुछ मिला है। उनके पास जैसा था वैसी जरूरत पूरी की। ऐसे दयावान, समाजसवको पर माँ की तो अति कृपा होगी ही। जब माँ के इस लाडले को माँ की याद सताने लगी तब अपनी धमपत्नी के साथ हर साल माँ क दर्शनार्थ दशनोक आने लग गए। माँ से मिलना किसको अच्छा नहीं लगता। एक बार देशनोक आने के बाद आपका माँ को छोडने का दिल नही करता है। मगर फिर भी जाना पडता है। लेकिन इस विश्वास के साथ की नवरात्री म वापस आना है। यह क्रम आज तक अनवरत बना हुआ है। आज से करीब 60 वर्ष पूर्व आपके पुत्र तेजप्रकाश के जन्म से इनके परिवार से कोई न कोई प्रत्येक नवरात्री म माँ के दरबार में हाजिर हो जाते है। सामानी परिवार में व्यवसाय को मुनालालजी के पदचिह्नों पर कारोबार को ऊचाईयों के शिखर तक पहुचाने में पाचो पुत्रो—जमनालाल, तेजप्रकाश, चन्दुलाल, मुरलीधर एव जयकिशन इत्यादि ने अपनी पूरी मेहनत और लगन से आगे बढा रहे है। पूरे परिवार ने माता-पिताजी क शुभ वचनो को आदेश मानकर सहर्ष स्वीकार किया। पिताजी का देशनोक नवरात्रि में दर्शनो का बनाया नियम आज भी पुत्र निभा रहे है। सोमानी ब्रादर्स से ख्याति प्राप्त कर चुके इस परिवार से एक पुत्र



चैत्र नवरात्री तथा एक पुत्र आसोज नवरात्री म पूरे नवरात्रा तक माँ की सेवा मे हाजिर रहते है। माँ की कृपा के कारण ही पूरा परिवार आज सामूहिक परिवार के साथ एक छत के नीचे एक साथ बैठकर भोजन ग्रहण करते है, फैसले लेते है। यह माँ की कृपा से सभव है। अन्यथा ऐसा केवल चलचित्रो मे ही देखा जाता है।

माँ की इससे बढकर क्या कृपा होगी कि आपकी माताजी की एक परम सेविका शान्ताबाईजी जिनको दक्षिण भारत मे माँ की सेवा का मौका मिला। शाताबाईजी ने हमेशा रतनीबाईजी सोमानीजी से माँ भगवती, जगत की जननी की चर्चाए सुनना इतना मन को भाने लगा कि आपने एक दिन माँ की एक तस्वीर माँगी । इनके भावपूर्ण निवेदन के कारण माँ की तस्वीर उनको दे दी गई। तब से शाताबाईजी माँ की नियमित पूजा-पाठ प्रारभ करती। माँ की इन पर इतनी कृपा दृष्टि हुई कि आपके मुख से निकला प्रत्येक आशीष वचन खाली नहीं जाता है। शाताबाईजी की आज भी सोमानी परिवार पर अति मेहर है। सोमानी ब्रादर्स के पाचों भाइयों पर पूर्ण कृपा है। मगर जयकिशनजी पर अति विशिष्ट कृपा है। क्योंकि जयकिशनजी माँ के आदेश और शाताबाईजी की कृपा के बगैर किसी भी कार्य को अजाम नहीं देते है। माँ पल-प्रतिपल इस परिवार के साथ है। पूरे परिवार में जयकिशनजी सबसे छोटे है। मगर सब भाइयों ने इनको कर्म से बडा बना दिया है। माँ की अति प्रशन्नता के कारण ही 3 मार्च 2009 को माँ ने आदेश दिया कि माँ का एक पूजा स्थान ऐसा बने जहा अमीर-गरीब, छोटा-बडा, आमजन सब दर्शनार्थ आ सके। इसके पीछे माँ की सोच थी कि दक्षिण मे एक ऐसा मदिर बने जहा के भक्तो के कष्टो का निवारण हो सके। जिनको मेरी जरूरत है, मै उनके सामने रह सकू। हमें पता है कि माँ का नाम लेकर अगर कोई भी कहीं पर भी माँ की जोत कर लेगा माँ उस जोत के रूप से दर्शन अवश्य देगी। इतनी बडी कृपा के कारण ही जब 3 मार्च को मदिर की सोच का बीजारोपण हुआ तब उनके तीन-चार दिन बाद ही मदिर के लिए जमीन तलाशी गई। जमीन भी उस स्थान पर मिली जहा भगवान राम ने सीता माता को ढूढते समय जिस बाग में रात गुजारी उस रामबाग स्थान पर माँ के मदिर की 12 मार्च 2009 का जयकिशनजी के हाथा नींव रखी गई।

नींव रखने के बाद मदिर का कार्य दिन दूना रात चौगुना पूर्णता की ओर अग्रसर होने लगा। आखिर वो घड़ी आ ही गई जिनका सभी भक्तों को न जाने कितने जन्मों से इतजार था। अपनी माँ के साक्षात् दर्शनों का। उनका इतजार खत्म हुआ। यह शुभ दिन आया 29 जुलाई 2009 को सावन मास बुधवार शुक्ल पक्ष की अष्टमी का दिन इस दिन मदिर में मूर्ति की प्राण प्रतिस्ठा हुई। मदिर मे मूर्ति स्थापना तक माँ की मूर्ति को अलग अलग परिधानों में रखा गया। हनुमानदान देपावत ने उमे धान (अन्न) मे रखा। आखिर में मूर्ति को मदिर तक पहुचाया गया। मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के दिन भव्य कार्यक्रम रखा गया। श्री गणेशजी, आवडजी एव करणी माँ को नमन कर जयकिशन सोमानी ने मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की। मूर्ति स्थापना दिवस के कार्यक्रम मे पधारे मेहमाना ने श्री शुभकरणदानजी आढा, सी डी आढा निवासी पाचेटिया (राज), समस्त चारण समाज हैदराबाद, सिकदराबाद एव असख्य भक्तगणो ने मा के दर्शनो का लाभ लिया। राति जोगा (रात्रि जागरण) भी लगाया गया। जिनमे माँ की लीलाओ का गुणगान हुआ। मूर्ति की विधिवत् पूजा अर्चना की गई। गुलाबचन्दजी महाराज के सुपुत्र गोविन्दजी महाराज ने सेवापूजा की जिम्मेदारी को स्वीकार किया। जहा आज नित नियम अनुसार नित्य पूजा-पाठ सुचारु रूप से हो रहे है। मूर्ति के स्थापना के ठीक एक दिन पूर्व जब मूर्ति को मखमल की गद्दी पर शयन करवाया गया। क्योंकि ठीक वैसे ही जैसे माँ ने राव शेखा को जब जेल से मुक्त कराने के लिए स्वय ने चील (सावली) का रूप धारण किया, वैसा ही रूप जब मूर्ति को शयन की गद्दी से उठाया गया। तब मूर्ति की पीठ की तरफ सिदूर से साक्षात् सावली का रूप दर्शन सबको हुआ। आज भी वो दर्शन यथावत हैं। सब को विश्वास हो गया कि माँ देशनोक से हैदराबाद के पाण्डुरगपुर के अत्तापुर क्षेत्र में रामबाग में सहर्ष साक्षात् दर्शन देने को पधार गयी हैं। इस क्षेत्र के



लोग धन्य हो गये है। ऐसा ही एक चमत्कार कुछ दिनो पहले माँ का एक सबसे बडा चमत्कार सोमानीजी के घर मे हुआ। जिससे सुनकर रोंगटे खडे हो जाते है। सोमानीजी के घर में एक दिन रसोई के स्टोर में इतना जोरदार गगन गुजायमान धमाका हुआ जिसको काफी दूर तक लोगों ने सूना, जिसका आज तक पता नहीं चला कि यह कैसे हुआ। रसोई के गैस सिलेण्डेर वगैराह सब सही थे। उस धमाके से दरवाजों के परखचे उड गए। स्टोर के ठीक सामने माँ का पूजा स्थान था। जोरदार आवाज से पूजा मदिर का दरवाजा तपाक से खुल गया। जैसे ही माँ की नजारों ने पूरा नजरा देखा माहौल शात हो गया। पूरे परिवार ने माँ की कृपा को महसूस किया। हमे पता है जिन पर माँ की कृपा दृष्टि हो उनका कोई भी बाल बाका नहीं कर सकता। ऐसे छोटे-मोटे अनेकों चमत्कार माँ ने अपने भक्तो को समय-समय पर दिखाये हैं। एक बार जब माँ के डूगरगढ निवासी लक्ष्मीनारायणजी सोनी, कुन्दनमल सोनी की माताजी इत्यादि दर्शना को पधारे तब सभी ने देखा कि माँ को धारण करवाई गई पुष्प माला के अलावा अन्य रग के फूलों की पखुडिया माँ की मूर्ति से इस कदर गिर रही है मानो कोई पुष्प वर्षा कर रहा हो। माँ की महिमा अपरपार है। अजर है। अमर है। जैसी माँ की दया दृष्टि आज सभी पर है। वैसी ही बनी रहे। माँ हमेशा यही चाहती है कि पूरा परिवार एक साथ रहे। परिवार में कभी कोइ झगडा न हो। इसी कारण माँ ने कइ आयनाओं (प्रतिबधो) को सबको मानन के लिए राजी किया है। सभी ने माँ का आदेश मानकर आज तक निभाते आ रहे है। माँ की मेहरमानी की बदौलत आज सामानी ब्रादर्स परिवार न पडपोते का मुह देख लिया है। बहुत कम लोग होते है जिनको सौ वर्ष की आयु अथवा पडपोते का मुह देखने को मिलता है। हा इतना जरूर है कि जो परिवार माँ का स्मरण कर परिवार के साथ रहते है, सुख-दु ख में कधे-से-कधा मिलाकर चलते है वहा दु ख, कष्ट हानि, बुरी नजर, झगडा इत्यादि कोसों दूर रहते है। वहा सिफ माँ की कृपा से समृद्धि खुशिया, सुख-शाति धन-सपदा की अपार वृद्धि होती है। बद मुट्ठी की ताकत पूरे परिवार की शक्ति होती है। अगर अलग-अलग खुले हाथ हो परिवार में बिखराव हो, तकरार हो तब हर कोई भी अगुली उठा सकता है। किसी ने सच ही कहा है कि पत्थर (सामूहिक परिवार) से आसमान मे छेद हो सकता है ककर (अकेला परिवार) से नहीं।

श्री करणीजी ने हमेशा समाज के उत्थान, भाईचारे और दीन-दुखियो की सेवासहायता के लिए जोर दिया। जब-जब जरूरत पडी माँ ने अपने चमत्कारो से दुष्टों का सहार किया। भक्तो की सहायता की । माँ को जितनी खुशी सामृहिक परिवार से, कन्याओं के मानमम्मान से धर्म-कर्म के कार्यों से होती है उतनी दिखावों के आडम्बरो से नहीं । माँ हर समय हमारे साथ है साथ ही रहेगी। जब कभी भी कष्ट पीडा हो, परेशानी हो चिन्ता हो एकात मे माँ स्मरण करने से माँ कष्टों का निवारण, भय से मुक्ति और सुख-शाति दिलाती है। माँ की जय हो। जै-जैकार हो। ◻

स्तुति

आई शरणे आपरै म्हू पडियो हक मार।
सकट सह मेटो सगत जामण जुग-दातार।।
विपत पडी इण बार सो कोई नह साभळे।
अव तो अवश पधार चारण तारण तेमडा।।

चवदा सौ चम्मालसे सातम शुक्कर वार।
आश्विन मास उजाळ-पख, आई लियो अवतार।।
पासी बीका पाट करना दे श्री मुख कह्यो।
थारे रहसी ठाठ म्हारा सू बिरचो मति।।



अंदाता श्री इन्द्रबाईसा, श्रीमढ खुडद



ईश्वरदान

॥ ॐ श्री करणी नम ॥

ईश्वरदान पुत्र भीखदान बीठू

हरखावतो का बास देशनोक (बीकानेर)

विनीत कुवर भवरदान महेन्द्रदान

मोबाइल भवरदान 09983653629



भवरदान

चिरजा-साहित्य

बाल रूप श्री करणीजी



माँ के श्रीचरणो मे

MADHU MARBLES

The Granite People

86 B R.B Basu Road (Canning Street) Rampuria Market, 5th Floor KOLKATA 700001

Ph 22342252 (R) 25576124 Mob 09831021060 Tele Fax 033 22342253

E mail karanimpex@rediffmail com

Kamal Anchalia

चिरजा-साहित्य

धार्मिक, सामाजिक एव नैतिक पतन-उत्थान की दृष्टि से भारतीय इतिहास में चौदहवीं एव पन्द्रहवीं शताब्दी की अपनी महत्ता है। ह्रासोन्मुख हिन्दू-धर्म को अनेक लोक देवी-देवताओ, समाज-सुधारकों एव सन्त महात्माआ का सहारा मिला। अधिकाशत राजस्थानी चिरजा-साहित्य भी इसी युग में हुए देवी-अवतारो से सबधित है। मनुष्य के चार पुरुषार्थों (धर्म अर्थ, काम मोक्ष) में प्रथम प्ररुपार्थ धर्म माना गया है। भारतीय वाङ्मय में धम-प्रधान है। राम-कृष्ण बुद्ध महावीर एव नाना दवी-देवताओं के चरित्र को लेकर प्रभूत मात्रा में रचनाए की गई है। राजस्थानी चिरजा साहित्य भी देवी विषयक है।

'चिरजा' नाम से जाने-जाने वाले भक्ति प्रधान गेय पदों में देवी माँ के रूप की महिमा गुणों की गरिमा रास रमते समय नवलाख शक्तियों की नृत्यभगिमा युद्ध-निपुणता कष्ट में पडे भक्त की करुण पुकार एव अब तक जिन-जिन भक्तों को जिस-जिस सकट से उबारा—इन सभी बातों का वर्णन-विवेचन मिला है। इन्हें भक्त लोग देवी के मंदिरों में नवरात्रि के शुभ अवसर एव रात्रि-जागरणों में भाति-भाति की लयों और स्वर-लहरियों मे गाते है। एक उल्लेख्य विशेषता के रूप म कहा जा सकता है कि चिरजाए गेय होती है। ये चिरजाए वाद्यों के साथ भी गाई जाती है और वाद्यों के बिना भी इन्हें गाया जा सकता है।

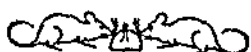
राजस्थान प्रदेश म प्रचलित इन चिरजाओं म जहाँ एक ओर दुर्गा, चामुण्डा महिषासुर मर्दिनी, कालिका चण्डिका आदि पौराणिक देवियों के प्रसग उभारे गय है वहाँ दूसरी ओर हिंगुलाज आवड, बिरवड करणी सैणी देवल, राजल चन्दूबाई इन्द्रबाई सोनलबाई आदि लोक-देवियो के जीवन एव इन देवियों द्वारा दिये गये वरदाना का प्रस्तुत किया गया है।

वर्ण्य-विषय को मद्दे नजर रखकर चिरजाओं को अनेक वर्गों एव उपवर्गों मे रखा जा सकता है पर स्थूल रूप में हम चिरजाओ को दो वर्गों मे विभक्त कर सकते है।

(अ) सिग्गाऊ चिरजाए

(आ) चाडाऊ चिरजाए

इस शोध-लख म हम क्रमश इन्हीं चिरजाओं का विवेचन प्रस्तुत कर रहे है। इन दोना प्रकार की चिरजाओ के अध्ययन से पूर्व यह समीचीन प्रतीत होता है कि इनके मौलिक अन्तर को स्पष्ट कर दिया जाये। साधारण चिरजाआ को सिग्गाऊ चिरजाए सज्ञा दी जाएगी जबकि ऐसी सभी चिरजाओं को चाडाऊ चिरजाए कहा जाएगा जिनमें पुकार करने वाला भक्त देवी माँ को उसके भी आराध्य की सौगन्ध दिला कर तत्काल कष्ट निवारणार्थ प्रार्थना करता है। चाडाऊ चिरजाओ मे उपालम्भ की प्रधानता हाती है जबकि सिग्गाऊ मे विनयशीलता की। सिग्गाऊ चिरजाए कभी और किसी समय भी गाई जा सकती है लेकिन चाडाऊ चिरजाओं के गान पर प्रतिबन्ध है। जब भक्त पर बहुत बडी मुसीबत आ जाती है और वह स्वय को निस्सहाय, निरुपाय तथा निर्बल पाता है तब शरणागतवत्सला देवी माँ कस विरद गान इन चिरजाओं के रूप म करता है। इस प्रदेश में यह लोक-मान्यता प्रचलित है कि विकटतम परिस्थितियों के उपस्थित होने पर यदि भक्त दवी की मूर्ति के समक्ष 'जोत' करके इन चाडाऊ चिरजाओं का गान करे तो देवी माँ को निश्चितरूपेण सहायतार्थ आना पडता है।



अ) सिग्गाऊ चिरजाए

सामान्य दिनो मे गाई जाने वाली इन चिरजाओ म ाकायत का भाव प्राय नहीं रहता है। भक्तजन देवी के देर जाते समय रात्रि-जागरण म और नवरात्रि के दिनों इन चिरजाओ का गान किया करते है।

इन चिरजाओ मे मुख्य रूप से भगवती माँ का गगान हुआ करता है। आदि शक्ति पार्वती की साक्षात् ावतार मानी जाने वाली लोक-देवियो के प्रवाडा एव रदानो का विशद-विवेचन इन चिरजाओ मे मिलता है। ई सिग्गाऊ चिरजाए ऐसी भी मिलती है जिनमे इन देवी ावतारा के गोलोकवास पश्चात् के दिये परचा का ल्लेख भी मिलता है। इन देविये द्वारा दिये गये इन रदानो म कुछ वरदान इतने प्रसिद्ध हो गये है कि उनका इन अति प्रसिद्ध जनसाधारण प्रचलित प्रवाडों का ल्लेख कर रहा हू—

1 कान्हे का वध
करणी माता द्वारा

2 अणदे खाती के ऊट के टूटे पैर को ठीक करना
करणी माता द्वारा

3 दभी का रूप धारण कर चौथू खाती को वचाना
करणी माता द्वारा

4 चील का रूप धारण का राव शेखा को कैद से छुडाना
करणी माता द्वारा

5 जगडू शाह की डूबती जहाज को उवारना
करणी माता द्वारा

6 हाकडा नामक समुद्र सोखना
आवड़ माता द्वारा

7 लोवडी द्वारा उदित होते सूर्य को छिपाना
आवड़ माता द्वारा

8 अमृत लाकर मृत भाई को जीवित करना
आवड़ माता द्वारा

9 तीन दिन पूर्व मर चुके लक्ष्मण की आत्मा धर्मराज से पुन ले आना
करणी माता द्वारा

10 नौ रोजा छुडाना
राजल माता द्वारा

11 कुए मे अखूट पानी होने का वरदान देना
सैणल माता द्वारा

सिग्गाऊ चिरजाओं म देवी को आदि-अनादि योगिनी के रूप मे चित्रित किया गया है। समग्र सृष्टि एव जीव मात्र की रचना देवी माँ ने ही की है। महाप्रलय के पश्चात् देवी माँ ने स्वेच्छया भूमि पर अवतार लिया और सृष्टि की रचना की। एक चिरजा मे इस बात को इन शब्दा में व्यक्त किया गया है—

'महाप्रलय रै बाद आद तुम निज इच्छा वपु धारा।'

देवी को 'आदि अनादि आप है' कहने वाले कवियो ने 'आपो आप उपाणी हो' कह कर 'एकोऽहम् बहुस्याम् सृष्टि-रचना के मूल भाव की पुष्टि की है। और इस आदि-अनादि योगिनी माया स्वरूपा देवी के गुणो का पार ब्रह्मा, विष्णु शकर एव वेद-पुराण भी नहीं पा सकते है।

'आद अनाद आप हौ आवड, जगत सरब पालम्बा।
सेस महेस विस्नु स्तुति गावत, पार न पावत ब्रह्मा।'

और यही सृष्टि की आधारभूता महाशक्ति भाति-भाति के रूप धारण कर इन्हीं अवतारो एव अन्य देवताओं की शक्तियो के रूप में प्रसिद्धि पाती है।

'ब्रह्मा सग सावित्री बाजै, सुरपति सग सुराणी।
विस्नु सग कमला बलिहारी, सिव के सग सिवराणी।।'

इतनी शक्ति-सम्पन्ना देवी माँ के अतिरिक्त मनुष्य जाति की कष्ट-पीडा को कौन मिटा सकता है। मनुष्य सव ओर से हार-थक कर ही यह वात कहता है—

'तुम विन कौन सहाई जगत में तुम विन कौन सहाई।
मोपर महर करो महमाई, तुम विन कौन सहाई।।'

तथा—

अम्बे म्हारे आप विना और ना आधार।

भक्त की करुण पुकार सुन कर उसकी सहायतार्थ दौडी आती है। भक्त को जगदम्बा का सबसे वडा अवलम्ब है। माता के समान कोई नाता नहीं माना गया है। माँ क प्रवाड़ों का लेखा-जोखा कर सके, ऐसी सामर्थ्य किस म है। यहाँ एक चिरजा उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है, जिसमें देवी अवतार करणी माँ के चमत्कारा का उल्लेख है—

करनल किनियाणी, धिन धिन धणियाणी जगल देस री।
मूरख कान्है सगत नीं मानी, बीरोटणी वखाणी।
व्है सिंघ रूप आछटी हाथल, मार लियौ माडाणी।।1।।
बगसी मात राव बीका नै, धर थलवट रजधाणी।
रिडमल तणी मुरधरा राखी, है साखी हिन्दवाणी।।2।।
सिंवल रूप भूप सखा री, छिन मे कैद छुडाणी।
दभी रूप कुप अणदे रै, पकडी लाव पुराणी।।3।।
चलतौ ऊट तूटता चौथू, वोल्यौ आरत बाणी।
करणी काठ तणौ पग कीनौ, जग सकलाई जाणी।।4।।
डूबत ज्याज तारी दाढाली, उदध किनारै आणी।
समन्दर नीर सीर देसाणै, सहर अजू सहनाणी।।5।।
बाई 'इन्द्र' रावली बालक, तेडै दरसण ताणी।
रामत खुडद पधारो रमबा, अम्बा धावलवाली।।6।।

इसी प्रकार आवड माँ द्वारा सूर्य को रोके जाने, राजल माँ द्वारा नौरोजे छुडाने के प्रसग का वणन अनेकानक चिरजाओ में मिलता है। इन चिरजा-गाना म कई भक्तों ने भगवती से दया की भीख माँगी है तो कई कविया ने अपन असाध्य रोगो को मिटाने हेतु प्रार्थना की है।

भक्त ससार के भयानक जाल मे फसा स्वय को बहुत निरीह एव निरुपाय पाता है। इस भवसागर से छुटकारा पाने के लिये वह बेचैन है। वह स्वीकारता है कि माँ अवगुणो से बुरी तरह घिरा हुआ हू। अज्ञानान्धकार से त्रस्त, भ्रम-जाल में भटके भक्त को करणी माँ की शरण ही उजाले की किरण प्रतीत होती है। यह कह बैठता है—

मोह मद तम छाया माता, घटा अघ घनघोर।
किरण ज्योत प्रकास करणी, सगती बात सजोर।
वय रजनि बिन काज बीती, भयो चाहत भोर।
अब बिन जग माहि अबतौ, आसरौ नहीं और।।

भक्त यदि गुनाह भी कर दे, गलती भी करद फिर भी विशाल हृदया माँ तो उसे माफ ही करेगी। माँ अपने मन म सासारिका जैसी ईर्ष्या कैसे रख सकती है। वह व्यक्ति की कुटिलताओ को नहीं उसकी विनयशीलता को ही देखती है और उसकी पुकार सुनती है। पुत्र भले ही कपूत हो। प्राचीन ग्रथो मे भी कहा गया है—'कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति। इसी भाव को एक चिरजा प्रणेता ने इन शब्दो में व्यक्त किया है—

म्हा कानी मत जा जग जननी,
किरपा करो जन जाण।।

ऐसी दया-सिन्धु माँ की सेवा-चाकरी म हर कोई रहना चाहता है। माँ मे अर्ज करता हुआ एक कवि कहता है—

'अम्बा म्है चाकर थारौ जी, म्हारी अरज सुणौ जगदम्बा।
आप तणों आधार है म्हारै राज सहारौजी
माटौ सरणौ मात रौ है, हमे तिहारौजी'

भक्त यह भली-भाति जानता है भगवती माँ की दया के बिना भक्ति-भाव हमारे हृदय में उदित नहीं हो सकता। एक चिरजा मे भक्त कवि द्वारा यही भाव प्रकट किया गया है कि—हे माँ। इन सासारिक बधनों से छुटकारा ता दिला ही पर साथ म अपनी भक्ति भी प्रदान करो—

मात हिंगुलाज तू मेरी, दया कर भगती दे तेरी।
अज्ञान अबुद्धि नास दे री, मेट घोर अन्धेरी।
लोभ मोह की काट बेरी, करो मत मात अव देरी।
दु ख सिन्धु में नाव परी है, खाय गोत्या गैरी।।

इन सिग्गाऊ चिरजाओं में अवतारी रूपों के वर्णन-विवेचन के साथ हा देवी के श्री विग्रह के चित्र भी नानाविध उपमाए प्रदान कर उतारे गये हैं। इनमें देवी के

मुन्दर सौम्य सुकोमल शरीर की कमनीय कान्ति के चित्रण के साथ ही अनेक आभूषणो का उल्लेख भी बार-बार किया गया है। माता के मनमोहक रूप को भक्त के चक्षु-चातक प्रतिपल निहारते रहना चाहते है—

देखत हग न अघात मात छिब देखत हग न अघात।

इस देवी के मुखमण्डल का तेज करोडा सूर्यों के तेज से भी अधिक है। उसके स्वरूप को ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी शब्दा में नही उतार सकते फिर साधारण मनुष्य की तो बात ही क्या है?

हसाती आखै उण बारी।
कोटि भाण बढ कान्ति तिहारी।।

भक्तो की सहायता करने हतु, धर्म की स्थापना करने हेतु एव दुप्ट-दलन हेतु देवी माँ मानवी रूप धारण करती है। दुप्टो का सहार करने के पश्चात् रास लीला करना महाशक्ति का स्वभाव रहा है। नौलाख शक्तिया सहार-लीला के बाद रास लीला रचाती है। उस रास लीला को निहारने ब्रह्मादिक-दवता उपस्थित होते है। पर इनम से कोई रासलीला का वणन करने मे समर्थ नही है—

अखाडै रमै नवलाख लोवडियाल अम्वे अखाडै रमै।
कोटि भाण हूत सोभा अधिक तेज मे,
ब्रह्मा विस्नु महेस नहिं जाणै भेद में।

इन शक्तियो के रास को यथासामर्थ्य निरूपित करने हेतु यहाँ के कवियो ने ध्वन्यानुकरण वाची शब्दो का विशप रूप से प्रयोग किया है। इन शब्दों के प्रयोग से वणन प्रभावकारी हो गये है और ऐसी चिरजाओ को पढते एव गाते समय रासलीला का चित्र हमारी दृष्टि क समक्ष यथावत रूप म उपस्थित होता रहता है। इन शब्दों के प्रयोग स चिरजाआ म नाद-सौन्दर्य आ गया है। य शब्द ही राजस्थानी भापा की अनुपमनिधि है। इस सत्रध मे एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

धुधुकट प्रकट ध्रिकट धपमय,
धुनि बाजा च्यार प्रकार बजै।
राग छत्तीस अलापति रागिनी,
गद्रव गला की गरभ ग्रमै।।
थ्रग थ्रग थेई थेई नृत थावत,
उमग न मावत अग उमै।
डैरव हाथ बजावत डम डम,
भरव क्रम क्रम साथ भ्रमै।।

उक्त प्रकार की रासलीला करने वाली महाशक्ति किस प्रकार के वस्त्राभूपणो से सुशोभित होती है इसका वर्णन भी अनेक चिरजाओं में हुआ है। एक चिरजा में—

माथा नै महमद हद बण्यो,
रखडी आप ही धारौ सा
काना मे कुण्डल हद वण्या,
झुटणा आप ही धारौ सा।
मुखडा नै वेसर हद वण्यौ,
मोतीडा आप ही धारौ सा।
हिवडा नै हासज हद बण्यो,
तिलडी आप ही धारौ सा।
रेसम री अगिया पैरौ अन्दाता,
हिवडै हार हीरा रौ सा।
डोडी बाया चुडलौ सोहै,
गजरा आप ही धारौ सा।
पेरण नै पौसाक केसरिया,
गजरा आप ही धारौ सा।।

आज के इस फैशनपरस्त युग म प्राचीन आभूपण लुप्त होते जा रहे है, इसलिये उनकी जानकारी की दृप्टि से इन चिरजाओं का अपना महत्त्व है।

देवी के मदिर को मढ कहा जाता है। माँ के मढ की मनमोहक शोभा का चित्रण भी इन चिरजाओं में हुआ है। प्रात -साय मढ में होने वाली आरती एव आरती क समय बजाये जाने वाले विविध वाद्यो का उल्लख भी इन चिरजाओ में मिलता है। एक चिरजा का कुछ अश प्रस्तुत है—

झरण झरण झालर बाज, घुरत है नगारौ।
ताल अर मृदग बाजै, आवै लोग सारौ।।

आरती के समय देवी माँ का भाग चढाया जाता है। कुछ चिरजाए ऐसी भी मिलती है जिनमें दवी क



प्रसाद का वणन आया है। देवी को मिष्टान्न एव मदिरा-माँस भी चढ़ाय जाते हैं।

'सभी मिल सगत्या नवलाख सग डोकरी जीमो डाढाळी'
घेवर पूड़ी पकवान मिठाई खटरस इख थाली

भक्त की देवी माँ के प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति है। उसे देवी से सबधित सभी स्थान अत्यधिक प्रिय हैं। तभी वह कहता है—'अम्याजी सू प्यारो लागे देसाणे रो देस।' माँ की शरण चाहने वाला भक्त सदा यही इच्छा रखता है कि सदैव देवी माँ मे सान्निध्य बना रहे। इसलिये वह अर्ज करता है कि ह माँ! तू मुझे अगले जन्म म अपने मढ के पास ही चेर की झाड़ी बना देना ताकि मैं सदा आपकी शरण म रह सकू।

(आ) चाडाऊ चिरजाए

अब हम चिरजाओं के दूसर प्रकार पर आते हैं। जब-जब भक्तों पर सकट आते हैं तब-तब भक्त सभी की आशा छोड अपने आराध्य को पुकारता है। परिणामत आराध्य को आराधक की सहायता करने पहुचना पडता है। किसी दूसरे प्रसग में गुप्तजी ने भी यही बात कही है—'भक्त नहीं जाते कहीं, आते हैं भगवान्।' विषम परिस्थितियों में भक्त इष्टदेव को याद करता है उसका विरद गान करता हुआ स्मरण कराता है कि आपने तब-तत्र उस-उस भक्त की सहायता की और यदि मरी बेर नहीं आये तो आपके ही विरुद की हानि होगी। लोग आपका विश्वास नहीं करेंगे। फिर आप शरणागतवत्सल नहीं कहे जायेंगे। चाडाऊ चिरजाओ में प्रमुख रूप से ऐसी ही भावनाए अभिव्यक्त हुई हैं।

देवी माँ के उपासको की यह मान्यता है कि भीड पडने पर और भक्त की करुण पुकार सुन कर माँ सिह पर सवार हो अति शीघ्र पहुचती है। भक्त को कष्ट से उबारती है। ये चाडाऊ चिरजाए कार्य के अटक जान पर ही उपालम्भ के स्वर में गाई जाती है अन्यथा नहीं। ऐसी कइ प्रसग सुनने में जाकर जोत करके माँ भवानी से अर्ज करता है—इन चाडाऊ चिरजाओं के माध्यम से। और देवी उसके दु ख को निश्चित रूप से दूर करती है। यदि हम इतर शब्दों में कहना चाहें तो कहा जा सकता है कि ये चाडाऊ चिरजाए ऐसे आह्वान मन्त्र हैं जिन्हें सुनते ही देवी को सहायतार्थ आना पडता है। सब आर स निराश होकर तथा पूर्णतया हार-थक कर ही भक्त इन चिरजाआ का सहारा लेता है।

इन चिरजाआ का मुख्य स्वर है—आतपुकार और इन चिरजाओं का मूल आधार है—अपने आराध्य के प्रति भक्त के हृदय का अटूट विश्वास। उसे दवी माँ का पूरा-पूरा भरोसा है। वह मानता है कि ज्यो ही मेरी पुकार माँ के काना म पडेगी, वह सहायतार्थ आ पहुचेगी। भक्त विषम-परिस्थिति मे माँ को दौड़त-दौडत आने का आह्वान करता है—

म्हनै तो भरोसो घणो छै माऊजी आप तणो हे आई।
दौडी क्यू नी देसणोक सू, हेलो सुण मेहाई।।

ऐसे सकट के समय भक्त यह कदापि सहन नहीं कर सकता कि वह रोता-कराहता रह और दवी माँ नौ लाख शक्तियों के साथ रामलीला मे तल्लीन रहे। वह तो यही कहता है कि सब कुछ छोडकर मरी मदद करने पधारो—

सगति नवलाख सग छाई, मदत म्हारी आव मेहाई।

भक्त की इस करुण पुकार म अटल विश्वास है। साथ ही उसे अपनी आराध्या देवी के सामर्थ्य मे भी विश्वास है कि कठिन से कठिन कार्य उसके लिये अति सरल व सहज है। कठिनाई म फसा भक्त पल भर की देरी बर्दाश्त नहीं कर सकता। ज्यो ही उसे ऐसी प्रतीति होने लगती है कि माँ के आने में देर हो रही है त्यो ही वह उपालम्भ देने लग जाता है। वह कह उठता है कि पहले तो आप बहुत जल्दी आ पहुचती थी अब क्या सवारी का सिह बूढा हो गया या थक गया।

अम्बे जी पैली तीजी ताली आता, अबै काई सिंघ थक्यो अन्दाता।

भक्त के मन मे विचार आता है कि कही कलिकाल की दूषित हवा तो माँ को नही लग गई है सो आने में इतने नखरे कर रही है। साथ में वह यह भी

साचता है कि यदि माँ सहायता करने नहीं पहुचती है तो इसमें मेरा और अधिक क्या बिगड़ेगा। मुझ तो कष्ट सहना ही है पर फिर माँ का विश्वास कौन करेगा। उसकी जगहसाई हो जाएगी।

दासा पर न दया किये (तो) हासी होत जहान।

भक्त इतना कह कर ही बस नहीं कर देता। वह आगे यह भी कहता है कि हे माँ! आप गहरी निद्रा म सोई हुई है तो शीघ्र ही निद्रा का त्याग कर। यदि आपने किंचित भी देर कर दी तो मैं रूठ जाऊगा, क्योंकि क्रोध भी तो उस पर ही किया जाता है जिसे हम अपना समझते हैं। भक्त का उक्ति-वैचित्र्य द्रष्टव्य है। वह कहता है कि मुझे तो एकमात्र आप ही का भरोसा है और जब आप भी भूल जाएगी तो फिर मैं किसके आगे पुकार करूगा। इससे आपका अपने विरद की हानि तो होगी ही पर साथ ही दुष्टों एव दुर्जनों की हिम्मत बढ़ जाएगी। वे आपकी शक्ति एव सामर्थ्य की सीमा की जानकारी प्राप्त कर लेगे। यह बात चुनौती के रूप म भक्त द्वारा चिरजा में इस प्रकार प्रकट की गई है—

जो ऊपर करसौ नहीं, जगदम्बा जन जाण।
जग माँही कुण जाणसी, अम्बा भुज आपाण।।

कभी-कभी भक्त यह भी कह देता है कि मैं तो अवगुणों का आगार हू पर आप तो पतित-पावनी हैं। माता का तो सदा से यही स्वभाव रहा है कि गुण-बुद्धिहीन एव कृतघ्न बच्चो की भी सहायता करती है। सूर्य-चन्द्र इस बात के साक्षी है कि माँ सदा अपने बालको की हर भय से रक्षा करती है। कुछ भक्त कवियो ने स्पष्ट शब्दो म खरी-खरी सुनाते देवी माँ से कहा कि इतने बडे कार्य सहज ही मे निबटाने वाली शक्तिशाली माँ आज मेरे इस छोटे से दु ख से डरकर कहाँ जा छुप बैठी है—

समद हाकडौ सोखणी, घर मुलतान धुजाण।
दुरजण दलणा दिव्य (तू) कहाँ छिपगी सूरज छिपाण।।

अनेक चाडाऊ चिरजाए ऐसी है जिनमें भक्त हृदय का अत्यधिक क्रोध अभिव्यक्त हुआ है। कष्टो से तग आया भक्त देवी माँ को भांति-भांति से कोसता है। वह यह मानने को मजबूर हो जाता है कि माँ सहायता करने का अपना स्वभाव भूल गई लगती है। भगवती शायद गहरी नींद सो गई होगी या उसका सिर बीमार हो गया होगा। इस भाव की एक चिरजा का कुछ अश उद्धृत किया जा रहा है—

सुयगी नींद कलाम में, हुयगी बहरी हाय।
क निदुराइ उर छायगी, दया न आइ दाय।
बहरी हुइ कै ब्रद तज्यौ, अन्य दिस गइ की आज।
साय रहीं कि समाधि सुख, मिजलिस थइ समाज।
भक्तन हित अन्य दिस भजी, (कै) तज दा आतुर ताय।
छोडी हुयग्या सिंघ (कै) खाजगा, रजगा कै रमणाय।
बहरी भइ कहा सिंह बूढौ, कहा पदहाण कहाणी।
पिण्ड कहा हाय कछु नहीं पौरुस, कहा यह काज सकाणी।।

और अन्त में भक्त पुकार-पुकार कर घोषणा करता है कि यदि आप मेरी सहायता करने नहीं आएगी तो आपको लोग भविष्य में 'आई' नाम स सबोधित नहीं करेगे। फिर तुम्हे अर्थात् (मेहाई) को 'सरणाई साधार' नहीं स्वीकारेंगे।

चाडाऊ चिरजाओं में कुछ प्रसग ऐसे भी हमारे समक्ष आये हैं जिनमे तग आकर भक्तों ने देवी को उनकी पूर्ववर्ती तथा आराध्या देवी की सौगन्ध दिलाई है। जैसे करणी माँ को याद करते समय आवड माँ की सौगध दिलाना। एक चिरजा में भक्त करणी माँ स विनती करते हुए कहता है कि आपको अपनी आराध्या आवड़ देवी की सौगन्ध है, मेरी सहायता करने जरूर पधारना। फिर मै भी देखता हू कि आप अपनी आराध्या की सौगन्ध को कैसे झुठलाती है—

करुणा सुण किरपा करौ, सजि सिंह थारौ वेग सजाय।
आवड जी री आण दिराऊ, मान लेहु महमाय।।

तथा—

कलू देख छिपजो मती, थानै दाढाली री आण।

इस प्रकार हम पाते हैं कि चाडाऊ चिरजाओ में भक्त ने बार-बार अर्ज करके मातेश्वरी को सहायतार्थ

बुलाया है, देवी माँ के शीघ्र न पहुचने पर उसे खरी-खोटी बातें सुनाई है, देवी के विरुद्ध-हानि की चर्चा चलाकर अपने स्वार्थों की पूर्ति की है। और तो और इतना कुछ करने पर भी यदि बात पार नहीं पडी है तो देवी को इप्ट देवी की सौगन्ध दिला दी है। यहाँ यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि अधिकतर चाडाऊ चिरजाओं की सजना व्यक्तिगत स्वाथपूर्ति हेतु हुई है।

दूसरी ओर यह भी सत्य है कि सिग्गाऊ चिरजाआ जैसी कलात्मकता एव साहित्यिकता इन चिरजाओ मे नही मिलती। फिर भी, भक्त के दैन्य परवशता, असहायता स्वय के ओछेपन एव माता की महत्ता के जिक्र, उपालभ, आराध्य म आराधक के अटूट विश्वास आदि की दृष्टि से इन चिरजाआ का अपना महत्त्व है। ❑

छद

आई री ये बडी अधिकाई
चोख मेळा भेळा, चाहे एको कारण थाई।

भ्रान्ति तणा भव शायर भरिया
कुण-कुण पार उतरशी।
बापडा कटक वूड मरसी
थारा सेवग तरसी।।1।।

भ्राति ब्रह्मा विष्णु न भागी
भ्राति शकर भागी।
ज्हारी जात अधिकता अतर
जग सगळे ही जागी।।2।।

पाँच पचोळ मती पति पहले
पाण्डव पच पहेटा।
चक्र तिहारे चर वण चेतन
बावन वीर बहेटा।।3।।

तू खळ-खडी तू ब्रह्मडी
तू बेताळ विहडी।
मेरे काज वीशभुज दडी
तू चरताळी चडी।।4।।

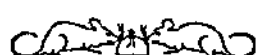
तेरा चरित्र तू ही तू जाणे
तेरा चरित्र जनेपा।
अखन कवारी तीना जाया
ब्रह्मा विष्णु महेशा।।5।।

नाही सूरा नाहा चदा
नाही इन्द्र कहेंदा।
नाहीं धरणी आकाश न कहिये
नाहा गोळाज फुलदा।।6।।

पहला तूझ परणवा आयो
बूझे माड न बाधों।
लाख जानियाँ सेतो लाडो
खीज करी ते खादो।।7।।

जम्मन इच्छा तरी जिण दिन
जब ते सुर नर जाया।
तू परणी तब तरे मडप
तैं ही मगळ गाया।।8।।

भद्र कालिका शुभु भवानी
कौमारी कामक्ष्या।
आशा-पूरा पूरो आशा
दो मातेश्वरी तुम्हारी दीक्षा।।9।।



साचता है कि यदि माँ मरायता करने नहीं पहुचती है तो इसम मेरा और अधिक क्या बिगड़ेगा। मुझ तो कष्ट सहना ही है पर फिर माँ का विश्वास कौन करगा। उसकी जगहसाई हो जाएगी।

दासा पर न दया किये (तो) हासी होत जहान।

भक्त इतना कह कर ही बस नहीं कर देता। वह आगे यह भी कहता है कि हे माँ! आप गहरी निद्रा म सोई हुई है तो शीघ्र ही निद्रा का त्याग कर। यदि आपने किंचित भी दर कर दी तो मैं रूठ जाऊगा, क्योकि क्रोध भी तो उस पर ही किया जाता है जिसे हम अपना समझते हैं। भक्त का उक्ति-वैचित्र्य द्रष्टव्य है। वह कहता है कि मुझे तो एकमात्र आप ही का भरोसा है और *जब आप भी भूल जाएगी* तो फिर मैं किसके आगे पुकार करूगा। इससे आपका अपने विरद की हानि तो होगी ही पर साथ ही दुष्टा एव दुर्जनो की हिम्मत बढ़ जाएगी। वे आपकी शक्ति एव सामर्थ्य की सीमा की जानकारी प्राप्त कर लगे। यह बात चुनौती के रूप म भक्त द्वारा चिरजा म इस प्रकार प्रकट की गई है—

जो ऊपर करसो नहीं, जगदम्बा जन जाण।
जग माँही कुण जाणसी, अम्बा भुज आपाण।।

कभी-कभी भक्त यह भी कह देता है कि मै तो अवगुणा का आगार हू पर आप तो पतित-पावनी है। माता का तो सदा से यही स्वभाव रहा है कि गुण-बुद्धिहीन एव कृतघ्न बच्चों की भी सहायता करती है। सूर्य-चन्द्र इस बात के साक्षी है कि माँ सदा अपने बालको की हर भय से रक्षा करती है। कुछ भक्त कवियो ने स्पष्ट शब्दों में खरी-खरी सुनाते देवी माँ से कहा कि इतने बडे कार्य सहज ही मे निबटाने वाली शक्तिशाली माँ आज मेरे इस छोटे से दु ख से डरकर कहाँ जा छुप बैठी है—

समद हाकडौ सोखणी, धर मुलतान धुजाण।
दुरजण दलणी दिव्य (तू) कहाँ छिपगी सूरज छिपाण।।

अनेक चाडाऊ चिरजाए ऐसी है जिनम भक्त हृदय का अत्यधिक क्रोध अभिव्यक्त हुआ है। कष्टों से तग आया भक्त देवी माँ को भाति भाति स कोसता है। वह यह सोचने को मजबूर हो जाता है कि माँ सहायता करने का अपना स्वभाव भूल गई होगी है। भगवती शायद बहरी हो गई होगी या उसका सिर बीमार हो गया होगा। इस भाव की एक चिरजा का कुछ अश उद्धृत किया जा रहा है—

सुणगा नाद कलाम में, हुयगी बहरी हाय।
क निंदुगइ उर छायगी, दया न आइ दाय।
बहरी हुइ कै ब्रद तज्यौ, अन्य दिय गइ की आज।
साय रहा कि समाधि सुख, मिजलिस थई समाज।
भक्तन हित अन्य दिस भजा, (के) तज दी आतुर ताय।
घोड़ों हुयग्यो सिंघ (क) खाजगा, रजगी कै रमणाय।
बहरी भइ कहा सिंह बूढौ, कहा पदहीण कहाणी।
पिण्ड कहा हाय कछु नहीं पौरुस, कहा यह काज मकाणी।।

और अन्त म भक्त पुकार-पुकार कर घोषणा करता है कि यदि आप मेरी सहायता करने नहीं आएगी तो आपका नाम भविष्य में आई नाम से सबोधित नहीं करग। फिर तुम्ह अर्थात् (मेहाई) को 'सरणाई साधार' नहीं स्वीकारेंगे।

चाडाऊ चिरजाओं में कुछ प्रसग ऐस भी हमारे समक्ष आय है जिनमें तग आकर भक्तों ने देवी को उनकी पूर्ववर्ती तथा आराध्या देवी की सौगन्ध दिलाई है। जैसे करणी माँ को याद करते समय आवड माँ की सौगध दिलाना। एक चिरजा में भक्त करणी माँ से विनती करते हुए कहता है कि आपका अपनी आराध्या आवड देवी की सौगन्ध है, मेरी सहायता करने जरूर पधारना। फिर मै भी देखता हू कि आप अपनी आराध्या की सौगन्ध को कैसे झुठलाती है—

करुणा सुण किरपा करौ, सजि सिंह थारौ वग सजाय।
आवड जी री आण दिराऊ, मान लेहु महमाय।।

तथा—

कलू देख छिपजो मती, थानै दाढाली री आण।

इस प्रकार हम पाते है कि चाडाऊ चिरजाओ म भक्त ने बार-बार अर्ज करके मातेश्वरी को सहायतार्थ



बुलाया है, देवी माँ के शीघ्र न पहुचने पर उसे खरी-खोटी बाते सुनाई है, देवी के विरुद्ध-हानि की चर्चा चलाकर अपने स्वार्थों की पूर्ति की है। और तो और इतना कुछ करने पर भी यदि बात पार नही पडी है तो देवी को इष्ट दवी की सौगन्ध दिला दी है। यहाँ यह विशेप रूप से उल्लेखनीय है कि अधिकतर चाडाऊ चिरजाओ की सर्जना व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति हेतु हुई है। दूसरी ओर यह भी सत्य है कि सिग्गाऊ चिरजाओ जैसी कलात्मकता एव साहित्यिकता इन चिरजाओं मे नहीं मिलती। फिर भी, भक्त के दैन्य परवशता असहायता स्वय क ओछेपन एव माता की महत्ता के जिक्र, उपालभ, आराध्य मे आराधक के अटूट विश्वास आदि की दृष्टि से इन चिरजाआ का अपना महत्त्व है। □

छद

आइ री ये बडी अधिकाई
चोख मेळा भेळा चाटै एको कारण थाई।

भ्रान्ति तणा भव शायर भरिया
कुण-कुण पार उतरशी।
बापडा कटक बूड मरसी
थारा सवग तरसी।।1।।

भ्राति ब्रह्मा विष्णु न भागी
भाति शकर भागी।
ज्हारी जोत अधिकता अतर
जग सगळे ही जागी।।2।।

पाँच पचाळ सती पति पहले,
पाण्डव पच पहेटा।
चक्र तिहारे चर वण चतन
बावन बीर बहेटा।।3।।

तू खळ-खडी तू ब्रह्मडी
तू बताळ बिहडी।
मेरे काज बीशभुज दडी
तू चरताळी चडी।।4।।

तरा चरित्र तू ही तू जाणै
तेरा चरित्र अनेपा।
अखन कवारी तीनो जाया
ब्रह्मा विष्णु महेशा।।5।।

नाही सूरा नाहीं चदा
नाही इन्द्र कहेंदा।
नाहीं धरणी आकाश न कहिये
नाही गोळाज फुलदा।।6।।

पहला तूझ परणबा आया
बूझै मोड न बाधो।
लाख जानियाँ सैता लाडो
खीज करी ते खादो।।7।।

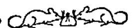
जम्मन इच्छा तरी जिण दिन
जब तैं सुर नर जाया।
तू परणी तब तरे मडप
तैं ही मगळ गाया।।8।।

भद्र कालिका शुभु भवानी
कौमारी कामक्ष्या।
आशा-पूरा पूरो आशा
दा मातेश्वरी तुम्हारी दीक्षा।।9।।

चिरजाएं

मगल आरती

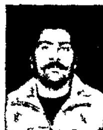
मगल की मेवा मुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खडे।
पान सुपारी ध्वजा नारियल ले ज्वाला तेरे भट धरे।
सुण जगदम्बा न कर विलावा मतन के भण्डार भरे।
सतन प्रतिपाली सदा खुशहाली जय करनी कल्याण करे।।1।।
वुद्धि विधाता तू जग माता मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा शरण तिहारी आन पडे।
जव-जव भीड पडे भगतन म तव-तव आय महाय करे।।2।।
वार-वार मे मव जग मोयो तरणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे कहीं भाया भोग करे।
लक्ष्मी होकर विश्व को पाले काली रूप महार करे।।3।।
व्रह्मा विष्णु महेश शेप सव लिया भेट तेरे द्वार खडे।
अटल सिहासन वैठी मेरी अम्वा सिर सोने का छत्र धरे।
वार शनिचर कुमकुम वरणे जव लुकड पर हुकम करे।।4।।
खप्पर खडग त्रिशूल हाथ लिये रक्त वीज को भस्म कर।
शुभ निशुभ को क्षण मे मारे महिपासुर को पकड धरे।
आदित वारी आदि भवानी जन अपने को कष्ट हरे।।5।।
कुपित होय कर दानव मारे चड मुड चूर करे।
जब तुम देखो दया रूप होय पल मे सकट दूर करे।
सोम स्वभाव धर्‍यो मेरी माता जन की अर्ज कबूल करें।।6।।
सिह पीठ पर चढी भवानी अटल भवन मे राज करे।
दर्शन पावे मगल गावे सिद्ध साधक तेरे भेट धरे।
ब्रह्मा वेद पढे तेरे द्वारे शिव शकर ध्यान लगाये रहे।।7।।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरती चवर कुबेर ढुलाय रहे।
जन जननी जय मात भवानी अटल भवन मे राज करे।
सतन प्रतिपाली सदा खुशहाली जय करनी कल्याण करे।।8।।

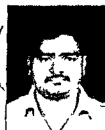




श्री ए.एस. रोड लाईन्स

खारा इण्डस्ट्रीयल एरिया, बीकानेर





रावलसिंह भाटी (09950002431)
गाव केलावा-पोकरण (जैसलमेर)

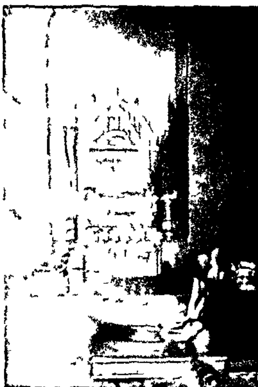
मदनसिंह, शौर्यवर्धन भाटी
विक्रम सिंह जोधा (09829776401)
रताऊ (नागौर)



श्री महावीर इण्डस्ट्रीज

602/2/ए मोतीराम रोड, जी टी रोड शहादरा दिल्ली-32
मोबाइल 09212374100 32047696 (नि)
कुलदीप जैन अंकित जैन (09289895470)





मॉं करणी के सादर चरणों मे

मनोहरसिह पुत्र माधोसिह मांगलिया (लूणा)

लूणा-फलौदी (जोधपुर)
हाल तिलक नगर, बीकानेर
मोबाइल 09413389616 09783500476

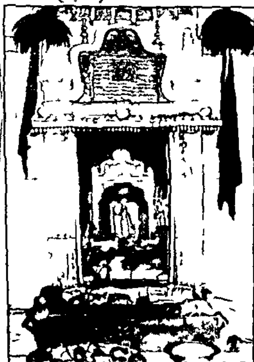


माधोसिह



मनोहर सिंह

कुँवर भोमसिह, तखतसिह
भवर राजेन्द्रसिह



ॐ दुर्गाय नम
श्रीमती आशारानी झाम्ब के परिवार का शत्-शत् नमन्

खण्डाराम डेवलपर्स

5 ई-66 माँ भगवती मार्ग
जयनारायण व्यास नगर बीकानेर
मोबाइल 09214060745 (भरत) 09214081221 (भूषण)







विनीत
भरत झाम्ब भूषण झाम्ब, दुर्गा, सौम्य सिया जूही



M[illegible]arm Plaster

Behind Ma Sati GodaraDharm Kanta N H 15
Jaisalmer Road P O Nal Badi, Dt BIKANER



Hiralal Jain

Our Branded POP
OJALA WHITE MAHARANA TIGER DIAMOND

Ratan Jain (9414324316)
Ravi Jain (9414417162)



Rajasthan Industries

Gram Diatra, Via Sri Kaolayatji
Distt Bikaner 334303 (Raj)



Ratan Jain
(9414324316)



Ravi Jain
(9414417162)

Er Ratan Naulakha
(094143244316)



मॉ करणी के चरणो मे
बारम्बार प्रणाम

निलेश मिनरल इण्डस्ट्रीज

नेशनल हाईवे 15, जैसलमेर रोड
नाल बडी, बीकोनर

सम्पर्क -
एस के राठी, एम के राठी
मोबाइल 09214441500 09414429732



मॉ करणी के चरणो मे शत-शत नमन्

मोती समो न उजळो
चन्दन समो न काठ

करणी समो न देवता
गीता समो न पाठ

भीखमचन्द कमलेश कुमार बाफना

बज्जू, ल कोलायत
जिला बीकानेर (राज)

चिरजा

भाकरीयो मन भावणों जठे आवड़ माँ रो थान रे।
जठे आई माँ री धाम रे, डुगरायों रलियावणो।

ऊचे डुगर ओरलो ज्यारी धजा उड़े असमान रे।
जोत जगामग जगमगे, माँ रा नामी घूरत निशान रे।।
डुगरियो रलियावणो

पग धरिया इण पैड़िया म्हारा दुखड़ा हुयग्या दूर रे।
दरस करयो जगदम्वा रो, म्हारे सुख रो उग्यो सूर रे।।
डुगरियो रलियावणो

इण डुगर पर आय कर कोई, घर रे भगत जन घ्यान रे।
आणद उरमें ऊपजे बाने, आतम होव ओलखान रे।
डुगरियो रलियावणो

हल तो सिन्धु हाकड़ो, ज्यारो पानी विन परवाण रे।
आवड सोख्यो एकला जे रो, नीर न वचीओ निवाण रे।।
डुगरियो रलियावणो

भुजग डस्यो निज भ्रात ने अम्वा, लोवड रोक्यो भाण रे।
अमरापुर सू आवडा माँ, इमरत दीनो आण रे।।
डुगरियो रलियावणो

मारयो राकस तेमड़ो माँ, इण डूगर पर आय रे।
ऊडो दर म दाटियो माँ, अधर शिला अटकाय रे।।
डुगरियो रलियावणो

दीज्या थारे दास ने अम्वा, भगती रो वरदान रे।
साहन चरणा शरण म म्हारो मात राखिजे माण रे।।
डुगरियो रलियावणो



चिरजा

श्रीकरणी हरनी दुख जन के, जय जय आवड़ रूप जया।
जय जय आवड रूप जयो माँ जय जय आवड रूप जयो।
करनल शगत भगत जन केरी, लख विपदा अवतार लियो।
मेहो तात अरु देवल माता, भाग महा कवि वश भयो।।
श्री करणी

कूप पड़त अणदो घण कूक्यो, अवलम्ब अम्ब न अवर अयो
ढाबी लाव भमग होय डाढा, जन प्रह्लाद ज्यू बोल जयो।
श्री करणी

गिरराया चरती तव गाया, धेरण कान्हो महीप गयो।
हिरणाकुश ज्यू हन्यो हरि होय, क्षीती पे तव यश छाय रहयो।।
श्री करणी

सिन्ध नरेश भूप शेखा न, काल कोटडी कैद कियो।
धरी दिव्य रूप चील रो देवी, दान कन्या पुल लाय दियो।।
श्री करणी

धजवद मात दया निधि देवी, थलवट राज सथान थयो।
जन हिंगलाज आपरो जननी, रात दिवस यश गाय रह्यो।।
श्री करणी

चिरजा

म्हारी अरज सुणो गिरराय माय, मैं शरण आपकी आया।।टेर।।
काह कहू कुछ लखिय न जावे, प्रवल आपकी माया
मरे तो बस कुछ नहीं मैया, चलता हू तेरे चलाया
जी म्हारी।1।

काम क्रोध मत्सरमद, ममता मोह सलील समाया
आपो ही आप कृपा करो अम्वा, शील सतोष सवाया
जी म्हारी।2।

तात मात भ्राता सुत नारी, स्वार्थ साथ सवाया,
मित्र सबधी सगा सनेही अलग-अलग अजमाया
जी म्हारी।3।

चिता दूर करो माँ चितरी चरण कमल चित चाया
'साहन मागे बुद्धि सदा, शुद्ध गूढ चरित गुण गाया
जी म्हारी।4।

श्री आवड माँ की आरती

ओम जै गिरवर राया ओम जै गिरवर राया।
आवड आदि सगती मामड घर आया।।टेर।।
माढ धरा बीच माजी चारण कुल चाया।
आप अवतरया अम्बे सासण सुरराया।।1।।
सिन्ध से आत शगती समुन्द्र सुकवाया।
पेट माय परमेश्वरी महासागर माया।।2।।
भुजग डस्यो निज भ्रातन पीयूस लाय पाया।
भाण उगत भगवती लोवड लुकवाया।।3।।
दैत्य मार डाढाली गिरी खोह गढवाया।
आप सिला दे आडी थान ऊपर थाया।।4।।
बकर मद बराबहु छिक आणद छाया।
चढत भेट नित चण्डी भैंसा मन भाया।।5।।
मेवा चढत मिठाई शुद्ध घृत सवाया।
जगमग जोत जगत है तेरी मह माया।।6।।
दर्श किया दु-ख भागे देखो कर दया।
अम्ब कहे नित आणद गुण आवड गाया।।7।।
ओम जै गिरवर राया।।

आरती

जय अम्बे करणी हो मैया जय अम्बे करणी।
भक्त जनन भय सकट पल छिन में हरणी।।टेर।।
आदि शक्ति अविनाशी, वेदन में वरणी।
अगम अनन्त अगोचर, विश्व रूप धरणी।।1।। ओम
काली तू किरपाली, दुर्गे दुख हरणी।
चडी तू विरताली, ब्रह्माणी वरणी।।2।। ओम
लक्ष्मी तू हिंगलाजा आवड़ अघ हरणी।
दैत्य दलण डाढाली अवनी अवतरणी।।3।। ओम
गाव सुवाप सुहाणो धिन थलवट धरणी।
देवल माँ मेहा घर, जनमी जग जननी।।4।। ओम
राज दियो रिड़मल नै, कानो क्षय करणी।
धेन दुहत बणियेरी तारी कर तरणी।।5।। ओम
शेखो लाय सिन्ध सू पेथड (कालू) आचरणी।
दशरथ थान थपायो, सापू सुख सरणी।।6।। ओम
जैतल भूप जीतायो, कमरूदल दलणी।
प्राण बचाय भगत के पीर कला हरणी।।7।। ओम
परचा गिण नहीं पाऊ, माँ असरण शरणी।
'सोहन' चरण शरण मे, दास अभय करणी।।8।। ओम

भोग आरती

सभी मिल सगत्या नवलख सग डोकरी जिमो डाढाली।
आसो दाख दूबारो विस्की पियो मद प्याली।
सुवरण थाल छतिसों भोजन बैठो बिरदाली।।1।।
साठ पुलाव सोयतो लिज्जे माता मतवाली।
दाव कलेजी और भुजमो जिमो माँ काली।।2।।
घेवर पूड़ी पकवान मिठाई खटरस इक थाली।
आप अरोगो मात ईश्वरी चण्डी चिरताली।।3।।
रिद्धि-सिद्धि चवर करे निज करसू आनन्द उजियाली।
कचन कलश गगाजल भरियो पीवो प्रतिपाली।।4।।
ढोल नगारा नोबत झालर बाज रही ताली।
मेहाई जब मात अरोगे बीस भुजा वाली।।5।।
अम्बादान चण्डी तेरो चेलो माँ धाबल वाली।
काट कलश दु ख हर दारिद्र करो सम्पत्ति शाली।।6।।
सभी मिल सगत्या नवलख सग डोकरी जिमो डाढाली।।

चिरजा

मन करनी मेहाई गुण गायले रे
करणी सकट की हरणी कहीं जे महामाय।
सुख करणी सेवग का सदा ही सुरराय।।
मढ आय के तू मात को मनाय ले रे।।1।।
किया दर्शन हो प्रसन्न मिटेगो सताप।
कटे कोटी जन्म के अनेकों तेरे पाप।।
निज नयनों को प्रेम रस पायले रे।।2।।
पत्रम् पुष्पम्, फूलम् तोये अम्ब लो चढाय।
धूपम् दीपम् धरो पडो चडी के पाव।।
चरण कमलों में चित को लगाय लेरे।।3।।
शगती भगती वह मुगती की है दातार।
तेरी नैया को मइया करेगी भव पार।।
जरा केयो में अम्ब को जचाय लेरे।।



चिरजा

म्हारा सब अवगुण म्हारी माय, करणा मय करणी माफ करो।
मंत्र तंत्र वा ना पड़े ना मुझसे धर न वशमन धीर।
भोग सम्प मीन हित भटके, तक्त विषय सर तीर।।
जननी मैं कुछ भी नहीं जाणू पूजा विधि अरु प्रेम।
सयमहीन ध्यान नहीं माध्या निभ ना सक्यौ कोई नेम।।
कम वचन मन म्हारा करणी सब नित रहत सदोष।
भांति नित भू भार सम्पी, अधम कुटिल अघ कोष।।
स्वार्थ काज सदा तोर मिवम लाज तणी नहीं लेश।
तजो नहीं मैं खलता तो भी करणी माँ हरो नी क्लेश।
दया करो माँ आप दयालु देख दशा मम दीन।
विरद विचारो आपरो विमला हू मैं सेवक मतिहीन।
बालक दोष करे निशोवासर अर भूला अहसान।
पर भूले नहीं मात पलक भी, करण विनय सुख कान।
लेखों लिया माँ विरद लाजैला, अवगुण मम अणपार।
कर शुभ करण करो शुभ करणी, सरणाई साधार।।

चिरजा

थारे सेवका नै साथ आई नाथ ले लीज्यो।
थारे टावरा नै साथ आई नाथ लेलीज्यो।।टेर।।
थारी किरपा री किरपाण थोड़ी देवी देदीज्यो।
भव बन्धन काट्या पाछे थारी थे ही लेलीज्यो।
म्हारे हिरदे में माँ दिव्य ज्ञान जात देदीज्यो।
रलिया जोत माही जात भलाइ पाछी लेलीज्यो।।
भाव भक्ति रस दारू चुस्कों म्हानै देदीज्यो।
ओ मन मस्त हुयारे पाछे थारी थे ही लेलीज्यो।।
आ असफल रहवै तो फेर मिनखा देह दीज्यो।
चरण-शरण पकड्या पाछे थारी थे ही लेलीज्यो।।
विधी वका अका भजणी सुबद्धि देदीज्यो।
चौरासी रा कष्ट काट्या पाछ थारी थे ही लेलीज्यो।।
भव भीत अक्षय मात अभय हाथ दे दीज्यो।
म्हारी नौका पड़िया पार भलाई थे ही लेलीज्यो।।

चिरजा

आज्यो-2 जी करनाद सुरराय ऊभी जोऊ वाटड़ली।।टर।।
शाह कूक करी सागर प माँ कान सुनो किनियाणी
गाय दुहता जहाज तिरायी पल में पार लगाणी,
तारी-2 जोकरनाद सुरराय झगडू वाली जहाजड़ली।।1।।
दुष्ट तुरक जद करी दुष्टता द्वारपालके आणी
सिंह रूप होय सग विराज्या पल में डोल छुडाणी
राखो-2 जी करनादे सुरराय पीथलवाली लाजड़ली।।2।।
अही भात डसियो रजनी का जाणी वे जद हाणी
पोह उगता माण भाण था रोक दियो महाराणी
ताणी-2 जी करनादे सुरराय सुरज आड़ी लोवड़ली।।3।।
वीणा मृन्दग बाजा अति बाजे गुगरिया धमकाणी
सज सिणगार पधारों सगत्या नवलख रास रचाणी,
रमजे-2 है करनादे सुरराय म्हार मढ़ में रासड़ली।।4।।
कलियुग देख काठा मत होव जो सुणजो आरतवाणी
रेण वमाय सदा थे रहजो, पालो प्रीत पुराणी,
राखो-2 जी करनादे सुरराय आदू कुलरी गेतड़ली।।5।।
कई काम ये दौड़ थे कीना अब काई आलस आणी,
'प्रभावती ने परचो दो माँ वश की बेल वधाणी
जन्मी-जन्मी जी करनादे सुराय म्हे तो थारी जातडली।।6।।

चिरजा

म्हे तो माजीसा रे दर्शन रे हित आया हो म्हारी कर्नल माय
मढ देशाणे री राय म्हे तो माँजी रा दर्शन
अबेजी सगत्या मायला सगत बड़ा किनियाणी ओ
अबेजी शीश पे माँ जी रे सोवन छत्र विराजे ओ
अबेजी बोरडिया रा बाग अति सुन्दर सोहे ओ
अबेजी मढ मकराने रो सुन्दर जड़ाव जडियो छै ओ
अबेजी देपासर रो नीर गगाजल जैस ओ
अबेजी रामसिह चरणा में शीश नवाव ओ

श्रीमाताजी

तेरा आधार ले करनी चला ससार सागर में,
मुझे अब तार दे अम्बे मेरी पतवार है तेरे कर में
सम्भल तेरे भुजाओ ने बचाया था मेरे माँजी,
किसी दिन शाह जगडू को भवर चक्कर भयकर में
तेरा आधार।।1।।

भुजगी बन बचाया था लिपट कर लाव टूटी से।
विनय सुथार के सुन के, माँ आ गये एक क्षण भर में,
तेरा आधार ।।2।।

किनारा दूर है मौसम, अनिश्चित और बैढव है।
हमारे पाप का पानी माँ बढ रहा नाव झर में,
तेरा आधार ।।3।।

खडे है विष डसने को हजारों ग्राह मुह फाडे
अधेरा है निराशा का उढा तूफान अन्दर में,
तेरा आधार ।।4।।

समर्पित शीश चरणों में मेरे जीवन मरण दोनों
तिरू या डूबू तेरे कर मै, यही बस भावना उर में,
तेरा आधार ।।5।।

चिरजा श्रीकरणी की

अब सुध लीज्यो म्हारी मात भवानी दर्शन दीज्यो हे,
भवानी मेहर करीज्यो है अब 1 टेर
तीन लोक में तू प्रकाशी, शिव घर रही पटराणी है,
बावन भैरू चौसठ जोगणी वेद बखाणी है 1 टेर
कलकत्ते मे काली, अम्बिका उज्जैन में चामुण्डा ए,
थारी माया सब जगछाया (है नव खण्डा ऐ),
अब सुध लीज्यो 2 टेर
नागौर में नगणेच्या देवी फलोदी में ब्रह्माणी ए,
रेण में भैरव युद्ध कीनो बिलाड़े आईए 3 टेर
साठीका में बीस भुजा है, ओशिया में साचल माई ए,
बीकाजी को विरद बढायो करनल माई ए 4 टेर
आगे सत अनेको तारया अबके बारी हमारी ए,
कहे 'हजारी भव सागर भारी पार उतारी ए 5 टेर

चिरजा

म्हारी करनादे सू आच्छी लागे देशाणे रो देश। टेर।
अग छायो नहीं आयो शरणे शेष
अवणी पर झट आवज्यो माँ कलू को देख कलेश।।1।।
ऊन्डा जल उण देश रो माँ थो-थो थल वरदेश
जठे विराजे जोगणिया माँ निर्वानव जाय नरेश।।2।।
लारे नवलख लावज्यो माँ आज्यो बेल हवेश
सजियों राखी सग में माँ हाजिर सिह हमेश।।3।।
सुख सम्पत्ति भगती सदा माँ बगसो आप विशेष
करनाद आगे करे है माँ 'प्रभा' अर्जी पेश।।4।।

श्रीमाताजी

भजो भगवती तू ही सरस्वती तेरा ही सहारा है।
तू मात हमारी मै पुत्र तुम्हारा शरण में आया हू।
सिह चढी पर्वत पर गाजे,
देशनोक मे आप विराजे हो रही जय-जय कार
ध्वजाबन्ध धिनयाणी ।

विघ्न निवारण आप भवानी,
सकट काटो हे महारानी कर दो दरिद्र दूर
ध्वजाबन्ध धिनयाणी

प्रेम सहित यू माँ को मनावो,
निश दिन गुण मैया का गावो हो रही जय-जय कार
ध्वजाबन्ध धिनयाणी

सिन्ध जाय शेखा न लाई
श्री हाथों से जेल छुडाई बनकर चील विमान
ध्वजाबन्ध धिनयाणी

टूटो ऊट चोथ खाती रो,
भेद नहीं पाओ जाती रो, लोह तणो पग किनो
ध्वजाबन्ध धिनयाणी

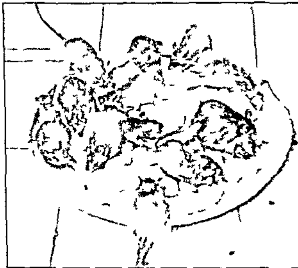
बीकानेर दिया बीका ने,
जान माल राव शेखा ने श्री मुख राव कहाओ
ध्वजाबन्ध धिनयाणी

मैं हिंगलाज चरणों का चाकर, नित उठ रहू सेवा में हाजिर,
चरणो में शरण रखाओ
ध्वजाबन्ध धिनयाणी



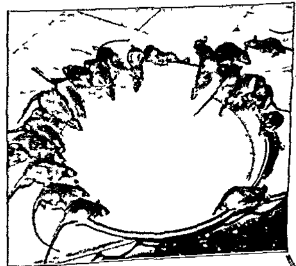
श्री भैरवनाथ दर्शन

काबे ही काबे











सुरेन्द्रकुमार

माँ करणी के चरणो मे शत्-शत् नमन

सुरेन्द्रकुमार शुभकरण

फैन्सी शूटिंग शर्टिंग व लेडिज ड्रेस मैटेरियल के विक्रेता

कृष्ण मन्दिर के सामने, नोखा

मोबाइल 09314756659



अमितकुमार

श्री भैरवनाथ दर्शन

भैरवजी शिव का अवतार थे। एक बार भगवान शिव ने अपनी माया का खेल खेला और ब्रह्माजी की परीक्षा के लिए ऐसा माया जाल फेंका कि स्वय ब्रह्माजी को इस बात का अहकार हो गया और वे सब देवताओं, ऋषियों, मुनियों से बोले—'देखो, इस सपूर्ण दृश्यमान सृष्टि को जन्म देने वाला मै ही हू। मैंने ही इतना बडा ससार बनाया है। मैं ही स्वयभू हू।'

ब्रह्माजी के मुख से इस प्रकार की अहकार भरी बातें सुनकर सब देवताओं को बहुत ही आश्चर्य हुआ।

ब्रह्माजी ब्रह्म हठ का शिकार हो गए। उनके मुख से जो बात निकल चुकी थी। वे उसे झूठ मानने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि—'जिसके आभूषण नाग हों और सवारी के लिए बैल हो वह कैसे परब्रह्म हो सकता है? मै उसे कभी भी ईश्वर नहीं मान सकता।'

ऋतु ने कहा, 'ब्रह्माजी, वास्तव में आप बहुत बडी भूल कर रहे हैं। जबकि सारे देवगण तक इस बात को मानते हैं कि—भगवान शकर तो सनातन ज्योति है। आनन्द रूपा शिवा उनकी अमिट शक्ति है।' आप इस बात को स्वीकार करो कि वे भगवान ही है और उनसे ऊपर और कोई नहीं है।' ऋतु और ब्रह्माजी का विवाद सीमा से बढ़ गया तो उस समय उन दोनों के बीच मे तेज प्रकाश पैदा हुआ। उस छाया को देखकर ब्रह्माजी का पाचवा मुख चिल्ला उठा—'तुम कौन हो हम दोनों के बीच में आने वाले?'

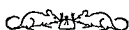
ब्रह्माजी के मुख से क्रोध भरी वाणी सुनकर उस छाया ने एक बालक का रूप धारण कर लिया।

'हे बालक! तुम मेरे मस्तक से प्रकट हुए हो और मेरे सामने रुदन कर रहे हो। इसलिए मैं तुम्हारा नाम रुद्र रखता हू। आज के पश्चात् तुम मेरी ही शरण मे रहोगे और मैं ही सदा तुम्हारी रक्षा करूगा। मैं ही तुम्हारा रक्षक हू। मै ही जगत पिता ब्रह्मा तुम्हारा पिता बनूगा। मेरे होते हुए तुम्हारा कोई कुछ नही बिगाड सकेगा।'

'हे प्रकृति से जन्मे प्रकाश के बेटे! तुम वास्तव में ही एक महान बालक बनोगे। तुम ही पूरे विश्व के भरण-पोषण में सहयोग दोगे। इसी कारण तुम्हारा नाम काल भैरव होगा। तुम पापियों का नाश करके धर्म की रक्षा करोगे। धर्म सकट को दूर करोगे। इस कारण लोग तुम्हें पाप भक्षण के नाम से भी याद करेंगे। तुम पवित्र नगरी काशी पुरी के अधिपति होकर कालराज का पद प्राप्त करोगे। काशीपुरी को तुम देव नगरी घोषित करके वहा पर किसी भी पापी को नहीं रहने दोगे। ऐसे पापियो को तुम अपने ही हाथो से दड दोगे।'

जब भैरव नाम के बालक को ब्रह्मा ने इतने सारे वरदान एक साथ दे दिए तो उस बालक ने सर्वप्रथम अपने हाथ के नाखून से ब्रह्मा के पाचवें सिर को काट डाला। क्योंकि उसी मुख ने शिवजी को बुरा कहा था। इसके साथ ही वह प्राकृतिक बालक बोला—'हे पूज्य ब्रह्मदेव! आप जगत पिता होने के कारण मेरे भी पिता हैं। अब आप ने ही मुझे यह वरदान दिया था कि मै पापियों का नाश करू। हे ब्रह्म जगत पिता! आपके शरीर के जिस भाग ने पाप किया था मैंने उसी का अत कर दिया है। पाप तो पाप है यदि उसे कोई भगवान भी करेगा तो उसे उसका दड अवश्य मिलेगा। यही कारण है कि भगवान शिव की निन्दा करने वाले इस मुख को मैंने काट डाला है।'

जैसे ही ब्रह्माजी का सिर कटा तो उन्हें यह ज्ञान हुआ कि शिवजी ही सबसे बडे और परब्रह्म है। ब्रह्माजी को अपनी



भूल का अहसास हो गया तो वे शिव के डर के मारे उनकी उपासना करने लगे। उसी समय भगवान विष्णु भी वहा प्रकट हुए तो ब्रह्माजी के साथ-साथ वे भी भगवान शिव की आराधना करने लगे।

उपासना से पसन्न होकर स्वय शिवजी वहा प्रकट हुए और उन्होने ब्रह्माजी के कटे हुए सिर को देखकर अपने ही अवतार भैरवजी से कहा—'हे भैरव! तुम लोक परलोक में इस मस्तक को अपने हाथ मे लेकर क्षमा याचना करते हुए पूरे विश्व का भमण करोगे तो इस ब्रह्म हत्या के पाप का प्रायश्चित तभी हो सकेगा।'

भैरव को यह कहकर शिवजी ने अपनी शक्ति से ब्रह्म हत्या नाम की एक कन्या प्रकट की। वह लाल वस्त्रों मे लिपटी हुई थी और उसके पूरे शरीर पर लाल रग का लेप था। उसके मुख पर लाल रग का रक्त था जो आकाश से टपक कर उसके मुह तक आ रहा था। उसके एक हाथ में तलवार तथा दूसरे में खप्पर था।

वह भयकर गर्जना करती हुई चलने लगी तो शिवजी ने उसे आदेश दिया—'ब्रह्म हत्ये! जब तक भैरव तीनों लोकों का भ्रमण करते हुए काशी पुरी नहीं पहुच जाते तब तक तुम इसी प्रकार से भयकर रूप मे उनका पीछा करती रहो। मेरी शक्ति के एक अश से तुम हर स्थान पर प्रवेश तो कर सकोगी किन्तु काशीपुरी में ही तुम्हारा प्रवेश नहीं हो पाएगा। बस ये मेरा आदेश है।

यह कहते हुए शिवजी वहा से अतर्ध्यान हो गए। भैरव जो शिव का अश होने से शिव अवतार माने गए। हमार धर्म में तीस कोटि देवता हैं तथा प्रभु के तीन रूप हैं और इनकी शक्तिया लक्ष्मीजी और भवानी का अवतार हैं।

दवी पूजा में मातेश्वरी पार्वतीजी के साथ उनके अन्य दो रूपों भगवती दुर्गा तथा काली माता के नाम से उपासना की जाती है। इसके विपरीत भगवान शिवजी की उपासना तो सर्वाधिक होती है। इसके साथ-साथ शिवजी के दो रूप और हैं—हनुमानजी भैरवजी—ये दोनो रूप भी शिवजी के अवतार हैं। इन दो रूपो में शिव बहुत पूजे जाते है।

भगवान शिव की आराधना तो आदिकाल से चली आ रही है किन्तु भैरवजी के रूप में उनके अधिकतर आराधक तान्त्रिक सिद्ध योगीजन करते आ रहे है।

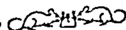
जो लोग भैरवजी, हनुमानजी, भगवती दुर्गा की उपासना करते है। वे तो शिवजी के ही भक्त माने जाते है। शिवजी स्वय उन पर कृपा करते है। जो फल शिव पूजा का मिलता है वही फल इन देवताओ के पूजन का मिलता है।

भैरव उपासना से केवल शिवजी ही प्रसन्न नहीं होते बल्कि विष्णुजी का भी आशीर्वाद प्राप्त होता है। इसलिए सिद्ध योगी ऋषि-मुनिजन सबके सब भैरवजी की उपासना करते है। इस उपासना से भगवान शिव और विष्णुजी की उपासना का फल भी पा लेते हैं।

भैरवजी के बारह स्वरूप पूज्य हैं। इनके दर्जनो स्वरूप धर्म ग्रथो मे मिलते हैं। भक्तजन इनमें से किसी एक रूप की उपासना भैरव उपासक यदि सच्चे मन से कर लेते है तो उन पर भैरव का प्रभाव पूरा-पूरा रहता है। अपने भक्तो के सारे सकट हरण करने के लिए वे स्वय आते हैं। भैरवजी शिवजी के पाचवे और रौद्र अवतार हैं। भैरवजी का वाहन कुत्ता है।

भैरवजी भगवान शिवजी का ही अवतार थे। शिवजी तो भोलेनाथ हैं। उनकी उपासना के लिए कोई विशेष बदिशें भी नहीं हैं। आप किसी पीपल की जड़ के पास बैठकर भी शिवजी तथा भैरवजी की उपासना कर सकते हैं।

भैरवजी की उपासना तो आप किसी भी चबूतरे पर पत्थर का टुकड़ा रखकर उस पर सिन्दूर लगाकर कर सकते हैं। इसके लिए भैरव मदिर का होना कोई जरूरी नहीं है। महाकाली दवी, भैरवजी शनिदेव— ये तीनों हमारे ऐसे देवता हैं जिनकी उपासना के लिए बहुत कड़



परिश्रम, त्याग और ध्यान की आवश्यकता है। तीनो ही देव बहुत कडक, क्रोधी, दुष्टो को दड देने वाले माने जाते हैं। जब-जब कोई महापापी पृथ्वी पर जन्म लेता है तो उनकी देवगणो की धर्म रक्षा के लिए जरूरत पडती है। यही कारण है कि प्रकृति ने धर्म की रक्षा के लिए ऐसे देवगणों की भी विशेषता बनाए रखी है।

इसके विपरीत ये तीनों देवगण अपने उपासकों, साधकों की मनोकामनाए भी पूरी करते है। ससार क सब कष्टों से बचाए रखते है। कार्यसिद्धि और कर्मसिद्धि का आशीर्वाद अपने साधका को सदा दते रहते है।

भैरवजी अपने उपासको के ऊपर अति कृपा करते हैं। एक ओर पापियों के लिए उनका क्रूर रूप है, दूसरी ओर वे अपने भक्तों पर इतनी दया दृष्टि रखते है कि उनको जरा सा भी कष्ट नहीं होने देते। उनकी मनोकामना पूरी करने में समय नहीं लगाते।

पवित्र काशीजी हिन्दूधर्म की सबसे पूज्य और पवित्र नगरी मानी जाती है। गगाजी के तट पर बसे इस तीर्थ को भैरव भगवान की नगरी भी कहते है। भैरवजी की पूजा-उपासना तो वैसे पूरे भारत में ही होती है किन्तु भैरवजी का जन्म स्थल काशीजी को मान कर लोग इनकी पूजा-उपासना के लिए इसी तीर्थ स्थल पर आते हैं।

भगवती माँ दुर्गा के उपासक भैरव देवजी को मातेश्वरी दुर्गा का प्रमुख सेनानायक और उनके गणो का अधिपति भी मानते है। इसीलिए तो भगवती जागरण मे दुर्गाजी के साथ भैरवजी की मूर्ति भी लगाई जाती है। माँ भगवती के मदिरो मे भी भैरवजी की मूर्ति लगी रहती है।

भैरवजी के साथ बहुत से तात्रिक हनुमानजी की भी उपासना करके सिद्धि प्राप्त करने के प्रयास करते है। हनुमानजी का एक रूप है बालाजी। बालाजी (हनुमानजी) के हर मदिर में भैरवजी की मूर्ति अवश्य लगी रहती है। भैरवजी को हनुमान की सेना का प्रधान नायक माना जाता है। जो अपनी विशाल सेना से भूत-प्रेतो को मार-मारकर भगा देते है।

जब भी हनुमानजी की उपासना करते है तो उनके साथ ही मातेश्वरी दुर्गा तथा भैरवजी की भी उपासना करना आवश्यक माना जाता है। यह बात ध्यान रखने योग्य है कि—'जहा पर शिव है वहीं पर भैरवजी हैं, वहीं हनुमानजी है और इनके साथ ही माँ भगवती भी इनके साथ है।' □

सिघ रूप धर सापरत मार्‌यो कान्ह पबग।
राज दियो रिड़माल ने, रग माँ करनी रग।।
जय जय सुवाप-किनियाणी 'माँ !
जय साठी के महाराणी माँ !
जय देशनाक धिनियाणी 'माँ !
जय थळवट राज राणी 'माँ !

भैरवनाथ चिरजा

भैरू आवज्यो काशी का वासी कोड छै घणों।।टेर।।
बगीचो लगादयू वादयू मोगरो घणो,
केवड़ा गुलाव क्यारी केतकी तणो भैरू
भटी में गिरादयू खासा लोग ओघणो,
तो सारू कढादयू दारू दाख चोगणों भैरू
आवता करी आरती दयू ऊचो वैठणो,
दोनों भाई धीरवीर पावणा वणो भैरू
एक पुत्र दीज्यो म्हाने गोद खेलणो,
थमराज थान थाट जग ठेलणो भैरू
जैसलमेरी कहे विरद जोवा आपणों,
गरजी घणी काज अरज राज सो सुणो। भैरू

भैरवजी चिरजा

सुधार काज दास रो पधार भैरवा।
रमाय अग तेल तू फूलेल फेरवा
सवार होय स्वान पर वजाय डेरवा
करन्त आप नाच तान गान लेरवा
झरनाट वाज घूघरा धमक गेरवा।
साय करन सेवगा राख खेरवा
रमन्त काशी मे सदा दिपन्त सेरवा।
ओघटा करत साय नदी नेरवा
दुप्ट दफे होत देख तेज तेरवा।
सवकाज सिद्ध होय रटन्त भेरवा।
दास पदम आपकी चाहत मेरवा।

भैरवनाथ चिरजा

मेरा काज सफल कर भैरवा मिणधर सू करा मनावणा
थान थारो अलीशान थपाऊ पय सुरया सू धोय पढाऊ,
चौके झाडू देय चावडसुत उत्तम ठोर वैठावणा मेरा
चोखे तिला रो तेल मगाऊ रग केसर सिदूर रलाऊ,
चमक पना की छाप चढा कर साज मूरत सजावणा। मेरा
डोढया रो दरबारी देवा सारे जगम थारी सेवा,
माता रो दुलार रात-दिन पोहरेदार रहावणा मेरा
भीड तू भगता रो भैरू दौडयो आवे करलिया डेरू
स्वान सवारी साज आज सो माँ अरजी पर आवणा मेरा
वीस भुजारे थे मन भावो, कालो गोरो बीर कहावो,
अम्ब अखाडे रमत आप जद धरा शेष धूजावणा मेरा
वशी तान मधुर वजाओ, सुरनर मुनिजन सुध बिसरावो,
म्हाले तू दरियाव मस्त मन मदछकिया महरावणा मेरा
'किनिया रतन' रे पडिया कामा म्हारे घरा पधारो मामा,
काया कप्ट सब मेट दया कर जीवन दान दरावणा मेरा



भैरवनाथ की चिरजा

मतवाला काला पाला ही पधारो पृथ्वीनाथ।।टेर।।
धमके कड़िया घुघरा रे डमके डेरू हाथ
चमके बासक नाग ज्यू रे नवलख लाज्यो साथ।।1।।
काला थे करुणा सुनो रे बीरा मन री बात।
याद करनता आवज्यो रे झिलमिल आधी रात।।
मतवाला थे महर करो रे पावे दु ख बहु पात।
मात हुवे जिण मुलक मेरे जा झट लाज्यो साथ।
प्रभा पैदल आवसी रे सवासणिया रे साथ।
बालक बगशौ बापजी थे जोडे देशा जात रे।।

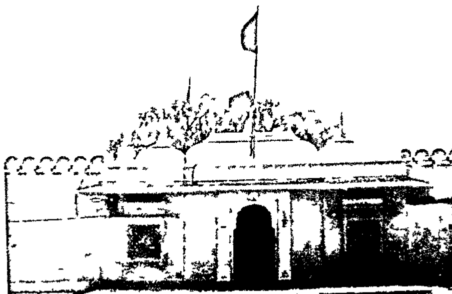
आरती भैरवनाथ

ओम जय गोरा काला गोरा भैरू जय गोरा काला
काशी धर रा निवासी लगडा लटियाला।।टेर।।
महाकाली महिपासुर मारयो पापी परजाला।
आप रहे अगवाणी दैत्य दलन वाला।।1।।
तू ही दोय तू ही बावन भैरव तू खेतरपाला।
सिवरे ज्यारे सहायक, आबे उताला।।2।।
तू ही नव लाख तणो पोरायत जग के रखवाला।
महिमा अपरम्पारा बाझन दे बाला।।3।।
करणी कैलाश भवन मढ जुड़िये बैठो बिरदाला।
निवण करे नर नारी, पोसे रिछपाला।।4।।
'सुवा' हुकम सर नीरज 'मुलो' गावे गुणमाला।
भैरव नाथ री आरती आनन्द उजियाला।।5।।





पुराना करणीजी मन्दिर



नेंहडीजी मन्दिर



कैलाशदान

॥ ॐ श्री करणी नम ॥

कैलाशदान पुत्र अक्षयदान बारहठ

तेसूतो का वास देशनोक (बीकानेर)

विनीत कुवर भवानीसिंह धन्नेसिह कैलाशदान जसवन्तसिह मदनसिह भवर सचिन एव भारती

मोवाइल कैलाशदान (8003248266 09875299144)

स्तुति

श्री जगदीश्वरी करनी माता की प्रार्थना

12448
15/9/84

जय हो करनी तव अग्नि में
हम चारन बालक शीष नमें।
जय दक्षिण हाथ त्रिशूल धर
जय मुण्ड सुशोभित वाम करे।।1।।

तव दवल मात रु मेह पिता,
किनियाँ कुल चारन की सविता।
तव ग्राम सुवाप रु देश थली
जग में पसरी यश बेल भली।।2

जय हो वरदे जगदम्ब! तुम्हें,
जय दीपवधू! वर देहि हमें।
हम अज्ञ कहा गुण गान करें,
जब जीव सहस्र विचार परें।।3।।

कपिलायत लक्ष्मण डूबि मर्‌या,
त्रिदिनान्तर जीवित आप कर्‌यो।
भ्रम अम्ब फसी जगशाह तरी,
कर वाम पसार उबेलि करी।।4।।

निज कचुकि बाँह निचारत ही,
लवणोद नदी अति वेग बहा।
क्षिति मे पय पौरुष एक गह्यो
ग्रह सीमित क्षार पयाधि किया।।5

धरि पन्नग रूप बरत्त जुरी,
अणदा रथकार सहाय करी।
पय शीतल में अपराधिन का,
सय जारि सुन्याय किया उनका।।6।।

पति पुगल पै पवि पात भयो,
करि लावड़ आट बचाय लियो।
गढ जोधपुरीय स्वपाणि थप्यो,
तम नाम सुदशन आप जप्या।।7।।

वनि कहरी कान्ह विनाश किया
रिड़मल्ल मरूस्थल राज्य दिया।
तुमने मित चिल्ह शरीर धरा
अरू कालिय पेथड़ प्रान हरा।।8।।

पति जैसल पीठ अदीठ हुवा,
किय नष्ट उसे निज पाणि छुवा।
तुम चील बनी मुलतान गई।
नृप शेखहि बधन मुक्ति दइ।।9।।

प्रज लुँटक जो क्षितिपाल वने
उन म्लच्छन जाटन आप हने।
लघु साँमत शासन को उथप्यो
तुमने दृढ़ जगल राज थप्यो।।10।।

तव पाइ अमोघ प्रसाद घना
नृप विक्रम जगल नाथ बना।
जब जैसल जगल सीम लुपी,
गडियाल गिराछर बीच थपी।।11।।

तुम देवि! धिनेरू समीप गये,
जल पूरित भाजन शुष्क भय।
पर स्नान समय इक बूँद गिरी,
उसमें तुम पावक व्है प्रजरी।।12।।

तव मूरति जैसलमर बना,
पठई दृग हीन सुथार बना।
मनि मिन्नत म्लेच्छ ससैन्य हन्यो
तव मदिर जैतल हाथ बन्यो।।13।।

कहलौं कहिय तव कीर्ति कथा
परचे अयुता वधि दीन्ह यथा।
तुम भारत शत्रुन शीष कँप,
मरु जगल से दृढ राज्य थपे।।14।।

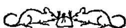
जब ही कुल चारन भीर परा
तब ही तुम आय सहाय करी
पर हा! अब क्यों न उबारत हो
दिव आक तलातल जात अहा।।15।।

हम पूत कपूत हुए सवही
पर मात कुमात न जात कही।
हमने तव अम्ब! गह्यो शरना
नहि आश्रय हीन हमें करना।।16।।

भुज में मम शक्ति स्वरूप बसो,
मुख में तुम भारति रूप लसो।
करनी! हमको करनी करनी,
सिखला दु ख सकट की हरनी।।17।।

पर आश्रय चारन जाति तजे,
उठना निज पैरन वृत्ति भजे।
अनुरक्त त्वदघ्रि हमें कर दो,
वरदे! यह 'पागल' को वर दो।।18।।

—ठाकुर किशोर सिंह बार्हस्पत्य



ॐ श्री करणी

जब तक धरती और आकास है, तब तक चन्द्रमा और सूर्य उदय होते हे, जब तक जल और पवन है, जब तक पाप और पुण्य प्राप्त होते है, शेपनाग पर जब तक धरती का भार है, घी के सचार से अग्नि प्रज्वलित होती है, जब तक नक्षत्र है, सत्य अश है, वषा की ऋतु में बादल वर्षा करते हे, जब तक गगाजी में जल चल रहा है, सुमेरु पहाड है, सागर है, जब तक वेद है, यति हनुमान है, कवि भोमजी कहते है कि तब तक करणीजी की कला इन सब से ऊपर अटल है, सत्य है।

शुभ सूचना

आप सभी ने पुस्तक म माँ करणी के नाम का स्मरण करके जितना हो सका विज्ञापन के रूप में माँ के श्री चरणा म अपनी सेवा रखी। माँ करणी सदैव आप पर कृपा दृष्टि बनाये रखे। ऐसी हम शुभकामनाए करते है।

माँ की कृपा की बगैर इतने बडे साहित्य सृजन मे सेवा का विचार होना ही असभव था। मगर जो माँ का मजूर वो ता हाना ही था। इस पुस्तक के छपने तक माँ की कृपा क पात्रो की अनवरत सेवा पहुचती रही। जिस-जिसको समयानुसार सूचना मिली। अविलम्ब मुझे सूचित किया। मैने माँ का स्मरण कर सब की सेवा को स्वीकार किया। इसके बावजूद कुछ भक्ता की सेवा को मैं पुस्तक मे नई रख पाया उनको मे विश्वास दिलाता हू कि आगामी अक मे आपकी सेवा को प्राथमिकता दी जायेगी।

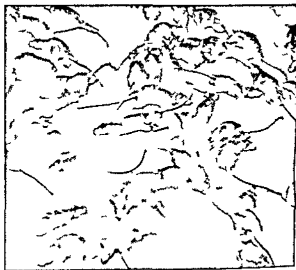
मेरा उन सभी भक्तो से हार्दिक अनुरोध है अगर आप भी इस 'श्रीकरणीजी दुर्लभ दर्शन' पुस्तक मे अपनी सेवा देने की इच्छा रखते है। इसके लिए आप अगामी अक मे अपना पूरा पता एव 2 फोटो के साथ परिचय लिखकर हमे भेज देवे। जल्द ही आगामी नवरात्रि मे आपकी सेवा के साथ आपको पुस्तक अवलोकनार्थ पहुचा दी जायेगी।

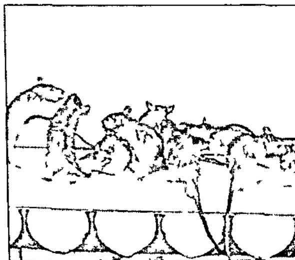
माँ की जय जय जय हो।

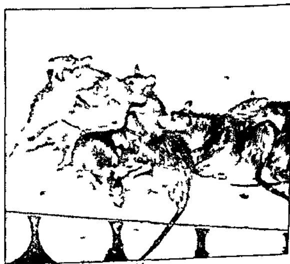


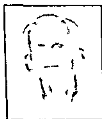
काबे ही काबे










गुलाबचन्द

माँ करणी के चरणो मे शत्-शत् नमन

काबा किना करनला जम रो मेट जजाळ
इण मे वशज अवतरे परम रखै प्रतपाळ

जतनलाल पुत्र गुलाबचन्द संचेती

देशनोक-बीकानेर (राज) हाल गाधीनगर नई दिल्ली

करणी जी महाराज
(देशनोक)

Swarna Champa

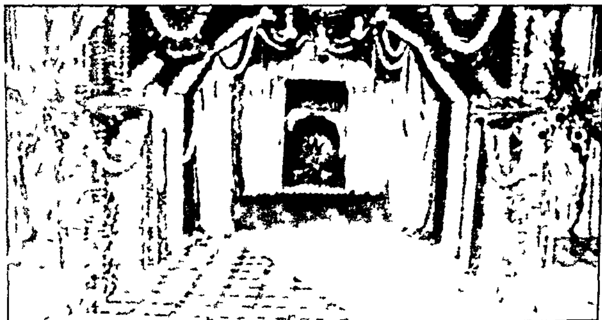
MOKSH AGARBATTI CO.

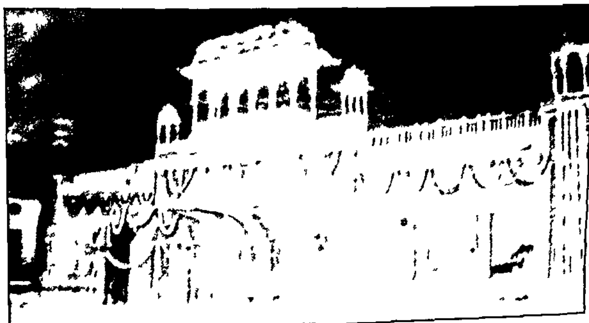
No 39, 3rd Main Road J C Industrial Estate
Yelachenahali Kanakapura Road BANGALORE 560062
Ph 26660667/68 26669055/56
Fax 91+ 80 26660669 Mob 9343360414
E mail anandashiya@vsnl net in / moksh8111@gmail com
visit us at www mokshagarbatti com

Sesh Kiran Ashiya (Partner)



फूलो से सज्जा माँ का दरबार







भवरसिंह पुत्र वक्सुसिंहजी जाडावत

बीडकावास झुझुनू (राज)

Mateshwari Trading Company

Wholesale Dealers in PVT Tubing Suction HDPE & Krushi Pipes

Sole Distributor for Indoflex Hondaflex Hindu Flex Crow & Duke Brands

Shop No 15-4-526/1 Ashok Bazar, Osman Shahi Afzalgunj Hyderabad 12

मोयाइल 09290106569 (भवरसिंह) रीना ऋचा

श्री करणीमाताजी, देशनोक


मूलचन्द सोनी केदारनाथ

मूलचन्द पुत्र सीताराम मौसूण (सोनी) चरकडा बीकानेर

दुर्गा ज्वैलर्स एण्ड सस

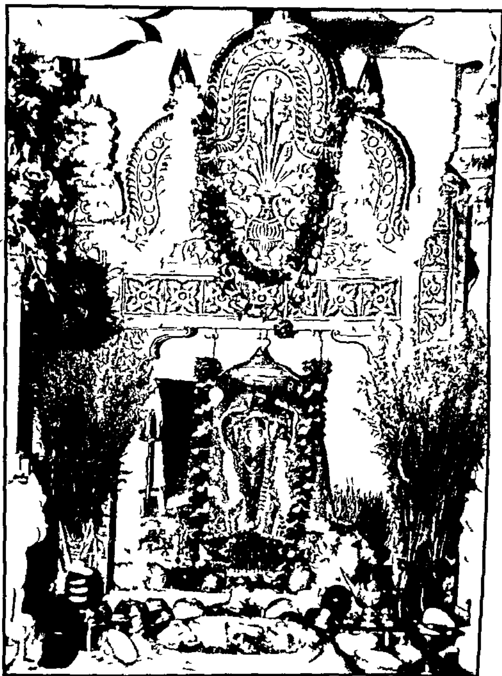
सभी प्रकार क राशि रत्न मिलते है—पुखराज हीरा पन्ना माणक मूगा श्रीयत्र

5/117 गोल मार्केट मूर्ति चौराहे के पास जय नारायण व्यास कॉलोनी बीकानेर

प्रो राधेश्याम सोनी (9214633646 0151-2234735)


सीताराम राधेश्याम बजरंगलाल

श्री करणीमाताजी मदिर, हैदराबाद



Manjushree Strech Fılm Pvt. Ltd.
Manjushree Polymers Pvt. Ltd.

7-4-102, Gaganpahad, R R Dıst HYDERABAD 501323 A P (INDIA)

Tel 91 - 40 -24361533 20024741

E-maıl manjushreepolymers@yahoo com madhusudankakanı@yahoo com

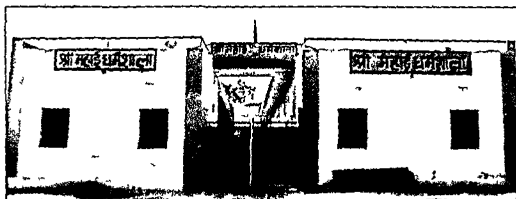
Madhusudan Kakanı (Dırector)

श्री मेहाई धर्मशाला









सचालक चम्पालाल कानीदेवी सिंघी (जैन) चैरिटेबल ट्रस्ट सरक्षक कनकमल-सरलादेवी सिघी सरदारशहर (चूरू)


पूजा घर निवास स्थान दिल्ली

मॉं करणी के चरणों में सादर प्रणाम

कनकमल-चम्पालालजी सिंघी (जैन)

सरदारशहर-दिल्ली

विनीत

कनकमल-सरलादेवी मनीष-पकज (पिंकी)

एव सुरेखा (रिंकी) वैभव मनन


मा के चरणों मे कनकमल सिघी

श्री करणीमाताजी निज मन्दिर, हेदराबाद

SOMANI BROTHERS
15-7 578 Opp Post Office
Begum Bazar HYDERABAD 500012
Tel 040-24745600 09849488000

Munnalal Transport Company
7 20/51 Near Rly Good Shed Gate
Moosapet, HYDERABAD
Tel 24742813 (O) 23810128 (Moosapet)

SOMANI BROTHERS


जगनलाल [illegible] (सोमानी)

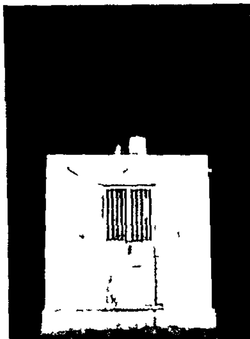

तेजप्रकाश सोमानी


चन्दूलाल सोमानी


मुरलीधर सोमानी


जयकिशन सोमानी

श्री भैरवनाथ दर्शन, देशनोक


श्री भैरवनाथ मन्दिर


श्री भैरवनाथ दर्शन

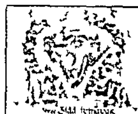


दुर्लभ दर्शन पुस्तक की शुभकामनाओ के लिए

मिश्रजी महाराज नरेन्द्रजी से शुभाशीर्वाद ग्रहण करते हुए—विक्रम देपावत

शुभेच्छु

भगवानदास तवर कमल श्रीमाली गौरीशकर आचार्य जुगलकिशोर सेवग खेराजराम जागू, मनोज जोशी
हरिहर नरेन्द्र रुघाराम किशन भाटी एव समस्त मित्रगण



श्री गणेश भगवान की जय हो।



श्री हिंगलाजमाता की जय हो।



श्री आवडमाता की जय हो।



श्री करणीमाता की जय हो।



श्री इन्द्रबाईसा की जय हो।



श्री भैरवनाथ की जय हो।



श्री अटल क्षत्र की जय हो
सच्चे दरबार की जय हो।

निज मन्दिर

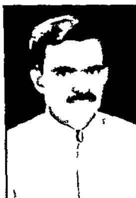


ASHOK MARKETING COMPANY

134/4 Mahatma Gandhi Road 3rd Floor
Room No 313 KOLKATA 700007 (W B)
Ph 91 33 22688128 (O) 91 33 25541840 (R)
Fax 91 33 22711392 • Mobile 91 9830283655
E mail amcrpb@vsnl net www ashokmarketing com

आसोज सुदी सातम (जन्म दिन) के दिन श्री करणीजी की जयन्ती का दर्शन





12445
149

नाम विक्रमसिंह देपावत पुत्र श्री मूलदान देपावत

जन्म 7 सितम्बर 1972 देशनोक (बीकानेर) राज

पता 5-ई-62 गुण उगम भगवती मार्ग जयनारायण व्यास नगर बीकानेर

मोबाइल 09828262929, 09468567778

योग्यता एम ए बी एड (चित्रकला) मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर

अनुभव प्राध्यापक (चित्रकला) गेस्ट फैकल्टी

साहित्य सर्जन चमत्कार को नमस्कार कहानी काबो की देशनोक गाइड छत्र-छाया रिविलेशस ऑफ श्री करणीजी एन इन्कारनेशन ऑफ शक्ति एव श्री करणीजी दुर्लभ दर्शन इत्यादि।

प्रवृत्तिया (प्रमाण-पत्र/प्रशसा-पत्र) गणतन्त्र दिवस (दिल्ली) पूर्व प्रशिक्षण मिनी शिविर दईजर 1986 सर्वोत्तम निशानेबाज वार्षिक प्रशिक्षण शिविर 1986-87 राष्ट्रीय एकता शिविर सनासर (जम्मू कश्मीर) 1987 19वीं कर्नाटक राज्य जम्बूरी सिमोगा (कर्नाटक) 1987 राज्य स्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता 1987 व 1989 (पर्यावरण विभाग राजस्थान जयपुर) राज्य स्तरीय विज्ञान मेला उदयपुर (Siert) 1990 प्रथम स्थान एकल व सामूहिक नृत्य 1985 (जिला स्तरीय प्रतियोगता बीकानेर) द्वितीय एव तृतीय स्थान काव्य व भाषण प्रतियोगिता 1992 (डिवीजनल चारण सभा बीकानेर) राष्ट्रीय एकता शिविर (केरल व लक्ष्यद्वीप) चिरतल्ला 1997 नेशनल केडिट कोर परीक्षा उत्तीर्ण सी प्रमाण-पत्र 1997 (7 राजस्थान बटालियन एन सी सी बीकानेर) (अन्तर विश्वविद्यालयी युवा एव सास्कृतिक प्रतियोगिता कजरी-98 (उदयपुर) मुकाभिनय-द्वितीय स्थान 1998 एकाभिनय-तृतीय स्थान 1998 नारायण सिंह गाढण ट्रस्ट द्वारा पुरस्कृत (प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण एम ए.) एव कई सस्थाओ द्वारा सम्मानित

भ्रमण/यात्राएँ जम्मू-कश्मीर केरल कन्याकुमारी गोवा बैंगलोर हैदराबाद सूरत दिल्ली मुम्बई तथा लगभग समस्त राजस्थान